श्री

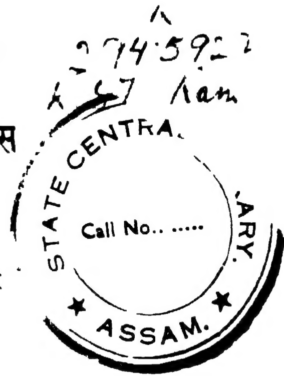
कृत्तिवास रामायण

[रामचरितमानस से एक शती प्राचीन]

(आदि, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्धा, सुन्दर काण्ड)

बंगला मूल के अमर रचयिता

सन्त महाकवि कृत्तिवास



अनुवादक एवं लिप्यन्तरणकार

नन्दकुमार अवस्थी

प्रकाशक

भुवन वाणी

रानीकटरा लखनऊ-३.

प्रथम संस्करण

मूल्य १२.००

जून, १९६६ ई०

मुद्रक:—
नेपाली प्रेस,
रानीकटरा, लखनऊ—३



जिनकी पुष्कल लेखनी से यह सलिल-काव्य प्रवाहित है

उन्ही महासंत कृत्तिवास को

सादर समर्पित

—नन्दकुमार अवस्थी

भूमिका

श्री नन्दकुमार अवस्थी हिन्दी भाषार एकजन प्रसिद्ध साहित्यिक, बाङ्ला भाषाओ ताहार यथेष्ट दखल आछे। दीर्घ दिन अनेक परिश्रम करिया तिनि बंग भाषाय रचित विख्यात कृत्तिवास रामायण सुललित हिन्दी छन्दे अनुवाद करियाछेन। देवनागरी अक्षरे मूल बाङ्लाओ पुस्तके सन्निविष्ट हइयाछे। आमार हिन्दी भाषार ज्ञान सामान्य। एइ भाषाय अभिज्ञ मिशनेर अनेक संन्यासी श्री अवस्थी जी एइ अनुवादेर भूयसी प्रशंसा करियाछेन। आमार दृढ़ विश्वास श्री अवस्थी जीर एइ प्रशंसनीय प्रचेष्टा हिन्दी भाषाभाषीदेर बाङ्ला भाषाय लिखित एइ अमूल्य ग्रंथेर रसग्रहणे साहाय्य करिबे। श्री अवस्थी जी ताहार एइ अनुवादेर द्वारा बाङ्ला भाषाभाषी ओ हिन्दी भाषा-भाषीदेर अशेष कृतज्ञतापाशे आवद्ध करियाछेन। आमि एइ पुस्तकेर बहुल प्रचार कामना करि। इति।

(स्वामी) गंभीरानन्द
सा० स० रामकृष्ण मिशन
पो० बिलूरमठ, हावड़ा

१०-४-६६

अनुवाद

श्री नन्दकुमार अवस्थी हिन्दी भाषा के एक प्रसिद्ध साहित्यिक हैं। बंगला भाषा में भी उनकी यथेष्ट गति है। दीर्घ काल तक बहु परिश्रम द्वारा उन्होंने बंगभाषा में रचित सुप्रसिद्ध कृत्तिवास रामायण का सुललित हिन्दी काव्य में अनुवादित किया है। (साथ ही) देवनागरी अक्षरों में मूल बंगला पाठ भी पुस्तक में सन्निविष्ट है। मेरा हिन्दी भाषा का ज्ञान सामान्य है। तथापि इस भाषा के अभिज्ञ (रामकृष्ण) मिशन के अनेक संन्यासी जनों ने श्री अवस्थी जी के इस अनुवाद की भूरि भूरि प्रशंसा की है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि श्री अवस्थी जी की यह प्रशंसनीय प्रचेष्टा हिन्दी भाषाभाषियों को बंग भाषा में लिखित इस अमूल्य ग्रंथ का रस ग्रहण करने में सहायता प्रदान करेगी। श्री अवस्थी ने अपने इस अनुवाद (और लिप्यन्तरण) द्वारा बंगभाषाभाषी और हिन्दी भाषाभाषी का समानरूपेण कृतज्ञतापाश में आबद्ध किया है। हम इस पुस्तक के बहुल प्रचार की कामना करते हैं। इति।

(स्वामी) गंभीरानन्द
सा० स० रामकृष्ण मिशन
पो० बिलूरमठ, हावड़ा

१०-४-६६


उपहार

....

....

....

....

....

(उ० प्र० सरकार द्वारा मई ६० में पुरस्कृत)

कृत्तिवास रामायण

(आदि काण्ड) के देवनागरी लिप्यन्तरण तथा हिन्दी पद्यानुवाद पर चन्द विद्वानों की प्रशस्तियाँ

(रामचरितमानस से सौ वर्ष प्राचीन बंगला काव्य)

यह अनुवाद प्रकाशित करके आपने बंगला और हिन्दी दोनो भाषाओं की अमूल्य सेवा की है; हमें विश्वास है कि हिन्दी जगत् आपके इस प्रयत्न का हार्दिक स्वागत करेगा

ता. १६ जूलाई १६६०   —म० मन्त्री, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

'कृत्तिवास रामायण' (आदिकाण्ड) की पुस्तक देख ली। अच्छा काम शुरू किया है। एक बात सहज ही लिख हूँ, कृत्तिवास से भी ७०-८० साल पहले 'माधवकन्दली' रचित 'असमी' रामायण है।.........

मारनिया आश्रम—गौहाटी, ४-१-६१   —विनोबा

कृत्तिवास रामायण का पद्यानुवाद मिला। बहुत ही अच्छा बन पड़ा है। कृपया बधाई स्वीकार करें।

वाराणसी, २८-७-५६   —हजारीप्रसाद द्विवेदी

बंगला भाषा के महाकवि कृत्तिवास की बंगला रामायण का प० नन्दकुमार अवस्थी द्वारा किया गया हिन्दी पद्यानुवाद पढ़कर प्रसन्नता हुई। अभी अनुवाद का आदिकाण्ड ही प्रकाशित हुआ है। पूरे प्रकाशन की संस्तुति करता हूँ। अवस्थी जी का यह कार्य बहुत ही सराहनीय है।

लखनऊ विश्वविद्यालय, ६-२-६०   —डा० दीनदयाल गुप्त

आपने 'कृत्तिवास रामायण' पर जो श्रम किया है, सर्वथा श्लाघ्य है। अनुवाद पद्यबद्ध अच्छा रहा।

कनखल, २८-५-५६   —किशोरीदास वाजपेयी

निस्सन्देह कृत्तिवास रामायण को हिन्दीवालों के लिए सुलभ करके आपने अत्यन्त उपयोगी कार्य किया है; जनता का कर्तव्य है कि वह उक्त ग्रन्थ को खरीदकर पढ़े, जिससे आपका पुण्य कार्य सफल हो।

नई दिल्ली, ६-६-५६   —बनारसीदास चतुर्वेदी

'कृत्तिवास रामायण' का पद्यानुवाद प्रकाशित कर आपने वास्तव में हिन्दी का बड़ा उपकार किया है।

दिल्ली विश्वविद्यालय, १७-८-५६   —डा० नगेन्द्र

कृत्तिवास रामायण का अनुवाद ऐसी लोकप्रिय शैली में करके आपने बड़ा ही उपयोगी कार्य पूरा किया।

आकाश वाणी भवन, नई दिल्ली, ता० २३-१०-६२ —नरेन्द्र शर्मा

मैंने कृत्तिवास रामायण के अनुवाद का आदिकाण्ड देखा था। पुस्तक बहुत अच्छी लगी।

राजभवन, जयपुर २६-२-६३ —सम्पूर्णानन्द (राज्यपाल-राजस्थान)

बंगला कृत्तिवास रामयण का पद्यानुवाद एवं मूल का देवनागरी लिप्यन्तरण, यह प्रयास सचमुच ही स्तुत्य है। आदिकाण्ड आद्योपांत देखा। बेहद पसंद आया। आशा है अगले काण्ड भी शीघ्र प्रकाशित होंगे।

—सत्यनारायण झुनझुनवाला

मलखिया, हावड़ा, ३०-३-६५ (मंत्री ठाकुरदास सुरेखा ट्रस्ट)

आपकी कृत्तिवास रामायण तो बहुत सुन्दर है। कल से इसी तखत पर रखी है। और भी सज्जनों ने देखा। उनका कहना है कि अनुवाद तो मूल से भी सुन्दर है। —रमेशचन्द्र देव

रामनगर दुर्ग, वाराणसी, ७-३-६५ मंत्री, अखिल भारतीय काशिराज न्यास

विषय-सूची

अयोध्या काण्ड

अनुवादक का वक्तव्य

मंगलमय भगवान् की दया, पूर्वजों की अनुकम्पा और गुरुजनों के आशीर्वाद से मुझ अकिञ्चन ने, आज से लगभग ५०० वर्ष पूर्व अवतीर्ण, बंगभाषा के महाकाव्य "कृत्तिवास रामायण" के हिन्दी-रूपान्तर को प्रस्तुत करने का साहस किया। पाठको के लिये भी यह कौतूहलजनक है। प्रश्न उठ सकता है कि हिन्दी में रामचरित्र पर तुलसी की अमर रचना 'रामचरितमानस' के अखंड और सार्वभौम साम्राज्य के रहते एक नवीन रामायण की रचना करने की आवश्यकता क्या है ? इस जिज्ञासा के समाधान और महासन्त कृत्तिवास तथा उनके सुललित और सर्वांगपूर्ण इस महाकाव्य का, पाठकों के समक्ष, कुछ परिचय प्रस्तुत करने के हेतु, हिन्दीकार के नाते यह वक्तव्य देना आवश्यक प्रतीत हुआ है।

संस्कृत के उत्तरकालीन साहित्य और संस्कृतेतर भारत की क्षेत्रीय तथा जनपदों की अन्य विपुल भाषाओं में प्राप्त धार्मिक अथवा सांस्कृतिक प्रायः सारे साहित्य पर व्यास के जयग्रन्थ (महाभारत) अथवा रत्नाकर (वाल्मीकि) की रामायण का प्रभाव है। आदिकवि महर्षि वाल्मीकि-रचित 'वाल्मीकीय रामायण' रामचरित्र पर उपलब्ध रचनाओं में सर्वप्रथम काव्यों में से है। इसी के आधार पर वृहत्तर भारत§ के विभिन्न क्षेत्रों और विभिन्न भाषाओं में कालिदास, कृत्तिवास, तुलसीदास आदि सरस्वती के अनेक वरद पुत्रों ने समय-समय पर मर्यादापुरुषोत्तम राम पर अपनी-अपनी भावना के अनुरूप काव्यरचना की है।

उल्लेखनीय है कि गोस्वामीजी के 'रामचरितमानस' के रचनाकाल से लगभग सौ वर्ष पूर्व "कृत्तिवासी रामायण" का आविर्भाव हुआ। उसके रचयिता संत कृत्तिवास बंगभाषा के आदिकवि माने जाते है। प्रारम्भ में संस्कृत के अभिमानी पण्डितों ने कृत्तिवास की रचना का बड़ा उपहास किया। उन पर चारो ओर से आक्षेप और प्रहार होने लगे। किन्तु परम स्वाभिमानी, संस्कृत और बंगला भाषाओ के समानरूपेण विद्वान, महापण्डित कृत्तिवास की दृढ़ता और ओज के समक्ष उन पण्डितों का मिथ्याभाव टिक नहीं सका। थोड़े ही समय में जनताजनार्दन के हृदय को मुग्ध कर इस महाकाव्य ने चिरंतन साम्राज्य के लिए अपना स्थान बना लिया। बंग-भाषा-भाषी प्रत्येक परिवार में आबाल वृद्ध-वनिता सब इसके अनवरत गान में आनंदित होने लगे।

संत कृत्तिवास का समय गोस्वामी तुलसीदास जी से लगभग एक शताब्दी पूर्व होने के बावजूद उनका जन्म-स्थान, कुल और वंश-परिचय असंदिग्ध और सुविख्यात है। सन् ७३२ ई० में बंग-नरेश 'आदिशूर' द्वारा, यज्ञ के लिए कान्यकुब्ज देश से आमंत्रित और फिर बंगाल में ही बस गये पाँच ब्राह्मण-प्रवरों

---

† वैसे आर्ष वचनों से यह आभास मिलता है कि च्यवन ऋषि एवं उनके अनुवर्ती वंशजों ने समय-समय पर रामायण का गान किया है और उन्हीं की परंपरा में आगे चलकर उत्पन्न रत्नाकर (वाल्मीकि) द्वारा रामचरित्र का जो संस्करण हुआ, वही आजकल की प्रचलित "वाल्मीकीय रामायण" का कलेवर अथवा कलेवर का आधार है। § वृहत्तर भारत में अफ़ग़ानिस्तान, पाकिस्तान, बलख़, बरमा, दक्षिण-पूर्व एशिया तथा हिन्द महासागर के द्वीपपुञ्ज भी सम्मिलित थे।

में सुपूज्य भारद्वाज गोत्रीय 'श्रीहर्ष' पण्डित से तेरहवीं पीढ़ी में 'माधवाचार्य' का जन्म हुआ। माधवाचार्य के 'उत्साह', उत्साह के 'आयित', आयित के 'उद्धव', उद्धव के 'शिव' और शिव के पुत्र 'नृसिह' ओझा हुए जो सुवर्णग्राम के अधिपति महाराजा 'वेदानुज' के प्रधानमंत्री थे। आज से लगभग ६२५ वर्ष पूर्व वेदानुज-काल में अराजकता उत्पन्न हो जाने के फलस्वरूप नृसिह ओझा ने सुवर्णग्राम का परित्याग कर उस समय के अति समृद्धिशाली फूलिया ग्राम में जाकर निवास किया।

कृत्तिवास के 'आत्मपरिचय' तथा इतिहास के विद्वानों के मत से प्रकट है कि 'फूलिया' धन-धान्य पूरित और मनोरम पुष्पोद्यानों से प्रफुल्लित, गंगाभागीरथी के उत्तर-पूर्व तट पर, श्रीमानो एव प्रकाण्ड पण्डितों का उस समय प्रमुख पीठस्थान था। फूलिया, बेलगड़े, मालीपोता, सिमला, नवला, प्रभृति पञ्चग्राम संगठित होकर 'फूलिया-समाज' के नाम से प्रसिद्ध थे। कृत्तिवास से पूर्व और पश्चात् इस जागती भूमि ने अनेक भारतप्रसिद्ध विद्वानो एवं साधकों को जन्म दिया है। स्वयं कृत्तिवास के अति पवित्र कुल में ही 'अन्नदामंगल' आदि के रचयिता 'भारतचन्द्र गुणाकर' सुविख्यात स्मार्त और नैय्यायिक 'वासुदेव सार्वभौम', ओझा (उपाध्याय) वंश के प्रथम 'मुखोपाध्याय' उपाधिकारी 'श्रीगर्भ', 'रामचन्द्र विद्यालंकार', 'सर आशुतोष मुखर्जी' और अभी कल ही हम से विलग हुए, राष्ट्र के लिए प्राणोत्सर्ग करनेवाले 'स्व० श्यामाप्रसाद मुखर्जी' आदि नररत्नो ने या तो इसी पुण्यभूमि में जन्म लिया अथवा 'फूलिया के मुखर्जी' के पुनीत परिवार का होने के नाते अपनी कुलीनता का गर्व करते रहे है। यहीं पर उल्लेखनीय है कि भारत के सुवर्णकलश साहित्यसम्राट बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय से आठ पीढ़ी पूर्व उनके पूर्वज अवस्थी गंगानन्द भी 'चटर्जीवंश' के अतिकुलीन 'फूलिया घराने' के आदिपुरुष थे और फूलिया के ही निवासी थे। आज कालस्रोत के प्रवाह मे पड़कर "फूलिया" गंगा से काफ़ी दूर हटकर एक साधारण ग्राम मात्र रह गया है। सन्त कृत्तिवास की यादगार उनका 'दोलमञ्च' आज भी एक टीले की शक्ल में वहाँ विराजमान है।

अस्तु उसी फूलिया मे नृसिह ओझा ने सुवर्णग्राम से आकर निवास किया। नृसिह ओझा के 'गर्भेश्वर', गर्भेश्वर के 'मुरारि', मुरारि के तृतीय पुत्र 'वनमाली' और इन्हीं वनमाली की पत्नी 'मालिनी' के गर्भ स उत्पन्न छः पुत्र और एक कन्या म कृत्तिवास कदाचित ज्येष्ठ थे। इस प्रकार इस पुनीत वंश के प्रथम बंगवासी 'श्रीहर्ष' से २२वी पीढ़ी मे सन्त कृत्तिवास ने जन्म लिया।

कृत्तिवास ने स्वरचित 'आत्मपरिचय' नामक प्रबन्ध में अपने जन्मदिवस के संबंध मे इस प्रकार लिखा है:—

> "आदित्यवार श्रीपंचमी पूर्ण माघ मास।
> तार्थि मध्ये जन्म लइलाम कृत्तिवास।।"

इसके अनुसार पंचाग मे ठीक शुभ क्षण खोजकर तथा अन्य विविध तथ्यों एवं तर्कों के आधार पर अनेक बंगीय विद्वानो के सहयोग से पण्डितप्रवर अध्यापक योगेशचन्द्र ने १४३३ ई० ११ फरवरी, रविवार माघ संक्रांति, रात्रिकाल को कृत्तिवास का जन्मकाल माना है। उन्हीं विद्वद्वर के मत से ४७ वर्ष की आयु प्राप्त होने पर १४८० ई० में संत का निर्वाणकाल और १४६७ ई० से १४७२

ई० के मध्य के पाँच वर्षों को रामायण कृत्तिवास की रचना का समय माना जाता है। कृत्तिवास के संतान होने का उनके 'आत्मपरिचय' में अथवा अन्यत्र भी कहीं उल्लेख नहीं है।

कृत्तिवास के पितामह मुरारि ओझा, व्यास और मार्कण्डेय के समान विद्वान एवं तपस्वी थे। उनके सात पुत्र और बहुसंख्यक पौत्र-प्रपौत्रों का विपुल परिवार अतुल पाण्डित्य, कीर्ति और ऐश्वर्य का यशस्वी केन्द्र था। बारह वर्ष की अवस्था में कृत्तिवास, गंगापार किसी (अज्ञातनामा) सर्व गुणनिधान गुरु के पास पढ़ने जाने लगे। कृत्तिवास ने स्थान-स्थान पर उनको महातेजस्वी कहकर व्यास-वाल्मीकि से तुलना की है। अध्ययन के पश्चात् सरस्वती के वरद पुत्र कृत्तिवास ने गौड़ेश्वर के प्रमुख सभापण्डित का पद प्राप्त किया। उस समय बंगाल में अनेक राजा-महाराजा सब गौड़ेश्वर करके प्रसिद्ध होते थे। कृत्तिवास के आश्रयदाता गौड़ेश्वर का नाम अज्ञात है। इन्हीं गौड़ेश्वर की प्रार्थना पर 'सन्त' द्वारा रचित ललित महाकाव्य आज 'कृत्तिवास रामायण' के नाम से प्रसिद्ध है।

'कृत्तिवास रामायण' सात काण्डों में समाप्त जनसाधारण के लिए सुबोध अति सरल पयार छन्दों में वर्णित 'पाञ्चाली गान' है। महाकाव्य को पढ़ने पर यह निश्चय प्रतीत होता है कि कृत्तिवास ओझा छन्द, व्याकरण, ज्योतिष, धर्म और नीति के अगाध पण्डित थे। भाषा सरल अलंकार-अनुप्रास से युक्त तथा भाव और कवित्व-कल्पना से परिपूर्ण है। पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक आचार का पूरा ज्ञान और संस्कृत भाषा पर उनका सर्वांग अधिकार है। राम-नाम में परम आस्था और विष्णु-शिव-शक्ति के स्वरूप में उनकी समानरूपेण भक्ति थी।

'कृत्तिवास' द्वारा हस्त-लिखित रामायण की प्रति अप्राप्य है। यदा-कदा प्राप्त प्राचीन पाण्डुलिपियों और सर्वत्र गाये जाने वाले पाञ्चाली गान के संग्रह बहुधा एक दूसरे से भिन्न भी पाये गये है। अतः प्रस्तुत रामायण ग्रन्थ के विषय में निश्चय रूप से यह कहना असम्भव है कि कृत्तिवास की प्रस्तुत रचना में कितना अंश प्रक्षिप्त है। फिर भी 'बंगीय साहित्य परिषद' जैसे भाषा-देव-मंदिरो मे संगृहीत रामायण की अति प्राचीन लगभग ४०० पाण्डुलिपियों का निरीक्षण करके, श्रीरामपुर मिशनरी के प्रधान पादरी श्री केरी साहब के अनुरोध पर, विद्वन्मार्तण्ड स्व० जयगोपाल तर्कालंकार के प्रयास से सन् १८०२ ई० मे "श्रीरामपुर मिशन प्रेस" से सर्वप्रथम 'रामायण कृत्तिवास' का परिष्कृत संस्करण प्रकाशित हुआ। तब से अनेक विद्वानों ने समय-समय पर उसका परिमार्जन किया और आज बाजार मे उपलब्ध रामायण उन्ही प्रयासो का पुष्कल परिणाम है। भले ही उनमें कोई-कोई अंश प्रक्षिप्त हों, किन्तु वह पवित्र ग्रन्थ कृत्तिवास की रचना करके मान्य हैं।

'कृत्तिवास रामायण' बंगभाषा-भाषियों की रग-रग में ओतप्रोत है। धनी-निर्धन, शिक्षित-अशिक्षित, पण्डित-मूर्ख, प्रत्येक सम्प्रदाय, समाज और वर्ग के लिए समानरूपेण वह आनन्दकारी है। संस्कृत में कालिदास और हिन्दी में गोस्वामी तुलसीदास के समान बंगला में 'कृत्तिवास' अजर-अमर और उनकी 'रामायण-रचना' सर्वकालानुयायिनी, सर्वतोगामिनी तथा सर्वतोव्यापिनी है। भाव सुस्पष्ट और भाषा प्राञ्जल, सरल और रोचक होते हुए भी अतुल पाण्डित्य-पूर्ण है।

'कृत्तिवास रामायण' का कथानक प्रायः वाल्मीकीय रामायण के अनुसार है फिर भी स्थान-स्थान पर अन्य पौराणिक अंशो का भी पर्याप्त समावेश है। गोस्वामी जी के मानस की तुलना में आख्यानो की अत्यधिक प्रचुरता कृत्तिवास रामायण की अपनी विशेषता है।

कृत्तिवास द्वारा रचित अनेक ग्रन्थों में रामायण के अतिरिक्त 'योगाद्यार बन्दना', 'शिवरामेर युद्ध', 'रुक्मांगदेर एकादशी' प्राप्य हैं। बंगला भाषा के इस महाकाव्य के रचयिता की सर आशुतोष मुखर्जी ने भी भूरि-भूरि बन्दना की है, और उसी कुल में जन्म पाने के नाते अपने को धन्य माना है।

अस्तु, प्रातःस्मरणीय सन्त कृत्तिवास और उनकी 'रामायण' का संक्षिप्त परिचय देने के पश्चात् ऐसे 'सुधाभाण्ड' को हिन्दी पाठको के समक्ष प्रस्तुत करने की आवश्यकता पर अधिक लिखने का प्रयोजन शेष नही रहता। असंख्य कथारत्नो मे अलंकृत, सर्वरसपूर्ण इस महाकाव्य से राष्ट्रभाषा के भण्डार की श्रीवृद्धि करने की लालसा इस अकिंचन के मन मे जागृत हुई।

इस मनोरथ के जागने पर, सन् १९१६ ई० मे स्टीम प्रिन्टिंग प्रेस लखनऊ द्वारा प्रकाशित 'कृत्तिवास बालकाण्ड' को देखा। उसके सम्बन्ध में जिज्ञासाएँ की जिनसे विदित हुआ कि मेरे पड़ोसी एवं सजातीय, साहित्यमूर्धन्य स्व० पण्डित रूपनारायण पाण्डेय जी ने प्रसिद्ध साहित्यप्रेमी न्यायाधीश स्व० बाबू कालीप्रसन्न सिंह के आग्रह पर यह रचना की थी जो बाद में बाबू कालीप्रसन्न सिंह के नाम से ही प्रकाशित हुई। स्व० पाण्डेयजी से चर्चा करने पर उन्होंने मुझे उक्त बातें बतलाई। अनुवाद के संबंध मे भी उन्होंने बताया कि "कृत्तिवास बालकाण्ड" के हिन्दी अनुवाद से ही बंगला भाषा के हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करने का कार्य उन्होंने आरम्भ किया था। और शायद इसी कारण बंगला का प्रारम्भिक अभ्यास होने से कृत्तिवास रामायण का हिन्दी भाषा मे उनके द्वारा प्रस्तुत बालकाण्ड, मूल ग्रन्थ का अनुवाद न होकर एक परिवर्धित और स्वतंत्र ग्रन्थ सा बन गया है। उनका वह बालकाण्ड निस्सन्देह उनकी विद्वत्ता एव प्रतिभा का परिचायक है। स्व० पाण्डेयजी हिन्दी के प्रतिभाशाली कवि, संस्कृत-भाषा के प्रकाण्ड पण्डित तथा श्रीमद्भागवत के पुश्तैनी विद्वान थे। और कदाचित् इसीलिए वे कृत्तिवास रामायण के आधार को लेकर भी ग्रन्थ मे श्रीमद्भागवत, योगवाशिष्ट, अध्यात्म-रामायण, रघुवंश, मत्स्यपुराण, मार्कण्डेयपुराण आदि से विविध विषयों को प्रचुर संख्या मे लेकर एक स्वतन्त्र वृहत्काव्य की रचना-निर्माण का लोभ संवरण न कर सके। यहां तक कि वह ग्रन्थ मूल कृत्तिवास के आदिकाण्ड से कई गुना बढ़ भी गया। यह ग्रन्थ बा० कालीप्रसन्न सिंह के नाम से छपा। पाण्डेयजी का नाम उस पर नही दिया गया है। आज उसके संस्करण प्राप्य भी नहीं है। इसी प्रकार बा० कालीप्रसन्न सिंह ने 'कृत्तिवास लंकाकाण्ड' भी अमेठी निवासी श्री मथुराप्रसाद मिश्र द्वारा अनुवादित कराकर स्टीम प्रिन्टिंग प्रेस लखनऊ से ही प्रकाशित करवाया। यह अनुवाद भी मूल बंगला पाठ के तद्रूप न होकर प्रायः स्वतंत्र किन्तु नाना छन्दो से युक्त अति विद्वत्तापूर्ण है। यह भी अब अप्राप्य है।

अतः यह विचार कर कि स्व० पाण्डेय जी की उक्त रचना से 'कृत्तिवास रामायण' के न तो ७ काण्डो की पूर्ति होती थी और न आदिकाण्ड की ही, हिन्दी के इस अनमोल ग्रन्थ को प्रस्तुत करने की मेरी अभिलाषा दृढ़तर हो उठी।

बंगला रामायण की प्राञ्जल और सुबोध भाषा ने मेरे कार्य को सरल किया। गोस्वामी जी के रामचरितमानस के प्रमुख छन्द "दोहा-चौपाई" मानो रामायण के स्वरूप ही समझे जाते हैं। इसलिए कृत्तिवास के हिन्दी पद्यानुवाद को भी मैंने दोहा-चौपाई में ही रचना आरम्भ किया। यह पुष्कल कार्य १९५३ ई० में आरम्भ हुआ परन्तु मध्यम वर्ग की पारिवारिक एवं अन्यान्य कठिनाइयों के कारण लगभग ६ वर्षों बाद १९५९ ई० में केवल आदिकाण्ड प्रकाशित होकर पाठकों के सामने प्रस्तुत हो सका।

हिन्दी-काव्य में १६ चौपाइयों की एक कड़ी रखी गई है। और इन कड़ियों को कहीं एक, कहीं दो, 'दोहा-सोरठा' से जोड़कर एक-एक विराम की क्रमसंख्या दी गई है। एक कठिनाई अनुवाद करते समय मेरे सामने और थी। बंगला भाषा में संस्कृत के अनुसार प्रत्ययो से क्रिया का भी काम लिया जाता है। हिन्दी मे वह सुविधा कम होने से मैटर "लाइन टु लाइन" जाने में कठिनता होती थी। दूसरी ओर मेरा सतत प्रयास था कि हिन्दी का कलेवर बंगला की अपेक्षा बढ़ने न पाये। इस कठिनाई को किसी प्रकार पार किया। कथानक और भावचित्रण में कहीं-कहीं ऐसा अवसर आया है कि हिन्दी और बंगला-पाठों में कुछ अन्तर प्रतीत हो। उनका उत्तरदायी सर्वरूपेण हिन्दीकार है। हिन्दी-अनुवाद काव्य, भाषा और व्यजना की दृष्टि से कहाँ तक सफल हुआ है, यह सहृदय पाठकों के देखने की वस्तु है। उदार पाठकों से प्रार्थना है कि ग्रन्थ मे मेरी त्रुटियो को क्षमा करते हुए सत कृत्तिवास के सुधा-सलिल का पान करें।

पुस्तक को मुद्रण के हेतु देते समय एक नई समयोचित भावना जागृत हुई। बंगला मूल को देवनागरी लिपि में हिन्दी-रचना के साथ-साथ देने से हिन्दी पाठक को मूल बंगला काव्य के पढ़ने का भी सौभाग्य प्राप्त होगा। बंगला भाषा जैसी सरल, मधुर और संस्कृतमय है, उससे दो ही एक आवृत्ति कर लेने पर मूल काव्य समझ में आने लगेगा। इस प्रकार बंगला भाषा का ज्ञान और क्रमशः बंगला भाषा के अन्य ग्रन्थों को पढ़ने की अभिरुचि भी उत्पन्न होगी। दूसरी ओर बंगला भाषा-भाषी अपने पवित्र सद्ग्रन्थ को हिन्दी-लिपि में पाकर राष्ट्रलिपि को सीखने और फिर क्रमशः राष्ट्रभाषा के साहित्य और विशेष रूप से गोस्वामी जी के 'रामचरितमानस' जैसे अद्वितीय महाकाव्य को पढ़ने-समझने में भी अनुरक्त होगे। इस प्रकार राष्ट्र-भाषा को अखिल देश में व्याप्त करने और विभिन्न राज्यों की क्षेत्रीय भाषाओं को एक राज्य से दूसरे राज्य तक प्रसारित कर सुपाठ्य और सुबोध बनाने के पुनीत राष्ट्रधर्म में मुझ जैसा साधारण नागरिक समुचित योगदान देकर धन्य होगा।

अस्तु, बंगला उच्चारण को नागरी लिपि में देने की समस्या की ओर भी ध्यान गया। कश्मीर से कन्याकुमारी पर्यन्त ग्राम-ग्राम, नगर-नगर और प्रान्त-प्रान्त में, मैं देखता हूं, एक मूल भाषा ही कश्मीरी, पंजाबी, कौरवी, सौरसेनी, अवधी, मागधी, मैथिली, बंगला, उड़िया आदि अनेक भाषाओं में परिणत अथवा संयुक्त होती चली गई है। किन्तु हिन्दी के राष्ट्रभाषा एवं देवनागरी लिपि के राष्ट्रलिपि स्वीकृत हो जाने से भाषा और लिपि में यथासाध्य एकरूपता को सन्निविष्ट करना आवश्यक कर्तव्य सा बन गया है। अतएव बंगला कविता को देवनागरी लिपि में लिखने समय 'योड़' को 'जोड़' एवं 'याय' को 'जाय' लिखना उचित समझा

गया; फिर भी सर्वत्र उसी शैली का अनुसरण किया गया है जिसे स्वयं बंगाली लेखको ने अपनाया है, अर्थात् जलवायु से प्रभावित भिन्न उच्चारण की ओर ध्यान न देकर शब्दों को जैसे के तैसे रूप में लिखना। बंगला वर्णमाला का उच्च ग ओकारान्त होने पर भी बंगाली लेखक 'जल' और 'चक्षु' ही लिखते है यद्यपि पढ़ने वाले उन्हें 'जोला' और 'चोख' पढ़ लेते है। स्वर के संवृत-विवृत ... नो के फल स्वरूप इस भेद को उच्चारण तक ही सीमित रखा है, लेखन में नही। हमने भी इसी मार्ग को ग्रहण करके मूल बंगला का प्रायः अक्षरान्तर-मात्र कर दिया है।

अब दो शब्द अवशेष है। इस बड़े कार्य मे यदि मेरे गुरुजनो और सहृदय मित्रो द्वारा उत्साह मुझे प्राप्त न होता तो कदाचित् मै थककर कही बैठ जाता। मै उनके स्नेह और सहृदयता का आभारी हूँ। स्व० श्री रूपनारायण जी पाण्डेय का आशीर्वाद मुझे प्राप्त था। उन्होने मेरे छपे कुछ फ़ार्मों को देखकर प्रशंसा की थी और मेरे उत्साह को दुचन्द कर दिया था।

प्रस्तुत संस्करण की भूमिका

आदिकाण्ड 'हिन्दी समिति, उत्तर प्रदेश' द्वारा पुरस्कृत हुआ; साहित्य अकादमी, दिल्ली तथा मूर्धन्य विद्वानो द्वारा प्रशंसित हुआ। प्रशस्तिपत्र पृष्ठ ७ पर दिये है। इससे उत्साहित होकर मैने अगले काण्डो का अनुवाद और लिप्यन्तरण आरम्भ किया। और आज भगवान की कृपा से आदिकाण्ड, जो समाप्त हो चुका था, को सम्मिलित कर आदि, अयोध्या, अरण्य, किष्किधा और सुन्दर पर्यन्त पाँच काण्ड एक जिल्द में प्रकाशित कर रहे है। लंका और उत्तर काण्ड इन संयुक्त पाँचो काण्डो की अपेक्षा कलेवर मे बड़े है। उनका भी प्रकाशन शीघ्र ही आरंभ होने की आशा है। मै समझता हूँ स्वर्गीय बाबू कालीप्रसन्न सिंह की पुष्कल अभिलाषा की भी पूरी पूर्ति इस प्रयास द्वारा होगी।

प्रस्तुत पाँच काण्ड के प्रकाशन मे उत्तर प्रदेश सरकार ने आर्थिक सहायता प्रदान की। अतः सरकार के तथा तत्कालीन उपसचिव-शिक्षा श्री डा० श्यामनारायण महरोत्रा आई० ए० एस० के हम अत्यन्त अनुग्रहीत है। आदिकाण्ड के प्रथम संस्करण की भूमिका साहित्यमनीषी श्री भगीरथ दीक्षित जी ने लिख कर रचना की भूरि भूरि सराहना की थी। प्रस्तुत पाँचकाण्डी संस्करण की भूमिका श्री रामकृष्ण मिशन, बिलूरमठ, हावड़ा के स्वामी जी महाराज ने लिख कर हिन्दी रूपान्तरकार के श्रम को गौरवान्वित किया है। मै उनकी एवं मठ के संन्यासी विद्वानो की इस उदारता मे कृतार्थ हूँ।

पाठको को जानकर यह हर्ष होगा कि विभिन्न भारतीय भाषाओ के सेतुकरण हेतु हिन्दी मे सानुवाद लिप्यन्तरण का मेरा संकल्प बीस वर्ष के अनवरत श्रम के बाद संतोषजनक रूप मे पल्लवित-पुष्पित हुआ है। न केवल बंगला का पुनीत ग्रंथ कृत्तिवास रामायण, वरन् हिन्दी, उर्दू, कश्मीरी, गुरुमुखी, असमी, उड़िया, बंगला, मराठी, गुजराती, सिंधी, तमिल, तेलुगु, कन्नड, मलयालम मे बहुमुखी कार्य यहाँ तक कि अरबी ग्रंथ कुर्आन तक का देवनागरी लिपि मे सानुवाद लिप्यन्तरण हो चुका है। आशा है सहृदय पाठक एवं विशजन विभिन्न भाषाओ के सेतुकरण के इस पुनीत कार्य मे सहयोग देते रहे गे।

.. ५-६-६९　　　　—नन्दकुमार अवस्थी

[हिन्दी-अनुवादक के वक्तव्य में बाबू कालीप्रसन्नसिंह (सबसज लखनऊ) द्वारा प्रकाशित कृत्तिवास रामायण के आदि काण्ड एवं लंका काण्ड की चरचा आई है। सन् १६१५ ई० में प्रकाशित लंका काण्ड में प्रसंसनीय बाबू जी लिखित 'मुखबन्ध' भी यथावत यहाँ उद्धृत है। इससे इन दोनों काण्डों के प्रकाशन, तथा सन्त कृत्तिवास के जीवनचरित्र पर, हमारे वक्तव्य के अलावा, प्रस्तुत विवरण भी पाठकों को प्राप्त होगा।—नन्दकुमार अवस्थी]

॥ मुखबन्ध ॥

प्रातःस्मरणीय महानुभ व श्रीमान् तुलसीदासगोस्वामीलेखनीप्रसूत विचित्र "राम-चरित्र-मानस" का एतद्देश मे जिस प्रकार से बहुल प्रचार दृष्ट होता है, उसीप्रकार विशाल वंगदेश में कृत्तिवासीय वृहत् सप्तकाण्ड रामायण पण्डिताग्रगण्य कवि श्रेष्ठ महात्मा कृत्तिवास का कीर्त्तिस्तम्भ है। उनके ग्रन्थ के विषय मे हम निज मतामत के परिवर्त्तन मे मदीयापेक्षा सहस्रगुण सुयोग्य व कृतविद्यो का अभिप्राय इस स्थान मे उद्धृत करते है। एक विचक्षण वंगदेशीय साहित्यविद ने लिखा है कि "प्राचीन वंग-साहित्यभुक्त यावतीय ग्रन्थनिचय है, उनमे कृत्तिवासीय रामायण की पाठकमण्डली का जितना विस्तार है, तद्रूप किसी अपर ग्रन्थ का नही है। एतद्देश के आबालवृद्धवनिता के हृदय में रामायण की कथा मुद्रित है। वंगीयसमाज में कोई ऐसा मनुष्य नही है कि जिसको कृत्तिवास की पदावली कुछ न कुछ कण्ठस्थ न हो। ऐश्वर्यवेष्टित स्वर्णसिंहासन के पार्श्व मे दृष्टि करो, एक खण्ड कृत्तिवासीय रामायण अवश्य नेत्रगोचर होगी; मध्यवित्त गृहस्थ के भवन में प्रविष्ट हो, वहां भी कृत्तिवास विद्यमान; यहां तक कि सामान्य बनिया पनसारी के छिन्न मलीन पोटली के अभ्यन्तर से भी कृत्तिवास दृष्टिक्षेप कर रहे है। वंगीय सम्प्रदाय मे जिस किसी को कृत्तिवास अपरिचित है, उसका वंगालित्वही असम्पूर्ण है और उसकी यथायथ जाति का निर्णय करने मे पण्डित मण्डली भी परास्त होगी।························· कृत्तिवास के विषय मे और अधिक समालोचना करना अनावश्यक है। उनकी भाषा रामायण के पाठ करने से जो सुगभीर तृप्ति लाभ होती है वह वर्णनातीत है। वस्तुतः उन्होने वंग-साहित्य मे महाकाव्य की सूचना की है। परन्तु केवल इसी कारण से हम उनको श्रेष्ठ नहीं कहते है। "उनकी रामायण तो हमारे साहित्य का गौरव है ही; परन्तु एतदतिरिक्त उनका ग्रन्थ एतद्देश मे धर्म्मभाव विस्तार करने का एक प्रधान सहाय हुआ है*।" पण्डितप्रवर श्रीरामगति न्यायरत्न महोदय स्वप्रणीत "वंगदेश भाषा व वंगसाहित्य" विषयक ग्रन्थ में लिखते है कि

* "भारती" नामक मासिकपत्रिका से उद्धृत ॥

"कृत्तिवास रचित सप्तकाण्ड रामायण बहुलनीतिपरिपूर्ण, असाधारण-कवित्व-परिचायक" व "नैसर्गिकशक्तिसम्भूत है।" ततअपेक्षा आधुनिक महाकवि भारतचन्द्रराय ने "जिस प्रकार शब्दचातुर्य प्रकाश किया है, उन्होंने अति प्राचीन काल ही में उसकी अवतारणा अपने ग्रन्थ के मध्य-मध्य में किया है।।" "उनका रावणांगद सम्वाद सामान्य परिहास रसिकता का परिचायक नहीं है।" पुनः लिखते हैं कि "उन्होंने जिस अभिप्राय से ग्रन्थ प्रणयन किया है, वह सम्यक् प्रकार से सिद्ध हुआ है। उनकी रामायण गान करके शत सहस्र मनुष्य जीविका निर्वाह कर रहे है। एतद्देश के आबालवृद्धवनिता जो रामायण उपाख्यान आवृत्ति करने को समर्थ हैं, यह उन्ही का प्रसाद है। जिसको किंचत् भी अक्षरज्ञान है, वह विना भाषा रामायण के पढ़े नहीं रह सकता है। सामान्य व्यवसायी क्रय-विक्रय के बीच-बीच में अवकाश पातेही तारस्वर से रामायण पाठ करते है। इस प्रकार सौभाग्यशाली कवि अति अल्पदृष्ट होते है। कृत्तिवास की वाणी आद्योपान्त सुमधुर व दुरूहता व जटिलता "शून्य है"। कृत्तिवासीय रामायण में वाल्मीकीय रामायण से अतिरिक्त जो सकल प्रसंग सन्निवेशित हैं, तद्विषय में पण्डित न्यायरत्न महोदय लिखते है कि "आदिकाण्ड के प्रथम भाग में कालिदास कृत रघुवंश वर्णित अथवा पद्मपुराणान्तर्गत पातालखण्ड वर्णित उपाख्यान का अधिकाश संगृहीत हुआ है। तदतिरिक्त विषय सकल जो वाल्मीकीय रामायण में नही मिलते हैं वह किसी न किसी ग्रन्थ में अवश्य है। उनको अमूलक कहने का साहस कौन कर सकता है? रामचरित्र ऐसा मधुर है कि पुराणकर्त्ताओ में से किसी ने उसे परित्यक्त नही किया है। सबो ने किसी न किसी प्रसंग में रामगुण-गान किया है। भवभूति, जयदेव,* मुरारि प्रभृति संस्कृतनाटककार-मण्डली ने भी इसमें त्रुटि नहीं की है। पुराण व उपपुराण की संख्या बहुल है। तत्समस्त पाठ करके इसका निर्णय करना अतीव कठिन है कि कृत्तिवास प्रणीत रामायण के कौन कौन अंश कौन कौन ग्रन्थ से संगृहीत हुये हैं। प्रथमतः समग्र पुस्तको का संग्रह करनाही "दुस्साध्य है"। इसी प्रकार अनन्य बहु गण्यमान्य लेखकों ने मुक्तकण्ठ से माहात्मा कृत्तिवास का यश कीर्त्तन किया है। अगरेजिश पाठक के विदितार्थ सर उइलियम हंटर (Sir William Hunter. C. S. I., C. I. E.. L. L. D.) ने अपने वृहत ग्रन्थ में जो कृत्तिवासीय रामायण के सम्बन्ध में लिखा है उसका सारांश इस स्थान में उद्धृत किया जाता है। "Kirtibas, a Barahman of Nadya district, marks the transition stage." He "drew his inspiration from the Sanskrit Epics and his great work is the Bengali version of the Ramayana." His translation is still recited by Ghattaks or Bards at a thousand religious and festive gatherings every year throughout Bengal. Its modern versions have received much retouching from later poets of the Classical or Sanskritizing School; but an old copy of 1693 proves

* यह जयदेव प्रसिद्ध गीतागोविन्द रचयिता से पृथक् हैं। नाटककार जयदेव पुरुषर मिश्र के नाम से भी विख्यात हैं।

that Kirtibas worte in a strong colloqual style with a ring and rhyme of peculiar beauty..................His work marks the Sanskirt revival which gave the impulse to the Sivite or Chandi poets of the next two and a half centuries." (Im. Gaz. "Vol. VI, pp. 349 350")

श्रीयुत् रमेशचन्द्र दत्त सी. यस. ने जो बर्द्धमान के कमिश्नर हैं "बंगीयसाहित्य इतिहास" नामक स्वरचित ग्रन्थ में लिखा है। "He first opened out to us the store house of Sanskirt poetry and whose work, we may add, is without exception, the most popular among all classes of the Hindu community to the present day............To vast powers of writing in an easy fluent style and rapid and pleasing versification, our po t added the rare qualities of deep pathos and glowing discription. There are few natives of Bengal who cannot re-call to mind the juvenile day, when they felt themselves as under a charm when listening to the strains of Kiritbas when they lamented with brokon hearted Dasaratha, or wept with the suffering Sita. No work probably is so extensively and universally read in Bengal as the Ramayana of Kirtibas. none is so intermingled with our innermost thoughts and feelings, and exercises so potent an influence on our juvenile education, as this earliest and best specimen of narrative poetry in our language The special merit of Kiritbas's poetry consists in his familiar feeling descriptions of nature and man, with which it is impossible for "any reader not to be struck." (Literature of Bengal by Arcydae.)

कृत्तिवासीय रामायण के सम्बन्ध में जो साधारण विश्वास है उपरोक्त प्रबन्ध-निचय से उसका कियदंश उपलब्ध होवेगा। अब प्रश्न यह है कि कौन समय में प्रातःस्मरणीय कृत्तिवास आविर्भूत हुये थे। इस विषय में प्रचुर मतभेद हैं। अब तक यह अनुमान होता आया है कि वह षोड़श शताब्द में वर्तमान थे। यदि यह अनुमान यथार्थ है तो पण्डितप्रवर कृत्तिवास व महानुभाव तुलसीदास प्रायः समसामयिक प्रतिपन्न होते हैं। परन्तु कलिकातास्थ विश्वकोषप्रणेता ने बहु अनुसन्धान व गवेषण से यह सिद्धान्त किया है कि सम्वत् १४८२ व १५१० के मध्य में वंगीय भाषारामायण-प्रणेता विद्यमान थे। वह लिखते हैं कि "राढ़देशीय कुलीन ब्राह्मणों का फुलिया ग्राम (कृत्तिवास का जन्मस्थान) प्रसिद्ध है। ब्राह्मणो के कुलाचार्यकारिका के पाठ करने से विदित होता है कि वंगीयब्राह्मण श्रेणी प्रतिष्ठाता देवीवर व श्री चैतन्यदेव❋ व गंगानन्द§ भट्टाचार्य एकसामयिक थे। कुलपञ्जिकानुसार गंगानन्द के प्रपितामह का नाम अनिरुद्ध है। अनिरुद्ध व वनमाली दोनों सहोदर थे, बनमाली के पुत्र कृत्तिवास हैं। कुलपंजिकानुसार

❋ श्रीचैतन्य देव को बंगदेश में गौरांगावतार कहते हैं। चैतन्यदेव ही ने श्री वृन्दावन का आविष्कार किया है। सम्वत् १५४२ में चैतन्यदेव उत्पन्न हुये थे।

§ गंगानन्द कृत्तिवास के पितृव्य के प्रपौत्र हैं।

महाराज लक्ष्मणसेन प्रतिष्ठित आयित† के अधस्तन अष्टमपुरुष व गंगानन्द भट्टाचार्य के ऊर्द्ध्वतन तृतीय पुरुष कृत्तिवास हैं (महाराज लक्ष्मणसेन ने सम्वत् १२६० तक राज्य किया था। इस गणना से लक्ष्मणसेन के न्यूनाधिक २५० वत्सर के अन्त में व श्री चैतन्यदेव के समसामयिक गगानन्द के ५०, ६० वर्ष के पूर्व में कृत्तिवास का आविर्भावकाल अवधारित होता है। इस विचार से कृत्तिवास सम्वत् १४८२ व १५१० के मध्य में विद्यमान थे।" ....सर्वसाधारण का यह विश्वास है कि "श्रीकृष्ण-विजय-प्रणेता गुणराज ही वंगदेश के आदिकवि है। गुणराज ने सम्वत् १५३७ मे निज ग्रन्थ की रचना किया था। परन्तु अब यह सिद्धान्त होता है, कि कृत्तिवास गुणराज की अपेक्षा प्राचीन कवि है।" विश्वकोष-प्रणेता के अखण्डनीय गणनानुसार कृत्तिवास ४४१ वत्सर के पूर्व में वर्त्तमान थे ॥

कृत्तिवास श्रेष्ठ ब्राह्मणकुल में उत्पन्न हुये थे। विश्वकोष में उनकी एक सुदीर्घ वंशावली प्रदत्त है। पाठकवर्ग के कुतूहल निवारणार्थ उक्त वंशावली को कालान्तर में प्रकाशित करने की इच्छा है। आपाततः इतना कहना यतेष्ट है कि कृत्तिवास मनुसहिता के प्रसिद्ध भाष्यकार भारद्वाजगोत्रीय मेधानिथि के वंशसम्भूत है। जनप्रवाद है कि भक्तपुंगव कृत्तिवास ने दारपरिग्रह नही किया था। कैशोर अवस्था से जीवनान्तकाल पर्यन्त ब्रह्मचर्य व रामगुणानुकीर्त्तन उनका एकमात्र अवलम्बन रहा। ऐसे कीर्त्ति-मान् महापुरुष को आज हम एतद्देशीय साधु, माहात्मा कृतविद्य, धनी, दरिद्र इत्यादि यावतीय हिन्दूसम्प्रदाय के परिचित करके अपने इस अकिंचितकर जीवन को कृतार्थ करते है।

सर्वप्रथम लंकाकाण्ड के अनुवाद करने का हेतु यह है कि सन् १८९२ खृष्टाब्द में जब कि हम राजकीय कार्यवशत खीरी प्रदेश में अवस्थिति करते थे एक दिवस चित्त मे यह हुआ कि एतद्देश में रामायण का बहुल प्रचार है; परन्तु असंस्कृतज्ञ पाठकमण्डली महर्षि वाल्मीकि-सृष्ट अनुपम सुधारसास्वादन से वंचित है। उनके रामचरित्रपठन व श्रवणपिपासा की परितृप्ति का आर्यकुलगौरव अद्वितीयप्रतिभासम्पन्न कविकेशरी श्रीमान् तुलसीदास गोस्वामीविरचित "राम—चरितमानस" एक मात्र उपाय है। अति शुभक्षण में उक्त महाग्रन्थ का प्रणयन हुआ था। "तुलसीकृत रामायण" साहित्य-भाण्डार का एक अमूल्य रत्न है। यदि उसके प्रत्येक पद को एकएक मधुचक्र कहें तो अत्युक्ति नही है। परन्तु "राम चरित मानस" समग्र रामायण नही है। जिस प्रकार माधवीलता महाद्रुम को अवलम्बन करके सुन्दर प्रसून राशि विकास करती है, इसी प्रकार महान रामचरित का संक्षिप्तसार ग्रहणकर के कविकुलाग्रगण्य साधकपुंगव गोस्वामी महोदय ने मानव समाज के कल्याण-साधनार्थ मुक्तिप्रद विमलभक्तिरस की पराकाष्ठाप्रदर्शन कराया है। किन्तु उनके अमरग्रन्थ में रामोपाख्यान अति संक्षेप से वर्णित है। बहुदिवस से हमारी इच्छा थी कि कृत्तिवास प्रणीत

† आयित कृत्तिवास के प्रपितामह के वृद्धप्रपितामह थे।

रामायण के उत्कृष्ट अंश संकलन करके सरलभाषा छन्द में प्रकाश करें। खीरीप्रवास-कालीन हमारी यह इच्छा अधिकतर बलवती हुई और हम कोई सुयोग्य भाषाकवि के अनुसन्धान में यत्नशील हुये। घटनाक्रम से अमेठीराज्यान्तर्गत पश्चिमग्रामनिवासी सत्कुलजातसरयूपारीण ब्राह्मणवंशसम्भूत श्रीमान्पण्डित मथुराप्रसाद शर्म्मा (मिश्र) से हमारा आलाप हुआ। उनका सुमिष्ट स्वभाव, सरलता व काव्यरस-प्रियता से आकृष्ट होकर स्वइच्छानुसार हमने उनको "रावणांगद सम्वाद" को गद्य में अनुवाद करके छन्दोबद्ध करने के निमित्त अर्पण किया। उन्होंने उसको सुमिष्ट सरल चौपाई व दोहा में प्रणयन करके हम को सुनाया। उनकी रचना पारिपाट्य हमारी अतिशय प्रीतिकर हुई। उनकी रचना-प्रणाली में समधिक भावी शक्ति का पूर्ण आभास दृष्ट करके हमने संकलन प्रबन्ध परित्याग किया और समग्र लंकाकाण्ड का भाषानुवाद करने की इच्छा की। फेब्रुअरी सन् १८९२ में शुभकार्य आरम्भ हुआ। द्विवर्षाधिक अनवरत परिश्रम का फल अद्य सर्वसाधारण के हस्त में अर्पित हुआ। समग्रकाण्ड की छन्दरचना आद्योपान्त पण्डित मथुराप्रसाद मिश्र ने किया है। भाषातत्त्वविद् बुधमण्डली को अनुवाद कार्य की काठिन्य ज्ञापित करने की आवश्यकता नही है। मूल प्रबन्ध का भाव अविकल रक्षा करके छन्दमाधुर्य प्रकट करना सामान्य आयाससाध्य नहीं है। एतद्भिन्न समग्र ग्रन्थ अमिश्रित साधुभाषा में प्रणयन करने की चेष्टा की गई है। अर्थात् कोई यावनिकशब्द का साहाय्य कुत्रापि नहीं लीगई है। सम्भवतः हिन्दीसाहित्य में यह उद्योग प्रथम है। इस स्थान पर हम कृतज्ञता के सहित लक्ष्मणपुर प्रदेशान्तर्गत पुरहिया निवासी पण्डितप्रवर श्रद्धास्पद श्रीमान् रामेश्वर शर्म्मा (त्रिवेदी) महाशयकी सहानुभूति स्वीकार करते हैं। उन्होने कठिन परिश्रम के सहित इस छन्दोनुवाद के आद्योपान्त संशोधन कार्य मे प्रचुर सहायता की है। इस कारण वह हमारे शत सहस्र धन्यवाद के पात्र हैं। काकोरीनिवासी श्रीयुत् मुन्शी कन्हैयालाल ने भी बहु परिश्रम स्वीकार करके मुद्राकन के निमित्त इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि प्रस्तुत की है। इस कारण वह भी हमारे धन्यवाद के उपयोगी है।

अनुवाद के विषय में हमारा यह वक्तव्य है कि इस ग्रन्थ का प्रायः समस्त अंश कृत्तिवासीय रामायण का अविकल भाषान्तर है। परन्तु स्थान विशेष में हमने श्रीमद्रामरसायन व वाल्मीकीय व अध्यात्मरामायण से प्रस्ताविक विषय का आशय ग्रहण करके संलग्न कर दिया है। कारण इसका यह है कि महात्मा कृत्तिवास प्रणीत रामायण बहुप्रचारवशतः मुद्रकों के हस्त से भिन्न भिन्न समयमें भिन्नभिन्न आकार को प्राप्त हुई है। सन् १८०१ के मुद्रित ग्रन्थ से तदनुवर्त्ति संस्करण समुदाय इतना विभिन्न दृष्ट होते हैं, कि उसका यथायथ कारण निरूपण करना कठिन है। विषय सम्बन्ध

में तो सबकी अनेक एक्यता है; परन्तु रचनाप्रणाली, शब्द विन्यास व भावप्रदर्शन में विस्तार पाठभेद है। किसी किसी संस्करण का पाठ अतिशय भ्रमविशिष्ट व कृत्तिवासीयत्व विवर्जित है। इस कारण से हमने कवि का यथार्थ हृदयगत भाव किसी किसी स्थान में उपरोक्त उपाय से प्रकट करने की चेष्टा की है। इससे ग्रन्थ की कोई हानि होने का सम्भव नहीं है। कृत्तिवासीय रामायण का प्रायः समस्त भाग वाल्मीकीय व अध्यात्म रामायण पर अवलम्बित है। इस कारण से स्थान विशेष में उन्ही ग्रन्थों से उनकी रचना की पुष्टि कर देना दूषणीय अनुभव नहीं होता है, विशेष जब कि उनके ग्रन्थ में इतना वैलक्षण्य दृष्ट होता है।

इस अनुवाद के परिशिष्ट में कतिपय टिप्पणी प्रदत्त हुई है। अवकाशाभाव वशत विचार्यविषयसकल की यथायथ समालोचना नही हुई। इसका हमें अतीव परिताप है। सम्भव है कि कोई कोई सिद्धान्त हमारा भ्रमात्मक पाया जावे। भविष्यत् में उनका पुनर्विचार करने की इच्छा है॥

उपसहारमें हमारा वक्तव्य यह है कि यदि विश्वनियन्ता कृपामय प्रभु ने जिनका कथंचित गुणगान इस ग्रन्थ का प्रधान उद्देश्य है, कृपा वितरण की, यदि धर्म्मानुरागी हरिप्रेम पीयूषानुरक्त जनसमाज में यह ग्रन्थ आदृत हुआ, यदि निर्म्मम समालोचक सम्प्रदाय के तीव्र तिरस्कार-विशिखजाल द्वारा उद्यम-वर्म्म अभेद्य रहा, तो समग्र कृत्तिवासीय सप्तकाण्ड रामायण का भाषा छन्दोनुवाद क्रमशः प्रकाश करने की चेष्टा करूंगा। आदिकाण्ड सत्वर प्रारम्भ किया जावेगा। इत्यलम्।

लखनऊ, कैसरबाग़।　　　　श्रीकालीप्रसन्न सिंह।

सन् १९१२ ई० में प्रकाशित अंकाकावड में प्रदत्त 'मुखबन्ध' तद्रूप दिया गया है।

श्री गणेशाय नमः

कृतिवास रामायण

(हिन्दी पद्यानुवाद, बँगला मूल सहित)

मंगलाचरण

श्लोक—यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
वेंदैः सागपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगा ।
ध्यानावस्थिततद्गतेनमनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ॥ १ ॥

सर्वमङ्गलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ॥ २ ॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तुते ॥ ३ ॥

कृष्ण कृष्ण कृपालुस्त्वमगतीनां गतिः प्रभो ।
संसारार्णवमग्नानां प्रसीद पुरुषोत्तम ॥ ४ ॥

(ग्रन्थ-परिचय)

दोहा—विघ्नविनाशन गजबदन, ऋद्धि-सिद्धि की खानि।
मंगलवाणी भारती, जय भगवती भवानि ॥ १ ॥
रामचरित - अमरित - सलिल, पाप - नसावनहार।
वाल्मीकि मुनि आदिकवि, कीन्हेउ जग विस्तार ॥ २ ॥
विविध भाव भाषा भरे, धर्म अर्थ अरु काम।
मुक्ति, नीति अरु प्रीत के, अनुपम छन्द ललाम ॥ ३ ॥
सोइ पुनीत विरदावली, रघुवर काव्य अनन्त।
युग-युग सो गावत रहे, मुनि मनीषि अरु सन्त ॥ ४ ॥
कालिदास वाणीवरद, अमर गिरा-अवतंस।
बुधजन काव्य-विनोद हित, रचेउ ललित रघुवंस ॥ ५ ॥
देवनागरी-बाटिका, मानस-पुहुप विकास।
सुरभित भारत भूमि चहुँ, धनि-धनि तुलसीदास ॥ ६ ॥
सजल श्यामला बंग की, उर्वर भूमि पुनीत।
जहँ चैतन्य-रवीन्द्र सम, जन्मे जन-नवनीत ॥ ७ ॥
भक्ति-काव्य के स्रोत जहँ प्रकटे चण्डीदास।
तहाँ सरस धारा बही, 'रामायण कृत्तिवास' ॥ ८ ॥
कोकिल-कूजित सुधामय, अनुपम काव्य सुवास।
रचेउ, धन्य! तुम धन्य मुनि! महासन्त कृत्तिवास ॥ ९ ॥
भारतीय भाषा-प्रमुख, सकल रसन की खानि।
देवनागरी माहि सोइ, रचहुँ जोरि जुग पानि ॥ १० ॥
भाव रहित भाषा-विरस, कतहुँ न काव्य-प्रवीन।
इत-उत के सत्संग सों विवस, प्रेरना लीन ॥ ११ ॥
कान्यकुब्ज-द्विज-गगन बिच, अवर प्रभाकर भास।
जनमि, 'प्रभाकर' प्रवर किय, कुल-उपमन्यु प्रकास ॥ १२ ॥
विदित 'अवस्थी' आस्पद, बीते बरही साख।
विक्रम चौंसठ, सत-उनिस, पाँच कृष्ण वैशाख ॥ १३ ॥
रानीकटरा—लखनऊ, संज्ञा 'नन्दकुमार'।
तनय-दयाशंकर, जनम, मम परिचय विस्तार ॥ १४ ॥
निर्गुण-सगुण अनन्त छवि, जड़-जंगम जगरूप।
बन्दि सकल, रचना करहुँ 'कृत्तिवास'-अनुरूप ॥ १५ ॥
जतन भगीरथ, अल्प बल, तबौं लगी यह साध।
गुनी-सन्त-सज्जन सकल, छमहिं मोर अपराध ॥ १६ ॥

आदि काण्ड

(हिन्दी पद्यानुवाद)

नारायण चार अंश जन्म प्रकाश

सुखद सकल लोकन अति पावन * परमधाम गोलोक[1] सुहावन
विटप कल्पतरु अचरज नयना * मन-वाञ्छित अनन्त फल दयना
चन्द्र-सूर्य जहँ सतत[2] प्रकासा * विष्णु सहित श्री[3], दिव्य निवासा
नेतपाट[4] युत सुभग सिंहासन * नारायण विराज वीरासन
एक अंस प्रभु अस मन लाई * चारि अंस प्रगटैं रघुराई
राम भरत लक्ष्मण रिपुसूदन * यहि विधि चतुर्मूर्ति मधुसूदन
रमा रूप सोहति सिय वामा * कर जोरे कपि करत प्रनामा
चँवर भरत सत्रुघ्न डुलावत * कनक छत्र सौमित्रहिं भावत

(बंगला मूल)

श्लोक—राम लक्ष्मणपूर्वज रघुवरं सीतापतिं सुन्दरम् ।
काकुत्स्थं करुणामयं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम् ॥
राजेन्द्र सत्यसन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्तिमूर्त्तिम् ।
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् ॥

दक्षिणे लक्ष्मणोधन्वी वामतो जानकी शुभा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं नमामि रघूत्तमम् ॥
रामाय रामचन्द्राय रामभद्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥

नारायणेर चारि अंशे जन्म प्रकाश

गोलोक बैकुण्ठपुरी सबार उपर * लक्ष्मीसह तथाय आछेन गदाधर
तथाय अद्भुत वृक्ष देखिते सुचारु * जाहा चाइ ताहा पाइ नाम कल्पतरु
दिवानिशि तथा चन्द्र सूर्य्येर प्रकाश * तार तले आछे दिव्य विचित्र आवास
नेतपाट सिंहासन उपरेते तुली * वीरासने बसिया आछेन वनमाली
मने मने प्रभुर हइल अभिलाष * एक अंश चारि अंश हइते प्रकाश
श्री राम भरत आर शत्रुघ्न लक्ष्मण * एक अंशे चारि अंश हैला नारायण
लक्ष्मीमूर्ति सीतादेवी बसेछेन बामे * स्वर्णछत्र धरेछेन लक्ष्मण श्रीरामे
चामर ढुलाय तारे भरत शत्रुघ्न * जोड़ हाते स्तव करे पवननन्दन

१ बैकुण्ठ २ निरन्तर ३ लक्ष्मी ४ प्राचीन वस्त्र, अलौकिक ।

यहि छवि प्रभु बैकुण्ठ विराजा * पहुँचे तहँ नारद मुनिराजा
भक्ति सने श्रीहरि-गुण गावत * वीणा मंजुल तार बजावत
पंचायतन सरूप निहारी * सिथिल गात मोचत दृग वारी
चकित रूप अद्भुत नव हेरी * नारद डगर[1] लीन शिव केरी
त्रिकालज्ञ शिव अन्तरयामी * हरिहैं सकल कुतूहल स्वामी
पंथ प्रथम भेंटे चतुरानन * लखि विरंचि हुलसे मुनिपावन
तिन सन करि सब कथा प्रकासा * ले विधि चले शिखर कैलासा
उमा सहित सोहत जहँ शंकर * बन्देउ तिनहिं सहित विधि मुनिवर

दो० कस विरंचि? कस तपोधन? मुनि! अस पुलकित गात।
हरषि शंभु पूछेउ, कवन हेतु आगमन तात ॥ १ ॥

सुनि ब्रह्मा मृदु गिरा उचारी * सुनहु कुतूहल अति त्रिपुरारी
परमधाम गोलोक सुहावन * परमेश्वर त्रिभुवनपति पावन
तिनकर चारि अंश कर रूपा * नव प्रगटेउ कस आज अनूपा
विधि[2] सन सुनि सब कहेउ त्रिलोचन * लखेउ जु छवि, तुम, पाप विमोचन
बरस वितीतहिं साठि हजारा * सोइ सरूप, प्रभु ले अवतारा
निसिचरनाह प्रचण्ड दशानन * तेहि विनासि भुवि-भार उतारन
अवधपुरी अति रम्य विशाला * सूर्यवंश दशरथ महिपाला

एइरूपे बैकुण्ठे आछेन गदाधर * हेनकाले चलिला नारद मुनिवर
वीणा यंत्र हाते करि हरिगुण गान * उत्तरिल गिया मुनि प्रभु विद्यमान
रूप देखि विह्वल नारद चान धीरे * वसन तितिल तार नयनेर नीरे
हेनरूप केन धरिलेन नारायण * इहा जिज्ञासिव गिया यथा पंचानन
भावी भूत वर्त्तमान शिव भाल जाने * ए कथा कहिब गिया महेशेर स्थाने
एतेक भाविया यात्रा करे मुनिवर * उत्तरिला प्रथमेते ब्रह्मार गोचर
विधातारे लये जान कैलास शिखरे * शिव के बन्दिया परे बन्दिल दुर्गारे
निरखिया दुइजने तुष्ट महेश्वर * जिज्ञासा करेन तबे तांदेर गोचर
कह ब्रह्मा कह हे नारद तपोधन * दोंहे आनन्दित अद्य देखि कि कारण
बलेन विरिञ्चि शुन देव भोलानाथ * देखिलाम गोलोके अपूर्व्व जगन्नाथ
देखिलाम पूर्व्वेते केवल नारायण * चारि अंश देखि एवे किसेर कारण
ब्रह्मा वाक्य शुनिया कहेन कृत्तिवास * सेइरूप इहकाले हइबे प्रकाश
ये रूपे आछेन हरि गोलोक भितर * जन्म निबे आठ षाटि सहस्र वत्सर
रावण राक्षस हबे पृथ्वीमण्डले * ताहाके वधिते जन्म लेबेन भूतले
दशरथ घरे जन्मिबेन चारिजन * श्रीराम लक्ष्मण आर भरत शत्रुघ्न

१ राह। २ ब्रह्मा।

तिन कहँ तीनि नारि छबि-अयनी * तिन सुभधरी सुमंगल-दयिनी
चारि अंश प्रगटहिं मधुसूदन * राम भरत लछिमन रिपुसूदन
राम, सत्यपितु पालन हेतू * गवनहिं वन सिय-लखन समेतू
सिय उद्धार, नास खल रावन * लव-कुश सिय-सुत सुख-सरसावन
गोवध आदि अधम जे पापा * राम नाम मेटै संतापा
राम नाम भवसागर तारन * मुक्तिदेन पातकी उबारन
हँसि विधि कही सुनहु वृषकेतू[1] * अवनि[2] कहहु अस को अघहेतू[3]
करहु प्रतीत[4], शंभु कह बानी * भूतल[5] एक अधम अज्ञानी
राममंत्र तेहि दीजिय जाई * तासु प्रभाव मुक्ति जग पाई

दो० को अस नर ? सोचन लगे, विधि नारद धरि ध्यान ।
'रत्नाकर' मुनि च्यवन-सुत, है पातकी महान ॥ २ ॥

लूटै बधै पथिक बनचारी * दस्युवृत्ति, रुचि पापाचारी
मुनि-विधि[6] चले संत के भेषा * विटप चढ़े रत्नाकर देखा
पथिक घात ताकै मग ओरा * बिफल आजुदिन बीतेउ मोरा
हरषेउ निरखि पाप - अनुगामी * लूटौं बमन, हतौं दोउ स्वामी
लौहदण्ड ले सो तेहि मारा * तासु विफल विधि कीन्ह प्रहारा
मायाबस, कर अस्त्र न उठई * शठ कौतुक मन चिंतन करई

एक अंश नारायण चारि अंश ह'ये * तिन गर्भे जन्मिबेन शुभक्षण पेये
जानकीसहित राम लइया लक्ष्मण * पितृसत्य पालनार्थे जाइबेन वन
सीता उद्धारिबे राम मारिया रावण * लवकुश नामे हबे सीतार नन्दन
मनुष्य गोहत्या आदि जत पाप करे * एक बार रामनामे सर्ब्ब पापे तरे
महापापी ह'ये यदि राम नाम लय * संसार समुद्रे तार मुक्ति लाभ हय
हासिया बलेन ब्रह्मा शुन त्रिलोचन * पृथ्वीते हेन पापी आछे कोन जन
धूर्ज्जटि बलेन मम वाक्ये देह मन * मध्यपथे महापापी आछे एक जन
तारे गिया रामनाम देह एक बार * तबे से नितान्त मुक्त हइबे संसार
विधाता नारद तारा भावेन दुजन * पृथिवीते महापापी आछे से केमन
च्यवन मुनिर पुत्र नाम रत्नाकर * दस्युवृत्ति करे सेइ बनेर भितर
विरिञ्चि नारद दोहे सन्यासी हइया * रत्नाकर काछे दोहे मिलिल आसिया
विधातार माया हैल रत्नाकर प्रति * सेइ दिन सेइ पथे कारो नाहि गति
उच्चवृक्षे चड़िया से चतुर्द्दिके चाय * ब्रह्मा नारदेरे पथे देखिवारे पाय
भावे मुनि रत्नाकर लुकाइया बने * सन्यासी मारिया वस्त्र लइब एक्षणे
विधाता नारदे लये जान सेइ पथे * लोहार मुद्गर लोले ब्रह्मारे बधिते
ब्रह्मार मायाते तार मुद्गर ना चले * मायाते मुद्गर बद्ध तार करतले

१ शंकर २ पृथ्वी ३ पाप का रूप ४ विश्वास ५ पृथ्वी पर ६ नारद और ब्रह्मा।

पूछेउ सहित सनेह विधाता * को तुम कवन प्रयोजन ताता
लूटहुँ बसन हरहुँ तव प्राना * मम नितनेम[1] न तुम अनुमाना
मम बध किये कतक धन पावै * कवन लोभ नित पाप कमावै
सौ रिपु हने जु पातक अहहीं * एक धेनु-बध सोइ नर लहहीं
सुनु सठ शत गोबधहिं समाना * लिये एक अबला कर प्राना
शत नारी सम विप्र-विनासा * टारे टरहि न सो अघ-त्रासा[2]
एक ब्रह्मचारी बध करई * शत द्विज हनै, न अन्तर परई
एते पाप बरन बहुरासी * अगनित पाप बधे संन्यासी
बिचरैं जहाँ संत बनवासी * चारि कोस महि सो जनु कासी
सुनि सब सीख तबहुँ मन भावै * तौ पातक मनमौजि कमावै

दो० छद्मभेस बिधि-बैन सुनि, जड़ कीन्हेउ परिहास।
तुम सम केतक सन्त-मुनि, नित उठि करौं विनास ॥ ३ ॥

कह मुनि, यदि मम-बध तव प्रीती * मारहु अवनि विलोकि पुनीती[3]
पिपीलिका[4] जहँ कीट-पतंगा * जुरैं न लोभ सुगंध-प्रसंगा
गदाघात मम गात निपाता * कुचिलैं कीट, कवन सिर घाता
हे हतबुद्धि कुफल इन केरे * भागीदार कौन अघ[5] तेरे
लूट-पाट क्रय-विक्रय जेता * कहेउ दस्यु पुनि दर्प समेता

ना पारे मारिते दस्यु भावे मने मन * ब्रह्मा जिज्ञासेन बापू तुमि कोन जन
रत्नाकर बले तुमि ना चिन आमारे * लइब तोमार वस्त्र मारिया तोमारे
ब्रह्मा बले मारि मोरे कत पावे धन * करियाछ जत पाप कहिब एखन
शत शत्रु मारिले जतेक पाप हय * एक गो बधिले तत पापेर उदय
एक शत धेनु वध जेइ जन करे * तत पाप हय जदि एक नारी मारे
एक शत नारी हत्या करे जेइ जन * तत पाप हय एक मारिले ब्राह्मण
एक शत ब्रह्म वधे जत पाप हय * एक ब्रह्मचारी वधे तत पापोदय
ब्रह्मचारी मारिले पातक हय राशि * सङ्ख्यानाई कत पाप मारिले सन्यासी
जेइ पथ दिया गति करेन सन्यासी * आडेदीर्घे चारिकोश सम पुरीकाशी
से पाप करिते जदि थाके तव मन * करह ए पाप सब कहिनु एखन
शुनिया कहेन दस्यु रत्नाकर हासि * मारियाछि तोमाहेन कतेक सन्यासी
ब्रह्मा बलिलेन जदि ना छाडिबे मोरे * भाल स्थल देखिया हे वध्रह आमारे
जथा कीट पतङ्गादि पिपिलिका गन्धे * लोभे ना आइसे मृत खाइते आनन्दे
मारिबे दण्डेर बाड़ि पाड़िब भूमिते * पिपिलिका मरिबेक आमार चापेते
ब्रह्मा बलिलेन पाप कर कार लगि * तोमार ए पातकेर केवा हबे भागी
रत्नाकर बले जत ल'ये आइ धन * मातापिता पत्नी आमि खाइ चारिजन

१ नित्य का नियम (धन्धा) २ पाप का दुःखमय भोग ३ पवित्र ४ चींटी ५ पाप।

विलसहिं मातु-पिता अरु गृहनी * भागीदार सकल मम करनी
कह विरञ्चि तव मति बौरानी * ते तव पाप-युक्त ! कस जानी ?

रत्नाकर का पापक्षय आरंभ

पातक, तव पुरुषार्थ विशेषा * करै-मरै सो जग यह लेखा
नहिं प्रतीति तौ जाहु निकेतू[1] * जो परिजन साक्षी तव हेतू
तौ पुनि लौटि करहु बध मोरा * तरु ढिग बैठि, लखहिं मग तोरा
भाइ जुगुति[2], दस्यु मन चिन्तय * रहै कि भागि जाय मुनि, संसय
है भरोस तेहिं पठयि विधाता * लावहु मत पत्नी-पितु-माता
कछु पग बढ़ै, लखै पुनि तस्तर * करत जहाँ विश्राम संतवर
प्रथम जाय पितु सन रत्नाकर * कहत, सुनहु मम विनय गुनागर
हरहुँ द्रव्य नित करि नरघाता * सेवहुँ सकल स्वपरिजन ताता
यहि विधि सुत के जे अपकर्मा * भागीदार अहौ, पितु धर्मा

दो० जनक छोभ, सुनि सुत बयन, बोले जड़ मतिहीन !
पुत्र-पाप पितु लहै, अस, शास्त्र-मंत्र को दीन ॥ ४ ॥

पिता सुवन कहुँ सुत पितु रूपा * जगत-चक्र यहि भाँति अनूपा
तव शिशुकाल कठिन श्रम धारी * पोषण किय पितु-धर्म विचारी

जेबा किछु वेचि किनि खाइ चारिजने * आमार पापेर भागी सकले ए क्षणे
शुनिया हासिया ब्रह्मा कहिलेन तबे * तोमार पापेर भागी तारा केन हबे
करियाछ जत पाप आपनार काय * आपनि करिले पाप आपनार दाय
जिज्ञासा करिया तुमि आइस निश्चय * तोमार पापेर भागी तारा जदि हय
नितान्त आमारे बध कर तबे तुमि * एइ वृक्ष तलेते बसिया थाकि अमि
हरिष विषादे दस्यु लागिल भाषिते * बुझिलाम एइ युक्ति कर पलाइते
ब्रह्मा बले सत्यकरि ना पालाब आमि * माता पिता दारा सुते पुछे एस तुमि
अत पर जाय दस्यु फिरिफिरि चाय * भावे बुझि भाडाइया सन्यासी पलाय
प्रथमे पितार काछे करे निवेदन * आदिकाण्ड गान कृत्तिवास विचक्षण

रामनामे रत्नाकरेर पापक्षय

मनुष्य मारिया आमि जत धन आनि * आमार पापेर भागी हओ किना तुमि
पुत्रेर बचन शुनि कहिछे च्यवन * हेन कथा तोमाय बलिल कोन जन
कोन शास्त्रे शुनियाछ के कहे तोमारे * पुत्र-कृत पाप केन लागिबे पितारे
अज्ञान बालक तोरे कि कहिब कथा * कभु पिता पुत्र हय पुत्र हय पिता
जखन बालक छिले पिता छिनु आमि * एखन बालक आमि पिता हैले तुमि
जखन बालक छिले ना छिल यौवन * बहुदुःख करि तोमाय करेछि पालन

१ घर २ युक्ति, उपाय।

अनुचित-उचित जु मैं तव कीन्हा * ताकर कुफल न तो कहँ दीन्हा
जरठ भयउँ, शिशु सम असमर्था * सब विधि अब तैं युवक समर्था
पितु समान पालन करु मोरा * जनक रूप तैं, मैं शिशु तोरा
सो पालन मिस, करु नित हिंसा * कम अपराध मोर अवतंसा
सुनत जनक[1] कर यह खर[2] बानी * सीस नवाय दुखित अज्ञानी
अति विनम्र वरनेउ ढिग-जननी * पापमयी निज दैनिक करनी[3]
बाँटहु मातु मोर कछु पापा * नतरु मिटै किमि मम संतापा
सहेउँ कलेस गर्भ दस मासा * मम पोषन तव धर्म प्रकासा
सोइ पालन तैं कृत पसुवेसू * तव पातक मोहि किमि लवलेसू[4]
लोचन लचे दस्यु मन पीरा * साहस जोरि गयो तिय[5] तीरा
प्रिय ! मम हिंसा-वृत्ति कमाई * बिलसहु सुमुखि सकल सुख पाई
तो पुनि पाप बटावहु मोरे * सुनि तिय विनय कीन्ह कर जोरे
जेहि सुभ घड़ी गहेउ मम हाथा * मम पालन माथे तव नाथा
पोषन-भरन हेत नरघाता * केहि आदेस करहु नित ताता

दो० पाप-पुन्य सुख-दुख सहौं, आजीवन पति संग ।
पालन हित पातक करहु, लगहि न मोरे अंग ॥ ५ ॥

धीरज छूट विकल रत्नाकर * किमि अब तरहुँ विषम भवसागर

जत करियाछि पाप आपनि ससारे * मे सब पापेर भाग ना लागे तोमारे
एवे पिता हइयाछ पुत्रतुल्य आमि * कोनरूपे आमारे पुषिबे नित्य तुमि
मनुष्य मारिते तोमा बले कोन जन * तोमार पापेर भागी हब कि कारन
शुनिया बापेर कथा हेट माथा करे * कांदिते कांदिते कहे मायेर गोचरे
सत्य करि आमारे गो कहिबे जननी * आमार पापेर भागी हबे कि आपनि
जननी कहिछे श्रद्धा हइया आपार * एक दिवसेर धार के शोधे आमार
दश मास गर्भे धरि पुषेछि तोमाय * तव कत पाप पुत्र ना लागे आमाय
शुनिया मायेर वाक्य माथा हेट करे * पत्नीर निकटे गिया सकल कहिल
जिज्ञासि तोमारे प्रिये सत्य करि कओ * आमार पापेर भागी हओ किन हओ
शुनिया स्वामीर वाक्य कहिछे रमणि * निवेदन करि प्रभु शुन गुणमणि
विधाना करिछे मोरे अर्द्धाङ्गेर भागी * अन्य पाप निते पारि ए पाप तेयागि
जखन करिले तुमि आमारे ग्रहण * सर्वदा करिबे मम रक्षण पोषण
आर जत पाप पुण्य भाग लागे मोरे * पोषणार्थे पापभाग ना लागे आमारे
मनुष्य मारिते केवा बलिल तोमाय * एइमात्र जानि आमि पालिबे आमाय
शुनिया भार्यार कथा रत्नाकर डरे * केमन तरिब आमि ए पाप सागरे

---

१ पिता २ खरी, कटु सत्य ३ नित्य कर्म ४ तनिक भी लगाव ५ पत्नी ।

नरघाती पातकी अपावन * अहह बृथा बीतेउ मम जीवन
मुद्गर-लौह हनेउ सिर माहीं * गिरेउ अचेत च्यवनसुत ताहीं
चलेउ सँभरि पुनि दृग भरि आँसू * विटप तरे जहँ मुनिन निवासू
करि दण्डवत जोरि जुग पानी * करहु सनाथ दास निज जानी
पूछेउँ सबन तीय-पितु-माता * कोउ न अंस-अघ[1] लेइ विधाता
दिव्य ज्ञान जो मुनि सों पावौं * सफल जनम करि, पाप नसावौं
सर[2] नहाइ करि अंग पुनीता * आवहु अस विधि कही सप्रीता
रत्नाकर सरवर ढिग गयेऊ * जलचर विकल, शुष्क जल भयेऊ
दस्यु गनानि, मनै बहु त्रासा * बरनेउ कथा लौटि विधि पासा
अगम सलिल नित, सो जलहीना * अधम दीठि[3] मम सो कस कीना
बीतेउ पाप च्यवन-सुत तारन * नारद सों मत करि चतुरानन
नीर कमण्डल ते सिर डारी * महामंत्र मुनि देन बिचारी
ब्रह्मा निकट आइ तेहि काना * 'राम' नाम कर दिय बरदाना
करत पाप नित जड़ भइ रसना * 'राम नाम' तेहि मुख निकसत ना
लखि-कौतुक विरंचि चितलागी * किमि कहि सकै राम हतभागी
दो० मारत जन बीतेउ जनम, 'मरा' शब्द अनुकूल।
तेहि पलटे सक 'राम' कह, अस सोचेउ जगमूल[4] ॥ ६ ॥

डुबिनु पापेते आमि कि हइबे गति * काँदिते लागिल दस्यु स्मरिया दुष्कृति
लोहार मुद्गर निज माथाय मारिया * पडिल भूमेते तबे अचेतन हैया
उठिया मुनिर पुत्र भाविल अन्तरे * सेइ महाजन यदि मोरे कृपा करे
एइ भावि उभयेर निकटेते गिया * कहिल ब्रह्मार पाय दण्डवत् हैया
एके-एके जिज्ञासिनु आमि सबाकारे * मम पापभागी केह नाहिक ससारे
आपनि करिया कृपा दिले दिव्यज्ञान * ए सकल पापे किसे हब परित्राण
कहिले न पितामह मुनिर कुमारे * करिया आइस स्नान तुमि सरोवरे
शुनिया चलिल दस्यु सरोवर पाड * शुकाइया गेल जल दृष्टिमात्र तार
शुष्क-स्थले मरे मीन मकर कुम्भीर * कहिल ब्रह्मार काछे ना पाइया नीर
छिल ये अगाध जल एइ सरोवरे * मम दृष्टिमात्र गेल शुकाये अन्तरे
शुनिया कहेन ब्रह्मा सङ्गी तपोधने * हइयाछे पूर्ण पाप तरिबे केमने
कमण्डलु जल छिल दिलेन माथाय * महामन्त्र मुनि तारे करिबारे जाय
निकटे आसिया ब्रह्मा कहे तार काने * एक बार राम-नाम बल रे बदने
पापे जड़ जिह्वा राम बलिते ना पारे * कहिल आमार मुखे ओ कथा ना स्फुरे
शुनिया ब्रह्मार बड चिन्ता हैल मने * उच्चारिबे-राम नाम ए मुखे केमने
मकार कहिले अग्रे रा कहिले शेषे * तबे वा पापीर मुखे रामनाम आसे

१ पाप मे साझा २ सरोवर ३ दृष्टि ४ ब्रह्मा।

मृतकहिं कहत कौन विधि-नागर[1] * 'मड़ा-मड़ा' बोलेउ रत्नाकर
मड़ा न कहु, जपु 'मरा' निरन्तर * होई राम उदय उर-अन्तर[2]
काठ सुखान त्रिटप[3] दिखराई * ककस[4] कहत ? पूछत मुनिराई
करि अनुमान, जतन बहु कीना * 'मरा' काठ, मुनिसुत कहि लीना
'मरा-मरा' तेहिं शब्द सुहावा * सगुन राम मानहुँ सो पावा
पुलकित रोम, नैन स्रव नीरा * रटनि एक, नहिं चेत सरीरा
उलटै जापु जपत अविरामा * पलटि भयेउ सो रामै-रामा
अनल पाय जिमि भसम कपासा * राम नाम सब पातक नासा
राम-नाम लखि अमित प्रभावा * चकित विरंचि[5] मोद अति पावा

ब्रह्मा द्वारा रत्नाकर का वाल्मीकि नामकरण तथा रामायण रचने का वरदान

बोले, सुनहु तपोधन ज्ञानी * सदा वचन-शिव अमिट बखानी
रत्नाकर समाधि लवलीना * वत्सर साठि सहस जप कीना
एक नाम, इक थल, एकासन * अडिग जपत तन चुनेउ कीटगन
विरहित मांस अस्थि अवसेसा * माटी जमि जिमि पिण्ड विसेसा
कण्ट काँस कुस जमत ढूह पर * तेहि बिच राम नाम निसिवासर
बीते साठि सहस जब वत्सर * कमलासन[6] हेरेउ रत्नाकर

ब्रह्मा बलिलेन तारे उपाय चिन्तिया * मनुष्य मारिले बापू डाक कि बलिया
शुनिया ब्रह्मार कथा बले रत्नाकर * मृत मनुष्येरे मडा बले सब नर
मडा नय मरा बलि जप अविराम * तव मुखे बाहिरिबे तबे रामनाम
शुष्क काष्ठ देखिलेन वृक्षेर उपरे * अगुलि ठारिया ब्रह्मा देखान ताहारे
बहुक्षण रत्नाकर करि अनुमान * बलिल अनेक कष्टे मरा काष्ठखान
मरा-मरा बलिते आइल राम नाम * पाइल सकल पापे दस्यु परित्राण
तुलाराशि जेमन अग्निते भस्म हय * एक बार राम नामे सर्व्व पाप क्षय
नामेर महिमा देखि ब्रह्मार तराम * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

ब्रह्मा कर्तृक रत्नाकरेर वाल्मीकि नाम ओ रामायण रचना करणेर वरदान

ब्रह्मा कह शुनह नारद तपोधन * जे कहिल मिथ्या नहे शिवेर वचन
राम नाम ब्रह्मा स्थाने पेये रत्नाकर * सेइ नाम जपे षाटि हाजार वत्सर
एक नाम जपे एक स्थाने एकासने * सर्वाङ्ग खाइल बलमीकेर कीटगणे
मांस खाइया पिण्ड करिल सोसर * हइल कण्टक-कुश ताहार उपर
खाइल सकल मांस अस्थिमात्र थाके * वाल्मीकेर मध्ये मुनि राम नाम डाके
ब्रह्मार मुहूर्त्त षाट हाजार वत्सर * पुनः आइलेन ब्रह्मा जथा मुनिवर

१ बुद्धिमान २ हृदय के भीतर ३ सूखा वृक्ष ४ किस प्रकार ५ ब्रह्मा ६ ब्रह्मा।

धरती ऊँचि, जापु सुनि परही * मानुष-तन न विधिहिं कहुँ लखही

दो० पिण्ड बीच मुनिसुत जपत, जानि विधाता लीन।
सात दिवस बरसैं जलद, इन्द्रहिं आयसु दीन ॥ ७ ॥

अविरल[1] जल मृत्तिका[2] बहाई * शुभ्र अस्थि-तन विधि दरसाई
सुनि विधि-टेर चेतना जागी * दौरि दण्डवत किय अनुरागी
कियेउ मुक्त मोहिं, दै हरि नामा * पुलकित पुनि पुनि करत प्रनामा
रत्नाकर तजि नाम विधाता * वाल्मीकि[3] जग किय विख्याता
तैं सुत सात काण्ड सुखकारी * राम - रुचिर - रचना अधिकारी
राम नाम किय तोहिं अति पावन * रचहु चरित सोइ गाइ सुहावन
विद्याहीन न पिंगल-ज्ञाना * केहि विधि रचिहौं राम-पुराना
वाल्मीकि कर सविनय वानी * सुनि, प्रबोधि, बोले विधि ज्ञानी
सरस्वती तव गिरा निवासा * सहज काव्य तहँ होइ प्रकासा
जो वरनै तैं छन्द ललामा * सोइ जग जनमि, करैं श्री रामा
दै वर, गमन किया विधि, देशा * वाल्मीकि हिय हरष विशेषा

नारद द्वारा वाल्मीकि को रामायण की रचना का आभास देना

वाल्मीकि एकदा विटप तर * जपत राम, जहँ सुखद सरोवर

सेखाने आसिया ब्रह्मा चारिदिके चाय * मनुष्य नाहिक किन्तु रामनाम हय
राम नाम शुने मात्र पिण्डेर भितर * जानिल इहार मध्ये आछे मुनिवर
आज्ञा करिलेन ब्रह्मा डाकि पुरन्दरे * सात दिन वृष्टि कर पिण्डेर उपरे
वृष्टिते गलिया गेल मृत्तिका सकल * देखिल केवल अस्थि आछे अविकल
सृष्टिकर्ता करिलेन ताहारे आह्वान * पाइया चैतन्य मुनि उठिया दाँड़ान
ब्रह्मारे, कहिल मुनि करिया प्रणाम * मोरे मुक्त कैला तुमि दिया रामनाम
ब्रह्मा बले तव नाम रत्नाकर छिल * आजि ह'ते तव नाम वाल्मीकि हइल
वल्मीकेते छिला जेइ सेइ ए विधान * सात काण्ड कर गिया रामेर पुराण
जेइ राम नाम हैते हइला पवित्र * सेइ ग्रन्थ रच गिया रामेर चरित्र
जोड़ हाते बले मुनि ब्रह्मा विद्यमान * केमन हइबे ग्रन्थ केमन पुराण
केमन कविताछन्द आमि नाहिजानि * शुनिया विधाता ताँरे कहिछेन वाणी
सरस्वती रहिबेन तोमार जिह्वाय * हइबे कविता राशि तोमार कथाय
श्लोकछन्दे पुराण करिबे तुमि जाहा * जन्मिया श्रीरामचन्द्र करिबेन ताहा
एत बलि ब्रह्मा गेल आपन भुवन * आदिकाण्ड गान कृत्तिवास विचक्षण

नारदकर्तृक वाल्मीकि के रामायण रचनार आभास प्रदान

एक दिन से वाल्मीकि सरोवर कूले * राम नाम जपे बसि सुखे वृक्ष मूले

---

१ लगातार २ मिट्टी ३ वल्मीक अर्थात् दीमकों से व्याप्त मिट्टी के ढेर से निकलने के कारण ब्रह्मा ने रत्नाकर को वाल्मीकि नाम दिया।

एक क्रौंच पच्छिन की जोरी * बिलसति जहाँ निपट मदभोरी
व्याध-बान-हत खग - निस्संका * आकुल गिरा धरनि, मुनि अंका
'अहह राम !' मुनि वचन उचारा * मुग्धकाल पच्छी किन मारा
बिन अपराध कीन खग - हिंसा * अस कुकर्म ! मम रहत नृसंसा

दो० नरक बास पावै अधम, शाप दियो भरि शोक।
शाप देत बानी प्रगट, छन्दबद्ध श्लोक ॥ ८ ॥

जो न होत मुनि कहँ यह शोका * तौ कस प्रगटत पुण्यश्लोका
'मा निषाद'[1] पद अमित अनन्दा * मुनि लिख लियेउ चतुष्पद छंदा
मर्म न विदित, चकित निज वचना * आश्रम - भरद्वाज पुनि गमना
दोउ गुरु-शिष्य मनन-आसीना[2] * मुनी उतै नारद मधुबीना
वाल्मीकि मुनि काज सवाँरन * नारद कहँ पठयो चतुरानन
करि बन्दना, विनय रस पागे * रचना धरी देवमुनि[3] आगे
नारद ताकर मर्म बुझावा * वाल्मीकि मन अति सुख पावा
रामचरित बरनो यहि छंदा * मानव - रूप सच्चिदानन्दा
रामभक्त, सब विधि सब लायक * बरनौ तात ! चरित-रघुनायक
सुर्यवंश दसरथहि निकेतन * राम भरत लछमन रिपुसूदन

क्रौञ्चक्रौञ्ची बसि तथा आछे वृक्षतले * एक व्याध सेइ पक्षी विन्धिलेक नले
बिन्धिलेक सेइ पक्षी शृङ्गारेर काले * व्याकुल हइया पड़े वाल्मीकिर कोले
राम स्मरि बले मुनि कार्णे दिया हात * जीवहत्या केलि पापी आमार साक्षात्
शृङ्गारे मारिलि पाखी बड़इ कुकर्म्म * पापिष्ठ नारकि तुइ नाहि तोर धर्म्म
बिना अपराधे हिंसा कर पक्षीजाति * बुझिलाम तोमार नरके हबे स्थिति
एतेक बलिया मुनि शाप दिल ताके * एइ शोके एक श्लोक निःसरिल मुखे
शोक हैते श्लोकेर हइल उपादान * मा निषाद बलि तार हय उपाख्यान
चारि पद छन्द मुनि लिखिलेन हाते * लिखिया आपनि मूल ना पारे बुझिते
भरद्वाज सन्निधाने करिला गमन * गुरु शिष्य बसिया आछेन दुइजन
ब्रह्मा पाठाइया दिल तथा नारदेरे * वाल्मीकिरे उपदेश करिबार तरे
जेखाने वाल्मीकि मुनि भावेन बसिया * सेखाने नारद मुनि उत्तरिल गिया
नारद देखिया मुनि सम्भ्रमे उठिल * दण्डवत् करि बसिते आसन दिल
सेइ श्लोक शुनाइल मुनि नारदेरे * नारद करिया अर्थ बुझाइल तारे
एइ श्लोक छन्दे तुमि कर रामायण * उपदेश कहि जानि तुमि से भाजन
सूर्य्यवंशे दशरथ हबे नरपति * रावण बधिते जन्मिलेन लक्ष्मीपति

१ चतुष्पद अनुष्टुप छंद का प्रथम चरण जिससे राम का पुण्यचरित्र वाल्मीकीय रामायण मे आरम्भ हुआ है। यह पद अकस्मात् उनके मुख से आहत पक्षी को देखकर निकल पड़ा।
२ विचार करने मे लीन ३ नारद।

तीनि गर्भ, जन्मैं चारिउ जन * यहि विधि चतुर्मूर्त्ति नारायन
मिथला जनक जनमि वैदेही * चाप भंजि हरि ब्याहेउ तेही
पितु-आयसु धरि कृपानिकेता * बन गवने सिय-लखन समेता
तहँ सिय-हरन कियेउ दशग्रीवा * पुनि मित्रता सुकपि सुग्रीवा
बालि-हतन सुग्रीवहिं राजू * खोजेउ सिय, कपि सकल समाजू
भुजा बीस बधि लंक दसानन * लौटि अवधपुरि कीन्हेउ सासन

दो० बरनी रावन-दिग्विजय, कथा अगस्त्य ललाम।
पंचमास कर गर्भ सिय, पुनि सोइ त्यागेउ राम ॥ ६ ॥

गोपग्राम सियकर, तप-उपवन * लव-कुश जनम जानकीनन्दन
रामायण वेदादि पुराना * सिखवहु तिनहिं अस्त्र विधि नाना
ग्यारह सहस वर्ष छिति पालन * सुतहिं राज प्रभु स्वर्ग सिधारन
रचहु चरित जो मुनि गुन सीला * करिहैं जनमि राम नर-लीला
देवलोक नारद पगु धारा * चन्द्रवंश पुनि इमि बिस्तारा

चन्द्रवंश का वृत्तान्त

सागर-मथन 'चन्द्र' आलोका * 'बुध' शशिसुवन विदित त्रयलोका
बुध 'पुरुरवा' नाम कर ताता * तेहि सुत 'सतावर्त' विख्याता
सतावर्त के स्वर्ग कहाये * 'श्वेत' नाम सुत-स्वर्ग सुहाये

श्रीराम भरत आर शत्रुघ्न लक्ष्मण * तिन गर्भे जन्मिबेन एई चारि जन
सीता देवी जन्मिबेन जनकेर घरे * धनुर्भङ्ग पणे ताँर विवाह तत्परे
पितार आज्ञाय राम जाइबेन वन * संगेते जाबेन तार जानकी-लक्ष्मण
सीतारे हरिया लबे लङ्कार रावण * सुग्रीव सहित राम करिबे मिलन
बालि के मारिया तारे दिबे राज्य भार * सुग्रीव करिया दिबे सीतार उद्धार
दशमुण्ड बिश हात मारिया रावण * अयोध्या जाय राजा हइबेन नारायण
करिबेन अगस्त्य रावण दिग्विजय * पुनरपि सीता के बर्ज्जिबे महाशय
पञ्चमास गर्भवती सीतारे गोपने * लक्ष्मण राखिबे लये तव तपोवने
कुश लव नामे हबे सीतार नन्दन * उभये शिखावे तुमि वेद रामायण
एगार सहस्र वर्ष पालिबेन क्षिति * पुत्रे राज्य दिया स्वर्गे करिबेन गति
जन्म हैते कहिलाम स्वर्ग आरोहण * करिबेन जन्मि इहा प्रभु नारायण
एत बलि नारद गेलेन स्वर्गवास * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

चन्द्रवंशेर उपाख्यान

सागर मन्थने 'चन्द्र' हइल उत्पन्न * हइल चन्द्रेर पुत्र बुध अति धन्य
पुरुरवा नामे हइल ताँहार नन्दन * ताँहार पुत्र शतावर्त्त जाने सर्व्वजन
स्वर्ग नामे ताँहार हइल एक सुत * हइल ताँहार पुत्र श्वेत नामे युत

श्वेत-पुत्र 'निमि' नाम कहावा * जिनि गाथा मुनि देवन गावा
मथेउ सबन निमि केर शरीरा * तेहि प्रगटेउ 'मिथि' सुत अतिवीरा
जिन यश मिथिला बसी उजागर * 'सीरध्वज' 'कुशध्वज' तिन कोंडर[1]
जग-कल्यान हेतु कछु साधन * सोचन लगे तबै चतुरानन
जनक-गेह लक्ष्मी अवतारा * 'सीता' रूप प्रगट संसारा
बरनेउ चन्द्रवंस कृत्तिवासा * सूर्यवंस कर बहुरि प्रकासा

सूर्यवंश का वृत्तान्त और मान्धाता का जन्म

आदिपुरुष जो अलख 'निरञ्जन' * 'शिव' 'विधि' 'विष्णु' प्रगट ताहीसन
सुवन तीन, पुनि एक नन्दिनी * सबन धरेउ मिलि नाम 'कन्दिनी'

दो० जरत्कारु अवतंस-मुनि, तिनसन रचेउ विवाह ।
नारद, भगिनी कन्दिनी, सहित समोद उछाह ॥ १० ॥

तिन कर सुता 'भानु' जेहि नामा * ऋषि 'जमदग्नि' केरि सो बामा
जिन घर एक अंश अवतारा * जनमे विष्णु[2] विदित संसारा
बीजपात तहँ किय चतुरानन * प्रगटे मुनि 'मरीच' मोइ कारन
सुत-मरीच 'कश्यप' विख्याता * कश्यप-सुवन 'सूर्य' सुखदाता
सूर्य-तनय 'मनु' नाम कहाये * तिन अतिरूप 'सुषेन' सुहाये
अंश-सुषेन 'प्रसन्न' भुआला * तेहि 'युवनाश्व' अवध महिपाला

नामेते हइल निमि ताँहार नन्दन * निमिके प्रशंसा करे जत देवगण
सकले मिलिया तार मथिल शरीर * जन्मिल ताहार पुत्र मिथि नामे वीर
सेइ बसाइल एइ मिथिला नगर * सीरध्वज कुशध्वज ताहार कोंडर
सृष्टिरक्षा हेतु धाता चिन्तिल अन्तरे * करिल लक्ष्मीर जन्म जनकेर घरे
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व सुन्दर * चन्द्रवंश रचना करिला कविवर

सूर्यवंशेर उपाख्यान ओ मान्धातार जन्म

आदि पुरुषेर नाम हैला निरञ्जन * ब्रह्मा विष्णु महेश्वर पुत्र तिन जन
तिन पुत्र हइला तनया एक जानि * सकले ताहार नाम राखिल कन्दिनी
जरत्कारु मुनिपुत्रे से नारद आनि * ताहारे विवाह दिल कन्दिनी भगिनी
सबे गाय बाजाय नारद मुनि वेणु * ताहाते जन्मिल कन्या नाम हैल भानु
ब्रह्मार काछेते तार पडिलेक बीज * ताहाते जन्मिल पुत्र नामेते मारीच
मारीचेर नन्दन कश्यप नाम धरे * तार पुत्र सूर्य्य इहा विदित संसारे
सूर्य्येर हइल पुत्र मनु नाम तार * सुषेण ताहार पुत्र रूपे चमत्कार
प्रसन्न ताहार पुत्र अति से सुठाम * हइल ताहार पुत्र युवनाश्व नाम
युवनाश्व हइल राजा अयोध्या नगरे * विवाह करिते गेल कन्दकेर घरे

---

१ बालक। २ परशुराम।

सुता 'कालनिधि' 'कंदक' नृपवर * वरेउ ताहि युवनाश्व तपागर
नृप न किन्तु किय तिय-सहवासा * पितुहिं, लाज तजि, सुता प्रकासा
क्रुद्ध निरखि तनया-संतापा * जामातहिं दीन्हेउ अभिशापा
तप सों लौटि इतै गृह आई * विनय द्विजन युवनाश्व सुनाई
संतति-वर पावहुँ द्विजदाया * सुनि हँसि कहेउ विप्र समुदाया
दरस तैं न पत्नी कर कीना * सुत-कामना कौन विधि लीना
तदपि यज्ञ-पुंसवन[1] गृहीता * पियैं रानि सोइ वारि पुनीता
इमि सतेज सुत इक उत्पन्ना * सविधि याग नृप किय संपन्ना
जल पुंसवन यतन धरि लीना * नृप युवनाश्व शयन तब कीना
अर्ध निसा गत, लागि पिपासा * आकुल नृपति सहत नहिं त्रासा

दो० श्वसुर शाप, भावी प्रबल, जो जल-यज्ञ महान।
धरेउ यतनयुत रानि हित, स्वयं कियेउ नृप पान ॥ ११ ॥

निसा विगत, रवि-वैभव जागा * विप्रन नीर-पुंसवन मांगा
तब राजन निसि-कथा बुझाई * सुनि सखेद कह द्विज-समुदाई
यज्ञ-सलिल कर अमिट प्रभाऊ * धारो गर्भ, न संसय राऊ
पूरन गर्भ विगत दस मासा * उदर फारि इक कुवँर प्रकासा

कालनिमि नामे कन्या कन्दक राजार * विवाह करिल युवनाश्व गुणाधार
विवाह करिल मात्र सम्भोग ना कर * लज्जा घुचाइया कन्या बलिल बापेरे
विशेष जानिया से कन्दक महीपति * अभिशाप करिलेक जामातार प्रति
तपस्या करिया जबे आइल भूपति * प्रणति करिया द्विजे मागिल सन्तति
आशीर्व्वाद कर मम हउक नन्दन * शुनिया ईषत् हास कहे द्विजगण
पत्नीसह तोमार नाहिक दरशन * केमने बलिब तव हउक नन्दन
एक युक्ति कर राजा यदि लय मन * यज्ञ कर ताहे तव हइबे नन्दन
यज्ञजल करा इबे राणी के भक्षण * हइबे तोमार पुत्र अति विचक्षण
यज्ञ करि जल राजा राखे निज घरे * शयन करिल राजा खाटेर उपरे
जखन हइल रात्रि द्वितीय प्रहर * जल आन बलि राजा हइल कातर
तृष्णाय पीडित राजा आकुल हइल * पुसवन जल छिल मुखेते टालिल
प्रभाते प्रकाश हैल सूर्य्येर किरण * जल आन बलि डाके यतेक ब्राह्मण
राजा बले द्विजगण करि निवेदन * रात्रिकाले जल आमि करेछि भक्षण
एकथा शुनिया बले यत महामति * रात्रिकाले जल खेले हबे गर्भवती
श्वशुरेर अभिशाप ताहारे लागिल * युवनाश्व महाराज गर्भ जे धरिल
दशमास गर्भ पूर्ण हइल राजार * बाहिर हइल पेट चिरिया कुमार

१ पुत्रेष्टि यज्ञ से प्राप्त जल।

अति वेदना, तजे नृप प्राना * मुनि विरंचि आदिक जे नाना
नामकरन कीन्हेउ 'मान्धाता' * सोइ सुत अवधभूप विख्याता
दानशील अम पुण्य गुणागर * सप्त द्वीप लौं नाम उजागर

सूर्यवंश निर्वंश और अयोध्या में हारीत का अभिषेक

तनय तासु 'मुचकुन्द' सुहाये * हर्षित होत युद्ध के पाये
भूतल भेदि चक्र जिन स्यन्दन * सप्तसिंधु किय, सोइ 'पृथु' नन्दन
पुनि 'इक्ष्वाकु' समर सुविशारद * जिन सारथि वशिष्ठ अरु नारद
'मतावर्त' पुनि ताकर ताता * 'आर्यावर्त' तासु प्रख्याता
तिनके 'भरत' अमित बलधारन * 'भारत' नाम ख्याति जेहि कारन
'भूधर' भरत केर अधिकारी * 'खाण्ड' प्रकट तेहि सुत धनुधारी
'दण्ड' सुवन तेहि पापाचारी * जेहि व्यभिचार दुखित पुरनारी
पुरजन नृपहिं निवेदन करहीं * तब सुत हेत अयोध्या तजहीं
मन अति छोह खाण्ड नरनाहा * सुवन दण्ड कर रचेउ विवाहा

दो० नगर तजन, वन गमन कर, आयसु नृप पुनि कीन्ह।
करि प्रवेश कानन सघन, दण्ड नगर तजि दीन्ह ॥ १२ ॥

नगर एक तहँ दण्ड बसावा * 'दण्डारण्य' नाम सोइ पावा
तहँ मुनिप्रवर 'शुक्र' कर वासा * नृप नित पठन जाय तिन पासा

नृपति त्यजिल प्राण पेये बड व्यथा * ब्रह्मा आदि पुत्रनाम राखिल मान्धाता
अयोध्या नगरे राजा हइल मान्धाता * सप्तद्वीप अधिपति पुण्यशील दाता
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व मेठाम * आदिकाण्ड गान मान्धातार उपाख्यान

सूर्य्यवंश निर्व्वंश एव अयोध्याय हारीतकेर अभिषेक

मान्धातार तनय हइल मुचुकुन्द * समर पाइले जार हृदये आनन्द
ताँहार तनय नामे पृथु नृपवर * जाँर रथचक्रे सप्त हइल सागर
ताँर पुत्र हइल इक्ष्वाकु नरपति * वशिष्ठ नारदे कैल रथेर सारथि
शतावर्त्त नामे ताँर हइल कुमार * आर्य्यावर्त्त नामे पुत्र हइल ताँहार
भरत ताहार पुत्र अति बलवान * जाहा हैते उपजिय भारत पुराण
जन्मिल ताहार पुत्र नामेते भूधर * खाण्ड नामे ताँर पुत्र अति धनुर्धर
खाण्डेर हइल पुत्र दण्ड नाम धरे * प्रजार कामिनी कन्या बलात्कार करे
कहिल जतेक प्रजा राजार गोचर * तब पुत्र हेतु छाड़ि अयोध्या नगर
एकथा शुनिया खाण्ड विषादित मन * पुत्रेर विवाह राजा दिल सेई क्षण
परे पाठाइल राजा दण्डेरे कानने * प्रवेश करिल दण्ड सेइ महावने
कानन मध्येते गिया दण्ड नृपवर * बसाइल दण्डारण्य नामेते नगर
ताहाते बसति करे शुक्र मुनिवर * पड़िवारे दण्ड नित्य जाय ताँर घर

एक दिवस तपहित मुनि गयऊ * गुरुगृह दण्ड उपस्थित भयऊ
तोरत सुमन सुतामुनि 'अब्जा' * लखि नृप दंड, काम मन उपजा
कामातुरहिं कहेउ मुनिबाला * उचित न, तैं पितु-शिष्य भुवाला
तदपि वरन मोहिं जो मन चहहू * प्रकट पिता सन आयसु लहहू
रुचै न मोहिं तव सीख-प्रसंगा * यहि छन केलि करयि मम संगा
करि वाटिका विवस मुनि-ललना * कुमति तृप्त निज कीन बासना
छत-विछत अरु नख आघाता * अब्जा कर कौमार्य निपाता
तप निवृत्त, मुनि आश्रम आये * आसन सलिल सुता सों पाये
दिवस कृतांत मुनि, सुता-सरूपा * निरखि क्षुब्ध, पूछेउ करि कोपा
कस शरीर श्रृंगार सहीता * सकुचि निवेदन किय भयभीता
'दंड' शिष्य तव सूने आवा * कियेउ विवस, मम धर्म नसावा
कुपित शुक्र नृप तुरत बुलावा * पोथिन सहित पढ़न मनु आवा
विद्यादान जो मोसन लीना * गुरु-दच्छिणा भली विधि दीना
दंड भस्म सों[1] राजु पुनीता * हाय, शाप दिय क्रोध अतीता

दो० भयो अवधपुर नृपति बिन, भानुवंस निर्वंस ।
मुनि-शापित असमय तजेउ, जीवन, दंड नृशंस ॥ १३ ॥

शुक्र गेल एकदिन तपस्या करिते * दण्ड राजा हेन काले गेलेन पड़िते
शुक्र कन्या अब्जा जाय पुष्प आहरणे * दण्ड तारे बले मोरे तोष आलिङ्गने
अब्जा बले शुन राजा कहि तव ठाँई * पितृ शिष्य तुमित सम्बन्धे हओ भाई
करिते विवाह यदि लय तव मन * पितृ विद्यमाने तबे कर निवेदन
राजा बले ए कथाय स्थिर नहे मन * विभा हबे पाछे आगे देह आलिङ्गन
गुरुकन्या बलि राजा ना करे विचार * पुष्पवाटिकाते तारे करे बलात्कार
प्रथम युवक राजा युवती मिलन * नखाघाते रक्तपात हैल सेइ क्षण
तपस्या करिया मुनि शुक्र एल घरे * आसन सलिल अब्जा दिल मुनिवरे
दिनान्ते अभुक्त मुनि पुडे कलेवर * कन्यारे देखिया मुनि कुपित अन्तर
मुनि बले अब्जा कन्या देखि ए केमन * तोमार सर्व्वाङ्गे देखि शृङ्गार लक्षण
लज्जा घुचाइया कन्या कहे तार पाश * तव शिष्य दण्डराजा कैल जाति नाश
शुनिया ए हेन कथा क्रोधे मुनिवर * दण्डक बलिया तबे डाकिल सत्वर
पुथि काँखे करि दण्ड आसे पड़िवारे * देखिया कुपित मुनि कहिल ताँहारे
पड़ाइया तोमारे यदि दियाछि चेतन * ताहार दक्षिणा भाल दिले हे एखन
कोपदृष्टे चाहिल तखन महाऋषि * राज्य शुद्ध हइल से दण्ड भस्मराशि
अयोध्याते दण्डराजा त्यजिल जीवन * निर्व्वंश हइल सूर्य्यवंशेर राजन

१ कुमारी दण्ड के नष्ट होने से राज्य पवित्र हो, ऐसा शाप ।

सुने बशिष्ठ माथे सब शासन * करैं प्रजा कर सुतसम पालन
जप तप नेम ब्राह्मण धर्मा * छूटे सकल राज्य के कर्मा[1]
अस चिन्तित सोचत मुनि ज्ञानी * जेहि छन दंड बुद्धि बौरानी
ऋतुवंती अज्जा तेहि काला * निश्चय धरेउ गर्भ मुनिबाला
शुक्र बुलाय मुनिश्र उचारी * तव दौहित्र[2] राज्य अधिकारी
शुक्र मर्म मुनि उर सुख पावा * अज्जा अवध महर्षि पठावा
मुनितनया किय अवध निवासा * प्रसवि कियेउ सुत मंजु प्रकासा
जननी जासु हरित[3]—जग जाना * नाम तासु 'हारीत' बखाना
अन्नप्राशन किय षटमासा * गुरु असीम मन अमित हुलासा
वर्ष एक गत, मुनी प्रवीना * सिंहासन सुत किय आसीना
वयस[4] अल्प, वैधव्य सरूपा * निरखि मातु आकुल सुतभूपा
नृप हरीत पूँछत इमि बानी * कहेउ जननि निज करुन कहानी
तव पितु सन नहिं भयि विधि विवाहू * बल प्रयोग बरबस नरनाहू
मुनि-सुने मम चरित विनाशा * मम-पितु-शाप तासु तन नासा
आख्यान-दंडक यहि रूपा * कृत्तिवास किय बरनि अनूपा

राजा हरिश्चन्द्र का उपाख्यान

भल हारीत प्रजा प्रतिपालत * तासु तनय 'हरिबीज' बखानत

अयोध्याते हैल राजा वशिष्ठ ब्राह्मण * पुत्रेर समान करि पाले प्रजागण
मुनि बले जप तप सब नष्ट हैल * मिछा राज्य करि मम जन्म गोडाइल
ध्यान करि जानिल से वशिष्ठ ब्राह्मण * अजार हइबेक एक उत्तम नन्दन
जेइकाले अजाकन्या ऋतुमती छिल * दण्ड राजा बलात्कार तखन करिल
ध्याने जानि वशिष्ठ कहेन शुक्र प्रति * शीघ्र पाठाइया देह राजा हबे नाति
शुनि शुक्र मुनि तबे हैल हृष्ट मन * कन्या पाठाइबार सज्जा करिल तखन
अजा के पाठाय शुक्र अयोध्या नगर * अजार हइल एक अपूर्व कोंडर
हरषे हइल तार नाम जे हारीत * मुनि तारे आशीष करिला जथोचित
दिने दिने बाडिल जेमन शशधर * छय मास मध्ये अन्न दिल मुनिवर
एक वर्ष हैल जेइ राजार कोंडर * बसाइल निया सिंहासनेर उपर
हारीत बलेन माता करि निवेदन * अल्पकाले विधवा हइले कि कारण
एइ कथा शुनि राणी कहिल निश्चय * तोमार बापेर सङ्गे विवाह ना हय
तव पिता आमारे करिल बलात्कार * मम पिता कैल तव पितारे संहार
कृत्तिवास पण्डितेर रामायण गान * आदिकाण्डे गाइल दण्डक उपाख्यान

राजा हरिश्चन्द्रेर उपाख्यान

हारीतेर पुत्र हरिबीज नाम धरे * राजा हैल हरिबीज अयोध्या नगरे

---

१ राजकाज के कारण २ नाती, कन्या का पुत्र ३ जिसे हरण करके रखी गई ४ उम्र।

दो० परनारी-हारी सदा, पुरजन विकल अनन्य।
ताके सुत 'हरिचन्द' नृप, ख्याति चराचर धन्य ॥ १४ ॥

नृप तन कियो जाह्नवी अर्पन ※ 'हरिश्चन्द्र' कहँ राज्य समर्पन
सत्य रूप हरिचन्द भुआला ※ पितु सम प्रजा सतत प्रतिपाला
सोमदत्त नृप तनया 'शैव्या' ※ कियो विवाह सुन्दरी भव्या
अनुपम तेहि रुहदास कुमारा ※ सब विधि मोद भूप परिवारा
सत्य-सुयश तिन पुन्य विलोका ※ वरनत इतै सुनौ सुरलोका
सुरपति इक दिन सभा विराजा ※ पचकन्यान नृत्य तहँ छाजा
नृत्य मुग्ध नर्तकी तरंगा ※ नाचति भयो ताल कहुँ भंगा
कोह,[1] चूकि लखि, सुरपति व्यापा ※ दीन पंचकन्यन अभिशापा
यौवनमत्त बन्दिगृह जाहीं ※ विश्वामित्र तपोवन माहीं
रूपसि कहैं विकल भरि लोचन ※ नाथ होय किमि शाप विमोचन
पुन्यनरेस अवध हरिचन्दा ※ तिन कर छुये कटै तव फन्दा
चुनैं सुमन नित तोरैं डारी ※ तरु उपवन शापित सुकुमारी
निरखि तपोवन डारि निपाता ※ कह शिष्यन सह कौशिक बाता
विटप-अंग जडमति जेहिं भंगा ※ जड़वत बंधै लता के संगा

परबध हरि हरिबीज राज्य करे ※ तार पुत्र हरिश्चन्द्र ख्यात चराचरे
हरिश्चन्द्रे समर्पण करि सर्व्व देश ※ स्वरूपे गङ्गाते राजा करिल प्रवेश
पितृ मृत्यु परे हरिश्चन्द्र हैल राजा ※ पुत्रेर समान पाल अयोध्यार प्रजा
सोमदत्त राजकन्या तार नाम शैव्या ※ विवाह करिल हरिश्चन्द्र अति भव्या
पाइया सुन्दरी जाया अन्तरे उल्लास ※ हइल ताहार पुत्र नाम रुहिदास
सुखे राज्य करे हरिश्चन्द्र महीपति ※ इन्द्रेरे लइया किछु शुनह सम्प्रति
एक दिन सभाते बसिल सुरपति ※ पञ्चकन्या नृत्य करे प्रथम युवती
नाचिते नाचिते अति बाडिल तरङ्ग ※ एक वार करिलेक तारा ताल भङ्ग
देखिया करिल कोप देव पुरन्दर ※ अभिशाप दिल पञ्चकन्यार उपर
यौवन गर्व्विता तोरा हयेछिस मने ※ बद्ध हये थाक विश्वामित्र तपोवने
चरणे धरिया तारा करेन क्रन्दन ※ कतकाले बल हबे शाप विमोचन
इन्द्र बले बन्दीरूपे थाक तपोवने ※ हबे मुक्त राजा हरिश्चन्द्र परशने
नित्य से रूपसी पाँच करे आहरण ※ डाल भाँगे फूल तोले के करे वारण
शिष्यसह विश्वामित्र गेल तपोवने ※ डाल भाङा गाछ सब देखिल नयने
एमन करिया डाल भाङे जेइ जन ※ आइले लागिबे कालि लतार बन्धन

[1] क्रोध।

भोर होत पुनि सोइ अतिरूपा * किसिलय[1] तोरन चर्नी अनूपा
छुवतै चपकि लता सन लागीं * मुनि के शाप न बचीं अभागी

दो० अपराधिनि तरुबद्ध लखि, करि भर्त्सन[2] अति रीस।
किय पयान निज आश्रम, विश्वामित्र मुनीस ॥ १५ ॥

मृगया हेत फिरत तहँ भूपा * कानन हरिश्चन्द्र यशरूपा
भेंट कुरंग[3] न, सिथिल सरीरा * डोलत मग-मारग प्रनधीरा
सोइ, तरु तरे लियो विश्रामा * कियो गोहार निरखि सुरबामा[4]
क्रन्दन[5] सुनत छुयो तरु जैसे * कन्या पंच मुक्त भईं तैसे
लखेउ भूप सोइ अचरज नयना * कीन म-सेन राज्य निज गमना
भोर गाधिसुत उपवन आये * लखि न नवेलिन[6] मन अकुलाये
जेहि अपराध छुटे तिन बंधन * होय नष्ट कह गाधियनन्दन
हरिश्चन्द्र-कर[7] तिन कर त्राना * धरत ध्यान कौतुक मुनि जाना
तुरत चले कौशिक तन ज्वाला * सत्यसंध जहँ अवध भुआला
आदर-विनय सहित दै आसन * कह नृप, धाम कियो मुनि पावन
जीवन सफल नाथ मम आजू * धन्य! धन्य! कौशिक ऋषिराजू
सुनु नृप, अग्निपुञ्ज मुनि कहेऊ * मम बन्दिनी मुक्त किमि करेऊ

एत बलि शाप तारे दिल मुनिवरे * आइल प्रभाते कन्या पुष्प तुलिवारे
जेइ काले कन्या आसि डाले भर दिल * तादेर बन्धन हाते असनि लागिल
प्रभाते आसिया विश्वामित्र तपोधने * कन्या देखि भाविते लागिल रुष्ट मने
अनेक प्रकारे तारे करिया भर्त्सन * यथास्थाने मुनिवर करिल गमन
हेन काले तथा हरिश्चन्द्र यशोधन * मृगया करिते करिलेन आगमन
मृग ना पाइया अति व्याकुलित मन * कानन हते नाना स्थाने करिया भ्रमण
मनस्ताप पाइया बसिल तरु तले * कन्या डाके उच्चैस्वरे हरिश्चन्द्र बले
क्रन्दन शुनिया राजा गेल तपोवने * स्पर्श मात्र मुक्त हये गेल पञ्चजने
आश्चर्य देखिया हरिश्चन्द्र यशोधन * सैन्यसह निज राज्ये करिल गमन
प्रात काले आइलेन गाधीर नन्दन * कन्यागणे ना देखे दुःखित हैल मन
आमि जे बान्धिनु मुक्त कैल कोन्‌जन * सर्व्वनाश हैल तार सशय जीवन
ध्यान करि जानिलेन गाधीर नन्दन * हरिश्चन्द्र छाड़ाइया दिल कन्यागण
क्रोध करि मुनि तबे चलिल सत्वर * उत्तरिला गिया मुनि राजार गोचर
मुनिरे देखिया राजा कैल अभ्यर्थन * एस एस बलि दिल बसिते आसन
सफल भवन मोर सफल जीवन * मोर गृहे आइलेन गाधीर नन्दन
ज्वलन्त अनल जेन बले तपोधन * बाँधिनु ये कन्यागणे छाड़ कि कारण

---

१ पुष्प २ फटकार ३ हिरन ४ देव पंचकन्याएँ ५ रोना ६ मुन्दरियों को ७ हाथ।

कह नृप, असत न कहौं तपोधन * करुन टेर[1] सुनि काटेउँ बंधन
दान-पुन्य नित द्विज-परितोषू * कस मोहिं नाथ अकारन रोषू
रे नृप! अहंकार तोहिं छावा * दान-पुन्य यश मोहिं सुनावा
बहु अभिलाष, करौं कछु याचन * कस समरथ, देखौं तैं राजन

दो० सफल धर्म, गृह आजु मम, पुलकित कह अवनीस।
स्वयं दान मोसन गहैं, विश्वामित्र मुनीस ॥ १६ ॥

तन मन धन जो कछु अवसेसा * अर्पन सकल नाथ-आदेसा
मुनि तव मान बचन प्रतिपाला * राखौं अटल कहेउ महिपाला
व्याध फन्द मृग फसहिं अबूझा[2] * मुनि-प्रपंच तिमि नृपहि न सूझा
प्रन-पालन हरिचन्द स्वभाऊ * साखी[3] देव, कहत मुनिराऊ
जो कछु देन, नृपति! मन आनौ * तौ दै अवनि सकल, सुख मानौ
हरषि भूप लै किञ्चित माटी * कृत संकल्प दान-परिपाटी
श्रद्धायुत भूदान अनूपा * स्वस्ति! स्वस्ति! कहि लिय तपरूपा
कह मुनि मनु कुल-भानु-विभूषन * बिन दच्छिना दान नहिं पूरन
कोप अधिप कह कृपानिकेता * कोटि सप्त सुबरन मुनि हेता

राजा बले कन्या मोरे कैल आमन्त्रण * मिथ्या ना बलिब प्रभु करेछि मोचन
दान पुण्य करि प्रभु तुषि ये ब्राह्मण * आमा प्रति क्रोध केन कर अकारण
ए कथा शुनिया कहे गाधीर कुमार * दान पुण्य कर बले कर अहङ्कार
करिबे कि दान तुमि देखि तव मन * आमारे किञ्चित दान देह त राजन
राजा बले गृहधर्म सफल जीवन * मोर दान लबे प्रभु गाधीर नन्दन
याहा चाहा ताहा दिब ना करिब आन * नाना दाने गोसाई राखिब तव मान
मुनि बले दान देह यद्यपि राजन * करह अग्रेते तुमि सत्य निबन्धन
राजा बले सत्य सत्य ना करिब आन * ए सत्य लङ्घिले नाहि पाव परित्राण
भूपति करिल सत्य ना बुझिया छन्द * मृग बन्दी हैल येन ना देखिया फान्द
मुनि बले देखह सकल देवगण * राजा करिबेन निज सत्येर पालन
मुनि बले दिबे यदि करेछ अन्तरे * राजन पृथ्वी दान करह आमारे
दानेर करिल राजा अति परिपाटी * आनिलेक हाते करि तिन तोला माटी
भू-दान करिल हरिश्चन्द्र श्रद्धायुत * स्वस्ति स्वस्ति बलिया लइल गाधीसुत
मुनि बले दान दिला पाइनु एखन * दानेर दक्षिणा राजा देह त कांचन
राजा बले दक्षिणाते ना करिह घृणा * दानेर दक्षिणा दिब सात कोटि सोना
मुनि बले विलम्बे नाहिक प्रयोजन * सात कोटि काञ्चन करह समर्पण
भूपति करेन आज्ञा भाण्डारीर प्रति * आमारे आनिया देह स्वर्ण शीघ्रगति

१ पुकार २ धोखे मे ३ गवाह।

स्वर कठोर कह कौशिक बानी * दानवीर कस मति बौरानी
धरनि दिये अब तैं न नरेसा * धन सेवक न राजु अवसेसा
सुनत मर्म, नृप मन सुधि आई * निज करनी निज सर्व नसाई
प्रन किमि सधै महीप विचारा * उत मुनि किय पुनि वाक् प्रहारा
दान-धर्म कर दर्प घनेरा * तजि महि अन्त लखौं कहँ डेरा
मुहृदन कह, मुनि विनय विचारहु * कछुक धरनि हरिचन्दहिं छाड़हु
जँह निज तन नृप करैं निवासू * धरा छाँड़ि कित मानव वासू

दो० सूची अग्र न महि तजौं, कह सकोपि मुनि बैन।
महि-तटस्थ वारानसी, सो अकेल नृप ऐन[1] ॥ १७ ॥

काशीवास सहित परिवारा * तजें राज तिय सहित कुमारा
शैव्या, रोहिदास अरु राजन * तजेउ अवध, धरि मुनि अनुशासन
तब लों मुनि पुनि गर्जन कीन्हा * सप्तकोटि सुवरन नहिं दीन्हा
विवस भूप सविनय कह बानी * सात दिवस ठहरौ मुनिज्ञानी
यहि बिच सुवरन-भार उतारन * कहि काशी पथ किय पग धारन
बीते दिवस, सोन कह मोरा ? * गाधि-सुवन कह वचन कठोरा
नृप ससोच किमि उबरहिं भारा * सहभामिनि सह करत विचारा
हाट बेंचि मोहिं आनहु काञ्चन * यहि विधि करौं नाथ! प्रन पालन

दृढ़ करि बले मुनि गाधीर कुमार * भाण्डागार उपरे तव किवा अधिकार
सकल पृथिवी दान करिले आमारे * भाण्डारेर भार धन दिबक तोमारे
शुनिया भाविन राजा छाड़िल निश्वास * करिलाम आपना आपनि सर्व्वनाश
मुनि बले भपति सजिले अहङ्कारे * पृथिवी छाड़िया तुमि जाह स्थानान्तरे
पात्र मित्र सब बले करि जोड़ पाणि * हरिश्चन्द्र भूप दिन पत्नी एकखानि
सूच्यग्र खननें तत उठ वसुमती * उहाके ना देय विश्वामित्र महामति
पात्र मित्र बले शुन गाधीर तनय * काथाय वसिब हरिश्चन्द्र निराश्रय
एत शुनि क्रोध करि बले महाऋषि * पृथिवीर बहिर्भाग आछे वाराणसी
शैव्या नारी आर निज पुत्र रुहिदास * तिन जन याउक करिते काशीवास
विश्वामित्र कथा शुनि सूर्य्यवंशधन * दारा पुत्र सह काशी करिल गमन
मुनि बले शुन राजा आमार वचन * दिया जाह सात कोटि आमारे काञ्चन
राजा बलेन गोसाञि ना करिबेन घृणा * सात दिन परे दिब सात कोटि सोना
सात दिन पथे राजा हाटिया चलिल * पथ आगुलिया मुनि कहिते लागिल
मम कथा शुन हरिश्चन्द्र यशोधन * आगे देह सात कोटि आमारे काञ्चन
शैव्यार सहित राजा करिल मन्त्रणा * कि दिया शोधिब आमि ब्राह्मणेर सोना
शैव्या बले शुन प्रभु निवेदि तोमारे * करह विक्रय मोरे हाटेर माझारे

१ अयन, निवास २ विश्वामित्र।

नृप पुकारि कह सुनु पुरवासी * लेहु जु लेन चहौ कोउ दासी
भद्र विप्र इक फिरत बजारा * परी कान हरिचन्द-पुकारा
हे नर रतन! उचित तुम कहहू * कतक[1] मोल दासी कर चहहू
कह नृप, नहिं प्रवञ्च[2] द्विजराई * चारि कोटि सेविका बिकाई
हर्षि विप्र सोइ दीन्हेउ सुबरन * लै शैव्या, पुनि चलेउ निकेतन
अञ्चल धरि रुहिदास कुमारा * मातहिं तजत न, रुदन अपारा
छोड़-छोड़ कहि लकुटि दिखावै * द्विज हियहीन सुवन बिलगावै[3]
बटु[4]? दासन बिन सुत लै लीजै * रानी कहत, अनुग्रह कीजै

दो० दुइ जीवन भोजन-बसन, नहिं बाउरि[5] बस केरि।
बिप्र-बचन हारम कछुक, बहुरि रानि किय टेरि ॥ १८ ॥

प्रभु निज भाग इतर[6] नहिं चाहौं * सुवन सहित, सोइ बिच निर्वाहौं
प्रति दिन सेर अन्न अधिकाई * सुलभ न, कहि गमने द्विजराई
चारि कोटि सुबरन जो लहेऊ * मुनि ढिग नृपति उपस्थित भयेऊ
कम मम करत अवज्ञा राजन * चारि कोटि दिखरावत काञ्चन
रत्ती मात होय नहिं अल्पा * सप्त कोटि पूरन संकल्पा
आकुल हृदय माथ धरि हाथा * हाटहिं चले अयोध्यानाथा

स्त्री लइया चले राजा नगर भितर * दासी के किनिबे बलि डाके उच्चै स्वरे
एक विप्र छिल से पण्डित साधुजन * छिल तार एकटि दासीर प्रयोजन
ब्राह्मण बलेन ओहे पुरपरजन * लइबे दासीर मूल्य कनक काञ्चन
राजा बले नाहि जानि मिथ्या प्रवञ्चना * ए दासीर मूल्य चाइ चारि कोटि सोना
शुनिया ए कथा विप्र स्वीकार करिल * चारिकोटि स्वर्ण दिया शैव्यारे किनिल
दासी निया द्विज जाय आपनार धाम * मायेर कापड धरि कान्दे रुहिदास
अञ्चले धरिया पुत्र जाय गडागडि * छाड छाड बलि विप्र देखाइल बाडि
शैव्या बले गोसाई गो करि निवेदन * विना पणे किन एवे आमार नन्दन
शुनिया कहिल विप्र हइला बातुल * दुजनार तरे कोथा पाइब तण्डुल
शैव्या बले मुनि अन्न दिवाय आमाके * नाहाइ भक्षण कराइब ए बालके
ब्राह्मण बलेन क्रोधे हइया बातुल * दिन प्रति सेर मात्र पाइबे तण्डुल
दासी किनि विप्र जाय आपनार स्थाने * अर्थ लये गेल राजा मुनि विद्यमाने
अल्प देखिया स्वर्ण कहे तपोधन * अपमान कर हरिश्चन्द्र हे राजन
सातकोटि तव नहे कम सात रति * विश्वामित्रे अवज्ञा ना कर महामति
ए कथा शुनिया महा प्रमाद भाविल * शिरे हात दिया राजा हाटे चलि गेल

१ कितना २ ठगई मोलतोल ३ अलग करे ४ ब्राह्मन् ५ पगली ६ अलावे।

कासी पुरवासी सुनि लीजै * सेवक चहौ तो मोहिं लै लीजै
कालू नाम श्वपच[1] तहँ आवा * दास लेन कै रुचि दिखरावा
राखौ सुअर-यूथ मन भावै * तौ मोहिं जन! निज मोल बतावै
जो आदेस, करौं चितलाई * बूझौ मोल तो नहिं चतुराई
तीन कोटि सुबरन मोहिं दीजै * कह नृप मोहिं चाकर करि लीजै
नहिं बिलम्ब सोइ दाम चुकाये * यहि विधि सात कोटि मुनि पाये
गाधितनय उत अवध सिधारा * डोम इतै पूछत नृप - नामा
जननी-जनक नाम जो दीन्हा * 'हरिश्चन्द्र' कहि जग मोहिं चीन्हा
हरिचन्दा, हरि, हरे पुकारैं * जेहि जस प्रीति सो नाम उचारैं
'हरिश्चन्द्र' सों करि 'हरिदासा' * कालू गमन चहेउ निज बासा

दो० प्रभु उछिष्ट[2] भोजन करौं, देव न, यह अरदास[3]।
विनय सुनत बोलेउ श्वपच, धरौ ध्यान हरिदास ।। १६ ।।

शूकरगन मम पालहु नीके * आवैं मृतक, घाट सुरसरि के
मरघट-कर[4] तिन सों नित लेहु * विन, शव-दाह करन जनि देहु
कालू सौंपि काज गृह जाई * सुअर-वृन्द नृप कहेउ बुलाई
पुन्य-दान नित किय जिन हाँथन * तव मल मूत्र न होयँ अपावन

हाट खानि बैसे वाराणसीर गोचरे * तृण बान्धि मान्धाइल हाटेर भितरे
नफर किनिबे बलि डाके उच्चै स्वरे * कालू नामे हाडि एक छिल से नगरे
से बले आमार कर्म्म आछेन नफरे * चाहि एक नफर से राखिबे शूकरे
ए कथा शुनिया राजा बलिछे वचन * आमि या बलिव ताहा करिबे पालन
कालू बले शुन ओहे पुरुषरतन * आपनार मूल्य लव कतेक काञ्चन
राजा बले नाहि जानि मिथ्या व्यवहार * स्वर्ण लव तिन कोटि मूल्य आपनार
एकथा शुनिया कालू बिलम्ब ना कैल * तिन कोटि स्वर्ण दिया नफर किनिल
सात कोटि सोना निया दिया मुनिवरे * धन पेये गेल मुनि अयोध्या नगरे
कालू बले शुन ओहे कर वरनन * कि नाम तोमार कह पुरुषरतन
करिया प्रबन्ध राजा कहिते लागिल * हरिश्चन्द्र नाम बाप मायेते राखिल
केन वा डाकिबे हरिश्चन्द्र नाम धरे * बलिओ कखन हरि कखन या हरे
लइया नफर कालू जाय निज वास * हरिश्चन्द्र घुचाइल हैल हरिदास
हरिदास बले प्रभु करि निवेदन * खाइते उच्छिष्ट मोरे ना दिबे कखन
कालू बले हरिदास शुनह वचन * वाराणसी पुरे राख शूकरेर गण
वाराणसी तीरे जत मडा दाह हय * पञ्चाश काहन लह प्रत्येक मडाय
सँपिया कर्तव्य कर्म्म हाडि गेल घरे * डाकिया आनिल राजा सकल शूकरे
बलिते लागिल हरिश्चन्द्र महिपाल * मोर एक कथा शुन शूकरेर पाल

१ चाण्डाल २ जूठा, अपवित्र ३ विनती ४ श्मशान का टैक्स।

सो तुम अन्त विसर्जन करहू ※ जो मम हित बराह[1] मन धरहू
नृप-विनती पशु नित अनुसरहीं ※ कबहुँ न घाट अपावन[2] करहीं
तजि राजसी भाव अरु वेषा ※ राजचिह्न तजि बाँधेउ केशा
हाँथ बाँस अरु डोम सरूपा ※ मरघट घाट फिरैं नित भूपा
शैव्या बसत उतै द्विज भवना ※ पावत सेर एक नित अन्ना
तीनि भाग रोहित सुत पालै ※ एक पाव निज-तन प्रतिपालै
विप्र विलोकि दसा अति दीना ※ अनुष्ठान देवार्चन लीना
सुनु सेविका! सुवन तव जाई ※ उपवन सुमन तोरि नित लाई
तन्दुल[3] अधिक देउँ सोइ हेता ※ कहत रानि. द्विज कृपानिकेता!
अब जेहि विधि सुत आयसु देहू ※ पूरन करौं न संसय येहू
कनकपात्र लै भोर कुमारा ※ कौशिक[4]-तप-उपवन पग धारा
तारत फूल डार कहुँ टूटहि ※ एक दिवस सोइ मुनि अवलोकहिं

दो० छन-विछत उपवन निरखि, को कीन्हेसि अपराध?
धरत ध्यान जानेउ सकल, कोपपुञ्ज सुत-गाधि ॥ २० ॥

पितु गृह डोम, जननि द्विज-दासी ※ रोहित सुत बाटिका बिनासी
पुनि आवै तोरै तरु-अंगा ※ दियेउ शाप सोइ डसै भुजंगा

दान पुण्य करि लाम ये दक्षिण करे ※ तोमादेर मलमूत्र मुछिब कि करे
एक सत्य पालिबे हे सकल गुरु रे ※ मलमूत्र परित्याग करिबे अन्तरे
पालिल राजार वाक्य सकल नगरे ※ मलमूत्र परित्याग करिल अन्तरे
उभ झुँटि चूल बान्धे राजा उच्चकरे ※ वाराणसी तीरे नित्य दौडादौडि करे
राजचिह्न राजार सकल दूरे गल ※ पाटनीर वेश राजा तखन धरिल
शैव्या रहिलेन तथा ब्राह्मण आगारे ※ एक सेर तण्डुल ब्राह्मण देय तारे
तिन पोया रुहिदास खाय तिन बारे ※ एक पोया खान शैव्या द्विजेर आगारे
विप्र बले शुन शैव्या आमार वचन ※ खाइल तोमार भाग तोमार नन्दन
कालि हैते आमि ये करिब देवार्च्चन ※ तव पुत्रे फूल हेतु पाठाइब वन
याउक तुलिते पुष्प बालक तोमार ※ बाडाइया दिब ये तण्डुल किछु आर
शैव्या बले ये आज्ञा करिबे यखन ※ सेइ आज्ञा पालिबेक आमार नन्दन
स्वर्ण साजि लइल ये स्वर्णेर आकडि ※ विश्वामित्र तपोबने जाय रडारडि
डाल भाग फूल तोले आपनार मने ※ एक दिन एल मुनि से वन भ्रमणे
भागा डाल देखिया कुपित मुनि मने ※ एमन कुकर्म्म आसि करे कोन जने
ध्यान करि विश्वामित्र जानिल कारण ※ पुष्पार्थे आइसे हरिश्चन्द्रेर नन्दन
विप्र घर जननी हाडिर घरे बाप ※ सत्य यदि आसे हेथा ताके खाबे साँप
एत बलि शाप दिल क्रोधे तपोधन ※ रात्रिकाले हेथा शैव्या देखिछे स्वपन

१ सश्रर २ अपावत्र ३ चावल ४ विश्वामित्र।

कौशिक कोप शाप विकराला * शैव्या लखि निसि[1] सपन विहाला
मञ्जु प्रभात अरुन छबि छाजा * किसिलय[2] लेन चलेउ युवराजा
निसि कर सपन भयानक बरनन * हटकेउ[3] मातु, जाव जनि उपवन
कह कुमार, भय करौ न जननी * साँचु न होय सपन कै करनी
जो गृह बैठि सुमन नहिं लावौं * दुर्मुख द्विज सन अन्न न पावौं
तव-तंदुल, धिक ! मम प्रतिपालन * धनि ते, करैं जननि-पितु पालन
सुनी न मातु-बैन नृपनन्दन * चलेउ सुमन हित जहँ मुनि उपवन
बन विहरत सुत, भीति न अंगा * तोरत किंशुक रंग बिरंगा
गेंदा गुलदाउदी सुहावन * गुलमेहँदी गुलाब मनभावन
बेला बकुल कुसुम चहुँ फूला * हरसिंगार कुअँर मन भूला
शेफालिका मुकेसर प्यारी * चम्पा जवा विरञ्जित क्यारी
पारिजात किंशुक कहुँ तोरैं * कहुँ वल्लरी[4] सुमन झकझोरैं
कहुँ मल्लिका जुही मदभीनी * कलिका कछुक कुअँर चुनि लीनी
डाली विविध प्रसून सजावा * पुनि श्रीफल ढिग गहित आवा

दो० छुअत डार मुनि-शाप बस, डसेउ सर्प विकराल ।
अबुध[5] धरनि स्रव[6] रक्त मुख, तन विष बाढ़ी ज्वाल ॥ २१ ॥

दिन गत अर्ध, न सुत तव आवा * देवार्चन किमि सुमन अभावा !
सपन-ससंक रानि हिय लर्जत * द्विज समुझाय चली सुत खोजत

प्रात काले प्रकाशित सूर्य्येर किरण * तुलिते कुसुम जाय राजार नन्दन
तपोवने राजार कुमार जबे चले * हेन काले शैव्या तारे स्नेह करि बले
ना जाइओ तुलिते कुसुम तपोवन * नितान्त करिबे तोरे भुजंगे दशन
रुहिदास बले नाहि जाइले तथाय * दुर्म्मुख ब्राह्मण अन्न ना दिबे तोमाय
कृति पुत्र करे माता-पितार पालन * खाइया तोमार अन्न थाकि सर्व्वक्षण
शुनिल ना रुहिदास मायेर वचन * कुसुम तुलिते जाय मुनि तपोवन
रुहिदास प्रवेशिल कुसुम कानने * नाना जाति पुष्प तुले याहा लय मने
जाती यूथी मल्लिका से तुलिल रंगन * शेफालिका पारिजात शिउलि काञ्चन
अशोक किंशुक जवा आतसी केशर * आकन्द गोलाब तोले बकुल टगर
अवशेषे श्रीफले आकडि लागाइल * आछिल डालेते शाप बुकेते दशिल
सर्व्वांगेते शिशुर बेड़िल विषज्वाला * भूमिते पडिल शिशु मुखे भागे लाला
हइल आकाशे बेला द्वितीय प्रहर * तबु से राजार पुत्र ना आइल घर
विलम्ब देखिया तारे कहिछे ब्राह्मण * एखन ना एले कबे हबे देवार्च्चन
शैव्या बले प्रभु एइ करि निवेदन * आपनि देखिया आसि कोथा से नन्दन

---

१ रात्रि में २ पुष्प ३ मना किया ४ बेल ५ बेहोश ६ बहने लगा ।

चहुँ दिसि दीठि पुकारत उपवन * तरुतर लखि अचेत निज नन्दन
खाय पछार अवनि गिरि माता * जिमि समूल कदली[1] भुइँ पाता
निरखत छबि मुख बिलखत धरनी * सुत कित गमन कियो तजि जननी
धर्म करत दारुन दुख डारा * हे प्रभु! अनल करौं तन छारा
लिये अंक सुत भरत उसासा[2] * बिलपत रानि गई द्विज पासा
केहि विधि प्रान बचैं मम नन्दन * दासी तोर अकारथ क्रन्दन
सर्पदंश घातक तेहि प्राना * मृतक पुरुष किमि जीवन दाना
धैर्य, सती! करु धीरज धारन * भावी अमिट न सकौं उबारन
काशीघाट दाह मृत देहू * बहु प्रबोधि, द्विज रहेउ स्वगेहू
मरघट चली रानि शव अंका * डोलत जहँ हरिदास निशंका
लिये बाँस अरु श्वपच सरूपा * मृतक देखि पहुँचे ढिग भूपा
जौं लौं कर नहिं घाट चुकावौ * नारी जनि तुम चिता लगावौ
विधि मोहिं बिबस अधम गति दीना * मरघट नियम विनय तोहिं कीना
मम अधिकार प्रथम दै दीजै * नतरु[3] दाह कहुँ अन्तै कीजै

दो० घाट-अधिप अनुमति मिलै, अर्ध वस्त्र तन फारि।
चुकवौं कर तब, रानि कह, कातर गिरा उचारि ॥ २२ ॥

तनये देखिते शैव्या करिल गमन * विश्वामित्र तपोवने दिल दरशन
बालकेरे चाहिया बेड़ान तपोवने * देखे वृक्ष आड़े पड़े आपन नन्दने
पुत्र के देखिया शैव्या पड़िल भूतले * येमन कलार गाछ भांगे डाले मूले
पुत्र कोले करि शैव्या करिछे क्रन्दन * कोथा गेल मम पुत्र रुहित नन्दन
धर्म्म करिवारे दुख दिल नारायण * अग्निते पुड़िया आजि त्यजिब जीवन
पुत्र कोले करि शैव्या छाड़िल निश्वास * काँदिते काँदिते गेल ब्राह्मणेर पाश
निवेदन करि शुन मकल ब्राह्मणे * कह ए अधीन पुत्र बाँचिबे केमने
शुनिया प्रबोध वाक्य कहे द्विजगण * सर्पेर दंशने प्राण छाड़िल नन्दन
मरिले मानुष कभु बाँचे कि कखन * सम्बर सम्बर सती सम्बर क्रन्दन
वाराणसी पुरे तुमि मड़ा लये जाह * काष्ठ चिता करि एइ मृत देह दाह
मड़ा लैया गेल शैव्या कातर अन्तरे * एकाकी रहिल द्विज आपनार घरे
मड़ा लैया गेल शैव्या वाराणसी वास * हातेते मुद्गर करि आसे हरिदास
हरिदास बले आमि मड़ा दाह करि * मड़ा प्रति लइ पञ्चाश काहन कड़ि
सत्यकथा एइ तोमाय कहिनु निश्चय * तोमारे बलिनु याहा मिथ्या नाहि हय
अन्येर घाटेते लैया पोड़ाओ कुमार * विधाता करिल मोरे हाड़िर आचार
शैव्या बले गोसाईं बलिते भय बासि * विधाता करिल मोरे ब्राह्मणेर दासी

१ केला का वृक्ष २ दुःख भरी सांस लेना ३ नहीं तो।

बिप्रगेह दासी कर कामा * करैं दिवस, सब बिधि बिधि[1] बामा
तापर अहह दुसह दुख आई * उतरेउ मम सिर गाय बजाई
पुनि-पुनि 'हरिश्चन्द्र' कर नामा * करत उच्च लै रोदन भामा
अहो कितै तुम अवधनरेसू * तव सुत गमन आजु यम-देसू
धर्मयज्ञ कै आहुति पूरन * प्रानहीन लखि सुअन बिसूरन[2]
सुनत नाम निज, रानि विलापा * पूर्ववृत्त[3] हरिचन्दहिं जागा
धरि धीरज शैव्या-ढिग आई * परिचय दै, बहु बिधि समुझाई
सुनि सकोप बोलत अकुलानी * कल लौं अवधभूप-महरानी
मरघट-डोम करैं परिहासा * हाय बिरञ्चि पलट कस पासा
पुनि नृप कहत सुनौ प्रिय रानी * व्यथा-बिवस सब कथा सुनानी
सोमदत्त-तनया जो शैव्या * अवध-भूप मैं बरेउँ सुभव्या
रोहित जनम लियेउ युवराजू * कौशिक हरन कियेउ पुनि राजू
नृप ललाट इक चिन्ह विशेषी * संशय मिटेउ रानि सोइ देखी
उपजा मोह, नृपति तजि धीरा * रोहित-तन लखि शिथिल शरीरा
हे सुत! हे कुमार! हे ताता! * कितै गमन किय तजि पितु माता
सत मारग, दिय दुख नारायन * अनल भेंटि तन, मिटवौं कारन

आज्ञा कर यदि मोरे घाटेर पाटनी * दिब आमि चिरिया ये वस्त्र अद्धखान
एतेक शुनिया तबे शैव्यार वचन * हानिते मुद्गर लया आइसे राजन
पडिलेन पुत्र लैया शैव्या स्थानान्तरे * हरिश्चन्द्र बलिया से कान्दे उच्चैःस्वर
प्रभु हरिश्चन्द्र राजा गेल कोथाकारे * आसिया देखह मृत आपन कुमारे
धर्म्म तरे देख नाथ की दशा हयेछे * पराण पुत्तलि पुत्र छाडिया गियाछे
हरिश्चन्द्र बलि शैव्या कान्दे विद्यमान * तखन राजार हैल सइ पूर्व्वज्ञान
हरिश्चन्द्र बले राणी ना कर क्रन्दन * आमि सेइ हरिश्चन्द्र देखह लक्षण
शैव्या बले हरि हरि कपाले ए छिल * आमार रूपेर मोह पाटनी पाडिल
अयोध्याय छिलाम जे राजार रमणी * एबे परिहास करे घाटेर पाटनी
हरिदास बले प्रिये बलि तव ठाँइ * पासरिले सकलि किछुइ मने नाइ
सोमदत्त राजकन्या शैव्या तव नाम * तोमारे विवाह प्रिये आमि करिलाम
रुहिदास नामे तव हइल नन्दन * मम राज्य निल विश्वामित्र तपोधन
ए कथा शुनिया राणी देखिते लागिल * कपाले निशान छिल तखन चिनिल
पुत्र कोले करि राजा करिछे क्रन्दन * कोथा फेले गेल बापू रोहित नन्दन
ए धर्म्म करिते दुःख दिल नारायण * अग्निते पुडिया आजि त्यजिब जीवन
तखनि चन्दन काष्ठे साजाइल चिता * मध्येते राखिल पुत्र पाशे माता-पिता

१ भाग्य २ विसूरना, दुःखों को याद करके कलपना ३ पहले का हाल।

दो० सुवन सहित चन्दन-चिता, सजि बैठे पितु-मात।
अनल देत प्रगटे तबै, धर्मराज साक्षात ॥ २३ ॥

अगिनि नृपति जनि करौ प्रवेसा * पद्मपाणि रोहित तन परसा
खोले दृग, विष दूर कुमारा * पुनि रविकुल-वाटिका बहारा
कालू आय कहत सुनु राजन * मुक्त बंध तव, मोन न याचन[1]
सोइ छन विप्र विनय किय आई * दीन सोन, सो मैं भरपाई
मम कल्यान न, द्विज-धन लीने * शैव्या कर-कंकण तेहिं दीने
विश्वामित्र मुनीस विचारा * विनसेउ जप-तप-जोग-अचारा
वृथा प्रपंच राज कर लीना * भेंटि नृपति, मुनि आयसु दीना
साधु साधु नृप गमनौ आजू * करौ सनाथ अवधपुर राजू
सपरिवार महिपति पग धारा * गाधितनय मन मोद अपारा
छूटे विपति घन उघाउ चन्दा * सुखी भानुकुल पुरजन वृन्दा
राजसूय विधिवत करि पूरन * राजतिलक दै रोहित नन्दन
श्वान बिडाल प्रजागन केते * भूपति-सह पयान जिन चेते[2]
सतन[3] स्वर्ग तिन लै पगु धारा * सत्य-धर्म कर बजेउ नगारा
नारायण बैकुण्ठ विराजा * हरिश्चन्द्र कर निरखि समाजा
नृप के तप आधार, कुवर्गा[4] * जुरै न कहुँ मेटैं छवि-स्वर्गा

य काल ज्वलन्त अग्नि दिबन चितात * हन काल धर्म्मराज कहेन साक्षात
अग्निते पुड़िया कन त्यजिब जीवन * आमि बाचाइया दिब तोमार नन्दन
पद्महस्त परशन बालकेर गाय * विषज्वाला दूरे गेल चक्षु मेलि चाय
हन काल कालू आसि राजार सम्भाष * तोमाय आमार स्वर्ण दाय नाहि आसे
ब्राह्मण आसिया बले राजार सदन * तोमाते आमार दाय घुचिल काञ्चने
राजा बले गोसाईं गो करि निवेदन * ब्रह्मस्व लइब बल किसेर कारण
राणीर हातेते स्वर्ण कङ्कण आछिल * ताहा दिया राजा तार दाय घुचाइल
मुनि भावे तप जप सब नष्ट कैनु * मिथ्या राज्य करिया हे जन्म काटाइनु
य खाने आछेन हरिश्चन्द्र यशोधन * सेइ खाने मुनि आसि दिलो दरशन
मुनि बले शुन हरिचन्द्र महीपति * आपनार राज्ये तुमि जाह शीघ्र गति
स्त्री-पुत्र लइया राजा करिल गमन * प्रसन्न मानस मुनि प्रफुल्ल बदन
अयोध्याय राजा आसि दिल दरशन * राजसूय यज्ञ राजा करिल तखन
राज्यभार पुत्रेरे करिया समर्पण * हरिश्चन्द्र परलोक करिला गमन
पुरीर सहित चले बैकुण्ठ भुवने * कुक्कुर बिडाल आदि जे छिल जे खाने
देव गदाधर ताहे कुपित अन्तरे * कहिलेन डाकिया नारद मुनिवरे

१ मूल्य में दिया सुवरन भर पाया २ चाहना की ३ सदेह ४ राजा के तप के बल पर अनधिकारी लोग भी।

कहेउ सकोप गदाधर नारद * नृप-संकल्प करौ मुनि गारद[1]

दो० प्रभु आयसु, सोइ दिसि चले, वीणापाणि मुनीस।
गति अबाध[2] रथ लखेउ नभ, बढ़त कोशलाधीश ॥ २४ ॥

करि प्रणाम वरनेउ निज अर्था * कह मुनि, नृप किमि भयेउ समर्था
जोरि समाज सतन गोलोका * के सुकर्म अस पुण्यश्लोका ?
उपजी कुमति सुबुद्धि नसाता * सत पर विजय रजोगुन पावा
वापी कूप तडाग सुकरनी * निज मुख नृप नारद सन बरनी
सेतु हाट फल विटप लगाये * यज्ञ दान प्रन सत्य निभाये
कौशिक राज सकल करि अर्पन * काया बेंचि चुकाये सुबरन
जस-जस सुजस भूप निज गावा * स्यन्दन[3] तस लचि भुइँ तन आवा
रथ कर पतन, पतन नृप केरा * लखी चूक, हिय[4] छोभ घनेरा
होत ज्ञान, रथ पुनि टिकि गयउ * सरग[5]-धरनि बिच स्थिर भयऊ
कटक सहित नृप भोजन-चमना * देवन मिलि कीन्ही अस रचना
जोरत अन्न मोद मन लेहीं * खरचत ताहि प्रान तजि देहीं
खेत धान्य भरि धरैं कोठारा * खाइ भूप-कटक सोइ सारा
लोभी बसन मंजूतहिं जेता * आवैं सकल कटक के हेता
अन्न-वस्त्र जेते सुख साधन * यहि विधि सकल जुटाये देवन

स्वर्ग नष्ट करे हरिश्चन्द्र नृपवर * ए कथा शुनिया मुनि चलिला सत्वर
बीणा बाजाइया जाय महातपोधन * देखे रथे स्वर्गे राजा करिछे गमन
मुनि प्रणमिया राजा स्वर्गे जाइ बले * मुनि कन जाओ राजा कोन पुण्य फले
सुबुद्धि राजा के तबे कुबुद्धि घटिल * आपनार पुण्य सब कहिते लागिल
कूप-वापी-तडागादि नानास्थाने करि * दियाछि जागाल आर वृक्ष सारि सारि
मम राज्य निल विश्वामित्र तपोधन * आपनारे बेचि शुधिलाम से काञ्चन
पुण्यकथा जेइ राजा कहिते लागिल * कहिते कहिते रथ नामिया पडिल
नामिल राजार रथ दुखित अन्तर * भाल मन्द नाहि बले हइल कातर
स्वर्गे थाकि युक्ति करे यत देवगण * राजार कटक किवा करिबे भक्षण
ये शस्य सञ्चय करे ना करिया व्यय * हरिश्चन्द्र राजार कटक ताहा लय
क्षेत्र हइते से शस्य आनिया फेलाय * हरिश्चन्द्र राजार कटके ताहा खाय
नूतन बसन राखे करिया यतन * राजार कटके परे सेइ से बसन
ए नियम करिल सकल देवगण * अर्द्धपथे हरिश्चन्द्र रहिल तखन

---

१. मटिया मेट २ बिना रोक टोक ३ रथ ४ हृदय में ५ स्वर्ग।

हरिश्चन्द्र कै पुन्य कहानी ※ कृत्तिवास यहि भाँति बखानी

सगर-वंश का उपाख्यान

इत रुहिदास सम्हारेउ सासन ※ पितु सम करत प्रजा प्रतिपालन

दो० रोहित-नन्दन 'सगर' नृप, चहुँ दिसि जासु बखान।
तासु रुचिर गाथा सुने, बिनसैं पाप महान ॥ २५ ॥

संततिहीन सगर अति शोका ※ वंशहीन-मुख लखहिं न लोका
मन अति छोभ, गमन किय कानन ※ बहु दिन कीन शंभु-आराधन
आसुतोष सब विधि परितोषू ※ कहु नरपति, तोहिं कौन कलेशू
नाथ ! तनय बिन निसिदिन त्रासा ※ 'सुत अनेक' लहि मिटै पिपासा
भोलानाथ बिहँसि वर दीना ※ सुत सठ सहस एक पितु कीना
लै वर, सगर गमन किय धामा ※ केशिनि-सुमति युगल तेहिं भामा
गर्भवती भइँ शिव वर पाई ※ गत दस मास प्रसव नियराई
सुत असमंज केशिनी-नन्दन ※ अतुलित छबि मनोज-मन-रंजन
सुमति उठी वेदना कराला ※ चर्म, उल्ब[1] प्रसवित तेहि काला
सगर उल्ब लखि, क्रोध प्रकासा ※ 'भंगड़' कहि, किय शिव-उपहासा

स्वर्गे नाहि गेल राजा मर्त्ते ना पाइल ※ हरिश्चन्द्र राजा मध्य पथे ते रहिल
कृत्तिवास पण्डित कवित्व विचक्षण ※ आदिकाण्डे गान हरिश्चन्द्र विवरण

सगरवंशेर उपाख्यान

अत पर हइलेन रुहिदास राजा ※ पुत्र तुल्य पालन करेन सब प्रजा
ताहार नन्दन से सगर नाम धरे ※ सगर हइल राजा अयोध्या नगरे
मन दिया शुन सगरेर विवरण ※ ये कथा शुनिले हय पाप विमोचन
अपुत्रक राजा राज्य करे मनोदुःख ※ प्राते नाहि देखे लोक अपुत्रेर मुख
दुःखेन सगर राजा करिल गमन ※ बहु काल करिल शिवेर आराधन
सन्तुष्ट हइया शिव बलेन सगरे ※ वर माँगि लह राजा या चाह अन्तरे
सगर बलेन पुत्र बिना बड़ दुःख ※ वर देह देखि आमि बहु पुत्र मुख
हासिया दिलेन वर भोला महेश्वर ※ पुत्र षाटि हाजार हइबे तव घर
वर पेये आसिलेन सगर नृपति ※ शिव वरे दुइ नारी हैल गर्भवती
केशिनी-सुमती तार दुइ स्त्रीर नाम ※ दिने दिने गर्भ दोंहा बाड़े अनुपम
दश मास गर्भ हैल प्रसव समय ※ केशिनी प्रसव कैल सुन्दर तनय
तनये देखिल येन अभिनव काम ※ असमञ्ज बलिया थुइल तार नाम
सुमतीर गर्भ-व्यथा हइल यखन ※ चर्म्मेर अलाबू एक प्रसवे तखन
देखिया अलाबू राजा कुपित अन्तरे ※ भाङ्गड़ बलिया गालि दिलेन शिवेरे

[1] चमड़े की झिल्ली, थैली के समान जिसमे गर्भ रहता है।

तोरत उल्ब बुद्धि चकरानी * तिल सम साठि सहस लखि प्रानी
मोहक रूप, सगर सुख पावा * छीर कलस सठ सहस मँगावा
दुग्धपुष्ट ते नर-तन पावत * साठि सहस नृपसुत हुंकारत
सुत-समूह, दिय शाप बिसाई[1] * बिनसहु अल्प अवस्था पाई
बढ़त बढ़त बीते षट मासा * हगरत सुत लखि सगर हुलासा
चुटकी जब-जब भूप बजावैं * चहुँ दिसि धसिलि अंक चढ़ि आवैं

दो० द्वादस वयस किशोरगन, सबन विवाहेउ भूप।
'अंशुमान' असमंज-सुत, प्रगटे धर्मस्वरूप ॥ २६ ॥

एकाधिक-सठ-सहस कुमारा * नाति एक, नृप सुख परिवारा
विगत जन्म जिन जोग नसावा * सोइ असमंज जनम पुनि पावा
असत जगत, सत ब्रह्म सनातन * छूटे राजपाश किमि? चिंतन
उबवौं[2] सबन विविध दै त्रासा * तौ पितु तजैं, मिटै जगपासा[3]
पुर बालक मारग जे खेलत * पकरत तिन्हें बाँधि जल बोरत
भरैं नीर नारी सर तीरा * तोरत घट, पुरजन अति पीरा
नित प्रति बरन लगावैं आगी * नृप मन कहेउ प्रजा दुख-पागी

कोपे लाउ भाङ्गिया वहिल खानखान * पाटि हाजार पुत्र हैल तिलेर प्रमाण
उसिमिसि करे सब देखिते रूपस * पाटि हाजार आने राजा दुग्धेर कलस
खाइते खाइते दुग्ध नव रूप धरे * पाटि हाजार पुत्रेर सगर हाकारे
पाटि हाजार पुत्रे शाप दिलेन विसाई * अचिरे मरिबि तोरा ना हबि चिराई
दिने दिने बाड़े सेइ सगरनन्दन * छय मास वयस्क हइल पुत्र गण
जखन सगर राजा हाते मारे तुड़ि * पाटिहाजार कोले आसे दिया हामागुड़ि
यखन हइल तारा द्वादश वत्सर * सबलेर परिणय दिलेन सगर
पाइट हाजारेर पाइट हाजार नारी * सुखे राज्य करे राजा अयोध्या नगरी
ज्येष्ठ पुत्र असमञ्ज धर्म्मपरायण * अंशुमान नाम तार हइल नन्दन
पाइट हाजार तनय एक मात्र नाति * देखिया सगर राजा आनन्दित अति
असमञ्ज सदाई भावेन मनेमन * संसार असत्य सत्य देव नारायण
असार संसारे केन बद्ध हये मरि * निभृते वसिया आमि भजिव श्रीहरि
भाविल संसारे आमि ना थाकिव आर * अनुचित कर्म्म सब करे दुराचार
यतेक बालक खेला खेलाय नगरे * हात गले बान्धि सकलेरे फेले नीरे
यत नारीगण जल भरिबारे आसि * आछाड़िया भाङ्गे सब जलेर कलसी
अग्नि दिया पोड़ाय सकल प्रजाघर * कहिल सकल प्रजा राजार गोचर

१ इन्द्र—पूर्व के पराक्रमी राजाओं से सदैव सशंकित इन्द्र ने सगर की प्रताप वृद्धि देख कर शाप दिया २ ऊबाऊँ पीड़ित कर दूँ ३ संसार के बन्धन।

सुवन-चरित सुनि मन अति त्रासा * सुत असमंज दीन बनवासा
हर्षित गमन कियो सोइ कानन * जग बंधन, मल मिटे अपावन[1]
अंशुमान सुत तासु[2] धर्मधर * इतर सुवन सह सुखित भूप वर
कछुक सगर-सुत सरग बिराजहिं * कछुक कियेउ तैनाथ पतालहिं
डोलति धरा धरनिधर काँपैं * सगर-सुवन यहि बिधि चहुँ व्यापैं

राजा सगर का अश्वमेध यज्ञ आरंभ और वंश-नाश

अश्वमेध शुचि यज्ञ उछाहा[3] * उपजेउ एक दिवस नरनाहा
सो सुभ घड़ी कियेउ आरंभन * यज्ञ-अश्व किय सुतन समर्पन
भजेउ अवधपुर यज्ञ-तुरंगा * साठि सहस्र सहोदर संगा
लौटैं तुरग जीति दिग्देसा * पुरवहु याग कहेउ अवधेसा

दो० मम विवाद सुरपति सदा, परैं कतक भय व्याध।
मेटि तिनहिं रविकुल सुभट, हय[4] आनहु निर्बाध[5] ॥ २७ ॥

सागर कटक तरंग अनन्ता * उमड़त लखि सुरपति मन चिन्ता
जुगुति विरञ्चि ! रचौं केहि भाँती * सगर-तुरग[6] हरि जुड़वौ छाती
मध्य दिवस तम निसि सम छावा * तकि अवसर हय इन्द्र चुरावा
बाँधेउ ताहि पताल शचीसा[7] * योगलीन जहँ कपिल मुनीसा

पुत्रेर चरित्र शुनि लागिल तरास * असमञ्ज पुत्रे राजा दिल वनवास
वने गिया असमञ्ज हरषित मन * संसारेर बन्धन छेदिल नारायण
असमञ्जे पाठाइया वनेर भितरे * अपर सन्तान लये सुखे राज्य करे
कृत्तिवास पण्डितेर मुखे सरस्वती * अमृत समान कैल आदिकाण्ड पूथि

सगरेर अश्वमेध यज्ञारम्भ ओ वंशनाशेर विवरण

कत पुत्रे राखे राजा स्वर्गेर उपर * कतेक राखिल लये पाताल भितर
पृथिवीर राजा यत मम नामे काँपे * मम वंशजात यत तिन लोके व्यापे
एक दिन सगर भाविया मने मने * अश्वमेध यज्ञ करे अयोध्या भुवने
एतेक भाविया यज्ञ कैल आरम्भन * तुरङ्ग राखिते दिल यतेक नन्दन
बापेर आगेते तारा करिल उत्तर * घोड़ा सह याब षाटि हाजार सोदर
पुत्र वाक्य शुनिया सगर बले ताय * आनिते पारिले घोड़ा यज्ञ हबे साय
इन्द्रेर सहित मोर हइल विवाद * एइ यज्ञे कत शत हइबे प्रमाद
यज्ञाश्व राखिते जाय सगर-नन्दन * शुनिया हइल इन्द्र बड़ भीत मन
वासव बलेन ब्रह्मा कोन युक्ति करि * विरिञ्चि बलेन तुमि घोड़ा कर चुरि
दिने दुइ प्रहरे हइल निशाप्राय * घोड़ा चुरि करि इन्द्र पाताले पलाय
तपस्या करेन मुनि कपिल ये खाने * घोड़ा लये राखिल ताहार विद्यमाने

---

१ अपवित्र २ केशिनी से उत्पन्न कुमार असमंज के पुत्र अंशुमान ३ उत्साह, उमंग
४ घोड़ा ५ बे रोक टोक ६ सगर का यज्ञ के लिये छोड़ा हुआ अश्व ७ शचिपति इन्द्र।

मिटेउ अंध[1] पुनि भानु अलोका * कटक न सुतगन बाजि[2] बिलोका
हेरत फिरे सकल भूमण्डल * मिलेउ न हय पुनि चले रसातल
लै कुदारि[3] सठसहस कुमारा * कोस-कोस महि करत प्रहारा
हुमकि हनैं मल चोट कुदारी[3] * लागै कूर्म-पृष्ठ[4] महि फारी
चारि दण्ड खनि[5] चारिउ सागर * पहुँचे पुनि पताल बल-आगर
दिसि - पावक[6] बाँधा बट-छाहीं * उपवन-कपिल तुरग लखि ताहीं
करत कुलाहल कहि कटु वचना * घोर-चोर[7] किमि ध्यान निमग्ना
हनेउ कुदार-बेंट मुनि अंगा * लागत भयेउ ध्यान मुनि भंगा
अनल-नयन ऋषि झरैं अँगारा * पल बिच साठि सहस भे छारा

कपिल ऋषि द्वारा सगर-वंश के उद्धार का उपाय-कथन

फिरे न अश्व सहित नृपनन्दन * बीतेउ बरस, न यज्ञ अरम्भन
अंशुमान असमञ्ज - कुमारा * सगर-सुतन खोजन पग धारा
नृप आयसु सो रथ आरूढ़ा * अवनि सकल मग-मारग ढूँढ़ा
दो० खनित[8] लखेउ चहुँ धरातल, प्रविशे भेदि पताल।
प्राची[9] दिसि कर महोदधि[10], दर्शन कियेउ विशाल ॥ २८ ॥

योगेते आछेन मुनि केह नाहि काछे * इन्द्र घोडा बान्धिया गेलेन तार पाछे
अन्धकार वृष्टि सब घुचिल यखन * घोडा हाराइल बले सगर-नन्दन
चाहिया ना पाइलेक पृथिवीमण्डले * पृथिवी खुंजिया तारा चलिल पाताले
भाइ षाटि हाजार कोदालि हाते धरे * एक क्रोश एकेक कोदालि पारसरे
क्रोध करि जेइ धरे कोदालिर मुष्टे * एक चोटे भेजाय पाताले कूर्म्मपृष्टे
चारि दण्डे खुंड़िलेक चारि जे आगर * सागर खुंड़िया गेल पाताल भितर
पूर्व्व ओ दक्षिण दिक तार मध्यखाने * घोड़ा बान्धा देखिल कपिल विद्यमाने
डाकाडाकि करिया कहिल सब ठाँई * घोडाचोरे देखिते पाइनु एक भाई
मुनिर गायेते मारे कोदालिर पाशि * ध्यान भङ्ग हइया चाहेन महाऋषि
क्रोधेते नयने अग्नि झरे राशिपाशि * पुड़े षाटि हाजार हैल भस्म राशि
एककाले क्षय हैल सगरनन्दन * आदिकाण्डे गान कृत्तिवास विचक्षण

कपिल ऋषि कर्त्तृक सगर-वंश उद्धारेर उपाय कथन

एक वर्ष न हैल यज्ञ अवशेष * तुरङ्ग लइया पुत्र ना आइल देश
श्री असमञ्जेर पुत्र नाम अंशुमान * पुत्रेर करिते तत्व ताहारे पाठान
राज-आज्ञा पाइया चड़िया निज रथे * एके एके पृथिवीते खुजे नाना पथे
ये पथे प्रवेश करे देखे खानखान * सेइ पथ दिया तबे पाताले संधान

---

१ अंधकार २ घोड़ा ३ कुदाल, खोदने का एक औजार ४ भूमि को धारण करनेवाले कच्छप की पीठ पर ५ खोद कर ६ आग्नेय कोण ७ घोड़ा हरण करनेवाला ८ खुदी हुई ९ पूर्व १० महासागर।

नीलम बरन नील गज सुन्दर * दसनन धरा धरे तहँ भूधर
बन्दन करि पूँछेउ युवराजू * किय संकेत पन्थ गजराजू
अश्व-चोर[1] सों रहेउ सचेतू * सोइ रथ चले भानु-कुल-केतू[2]
सागर पुनि उत्तर दिशि सोहा * दिग्गज श्वेत निरखि मन मोहा
धवल रूप हे अवनि-अधारा[3] * लखे जात कहुँ सगरकुमारा
रविकुल - तुरग मिलै याही पथ * बढ़ेउ कुअँर उपजेउ पुरुषारथ
पच्छिम दिसा पयोधि तरंगा * दन्ती[4] जहँ सेन्दुर सम अंगा
रक्त बरन अरु दन्त कराला * टिकी जहाँ मेदिनी[5] बिशाला
लचत माथ जिन, डोलत धरनी * अनुपम कथा - दिग्गजन बरनी
पूरुब-दखिन कोन हय-बंधन * किये समीप कपिल मुनि दर्शन
हे मुनीस ! पूँछा करि वन्दन * देखे कतौं सगर के नन्दन
कपिल-अनल सुनि वंस-विनासा * अंशुमान मृदु वचन प्रकासा
सुत असमञ्ज, सगर-अवतंसा * कियेउ छार प्रभु, ते मम बंसा
तिन सद्‌गति कछु कहौ उपाऊ * महिमा अमित छमौ मुनिराऊ
ब्रह्म कोप थिर[6] नहिं अति काला * हरषि कहेउ मुनि, सुनौ भुवाला

आगेते देखिल पूर्व्व दिकेर सागर * देखे नील वर्ण हस्ती परम सुन्दर
धरिछे पृथिवी येन दशन उपरे * प्रणाम करिया तारे बलिछे सत्वरे
हस्ती बले एइ पथे नाह अशुमान * छोड़ाचोर निकटे हइबे सावधान
पूर्व्व हवे चलिलेन उत्तर सागर * श्वेत वर्ण एक हस्ती देखिल सुन्दर
अशुमान ताँहारे लागिल शुधाइते * ए पथे सगर-पुत्रे देखेछ जाइते
शुनिया ताहार कथा लागिल कहिते * पाइबेन घोड़ा जाह एइ एइ पथे
तथा यदि ना पाइले घोड़ार दर्शन * पश्चिम सागरे गिया दिल दरशन
रक्तवर्ण एक हस्ती देखिल सुन्दर * मेदिनी से धरियाछे दशन उपर
से सब हस्तीर शुन अपूर्व्व कथन * मस्तक नाड़िले हय मेदिनी कम्पन
पूर्व्व ओ दक्षिण दिक तार मध्य खाने * घोड़ा बान्धा देखिल कपिल विद्यमाने
दण्डवत् हइया ताँरे लागिल कहिते * ए पथे सगरपुत्रे देखेछ जाइते
महाऋषि कपिल ये बलिल तखन * मम कोपानले भस्म हैल सर्व्वजन
शुनियाइ अशुमान जुड़िल स्तवन * सेइ वशे तपोधन आमार जनम
असमञ्ज पुत्र आमि सगरेर नाति * तोमार महिमा बले काहार शकति
अशुमान बलिलेन शुन महामति * केमने हइबे मोर वंशेर सद्‌गति
ब्राह्मणेर कोपे नाहि थाके एक तिल * प्रसन्न हइया तारे कहेन कपिल

१ यह व्यंग्य कपिल मुनि की ओर संकेत है २ अंशुमान ३ दिग्गज ४ हाथी ५ पृथ्वी ६ टिकाऊ।

जो शुचि गंग बहैं भुवि लोका * लहैं पितर - तव सद्गति - लोका[1]

दो० कहँ उद्गम, कहँ बसति सो, मिलै दरस किमि गंग ?
विनय मानि, वरनेउ कपिल, सुरसरि-जनम प्रसंग ॥ २६ ॥

गंगा का जन्म और मर्त्यलोक में सगर का गंगा के लाने का उपाय-कथन तथा भगीरथ का जन्म

परमधाम त्रिभुवनपति रूपा * सुर मुनि सहित विराज अनूपा
अमियमूरि श्री आनँदकन्दा * निरखत शिव-हिय उदित अनन्दा
ताण्डव नर्त ताल विधि नाना * आनन पाँच, सकल हरिगाना
डमरू डिमि-डिमि जीव जगावै * भिंगी पुनि हरि-नेह लगावै
अनुपम गान भाव तल्लीना * मुदित सकल मुनि-देवन कीना
लक्ष्मी सहित द्रवित[2] नारायन * सरसित द्रव लखि भक्तिपरायन[3]
सरसि प्रेम-द्रव सोइ प्रभु अंगा * प्रगटीं पतितपावनी गंगा
नीर कमण्डल भरि सोइ पावन * आदर सहित धरेउ चतुरानन
सलिल पुनीत धरनि सोइ आवै * सगरवंश सद्गति तब पावै
सुत तव-पितर बनावन करनी * मम-वर[4], सुरसरि प्रगटै धरनी
अंशुमान लै तुरग सिधाये * दुखित अवध भूपति ढिग आये

मर्त्यलोके यदि बहे प्रवाह गगार * तबे से तोमार वश हइबे उद्धार
विनयते अशुमान कहे नार प्रति * कोथाय जन्मिल गगा काथाय बसति
कोथा गेले पाइब से गगार दरशन * कह मुनि शुनि सेइ गगार जनम
गगार जन्मेर कथा करेन प्रकाश * आदिकाण्ड रचिल पण्डित कृत्तिवास

गगार जन्म विवरण ओ मर्त्यलोके सगरेर गगा आनयनेर उपाय कथन एवं भगीरथेर जन्म

एक दिन गोलोके बसिया नारायण * चतुर्दिके आर यत देव-ऋषिगण
सभा माझे त्रिलोचन गान पञ्चमुखे * देवऋषि स्वर्गवासी पुलकित देखे
शिगा बले श्रीराम डम्बुरे बले हरि * पञ्चमुखे स्तुतिगान देव त्रिपुरारि
लक्ष्मी सह बसिया आछेन महाशय * शुनिया से गान हइलेन द्रवमय
द्रवमय हइलेन निजे नारायण * पतितपावनी गगा ताहारे जनम
सेइ जल कमण्डुले भरिया आदरे * राखिलेन तुलिया विधाता निजघरे
सेइ गगा यदि पार आनिते भूपति * तबे से सगर-वश पाइबे सद्गति
अशुमान तोमारे दिलाम एइ वर * तव वश हेतु गगा हबेन गोचर
घोडा लैया अशुमान अयोध्याते जाय * विवरण बले आसि सगरेर पाय

---

१ मोक्षप्राप्त लोगों का लोक　२ प्रेम में पिघलना　३ भक्ति-तल्लीन शिव　४ मेरे वरदान से।

साठि सहस सुनि सहज विनासा * धरत न धीर सगर अति त्रासा
जन्मत विपुल वंस, भय पाई * दीन विनाम-शाप सुरराई
सोइ चरितार्थ, यज्ञ भइ भंगा * अब किमि अवनि अवतरन गंगा
सुरसरि बिन न तरैं सुत-लोका * करैं विलाप भूप अति शोका
अंशुमान प्रति राज समर्पन * चले सगर मन्दाकिनि आनन

दो० सकल जतन-जप-तप विफल, दरस न सुरसरि दीन ।
शोकाकुल नित गलत तन, स्वर्ग गमन नृप कीन ॥ ३० ॥

अंशुमान इत अवधनरेसू * सुत 'दिलीप' करि अर्पन देसू
सद्गति पितर लहैं सोइ कारन * सुरसरि हेत कीन तप धारन
सहस वर्ष दम, बिन आहारा * सफल न तप, नृप स्वर्ग सिधारा
युगुल रानि तजि, संततिहीना * नृप दिलीप पुनि पितुपथ[1] लीना
जलाहार कहुँ निर्जल घोरा * तप विरञ्चि कर कीन कठोरा
अयुत वर्ष सुरसरि नहिं आना * ब्रह्मलोक नृप कीन पयाना
निरखि भानुकुल वंस-विहीना * इन्द्रादिक मिलि चिन्तन कीना
सुनी अवध प्रभु कर अवतारा * सो किमि! इतै न वंस-अधारा
देवन सोचि जतन मन लावा * गौरीपति कहँ अवध पठावा

कपिलेर स्थाने पाइलाम अश्वधने * तार कोपाग्निते भस्म हैल सर्व्वजने
शुनिया सगर राजा शोकाकुल मन * पुत्रशोके निरवधि करेन क्रन्दन
षाटि हाजार पुत्र शाप दिलेन विशाइ * अल्पकाले मरिल, ना हइल चिराइ
अशुचि हइल यज्ञ ना हइल साय * कि मते पावेन मुक्ति भावेन उपाय
स्वर्गेते आछेन गंगा करि कि प्रकार * ताहा विना किसे हबे वंशेर उद्धार
अंशुमाने राज्य राजा करि समर्पण * गंगारे आनिते राजा करिल गमन
गंगा ना पाइया राजा नित्य बाडे शोक * मरिया सगर राजा गेल ब्रह्मलोक
अंशुमान राज्य करे अयोध्यानगरे * तार पुत्र हइल दिलीप नाम धरे
पुत्रे राज्य दिया गेल गंगा आनिवारे * तप करे दश हाजार वर्ष अनाहारे
गंगा ना पाइया गेल स्वर्गेर उपर * दिलीप राजत्व करे येन पुरन्दर
अपुत्रक राजा दुःख भावेन अन्तरे * दुइ नारि थुये गेल अयोध्यानगरे
चलिल दिलीप राजा गंगा आनिवारे * कठोर तपस्या करे थाकि अनाहारे
कभु जलाहार करे कभु अनाहार * अयुत वत्सर सेवा करिल ब्रह्मार
तथापि ना पाय गंगा ना हय अशोक * मरिल दिलीप राजा गेल ब्रह्मलोक
अराजक हैल राज्य अयोध्यानगर * स्वर्गेते चिन्तित ब्रह्मा आर पुरन्दर
शुनियाछि जन्मिबेन विष्णु सूर्य्यकुले * केमने बाड़िबे वंश निर्म्मूल हइले
भाविया सकल देव युक्ति करि मने * अयोध्याय पाठाइल प्रभु त्रिलोचने

१ पिता-पितामह के अनुसार ही गंगा-हेत तप को गये।

विधवा युगुल बसति जहँ रानी * वृषभ-अरूढ़[1] शंभु वरदानी
'पुत्रवती भव कोउ एक नारी' * अलख जगाय कहत त्रिपुरारी
जीवन विधुर[2] चकित दोउ भामा * किमि असीष, सुत होय ललामा ?
रति-रत होहिं परस्पर रानी * जन्मै सुत, न असत मम बानी
गमन शंभु, इत नारि-दिलीपा * आयसु धरि नित रहहिं समीपा
युगुल रहैं दम्पति सम तरुनी * लहेउ काल-ऋतु तिन एक रमनी
शंभु प्रसाद गर्भ धरि रानी * गत दस मास प्रसव नियरानी

दो० मांसपिण्ड कौतुक जनम, अस्थिहीन असमर्थ ।
लोक हँसी, रानी दुखित, शिव दिय संतति व्यर्थ[3] ॥ ३१ ॥

चलीं अंक-शिशु सरयू तीरा * तजहिं पंगु बिन-अस्थि सरीरा
सोइ छन मुनि वशिष्ठ धरि ध्याना * कौतुक सकल तपोधन जाना
आयसु—पथ सोवाय सुत देहू * पथिक-दया तजि गमनहु गेहू
अष्टावक्र, हेतु स्नाना * व्यथित-अंग तेहि पंथ पयाना
पंगु अचञ्चल सुवन-सरीर। * लखि अस मन सोचत मुनि धीरा

दिलीपेर दुइ जाया आछिलेन वासे * वृष आरोहणे शिव गेलेन सकाशे
कहिलेन दोंहाकार प्रति त्रिपुरारि * मम वरे पुत्रवती हवे एक नारी
दुइ नारी कहे शुनि शिवेर वचन * आमरा विधवा किसे हइबे नन्दन
शङ्कर बलेन दुइजने कर रति * मम वरे एकेर हइबे सुसन्तति
एइ वर दिया गेल देव त्रिपुरारि * स्नान करि गेल दुइ दिलीपेर नारी
सम्प्रीतिते आछिलेन से दुइ युवती * कत दिने एकजन हैल ऋतुमती
दोंहाते जानिल यदि दोंहार सन्दर्भ * दोंहे केलि करिते एकेर हैल गर्भ
दश मास हैल गर्भ प्रसव समय * मांसपिण्ड मात्र पुत्र हइल उदय
पुत्र कोले करिया कांदेन दुइजन * हेन पुत्र वर केन दिल त्रिलोचन
अस्थि नाइ मांसपिण्ड चलिते न पारे * देखिया हासिबे लोक सकल संसारे
कोले करि निल ताहा चूपड़ि भितरे * सरयूर नीरे गेल फेलिबार तरे
हेन काले देखिलेन बशिष्ठ तपोधन * ध्यानेते जानिल तार सकल लक्षन
मुनि बले थुये जाओ पथे शोयाइया * करुणा करिबे केह आतुर देखिया
पुत्रे पथे शोयाइया दोंहे गेल बासे * स्नान करिबारे अष्टावक्र मुनि आसे
आट ठांइ बाका मुनि गमने कातर * बालक तेमनि करे पथेर उपर
एक दृष्टे अष्टावक्र तार पाने चाय * मनेभावे आमारे ए देखिया भेङ्चाय

१ बैल पर सवार २ विधवा का, वैधव्य ३ शंभुप्रसाद से रानी के गर्भ से अस्थिहीन लुण्ड-मुण्ड मांसपिण्ड का प्रसव देख सारा हर्ष लुप्त हो गया और निराशा तथा लोक परिहास की आशंका से वह दुखित हो उठीं।

मम तन विषम, नकल यदि करई * विनसै, ब्रह्मकोप सुत परई
जो वस्तुतः लुञ्ज, मम दाया * मदनमुग्ध छवि पावै काया[1]
अष्टावक्र विष्णु सम समरथ * जिन वर-शाप न होय अकारथ
चमत्कार-मुनि, रविकुलनन्दन * चपल सतेज लगेउ मग धावन
सुनि मुनि-टेरि रानि दोउ आईं * तनय-सरूप निरखि हरषाईं
आशिष देयँ देव, मुनि, समरथ * सुवन-दिलीप नाम भागीरथ

भगीरथ द्वारा मर्त्यलोक में गंगा का लाना

पचयें वर्ष भगीरथ नन्दन * गुरु बशिष्ठ गृह विद्यारंभन
कुअँर संग बालकन विवादा * 'जारज'[2] कहि इक शिशु प्रतिवादा
दुखित भगीरथ, उतर न आवा * मन गलानि लोचन जल छावा
तजि चटसार[3] कोपगृह शयना * मौन कुमार! न निकसत बयना
प्रहर द्वितीय दिवस चढ़ि आवा * आकुल जननि, न सुत गृह आवा

दो० शिशु हेरान बाघिनि यथा, बिलपैं मुनि सन मात।
मुनि प्रबोध, किय गमन दोउ, लखेउ कोपगृह तात ।। ३२ ।।

आमारे देखिया यदि करे उपहास * मम ब्रह्मशापे हबे शरीर, विनाश
यदि तव देह हय स्वभावे एमन * मम वरे हओ तुमि मदनमोहन
अष्टावक्र मुनि सेइ विष्णुर समान * यारे वर शाप देन कभु नहे आन
अष्टावक्र मुनिर महिमा चमत्कार * दाँडाइया उठिल से राजार कुमार
ध्याने जानिलेन अष्टावक्र तपोधन * धन्य महापुरुष ए दिलीप नन्दन
उभय राणी के डाकि आने मुनिवर * पुत्र लये हरषित दोहे गेल घर
आसिया सकल मुनि करिल कल्याण * भगे-भगे जन्म हेतु भगीरथ नाम
महाकवि कृत्तिवास पण्डित परम * आदिकाण्ड गान भगीरथेर जनम

भगीरथ कर्तृक मर्त्ये गंगा-आनयन

पाँच वत्सरेर हैल हाते खडि दिल * बशिष्ठेर बाड़ि पड़िबारे पाठाइल
बालके-बालके द्वन्द्व यखन बाडिल * जारज बलिया गालि एक शिशु दिल
मने भगीरथ दुःखी ना दिल उत्तर * विषादे आइल शिशु आपनार घर
सर्व्वदा अस्थिर हय सजल नयन * शयन मन्दिरे शिशु करिल शयन
आकाशे हइल बेला द्वितीय प्रहर * माता बले पुत्र केन ना आइल घर
शावक हाराये येन फुकारे बाघिनी * मुनि काछे कान्दि कय दिलीप कामिनी
बशिष्ठ बलेन माता ना कर क्रन्दन * कोपेर मन्दिरे पुत्रे पावे दरशन

---

१ मार्ग में छोड़ दिये गये मांसपिण्ड को दूर से आते हुए अष्टावक्र मुनि ने देखकर कल्पना की कि यदि यह कोई प्राणी मेरे विकृत शरीर की नकल या हँसी उड़ा रहा है तो नष्ट हो जाय और यदि सचमुच असमर्थ है तो कामदेव के समान छविमयी काया को प्राप्त हो २ उपपति से उत्पन्न बालक ३ पाठशाला।

चूमि माथ अञ्चल मुख पोछत * भरि सुअंक ममता सों बोलत
कहु केहि धनपति करौं भिखारी * बन्दिमुक्ति, कै रोग दुखारी
तौ शत वैद्य करौं उपचारा * गर भरि कह मृदु वचन कुमारा
कछु अभिलाष न रोग सरीरा * लाञ्छन लगत, मातु मोहिं पीरा
आश्रम कछु बालकन विवादा * कहि 'जारज' मोहिं शिशु प्रतिवादा
केहि कुल जनम, नाम-पितु कहहू * वरनि, जननि ! मम संसय हरहू
सुनि सुत-बिथा[1] रानि अति कातर * कथा सत्य सुनु वंस - उजागर
साठि सहस सुत सगर अधीसा * नसे कोप परि कपिल मुनीसा
तजि सुरपुर, छिति गंग पधारहिं * तौ तव पितर सगरसुत तारहिं
प्रवर[2] तीनि तव किय आराधन * सके न करि सुरसरि आवाहन
तव पितु गमन स्वर्ग सुतहीना * नृप-बनितन महेश वर दीना
युगुल रानि कृत दंपति जीवन * यहि विधि जनम भगीरथ नन्दन
तैं सुत भानुवंश उजियारा * सुनि अति मुदित दिलीप-कुमारा
सुर-सलिला किमि सहज प्रयत्ना * सुलभ न विना भगीरथ-यत्ना[3]
जप-तप-जोग पितरगन हेता * लौटौं महि, जाह्नवी[4] समेता
सुनि हठ-तनय विकल दोउ माता * हटकहिं, यहि छन जाहु न ताता

आसि राणी भगीरथे कोले करि निल * निजेर आँचले तार मुख मुछाइल
बलिते लागिल भगीरथेर जननी * कोन दुखे दुखी तुमि कह यदुमणि
कारे बाड़ाइब कारे करिब काङ्गाल * बन्दी मुक्ति करि यदि थाके बन्दीशाल
कोन रोगे रोगी तुमि अमित ना जानि * एइक्षणे करि सुस्थ शत वैद्य आनि
भगीरथ बले माता कर अवधान * रोग दुख नहे आजि पाइ अपमान
विरोध बाधिल एक बालकेर मने * जारज बलिया गालि दिल से ब्राह्मणे
कोन वशजात आमि काहार नन्दन * इहार वृत्तान्त कथा कह विवरण
पुत्रेर हइले दुःख माये लागे व्यथा * पुत्रे सम्बोधिया माता कहे सत्य कथा
सगरेर छिल षाटि हाजार तनय * कपिल मुनिर शापे हैल भस्ममय
गंगा स्वर्ग हैते यदि आइलेन क्षिति * तबे मे सगरवश पाइबे निष्कृति
क्रमे तिन पुरुष करिल आराधना * तबु गंगा आनिते नारिल कोन जना
दिलीप तोमार पिता गेल स्वर्गपुरे * पाइलाम तोमा पुत्र महेशेर वरे
भगे-भगे जन्म हेतु भगीरथ नाम * सूर्य्यवंशे जन्म तव अयोध्याय धाम
शुनिया मायेर कथा भगीरथ हासे * हासिया कहिल कथा जननीर पाशे
सूर्य्यवंशे भूपतिरा निर्ब्बोधेर प्राय * अल्प श्रमे गंगा देवी के कोथाय पाय
यदि आमि धरि भगीरथ अभिधान * गंगा आनि करिब सगर वंश त्राण
काँदिया कहिछे भगीरथेर जननी * तपस्याय एक्षणे ना याह वंशमणि

---

१ व्यथा, पीड़ा। २ पूर्वज ३ अकथ और अथक परिश्रम ४ गंगा।

दो० सुनेउ न, मातन बंदि सुत, गमनेउ मुदित उमंग।
गुरु बशिष्ठ लै दीच्छा, फरके दच्छिन अंग॥ ३३॥

अनाहार पुनि हेतु-पुरंदर[1] * सहस सात जपि वर्ष निरंतर
सदा मंत्रबस सुरगन रीती * प्रगटि इन्द्र कह वचन सप्रीती
को पितु धन्य, कौन कुलकेतू ? * मांगु मांगु वाञ्छित हिय-हेतू
तनय-दिलीप भानु-कुल-नन्दन * बन्दहुँ सुरगनपति जगबन्दन
पितर सहस सठ सगर-कुमारा * कपिल-शाप विनसे जरि छारा
मंदाकिनि जो प्रभु सों पावौं * तिनहिं सुगति सुरपुरहिं पठावौं
सुनहु सुवन, कह सहसविलोचन * गंग हेतु पूजहु त्रैलोचन
जो कछु विधिन परैं तव काजा * करौं सहाय, न छल युवराजा !
इन्द्र प्रनम्य, चलेउ कैलासा * तप अनन्य किय शंभु-निवासा
आक[2] धतूर विल्वदल[3] चन्दन * अनाहार कहुँ अजल शिवार्चन
अडिग सहस दस वर्ष कठोरा * कह पशुपति तैं सफल किशोरा
भाव अनन्य गदाधर रूपा * परम तत्व सेवहु सुतभूपा
मम वर सफल साधना तोरी * सुरसरि मिलै अमिय - मय - भूरी

मायेर बचने भगीरथ ना रहिल * बशिष्ठेर स्थाने मन्त्रदीक्षा से करिल
यात्रा काले करे राजा मायेर स्मरण * दक्षिण लोचन तार करिछे स्पन्दन
मायेर चरणे आसि करिल प्रणति * प्रथमे सेविते गेल देव सुरपति
इन्द्रमन्त्र अनाहारे जपे निरन्तर * इन्द्रसेवा करे सात हाजार वत्सर
मन्त्रवश देवता रहिते नारे घर * वासव एलेन तथा दिते तारे वर
कोन वंशे जन्म तव काहार तनय * वर मागि लह या अभीष्ट तव हय
करिया प्रणाम इन्द्रे वलिल वचन * सूर्य्यवंशे जात आमि दिलीप-नन्दन
सगरेर छिल षाटि सहस्र तनय * कपिल मुनिर शापे हैल भस्ममय
आछेन स्वर्गेते गंगा देव सुरपति * ताहे मम वंशेर ये हइबे सद्‌गति
इन्द्र बले बलि शुन दिलीपकुमार * आमा हैते दरशन ना पावे गंगार
आनिबेक गंगा यदि आमि देइ वर * एक भावे पूज गिया देव दिगंबर
गंगारे आनिते पथे विघ्न यदि घटे * आमि ता करिब मुक्त कहि अकपटे
इन्द्रेर चरणे राजा करिल प्रणति * कैलासे सेविते गेल देव पशुपति
आकड़ा धुतूरा ये आकन्द बिल्वपात * इहातेइ तुष्ट हन त्रिदेवेर नाथ
कभु अनाहारे कभु निराहार करे * दृढ़ तप करे दश हाजार वत्सरे
महेश बलेन शुन राजार नन्दन * अनाहारे ए तपस्या कर कि कारण
गङ्गारे आनिबे तुमि आमि दिब वर * एक भावे सेव गिया देव गदाधर

१ इन्द्र के लिए २ मदार ३ बेलपत्र।

चलेउ बन्दि शिव, जहँ श्रीकन्ता * नित जप कोटि मंत्र भगवन्ता
शिशिर[1] शरीर सलिल[2] बिच थापै * ग्रीषम रुद्र पञ्चगिन तापै
यहि विधि विगत वर्ष चालीसा * भक्त - विवस प्रगटे जगदीसा

दो० निष्ठा, भक्ति, अनन्य तप, जतन-भगीरथ, तात।
सफल, माँगु वर वाञ्छित, बोले करुनानाथ ॥ ३४ ॥

सहस साठि जे सगर-कुमारा * ते मम पितर कपिल किय छारा
हे प्रभु ! मुक्तिदान तिन दीजै * सुलभ गगनवाहिनि[3] मोहिं कीजै
प्रभु हँसि कहेउ जो गंग पुनीता * ज्ञान न मोहिं, सो अगम अतीता
होहुँ विफल जो कृपानिधाना * पदपंकज तव त्यागहुँ प्राना
कह हरि, सुरसरि हित तजि सोकू * चलौ संग मम, सुत ! विधिलोकू[4]
सदन - विरञ्चि वारि रह जेता * हरन कियेउ मो कृपानिकेता
प्रभुहिं दरसि विधि सविनय आसन * दै पुनि चहेउ नीर पद परसन
लखि निकेत-बासन[5] जलहीना * सञ्चित गंग - कमण्डल लीना
हरिपद परसेउ करि आवाहन * कह 'अंह्रिजा' गंग मोइ कारन
कहेउ विष्णु, गमनौ लै संगा * सुत सोइ पतितपावनी गंगा
गो-द्विज-घात अधम जे पापा * कुस परसत विनसत संतापा

शिवेर चरणे पुनः करिया प्रणति * गोलोके चलिया गेल यथा लक्ष्मीपति
भगीरथ प्रतिदिन कोटी मन्त्र जपे * तप करे ग्रीष्मकाले रौद्रेर उत्तापे
शीत चारि मास थाके जलेर भितर * ए मते करिल तप चल्लिश वत्सर
मन्त्रवश देवता रहिते नारे घर * आसिया कहेन हरि तारे निते वर
तपस्या तोमार मोरे लागे चमत्कार * माग इष्ट वर दिब राजार कुमार
भगीरथ बले प्रभु करि निवेदन * सगरेर छिल षाटि हाजार नन्दन
कपिलेर शापेते हइल भस्ममय * पाइले गङ्गारे तारा मुक्त तबे हय
कहिलेन महात्म्य वदने चक्रपाणि * गङ्गार महिमा बापू आमि किवा जानि
भगीरथ बले गंगा नाहि दिबे दान * तव पादपद्मेते त्यजिब आमि प्राण
शुनिया ताहारे हरि करेन आश्वास * ब्रह्मलोके आछे गंगा चल तार पाश
छिल ब्रह्मलोकेते सामान्य यत जल * माया करि रलिक हरि से सकल
ब्रह्मार सदने प्रभु दिल दरशन * सम्भ्रमे उठिया ब्रह्मा दिलेन आसन
पाद्य दिते यान ब्रह्मा घरे नाहि जल * जलहीन पात्र मात्र आछे अविकल
कमण्डलु मध्ये गंगा पड़े तार मने * आस्तेआस्ते गिया ब्रह्मा आनेन यतने
गंगाजले विष्णुपद करेन स्खालन * अह्निजा बलिया नाम एइ से कारण
भगीरथ राजारे बलेन चिन्तामणि * लये जाह एइ गंगा पतितपावनी
ब्रह्महत्या गोहत्या प्रभृति पाप करे * कुशाग्रे परशे यदि सब पाप तरे

---

१ घोर जाड़े में २ जल ३ गंगा ४ ब्रह्मलोक ५ घर के बरतन।

अकथ पुन्य सुरसरि स्नाना * पितर मुक्ति-हित करौ पयाना
गमनौ छिति, हे धवल-तरंगा ! * तारौ वेगि सगर नृप-अंगा[1]
कहेउ गंग आयसु धरि माथा * कछु मम विनय सुनौ जगनाथा
पापी अधम बसत बहु धरनी * अपें मोहिं मलिन निज करनी
लहैं मुक्ति सुरपुर मम संगति * कहौ उपाय नाथ ! मम सद्गति

दो० सुकृत-रूप वैष्णव अखिल, जिन बिच रमौं अनन्य ।
दरस-परस-स्नान तिन, करै देवि तोहिं धन्य ॥ ३५ ॥

गंग बोध दै केकी-पंखा[2] * दीन भगीरथ अनुपम शंखा
जेहि पथ शंखनाद सुत करई * सोइ मारग सलिला[3] अनुसरई
कह विरञ्चि हे पुण्यकुमारा * तव प्रयास त्रैलोक्य उबारा
मम रथ बैठि समर्थ भगीरथ * मारग चलहु बनावत तीरथ
शंखनाद, स्यन्दन जस बढ़ई * तव अनुगमन गंग तस करई
मंदाकिनि सुरलोक प्रवाहू * अमरपुरी - जन अमित उछाहू
करि स्नान भानु-कुल-अंमहिं[4] * अछत[5] दूर्वा-दल लै पूजहिं
स्वर्गलोक - जन सुरसरि - नामा * मंदाकिनि कहि करहि प्रनामा

कतेक स्नानेते पुण्य वलिते ना पारि * वशेर उद्धार कर लैया गगावारि
श्रीहरि वलेन गगा करह प्रस्थान * अविलम्बे मुक्त कर सगर-सन्तान
कहिलेन एत यदि प्रभु जगन्नाथ * कांदिया बलेन गगा प्रभुर साक्षात्
पृथिवीते कत शत आछे पापीगण * आसिया आमाते पाप करिबे अर्पण
ताहारा हइया मुक्त जाइबे स्वर्गेते * मुक्त हब आमि प्रभु का ार स्पर्शेते
श्री ि वलेन यत वैष्णव अखिले * ताँहारा करिबे स्नान तोमार सलिले
करि आमि वैष्णवेर सगति वासना * वैष्णवेर सगे तुमि हबे पूतमना
कहिया गगाके एइ वाक्य जगत्पति * शङ्ख दिया बलिलेन भगीरथ प्रति
जाह तुमि आगे आगे शङ्ख वाजाइया * जाबेन पश्चाते गंगा तोमारे देखिया
विरिञ्चि बलेन राजा तुमि पुण्यवान * तोमा हैते तिनलोक पावे परित्राण
आमार ए रथ तुमि लह भगीरथ * चडिया आगेते तुमि जाह एइ रथ
रथ चडि यान आगे शङ्ख बाजाइया * चलिलेन गगा तार पाछु गोडाइया
स्वर्गवासी आमि करे गगाजले स्नान * भगीरथेर माथाय देय दूर्व्वाधान
आदिकाण्ड कृत्तिवास करिल बाखान * स्वर्गेते गगार हैल मन्दाकिनी नाम

---

१ वश, पुत्र २ मयूरपंखधारी भगवान ३ गगा ४ भानुकुल में उत्पन्न भगीरथ ५ अक्षत, चावल ।

ऐरावत का अहंकार चूर्ण और चार धाराओं में गंगा का मृत्युलोक में आगमन

तजि विधिलोक भगीरथ संगा * पहुँची सैल-मेरु[1] ढिग गंगा
योजन साठि सहस्र उतंगा[2] * सहस बतीस मूल गिरि शृंगा
सुमन धतूर सरिस तेहि रूपा * ता बिच गह्वर[3] गहन अनूपा
द्वादश बर्ष भ्रमब तहँ कीन्हा * गह्वर-पथ सुरसरि नहिं चीन्हा
स्तुति करत जोरि जुग पानी * बिलमति किते गंग महरानी
तव बिन बंस न मोर उधारा[4] * अनुनय करत दिलीप - कुमारा
तात सुमेरु पंथ अवरोधा * सफल करौं किमि तव अनुरोधा
ऐरावत मतंग जो आवै * दन्त चीरि गिरि पंथ बनावै
सोइ निकास मम होय प्रवाहू * चले भगीरथ जहँ सुरनाहू

दो० ब्रह्मलोक सों अवतरी, करि पुनीत सुरधाम।
जिमि सुमेरु-गह्वर रुकी, धारा गंग ललाम॥ ३६॥

गाथा सकल इन्द्र मन बरनी * केहि बिधि प्रगति करै जगतरनी
ऐरावत पठवौ मम संगा * पर्वत फोरि देय पथ गंगा
इन्द्रायसु चलि अधिपमतंगा[5] * पहुँचेउ जहाँ हेमगिरि शृंगा
अहंकार कुञ्जर[6] मन आवा * मलिन भाव तव सुनहिं जनावा

ऐरावतेर अहंकार चूर्ण ओ चारि धाराय गंगार मर्त्ये आगमन

ब्रह्मलोके ह'ते गंगा आने भगीरथ * आनिया मिलेन गंगा सुमेरु पर्व्वत
सुमेरुर चूडा षाटि सहस्र योजन * बत्रिश सहस्र तार गोड़ाय पत्तन
एइ आदि कहिलाम एइ तार मूल * सुमेरु पर्व्वत येन धुतुरार फूल
तार मध्ये आछे एक दारुण गह्वर * भ्रमेन ताहाते गंगा द्वादश वत्सर
गंगार ना पाय देखा नाहि कोन पथ * जोड़हाते स्तुति करे राजा भगीरथ
सुमेरुते हइल तोमार अवतार * ना करिले गंगा मम वंशेर उद्धार
गंगा बलिलेन शुन बाछा भगीरथ * जाव आमि कोन दिके नाहि पाई पथ
ऐरावत हस्ती यदि आनिबारे पार * तबे से पर्व्वत हैते पाइ ये निस्तार
ऐरावत पर्व्वत चिरिया देय दाँते * तबे त बाहिर हइ आमि सेइ पथे
गंगार चरणे राजा करिया प्रणति * आरबार गेल यथा देव सुरपति
प्रणाम करिया बन्दे जोड़ करि हात * कहिते लागिल कथा इन्द्रेर साक्षात्
ब्रह्मलोक हइते आसिया कोन मते * पड़िया आछेन गंगा सुमेरु पर्व्वते
ऐरावत पर्व्वत चिरिया देय दाँते * तबे त बाहिर हन गंगा सेइ पथे
लहिल आयसु इन्द्र, गेल ऐरावते * आसिया मिलिल सेइ सुमेरु पर्व्वते
ऐरावतेर अन्तरे हइल अहङ्कार * कहगे गङ्गा के गिया संवाद आमार

---

१ मेरु पर्वत २ ऊँचा ३ खोह, बिवर ४ उद्धार ५ गजपति ऐरावत ६ हाथी (ऐरावत)।

मम ढिग गंग एक निसि बासा * तौ गिरि भञ्जि मिटावौं त्रासा
विकल भगीरथ सुनि गजबानी * द्रवित नैन काया कुम्हिलानी
मुख न बैन; कित उदधि-मतंगा[1] * करुनमई पूछत इमि गंगा
सुरपति दया न संसय माता * तदपि गजेन्द्र मलिन जिमि बाता
कही, सो बरनौं किमि, अति हीना * सुरसरि बूझि मर्म सब लीना
सुरपुर-सुख उन्माद विसेसा * दन्तीपति सन कहेउ सँदेसा
साधि लेय मम वेग तरंगा * सात-रैन[2] निबसौं तेहि संगा
सुनत मोद ऐरावत लीना * दन्तप्रहार चार ढिग[3] कीना
कनकसैल[4] फूटी चौधारा * 'भद्रा' नाम उतर[5] पग धारा
'वसु' प्रवही प्राची दिसि सागर * पच्छिम जलधि 'श्वेत' लिय डागर[6]
बही अवनि[7] शुचि[8] 'अलकानन्दा' * सुत-दिलीप हिय अमित अनन्दा
इत गज विकल प्रवाह प्रचण्डा * जल चहुँ भरेउ श्रवन मुख शुण्डा[9]

दो० मातु-मातु कहि, धरनि गिरि, प्रान याचना कीन ।
दलित दर्प इमि दन्तिपति, सुरपुर मारग लीन ।। ३७ ।।

गंगा यदि एक रात्रि वञ्चे मम सने * अव्याहति दिब तबे बन्धन खण्डने
यखन कहिल एइ कथा ऐरावत * म्लान मुखे माथा हेंट करे भगीरथ
मुखे नाहि वाक्य सरे चक्षे बहे जल * दुरु दुरु हिया करे अन्तर विकल
दशा देखि दयामयी जिज्ञासेन ताय * कि हेतु एमन दशा घटिल तोमाय
पारिलि कि ऐरावत आनिते हेथाय * कोन दुःखे काँद वापू कह त आमाय
भगीरथ कहे माता करि निवेदन * सुरमणि मनवाञ्छा करिल पूरण
ऐरावत ये कहिल आमार गोचरे * पुत्र हये जननीरे बलिब कि करे
गंगा बलिलेन तार बुझिलाम तत्त्व * राजभोगे ऐरावत हइयाछे मत्त
यद्यपि आड़ाइ ढेउ से सहिते पारे * तार घरे सप्त रात्रि रब बल तारे
भगीरथ एइ कथा कहे हस्तीवरे * शुनिया गंगार कथा आपना पासरे
चारिखान करिया पर्व्वत चिरे दाँते * चारि धारा हैल गंगा सुमेरु कायाते
वसु भद्रा श्वेत आर अलकानन्दा आर * पड़िलेन पर्व्वत हइते चारि धार
वसु नामे गंगा हर पूर्व्वेर सागरे * भद्रा नामे सुरधुनी चलिला उत्तरे
श्वेत नामे चलिलेन पश्चिम सागरे * गेलेन अलकानन्दा पृथिवी उपरे
मारिलेन एक ढेउ ऐरावतोपरे * गेल जल नाक मुखे हाँसफाँस करे
मारिलेन आर ढेउ प्राय गत प्राण * हस्ती बले गंगामाता कर परित्राण
मा बलिया हस्ती यदि दाँते खड़ करे * राखिलेन आर ढेउ पर्व्वत उपरे
ऐरावत पलाइल पाइया तरास * आदिकाण्ड रचिल पण्डित कृत्तिवास

---

१ चारों दिशाओं के सागरों के दिग्गजों के शिरोमणि २ सात रात्रि ३ स्थान ४ सुवर्णपर्वत ५ उत्तर दिशा ६ रास्ता ७ पृथ्वी पर ८ पवित्र ९ सूँड़ ।

महादेव के द्वारा गंगा का वेग धारण

सहित कुँअर सुरसरि तजि मेरू * चलि कैलास वास शिव केरू
गिरि उतंग[1] सों पात-प्रहारा[2] * डगमग धरनि सहत नहिं भारा
विवस बहेउ जलवेग पताला * लखि दिलीप-सुत हाल बेहाला
करहु रसातल मातु प्रवेशू * बिन गति, पितर महहिं मम क्लेशू
जनि मम वेग सकै छिति धारी * सेवहु सुत समरथ त्रिपुरारी
रोपहिं[3] शम्भु जो मम जल-धारा * तव हित अवनि[4] लेहुँ अवतारा
कियेउ भगीरथ गंग प्रनामा * वर्ष अराधन किय शिवधामा
शिव बहोरि पूछत तप-हेता * वरनी बिथा भानु - कुल - केता
सुरसरि-धार सहति नहि धरनी * नाथ शीश रोपहु जगतारनी
सुनि शिव नाचत पुलकित अंगा * उमा सुनहु जग प्रगटति गंगा
जटाजूट शिरपञ्च कराला * तहँ प्रवही शुचि धार मराला
द्वादश वर्ष न मारग पावा * केस-महेस विपुल भ्रम छावा
कौतुक लखेउ भानुकुलनन्दन * किय बहोरि गौरीपति बन्दन
शंकर जटा चीरि पथ दीन्हा * सोइ थल 'हरद्वार' जग चीन्हा

महादेव कर्त्तृक गंगार वेग धारण

भगीरथ सुमेरु हइते गंगा निया * कैलास पर्वत पर मिलिल आसिया
कैलास हइते पड़ पृथिवी उपरे * वसुमती तार भारे टलमल करे
वेगवती हय गंगा चले रसातले * दाँडाइया भगीरथ जोड़ हाते बले
पाताले ते हइल तोमार आगुसार * केमने हइबे मम वंशेर उद्धार
गंगा बलिलेन बापू शुनह वचन * धरित्री आमार वेग ना सबे कखन
शिव यदि आसिया वहेन जलधार * तबे पारि क्षितिते हइते अवतार
गंगार चरणे पुन करिया प्रणति * आरवार गेल यथा देव पशुपति
एक वर्ष करिल शिवेर आराधन * बलेन महेश पुन एले कि कारण
भगीरथ बले गंगा दिल नारायण * पृथिवी धरिते वेग ना पारे कखन
तुमि यदि आसि शिरे धर जलधार * पृथिवीते हय तबे गंगा अवतार
गौरीर सहित तबे नाचे त्रिलोचन * तोमा हैते पाब आजि गंगा दरशन
पातिलेन पञ्चानन पञ्चशिर सुखे * पतितपावनी गंगा पड़ेन कौतुके
शिवेर माथाय जटा बड़ भयङ्कर * बेड़ान जटार मध्ये द्वादश वत्सर
भगीरथ बलेन मा ए कि व्यवहार * आमार केमने हबे वंशेर उद्धार
गङ्गा बलिलेन बापू शुन भगीरथ * जटा हैते बाहिर हइते नाहि पथ
भोलानाथ बलिया डाकेन जोड़ हाते * ध्यान भंग हइया चाहेन विश्वनाथे
महेश चिरिया जटा दिलेन गंगार * सेइ खाने तीर्थ ये हइल हरिद्वार

१ ऊँचे २ धार के प्रहार की चोट ३ रोकें ४ पृथ्वी।

जहँ स्नान दान जन करहीं * पुन्य अमित विधि वरनि न सकहीं
विलग धार एक बही पताला * 'भोगवती' तेहि नाम विशाला

दो० संग भगीरथ पुनि चली, बही त्रिवेनी तीर।
गंगा-यमुना-सरस्वति, संगम जहँ शुचि नीर ॥ ३८ ॥

तीरथराज प्रयाग सुहावन * मकर-नहान स्वर्ग-पथ पावन
शंख घोष रविकुल-सुत आगे * वारानसी भाग पुनि जागे
काशी-थल जहँ शुचि सुरधारा * महिमा चित दै सुनहु अपारा
एक दिवस द्विज बधेउ त्रिलोचन * पातक तासु लखात न मोचन
गौरि गनेश षडानन चिंता * किमि अघ-मुक्त होयँ भगवन्ता
ब्रह्मघात किमि उतरइ माथा * उमा कही शिव सन, हे नाथा!
बिहँसि कहेउ शिव, लखु मन्दाकिनि * बसति अवनि जो पाप - विनाशिनि
उमा, उमापति वृष असवारी * सुरसरि ढिग यात्रा सँवारी
कुस परसत सो विनसेउ पापा * कहत शंभु लखु गंग-प्रतापा
पञ्चकोस सीमित करि धामा * वारानसी छेत्र सरनामा
जहँ तन तजे लहै शिवलोका * मिटैं सकल भव दारुन सोका
दिवस एक तहँ विलमि विरामा * सुरसरि सहित कुँअर तजि धामा
शंखघोष; पुनि पथ गहि लीना * सोइ सुरधुनी अनुगमन कीना

येइ नर स्नान दान करे हरिद्वारे * तार पुण्य सीमा ब्रह्मा कहिते ना पारे
एक धारा गेल गंगा पाताल मण्डले * भोगवती ब'ले नाम हैल रसातले
पश्चाते चलेन गंगा भगीरथ आगे * आसि गंगा मिलिलेन त्रिवेणीर भागे
भगिनि यमुना गंगा आर सरस्वती * नामेते त्रिवेणी तिन धारा युक्तगति
प्रयागे मकरे येइ नर स्नान करे * मुक्त ह'ये सर्व्वपापे जाय स्वर्गपुरे
भगीरथ आगे जाय शङ्ख बाजाइया * वाराणसी पुरे गंगा उत्तरिल गिया
मन दिया शुन वाराणसीर आख्यान * वाराणसी तीर्थ जाहे हइल निर्म्माण
काटिलेन एक काले हर द्विज माथा * ब्रह्महत्या पाप तार ना हय अन्यथा
चापिलेक ब्रह्महत्या गिरीशेर काँधे * कार्त्तिक गणेश आर कात्यायनी काँदे
गौरी कन केन वा काटिले विप्रमाथा * ब्रह्मवध हइले के करिबे अन्यथा
गौरीर शुनिया कथा शिव हासि भाषे * पृथिवीते गेल गंगा कत पाप नाशे
वृषभे चापिया तबे शङ्करी शङ्कर * दौड़ाइल सुरधुनी तीरेते सत्वर
कुशाग्रे करिया हर कैल परशन * ब्रह्महत्या पाप तार हैल विमोचन
बलेन धूर्ज्जटी देख परीक्षा गंगार * पञ्च क्रोश युड़ि हर देन गण्डी तार
सेइ पञ्चक्रोश तीर्थ नाम वाराणसी * ताहाते छाड़िले तनु शिवलोके बसि
एक रात्रि गंगा तथा करि अवस्थान * करिलेन भगीरथ सहित प्रस्थान
भगीरथ आगे जान शङ्ख बाजाइया * जह्नुर निकटे गिया मिलिल आसिया

पर्नकुटी बिच-पंथ सुहाई * जहँ तप करत जह्नु मुनिराई
भइ जलमगन कुटी, मुनि ध्याना * भयेउ भंग किय सुरसरि पाना
तब लौं दीठि भगीरथ डारी * लुप्त गंग, जनि कतौं[1] निहारी

दो० बट तर जह्नु मुनीस लखि, पूँछी अवध नरेस ।
कस कौतुक ? संसय अतिव, मेटहु मोर कलेस ॥ ३९ ॥

उचित न केहु विधि गंग-अचारा[2] * नासेउ मम आश्रम निज धारा
सुरसरि पान कीन सोइ कारन * लावहु टेरि विधातहिं राजन् ![3]
सुनत महीप व्याप अति त्रासा * दोउ कर विनय करत मुनि पासा

काण्डार मुनि का बैकुण्ठगमन

तुम विधि, विष्णु, तुमहिं त्रैलोचन * तव महिमा-गुन जानत को जन
सगर-तनय जे साठि हजारा * कपिल-अनल विनसे जरि छारा
उदर न मुक्त गंग मुनि करहीं * तौ मम पितर न सद्गति लहहीं
ब्रह्मकोप नहिं थिर अतिकाला * मुदित जह्नु कह सुनु महिपाला
पुनि मुख निसरि[4] गंगजल आवै * तौ उच्छिष्ट ! निरादर पावै
दच्छिन जानु[5] चीरि मुनि ज्ञानी * प्रगट कीन इमि सुरसरि रानी

पाता लता कृत जह्नु मुनिर कुटीर * गंगास्रोते भेसे जाय प्लावि दुइ तीर
चक्षु मेलिलेक मुनि भांगिलेक ध्यान * गण्डुष करिया सब जल करे पान
कत दूरे गिया भगीरथ फिरे चाय * कोथा गेल गंगादेवी देखिते ना पाय
अकस्मात् गंगादेवी गेल कोन खाने * देखे मुनि बटतले बसिया छे ध्याने
जह्नुरे जिज्ञासे भगीरथ जोड़ हात * गंगा मोर केवा निल पथे अकस्मात्
बलिलेन मुनि शुन राजा भगीरथ * आनिले गंगारे तव नाहि छिल पथ
मम घर भांगे गंगा केमन आचार * गिया कह भगीरथ निकटे ब्रह्मार
आनगिया देखि ब्रह्मा मम किवा करे * गण्डुष करिया गंगा रेखेछि उदरे
मुनिर वचन शुनि लागिल तरास * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

काण्डार मुनिर बैकुण्ठे गमन

जोड़ हाते भगीरथ करेन स्तवन * तुमि ब्रह्मा तुमि विष्णु तुमि त्रिलोचन
तोमार महिमा गुण जाने कोनजन * मनुष्य शरीरे तव कि जानि स्तवन
सगर राजार षाटि हाजार तनय * कपिलेर शापेते हइल भस्ममय
तोमार उदरेते गंगार अवतार * आमार वंशेर किसे हइबे उद्धार
ब्राह्मणेर कोप नाहि थाकये कखन * कृपाते बलेन तारे जह्नु तपोधन
मुख हइते बाहिर करिले गङ्गाजल * उच्छिष्ट बलिया तबे घुषिबे सकल
चिरिल दक्षिण जानु सेइ क्षणे मुनि * जानु दिया बाहिर हइल सुरधुनी

१ किसी भी जगह २ आचरण, व्यवहार ३ यह व्यंग्य है ४ निकलकर ५ जाँघ ।

नाम 'जाह्नवी' भगवति लोका * लहत हरहिं भव - तन - मन सोका
मुनि काण्डार शापवश जाना * नहिं त्रिभुवन पातकी समाना
बसत पापरत गनिका - धामा * मोह - काम कर फन्द ललामा
कानन काठ लेन सो गयऊ * तहँ मुनि-प्रान व्याघ्र हरि लयऊ
लै यमदूत चले यमलोका * मांसपिण्ड केहरि[1] अवलोका[2]
अस्थि अरण्य[3] शेष जहँ डारी * तहाँ उतर दिसि गंग पधारी
पुन्य सलिल वन कियेउ प्रकासा * उड़ेउ अस्थि लै काक अकासा

दो० निरखि चील्ह एक लोभबस, अभिरी वायस[4] संग ।
अस्थि हेत सुरसरि उपर, जूझत दुहू विहंग ॥ ४० ॥

तजी अस्थि वायस भय पाई * दैव-योग सुरधुनी[5] समाई
परसत जल काण्डार अपावन * चौभुजरूप भयेउ सो पावन
गयेउ लोक जहँ हरि अभिरामा * यमकिंकर[6] भाजे यमधामा
रोय कथा यमराज बुझाई * मुनि पातकी बन्दि जिमि लाई
तासु पापमय जीवन वरना * लहेउ अन्त सो किमि हरि-चरना
दुसह लाज ! नहिं काज हमारा * सुनि यम चकित स्वर्ग पग धारा
गहि पदपंकज - विष्णु पुनीता * यम वरनी जिमि भई अनीता[7]

छिलेन किञ्चित् काल जह्नर उदरे * जाह्नवी बलिया ख्यात हइल संसारे
गंगामाता शुनि शापभ्रष्ट सेइ खाने * उत्तर वाहिनी हैया जान सेइ खाने
काण्डार नामेते मुनि छिल एक जन * तार तुल्य पापी नाइ ए तिन भुवन
जन्मावधि सेइ मुनि वेश्या सेवा करे * तार वशीभूता हैया थाके तार घरे
काष्ठ काटिवारे गियाछिल से कानन * धरिया व्याघ्रेते तार बधिल जीवन
यमदूत आसि तारे वरिया बन्धन * लइया चलिल तारे यमेर भवन
व्याघ्रेते सकल मांस गेल त खाइया * वनेर मध्येते अस्थि रहिल पड़िया
काकेते लइया जाय गंगा मध्य दिया * हेन काले सञ्चान से काकेरे देखिया
जाय पक्षी महावेगे काके खेदाइया * गंगा दिया जाय काक भये पलाइया
दुइजने तारा तथा जड़ाजड़ि करे * दैवयोगे अस्थि सेइ गंगा नीरे पड़े
करिल यखन अस्थि गंगा परशन * चतुर्भुज हइया से चलिल ब्राह्मण
हेन काले नारायण बैकुण्ठे थाकिया * काड़िया निलेन यमदूतेरे मारिया
काँदिते काँदिते सब यमेर किङ्कर * जिज्ञासा करिते गेल यमेर गोचर
विषय छाड़िनु प्रभु आर नाहि काज * आजि बड़ यमराज पाइलाम लाज
काण्डार नामेते पापी त्रिभुवने खाने * बैकुण्ठे ताहारे हरि निलेन कि ज्ञाने
यमराज रोषे शुनि दूत याहा भाषे * जिज्ञासा करिते गेल श्रीहरिर पाशे
काँदिते लागिल यम धरि प्रभु पाय * विषय छाड़िनु नाहि विषयेर दाय

१ सिंह २ देखा ३ वन ४ कौआ ५ गंगा ६ यम के दूत ७ नीति के विरुद्ध, अन्याय ।

कान्डार पातकी अपावन * अधम विदित सो, जग मनभावन !
पापिन पर यम - चिरअधिकारू * प्रभु छीनेउ सो किमि अविचारू
पाप-पुन्य कर एकहि भोगू * तौ यम-शासन कर कित योगू
हँसि हरि कही सुनहु यमराया * रहत गंग किमि पातक-छाया
महिमा अकथ अमित शुचि धारा * जतक[1] दूर ताकर विस्तारा
दण्डपाणि कह, बस नहिं जाई * जाहु समीप न, मोर दुहाई
करि शवदाह अस्थि जल-शयना * चौभुज जीव लहै मम अयना[2]
बसै तीर गंगोदक पाना * प्रानी सो मम रूप समाना
बरजौ दूत, न तहँ पग डारैं * ते मम जन, मम आन[3] विचारैं

दो० यम-प्रबोध इमि, उत सुखद, महिमा जासु अपार।
गौड़ देश पावन करत, बही गंग शुचि धार ॥ ४१ ॥

सगर-वंश उद्धार

पूरुब जात पद्म मुनिनाथा * भागीरथी - चलीं तिन साथा
मम अकाज पूरुब दिसि जाये * विनय भगीरथ मातु सुनाये
चली फेरि शुचि प्रबल तरंगा * भागीरथी भगीरथ संगा
बही धार इक तजि जग - तरनी[4] * पद्मावती[5] पद्म[6] अनुसरनी

पापीर उपरे मोर चिर अधिकार * आजि केन ताहार हइल अविचार
काण्डार ब्राह्मण पापी विदित संसारे * आनिलेन कोन गुणे वैकुण्ठे ताहारे
शुनिया यमेर कथा हरि हासि कय * गंगा यथा तथा कभु पाप नाहि रय
गंगार महिमा कत कि बलिते जानि * मन दिया शुन तबे कहि दण्डपाणि
यत दूरे याइबेक गंगार वातास[7] * आमार दोहाई यदि जाओ तार पाश
पुड़े मरे अस्थि लैया फेले गंगोदके * चतुर्भुज हैया सेत' आसिबे गोलोके
गंगातीरे थाकि गंगाजल करे पान * से शरीर जान तुमि आमार समान
निषेध करह यत दूतेरे तोमार * यदि जाओ सेइ स्थाने दोहाइ आमार
शुनिया प्रभुर कथा शमनेर त्रास * आदिकाण्ड रचिल पण्डित कृत्तिवास

सगर वंश उद्धार

काण्डारेर प्रति गंगा मुक्तिपद दिया * गौड़ेर निकटे गंगा मिलिल आसिया
पद्म नामे एक मुनि पूर्व्वमुखे जाय * भगीरथ भावि गंगा पश्चात् गोड़ाय
जोड़हात करिया बलेन भगीरथ * पूर्व्व दिक जाइते आमार नाहि पथ
पद्ममुनि लये गेल नाम पद्मावती * भगीरथ सङ्गेते चलिल भागीरथी

१ जितनी २ धाम ३ मर्यादा, लीक ४ गंगा ५ बंगाल में प्रसिद्ध नदी
६ पद्म मुनि ७ वायु।

गंग दीन पग्रहिं पुनि शापा * तासु - नीर जनि मेटइ पापा
प्रथम कछुक पुनि भैरव[1] वाहिनि * पुनि भईं मातु उदधि-अनुगामिनि
मंदाकिनि कर दरस पुनीता * करैं शंखध्वनि देव सप्रीता
शंखघोष, मज्जन जे करहीं * अयुत वर्ष सुरपुर नर लहहीं
कीन्ह समोद इन्द्र अस्नाना * इन्द्रेश्वर० प्रसिद्ध अस्थाना
इन्द्रेश्वर जो घाट सुपावन * स्वर्गदैन सब पाप नसावन
द्रुतगति[2] चली सरित[3] जगमाया * 'मेढ़ा' चढ़ि भेंटे द्विजराया
मेढ़ातला० नाम सोइ कारन * थल प्रसिद्ध पातकी उबारन
मुदित महीप चले कछु आगे * भाग तबै 'नदिया'[4] के जागे
सप्तद्वीप० बिच श्रेष्ठ सुठामा * नवद्वीप० सुरसरि विश्रामा
रैन निवसि पुनि सप्तग्रामा० * पहुँची शुचि प्रयाग सम धामा
दछिन महेश० गंग पगु धारा * परसत अगनित घाट-विहारा

दो० तव संगति कत[5] वर्ष गत, कतक[6] दूर तव देश।
कहहु भगीरथ भस्म कहँ, सन्तति-सगरनरेस ? ॥ ४२ ॥

दछिन-पुरुब बिच देश सुहावन * जहाँ कपिल मुनि आश्रम पावन

शापवाणी सुरधुनी दिलेन पश्चारे * मुक्ति केह तव नीरे पाबे ना संसारे
एक बार गेल गङ्गा भैरववाहिनी * आरबार फिरिलेन सागरगामिनी
अजय गंगार जल हइल दर्शन * शंखध्वनि करेन यतेक देवगण
शंखध्वनि घटे येवा नर स्नान करे * अयुत वत्सर सेइ थाके स्वर्गघरे
गंगा लये भगीरथ चलिल सत्वर * निमिषेते आइलेन नाम इन्द्रेश्वर
गंगाजले यथा इन्द्र करिलेन स्नान * इन्द्रेश्वर बलि नाम हइल से स्थान
इन्द्रेश्वर घाटे येवा नर स्नान करे * सर्व्वपापे मुक्त हये जाय स्वर्गपुरे
चलिलेन गंगा माता करि बड़ त्वरा * मेड़ातला नाम स्थाने यान सरिद्वरा
मेड़ाय चड़िया वृद्ध आइल ब्राह्मण * मेड़ातला बलि नाम एइ से कारण
गंगारे लइया जान आनन्दित हैया * आसिया मिलिला गंगा तीर्थ ये नदीया
सप्तद्वीप मध्ये सार नवद्वीप ग्राम * एक रात्रि गंगा तथा करिल विश्राम
रथे चड़ि भगीरथ यान आगुयान * आसिया मिलिल गंगा सप्तग्राम स्थान
सप्तग्राम तीर्थ जान प्रयाग समान * सेखान हइते गंगा करेन प्रयाण
आकना महेश गंगा दक्षिण करिया * विहारोदेर घाटे गंगा उत्तरिल गिया
गंगा बलिलेन बापू शुन भगीरथ * कत दूरे तोमार देशेर आछे पथ
भ्रमितेछि कत वर्ष तोमार संहति * कोथा आछे भस्ममय सगर-सन्तति
भगीरथ बले पड़े मने ये आमार * पूर्व्व ओ दक्षिण दिक मध्यस्थाने तार

---

१ एक पवित्र स्थान २ तीव्र गति से ३ सरिता, नदी ४ नवद्वीप ५ कितने ६ कितनी। ० शून्य चिह्नित बंगाल के भागीरथी तट पर स्थित पुनीत स्थानों के नाम हैं।

भस्म-पितर मम तहँ अनुमाना * जननी-कथन सुनेउँ अस काना
सुनत शतमुखी होइ सुरधारा * बही, चार जहँ सगर-कुमारा
परसि गंग चौभुज तनु पाये * सगर-तनय सुरपुरहिं सिधाये
बसेउ सुवन इक जल - अधिकारी * शेष धाम - हरि मंगलकारी
निरखु भगीरथ ! प्रवर[1] तिहारे * सकल मुक्त, सुरधाम सिधारे
बंस-मुक्ति धनि सफल मनोरथ * प्रनवति पुनि पुनि गंग भगीरथ
जाहु देस सुत बंस-उजागर * मैं अब मिलौं भेंटि उर सागर
'गंगासागर' तीर्थ महाना * संगम करहिं दान अस्नाना
अमित पुन्य, पातक सब छीना * लहहिं स्वर्ग हरिपद आधीना
सुरसरि अवनि[2] भगीरथ लाई * मुक्ति-दैनि जग पाप नसाई

गंगा-प्रार्थना

आई सुचि[3] सलिल मातु सन्तन सुखकारी ।
सुरधुनी गंगा नाम, प्रगटी सो धरा धाम,
तीनि भुवन जासु नाम, मंगल जयकारी ।। आई० ।।
सुरनर मुनि तारिनि जो, पाप ताप हारिनि जो,
संकट निवारिनि जो, कलियुग अवतारी ।। आई० ।।
धन्य धन्य बसुन्धरी, सुरसरि नित जहाँ सरी,
धनि धनि हे क्षेमकरी, भव-तम उजियारी ।। आई० ।।

येइखाने आछिल कपिल महामुनि * सेइ खाने मम वंश मातृ मुखे शुनि
एइ कथा येखाने गंगारे राजा बले * हइलेन शतमुखी गंगा सेइ स्थले
आछिल सगर-वंश भस्मराशि हैया * बैकुण्ठे चलिल सबे गंगाजल पाइया
एक जन रहिल जलेर अधिकारी * आर सब गेल स्वर्गे चतुर्भुजधारी
हस्त तुलि गंगा भगीरथेरे देखान * ओई तव वंश देख स्वर्गवासे यान
वंश मुक्ति हइल देखिया भगीरथ * गंगा के प्रणाम करि पूर्ण मनोरथ
गंगा बले देशे जाओ राजार नन्दन * सागरेर संगे आमि करिगे मिलन
महातीर्थ हइल से सागर संगम * ताहाते अतेक पुण्य नाहि व्यतिक्रम
गंगासागरे ये नर करे स्नान दान * सर्व्वपापे मुक्त ह'ये स्वर्गे पाय स्थान
गंगा आनि लोक मुक्त कैल भगीरथ * कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व महत्

गंगार महिमा

सुरधुनी गंगा नामे, आइलेन धरा धामे, ए तिन भुवने प्रतिकार ।
सुर नर निस्तारिणी, पाप ताप निवारिणी, कलियुगे हन अवतार ।।
धन्य धन्य बसुमती, याहाते गंगार गति, धन्य धन्य कलियुग सार ।

१ पूर्वज (सगरनन्दन) २ पृथ्वी पर ३ पवित्र ।

योजन शत पूत[1] धार, गंगे गंगे पुकार,
दरसि परसि पुन्यवारि, सुरपुर अधिकारी ।। आई० ।।
कूजत तहँ पच्छिवृन्द, बरनौं किमि सो अनन्द,
बिलसत फल-फूल-कंद, पियत सुधा बारी ।। आई० ।।
भूपन के जे भुआल, बाँधे कुञ्जर[2] बिसाल,
तेऊ लखि हैं निहाल, खगन मोद भारी ।। आई० ।।
सेतुबंध, नीलाचल, द्वारिका, बदरिका थल,
कासी, मथुरादि बिमल नगरी सुचि सारी ।। आई० ।।
तीरथ मनभावन जे, विष्णु सरिस पावन जे,
अति महान ताहू ते सुरसरि महतारी ।। आई० ।।

सौदास राजा का आख्यान

दो० बीते वर्ष सहस्र सठ, सुरसरि लाये भूप।
पहुँचि अवध पुनि प्रजागन, पालत सुत अनुरूप ।। ४३ ।।

लहि 'सौदास' जनम युवराजू * मुदित नृपति सह अवध समाजू
सासन सौंपि सुवन नृप धीरा * बसे भगीरथ सुरसरि तीरा
बीते दिवस, काटि भवफंदा * लहेउ सरित-तट मुकुति अनन्दा
करि सौदास श्राद्ध पितु तर्पन * बहु विधि दान द्विजन करि अर्पन
पावन चरित तासु सुनि ध्याना * तन सुचि होइ, मिटहिं अघ[3] नाना

शतेक योजन थाके, गंगा गंगा बलि डाके, शुने यमे लागे चमत्कार।
पक्षिगण थाके यत, गंगातीरे कब कत, करे सदा गंगाजल पान।
दूरे राज चक्रवर्त्ती, यार आछे कोटी हस्ती, सेइ नहे पक्षीर समान ।।
काशी गया नीलाचल, द्वारका मथुरा स्थल, रामेश्वर बदरिकाश्रम।
ए सब यतेक तीर्थ, विष्णुर सम महत्त्व, सर्व्व तीर्थ गंगा सर्वोत्तम ।।

सौदास राजार उपाख्यान

गंगाहेतु गेल षाटि हाजार वत्सर * पुनर्ब्बार गेल राजा अयोध्या नगर
राजा हैया करिलेन प्रजार पालन * हइल सौदास नामे ताहार नन्दन
अयोध्याते करिलेन राजत्व सौदास * भगीरथ करिलेन गङ्गातीरे वास
किछु काल भगीरथ भागीरथी तटे * थाकिलेन मुक्त ह'ये ससार सङ्कटे
करिलेन राजार श्राद्धतर्पण सौदास * ब्राह्मणेरे दिल दान यत यार आश
मन दिया शुन राजा सौदास चरित्र * शुनिले ये पापक्षय शरीर पवित्र

१ पवित्र २ हाथी ३ पातक।

दिवस एक मृगया[1] कर साजा * हेरत चहुँ वन-वन मृग राजा
दनुज एक तहँ भामिनि साथा * उतरेउ जहाँ भानुकुल नाथा
तजि निसिचर-तन व्याघ्र सरूपा * करत केलि तहँ माया रूपा
लखि सार्दूल[2] हनेउ नृप बाना * मुग्धकाल पसु त्यागेउ प्राना
हनेउ केलि-रत पति, केहि दोषा * विकल कहेउ निसिचरी सरोषा
दारुन कोप ब्रह्म कर शापा * परहु फन्द भुगतहु नृप ! पापा
करि कुभाष निसिचरी सिधारी * चले नगर तन भूप दुखारी
गुरु प्रिय परिजन सुहृद बुलाई * मुनि बशिष्ठ सन कथा सुनाई
अश्वमेघ नर पातक मोचन * शास्त्र वचन इमि कहत तपोधन
सोइ सौदास याग संपन्ना * सुरभि दान वसनादिक अन्ना
द्विज गृह गमन, तोष भूपाला * इत चिन्तित निसिचरी कराला

दो० वचन अकारथ मोर कस, तजेउ दानवी रूप ।
पुनि बशिष्ठ सम रूप धरि, प्रगटी सम्मुख भूप ॥ ४४ ॥

सामिष[3] नृपति ! करावहु भोजन * मुनि-आयसु सुनि कहेउ यशोधन
अर्जित[4] अश्वमांस मन लावहु * करि स्नान-ध्यान गुरु आवहु
तौलौं तासु रुचिर परिपाका * होइ, कहत रवि-वंश-पताका

एक दिन गेल राजा मृगया कारण * मृग लागि फिरे राजा घुरे सारा वन
आइल राक्षस एक संगे जाया निया * सौदासेर काछे उत्तरिल से आसिया
छाड़िया राक्षसरूप व्याघ्ररूप धरे * दुइ जने प्रभासेर तीरे केलि करे
हेन काले सौदास से शार्दूल देखिया * शृंगारेर काले तीरे मारिल विन्धिया
सेइ काले राक्षसी राजार प्रति कय * विना दोषे स्वामी मार शृंगार समय
परिणामे जानिबे हइबे यत पाप * महापाप भुञ्जिबे हइबे ब्रह्मशाप
एतेक वलिया ये राक्षसी गेल वन * मनोदुःखे घरे राजा करिल गमन
पात्रमित्रगणे राजा करिल अह्वान * बशिष्ठ मुनिरे आगे करिल सम्मान
मुनिरे कहिल राजा सब विवरण * एइ पाप केमने हइबे विमोचन
पुरोहित बशिष्ठ अनुज्ञा प्रमाणे * अश्वमेध करिलेन शास्त्रेर विधाने
यज्ञ पूर्ण दिल राजा दक्षिणा यखन * विदाय हइया तबे गेल सर्व्वजन
हेन काले से राक्षसी भावे मने मन * मम वाक्य व्यर्थ हबे जानिल कारण
आपन राक्षसरूप दूरे तेयागिया * बशिष्ठ मुनिर रूप धरिया आसिया
सौदास राजार काछे कहिल वचन * मोरे मांस भोजन कराओ यशोधन
राजा बले अश्व मांस करि आहरण * खाइबारे सेइ मांस गेल तव मन
स्नान संध्या करिया आइस महामुनि * एइ मांस कराइब रन्धन एखनि

१ शिकार २ सिंह ३ मांसयुक्त ४ (अश्वमेध यज्ञ द्वारा) प्राप्त किया हुआ ।

तजि निशिचरी छद्म गुरु-वेषा * पुनि गृहपाक[1] विप्र धरि वेषा
भूपति अबुध, दनुजि छल कीन्हा * रंधि[2] मांस - मानव धरि दीन्हा
इत, नृप गुरु सन्मानि बुलावा * छल न ज्ञात, दोउ परे भुलावा
परसि मांस - मानुष विष बोई * मायाविनी लोप भइ सोई
लखि उपहास मुनिहिं संतापा * होहु ब्रह्मराक्षस दिय शापा
मैं निर्दोष शाप किमि दीन्हा * लै जल मुनिहिं भस्म चह कीन्हा
धरत ध्यान मुनि कौतुक जाना * जिमि निसिचरी रचेउ छल नाना
इत सौदास - रानि दमयंती * नृपहिं निषेध कीन सतवंती
उदय दनुज-बध - फल शुभकेतू * तजहु न शाप - नीर गुरु - हेतू
क्रोध शमन, सोचत मन राऊ * अभिमंत्रित जल अमिट प्रभाऊ
सुरपुर नीर तजे सुर-त्रासा * नागलोक तजि नाग-विनासा
शस्य[3] नष्ट छिति, नृप भय पाये * निज पद जल तजि पाँव जराये
युगुल पाँव भूपति निज जारे * जग कल्मापपाद विस्तारे

सो० पूछत बिकल नरेस, बहुरि धाय गुरुचरन धरि ।
ब्रह्मराक्षस वेस, तजि कब लौं पावहुँ मुकुति ॥ ४५ ॥

बशिष्ठेर रूप से दुरे ते तेयागिया * पाचक विप्रेर वेश धरिया आसिया
मनुष्येर मास लैया करिल रन्धन * बशिष्ठके डाके राजा करिते भोजन
यजमान वाक्य मुनि लङ्घिते ना पारे * हइलेन उपस्थित रन्धन आगारे
बसिलेन मुनि तबे करिते भोजन * राक्षसी मनुष्य मांस दिल ततक्षण
थाल कोले थुइया राक्षसी गेल घरे * देखिया मुनिर क्रोध बाड़िल अन्तरे
मनुष्येर मांस दिया कर उपहास * तुमि ब्रह्मराक्षस ये हओ हे सौदास
एत यदि श्री बशिष्ठ मुनि शाप दिल * मुनिरे शापिते राजा हाते जल निल
नहि आमि दोषी शाप दिला अकारणे * एइ जले भस्म करि पोड़ाब एक्षणे
राक्षसी राजार शाप शुनिया तखनि * घर हैते पलाइल चलिल आपनि
ध्यान करि जानिल बशिष्ठ तपोधन * राक्षसी आसिया मांस मागिल भोजन
मुनिके दिवारे शाप राजा जल निल * तारे दमयन्ती नारी निषेध करिल
क्रोध सम्बरिया राजा भावे मने मन * कोन स्थाने एइ जल थुइब एखन
स्वर्गे यदि थुइ तबे मरे देवगण * यदि फेलि नागपुरे नागेर मरण
पृथिवी ते फेलिले शस्य सब जाय * सेइ जल फेले राजा आपनार पाय
राजार पुड़िये गेल दुखानि चरण * राजार कल्माषपाद नाम से कारण
बशिष्ठ बलेन शाप दिनु नृपवर * राक्षस हइया थाक एगारे बत्सर
लोटाय धरिया राजा बशिष्ठ चरण * कत दिने हबे मम शाप विमोचन

१ रसोई में २ पकाकर ३ धान्य, फ़सल ।

कह बशिष्ठ नृपवर धरु धीरा * ग्यारह वर्ष विगत गत पीरा
दरस गंग पावहु तेहि काला * मिटहि शाप तजु योनि कराला
ब्रह्मराक्षस भयेउ नरेसा * द्विजन भच्छि भरमत दिग्देसा
शाप-अवधि बीती जेहि काला * विन अहार दिन तीनि भुआला
सिथिल, बिलमि[1] जहँ सुथल प्रभासा * बिटप मूल किय कछुक निवासा
छुधित[2] भूप तहँ लखेउ सुपासा * तेहि तरु ब्रह्म-दैत्य कर वासा
पूँछत दैत्य कवन तैं प्रानी * कस मम बिटप वास अज्ञानी
छुधा ज्वाल अति उदर कराला * भच्छहुँ तोहिं इमि कहेउ भुआला
राकस-दैत्य युगुल भटभेरा[3] * मल्लयुद्ध षट मास घनेरा
कोउ न न्यून, नहिं मानत हारी * पुनि भे सुहृद दोऊ तजि रारी[4]
निज सुख-दुख दोउ करइँ प्रकासा * शाप - बशिष्ठ बरन सौदासा
सखा सुनहु, कह दैत्य सप्रीता * मम बरदत्त सुनाम अतीता[5]
गुरुगृह वेद पढ़ेउँ बहु काला * तासु दच्छिना बचन न पाला
लखि उपहास, शाप गुरु दीना * दिय मोहिं ब्रह्मदैत्य गति हीना
पुनि गुरुद्रवित[6] कहेउ, द्विजनन्दन ! * परसि गंग कटिहैं तव बन्धन
भयेउ चेत, भल कह सौदासा * चलहिं सखा दोउ गंग निवासा

मुनि बले पाबे जबे गगा दरशन * तबेइ तोमार पाप हइवे मोचन
सौदास भूपति ब्रह्मराक्षस हइया * देशे देशे नित्य फिरे ब्राह्मणे खाइया
एगार वत्सर पूर्ण हइल यखन * तिन दिन आहार ना मिलिल तखन
उत्तरिल गिया राजा प्रभासेर कूले * श्रमयुक्त हइया बसिल वृक्षमूले
क्षुधाय अज्ञान राजा वृक्ष ये ने रे * एक ब्रह्मदैत्य आछे सेइ वृक्षडाले
ब्रह्मदैत्य बले ओहे तुमि केन हेथा * मम स्थान नुमि निले आमि जाब कोथा
शुनिया ताहार कथा सौदास हासिल * ब्रह्मदैत्य देखि एटा खाइते आइल
ब्रह्मदैत्य राक्षसे विवाद दुइजने * छय मास मल्लयुद्ध करिछे एमने
दुइजन युद्धे सम न्यून नहे केह * मित्रता करिया परस्पर करे स्नेह
सर्व्व दुःख दुइजन करेन प्रकाश * बशिष्ठ शापिल मोरे बलेन सौदास
ब्रह्मदैत्य बले मित्र शुन विवरण * बरदत्ता नामे आमि छिलाम ब्राह्मण
बहुकाल वेद पड़िलाम गुरुवासे * चाहिला-दक्षिणा गुरु आमार सकाशे
करिलाम उपहास गुरुर वचने * गुरु बले ब्रह्मदैत्य हओ एइ क्षणे
यखन गंगार जल पाबे दरशन * तखन पाइले मुक्ति ब्राह्मण नन्दन
सौदास बलेन मित्र विताइले मोरे * तेंइ से गंगार तत्व दुइजने करे

१ ठहरकर २ भूखा ३ मुठभेड़, गुत्थम-गुत्था ४ युद्ध ५ शापवश ब्रह्मदैत्य होने से पूर्व का मेरा नाम 'बरदत्त' था। ६ दया से पिघलकर।

दो० मंदाकिनि स्नान करि, गंगकलश धरि सीस।
तेहि मारग आवत लखे, भार्गव महामुनीस ॥ ४६ ॥

मुनिवर ! दै कछु सुरसरि-वारी ※ दया करहु दोउ शाप निवारी
बिन जल-अर्घ प्रथम शिवशीसा ※ इतर हेतु किमि ? कहत मुनीसा
आदि न शेष, तासु सम रूपा ※ गंग सलिल सब भाँति अनूपा
अनुचित मुनि, न सोह यह बानी ※ भार्गव सुनत कथा सब जानी
दीन्हेउ नृपति भगीरथ नन्दन ※ कुश सन कीन्ह गंग जल सरमन
विगत पाप तजि अधम सरीरा ※ निज-निज पंथ चले तजि पीरा
लहेउ स्वर्ग पुनि गंग प्रभावा ※ कृत्तिवास जस विमल सुनावा

दिलीप का अश्वमेध यज्ञ

नृप सौदास वास सुरधामा ※ तनय 'सुदास' तासु कर नामा
विपुल वर्ष शासन सुखदाई ※ सुत 'दिलीप' शासन पुनि पाई
'रघु' पुनि तनय दिलीप[1] प्रकासा ※ सुत सम पालि प्रजा दुख नासा
'रघु' बल-विक्रम अतुल बखाना ※ जनक[2] सरिस विक्रम बलवाना
रघु-बल अतुल निरखि नरनाहा ※ अश्वमेध कर उठेउ उछाहा[3]

गंगा स्नान करि यान भार्गव महर्षि ※ माथाय करिया गंगाजलेर कलसी
हेन काले दोंहे बले आगु या नाय ※ गंगाजल बिन्दुमात्र दाओ दुजनाय
बलिलेन शुनिये भार्गव तपोधन ※ अग्रभाग शिवेर ना दिब कखन
दोंहे कहे मुनि तव नाहि त्रिगालेश ※ गंगाजले नाहि हय अग्र अवशेष
जानिलेन सकल भार्गव तपोधन ※ महाजन बटे भगीरथेर नन्दन
कुशाग्र करिया गंगाजल दिल ताय ※ ब्रह्महत्या आदि पाप एड़िया पलाय
छिलेन सौदास ब्रह्मराक्षस हइया ※ वैकुण्ठ चलिया गेल गंगाजल पाइया
ब्रह्मदैत्य आर ब्रह्मराक्षस सत्वरे ※ दुइ जने मुक्ति हैया गेल निजघरे
गंगार महिमा कथा अनन्ता ये शुनि ※ आदिकाण्ड रचे कृत्तिवास महागुणि

दिलीपेर अश्वमेध यज्ञ

सौदास गेलेन आयु शेषे स्वर्गभुवने ※ हइलेन सुदास भूपति भूमण्डले
सुदास करेन राज्य अनेक वत्सर ※ दिलीप हइल राजा राज्येर उपर
दिलीपेर नन्दन हइल रघुराजा ※ पुत्रेर समान पाले पृथिवीर प्रजा
एकेन दिलीप राजा महाबलवान ※ तद्रूप हइल पुत्र पितार समान
पुत्रेर विक्रम देखि भावे मने मन ※ अश्वमेध यज्ञ करिलेन आरम्भन

१ सूर्यवंश की एक ही परंपरा में भगीरथ के पिता और उन्हीं भगीरथ के प्रपौत्र, दोनों का नाम 'दिलीप' कृत्तिवासी रामायण में उल्लिखित है, जो कुतूहलजनक है। मालूम नहीं किसी पुराण में ऐसा ही वर्णन है, अथवा सन्त कृत्तिवास के बाद यह लिखने-छपने की भूल है ! २ पिता ३ उत्साह।

छाँड़ेउ यज्ञ - तुरंग महीपा * जहँ-तहँ जात, सुदूर, समीपा
तुरग जीति लौटइ दिग्देसा * सफल याग तब, कहत नरेसा
रघु युवराज दिलीप प्रनामी * सुभटन सहित बाजि[1] अनुगामी
सफल याग, सुरपुर अधिकारी * होय दिलीप, दुखित असुरारी[2]

दो० हे विरञ्चि ! कस करिय ? विधि कहेउ, अश्व हरि लेहु ।
विफल दिलीप-उछाहु करि, सुरपति ! आनँद लेहु ।। ४७ ।।

मध्य दिवस तम निसि सम छावा * अवसर तकि हय इन्द्र चुरावा
कटक न तुरग[3], सोच उर अन्तर * हरेउ अवसि मम बाजि[1] पुरंदर
वत्सर दस, लघु नवल किशोरा * मुदित, हेलि[4] रघु सुरपुर ओरा
सहस तुरंग पवन-गति धावन * रघु-रथ निमिष[5] जहाँ सहसानन
कितै इन्द्र ? रघु गर्जन करई * कुसल तासु लखि आजु न परई
मारु-मारु हुंकरत कुमारा * चढ़ि गजेन्द्र सुरपति पग डारा
रघु तन हेरि कहेउ कटु बानी * मरन हेतु तव मति बौरानी
माछी मेरु-भार किमि सहई * बाँधि कण्ठ घट सागर तरई
धार कृपान दरस कब कीन्हा * बालक-हठ मोसन रन लीन्हा
मैं अजान-रन, कह रघुवीरा * तव बल-बुद्धि लखौं रनधीरा

घोड़ा राखिवारे नियोजिलेन रघुरे * येखाने सेखाने यावे निकटे कि दूरे
घोड़ा दिया दिलीप कहिल तार ठाँइ * यज्ञ पूर्ण काले येन एइ घोड़ा पाइ
घोड़ा राखिवारे रघु करिल पयान * सङ्गेते चलिल तुल्य योद्धा बलवान
महेन्द्र बलेन ब्रह्मा कोन बुद्धि करि * अश्वमेध करि राजा लबे स्वर्गपुरी
किसे निवारण हय बल कृपा करि * विरिञ्चि बलेन तार घोड़ा लओ हरि
अश्व विना राजा यज्ञ करिते ना पारे * चलिलेन इन्द्र घोड़ा चुरि करिवारे
द्वितीय प्रहर दिवा अन्धकार करि * लइलेन देवराज यज्ञ अश्व हरि
घोड़ा हाराइया भावे दिलीपनन्दन * इन्द्र बिना घोड़ा मोर लबे कोन जन
नय वत्सरेर शिशु पड़ियाछे दशे * इन्द्रेर उपर रथ चालाय हरषे
सहस्र घोड़ाय बहे स्वर्गे रथखान * पलके प्रवेशे गिया इन्द्र विद्यमान
कोथा इन्द्र बलि रघु घन छाड़े डाक * आजि इन्द्र तोमा प्रति घटिल विपाक
मार-मार बलि रघु डाकिते लागिल * इन्द्र ऐरावते चड़ि बाहिर हइल
रघुरे देखिया इन्द्र कहे कटु भाषे * मरिबार निमित्त आइले स्वर्गवासे
माछि हइया सर्वे कि पर्व्वतेर भार * गलाय कलसी बान्धि सागरे साँतार
शाणित क्षुरेर धार केवा सह्य करे * बालक हइया आइस आमार उपरे
रघु बले गर्व्व कर नाहि जान रण * यार यत बल बुद्धि जानिबे एखन

१ घोड़ा २ असुरों के शत्रु इन्द्र ३ यज्ञ का घोड़ा ४ धावा मार के ५ पलमात्र में ।

मैं बालक तैं वीर पुरन्दर * सम्हरि आजु मोसन करु संगर[1]
बान तीन रघु, तकि हिय मारे * सह-कुञ्जर सुरपति तिन टारे
चकित इन्द्र मल भेटेउँ बालक * अगिनि कराल तजत सर बालक
सर दस तजेउ इन्द्र कोदण्डा[2] * रघु सायक तिन बीचहिं खण्डा
बान अगाध वृष्टि दोउ करहीं * कोउ न न्यून अविरल[3] दोउ लरहीं
रघु पशुपति पुनि अस्त्र चलाई * विवस कीन्ह बाँधे सुरराई

दो० गिरे धरनि गजपति सहित, रघु बाँधेउ सुरनाथ।
लै तुरंग पहुँचे अवध, पितु पद नायेउ माथ ॥ ४८ ॥

सप्त दिवस तहँ बन्दि पुरन्दर * लखि आकुल सुरगन उर अन्तर
सुरगन तब अतिशय अकुलाये * सहित विरंचि अवधपुर आये
विधि बोले, दिलीप ! सुनु भूपा * तव नन्दन, रघु तव अनुरूपा
तासु ख्याति रघुवंस उजागर * जग यश लहहि महान गुनागर
मुदित वैन सुनि, नृप आदेसा * बन्दि-मुक्त पुनि कीन्ह सुरेसा
पावसपति[4] ! जनि वृष्टि अभावा * अवध कबौं रघु शपथ करावा
खेतन भार मानि निज सीसा * चले स्वर्ग सुर-सहित सचीसा[5]

बालक आमाके देख आपनि कि वीर * बालकेर रण आजि हओ देखि स्थिर
तिन वाण मारे रघु बासव हियाय * ऐरावत सह इन्द्र घोर पाक खाय
इन्द्र बले भाल बलि वयसे बालक * एडिलेन बाण येन ज्वलन्त पावक
दश बाण इन्द्र तबे पूरिल सन्धान * दश बाण काटिल इन्द्रेर दश बाण
दुइजने बाणवृष्टि बरषार धारे * दुइजने युद्ध करे केह नाइ हारे
रघुराज जाने बाण पशुपात सन्धि * हाते गले देवराजे करिलेक बन्दि
ऐरावत हइते पड़िल भूमितले * लोहार शिकले बान्धि रथे निया तोले
घोड़ा निये आइलेन बापेर गोचरे * सात दिन इन्द्र बान्धा अयोध्या नगरे
मन्त्रेते करिया ब्रह्मा यत देवगण * आपनि चलिया यान अयोध्याभवन
विधाता बलेन राजा तुमि पुण्यवान * तोमार तनय रघु तोमारि समान
आर किवा वर दिब रघुरे तोमार * रघुवश बलि यश घोषिबे ससार
एत यदि बलिलेन ब्रह्मा मुनिवर * तबे मुक्त हइलेन देव पुरन्दर
रघु बलिलेन सत्य कर पुरन्दर * अनावृष्टि नहे येन अयोध्या उपर
इन्द्र बलिलेन चिन्ता ना करिह तुमि * क्षेतेर या किछु कर्म्म ता करिब आमि
करिलेन एइ सत्य देव पुरन्दर * इन्द्र सह स्वर्गे गेल सकल अमर
रघुर विक्रम शुनि शत्रु पक्षे त्रास * आदिकाण्ड रचिल पण्डित कृत्तिवास

१ समर २ धनुष ३ लगातार ४ वर्षा के स्वामी इन्द्र ५ शची के पति इन्द्र।

राजा रघु की दान-कीर्ति

पुन्य दिलीप विश्व चहुँ छाजे * रघुहिं राजु दै स्वर्ग विराजे
करि पितुश्राद्ध द्विजन हित अर्पन * अखिल कोष किय शेष[1] यशोधन
असन-बसन[2] हित द्रव्य न लहहीं * माटी - बासन[3] नृप बैपरहीं
सुनहु कथा, कश्यप मुनि गेहा * बसत शिष्य वरदत्त सनेहा
दिवस अनेक अध्ययन कीना * चौंसठ कला भयेउ सुप्रवीना
बिदाकाल नत प्रणवत माथा * गुरु-दच्छिणा देहुँ का नाथा
अधिक न कोटि चतुर्दस सुबरन[4] * दै मोहिं उरिन होहु द्विजनन्दन
चकित अमित सुनि सुबरन मागा * लहौं तु किमि ? मन सोच कुभागा
पुन्यवान रघु अमघ प्रतापू * तिन पहँ माँगि मेटु संतापू

दो० सुनत सीख, गुरु मन अवधि[5], सात दिवस पुनि लीन्ह।
किय पयान, हिय थिर न, द्विज दरस अवधपुर कीन्ह ॥ ४९ ॥

विप्र निसेध[6] न रघुपुर कतहूँ * अन्तःपुर प्रविसेउ, नृप जहहूँ
भाण्ड-मृत्तिका[7] जहँ जलपाना * चौदह कोटि कनक किमि दाना
लौटत द्विज देखेउ रघुराई * स्वर्ग द्वार चलि संग लेवाई

रघु राजार दान कीर्ति

दिलीप राजत्व करे अयुत वत्सर * परे राज्य दिया गेला अमर नगर
पितृ श्राद्ध करिलेन रघु यशोधन * ब्राह्मणेरे दिला राजा यत छिल धन
अद्य भक्ष्य रघुराजा नाहि धन धरे * मृत्तिकार पात्रे राजा जल पान करे
वरदत्त नामे एक मुनिर नन्दन * कश्यप मुनिर ठाँइ करे अध्ययन
गुरुगृहे वसति करिल बहु दिन * चतुःषष्टि विद्याते से हइल प्रवीण
गुरुरे दक्षिणा दिते करिल मानसे * कि दक्षिणा दिब गुरु आदेश आमारे
गुरु बले अल्प मागि कर विवेचना * चौषट्टी विद्यार देह चौद्द कोटि सोना
द्विज कहिलेन एइ असम्भव कथा * मने भावे एतेक सुवर्ण पाब कोथा
सबे बले रघुराजा बड पुण्यवान * तार ठाइ आनि गिया मागि स्वर्णदान
सात दिवसेर तरे समय चाहिल * गुरु के कहिया शिष्य विदाय हइल
सात पाँच भाविया से निज आकिञ्चन * अयोध्यानगरे आसि दिल दरशन
ब्राह्मणे निषेध नाहि दुयार रघुर * उत्तरिल गिया सेइ राज अन्तःपुर
मृत्तिकार पात्रे राजा करे जलपान * देखिया ब्राह्मणपुत्र करे अनुमान
मृत्तिकार पात्रेते करिछे जलपान * कि रूपे करिबे चौद्दकोटि स्वर्ण दान
देखिया ब्राह्मणपुत्र जाय पाछु हैया * उठिल ब्राह्मणे रघु द्वारेते देखिया

१ समाप्त २ भोजन-वस्त्र ३ मिट्टी के बरतन ४ सुवर्ण मुद्रा ५ माहलत ६ रोक-टोक ७ मिट्टी के बरतन।

परसि चरन चन्दन अरु फूला * त्रिविध पाक सुरभित तांबूला
बहु सन्मानि सुधा सम बचनू * मम निकेत कम द्विज आगमनू
सुयश पुन्य सुनि तव यशरूपा * आयेउँ दान लेन ढिग भूपा
छिति[1] यश-विपुल केर अधिकारी * तासु हीन गति लखि दुख भारी
माटीपात्र करत जल पाना * सो समरथ किमि सुबरन दाना
दसा दीन लखि, कह द्विज बानी * नहिं याचना कीन्ह भय मानी
जो कामना करहु भूदेवा * सब विधि हरषि करौं तव सेवा
जिमि मोदक बालकन भुलावा * तस न मरल, द्विज बचन सुनावा
कह नृप, वचन न होइ अकारथ * जो न करों, विनसै परमारथ
हाँथ कान-मुख धरि 'हरि' भाषी * चौदह कोटि सोन अभिलाषी
रमहु रैनि[2] इक पुर, मुनिनन्दन * गमनहु भोर होत लै कन्चन
दै द्विज बाम, टेरि पुनि राजन * अवध प्रजा जे अहउ महाजन
सुबरन चौदह कोटि जुटावहु * दसगुन तासु प्रात पुनि पावहु

दो० एक कोटि लौं कनक प्रभु, नगर न तव अवसेस ।
बिरस प्रजा बानी-विनय, सुनि अनमने[3] नरेस ॥ ५० ॥

तहि अवसर नारद मुनि आये * आसन अर्घ बन्दना पाये

आपनि पाखाले राजा ताहार चरण * त्रिविध मिष्टान्न दिया कराय भोजन
कर्पूर ताम्बूल माल्य दिलेन चन्दन * जिज्ञासा करेन करि पाद सम्वाहन
ब्राह्मण बलेन राजा तुमि पुण्यवान * आसियाछि तव स्थाने लइवारे दान
देखिलाम घटियाछे ये दशा तोमारे * आपनार नाहि किछु कि दिबे आमारे
तोमार अधीन राजा धरणी अशेष * ऐश्वर्य तोमार देखि मृत्पात्र शेष
देखि तव दशा डर लागिल आमारे * एसेछि तोमार ठाँइ धन मागिवारे
भूपति बलेन तुमि कत चाह धन * याहा माग ताहा दिब ठाकुर ब्राह्मण
शुनिया राजार कथा द्विजवर बले * बालके भांडाओ कि लाडु दिबार छले
राजा बले येवा माग ना करिब आन * बलिया ना दिले नाहि पाव परित्राण
श्रीविष्णु बलिया विप्र काने दिल हात * चौद्दकोटि सोना मागि तोमार साक्षात
राजा बले एक रात्रि थाक महामुनि * प्रातःकाले दिब धन लये जेओ तुमि
एत बलि ब्राह्मणे राखिल निज घरे * आपनि जिज्ञासा करे साधु सदागरे
चौद्दकोटि सोना धार येवा दिते पारे * चौद्दश कोटि कालि शुधिब ताहारे
जोड़ हात करिया कहिछे प्रजागण * तोमरा नगरे नाइ एक कोटि धन
हेंट माथा करि राजा भाविल विपद * हेन काले तथा मुनि आइल नारद
पाद्य अर्घ्य दिल राजा बसिते आसन * मुनि बले केन राजा विरस वदन

---

१ पृथ्वी पर २ रात्रि भर विश्राम करो ३ चिन्तित ।

हे नृपमणि ! कस बदन मलीना * रघु द्विज-कथा निवेदन कीना
चहत आजु द्विज, सो किमि लहहीं * मुदित देवरिषि रघु सन कहहीं
काल्हि कुबेरहिं देहुँ संदेसा * लहहु बैठि गृह धन अवधेसा
नारद गमन, इतै रघुराजा * सजे, अवधपुर बाजे बाजा
सुभट अमात्य[1] स्वसैन बुलावा * सजेउ कटक, दुंदुभी बजावा
सुनेउ कुबेर घोष कैलासा * तासु दूत[2] नित अवध निवासा
पूँछत चहुं, कित कटक सम्हारा ? * मद-कुबेर भञ्जन पग धारा
सुनत दूत कैलाश सिधायेउ * तहँ नारद कुबेर ढिग[3] पायेउ
चढ़ेउ साजि दल रघु • नरनाहा * अस अचेत धनपति[4] न निबाहा
चौदह कोटि हेम[5] संकल्पा * परबस नृप, न कनक पुर स्वल्पा
सुमति दूत सिख मानि मुनीसा * सुबरन अमित दीन धनईसा
कनक सहित चर[6] अवध सिधावा * रघु प्रताप-जस चहुं दिसि छावा
भेंट - कुबेर लीन सन्मानी * द्विज हित सकल देन मनमानी
कान हाथ धरि, मुख 'हरि' भाषा * रत्ती अधिक न मम अभिलाषा
चौदह कोटि लीन गिनि कञ्चन * सो लदवाइ चलेउ द्विजनन्दन

राजा बले महाशय शुन बलि कथा * ब्राह्मण चाहिल धन आजि पाब कोथा
लागिलेन हासिते नारद महामुनि * इहार उपाय कहि शुनह आपनि
बल कालि कुबेरे करिब सम्भाषण * घरे ते बसिया पावे यत चाह धन
तार परे गेलेन नारद तपोधन * अयोध्या नगरे राजा बाजाय बाजन
आज्ञा करिलेन राजा पात्र मित्रगणे * सबे साज जाइब कुबेर सम्भाषणे
कटक साजिल बाजे दुन्दुभि बाजन * कैलासे कुबेर ताहा करेन श्रवण
कुबेरेर दूत[2] छिल अयोध्या-भुवने * जिज्ञासा करिल सब पात्र मित्रगणे
पात्र मित्र बले कि बेड़ाओ शुधाइया * प्रमाद पड़िबे कालि कुबेरे लइया
शुनिया चलिल दूत धाइया अमनि * कैलासे नारद गिया कहेन तखनि
कि कर कुबेर तुमि निश्चिन्त बसिया * तोमार उपरे रघु आसिछे साजिया
सुवर्ण नाहिक रघु राजार भाण्डारे * चौद्दकोटि स्वर्ण विप्र चेयेछे ताँहारे
एत यदि बलिल नारद महामुनि * कुबेर बलेन आमि पाठाव एखुनि
स्वहस्ते कुबेर धन दिलेन गणिया * दूत गिया भाण्डारेते दिल फेलाइया
विनये कहेन रघु ब्राह्मण कुमारे * भाण्डार सहित स्वर्ण दिलाम तोमारे
श्रीविष्णु बलिया मुनि स्पर्शे दुइ कान * चौद्दकोटि मात्र लब ना लइब आन
चौद्दकोटि स्वर्ण तारे दिलेन गणिया * शत शत जने बोझा दिलेन बान्धिया

१ मंत्रिगण २ राजदूत, एम्बेसडर—त्रेता के प्राचीन काल में एम्बेसडर की व्यवस्था की झलक कृत्तिवासी रामायण में अनूठी है ३ समीप ४ धन के स्वामी, कुबेर ५ स्वर्ण ६ दूत, धावन।

दो० कनक-राशि-युत शिष्य लखि, गुरु अति अचरज लीन।
पुण्य रूप रघु दान-यश, विरद[1] शिष्य बहु कीन ॥ ५१ ॥

गहन अरण्य[2] दस्यु भयकारी * मुनिहिं प्रान-धन-संसय भारी
इन्द्र समीप अमानत[4] धरहीं * यज्ञकाल सोइ लै बैपरहीं
गुरु आयसु[5] द्विज द्रव्य अमेमा * सहित चलेउ जहँ बसत सुरेसा
बटु[6] सन्मानि भेंटि सुरनाथा * सुनी सकल पुनि सुबरन गाथा
विप्र सुवन दच्छिना पुरावा * पुष्कल[7] हेम[8] अवध जिमि आवा
सरिस कल्पतरु रघु दिय दाना * दस्यु-त्रास सोइ तव ढिग आना
श्रवन हाथ धरि कहि पुनि 'रामा' * सम्मुख मम न लेहु रघु नामा
रैन न नींद, तासु भय पाई * खेतन अवध रखावहुँ जाई[9]
इतर धरौ कहुं धन हे ब्रह्मन्! * नतरु निपातै रघु मम जीवन
सुनि वरदत्त वचन-सुरनाहा * गुरु-आश्रम-पथ पुनि अवगाहा[10]
मुनि आयसु बहोरि सोइ कञ्चन * राखेउ ढिग कुबेर द्विजनन्दन
बिहँसि कही धनपति कैलासा * जासु द्रव्य, आयेउ सोइ पासा
सुयश भूप रघु त्रिभुवन छावा * कृत्तिवास शुचि गाइ सुनावा

शिष्येरे आनिते देखि चौद्दकोटि सोना * गुरु बले एत धन दिल कोन जना
शिष्य बले रघु राजा बड़ पुण्यवान * करिलेन तिनि चौद्द कोटि स्वर्ण दान
मुनि बले थाकि आमि गहन कानने * धन हरि दस्युगण बधिबे जीवने
एइ धन राख ल'ये इन्द्रेर भाण्डारे * यज्ञकाले धन आनि देय ये आमारे
काञ्चन लइया गेल इन्द्रेर सदने * सम्भ्रमे उठिल इन्द्र देखिया ब्राह्मणे
द्विज बले गुरु पाठाइलेन आमारे * रघुराजा स्वर्णदान दिल भारे भारे
राखह भाण्डारे महामुनिर से धन * एत बलि धन तथा राखेन ब्राह्मण
वासव बलेन बापू सत्य कह कथा * उच्छवृत्ति करि सोना पाइलेन कोथा
द्विज बले दक्षिणा चाहिल स्वर्ण गुरु * आमारे दिलेन रघुराजा कल्पतरु
राम राम बलि इन्द्र काने दिल हात * रघुनाम ना करिओ आमार साक्षात्
निशाते ना जाइ निद्रा रघुर भयेते * अयोध्या नगरे सदा भ्रमि क्षेते क्षेते
स्थानान्तरे निया प्रभु राख एइ धन * धनेर कारण रघु बधिबे जीवन
धन लैया वरदत्त गेल गुरुपाशे * गुरु बले राख निया पर्व्वत कैलासे
निजधन देखिया कुबेर मने हासे * गियाछे जाहार धन एल तार पाशे
रघु भूपतिर यश त्रिभुवन घोषे * रचिलेन आदिकाण्ड कवि कृत्तिवासे

१ प्रशंसा २ गहरा जंगल ३ डाकू ४ धरोहर ५ आज्ञा ६ ब्राह्मण ७ ढेर का ढेर ८ सुवर्ण ९ दिलीप के अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर इन्द्रको बाँधकर रघु ने अयोध्या के राज्य में वृष्टि और खेती की सुरक्षा की व्यवस्था का वचनले लिया था। यह कथा पहले आ चुकी है। १० ग्रहण किया (नालन्दा कोष)।

राजा अज का विवाह और दशरथ का जन्म

वर्ष सहस दस रघु किय राजू * मनमोहन 'अज' पुनि युवराजू
यौवन पग छबि-सुत अवलोका * सौंपि राजु रघु गे सुरलोका
अज समान नहिं इतर भुआला * पितु सम प्रजा करैं प्रतिपाला

दो० रति लजाय, रूपसि परम, इन्दुमती जेहि नाम ।
माथुर-नृप तनया सुभग, अति लावण्य ललाम ॥ ५२ ॥

इच्छावर विवाह मन लीना * सकुच न नेक, प्रकट पितु कीना
सुता-स्वयंवर भूप उछाहा * नेउते चहुँ नरपति नरनाहा
पाय निमंत्रण माथुर देसा * चले सुभट बहु अवनि-नरेसा
तजेउ न अवसर, तजि तजि धामा * जुरे सकल बल-रूप ललामा
अवधभूप अज सभा विराजा * मनौ वृन्द-पशु छबि-मृगराजा
पौत्र-दिलीप, सुवन-रघु नाहर * एक छत्र छिति तपत गुनागर
सजी स्वयंवर सभा विसाला * बिनय कीन लखि नृपन भुआला
मम गृह सुता दान हित एका * आनहुं सभा, सुनौ सविवेका
जासु कण्ठ अर्पित वरमाला * सोइ मम अतिथि गहै कर-बाला
विदा शेष नृप लै घर जाहीं * रारि-द्वन्द अवसर कछु नाहीं

अज राजार विबाह ओ दशरथेर जन्म

रघुराज्य करे दश हाजार वत्सर * अज नामे ताँहार तनय मनोहर
देखिया पुत्रेर राजा प्रथम यौवन * पुत्रे राज्य दिया गेल वैकुण्ठ-भुवन
अजेर समान राजा नाहिक संसारे * पुत्रेर समान राजा पालेन सबारे
माथुर राजार कन्या इन्दुमती नाम * परमा सुन्दरी सेइ लावण्येर धाम
इच्छावरी हइते कन्यार गेल मन * कहिल पितार अग्रे ना करि गोपन
स्वयम्बरा हइब आमार आछे मन * सकल राजारे आन करि निमन्त्रण
यत यत महाराज एइ धरा वासे * माथुरेर निमन्त्रणे सब येन आसे
प्रथम यौवन सबे देखिते सुन्दर * सकले आइसे केह ना रहिल घर
अयोध्या हइते हैल अजेर गमन * सभामध्ये अज गिया बसिल तखन
पशुर मध्येते येन परशिल केशरी * बसिल सकल राजा अज मध्य करि
रघुर तनय अज दिलीपेर पौत्र * पृथिवीमण्डले जाँर एकदण्ड छत्र
बसिल करिया सभा यत राजगण * तखन माथुर राजा करे निवेदन
एक कन्या दानयोग्या आछे मम घरे * आज्ञा कर सेइ कन्या आनि स्वयम्बरे
परिणामे द्वन्द्व येन ना हय घटन * तबे शीघ्र आनि कन्या एइ निवेदन
मम कन्या वरमाल्य दिबेन जाँहारे * सिबारे बिदाय दिया राखिब ताँहारे
भाल भाल बलिल सकल राजगण * शीघ्र इन्दुमती आन करिया साजन

राजन उजुर[1] न, आतुर वचना * सभा वेगि आनो नृप - ललना
सजी इन्दुमति बेनि[2] सँवारी * श्रुत कुण्डल कज्जल दृग डारी
ससि सम विमल, सुकुंकुम भाला[3] * पैज सिंगार विविध गर माला
जगमग छबि अति सुघर सुहावन * पुतरी कनक रची चतुरानन
सह सहचरिन चली गजगामिनि * मद मतंग मकुचत लखि भामिनि
चितवति इन्दुमती जेहि भूपा * सुधि न रहत लखि बदन अनूपा

दो० पाय चेत,[4] बोलत बचन—जासु गरे बरमाल।
देय सुमुखि, सोइ सफल तन, सोइ धनि-धन्य भुआल ॥ ५३ ॥

कोउ कह मोहिं निरखत मृगनयनी * कोउ कह चहति मोहिं पिकबयनी
जेहि नृप तजै, बढ़ै पग बाला * रोवत धरनी लोटि बेहाला[5]
कस कुत्सित मम रूप निहारी * सुमुखि तजेसि मोहिं सोक मँझारी
पैज-पैज[6] तजि नृपन विलोकन * सुता बढ़ी जहँ रघुसुत सोहत
दारिद जिमि बहुधन सुख पावा * हुलसि माल गर अज पहिरावा
इन्दुमती पुलकित गृह जाई * चला व्यथित नृपयूथ[7] लजाई
कानन बटुरि[8] मंत्रना करहीं * केहि विधि प्रान भूप अज हरहीं
इत-उत बन लुकान[9] सब तहहीं * अजहिं निपाति इन्दुमति लहहीं

केश आचड़िया तार बान्धिल कुन्तल * विविध पुष्पेर माला करे झलमल
कपाले सिन्दूर दिल नयने कज्जल * चन्द्रेर समान रूप अतीव विमल
मुचित्र विचित्र परे पाये पाशुलि * विधाता गड़ेछे येन कनक पुतुलि
सहचरीगण संगे चलिल धेयिया * मत्त गजपति समा चलिल साजिया
जेइ जन करे इन्दुमती निरीक्षण * रूपेर मोहेते से ताहार चेतन
चेतन पाइया उठि बले नृपगण * ए कन्या ये पाइबे तार सार्थक जीवन
के, बले कन्या मोरे करे निरीक्षण * केह कहे कन्यार आमाते आछे मन
यारे पाछु करि कन्या करित गमन * भूमेते पड़िया सेइ जुड़िल रोदन
कन्या कि कुत्सित रूप देखिल आमारे * आमारे छाड़िया सेइ भजिबे काहारे
एके एके देखिया यतेक राजगण * अजेर निकटे आसि दिल दरशन
धन पेले हृष्ट येन दरिद्रेर मति * गले माल्य दिया बले तुमि मम पति
वरमाल्य दिया यदि कन्या गेल घर * यत राजा पलाइल लज्जाय कातर
बनेते बसिया सबे ह'ये एकमति * बधिते अजेर प्राण करिल युकति
एक्षणे सबाइ थाकि वने लुकाइया * अजे मारि इन्दुमती लइब काड़िया

१ उज्र, आपत्ति २ वेणी चोटी ३ मस्तक ४ होश ५ खराब हालत में।
६ पग-पग पर ७ राजा का समूह ८ इकट्ठा होकर ९ छिप गये।

सुतादान माथुर इत कीना * हय, गज, रथ, संपति बहु दीना
दिवस तीनि आतिथि सन्माना * अज-दंपति पुनि अवध पयाना
चला बेगि रथ, लै दोउ संगा * कटक साथ अगनित चतुरंगा
अज सोवत, रथ बन-पथ आवा * नृपगन घेरि पंथ किय धावा
मारु मारु बोलत चहुं ओरा * इन्दुमती संकट लखि घोरा
बचैं कंत[1] किमि संसय लागी * रुदन सुनत अज निद्रा त्यागी
अरि गर्जन न भीत[2] रनबंका * निरखत तिय-मुख मलिन निसंका
अहह नाथ! शत-शत भट योधा * चहुं दिसि पंथ घेरि अवरोधा

दो० हरन मोर, बध स्वामि तव, अधमन[3] मिलि मत कीन।
महारथी रघु-तनय सुनि, भामिनि धीरज दीन ॥ ५४ ॥

सुमुखि! सोच तजि होहु अनन्दा * सायक एक हनौं अरि-वृन्दा
गहौं इतर सर सत्रु-सँहारन * तौ रघु आन अस्त्र धिक धारन
चढ़ेउ चाप, स्यन्दन अज सोहा * खल नृपगन मन उपजेउ छोहा[4]
छत्रप विपुल! सो तृन करि जाना * अज गंधर्बबान संधाना
व्यापे तीनि कोटि गंधर्वा * भिरे[5] नृपति परस्पर सर्वा
सर अमोघ[6] जनि आनि उपाऊ * सकल मरे कटि जे नरराऊ

लुकाइया वने तारा रहे स्थाने स्थान * हेथाय माथुर राजा करे कन्यादान
कन्यादान करे राजा करिया कौतुक * नानारत्न हस्ती अश्व दिलेन यौतुक
तिन दिन छिल राजा माथुरेर घरे * तारपर यान राजा अयोध्या नगरे
इन्दुमती सह रथे करे आरोहण * कत सेना सगे रंगे चले अगणन
निद्राय कातर राजा चलितेछे रथ * सेइकाले राजगण आगुलिल पथ
मार मार बलि सबे आगुलिल तथा * इन्दुमती देखिया करिल हेंट माथा
केमने बाँचाव स्वामी कान्दे इन्दुमती * से क्रन्दने जागिलेन अज महारथी
राजगण डाके ताहे भीत नहे मन * मलिन देखिल इन्दुमतीर वदन
इन्दुमती बले नाथ कि भाव एखन * देखना तोमारे घेरिलेक नृपगण
शत शत राजा आछे पथ आगुलिया * आमारे काड़िया लबे तोमारे मारिया
अज बले प्रसन्न करह प्रिये मुख * एकबाणे सबे मारि देखह कौतुक
एक बाण विना यदि दुइ बाण मारि * रघुर दोहाई तबे वृथा अस्त्र धरि
एत बलि धनु लैया रथे दाण्डाइल * अजे देखि राजगण भाविते लागिल
शत शत भूपतिरे करि तृण ज्ञान * एड़िलेन अज से गन्धर्व्व नामे बाण
एक बाणे हइल गन्धर्व्व तिन कोटि * आपना आपना मध्ये करि काटाकाटि
गन्धर्व्व बाणेते रण नाहि जाय आँटा * एक बाणे राजगण सबे गेल काटा

१ दान　२ भयभीत　३ पापियों ने　४ क्रोध　५ परस्पर युद्ध　६ अचूक।

सहित प्रिया पुनि चलि नरनाहा * आये अवध अतीव उछाहा[1]
अज तन प्रान इन्दुमति ताकर[2] * धारेउ गर्भ विगत कछु वासर
गत दस मास प्रसव शिशु कीना * शशि जिमि जनमि अवनि छवि दीना
काम सरिस गुन-रूप निहारी * दशरथ नाम तनय कर धारी
दशरथ विरद वरनि नहिं जाई * जाके सुवन राम रघुराई
दशरथ-जनम कथा सुखकरनी * कृत्तिवास मञ्जुल इमि वरनी

दशरथ का राज्याभिषेक

किंशुकवन, जहँ द्वादस मासा * सुत सोवाय दोउ मगन विलासा
इत रत-केलि हास-परिहासा * गमनत नारद उतै अकासा
पारिजात माला खसि[3] वीना * गिरत रानि-तन परसन[4] कीना
छुवत माल सो तजेउ सरीरा * बिलखत अज, दृग नीर, अधीरा

दो० रुदन अकथ, विलपत अतिव, मिटत न हिय संताप।
पारिजात पुनि परसि तहँ, तजेउ प्रान नृप आप ॥ ५५ ॥

नर्त-नर्तकी सुरपुर - वासी * भये सापबस धरनि-निवासी
चले युगल पुनि सुरपुर वासा * तजि दसरथ सुत द्वादस मासा

सेइ सब राजगणे युद्धेते मारिया * अयोध्याते गेल अज इन्दुमती निया
अज राजा तनु नार प्राण इन्दुमती * हइलेन किछु काल परे गर्भवती
दश मास गर्भ हैल प्रसव समय * हइल तनय येन चन्द्रेर उदय
रूपे गुणे देखि येन अभिनव काम * दशरथ वलिया राखिल तार नाम
आमि दशरथेर कि कब गुण ग्राम * यार पुत्र हइलेन आपनि श्रीराम
कृत्तिवास पण्डित कवित्वे विचक्षण * गान दशरथेर उत्पत्ति विवरण

दशरथेर राज्याभिषेक

एक वर्ष वयस्क यखन दशरथ * पुत्रे शोयाइया दोंहे साधे मनोरथ
पुष्पवने क्रीडा करे हास्य परिहास * नारद चलिया यान उपर आकाश
पारिजात माला छिल ताँहार बीणाय * बातासे उडिया पड़े इन्दुमती गाय
पारिजात स्पर्शन हइल यखन * इन्दुमती छाडिलेन तखनि जीवन
प्राण छाडि इन्दुमती गेल स्वर्गधाम * काँदे अज नयनेते वारि अविराम
कत वा कहिब सेइ राजार बिलाप * ना पारे सहिते इन्दुमतीर सन्ताप
सेइ पारिजात मारे आपनार गाय * दुइजने मुक्त हये स्वर्गपुरे जाय
नर्त्तक नर्त्तकी छिल दोंहे स्वर्गपुरे * शापभ्रष्टे जन्मिया छिलेन भूमि परे
दुइ जन यखन गेलेन स्वर्ग पथ * एक वर्ष वयस्क तखन दशरथ

---

१ उमंग २ अज और इन्दुमती दोनो परस्पर जीवन प्राण थे ३ खिसककर ४ स्पर्श।

जनक-जननि-विरहित शिशु देखी * मुनि बशिष्ठ हिय सोच विशेषी
पञ्च वर्ष सिखयेउ गृह राखी * सविधि शास्त्र सुत-हित अभिलाषी
पितु-पद[1] लहि, गुरु-आयसु माना * परशुराम किय आयुध[2] दाना
शब्दवेध किय अस्त्र-प्रवीना * वयस पञ्चदश नृप पग दीना
लोकपाल पितु सरिस धनुर्धर * तपत राजु जिमि प्रबल पुरंदर

दशरथ के साथ कौशल्या का विवाह

सूर्यवंश दशरथ महराजा * सकल प्रशंस सर्वगुन साजा
अधिप महीपन के, नरनाहा * वर्ष तीस नहिं रचेउ विवाहा
सो सुभ घड़ी अवधि सजि आई * कोशलपुर - नृप कोशलराई
तासु सुता कौशल्या नामा * सोच वयस[3] लखि बढ़त ललामा
प्रोहित द्विज बटोरि पुनि राजन * कौशल्या-वर जोगु विचारन
गवनहिं विप्र अवध तत्काला * बिनवहिं मम संबाद भुवाला
तुम समान वर धरनि न दूजा * हरषि जासु कर देहुँ तनूजा[4]
लै संबाद चले द्विजराई * सत्वर[5] अवधपुरी नियराई
लखि सोइ, दसरथ कीन प्रनामा * दै असीस प्रगटत द्विज नामा

पिता माता अल्प काले मरिल दुजन * देखिया चिन्तित ये वशिष्ठ तपोधन
लैया गेल सेइ पुत्र आपनार घरे * पड़ाइल नाना शास्त्र शास्त्र-अनुसारे
पञ्चवर्ष हइलेन वयस्क यखन * लइलेन आपनि पैतृक सिंहासन
भृगुराम मुनि तारे अस्त्र दिल दान * शिखाइल यत्न करि शब्दभेदी बाण
राज्य करे दशरथ येन पुरन्दर * पुत्र तुल्य पाले प्रजा महा धनुर्द्धर
राजार वयस हैल पनर वत्सर * आदिकाण्डे रचे कृत्तिवास कविवर

दशरथेर सहित कौशल्यार विवाह

दशरथ महाराज जन्म सूर्यवंशे * सर्व्व गुणेश्वर राजा सकले प्रशंसे
राज चक्रवर्त्ती राजा सबार उपर * विवाह ना हय वय त्रिंशत् वत्सर
दैवेर घटने हैल राजार निर्ब्बन्ध * हेन काले घटे तार विवाह सम्बन्ध
कोशलेर राजा कोशल दण्डधर * कौशल्या नामेते कन्या आछे तार घर
कौशल्यार रूप राजा देखिया मूर्च्छित * कारे कन्या दिब बलि राजा सुचिन्तित
पुरोहित ब्राह्मणेरे कहिल सत्वर * दशरथे आनिबारे याह द्विजवर
आमार सबाद कह राजार गोचरे * कौशल्या नामेते कन्या दिब तार करे
ताहा बिना कौशल्यार वर नाहि आन * सुखी हब दशरथे करि कन्यादान
सवाद लइया विप्र चलिल सत्वर * शीघ्रगति गेल द्विज अयोध्या नगर
ब्राह्मणे देखिया राजा करेन प्रणाम * आशीष करिया कहे आपनार नाम

१ पिता का स्थान राजसिंहासन २ अस्त्र ३ उम्र ४ कन्या ५ शीघ्र ही।

सो० मैं द्विज-कोसलनाथ, सुता तासु अति रूपसी।
देन चहत तव हाथ, सो पठयेउ संवाद नृप ॥ ५६ ॥

नहिं तव रूप आन[1] दिग्देसा * तुमहिं वरन नृप चाउ[2] बिसेसा
करौ अनुग्रह कोसलदेसू * सुनत वचन द्विज, अवध-नरेसू
बोलि सचिव सुहृदन मत कीना * निज-सूने[3] सामन तिन दीना
स्यन्दन साजि सारथी आना * सैन-सहित किय नृपति पयाना
नाचति विद्याधरी समाजा * तुरही भेरि झाँझ बहु बाजा
सहस पचास मृदंग बजावा * तीनि कोटि सिंगी-रव[4] छावा
शंख कोटि अरु घण्टाजाला * अगनित बजत भरंग रसाला
डफ, सहनाइ, सुढोल दमामा * तबल घोष जयटोल ललामा
घन सम गर्जत नाद कराला * महाप्रलय, छिति-व्योम[5] बिहाला[6]
तुमुल[7]-विराट बजत चहुँ बाजा * आयेउ कोसल अवध-समाजा
सुनत, ससाद सविधि अगवानी * पाद अर्घ्य सन नृप सन्मानी
कन्यादान शास्त्र - आचारा * पुर - तिय - गान मंगलाचारा
शुभ क्षण दोउन दीठि शुभ डारी * धरा न अस दंपति छबि न्यारी

कोशल देशेर घर राजपुरोहित * तोमारे लइते राजा करे नियोजित
परमा सुन्दरी कन्या आछे तार घरे * कौशल्या नामेते कन्या दिबेन तोमारे
तव तुल्य रूप आर नाहि कोन देशे * तोमारे दिबेन तिनि मनेर आवेशे
राजार संवाद एइ जानानु तोमारे * विवाह करिते चल कोशल आगारे
एतेक शुनिया राजा सवाद वचन * पात्र वर्ग लैया राजा करेन मन्त्रण
यावत् विवाह करि नाहि आमि घरे * तावत् पालह राज्य अयोध्या-नगरे
रथ लैया योगाइल रथेर सारथि * सेनागण सगे राजा चले शीघ्रगति
नाना वाद्य बाजे नाचे विद्याधरीगण * तुरी भेरी झांझरी ता ना जाय गणन
पाखोयाज पञ्चाश सहस्र परिमाण * तिन कोटि शिङ्गा बाजे अति खरशान
बाजे तिन कोटि शङ्ख आर घण्टाजाल * भोरङ्ग सहस्रकोटि शुनिते रसाल
सहस्र सानाई बाजे डम्फ कोटि कोटि * तिन सहस्र दामामा घन पड़े काटि
तबल बिशाल वाद्य बाजे जयटोल * महा प्रलयेर काले येन गण्डगोल
वाद्यभाण्ड महाभाण्ड करिल प्रचुर * रथ वेगे गेल राजा कोशलेर पुर
कोशलेर राजा वार्त्ता पाइया ताहार * पूजेन राजारे दिया पाद्य अर्घ्य भार
राजा कन्यादान करे शास्त्र व्यवहारे * आमोद करिल रामागण स्त्री आचारे
शुभ क्षणे दुइजने शुभदृष्टि करे * उभयेर रूपे धरा कत शोभा धरे

१ दूसरा २ चाहना ३ अपनी अनुपस्थिति में ४ शोर ५ पृथ्वी-आकाश सर्वत्र ६ हलचल पूर्ण ७ घोर कोलाहल ८ आदर-सम्मान।

नाना रत्न-दान, सत्कारू * दै पुनि अर्ध[1] राज-अधिकारू
कौशल्या-सह प्रमुदित अंगा * आये दशरथ अवध-पतंगा[2]

दशरथ के साथ कैकेई का विवाह

दो० हिम-अञ्चल कैकय नृपति, सुखसासन बहु काल।
कैकेई तिन सुता-छबि, जगमग पुरी-भुवाल ॥ ५७ ॥

सुता स्वयंवर नृप मन भावा * भूपन सकल निमंत्रि बुलावा
अवध दूत पठयेउ तत्काला * जहँ दसरथ महिपन-महिपाला
द्विज-बसीठ[3] लखि नृप सन्माना * दै आसिस सो काज बखाना
गिरि प्रदेस कैकय नृप धामा * रचेउ स्वयंवर-सुता ललामा
जुरे भूप तहँ अगनित-देसा * चलौ बेगि गिरिनगर, नरेसा!
समारोह मिलि बड़बहु सोभा * सुनि द्विजवचन भूप मन लोभा
नृप-रथ चलेउ वेगि द्विज साथा * सभा, जुरे जहँ बहु नरनाथा
यज्ञस्थल कैकई सुरूपा * जगमग करत नगरगिरि-भूपा
लखि छबि अतुल सबन भ्रम जाई * विद्याधरी स्वयंवर आई
तिलोत्तमा अप्सरा अनूपा * उर्वसि, कै रंभा अतिरूपा

नाना रत्न दिया राजा करे कन्यादान * शास्त्रेर विहित राजा करिल सम्मान
आपनि अर्द्धकराज्य दिला अधिकार * विलाइते दिल राजा अर्द्धेक भाण्डार
कौशल्या लइया राजा आसिलेन वास * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

दशरथेर सहित कैकेयीर विवाह

गिरिराज नगरेते कैकयेर घर * सुखे राज्य करे राजा अनेक वत्सर
कैकेयी नामेते कन्या परमा सुन्दरी * तार रूपे आलो करे सेई राजपुरी
स्वयम्वर हबे कन्या हेन आछे मन * पृथिवीर यत राजा कैल निमन्त्रन
दूत जाय दशरथे आनिते सत्वर * शीघ्रगति गेल दूत अयोध्या-नगर
ब्राह्मणे देखिया राजा प्रणाम करिल * आशीष करिया द्विज कहिते लागिल
गिरिराज नगरेते आमार बसति * राजकन्या स्वयम्वरा हबे नरपति
राजगण आसियाछे तथाय प्रचुर * चल राजा शीघ्र तुमि गिरिराजपुर
स्वयम्वर स्थान ये करिल सुशोभन * सवाद पाइया राजा चलिल तखन
रथे त्वरा दशरथ गेल सभास्थाने * सभा करि राजगण बसेछे येखाने
स्वयम्वर स्थाने एल कैकेयी सुन्दरी * गिरिराजपुरी तार रूपे आलो करि
कैकेयीरे देखि सबे करे अनुमान * आइल कि विद्याधरी स्वयम्वर स्थान
किम्बा रम्भा उर्व्वशी आइल तिलोत्तमा * त्रिभुवने निरूपमा कि दिब उपमा

१ आधा २ अवध के सूर्य ३ दूत।

तुलना ककस[1] ! अतुल त्रैलोका * मौचक[2], चकित सबन अवलोका
जिमि 'अज' वरेउ 'इन्दु' महरानी * प्रगट दीख चहुँ कथा पुरानी
तासु रूप सुनि, हेतु विवाहा * मायुर जुरे सबै नरनाहा
'अज' वरमाल, शेष भट लाजा * अजहुँ न बिसरत भूप-समाजा
सारभौम[3] अति छबि जगवन्दन * अतुल मोह तहँ सोइ अजनन्दन
दसरथ रहत, गहै को बाला ! * अवनत मुख सोचत नरपाला

दो० तजे नृपति बहु कैकई, निरखत अवध-भुवाल।
पुलकि, दरिद जिमि लहे धन, चढ़ि डारी गर माल ॥ ५८ ॥

दसरथ गर डोलत बरमाला * लचे लाजबस सीस - भुवाला
वरै आनि किमि सुता सयानी[4] * निज-निज गेह चले कहि बानी
कैकय नृप किय कन्यादाना * बहु मनि रतन द्रव्य सन्माना
दासी निपुन मंथरा साथा * लै कैकई - अयोध्यानाथा
चले वेगि पुनि साजि तुरंगा * सैन सहित नृप प्रमुदित अंगा

राजा दशरथ के साथ सुमित्रा का विवाह और
राज्य पर शनिदृष्टि तथा उसके निवारणार्थ इन्द्र पर चढ़ाई

कौशल्या-कैकइ युग[5] भामा * क्रीड़ारत महीप अविरामा

पूर्व्वे राजकन्या येन छिल इन्दुमती * सइ येन वरिलेक अज महामति
ताँहार रूपेर कथा गेल देशे देशे * विवाहार्थे राजगण आसिलेन हेसे
इन्दुमती वरिलेक अज महाराजे * सब राजा गेल देशे पड़िया ये लाजे
परम सुन्दर राजा राजचक्रवर्ती * दशरथ तुल्य नाहि भूमिते भूपति
दशरथ थाकिते वरिबे कान् जने * एइ युक्ति अधोमुखे करे राजगणे
प्रत्यक्षे देखिल कन्या सब राजगणे * सबारे भूलिल दशरथ दरशने
धन पाइले तुष्ट येन दरिद्रेर मति * गले माल्य दिया बले तुमि हओ पति
दशरथ भूपतिर गले माल्य दोले * लज्जाय नृपतिगण माथा नाहि तोले
राजगण बले कन्या बड विचक्षण * दशरथ थाकिते वरिबे कोन जन
राजगण परस्पर करिया सम्मान * बिदाय हइया गेल निज निज स्थान
कन्यादान करे राजा परम कौतुके * मन्थरा नामेते चेरी दिलेन यौतुके
माणिक मुकुता राजा पाइया बिस्तर * अश्ववेगे निज देशे चलिल सत्वर
कैकेयी लइया राजा आसे निज देशे * आदिकाण्ड रचिल पण्डित कृत्तिवासे

राजा दशरथेर सहित सुमित्रार विवाह ओ राज्ये शनिर दृष्टि
ओ अनावृष्टि निवारण जन्य इन्द्रेर निकट रणयात्रा

कौशल्या कैकेयी एइ सपत्नी उभय * उभये लइया क्रीड़ा करे महाशय

---

१ किस प्रकार हो ! २ भौचक्के ३ चक्रवर्ती ४ चतुर ५ दो।

नृप सुमित्र सिंहल-अधिकारी * सुता सुमित्रा छबि उजियारी
कहँ वर लहौं सुजोग कुमारी * मन सुमित्र नित करैं विचारी
सारभौम दशरथ जग जाना * दनुज-गँधर्व जासु भय माना
द्विज बुलाय दिय नृप आदेसू * आनहु दसरथ अवध-नरेसू
हरषि बिप्र नृप आयसु माना * कीन अवध दिसि बेगि पयाना
अज-सुत निरखि विप्र सन्माना * दै असीस, सो करत बखाना
सिंहलपति-प्रोहित, सोइ[1] काजा * आयेउँ लेन हेत महराजा
सुता सुमित्रा परमा रूपा * सिंहल करत अलोक[2] अनूपा
मञ्जुल छबि अतुलित दिग्देसू * हरषि देन तोहिं चहत नरेसू
अकथ रूप सुनि प्रमुदित दसरथ * वरौं सुमुखि अविलंब मनोरथ

दो० सजे भूप आखेट-मिस[3], बनिता-युगुल[4] अजान।
बाजन बाजे, सदल बल सिंहल कियेउ पयान ।। ५९ ।।

नृप-आगम सिंहलपति जानी * पाद अर्घ्य बहु बिधि सन्मानी
दसरथ रूप सराहत लोगू * राजसुता विधि[5] वर दिय योगू
नंदीमुख आदिक सुभ कर्मा * हरषि दोउ पालत कुलधर्मा
दम्पति दीठि[6] परस्पर डारी * दोउ छबि वसुन्धरा उजियारी ।

सिंहल राज्येते मे सुमित्र महीपति * सुमित्र तनया तांर अति रूपवती
कन्यारे देखिया राजा भावे मने मन * कन्या योग्य वर कोथा पाइव एखन
राजा चक्रवर्ती दशरथ लोके जाने * राक्षस गन्धर्व कांपे यांर नाम सुने
ब्राह्मण डाकिया राजा कहिल सत्वर * दशरथे आन गिया अयोध्यानगर
राजार आज्ञाय द्विज चलित हरिषे * शीघ्रगति गेल द्विज अयोध्यार देशे
ब्राह्मणे देखिया राजा करेन प्रणाम * आशीष करिया द्विज कहे निज नाम
सिंहल देशेर आमि राज पुरोहित * तोमारे लइते राजा आमि उपस्थित
राजकन्या सुमित्रा से परमा सुन्दरी * तांर रूपे आलो करे सिंहल नगरी
समरूप राजकन्या नाहि कोन देशे * तोमारे दिबेन राजा परम हरिषे
शुनिया कन्यार कथा हृष्ट दशरथ * हइते सुमित्रा पति हैल मनोरथ
कौशल्या कैकेयी पाछे जाने दुइजन * मृगयार छले राजा करिल गमन
नाना वाद्ये दशरथ चले कुतूहले * उत्तरिल गिया राजा नगर सिंहले
वार्त्ता शुनि हरषित सिंहलेर राजा * पाद्य अर्घ्य दिया तांर करिलेन पूजा
देखि दशरथेर लावण्य मनोहर * लोक बले विधि दिल कन्यायोग्य वर
नान्दीमुख करि दोंहे विशेष हरिषे * दुइजने वृद्धि श्राद्ध करे अवशेषे
गोधूलिते दुइजने शुभदृष्टि करे * दोंहाकार रूपे आलो वसुमती करे

१ उन्हीं के २ आलोक, प्रकाश ३ शिकार के बहाने ४ दोनों रानी (कौशल्या-कैकेई) ५ विधाता ६ दृष्टि ।

सख्या सुमन साँझि किय सयना * अलसभरे झपके नृप-नयना
भोर भूप उठि सय्या त्यागी * दिये नेग परजन[1] अनुरागी
यौतुक[2] लहेउ भूप मनमाना * प्रमुदित दीन विविध बहु दाना
दोउ नरेस किय बागबिदाई[3] * सतिय चढ़े रथ कोसलराई
छबि नवबधू निरखि नहिं धीरा * काम-अनल नृप अबुध सरीरा
स्यन्दन-उपर रमन युग करहीं * कालरात्रि अनुचित अनुसरहीं
कालनिसा परमत जो नारी * परति नारि दुर्भाग बिचारी
आनि सुमित्रा अवध, नरेसू * अन्तःपुर किय पुलकि प्रवेसू
कौशल्या-कैकयि दोउ भामा * सोच तासु लखि रूप ललामा
हमहिं बिसारि सौति अपनावैं * यहि भय शंकर-गौरि मनावैं
रानि तीन विलसत महिपाला * सुख सामन बीतेउ अतिकाला
सुत कर मुख न लखेउ नरनाहू * किय सत सप्त पचास बिवाहू

दो० बहु बनितान निकेत नृप, जिनहिँ प्रमुख पद दीन ।
कौशल्या, कैकय-सुता, अरु सुमित्रजा तीन ।। ६० ।।

तिन, छबि अतुल सुमित्रा न्यारी * जगमग करत अयोध्या सारी

कुसुमशय्याय राजा शयन करिल * निद्रार अलसे प्राय अचेतन हैल
शय्या छाड़ि उठे दशरथ नृपवर * शय्यार उत्थान कौडि दिलेन विस्तर
वासिविया सेइ स्थाने कैल दशरथ * यौतुक पाइल बहुधन मनोमत
विदाय हइल राजा राजार सक्षाते * सुमित्रा सहित राजा चडे निज रथे
सुमित्रार रूपे राजा मदने मोहित * अधैर्य्य हइया राजा हइल मूर्च्छित
विलम्ब ना सहे आर करे इच्छाचार * रथेर उपरे राजा करेन शृङ्गार
वासि बिया परदिन हय कालगति * स्त्री पुरुष एक ठाँइ ना थाके सहति
कालरात्रे ये नारी के करे परशन * से स्त्री दुर्भागा हय ना हय खण्डन
सुमित्रा लइया राजा आनि निज देशे * अन्तःपुरे प्रवेशिल परम हरिषे
कौशल्या कैकयी नामे राणी दुइजन * सुमित्रार रूप देखि भावे मने मन
सुमित्रार रूप मजाइब भूप-चित * आर ना चाहिबे आमा सबाकार भित
निरवधि सेवे तारा पार्व्वती शङ्कर * सुमित्रा दुर्भागा हउक एइ मागे वर
तिन रानी लैया राजा आछे कुतूहले * सुखे राज्य करे बहुकाल भूमण्डले
पुत्रहीन महाराज मने दुख दाह * करिलेन सात शत पञ्चाश विवाह
सात शत पञ्चाशेर मुख्य तिन राणि * कौशल्या कैकेयी आर सुमित्रा सतिनी
तार मध्ये सुमित्रा ये परमा सुन्दरी * ताँर रूपे आलो करे अयोध्या नगरी

१ सबको (नागरों) को २ दहेज ३ कन्यापक्ष वरपक्ष को विदाई के अवसर [illegible] करते व नज़र देते हैं ।

कालनिसा अपराध, बिचारी[1] * दैवयोग मन-भूप उतारी[2]
प्राणाधिक कैकई सनेहा * बसति भूप निसिदिन सोइ गेहा
तीनिहुँ - भाग सराह न जाई * सबन गर्भ जन्मे हरि[3] आई
मगन भूप इत सुख-संभोगू * अनावृष्टि उत अवध कुयोगू
वृष-रोहिणी दीठि शनि डारी९ * पावस[4] हरन अमंगलकारी
भोग विलास नारि - संभाषन * रत[5]; पुर विपति न अवगत[6] राजन
सोइ अवसर नारद मुनि आये * आसन भूप पूजि बैठाये
सुनो मुकुटमणि आगम-हेतू * कहौं कथा, सुनि होहु सचेतू
इन्द्र वृष्टि पोषत संसारा * तव पुर जल बिन सोक मँझारा
तैं कामिनि सन रत निसिवासर * भोगत नरक प्रजा दुखसागर
किय न अकाज काहु मुनि ज्ञानी * निन्दति प्रजा, बुद्धि बौरानी
पुरजन भोगत दुख निज कर्मा * लेपति किमि मम अंग अधर्मा
वर्षा छीन हेतु सुनु ताता * वृष-रोहिणी दृष्टि शनि पाता
सोइ कारन तव प्रजा दुखारी * चले नृपहिँ कहि बीनाधारी

हेन स्त्री दुर्भागा हैल राजार विपाद * कालरात्रि दाप हैल एनेक प्रमाद
प्राणेर अधिक राजा कैकेयीरे देखे * दिवारात्रि दशरथ तारे लैया थाके
ए तिनेर भाग्य कत वर्णिव सम्प्रति * या सवार गर्भे जन्म लबेन श्रीपति
सतत थाकेन राजा सुखेर सागरे * दैवे अनावृष्टि हैल अयोध्या-नगरे
रोहिणी वृषेते हैल शनिर गमन * ते कारणे वृष्टि नाहि हय वरिषण
कौतुके थाकेन राजा भार्य्या सम्भाषणे * राज्येते प्रमाद हैल इहा नाहि जाने
सकल अयोध्या राज्ये हइल आपद * हेन काले आइलेन तथाय नारद
पाद्य अर्घ्य देन राजा वसिते आसन * मुनिर करिया पूजा वसिल राजन
नारद वलेन नृप करि निवेदन * आइलाम तोमारे करिते विज्ञापन
इन्द्रेर वृष्टिते वाँचे सकल संसार * तव राज्ये अनावृष्टि दुख सवाकार
कामिनी लइया राजा करितेछ सुख * नरके पडिला प्रजागण पाय दुख
राजा वले कारे आमि नाहि करि दड * कि कारणे मन्द मोरे वले राज्यखण्ड
दुख पाय प्रजागण निज कर्म्मफले * कोन दोषे प्रजागण मोरे मन्द बले
नारद बलेन शुन नृप चूडामणि * रोहिणी नक्षत्रे दृष्टि दिया गेल शनि
एइ हेतु अनावृष्टि हइल राज्येते * प्रजागण दुख पाय एइ कारणेते

१ स्वामी, दीन २ उत्तेजित मन उमंग ३ रामादिक चार अनुजों में प्रगट होनेवाले नारायण के चार अंश ४ वर्षा ५ लीन ६ मित्र, परिचित।

९ वृष राशिस्थित रोहिणी नक्षत्र पर शनिश्चर की दृष्टि पड़ने पर अकाल योग होता है, यह ग्रन्थकार का कथन है।

आवा चेत, साजि रथ राजा * चले लेन सुधि प्रजा-समाजा

दो० लखे उतर[1], आकुल सकल, जलचर, खग, पसु वन्य[2]।
नदी, ताल, नद, बड़ सर, जल बिन शुष्क अरण्य[3] ॥ ६१ ॥

साँझ भई तरु-तर नृप बासा * शाखा, शुक-सारिका निवासा
कछु निसि बीति नीद भइ भंगा * कह विहंग इमि सोक-प्रसंगा
कह सारिका, बास बहुकाला * गत, नित करत उपास[4] कराला
रविकुल-राजु न दुख कहुँ लेसू[5] * सो कस पाप? दुसह दुखदेसू
चौदह वर्ष असन[6]-जलहीना * पावस रहित, न फल तरु दीना
सर, सरिता, नद वारिविहीना * नृप पुरजन-हित चित तजि दीना
नारि-लिप्त निसि दिवस नरेसू * क्षुधा असह, शुक चलौ विदेसू
प्रिया! सुनौ, कह शुक मृदु बानी * सीख न तव मैं रुचिकर जानी
सतयुग सों वन वसत सप्रीती * पीढ़ी मम पचास इत बीती
हमहिं न दुख, दुख सब जग छावा * निरखि विषाद स्वयं नृप पावा
जेहि थल जनम, मरन सोइ देसू * तत्र सिख उचित न त्याग-स्वदेसू
कह सारिका सुनौ शुक बाता * पापराज बमि प्रान निपाता
श्वास रुद्ध जल बिन गत प्राना * चलि तट सिंधु करैं जलपाना

एत बलि करिलेन नारद गमन * रथे चड़ि राज्य देखि बेड़ना राजन
गेलेन उत्तर दिके गहन कानन * जलजन्तु देखे राजा पशु पक्षिगण
नद नदी देखे राजा ताहे नाहि जल * दीघि सरोवर देखे शुष्क से सकल
बेला अवसाने राजा बसे वृक्षतले * शारी शुक पाखी आछे सेइ वृक्ष डाले
शेष रात्रि हइल पक्षीर निद्रा भाङ्गे * पक्षिणी कहिल कथा पक्षिराज सङ्गे
बहुकाल हइल मोरा एइ वनवासी * आर कत पाब कष्ट नित्य उपवासी
सूर्यवंश राज्ये कभु दुःख नाहि जानि * चौद्द वर्ष अनाहार नाहि पाइ पानि
अनावृष्टि कारणे वृक्षेते नाहि फल * नदनदी सरोवर ताहे नाहि जल
भूपति पालिते राज्य चेष्टा नाहि करे * रात्रि दिन स्त्री लइया थाके अन्तःपुरे
कष्ट पाइ आर कत थाकि अनाहारे * अतएव चल प्रभु जाइ स्थानान्तरे
पक्षीराज बले प्रिये शुन मोर वाणी * तोमार वचने कि छाड़िब अरण्यानी
सत्ययुग हैते मोर एइ वने बास * गोंयाइनु एइ वने पुरुष पञ्चाश
मोर दुःख नहे दुःख हयेछे संसारे * एइ दुःखे आछे राजा दुःखित अन्तरे
एइ खाने जन्म मोर एखाने मरण * तोर बोले छाड़िते नारिब एइ वन
पक्षिणी बलये पक्षी शुन विवरण * पातकीर राज्ये थाकि हाराबे जीवन

---

१ उत्तर दिशा २ जंगल के ३ जंगल ४ उपवास, फ़ाका ५ लवलेश, ज़रा भी
६ भोजन ७ केवल हम पर ही।

युगुल पच्छि जिमि व्यथा बखाना * सुनि दसरथ तरुतर निज काना
असत[1] न कहेउ तपोधन बानी * खग निन्दति प्रतच्छ दर्सानी
इन्द्र लबार[2], वचन थिर नाहीं * कहनि-करनि[3] प्रतिकूल दिखाहीं

दो० बाँधि इन्द्र राखे अवध, रघु पितुजनक[4] स्वधाम।
कटे फन्द दीने वचन, पावस सतत ललाम ॥ ६२ ॥

पकरि इन्द्र पुनि, धरि जनि लावौं * तौ दसरथ—अजसुत न कहावौं
रजनी विगत, प्रभात अलोका * दुखित भूप, दोउ विहग विलोका
कह शुक, सुनु सारिका अपावन * अधम पच्छि किमि निन्दति राजन
सुनहिं सकल दसरथ निज काना * सब्दवेध सर हरहिं पराना
प्रान-मोह खग मन अति त्रासा * लिये डिम्ब[5] उड़ि चले अकासा
भुज उठाय नृप विहग बुलावा * पुनि प्रबोधि मृदु बचन सुनावा
अन्त[6] न जाहु तजौ भय-संका * सुख मन मानि बसौ तरु-अंका[7]
दोस न लेस[8] तोर खगरानी * लहेउँ चेत[9] सुनि तव सतबानी
कटहल - आमादिक जे कानन * खगन-अधीन कीन ते राजन
चले हेलि स्यन्दन सुरलोका * सभा-अमरगन[10] भूप विलोका

जल विना श्वासगत व्याकुलित प्राण * समुद्रेर तीरे गिया करि जलपान
एइ कथावार्त्ता नारा कह दुइजने * वृक्ष तले थाकि ताहा दशरथ शुने
राजा बले नारदेर वचन प्रत्यक्ष * पक्षी मोरे निन्दा करे पेये उपलक्ष
बुझिलाम इन्द्रराज बडइ चतुर * मुखे एक कहे मे अन्तरे करे दूर
मम पितामह सेइ रघुनाम धरे * इन्द्रे आनि खाटाइल अयोध्यानगरे
तबे आजि हय मम दशरथ नाम * इन्द्रेरे वान्धिया आनि यदि निज धाम
रजनी प्रभात करे राजा मनोदुःखे * प्रभात हइले राजा दुई पक्षी देखे
पक्षी बले पापिनी पक्षिणी शुन वाणी * राजारे निन्दिला केन हइया पक्षिणी
से सकल दशरथ शुनियाछे काने * शब्दभेदी वाणे राजा मारिबे पराणे
पक्षीर पराण फाटे एतेक बलिया * डिम्ब लये ठोटेते आकाशे उठे गिया
पक्षी पलाइया जाय पाइया तरास * ऊर्द्धबाहु करि राजा करेन आश्वास
दशरथ बले पक्षी ना पलाओ डरे * फिरिया आसिया बैस वासार उपरे
स्त्री वाक्ये अपराध नाहिक तोमार * तोमार वचने ज्ञान हइल आमार
एइ वने यत आम्र काँठालेर भार * आजि हैते दिलाम तोमारे अधिकार
पक्षी सम्बोधिया राजा राखि वासा घरे * आपनि गेलेन परे इन्द्रेर नगरे

---

१ मिथ्या २ झूठा, बकवादी ३ कहने और करने में अन्तर ४ पितामह
५ अण्डे बच्चे ६ अन्यत्र, और कहीं ७ वृक्ष की गोद में ८ जरा भी ९ होश
१० देवताओं की सभा।

रन हुंकरत गर्जि महराजा * कहौ अमरगन कित सुरराजा
पुनि-पुनि समर हेत ललकारा * पूछेउ देव, क्रोध कस धारा
तुम सन रारि[1] न सुरपति भावा[2] * अनावृष्टि, नृप, जोगु सुनावा
चौदह वर्ष अवध जल नाहीं * उपज न अन्न, जीव बिलखाहीं
विनमत सृष्टि विकल जलहीना * नर, पसु, पच्छि, विटप, जलमीना
पावस विन, नित सहत कलेसा * सकल करत अपमान नरेसा

दो० कै[3] सुवृष्टि बरसैं जलद, अवध चराचर लोक।
हरषैं; नतरु[4], न दोष मोहिं, लड़ौं जीति सुरलोक ॥ ६३ ॥

चले अमरगन जहँ सुरनाथा * सविधि वरन किय दसरथ-गाथा
काज कवन ? सुरपुरी प्रवेसा * मनुज न भय ! किमि ? कहेउ सुरेसा
अहंकार तजि सुनो पुरंदर[5] * नहिं निस्तार[6] भूप सन संगर[7]
शब्दबेध संधान प्रवीना * इत रन मनहुँ प्रान उत दीना
मिटै न जब लौं नृप मन-तापा * तिन सन करौ मधुर संलापा
सुरन-सीख सुरपति हिय आनी * पाद अर्घ्य दसरथ सन्मानी
भूपति कहेउ, सुनहु सहसानन * मम पुर अनावृष्टि केहि कारन
वृष-रोहिणी दीठि शनि डारी * कारन अजल[8] कहेउ असुरारी

स्वर्गेते पाइया राजा देवेर समाजे * कोथा इन्द्र वलिया डाकेन देवराजे
तर्जन करेन दशरथ महाराज * रण देहि रण देहि कोथा सुरराज
देवेरा बलेन राजा क्रोध कि कारण * तव सगे वासव ना करिवेक रण
भूपति बलेन मम राज्ये नाहि वृष्टि * अनावृष्टि हेतु मार नष्ट हैल सृष्टि
मम राज्ये वृष्टि नाहि हय कोन काजे * आन-वृष्टि हेतु यत प्रजागण मजे
चौद्द वर्ष अनावृष्टि नाहि हय धान * प्रजागण दुख मोरे करे अपमान
सुवृष्टि करिया सृष्टि राखुन सम्प्रति * ननुवा जिनिया लब ए अमरावती
एतेक शुनिया यान यत देवगण * इन्द्रके कहेन तांर सब विवरण
बासव बलेन राजा एलो कि कारणे * मनुष्य हइया निन्दे शङ्का नाहि मने
देवेरा बलेन इन्द्र त्यज अहङ्कार * 'राजार युद्धेते कार' नाहिक निस्तार
शब्दभेदी बाण राजा शब्द मात्रे हने * तार सने युद्ध करि मरिब आपने
यावत् मनेते राजा नाहि पाय ताप * राजार सहित कर मधुर आलाप
देवतार वाक्य इन्द्र नाहि करे आन * पाद्य अर्घ्य दिया तांर करेन सम्मान
कहिलेन दशरथ करि सम्बोधन * मम राज्ये अना-वृष्टि हय कि कारण
वासव बलेन राजा शुन एक चिते * पडिल शनिर दृष्टि रोहिणी नक्षत्रे

१ झगड़ा २ पसन्द ३ या तो ४ नहीं तो ५ इन्द्र ६ पार पाना
७ समर, युद्ध ८ वर्षा का अभाव।

करौं निवारन तासु नरेसू * महावृष्टि सरसै तव देसू
दशरथ रथ शनिलोक चलावा * शनि-निकेत पुनि हाँक[1] लगावा
रविसुत[2] दीठि भूप-रथ भंगा * गिरे गगन सों अष्ट तुरंगा
दड़ा[3] टूट रथ रहित अधारा * भ्रमन चक्रवत व्योम[4] मँझारा
तहाँ न कोउ नृप मीत-सहाई * सोइ छन, नभ कहुँ उड़त जटाई
लखेउ भ्रमित रथ, नरपति-गाता * चूर अथाह होय गिरि गाता[5]
जो संकट सों महिप उबारौं * विरद सुयस चहुँ दिसि विस्तारौं
धर्मधुरीन[6], रहत मम, नामा * गिरैं धरनि कातर, अति त्रासा !

युगुल पसारे पंख नभ, अतुल वीर खगनाथ ।
पंख-उपर थिर भूप पुनि, हय[7] जोरे रथ साथ ॥ ६४ ॥

बाँधि दड़ा अरु ध्वजा पताका * सारथि पवन-तुरंगन[8] हाँका
सोचत नृप, उत हय[9] नभ ओरा * बचे प्रान मम काहि निहोरा[10]
अज किंवा रघु पितर भुवाला * मेटी विपति कवन यहि काला
सम्मुख दरस जटायू पावा * रथ चढ़ाय, मृदु वचन सुनावा

छाड़ाइते पार यदि रोहिणीते दृष्टि * हबे तोमार देशे तबे महावृष्टि
चलिलेन दशरथ इन्द्रेर वचने * रथ चालाइया जाय शनिर सदने
शनि घरे बलि राजा डाकिलेन ताय * बाहिर हइया शनि सम्मुखे दाँडाय
शनिर दृष्टिते तबे छिंड़े रथदड़ा * आकाश हइते पड़े तार आट घोड़ा
छिंड़िया रथेर दड़ा नाहि पाय स्थल * पाके पाके पड़े रथ करे टलमल
चक्रवत् फिरे रथ गगन उपरे * हेनजन नाहि ये राजारे रक्षा करे
जटायु नामेते पक्षी उड़े अन्तरीक्षे * आकाशे थाकिया पक्षी रथ पड़े देखे
भूमेते पड़िबे राजा नाहि पेये स्थल * राजार हइबे चूर्ण शरीर सकल
हेन काले करि यदि राजार उद्धार * घोषित थाकिबे यश आमार अपार
दशरथ महाराज धर्म्म अधिष्ठान * हेन राजा त्यजे प्राण मम विद्यमान
कातर हइबे राजा पड़िले भूमिते * इहा भावि पक्षीराज दुइ पाखा पाते
पाखा पाति रहिल जटायु महावीर * हइलेन ताहार उपर राजा स्थिर
स्थिर हैया दशरथ रथे जोड़े घोड़ा * ध्वज तार पताका बान्धेन जोड़ा जोड़ा
सारथि घोड़ार गाय मारिलेक छाट * आरबार चले घोड़ा आकाशेर बाट
राजा बलिलेन रथ राख पक्षिरान * राखिल आमार प्राण देखि कोन जन
रघु पितामह किवा सेइ अज पिता * एमन विपदे केबा आमार रक्षिता
तुलिलेन पक्षिराजे रथेर उपरे * मधुर सम्भाषे राजा जिज्ञासेन तारे

१ आवाज़ २ शनिश्चर ३ धन ४ आकाश ५ शरीर ६ धर्म के आधार (दशरथ) ७ घोड़े ८ हवा के समान चलनेवाले घोड़ों को ९ घोड़े १० अनुग्रह से, बदौलत।

गिरत धगनि विनसत मम काया ❋ बचे प्रान तव पाय सहाया
को तुम भद्र ! कहौ पितु नामा ❋ परिचय देहु बसौ केहि ग्रामा
नाम जटायु, पच्छि मम जाती ❋ जेठ बंधु मम नृप सम्पाती
गरुड़-तनय, सुभाव नभचारी ❋ तहैं गिरत तव विपति निहारी
पंख पसारि भार तव साधा ❋ सोइ प्रकार विनसी तव व्याधा
तैं मम सखा श्रेष्ठ सुनु प्रानी ❋ दिय जिउदान न जाय बखानी
मुदित-दोऊ पुनि अगिन जराई ❋ करि साखी सोइ कीन मिताई
नरपति - बन्धु विहगपति भयऊ ❋ नृप सन बिदा मांगि घर गयऊ
सुनै जठायु-कथा धरि ध्याना ❋ तासु विपति समुखैं भगवाना

राजा दशरथ का दुबारा शनि के निकट गमन और शनि द्वारा गणेश का जन्म-
वृत्तान्त वर्णन तथा दशरथ को वरदान

शनिगृह पुनि धाये अजनन्दन ❋ सभय मून्दि दृग कह रविनन्दन[1]
पाय प्रथम कुदीठ निस्तारा ❋ सकेउ जो नृप आगम यहि बारा
सारभौम रविकुल मनि राजन ❋ जन्मैं तव निकेत नारायन

दो० धर्मरूप ! सोइ हेत नृप, मम सक दीठि निवार[2] ।
नतरु[3] दीठ-शनि परत छन, सकल होत जरि छार ।। ६५ ।।

तासों मोरि कुदीठ निवारी ❋ आवौ भूपति घूमि पछारी

आछाड खाइया पड़िताम भूमितले ❋ करिले आमारे रक्षा तुमि हेन काले
कान देशे थाक तुमि काहार नन्दन ❋ परिचय देह मोरे तुमि कोन जन
पक्षीराज बलिलेन आमि पक्षीजाति ❋ मम ज्येष्ठ भाइ पक्षी भूपति सम्पाति
जटायु आमार नाम गरुड - नन्दन ❋ अन्तरीक्षे भ्रमि आमि उपर गगन
आछाड खाइया पड देखिया राजन ❋ राखिलाम पाखा पाति तोमार जीवन
दशरथ बलिलेन तुमि मोर मित्र ❋ पाणदान दिले मम कि कह चरित्र
तारपर रथ काष्ठ खसाइया आनि ❋ ज्वालिलेन हुतभुक् नृपति आपनि
उभये मित्रता करे अग्नि करि साक्षी ❋ हइल राजार मित्र जटायु ये पक्षी
जटायु पक्षीर कथा शुने येइ जन ❋ सर्वत्र ताहारे राखे देव नारायण
विदाय हइया पक्षी चलिलेक देशे ❋ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवासे

दशरथेर पुनर्व्वार शनिर निकटे गमन ओ शनि कर्तृक गणेशेर जन्म-वृत्तान्त-वर्णन
एवं शनि कर्तृक दशरथ के वरदान

पुनश्च गेलेन राजा शनिर भवने ❋ राजारे देखिया शनि भीत हय मने
शनि बले दशरथ आइले आबार ❋ तुमि से आमार दृष्टे पाइले निस्तार
दशरथ तुमि सूर्य्यवंशेर भूषण ❋ लबेन तोमार घरे जन्म नारायण
राज-चक्रवर्त्ती तुमि धर्म अवतार ❋ ते कारणे मोर दृष्टे पाइले निस्तार

---

१ शनिश्चर २ बच निकलना ३ नहीं तो ।

सुनो कथा, धरि ध्यान, पुरातन * जिमि गनेस पायउ गज-आनन
सुनेउ जनम-सुत गौरि-निकेता[1] * जुरे सकल सुर दरसन हेता
देव-समाज न शनि अवलोका * कहत, न रवि-सुत, देवि ! विलोका
उमा दूत पठयेउ मम वासा * आयसु पाय चलेउँ कैलासा
परत दीठि मम सुवन-गिरीसा[1] * लखेउ सबन उत शिशु बिन सीसा
देव अवाक् शंभु मन चिन्ता * पारबती उर ताप अनन्ता
जस के तस, न सभा कोउ त्यागी * मम सुत सीस हरन को भागी[2]
कहत अमरगन, हे जग-जननी * असुभ दीठि - शनि कै यह करनी
सुनि, सकोपि शनि-बध मन ठानी * लै त्रिशूल हुंकरीं भवानी
चहुँ, मैं फिरत, न आश्रय पावा * सुरन बीच लुकि, प्रान बचावा
चण्डि-कोप ! कर शूल कराला * निरखि देवगन हाल-बिहाला
बिनवैं, अगम, अकथ तव दाया * आदिशक्ति, जगगति, जगमाया
शनि कुदीठ भव सीस-बिहीना * कौतुक वर माता तुम दीना
सोइ वर, वरदायिनि विपरीता[3] * शनि,बध उचित न मातु प्रतीता

मुदिया नयन शनि दशरथे बले * सम्मुख छाड़िया तुमि रस पृष्ठमूले
पूर्व्व कथा कहि राजा ताहे देह मन * येमते शिवेर पुत्र हैल गजानन
जन्मिलेन गणपति गौरीर नन्दन * देखिते गेलेन तथा यत देवगण
देवगण बले देवी तोमार आदेशे * आइल सकल देव शनि ना आइसे
दूत पाठाइया दिल आमार गोचर * देखिते गेलाम पुत्र कैलास शिखर
शुभ दृष्टे गिया येइ मुखपाने चाइ * सबे बले गणेशेर मुण्ड देखि नाइ
ना देखिया देवगण हइल विस्मित * पार्व्वतीर मनोदु:खे महेश चिन्तित
पार्व्वती बलेन हेथा आछे देवगण * आमार पुत्रेर मुण्ड निल कोन जन
देवगण बलेन शुनह विश्वमाता * शनिर दृष्टिते भस्म गणेशेर माथा
देवातार वाक्य शुनि रुषिया भवानी * आमारे बधिते जान लये शूलपाणि
पलाइया जाइ आमि स्थान नाहि पाइ * देवतार आड़ालेते तखनइ लुकाइ
शूल हस्ते आइलेन देवी महाकोपे * पार्व्वतीर कोप देखि देवगण काँपे
सकल देवतागण करिछे स्तवन * आपनि सृजिया शनि मार कि कारण
तुमि आद्याशक्ति माता जगतेर गति * तोमार महिमा बले काहार शकति
आपनि दियाछ वर परम कौतुके * शनि यारे देखे तार माथा नाहि थाके

---

१ शिव के पुत्र गणेश २ ज़िम्मेदार ३ शनि को स्वयं भगवती से यह वरदान प्राप्त था कि उसकी दृष्टि में आते ही वस्तु नष्ट हो जाय। अब उसका प्रयोग उन्हीं के पुत्र पर हो जाने से, उन्हें अपने ही दिये वर के विपरीत, शनि पर कोप न करना चाहिये। विनम्र देवताओं ने इस प्रकार निवेदन किया।

स्वयं सिर्जि पुनि-ताहि निपाती * तासु त्रान जगती केहि भाँती

दो० विनय गौरि सन कीन विधि[1], शनिबध कतहुँ न हेत ।
धरौ धीर, गनपति-वदन[2], सिरजौं, करौं सचेत[3] ॥ ६६ ॥

चलेउ पवन विधि-आयसु पाई * लखेउ अबुध सोवत गजराई[4]
उतर-सीस[5] जल - गंग - अघाना[6] * निरखि मरुत[7] अवसर मनमाना
काटि भाल-गज[8] आनि बहोरी * नर-तन, मुख-कुञ्जर इमि जोरी
रूप बिहंगम तनय बिलोका * कस गजवदन ! गौरि मन सोका
अन्य-देव-सुत-छबि मन मोहा * निज नन्दन निरखत मन छोहा
विधि[9] विधान दै, पुनि समुझावा * तव सुत आदि-पूज-पद पावा
तजि गजवदन, इतर सुर धावैं * धर्म, लोक-परलोक नसावैं
ऐरावत इत सीस विहीना * निरखि अपार इन्द्र दुख कीना
उच्चैःश्रवा - दन्तिपति[4] हीना * किमि सुरपति सुर-साज विहीना
अनिल[10] बहोरि विरञ्चि पठावा * श्वेत मतंग[11] पछिम सिर पावा§
लाय कीन गजपतिहिं स-बदना[12], * पच्छिम शिर अनुचित इमि शयना
बन्दि गौरि, पुनि सहित मतंगा * सुरपति चले सुरन लै संगा

पाइया तोमार वर तोमान परीक्षा * तुमि यदि मार तारे के करिबे रक्षा
शनिके मारह केन विधाता बलेन * स्थिर हओ जीयाइब तोमार नन्दन
आज्ञा करिलेन ब्रह्मा तवे पवनेरे * मुण्ड काटि आन येवा उत्तर शियरे
गङ्गा नीर खाइया इन्द्रेर ऐरावत * उत्तर शियरे शुयेछिल निद्रागत
काटिया ताहार मुण्ड आनिल पवन * रक्तमासे जीयाइल हैल गजानन
शरीर नरेर मत वदन करीर * देखिया हइल बड दुःख पार्व्वतीर
सकल देवेर पुत्र देखिते सुन्दर * गजमुख वसिवेक ताहार भितर
विरिञ्चि बलेन दरि गणेशेरे राजा * आगे गणेशेर पूजा पिछे अन्य पूजा
गणेश थाकिते येवा अन्य देवे पूजे * पूर्व्व धर्म्म नष्ट तार हय सव काजे
ऐरावत मुखे जीयाइल लम्बोदर * हस्तीर शोके कान्दि कहे पुरन्दर
उच्चैःश्रवा घोडा आर ऐरावत हाती * ए सब सम्पदे मम नाम सुरपति
आज्ञा करिलेन चतुर्म्मुख पवनेरे * मुण्ड काटि आन येवा पश्चिम शियरे
पश्चिम शियरे शुये श्वेत हस्ती यथा * पवन काटिया आनि दिल तार माथा
प्राण पेये ऐरावत गेल निज घरे * हेलाय आलस्य नाइ पश्चिम शियरे
देवीरे प्रणाम करि गेल देवगणे * गणेशेर जन्म शनि कहिल राजने

---

१ ब्रह्मा २ मुख ३ प्राणयुक्त ४ ऐरावत ५ उत्तर दिशा की ओर सिर रखकर ६ तृप्त ७ पवन, वायु ८ गज-मस्तक ९ ब्रह्मा १० पवन ११ सफ़ेद हाथी १२ शिरसहित।

§ श्वेत हस्ती के पश्चिम दिशा की ओर शिर रखकर सोने पर शिरच्छेद होने के कारण पश्चिम की ओर शिर करके सोना वर्जित है ।

गनपति-जनम-कथा शनि बरनी * दसरथ सुनौ, हगन मम करनी
तैं मानव पुनि-पुनि पग धारा * किमि संभव कुदृष्टि निस्तारा
मैं रविसुत, तैं रविकुल जाया * सोइ कारन निवरेउ[1] नृपराया
जो जानौं तव आगम हेतू * पूरन करौं भानु - कुल - केतू

दो० तव लोचन रोहिनि ग्रसित, विकल धरा, जल-हीन ।
भूप-मनोरथ जानि शनि, मुक्त रोहिणी कीन ।। ६७ ।।

तजि विषाद गृह जाहु नरेसू * पावस[2] अतुल झरइ तव देसू
तव यश भूप त्रिलोक प्रकासी * जब जहँ रोहिनि गृह वृष रासी
तहाँ न शनि आगम सोइ काला * लहि रविसुत[3]-वर, तोष[4] भुवाला
दसरथ चले जहाँ सुरराजा * तहँ विराज विच देव-समाजा
गाथा, शनि - प्रसाद जिमि पावा * सकल सुरपतिहिं भूप सुनावा
बोले वचन देव मन हर्षा * सात दिवस अविरल[5] जल वर्षा
घन बरसैं तव धाम नरेसू * यथाकाल पावस तव देसू
पाय मनोरथ इमि नृपराई * चले अवध मन मुद अधिकाई
पुनि, 'आवर्त्त', 'द्रोण' अरु 'पुष्कर' * घन 'संवर्त' चारि जे जलधर[6]
अक्षमु-इन्द्र पाय दिन साता * अवध - धरा अविरल जलपाता

शुभदृष्टे कोपदृष्टे यार पाने चाइ * आमार दृष्टिते केह रक्षा पाये नाइ
मनुष्य हइया तुमि एम बार बार * सूर्य्यवंशे जन्म हेतु पाइले निस्तार
सूर्य्यवंश जात आमि सूर्य्येर कुमार * एक वंशे जन्म तेइ पाइले निस्तार
कि कारणे आसियाछ तुमि मोर पाश * वर चाह तोमार पूराव अभिलाष
तखन बलेन दशरथ यशोधन * रोहिणीते तव दृष्टि नहे कोरपण
शनि बले आजि हैते छाडिब रोहिणी * अविलम्बे देशे चलि जाओ नृपमणि
आजि हैते तव राज्ये हवे वरिषण * घोषिवे तोमार यश ए तिन भुवन
रोहिणी वृषभ राशि हवे येइ जन * सेइ राज्ये हवे ना आमार आगमन
हइया सन्तुष्ट नृपे शनि दिल वर * चलिलेन राजा इन्द्र निकटे सत्वर
सभाते वसिया इन्द्र सह देवगणे * दशरथ बसिलेन तार एकासने
कहिलेन से सब वृत्तान्त पुरन्दरे * शनिके प्रसन्न करिलेन ये प्रकारे
शुनिया राजार कथा देवगण भाषे * एक्षणे हइबे वृष्टि जाओ तुमि देशे
सात दिन वृष्टि मात्र क्षान्त न करिव * तोमार राज्येते जल यथाकाले दिव
विदाय हइया राजा गेलेन स्वदेशे * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवासे
अनुज्ञा करिल इन्द्र चारि जलधरे * सात दिन वृष्टि करे अयोध्या-नगरे
आवर्त्त सम्वर्त्त द्रोण आर ये पुष्कर * चारि मेघे वृष्टि करे पृथिवी उपर

---

१ [illegible] २ वर्षा ३ शनिश्चर ४ तृप्त ५ लगातार ।
६ इन नामों वाले चार बादलों को अयोध्या में जल बरसाने हेतु इन्द्र ने नियुक्त किया ।

पूरित जल नद, नदी, तडागा * हरित रसाल[1] विटप फल लागा
जड़-जंगम[2] सचेत, सुख छावा * जिमि तप अन्त मनोरथ पावा
दान, ध्यान, सुख, संपति, साजा * इन्द्र सरिस[3] शासन-रत राजा
वयस[4] सहस नव, भूपति बीती * सार्द्ध-सप्त - शत[5] रानि निपूती[6]
भार्गव-सुता एक तहँ रानी * तनया तासु गर्भ छबिखानी
जन्मी, सुबरन सरिस निहारी * 'हेमलता' तिन नाम पुकारी

दो० लोमपाद दसरथ - सखा, अंगप[7] धर्म-धुरीन ।
प्रथम अवधपति सों कबहुँ, जिन अस वाचा लीन ।। ६८ ।।

सुता-जनम मुनि सोइ अनुसारी * पठये दूत अंग-अधिकारी[8]
दसरथ विवस, न आनाकानी[9] * लोमपाद गृह कन्या आनी
तासु गेह कन्या प्रतिपाला * राजत अवध, अवध-महिपाला

दशरथ के द्वारा अंधमुनि के पुत्र का वध

भावी प्रबल ! दिवस एक राजन * चले साजि मृगया[10] हित कानन
शत शत गज, रथ सहित तुरंगा * मृग हित फिरत सिथिल नृप-अंगा
निविड[11] अरण्य, न मृग कहुँ पेखा * 'अन्धक' मुनि तप-उपवन देखा

नद नदी सरोवर पूर्ण हैल जले * अनावृष्टि घुचिल वृक्षेते फल झुले
जीवन पाइया सब जीवेर समृद्धि * तपस्यार अन्ते येन मनोरथ सिद्धि
दान ध्यान सदा करे राज्ये प्रजागण * सुखे राजा राज्य करे सम्पदभाजन
राज्य करे दशरथ येन पुरन्दर * राजार वयस नय हाजार वत्सर
सात शत पञ्चाश ये नृपति रमणी * कारु पुत्र ना हइल बन्ध्या सब नारी
भार्गव राजार कन्या छिल एक जन * तार गर्भे एक कन्या जन्मिल तखन
परमा सुन्दरी कन्या अति सुचरिता * स्वर्णमूर्ति देखे नाम राखे हेमलता
दशरथ सखा अङ्गदेशेर नृपति * लोमपाद आदेशे करित बसति
जन्मियाछे कन्या दशरथेर शुनिया * लोमपाद आने तारे लोक पाठाइया
सत्य छिल पूर्व्वेते करिते तारे दान * लोमपाद पुण्यवान धर्म्म अधिष्ठान
कन्या रहे लोमपाद भूपतिर घरे * दशरथ राजत्व करेन निज पुरे

दशरथ कर्तृक अन्धमुनिर पुत्र वध

दैवेर निर्ब्बन्ध आछे ना जाय खण्डन * मृगया करिते राजा करेन गमन
हस्ती घोडा राजार चलिल शते शते * मृग अन्वेषिते राजा वेड़ान वनेते
भ्रमिया बेड़ान राजा निविड कानन * अन्धकेर तपोवने गेलेन तखन

१ रस वाले (वृक्ष) २ चल अचल सृष्टि ३ समान ४ उम्र ५ साढ़े सात सौ ६ निस्सन्तान ७ अंग देश के नरेश ८ अंगनरेश लोमपाद ९ संकोच, टाल मटूल १० शिकार ११ घने ।

तहँ तरु-तर नृप किय विश्रामा * जहँ तडाग लख दिव्य ललामा
अंधक-पुत्र 'सिंधु'[1] सर तीरा * घट टेढ़काय[2] भरत तहँ नीरा
डब-डब धुनि घट-मुख जल भरई * मृगी पियति जिमि जल—सुनि परई
खाय दूब-तृण सर जलपाना * नृप अनुमानि बान संधाना
सब्दबेध सायक तज चापा * सोइ छन सिन्धु बदन सर व्यापा
मृगी लेन नृप पनघट धाये * प्रान कण्ठगत मुनि-सुत पाये
बान विद्ध लखि भ्रम निज जाना * अहह ! विकल लीने मुनि - प्राना
बोल न मुख, हत अंधकुमारा * कियेउ कछुक जल हेत इसारा[3]
अञ्जलि जल नृप द्विज-मुख दीना * सरसति 'सिंधु' सचेतन कीना
धुनत सीस, दसरथ संतापा * सो लखि मुनिसुत दीन न शापा

दो० लाभ न दीन्हे शाप कछु, होहु न भीत भुवाल ।
टरै न टारे करमगति, जो विधि लिखी कपाल ।। ६६ ।।

सुरत्ति[4] कथा मोहिं जनम पुरातन * मम तन भूप-सुवन, सुनु राजन !
प्रिय आखेट गुलेल अनन्दा * नित कानन मारौं खग-वृन्दा
युगुल कपोत[5] निरखि तरु-डारी * तिनहिं गुलेल साधि तकि मारी
गिरत कपोत कपोतिनि तापा * व्यथित विहंगिनि दिय मोहिं शापा

श्रमयुक्त हइया वसेन वृक्षतले * दिव्य सरोवर देखिलेन सेइ स्थले
अन्धक मुनिर पुत्र सिन्धु नामे धरे * कलसीते जल भरे सेइ सरोवरे
कलसीर मुख करे बुक् बुक् ध्वनि * राजा भावे जल पान करिछे हरिणी
पाता लता खाइया पशेछे सरोवर * हेन भावि वसिते जुडेन धनु शर
शब्दभेदी बाण राजा शब्द मात्र हने * मुनि पुत्रोपरि बाण पडे सेइ क्षणे
मृग ज्ञाने बाण हने राजा दशरथ * बाणाघाते मुनि पडे प्राण ओष्ठागत
मृगेर उद्देशे राजा यान दौडादौडि * मृग नहे मुनि-पुत्र यान गडागडि
देखेन सिन्धुर बुके विद्ध आछे बाण * अति भीत दशरथ उडिल पराण
बुके बाण बाजियाछे कथा नाहि सरे * जल देह बले मुनि हस्त अनुसारे
अञ्जलि पूरिया राजा आनिल जीवन * मुखे दिवामात्र मुनि पाइल चेतन
शिरे हस्त दिया राजा करे मनस्ताप * व्याकुल देखिया मुनि नाहि दिल शाप
मुनि बले दशरथ भय कि कारण * तोमारे शापिया आमि पाब कत क्षन
कपाले या थाके याहा ना हय खण्डन * पूर्व्व जनमेर कथा हइल स्मरण
पूर्व्वे छिलाम आमि राजार कुमार * मारिताम बाटुलेते पक्षी अनिवार
कपोत कपोती पक्षी छिल एक डाले * कपोतेरे मारिलाम एकइ बाँटुले
मृत्युकाले कपोती आमारे दिल शाप * परजन्मे एइ रूप पाबे मनस्ताप

---

१ माता पिता के अनन्य सेवक लोकप्रसिद्ध 'श्रवण' का नाम 'सिन्धु' कृत्तिवास ने लिखा है २ झुकाकर ३ संकेत,इशारा ४ याद ५ कबूतर का जोड़ा ।

खगी - शाप - तरु - किंशुक[1] फूला ※ तव सर हतन मोर अनुकूला[2]
कस प्रमाद ? कस शोक ? नरेसू ! ※ मम बध तव न दोष लवलेसू
तदपि कलेस न बिसरै[3] दारुन ※ अंध जननि-पितु श्रीफल-कानन
मम बिन मरैं, जुगुल बिलखाई ※ मरन काल तिन दरस न पाई
रहेउँ[4] अंध-अंधिनि कै आसा ※ मेटै को तिन छुधा-पिपासा ?
को फल-सलिल देय ढिग जाई ※ बिनसैं अबुझ छोभ अधिकाई
करौ काज एक, शत्र नृपराई ※ राखौ जनक-जननि ढिग जाई
नहिं अनुसरे[5], नसै संसारा ※ तव अपराध न पुनि प्रतिकारा[6]
सिथिल गात 'हरि' नाम उचारा ※ बही सिंधु-मुख शोनित[7] धारा
कम्पमान लखि भूप अधीरा ※ लियेउ खैंचि सर सिन्धु - सरीरा
सोचति पुनि कस कीन विधाता ※ मृगया फिरत फसेउँ द्विज-घाता
पुनि शव[8]-सिंधु कंध धरि राजन ※ चले, रुदन बहु, अंधक-कानन

दो० शकुन अमंगल इत भुजा, दृग फरकत विपरीत।
कस विलंब सुत आगमन ? पूछत मातु सभीत※ ॥ ७० ॥

कहत अंध कस मति बौरानी ※ नित समीप पावत फल-पानी

व्यर्थ ना हइल सेइ पक्षीर वचन ※ होइल तोमार वाणे आमार मरण
लइला आमार प्राण कोन अपराधे ※ आमारे मारिया दड़ पड़िले प्रमादे
अन्ध पिता माता मम श्रीफलेर वने ※ आजि तारा मरिबेन आमार बिहने
एत बड दुख मम रहिल ये मने ※ मृत्युकाले देखा ना हइल दोंहासने
आमि अन्धकेर प्राण हइया छिलाम ※ तृष्णाय सलिल फल क्षुधाय दिताम
आर केवा फल जल दिबेक दोंहाके ※ अनाहारे मरिबेक आमा पुत्र शोके
एइ सत्य दशरथ करह आपने ※ आमा लैया जाओ पिता मातार सदने
इहा विना तोमार नाहिक प्रतिकार ※ नहे सृष्टि नाश हबे मजिबे ससार
मृत्युकाले सिन्धुमुनि नारायणे डाके ※ नारायण बलिते उटिल रक्त मुखे
देखि दशरथ हइलेन कम्पमान ※ खसाइलेन ताहार बुक हैते बाण
भूपति भाबेन आसि मृग मारिवारे ※ घटिल तपस्वी हत्या आमार उपरे
मृत मुनि तुलि राजा हइल काँधेते ※ अन्धकेर वने गेल काँदिते काँदिते
हेथा तपोवने बसे अन्धक अन्धकी ※ वाम नेत्रे भुज स्पन्दे अमंगल देखि
गृहिणी बलेन नाथ ए कि कुलक्षण ※ आजि केन पुत्रेर विलम्ब एत क्षण
अन्धक बलेन शुन पागली गृहिणी ※ आर दिन निकटे पाइत फल पानि

---

१ कबूतरी के शाप रूपी वृक्ष मे फूल निकला २ मुनासिब, उचित ३ भूलना ४ था ५ ऐसा न करने पर ६ प्रायश्चित्त ७ रक्त ८ मृतक शरीर।

※ अपशकुन होने पर, अपने पुत्र सिंधु (श्रवण) के आने मे विलंब देख अंधी माता ने श्रवण के अँधे पिता से डरते हुए पूछा।

आज दूरि कहुँ कानन हेरा[1] * सोइ विलंब कारन सुत केरा
चर्चा-सुवन करैं दोउ प्रानी * सोइ अवसर शव, नृप तहँ आनी
सूख पात, श्रीफल चरचरहीं * आयेउ तात, अंध मुनि कहहीं
जोति न लोचन, पल-पल मारी * अहह ! पुत्र ! दोउ कहत पुकारी
दिवस उपास[2] न किय जलपाना * असन[3] नीर दै राखहु प्राना
दोउन गोहार[4], भूप मन त्रासा * संसय - बस न जात तिन पासा

राजा दशरथ को अन्धक मुनि का शाप

आगे बढ़त, हटत पिछलाहीं * सुत लखि मौन, अंध घबराहीं
जनक - जननि सन कम उपहासू * जोतिहीन - हिय - जोति - प्रकासू
धरत ध्यान कौतुक[5] मुनि देखा * धुनेउ सीस कर, रुदन विशेषा
दसरथ ! तव - सायक सुत घाला * शव समीप आनौ नरपाला
"सुवन - बिछोह[6] प्रान तव जाहीं" * इतर शाप मुख निकसत नाहीं
पुत्र - शोक दारुन अनुतापा * भोगहु नृप, इमि अंध विलापा
"तजब प्रान दोउ", मुनि नरराई * शाप सरिस - बरदान[7] सुहाई
सत[8] द्विज-वचन फलवती संसा[9] * मरौं भले, निरखौं अवतंसा[10]

আজ বুঝি গিয়াছে সে দূরস্থ কানন * সেই হেতু বিলম্ব হইল এতক্ষণ
এই কথাবার্তা দোঁহা কহেন দুজন * মড়া কাঁধে করি রাজা গেলেন তখন
শুষ্ক শ্রীফলের পাতা মচ মচ করে * অন্ধক বলেন এই পুত্র এল ঘরে
চক্ষু নাহি মুনির যে দেখিতে না পায় * এস পুত্র বলিয়া ডাকিছে উভরায়
কালিকার উপবাসী করিব পারণ * ফল জল দিয়া বাপু রাখহ জীবন
দুই জনে ডাক ছাড়ে রাজার তরাস * আদিকাণ্ড গাইল পণ্ডিত কৃত্তিবাস

দশরথের প্রতি অন্ধকের অভিশাপ

দেখি দুই অন্ধে রাজা সন্দেহ অন্তরে * যাইতে নারেন অগ্রে পাছু যান ধীরে
কহিল অন্ধক মুনি করিয়া বিশ্বাস * কিবা মাতা-পিতা সনে কর উপহাস
দেখিতে না পায় মুনি বসিলেক ধ্যানে * সকল বৃত্তান্ত মুনি ক্ষণেকেতে জানে
চক্ষে ভাসে নীরে করে করাঘাত শিরে * বলে রাজা মারিয়াছে পুত্রে এক তীরে
মুনি বলে এস দশরথ নরপতে * মৃত পুত্র আনিলে আমাকে দেখাইতে
আর কিবা দশরথ শাপিব তোমাকে * এই মন তোর প্রাণ যাবে পুত্রশোকে
পুত্রশোকে মরিব আমরা দুই প্রাণী * পুত্রশোক যে যন্ত্রণা জানিবে আপনি
মুনি শাপ দিল যদি রাজার উপরে * দশরথ কহিছেন প্রফুল্ল অন্তরে
শুভমস্তু মুনিবাক্য না হইবে আন * দেখিয়া পুত্রের মুখ যায় যাবে প্রাণ

१ ढूँढ़ा २ लंघन, उपवास ३ भोजन ४ पुकार ५ रहस्य ६ वियोग ७ वरदान के समान ८ सत्य ९ मनोकामना १० पुत्र।

विष्णु-तुल्य मुनि मोहिं प्रतीता * अमिट वचन तव, हर्ष अतीता

दो० सुत-वियोग किमि वर-सरिस ? लखेउ अंध धरि ध्यान ।
नृप-निकेत[1] जन्मैं स्वयं कृपासिंधु भगवान ।। ७१ ।।

मम वर[2] सत्य, गेह[3] तव भूपा * चारि अंस हरि जनम अनूपा
पुनि सोइ वचन शाप होइ लागी * पुत्र - बिछोह मरौ तन त्यागी
ग्यारह वर्ष विलसि सुत चारी * सुत-सूने[4] तन तजौ दुखारी
द्विज कर शाप अकारथ नाहीं * लोचन तजेउँ कोप - मुनि माहीं
पूरुब[5] शाप - कथा मम राई * सुनौ, नैन जिमि जोति गँवाई
श्लीपद - पग त्रिजटा मुनि आये * पितु निकेत मम अलख जगाये[6]
पाद अर्घ्य पितु आसन दीना * कम द्विजनाथ, आगमन कीना ?
भिक्षा हेतु, दिवस उपवासी * मुनिवर, मैं भोजन अभिलाषी
विधिवत अमन[7] अतिथि पितु दीना * सविनय विदा तपोधन कीना
कहेउ तात[8], हे सुत ! अनुसरहू * मुनि-पद बंदि दण्डवत करहू
पग स्थूल, घृणा, लखि जागी * लेउँ तासु रज किमि अनुरागी[9]
नयन मूँदि रज सीस चढ़ावा * 'एवमस्तु'[10] मुनि वचन सुनावा

तोमा मुनि देखि येन विष्णुर समान * तोमार वचन सत्य होक नहे आन
तव शापे मुनि मम हरिर अन्तर * शाप नहे आमार हइल पुत्र-वर
अन्ध बले दशरथ वन्दिना सन्तान * पुत्र कि शाप दिनु वर करि माने
ध्यान करि जानिल अन्धक तपोधन * इहार घरत जन्मिबेन नारायण
याह राजा तोमारे दिलाम आमि वर * चारि पुत्र तोमार हबेन गदाधर
मम शापे पुत्रशोके तोमार मरण * पुत्र हैल एकादश वत्सर जीवन
व्यर्थ नाहि य कभु मुनिर वचन * मुनिर शापेते अन्ध आमार लोचन
पूर्व्व कथा कहि राजा ताहे देह मन * ये शापे हइल मम अन्ध ए लोचन
त्रिजटा मुनिर दुइ चरण डागर * मागिते आइल भिक्षा मम पितृघर
मुनिरे देखिया पिता उठिल तखन * पाद्यअर्घ्य देन तारे बसिते आसन
जिज्ञासा करेन तारे केन आगमन * मुनि बले आइलाम भिक्षार कारण
गतकल्य हते आमि आछि उपवासी * भोजन करा मोरे तुम महाऋषि
अतिथि बलिया पिता करान भोजन * विदाय हइया मुनि यान तपोवन
पिता आसि आमारे कहेन सेइ काले * दण्डवत् करह मुनिर पद तले
गोदा पा देखिया तार घृणा हैल मने * एमन पायेर धूला लइब केमने
लइलाम नयन मुदिया पद धूलि * आशीर्वाद दिल मुनि एवमस्तु बलि

१ घर २ बरदान ३ गृह ४ अनुपस्थिति में ५ पूर्व जन्म की ६ परमात्मा के नाम पर याचना करना । ७ भोजन ८ पिता ९ प्रेम व भक्तिपूर्वक १० ऐसा ही हो ।

कथन महर्षि अमिट फल दीना * भये अंध दृग जोति-विहीना
सोइ अपराध दीठि-तिय लीना§ * गमन तपोधन कानन कीना
असिस[1] समान, शाप अनुकूला[2] * नृप तव गेह जनम जगमूला[3]
सुफल सत्य पालन नरराई * रचौ यज्ञ ऋषि 'शृंग' बुलाई

दो० श्रीफल पायेउँ बन फिरत, तव अर्पन नरनाथ।
चरु[4] दीन्हे फल दिव्य मों, प्रगटैं दीनानाथ ॥ ७२ ॥

करुन बैन पुनि अन्धक भाषा * लावहु सुत-शव, कित नृप राखा ?
दसरथ धरी आनि मृत काया * लोटत छिति बिलखत मुनिराया
नैन विहीन, न निरखत देहीं * परसत कर, सुअंक भरि लेहीं
बहु तप किये, लहेउँ तोहिं ताता * जनक-जननि घालक तव घाता
पुरवत फल-जल छुधा-पिपासा * अंधक-नयन, अंधि कर आसा
गुरुनिन्दा कुतर्क अघमूला[5] * दधि-तन्दुल न असन प्रतिकूला[6]
पर धन हरेउँ न पाप अचारा * निधन[7] अकाल सुवन कम डारा
कैधौं[8] बिगरि पुरातन करनी * सुत-बिछोह भोगत पितु-जननी
'नारायन' कहि, सन्तति-सोकू * तजि तन, मुनि गमनेउ हरिलोकू
जीवन दुसह, सती पतिहीना * अन्धकि अन्ध-अनुगमन कीना

व्यर्थ ना हइल सेइ मुनिर वचन * इहाते हइल अन्ध आमार लोचन
सेइमत करिलेक आमार गृहिणी * दोहारे करिया अन्ध घरे गेल मुनि
आमार शापेते राजा पाइले प्रमाण * शाप वर हइल हइवे पुत्रवान
एइ सत्य दशरथ करिव पालन * ऋष्यशृङ्ग आनि कर यज्ञ आरम्भन
श्रीफल पेयेछि आमि भ्रमिते कानन * एइ फल करिलाम तोमारे अर्पण
एइ फले जन्मिबेन देव चक्रपाणि * चरुर भितरे एइ फल दिओ तुमि
पुनश्च कहेन मुनि तारे मृदु स्वरे * कोथा आछ सिन्धुपुत्र आनि देह मोरे
मृतपुत्र दशरथ दिलेन आनिया * पुत्र कोले करि मुनि कान्दे लोटाइया
नयन विहीन मुनि देखिते ना पाय * कोलेते करिया हस्त शरीरे बुलाय
जन्मिला ये पुत्र तुमि तपेर सञ्चारे * तोमार मरणे मृत्यु घटिल आमारे
अन्धेर नयन तुमि हये छिला जानि * फल दिते क्षुधाय तृष्णाय दिते पानि
गुरुनिन्दा नाहि करि नहे मन्ध्यावाद * दधिर सयोगे गात्रे नाहि खाइ भात
पूर्व्वजन्मे कार कि करेछि विघटन * गुरुनिन्दा करेछि हरेछि स्थाप्यधन
एतेक बलिया मुनि नारायण डाके * नारायण मन्त्र जपि मरे पुत्रशोके
पतिव्रता नाहि जीये पतिर मरणे * अन्धकी छाड़िल प्राण अन्धकेर सने

---

१ आशीर्वाद २ माफिक ३ विष्णु ४ यज्ञ के हवन के लिये तैयार किया अन्न या खीर ५ पाप की जड़ ६ दही-भात जैसे उलटे भोजन ७ मृत्यु ८ या, फिर।

§ यही अपराध पत्नी द्वारा करने पर मुनि ने उसे भी अंधी होने का शाप दिया।

दसरथ लै पुनि मृतक सरीरा * चन्दन अगरु चिता के तीरा
आस-पास पितु जननि सोवाये * बीच 'सिंधु'-शव भूपति लाये
उतर शीस-शव अनल लगाई * परसि नीर सर, अस्थि बहाई
लिये कंध मुनि-घातक पापा * गये अवध नृप, हिय संतापा
चले बहोरि वशिष्ठ - निकेता * भेंट न, गुरु गमने तप-हेता
आश्रमे, वामदेव गुरुनन्दन[1] * सकल कथा भूपति किय बरनन

दो० मुनिकुमार-वध पाप मन, उबरौं कौन उपाय?
गुरुनन्दन! आयसु करौ, जासों पाप नसाय ॥ ७३ ॥

वध अकाल, नृप पाप महाना * यज्ञ-दान कीने नहि त्राना
शास्त्र पुरान मनीषि विचारी * वाल्मीकि जिन मंत्र उबारी[2]
राम नाम त्रय बार कहावा * सकल पाप सोइ नाम नसावा
पाप छीन, गृह भूप सिधाये * साँझ वशिष्ठ तपोवन आये
फलाहार, सुस्थिर, मन मोदा * सुत-पितु रत दोउ वाग्-विनोदा
वामदेव पुनि अवसर पाई * कथा भूप - आगमन सुनाई
सुवन अंधमुनि सिन्धु बखाना * शब्दवेध दसरथ संधाना
अबुझ घात द्विज, नृप अति दीना * नसै पाप किमि, याचन कीना

निज मृत तनय राजा गेल सरोवर * अगर चन्दन काष्ठ आनिल सादर
करिलेन चिता राजा उत्तर शियरे * तिनजने शोयाइल ताहार उपर
दुइजन दुदिके पुत्र मध्यखाने * लागाइल निज जन [illegible] आगुन
चिता प्रक्षालिया गेल सरोवर तीर * कान्दिया फेरेन राजा अयोध्यानगर
मुनि हत्या करि राजा अजेर नन्दन * अमनि कान्दिया गेल वशिष्ठेर वन
गियाछेन वशिष्ठ तपस्या करिवारे * वामदेव पुत्र तार आछेन आगारे
सकल वृत्तान्त राजा कहिलेन तारे * मुनिहत्या करियाछि वनेर भितरे
प्रायश्चित्त द्वारे कराओ महाशय कि रूपे हइब मुक्त किसे पाप क्षय
मुनि वध अकालेते नाहि यज्ञदान * एइ पापे केमने पाइबे परित्राण
विचार करय मुनि आगम पुराण * वाल्मीकि ये मंत्र जपि पाइलेन त्राण
तिन बार बलाइल सेइ राम-नाम * पाइलेन भूपति से पापेर विराम
राजा मुक्त हइया गेलेन निज घर * आइलेन सन्ध्याय वशिष्ठ मुनिवर
फलमूल भक्षण मुनिर सुस्थ मन * पिता पुत्रे कथा वार्ता करे दुइजन
पिताके कहेन वामदेव नीतिक्रम * दशरथ आसियाछिलेन ए आश्रमे
अंधक मुनिर पुत्र सिन्धु बले यारे * मारिलेन राजा शब्दभेदि शरे तारे
दीनभावे कहिलेन राजा ए वचन * मुनिहत्या पाप मोर कर विमोचन

१ वशिष्ठ के पुत्र वामदेव २ [illegible]

याग, दान, तप, यतन न भावा * तीनि बार नृप 'राम' कहावा
तपत तैल उफनत लहि बारी[1] * अनल-कोप मुनि गिरा उचारी
रसना[2] 'राम' एक पद लाई * कोटि घात-द्विज पाप नसाई
सो त्रय बार भूप मुख आनी * कस मम तनय ? निपट अज्ञानी
तजि वन, अधम श्वपच गति जाई * पितु-पग मुनिज[3] धरे अकुलाई
कहौ तात ! किमि शाप विमोचन ? * थिर न रोष बहु, कहेउ तपोधन
दसरथ अनघ[4] मंत्र दिय नामा * जनमैं अवध धाम सोइ रामा
सुरसरि - मग रघुनाथ विलोकी * परसहु पद-पंकज पथ रोकी

दो० वामदेव, पितु सीख मुनि, श्वपच-योनि निस्तार[5] ।
लियेउ जनम गुह-गेह, नित जोहत[6] अवधदुलार[7] ॥ ७४ ॥

सम्बर असुर का वध

तपत इन्द्र सम दसरथ वीरा * संवर - असुर उतै सुर - पीरा
बैजयन्ति अमरावति जीती * बसत न तहँ सुरवृन्द सभीती
यतन सोधि कछु कहौ विधाता * कह सुरेस, किमि दनुज निपाता
जो आनहु दसरथ रनबंका * सोइ कर संवर-मरन न संका

योगयाग स्नान दान नाहि करालाम * तिन बार राजा के बलानु रामनाम
जल फेलाइया येन दिल तप्त तैले * कुपिया वशिष्ठ मनि पुत्र प्रति बले
एक रामनाम कोटी ब्रह्महत्या हरे * तिन बार रामनाम बलालि राजारे
मोर पुत्र हैया तोर अज्ञान विशाल * दूर हरे वामदेव हबिरे चण्डाल
लोटाइया धरिल से पितार चरण * केमने हइब मुक्त कह विवरण
ना थाके मुनिर मने कोप बहुक्षण * बलिलेन ताहारे वशिष्ठ तपोधन
येइ रामनाम तुमि बलाले राजारे * तिनि जन्मिबेन दशरथेर आगारे
गङ्गास्नाने रघुनाथ याबेन यखन * आगुलिओ पथ तुमि गंगेर तखन
ताहार चरणपद्म करिह स्पर्शन * तखनि हइबे मुक्त चण्डाल जनम
बलिलेन एइ रूप वशिष्ठ महामुनि * गुहक चण्डाल हैया रहिलेन तिनि
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व विचक्षण * आदिकाण्डे गाहिलेन अधकोपाख्यान

सम्बर असुर वध

राज्य करे दशरथ येन पुरन्दर * हइल असुर स्वर्गे नामेते सम्बर
हइल सम्बर सर्व्व देवतार अरि * जिनिल अमरावती वैजयंतीपुरी
तार भये स्वर्गे देव रहिते ना पारे * महेन्द्र बलेन ब्रह्मा बाँचि कि प्रकारे
ब्रह्मा बलिलेन आन राजा दशरथे * असुर सम्बर मरिबेक तार हाते

---

१ उबलते तेल में जल पड़ने पर उफान आने के समान क्रोध २ जीभ ३ मुनिपुत्र ४ निष्पाप ५ मोक्ष पाने के लिये ६ रास्ता देखता रहा ७ अयोध्या के लाड़ले राम ८ उन्हीं के हाथों ।

स्वयं इन्द्र किय अवध पयाना * आसन - अर्घ्य भूप सन्माना
सुनो अवधपति ! सुरगन त्रासा * सुरपुर संबर दैत्य प्रकासा
जीति स्वर्ग, संकट मोंहि डारी * तुम मम सुहृद सको सो टारी
तव सहाय, वध निसिचरनाथा * तव प्रसाद सुर होयँ सनाथा
सुरपति बिदा, बजे रनबाजा * संबर-हित दसरथ दल साजा
साजु-साजु—चहुँ दिसि रनरंगा * मत्त - मतंग समीर - तुरंगा
मुद्गर मूसल कसत कमाना * स्यन्दन शूर सजत धनुबाना
ओर - छोर नहिं कटक अनन्ता * कटक धूरि नभ छुवत दिगन्ता
शिरस्त्राण[1] कञ्चुकि[2] हरि-मण्डा[3] * नृप साजे कर सर-कोदण्डा[4]
दिव्य तुरग सारथि रथ साजा * चलेउ पवनगति भूप-समाजा
चढ़े अवधपति संबर कारन * डगमग त्रिभुवन धीर न धारन
कौतुक चली अनी चतुरंगा * गज पैदर रथ-रथी तुरंगा

दो० अमरावति उतरेउ कटक, दसरथ अवधमहीप।
निरखि सैन कोपेउ अतुल, संबर दनुज-अधीप ।। ७५ ।।

बिन्धि सरीर, बान झरलाये * असुर, सैन सों नृप बिलगाये[5]
नृप असैन, सर कोपि चलावा * दानव-दल हनि बिपुल नसावा

आपनि आइल इन्द्र अयोध्या नगरे * पाद्य अर्घ्ये दशरथ पूजे पुरन्दरे
इन्द्र बले दशरथ तुमि मोर मित * केकेछि संकटे रक्षा कर एइ दिन
असुर सम्बर नामे तारे आमि हारि * खेदाड़िया देवगणे निल स्वर्गपुरी
आमार सहाय हैया यदि कर रण * तोमार प्रसादे तबे बाँचे देवगण
एतेक बलिया इन्द्र गेलेन स्वर्गेते * सम्बर मारिते तबे साजे दशरथे
साज-साज बलिया पड़िया गेल साड़ा * राहुत माहुत[6] साजाइल हाती घोड़ा
मुद्गर मूषल केह बान्धिल कामान * धानुकि साजिल रथे लये धनुर्व्वान
साजिल कटक सब नाहि दिगपाश * कटकेर पदधूलि लागिल आकाश
गायेते परिल सोना माथाय टोपर * धनुर्व्वाण हाते राजा चलिल सत्वर
दिव्य अश्व योगाइल रथेर सारथि * रथे चडि दशरथ चले शीघ्र गति
सम्बरे जिनिते राजा करिल गमन * दशरथे देखिया काँपिल त्रिभुवन
चतुर्द्दोले चडि राजा चले कुतूहले * रथ रथी पदाति तुरग हाती चले
उत्तरिल गिया राजा इन्द्रेर नगरी * देखिया राजार साजे क्रोधे देवअरि
दशरथे बाणे विंधे करिया जर्ज्जर * भग दिल सेना राजा रहे एकेश्वर
कोपे काँपे दशरथ पूरिल सन्धान * अस्त्राघाते दैत्यसेना त्यजिल पराण

---

१ फौजी टोप २ कवच ३ सुवर्ण से मढ़ा हुआ ४ धनुष बाण ५ दशरथ को उनकी सेना से अलग कर दिया ६ महावत ।

आयुध विविध वृन्द झरिलाई * गगन पाटि सर, पथ न लखाई
समर चटक दानव-दल-बीरा * अवध-भवन किय बिद्ध सरीरा
लख-लख अस्त्र, असुर बरसाये * सुरपुर नभ रञ्जित, चहुँ छाये
सर-गंधर्व भूप संधाना * अतुल अस्त्र त्रिभुवन नहिं जाना
सर उपजे त्रिकोटि गंधर्वा * मरहिं परस्पर कटि रिपु सर्वा
निसिचर सर निसिचर तकि मारी * सकल दनुज एक बान सँहारी
राकस रुधिर-नदी उतराहीं * त्राहि-त्राहि संबर-दल माहीं
दसरथ रन बिछाय रिपु दीना * बचेउ दनुजपति सैनविहीना
तकि तकि बानवृष्टि दोउ करहीं * सरन पाटि सुरपुर दोउ लरहीं
सरमण्डित नभ, तम चहुँ ओरा * अलख[2] दैत्य गर्जन-रव घोरा
शब्दबेध परवीन बिशेखा * तिमिर अलोप[3] दनुज नहिं देखा
भावी प्रबल काल तेहिं घेरा * कछुक दूरि किय सोर घनेरा
शब्द ताकि नृप खैंचेउ चापा * सायक चलेउ अगिनि सम तापा
गिरेउ धरनि कटि संबर-माथा * कौतुक असुरघात नर-हाथा !

दो० सुरन सहित सुरपति सरग, बोलत हिय हर्षाय।
माँगहु वर मनवाञ्छित, नृप! तुम भयेउ सहाय ॥ ७६ ॥

नाना अस्त्र वर्षण करेन दशरथ * छाइल अमरावती पवनेर पथ
सम्बरेर सेनागण समरे प्रखर * भूपतिर सेना विन्धे करिल जर्ज्जर
लक्ष लक्ष वाण पूरे सम्बरेर सेना * पड़िलेक स्वर्गपुरी छाइया झञ्झना
पड़िल गन्धर्व्व अस्त्र भूपतिर मने * एमन अस्त्रेर शिक्षा नाहि त्रिभुवने
एकवाण प्रसवे गन्धर्व्व तिन कोटी * आपना आपनि रिपु करे काटाकाटि
आपना आपनि करे वाण वरिषण * एक वाणे पड़िलो सकल सेनागण
सम्बरेर सेना देय रक्तेते सातार * त्राहि त्राहि डाक छाड़ि करे हाहाकार
पड़िल सकल सेना दैत्य एकेश्वर * दशरथ वाणे सेना पड़िल विस्तर
दुइजने वाणवृष्टि करे झाके-झाके * उभयेर वाणेते अमरावती ढाके
हइल अमरावती वाणे अन्धकार * दैत्येर रणेते राजा ना देखि निस्तार
देखिते ना पाय दैत्य थाके कोनखाने * शब्दभेदी दशरथ शब्द शुने हाने
कालप्राप्ति दानवेर निकट मरण * दूरे थाकि दशरथे करिछे तर्ज्जन
सम्बरेर पेये शब्द राजा पूरे वाण * छुटिल राजार वाण अग्निर समान
पड़िलेक वाण राजा तार शुन कथा * काटि पाड़े दशरथ सम्बरेर माथा
नर हैया मारिलेक असुर सम्बर * देव सह सुखे राज्य पाले पुरन्दर
इन्द्र बले दशरथ रक्षा कैले मोरे * वर माग दिव याहा प्रार्थना अन्तरे

---

१ गन्धर्व वाण के प्रभाव से राक्षस स्वयं एक दूसरे को मारने लगे २ अदृश्य ३ अँधेरे में गायब।

आनि न वर चाहौं सहसानन * मेटौ पाप अन्ध - सुत - मारन
कहेउ इन्द्र हँसि, गवनहु देसू * सो अघ[1] तुमहिं न अब लवलेसू
अन्धक-कथा कुतूहल बरनी * जनक तासु द्विज, सूद्रिन जननी*

संवर के साथ युद्ध करने में हुए घावों को अच्छा कर देने पर
राजा का कैकेयी को वर देने की प्रतिज्ञा

मिटेउ छोभ मुनि, नृप गृह आये * सुहृद तात परिजनन सुहाये
प्रथम सर्वप्रिय कैकयि - धामा * अजसुत सुखद लीन विश्रामा
अस्त्र सजीवनि कला प्रवीना * कैकयि छत-सरीर[2] चित दीना
जल अभिमंत्रि भूप तन डारी * सुखद सकल सोइ व्यथा निवारी
सिथिल-गात पुनि जीवन आवा * कैकयि-जतन प्रान नृप पावा
तव समान प्रिय मोहिं न आनू[3] * मनवाञ्छित माँगहु वरदानू
नहिं अदेय, पूरन भण्डारू * धन सम्पदा अमित आगारू
नाम मंथरा, कैकयि केरी * कूबर भार पृष्ठ, सोइ चेरी
कूबर कुटिल बुद्धि कै रासी * कहउ बोलाय, रानि, सोइ दासी
मुदित भुआल वचन वर दीना * मम हित सुमति कहौ परवीना

दशरथ बले इन्द्र देह एइ वर * येन मुनिहत्या नाहि थाके ममोपर
शुनिया राजार कथा इन्द्रदेव हासे * से पाप तोमाते आर नाहि जाओ देशे
अन्धक मुनिर कथा अपूर्व काहिनी * ब्राह्मण ताहार पिता शूद्राणी जननी
अनेक शुनिया दशरथ आसे देशे * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवासे

सम्बर सह युद्धे क्षत हओयाय कैकेयीर आरोग्य करिले राजार वर दिबार अंगीकार

पात्र मित्रगणे राजा दिलेन मेलानि * अन्तःपुरे दशरथ चलिल अमनि
सबार अधिक भालबासे कैकेयीरे * सेइ हेतु आगे गेल कैकेयीर घरे
अस्त्र सञ्जीवनी विद्या जानेन कैकेयी * देखिल राजार तनु अस्त्र-क्षतमयी
मन्त्र पड़ि जल दिल भूपतिर गाय * ज्वाला व्यथा गेल दूरे शरीर जुड़ाय
मृतदेहे येन पुनः आइल जीवन * सुस्थ हये दशरथ बलेन तखन
हे कैकेयी प्राणरक्षा करिले आमार * तोमार समान प्रिय केह नाहि आर
वर मागि लह येवा अभीष्ट तोमार * कोन धन भाण्डारेते नाहिक आमार
एत यदि बलिलेन राजा दशरथ * कैकेयी कुंजीके कहे वाक्य अभिमत
महाराज आमारे चाहेन दिते वर * किबा वर मागि लब ताहार गोचर
पृष्ठे भार कुब्जेर नाड़िते नारे चेड़ी * कुज नहे ताहार से बुद्धिर चुपड़ि

१ पाप २ घायल शरीर ३ अन्य ४ हे चतुरा !।

* 'ब्राह्मण पर श्रद्धा' का यह आग्रह है। अन्यथा शूद्रा से जन्मे अन्धमुनि का भी शाप दशरथ को भोगना ही पड़ा—व्यर्थ नहीं हुआ। (हिन्दीकार)

बचन-बद्ध भूपति करि लेहू * अवसर परे माँगि वर लेहू
दासि-वचन कैकयी प्रमाना * पुलकि भूप-ढिग कीन पयाना
नाथ आजु वर मोहिं न हेतू * देहु वचन इमि कृपानिकेतू

दो० करौं विनय अवसर परे, मन-उपजी अभिलाष।
तब लौं वर सञ्चित रहैं, नरपति-वचन न साष[1] ॥ ७७ ॥

सुमुखि! चहौ तब अवसर लागी * पुरवौं वचन प्रान लौं त्यागी
व्याध-फन्द मृग फसत अजाना * निरखि समाज-देव हरषाना
सोइ पितु-वर पालन वन जाई * कह विधि[2], हनैं दनुज रघुराई
दसरथ-राज अनन्द घनेरा * सुख प्रतिपाल प्रजागन केरा

दशरथ का नखव्रण अच्छा करने पर कैकेयी को दुबारा वर देने की प्रतिज्ञा

रिद्धि-सिद्धि भरपूर भुआला * नखव्रन[3] विथा उपज एक काला
कातर अतिव दुसह व्रनपीरा * कहेउ बोलाय सुहृदगन तीरा
यहि कलेस मम मरन समीपा * लखत भानुकुल रहित-महीपा
तबहिं सुवन-धन्वंतरि, नामा * 'पद्माकर' किय नृपहि प्रनामा
मिटै व्यथा, नहिं संसय राऊ * बरनउँ ताकर युगुल उपाऊ
घृनारहित शामुक[4]-रसपाना * कराउँ स्वयं सोखन हित-प्राना

कुँजी बले एक्षणे नाहिक प्रयोजन * इच्छा हबे जबे वर चाहिब तखन
कैकयी कुँजीर वाक्य ना करिल आन * हासिया कहिल राणी राजा विद्यमान
महाराज आजि वर नाहि प्रयोजन * यखन घटिब कार्य्य मागिब तखन
आमार सत्यते बन्दी रहिले गोसाँइ * प्रयोजन अनुसारे वर येन पाइ
नृपति बलेन दिब याहा चाबे दान * आछुक अन्येर काज दिब निज प्राण
कैकेयीर कपटे असरगण हासे * ना जानिया मृग येन बन्दी हैल फाँसे
ए सत्य पालिते राम याइबेन वन * विरिञ्चि बलेन तबे मरिबे रावण
राज्य करे दशरथ हरषित मन * करेन पुत्रेर मत प्रजार पालन
यखन या हबे ताहा दैबे सब करे * हइल राजार व्रण नखेर भितरे
कृत्तिवास कहे कथा अमृत समान * राम-नाम विना तार मुखे नाहि आन

दशरथेर व्रण आरोग्य करिते कैकेयी के पुनर्व्वार वर दिते अंगीकार

व्रणेर व्यथाय राजा हइल कातर * पात्र मित्र आनि राजा बलिल सत्वर
ए व्यथाय बुझि मम निकट मरण * सूर्य्यवंशे राजा हय नाहि कोन जन
धन्वन्तरि पुत्र एक पद्माकर नाम * आसिया राजार काछे करिल प्रणाम
कहिलेन शुन राजा पाइबे निस्तार * दुइमते आछये इहार प्रतिकार
शामुकेर झोल खाओ ना करिया घृणा * नहे नखद्वारे चुम्ब दिक एकजना

१ वृथा, असत्य २ ब्रह्मा ३ नाखून का घाव, बिसहरी ४ घोंघा।

नतरु आनि जन कोउ नृप हेता * नखव्रन-रक्त पूय, रस, जेता
मुख सन चूमि हरै नृपपीरा * कैकइ सुनेउ, वसत नित तीरा
पति विषाद, सो सतत[1] निहारी * अहिनिसि[2] सेयि करत उपचारी
तिय-गति कतौं न पति विन, नाथा * चूसौं मुखव्रन, होउँ सनाथा
मम अधिकार, भूप मम-धामा * नखव्रन मुख धरि पुलकित बामा
रानि-मुधामुख परसत पीरा * विगत व्यथा, नृप स्वस्थ सरीरा

दो० रुधिर-पूय तजि, मुमुखि! लिय पान कपूर सुवास।
रानि अन्य[3] तैं! माँगु वर, मनवाञ्छित अभिलास॥
धरहु अमानत[4] युगुल वर, लेहुं सुअवसर जानि।
दसरथ अनुमति दीन हँसि, इमि कृतिवास बखानि॥ ७८॥

राजा दशरथ का पुत्र के लिए शृंगी ऋषि को बुलाकर यज्ञ करने की चिंता
तथा उक्त मुनि की उत्पत्ति-कथा

बहु वत्सर राजन-अधिराजू * एक छत्र सुरपति सम साजू
एक दिवस नृप सभा विराजा * परिजन[5] सुहृद सगोत समाजा
मुनि अमात्य चहुं सचिव सुहाये * सर्वाधिप वशिष्ठ तहँ आये
भूपति तहँ हिय-छोभ प्रकासा * गत अतिकाल, न सन्तति आसा

रक्त पूय झरितेछे नख दुयारे * ताहाते चुम्बन दिते कोनजन पारे
कैकेयी राजार काछे दिवानिशि थाके * राजा यत दुख पाय कैकेयी ता देखे
राजार शुश्रषा राणी करे रात्रिदिने * कहिल कैकेयी राणी राजा विद्यमाने
स्वामी विना स्त्रीलोकेर अन्य नाहि गति * व्रणे मुख दिव यदि पाओ अव्याहति
यार घरे थाके राजा तार दाय लागे * कैकेयी चुषिल गिया दशरथ आगे
पाकिया आछिल सेइ नखेर वरण * मुखेर अमृत लागि गलिल तखन
सुस्थ हइलेन राजा व्यथा गेल दूरे * रक्त पूंय फेलि देह बले कैकेयीरे
कर्पूर ताम्बूल प्रिये करह भक्षण * वर लह याहा चाह दिव एइक्षण
कैकेयी बलेन शुनि राजार वचन * यखन मागिब वर दिओ हे तखन
दुइ वारे दुइ वर थाक तव ठाँइ * पश्चाते मागिब वर एखन ना चाइ
शुनिया राणीर कथा दशरथ हासे * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवासे

दशरथ पुत्रेर जन्य ऋष्यशृंग के आनिया यज्ञ करणेर चिन्ता ओ
उक्त मुनिर उत्पत्ति काहिनी।

राज्य करे दशरथ अनेक वत्सर * एकछत्र महाराज येन पुरन्दर
पात्र मित्र भाइबन्धु सवाकारे आनि * वशिष्ठादि आइलेन यत महामुनि
सभा करि बसे राजा अमात्य सहिते * अति खेद करि राजा लागिल कहिते
इहकाले ना हइल आमार सन्तति * परकाले कि रूपे पाइब अव्याहति

१ सदैव २ दिनरात ३ दूसरा वर ४ धरोहर ५ बन्धुगण।

तर्पन, पिण्ड न गति-परलोका * बाद बंस-रवि अस्त बिलोका
नवम सहस मम आयु बितीता * तबहुँ न दरस तनय कर कीता
सुत-अभाव अतिशय उर शोका * भोर न तासु लखत मुख लोका
तर्पन करत सोंचु उर माहीं * मम सूने पितरन जल नाहीं
शाप-अंध[1] वर सरिस बताई * होय याग ऋषि शृंग बुलाई
तिन आगम पूरन मम कामा * कहो किते शृंगीऋषि-धामा
गुरु बशिष्ठ कह, कोमलनाथा * सुनो शृंगि ऋषि-उतपति गाथा
तपन विभाण्डक मुनि परतापा * तासु शाप-भय त्रिभुवन काँपा
मुनि तप अतुल, इन्द्र भय छावा * तप-विक्षेप[2] हित पवन पठावा

छं० कुटी-विभाण्डक, पवनदेव रहि ओट, लखत मुनि-जीवन।
फलाहार! फल सुधा-सार दे, कौतुक कीन समीरन[3]॥
सने-सुधा-मधु खात नित्य फल निर्मल तपसी काया।
बली अपरबल[4], वन तप करहीं, मन दुचित्त[5] मुनिराया॥

नीर-नर्मदा मुनि तपलीना * सोइ पथ गमन उर्वसी कीना
लखेउ गगन उर्वसी, समीरा * करि उर जतन उघारेउ[6] चीरा
दैवयोग मुनि सोइ तन देखी * लगेउ पञ्चसर मोह विसेखी

सन्तति थाकिले करे श्राद्धादि तर्पण * आमार मरणे वंश नाहि एक जन
नवम हाजार वर्ष वयस हइल * एतकाले तबु मम पुत्र ना जन्मिल
अपुत्रक आमि ताइ मने बड दुःख * प्रभाते ना देखे लोके अपुत्रेर मुख
अञ्जलि करिया देइ तर्पण सलिल * आगा हैते गेला वंश कोन दिन जल
वर दियाछेन श्रीअन्धक महामुनि * यज्ञ कर तुमि ऋष्यशृङ्ग मुनि आनि
ऋष्यशृङ्ग मुनिवर कोन देशे वसे * कार्य्य सिद्धि हय यदि सेइ मुनि आसे
कहिते लागिल ये वशिष्ठ महामुनि * शुनह ऋष्य शृङ्गेर उत्पत्ति काहिनी
विभाण्डक मुनि भये मर्त्त्यलोक काँपे * त्रिभुवन भस्म हय यदि मुनि शापे
ताँहार तपस्या देखि इन्द्र भावे मने * पाठाइया दिल इन्द्र देवता पवने
मुनिर निकटे वायु लुकाइया थाके * वृक्ष-फल खाय मुनि पवन ना देखे
फलेते अमृत माखि राखिल पवन * फल योगे सुधा मुनि करिल भक्षण
फलेर सहित सुधा खेय महामुनि * सातिशय बलवान हइला तखनि
शुद्ध देहे सेये सुधा महा बलवान * तपस्या करेन वने चारि दिके चान
तपस्या करेन मुनि नर्मदार जले * उर्व्वशी चलिया जाय गगनमण्डले
अंगेर वसन तार वातासेते उड़े * दैवयोगे तार दृष्टि तारे गिया पड़े

१ अन्धक मुनि का शाप २ तप में विघ्न ३ वायु ४ अयत्न ५ डगमग ६ हताशा।

दो० रेतपात[1], लिय बाम कर, तजेउ न सरिता-नीर।
धरेउ कूल[2] ढिग रेत सोइ, आकुल सिथिल सरीर ॥ ७६ ॥

शुचि आचमन विभाण्डक कीना * भये तपोधन पुनि तपलीना
विधि रचना नहिं मिटै मिटाई * तृषित मृगी तहँ जलहित आई
पियत पानि, तट दूब हरेरी * लागि चरन, मन लोभेउ हेरी
तहँ मुनि-रेत घास लपिटानी * हरिनि-उदर सोइ चरत समानी[3]
रेत-अहार, मृगी ऋतुकाला * धरेउ गर्भ विधिगती बिसाला
बढ़त गर्भ, पशुवत षटमासा * मृगी कियेउ मनु[4] प्रसवि प्रकासा
बन-बन फिरउँ मनुज-भय पाई * सो रिपु-जनम गर्भ मम आई
गमनी वन, अनाथ सिसु डारी * चूसत अँगुरि रुदन पथ भारी
सोइ मग गमन विभाण्डक कीना * रोवत सुवन दीठि मुनि दीना
निर्जन वन, शिशु-गात निहारा * हरिनि-बदन[5] अरु मनुज अकारा
धरत ध्यान सब लखेउ तपोधन * आन[6] न हरिनि-गर्भ मम नन्दन
मुनि लै अंक गमन वन कीना * सुत मधुपुहुप पोषि बल दीना
नूतन-कुस-कोमल सुत सयना * दिन-दिन बढ़त महामुनि-अयना
शास्त्रनिपुन, छबि अतुल कुमारा * शृंग गुल्म युग मस्तक धारा
शृंग, समय गति! उभरे माला[7] * सोइ विभूति ऋषि शृंग भुवाला

ताहाके देखिया मुनि कामे अचेतन * मुनिर हइल रेतः पतन तखन
आस्ते व्यस्ते मुनि ताहा धरे बाम हाते * जले ना फेलिया रेतः फेलाय कूलेते
पुनर्व्वार महामुनि करि आचमन * तपस्या करेन विभाण्डक तपोधन
विधिर लिखन कभु ना हय खण्डन * तृष्णाय हरिणी जल खाय सेइ क्षण
जल खेये हरिणी कूलेते घास चाटे * घासेर सहित रेत सान्धाइल पेटे
दैवयोगे हरिणी आछिल ऋतुमती * मुनि वीर्य्य खाइया हइल गर्भवती
दिने दिने गर्भ तार बाडिते लागिल * छयमासे पशुवत प्रसव हइल
मनुष्येर डरि आमि भ्रमि वने वन * आमार गर्भेते हैल शत्रुर जनम
पुत्र फेलाइया से हरिणी गेल वन * अगुलि चुषिया शिशु जुड़िल क्रन्दन
तपस्या करिया विभाण्डकेर गमन * कानने पड़िया शिशु करिछे क्रन्दन
बालके देखिया मुनि भावे मने मन * मनुष्य आकार देखि हरिणी वदन
ध्याने जानिनेक विभाण्डक तपोधन * हरिणीर गर्भे हैल आमार नन्दन
पुत्र कोले करि गेलेन निज घरे * पुष्पमधु दिया मुनि पोषेण ताहारे
नवीन कुशेर मूले कराने शयन * दिने दिने बाड़े बिभाण्डकेर नन्दन
परम सुन्दर से विभाण्डकेर बेटा * शास्त्रवेत्ता हय से कपाले शृंग फोंटा

१ वीर्यपात २ किनारे ३ पेट में चली गई ४ मनुष्य ५ हरिणी के समान मुख ६ अन्य ७ शिर का अग्रभाग।

जासु शाप वर अमित प्रभाऊ * सोइ-वर पुत्रवान भव राऊ

लोमपाद के राज्य में अनावृष्टि-निवारण के लिए ऋष्यशृंग का लाया जाना

दो० कथन-वशिष्ठ सुमंत्र सुनि, बरनेउ अधिपति-अंग[1]।
लोमपाद सन्मानि गृह जिमि राखेउ ऋषि शृंग ॥ ८० ॥

सचिव सुमन्त्र ! कहौ केहि हेता * गवन शृंगमुनि अंग-निकेता ?
कहेउ सुमंत्र अंगनृप-देसू * द्वादश वर्ष[2] वृष्टि नहिं लेसू
लोमपाद पण्डितन बुलावा * अनावृष्टि कर हेतु बुझावा
बुध विचारि बोलत, सुनु राजन ! * अनाचार किञ्चित तव सासन
बिन बिवाह ऋतुमती कुमारी * तव छिति, भूप ! न बरसत वारी
आनहु सुवन-विभाण्डक शृंगा * पाप-छीन, जल बरसै अंगा
भूप एलान[3], नगर-नरनारी * शृंगि आनि, जो काज सवाँरी
अर्ध राजु अर्पन सोइ-हेता * बूढ़ि एक कह दर्प समेता
शृंगि न ज्ञान नारि-नर लेसू ! * मुनि भरमाइ[4] बुलावहुँ देसू
फल-तरु रोपि[5] सजावहु तरनी * वयस चतुर्दस मुनिसुत-हरनी
सुवरन नाव जरठि[6] हित माजा * बीच जासु छवि ध्वजा विराजा

किछु-दिन परे शृंग उठिल कपाले * ऋष्यशृंग बले नाम थुइल सकले
यारे वर शाप देन कभु नहे आन * ताँर आशीर्वादे राजा हबे पुत्रवान

लोमपादेर राज्ये अनावृष्टि निवारणार्थ ऋष्यशृंग के आनयन

वशिष्ठेर वचन हइल अवसान * सुमन्त्र बलेन राजा कर अवधान
लोमपाद राजा अंग देशेर ईश्वर * ऋष्यशृंग आनिया छिलेन निज घर
दशरथ बले पात्र कह विवरण * लोमपाद आनालेन किसेर कारण
सुमन्त्र बलेन दशरथ नृपवर * सेइ देशे अनावृष्टि द्वादश वत्सर
लोमपाद ब्राह्मण पण्डिते जिज्ञासिल * मम राज्ये अनावृष्टि कि हेतु हइल
कहिल पण्डितगण करिया विचार * किंचित् तोमार राज्ये आछे दुराचार
तव राज्ये कुमारी हइल ऋतुमती * सेइ पापे वृष्टि नाहि हय नरपति
विभाण्डक पुत्र यदि ऋष्यशृंग आसे * पाप दूर हय आर देवता वरषे
नगरेते लोमपाद दिलेन घोषणा * ऋष्यशृंग मुनिके आनिबे कोन जना
ताहारे आनिया मोरे येवा दिते पारे * अर्द्धराज्य दिब आमि अवश्य ताहारे
डाकिया कहिल कथा बुड़ि एकजन * आमि आनि दिब सेई मुनिर नन्दन
स्त्री-पुरुष भेद सेइ मुनि नाहि जाने * भुलाइया आनिब से मुनिर नन्दने
नौका एक साजाइया देहत आमारे * फलवान वृक्ष रोप ताहार उपरे
चौद्द वत्सरेर सेइ मुनिर सन्तति * कौतुकेते भुलाइबे यतेक युवती
सुवर्णेर नौका राजा करिया गठन * विचित्र पताका ताहे करिल साजन

१ अंग नरेश २ अंग देश में ३ घोषणा ४ भटकाकर ५ जमाकर ६ बूढ़ी।

कनक-वितान भवन दुइ मोहा * परम रम्य निरखत मन मोहा
गजमुकुतावलि सुबरन तारा * मधु मिष्ठान्न रसाल सवाँरा
कर्पूरित गंगाजल झारी * नाना पानक[1] फल रुचिकारी
बाछि लीन सुन्दरी अनूपा * किन्नरि धौं अप्सरा सरूपा
तरुनि रुदन, मम मलिन बिचारी * परि मुनि-साप जरहिं, भयकारी

दो० तिनि प्रबोधि बृद्धा कहै * चलहु त्यागि भय संग।
मम नवयौवन कीन मैं * शत शत मुनि-मन भंग॥
तरनि तरत जल-नर्मदा, लखी विभाण्डक देस।
बाँधि तीर तरि[2], रूपसिन, उपवन कीन प्रवेस॥ ८१॥

मुनि-तप मोंचि सुन्दरिन त्रासा * जासु कोप परि छिनहिं बिनासा
पितु-सूने[3] उपवन एकाकी[4] * रमनिन तहाँ भृंग सुत ताकी
बंसी धुनि कोउ क्रीड़ति बीना * ताल देत सब चलीं नवीना
बुढ़िहिं घेरि चतुर्दिसि छाई * बहु चोंचला रूप दरसाई
कामिनि - कण्ठ कोकिला - गाना * सामगान ऋषि - सुवन भुलाना
नर-तिय अबुझ, रूप मुनि भाये * जिमि सुर अवनि, स्वर्ग तजि आये
विह्वल शृंगि द्वार चलि जाई * गहे बूढ़ि - पद अंग नवाई

नौकार उपरे कर स्वर्ण दुइ घर * परम सुन्दर नौका अति मनोहर
उपरेते शोभा करे सुवर्णेर तारा * चारिभिते शोभे गज मुकुतार झारा
सन्देश दिलेन नाना खाइते रसाल * नारिकेल, कला आर काँठाल उताल
गंगाजल शीतल शर्करा मिश्र करि * कर्पुर वासित जल दिल पात्र पूरि
बाछिया बाछिया निल परमा सुन्दरी * येना आर अप्सरा कि अमर किन्नरी
कांदिते लागिल सब मुखे नाहि हासि * मुनि कोपानले आजि हव भस्मराशि
बुड़ि बले केन भय करिछ युवती * तोमरा सकले चल आमार सहित
यखन आमार छिल नवीन यौवन * कत शत भुलायछि महामुनिगण
नर्मदा बहिया जाय परम हरिषे * उपस्थित हय ऋष्यशृङ्ग येइ देशे
यखाने तपस्या करे विभाण्डक मुनि * सेइ वने तरुणीरा राखिल तरणी
विभाण्डके देखिया सकले भय काँपे * भस्मराशि करे पाछे शाप दिया कोपे
तपोवने आछे यथा ऋष्यशृङ्ग मुनि * आसिया मिलिल तथा सकल रमणी
तरी हैते उत्तरिला सकल नवीना * के वंशी पूरये बाजाय केह वीणा
बुड़ि के बेड़िया गान करे नारीगण * मुनीर निकटे गिया दिल दरशन
कामिनीर मुखे गीत कोकिलेर ध्वनि * शुनि मुनि वेदध्वनि छाड़िल अमनि
स्त्री-पुरुष भेद मुनि नाहि जाने * स्वर्गेर अमरगण मुनि मने माने
व्याकुल हइया मुनिद्वार हइते उले * प्रणिपात करिले बुड़िर पदतले

१ शरबत २ नाव ३ पिता की अनुपस्थिति में ४ अकेला।

परति पाँय, कर धरति किशोरा * चूमि कन्जमुख पुनि-पुनि भोरा[1]
'आव-आव' कहि, सबन बुलाई * गदगद रोम, न मोद समाई
उपवन एक मात्र कुस-आसन * बूढ़िहिं दीन सप्रीति बिछावन
कन्द - मूल - फल नीर समेता * धरेउ शृंगि सो सुमुखिन हेता
'विष्णु-विष्णु' कहि, कर धरि काना * हरि-पूजन बिन किमि जलपाना ?
दिव्य कुसासन सोइ-हित साजी * उपरि जासु नायिका विराजी
नासा परसि, उलटि दृग-तारा * मुनि प्रतच्छ[2] मनु विष्णु निहारा
कछुक काल बकध्यान[3] लगावा * पुनि प्रसाद - हित सुतहिं बुलावा
अहह सफल जीवन मम आजा * लै प्रसाद हरि स्वयं विराजा

दो० फल कहि मोदक, नीर मिस, मायाविनि मधु दीन ।
अमित स्वाद अमरित सरिस, मुनिसुत मोहित कीन ।। ८२ ।।

उपजत फल कित पूछत शृंगा * चले मुग्ध पुनि युवतिन संगा
मोदक मदनानन्द खवावा * मोदक-मद मुनिसुत तन छावा
दै संदेस,[4] कहँ अतिरूपा * सुखतर फल जहँ, चलिय अनूपा
जो कहुँ सुलभ अधिक रसपागी * चलौं संग तव, उपवन त्यागी
मदन-विभोर निरखि मुनिनन्दन * सरकत बसन अंग छवि-बनितन
कोउ मुनि-कच गात अनुसरहीं * पंकज मुख कोउ चुम्बन करहीं

मुनिपुत्र पाये पड़े धरि करे कोले * बार बार चुम्ब दिल वदन कमले
एस-एस बले मुनि ना मनाके बले * आनन्दे गदगद से आसन दिते चले
एकखानि कुशासन छिल मात्र घरे * बैस बलि आनिया दिल से बूड़िरे
फल-मूल जल घरे छिल ये सकल * बूड़िर भक्षण हेतु दिलन सकल
श्रीविष्णु बलिया बुड़ि छुंइल दुइ कान * विष्णुपूजा विना नाहि करि जलपान
दिव्य कुशासन पाति दिलेन बुड़ीरे * पूजा करिबारे वैसे ताहार उपरे
चक्षु उलटिया बूड़ि नाके दिल हात * मुनि बले विष्णु आजि करिक साक्षात्
कतक्षणे नासिकार हात घुचाइल * ए प्रसाद लओ बलि मुनिरे डाकिल
मुनि बले आजि मोर सफल जीवन * विष्णुर प्रसाद देह करिब भक्षण
फल बलि हाते दिल गङ्गाजल लाडु * जल बलि खाओ याइल मधु गाडूगाडु
मुनि बले एइ फल कोथा गेले पाई * सङ्ग करि लये गेले तवे सङ्गे जाई
खाओ याइल कामेश्वर खाइते सुस्वाद * कामेश्वर खाइया से हइल उन्माद
कन्यागण बलिल खाइले ये मदेश * इहार अधिक आछे चल सेइ देश
मुनि बले इहार अधिक यदि पाइ * तोमरा चलह देशे आमि सगे जाइ
मदने भुलिल यदि मुनिर नन्दन * अगेर वरान खसाइल कन्यागण
आसिया मुनि पुत्रे केह करे कोले * केह केह चुम्ब देय वदन कमले

१ भोला २ साक्षात ३ बगुला के समान बनावटी ध्यान ४ एक बंगाली मिठाई ।

पुनि घेरेि[1] बहु हास - विलासा * मुनिसुत उपज अमित उल्लासा
परसि उरोज अबुझ कोउ नारी * इकटक दीठि रहइ कोउ डारी
नैन - कटाछ रन्ज[2] मन कोऊ * करत प्रगाढ़ अलिंगन कोऊ
जो मुनिहरन करहिं तत्काला * बिनमैं सकल विभांडक-ज्वाला
उचित आजु, तजि चलहिं बराई[3] * कथा मकल सुत जनक[4] जनाई
सुवन - नेह मुनि रहइँ निकेतू * काल्हि न बन गमनइँ तप-हेतू
जो तजि तनय श्रेय तप देहीं * कहत बूढ़ि, तब सुत हरि लेहीं
सोचि जुगुति[5] दिय मत मुनिनन्दन * बिलमहु[6] कछुक काल मल उपवन
शिष्य एक तव-सरिस सुहावन * निकट भेंटि लौटहुँ मनभावन
बिनयेउ शृंगि, नाथ तव दासा * सदा स्वामि - ढिग सेवक - बासा

सो० गमन अन्त कहुँ देस, करहु त्यागि मोहिं अमरगन।
पावक करौं प्रवेस, ब्रह्मघात तव - सीस धरि ॥ ८३ ॥

नर-नारी कर भेद न जानी * मुनि-कौतुक! छलिनी मुसकानी
बोली, करहु बास यहि काला * सुनु बोलाय तोहि लेउँ सकाला[7]
मुनि तजि गेह, चलीं मृगनयनी * लागि नर्मदा-तट जहँ तरनी
अस्ताचल जब सूर्य सिधाये * बिकल शृंगि! सुरगन नहिं आये
करगत अञ्चल-निधी नसानी * मम बिपरीत दैव[8]! मैं जानी

मुनि लैया सबे करे हास्य परिहास * देखिया मुनिर पुत्र हइल उल्लास
कोन नारी भुलाइल स्तन परशने * केहा वा भुलाय ताके भक्ष्य द्रव्य दाने
केह वा हरिल मन चाहिया नयने * केह वा करिल मत्त गाढ़ आलिङ्गने
बुडि बले आजि यदि लय याइ हरे * पाछे विभाण्डक मुनि कोपे भस्म करे
आजि पिता पुत्रेर थाकुक एकस्थाने * काहिबे ए कथा मुनि पिता विद्यमाने
पुत्र प्रति यदि स्नेह कर तपोधन * तबे कालि तपस्याय ना याबे कखन
पुत्र एडि जाय यदि तपस्यार तरे * तब काल लैया याव मुनिर कुमारे
एइ युक्ति तबे बुड़ी भावे मने मने * कहिते लागिल सेइ मुनिर नन्दने
तपोवने बैस हे तोमारे भालबासि * अन्य एक शिष्येर आश्रम देखे आसि
बलिते लागिल तारे ऋष्यशृङ्ग ऋषि * तोमार सेवक हैया तव संगे आसि
आमारे एड़िया यदि याबे कोन देशे * ब्रह्महत्या हबे तबे मरिब हुताशे
बुड़ी बले एइ क्षणे घरे थाक तुमि * संध्याकाले तोमारे लइया याब आमि
एतेक बलिया तारे थुये निजघरे * सकल कामिनी चड़े नौकार ऊपरे
दिवाकर अस्तगत हइल यखन * मुनि बले ना आइल केन ऋषिगण
शिरोमणि हाराइल अञ्चलेर निधि * बुझिलाम आमारे वञ्चित हैल विधि

१ घेरकर २ प्रसन्न करती थीं ३ टल जायें ४ पिता को ५ युक्ति, तरकीब
६ ठहर जाओ ७ सायंकाल ८ भाग्य।

रुदन-थकित, तरुतर आसीना * तबहिं बिभाण्डक उत पग दीना
शोकाकुल सुत लखि मुनिराई * कस मलीन ? पूछत कुसलाई
कीजिय तात प्रथम जलपाना * हाल सकल पुनि करउँ बखाना
फलाहार करि पितु सुख पावा * दिवस-कथा सुत ललकि[1] सुनावा
तपहित तुम पितु ! बनहिं सिधारे * देव स्वर्ग तजि आश्रम आये
चखे न अस फल स्वाद अनूपा ! * दीख त्रिलोक न तिन सम रूपा
जटा सीस छबिमण्डित भाला[2] * तहँ साजे कोउ किंशुक-माला
कस मृतिका[3] ! ललाट छबिसागर * नभमण्डल जिमि उदित प्रभाकर
कौन पुहुप ! गर हार सुहावन * नीलम, पीत, धवल मनभावन
वलकल बसन लसत कस अंगा * लाल, पियर, सित, हरियर रंगा
लता कौन सब करन[4] सजीली * कोउ कर मानिक जोति छबीली

दो० लोम[5] न आनन, परम द्विज, मांस-पिण्ड उर दोय ।
कोमल कर परसत मनहुँ, सुरपुर करगत होय ।। ८४ ।।

नर-नारी ऋषि शृंग न ज्ञाना * बूझेउ सकल धरत मुनि ध्याना
कहत विभाण्डक, सुत ! न नारी * कामुकि[6] फिरहिं दनुजि बनचारी
आजु पुन्य-मम बच तव प्राना * पुनि तिन-फन्द न सुत कल्याना
पिता न इमि भाखहु तिन हेता * ते अस कतहूँ न दयानिकेता

कान्दिते-कान्दिते मुनि येन वृक्षतले * विभाण्डक तप करि एले हेन काले
पुत्रेर देखिया मुनि विचलित मन * जिज्ञासिल केन बापू करिछ क्रन्दन
ऋष्यशृङ्ग बले आगे खाओ फल जल * आजिकार विवरण कहिब सकल
फलजल खाइया हइल सुस्थ मन * पितापुत्रे कथावार्ता कन दुइजन
तुमि यइ गेले पिता तपस्यार तरे * स्वर्ग हते देवगण आसे मम घरे
मिठ मत फल नाहि खाइ ए जीवने * एत रूप देखि नाइ ए तिन भुवने
केन वा छन्दते जटा धरे छे माथाय * केन कुसुमेर माला दियाछे ताहाय
कि जानि मृत्तिका आछे कपाले शोभित * गगनमण्डले येन भास्कर उदित
कि जानि वक्षेर माला सवार गलाय * श्वेत पीत नील कत शोभिछे ताहाय
केमन ना देखि पाता गाछेर बाकल * श्वेत रक्त पीत नील वरण उज्जवल
कि जानि वक्षेर लता सवाकार हाते * कनक माणिक गाँथा आछये ताहाते
परम ब्राह्मण कारो लोम नाहि मुखे * तुलार समान दुटा मांसपिण्ड बुके
ताते यदि हस्त दिया करइ परशन * स्वर्गवास हाते पाइ हेन लय मन
मने भावे महामुनि पुत्रेर वचने * स्त्री-पुरुष ऋष्यशृङ्ग कभु नाहि जाने
विभाण्डक बले बापू नारा नारीगण * कामाचारी राक्षसी बेडाय वने वन
मम पुण्य प्राण आजि रेखेछे तोमार * पुन गेले धरे खाबे ना पाबे निस्तार
ऋष्यशृङ्ग बले पिता ना बल एमन * एमन दयालु नाइ ताहारा येमन

१ बड़े चाव से २ मस्तक ३ सकेशर चन्दन को भस्म समझा ४ हाथों में
५ बाल (दाढ़ी-मूँछ) ६ विलासिनी ।

सवन कालिह विधि देइ मिलाई * सूचित करहुँ तात ढिग आई
निसि बितीत, मुनि बहु समुझावा * तदपि शृंग कछु बोध न आवा
भोर होत रवि किरन प्रकासी * सुवन-विषय सोचत गुनरासी
जो सुत [illegible] साधि, आश्रमवासू * अतिव चूक, तप-धर्म विनासू
सकल वृथा—को केहि सुत-नारी * जग असार, सत् प्रभुहिं विचारी
बहुरि प्रबोधि[1] भाँति बहु शृंगा * हटकेउ[2] मुनि तिन बनितन-संगा
ताम्रपात्र, तुलसीदल लीना * तपहित गमन विभाण्डक कीना
सो लखि, बूढ़ि कहत हरषाई * चलौ सबै, मुनिसुत हरि लाई
बीना, बँसुरि, ताल, करताला * चलीं शृंग-ढिग चाल मराला
गई-द्रव्य मनु दारिद[3] पाई * पद-नायिका गहे लपिटाई
गयेउ कालिह कित मोहिं बराई[4] * तव-हित रोवत निसा बिताई
मोइ मोदक रुचि मोइ जल पाना * देव ! संग तव करहुँ पयाना

दो० फँसे फन्द, तिय कोल[5] करि, लिये नाव हरि शृंग।
तरि[6] खेवत द्रुत बहि चली, काटत सरित-तरंग ॥ ८५ ॥

शृंगी ऋषि का लोमपाद के राज्य में जाना और अनावृष्टि का निवारण

तरनी तरति, न मुनि आभासा * भरमत बनितन सहित हुलासा
मुनि-पद अंग प्रेम जोइ परसा * अनावृष्टि गत, पावस बरसा

कालि यदि विधाता मिलाय ता सवार * तखनि याइब आमि कहिनु तोमारे
सारा रात्रि छिल मुनि पुत्र लये घर * बुझाइते आपनि ना पारिल पुत्रेरे
प्रभात हइल रात्रि रविर किरण * पुत्रेर विषय मुनि भावे मने मन
यदि आमि घर छाड़ि पुत्र करे साध * धर्म नष्ट हबे मम हबे अपराध
कार पुत्र कार पत्नी सब अकारण * संसार असार सार सत्य नारायण
पुत्रेर प्रबोध करि गेला महामुनि * कारो सने कथा नाहि कहिओ आपनि
ताम्रपात्र हाते निल तुलसी * तपस्या करिते गेल विभाण्डक ऋषि
बुड़ी बले बुड़ा मुनि छाड़ि गेल घर * सब चल आनि गिया मुनिर कोडर
ताल करताल बीणा केह धरे बाशी * आइल मुनिर काछे सकल रुपसी
दरिद्र पाइल यन हाराइया धन * व्यस्त मुनि कर धरि बुड़ीर चरण
आमार छाड़िया कालि गेला पलाइया * सारारात्रि कान्दियाछि तोमार लागिया
सेइ जल सेइ लाडु करिब भक्षण * संगे करि लैया चल करिब गमन
सम बुझ सब कृत्तिवासर सुवाणी * नारीर कथाय भुले ऋष्यशृंग मुनि

ऋष्यशृंगेर लोमपाद राज्ये गमन ओ अनावृष्टि निवारण

कोले करि बसाइल नौकार उपर * वाह वाह बलि बुड़ी डाकिछे सत्वर
तरणी बाहिया जाय मुनि नाहि जाने * ऋष्यशृंग बले बेस व्याघ्र आछे बने?

---

१ समझाकर २ मना किया ३ निर्धन ४ टालकर ५ गोद ६ नाव।

लच्छन सुभ, आगम-मुनि जानी * अर्घ्यपाद चलि नृप सन्मानी
लोमपाद नृप कन्याहीना * दसरथ सुता + दान पुनि दीना
यहि विधि मुनि रघुवंस-जमाई[1] * बोलि अंगनृप, लेहु बुलाई
दसरथ पूछेउ सचिव सप्रीती * कस सुत-सोक विभाण्डक बीती
उपाख्यान ऋषि शृंग सुपावन * अनजल-हरन, नीर-सरसावन
कृत्तिवास इमि काव्य प्रकासा * राम-नाम मुद-मंगल-वासा

शृंगी ऋषि को न देखकर विभाण्डक मुनि का खेद

पुनि सुमन्त्र दसरथहिं सुनावा * बूढ़ी जिमि अंगपहिं[2] सिखावा
मुनिसुत-हरन फन्द पुनि बरनी * दै चित भूप करहु इमि करनी
कुपित विभाण्डक, साप कराला * सहित राजु बिनसहु मुनि-ज्वाला
तासु त्रान-हित[3] कहउँ उपाऊ * रचना रचहु पन्थ सोइ राऊ
ठौर-ठौर गो-महिष तुरंता * गीत वाद चहुँ नृत्य अनन्ता
उत्सव चहुँ लखि, मुनि-मन-रोषू * मिटै सहज, उपजै सन्तोषू
बूढ़ी - बचन महीप प्रमाना * जनपद कायम कीन महाना
ठौर-ठौर तहँ धाम ललामा * सोइ ऋषि शृंगि-ग्राम धरि नामा

लोमपाद राज्यं मुनि दिल दरशन * अनावृष्टि छिन्न वृष्टि हइल तखन
लोमपाद जानिल मुनिर आगमन * पाद्य अर्घ्य दिया पूजे मुनिर नन्दन
कन्याहीन लोमपाद शान्ता अभिधान * दशरथ कन्या के मुनिरे दिल दान
सम्वन्धे मे मुनि हय तोमार जामाइ * ताहाके चाहिया आन लोमपाद ठाँइ
दशरथ बलिलेन कह हे नायक * पुत्रशोके केमने बाँचिल विभाण्डक
येइ दशे हय ऋष्यशृंगे उपाख्यान * अनावृष्टि घुचे हय से देशे कल्याण
कृत्तिवास पण्डितेर काव्य अनुपम * सानन्दे वसिया सब शुन राम नाम

ऋष्यशृंगेर अदर्शने विभाण्डक मुनिर खेद

सुमन्त्र बलेन शुन राजा दशरथ * बुडी लोमपादे नीति कहे वाक्य यत
मन दिया स्थिरचित्ते शुनह बचन * भुलाइया आनियाछि मुनिर नन्दन
यदि शाप देन कोपे विभाण्डक ऋषि * राज्यसह आपनि हइते भस्मराशि
तार ठाँइ यदि तुमि चाओ परित्राण * पथने करिया रख विहित विधान
स्थाने स्थाने महिष गो रखह सत्वर * गीतवाद्य नृत्योत्सव हउक विस्तर
गीतवाद्य देखिया तखनि तपोधन * यत क्रोध जन्मे थाके हबे पासरण
बुड़ीर बचन राजा ना करिल आन * पथे पथे करे ग्राम बड़-बड़ स्थान

१ रघुवंशी राजा दशरथ के जामाता २ लोमपाद को ३ रक्षा के लिए।

+ राजा दशरथ की कन्या 'शान्ता' जिसका पालन राजा लोमपाद ने अपनी कन्या मान कर किया था। शान्ता का नाम हेमलता भी पहले आ चुका है।

दो० सकल धान्य-पूरित मही, दिव्य धाम, पुर, ग्राम।
लोमपाद नृप शृंग ऋषि, इमि राखे निज धाम ॥ ८६ ॥

तप करि कुटी विभाण्डक आये * सुत-श्रुतिगान न सुनि मुनि पाये
नित-विपरीत, मौन[1]! मन चिंता * द्वार ससंक धरेउ पग सन्ता
दिवस ताप-तप, आश्रम आई * कासु बैनमधु बिथा मिटाई
तात! तात! कहि, कुटी प्रवेसू * लखेउ न सुत, मुनि दुसह कलेसू
छूट कमण्डल, मूर्छित गाता * तरु-तर धरनि तपसि-तन पाता
बीते छन, कछु चेतन आवा * किते सुवन! पुनि-पुनि गोहरावा
सबन भेंटि पूछत सुत-त्राता * सुवन-नेह जग अतुल विधाता
हे क्षुप, विटप, लता जे उपवन! * लखे जात कहुँ तुम मम नन्दन
हे खग, मृग, पसु कतहुँ विलोका * तनय जात, इमि सोध[2] ससोका
हेरत चलत न मग विश्रामा * पहुँचे जहँ इक ग्राम ललामा
कवन ग्राम को धाम-निवासी? * पूछत दुखित, सबन पुरबासी
विनय जोरि कर प्रजासमाजू * नाथ शृंगऋषि कर यहु राजू
लोमपाद तनया जिन अर्पी * हय-गज-सुरभि, सुभूमि समर्पी
सुनत प्रजा-मुख मंगल-बानी * शमन क्रोध, आतमा जुड़ानी

श्री ऋष्यशृंगेर ग्राम बलि तार नाम * सर्व्वशस्ययुता पुरी दिव्य-दिव्य ग्राम
ऋष्यशृंग रहिलेन लोमपाद घरे * विभाण्डक तप करि गेलेन कुटीरे
आर दिन दूर हइते शुने वेदध्वनि * से दिन ना शुने शब्द व्यस्त हैल मुनि
आकुल हइया मुनि दाण्डाइल तथा * कांदिया बलेन बाछा ऋष्यशृंग कोथा
तपस्याते श्रान्त ह'ये आइलाम घरे * हेथा आसि कह कथा दुःख याक दूरे
बलिते बलिते गेल कुटीरेर द्वारे * पुत्र-पुत्र बलि डाके पुत्र नाहि घरे
कमण्डलु आछाडिया फेले भूमितले * अज्ञान हइया मुनि पड़े वृक्षतले
क्षणेक रहिया ज्ञान पाइलेक मुनि * कोथा ऋष्यशृङ्ग बलि डाकये अमनि
अपत्येर स्नेह सम नाहिक संसारे * याहारे देखेन मुनि जिज्ञासेन तारे
मुनि बले आछ बने यत तरु लता * देखेछ तोमरा मम पुत्र गेल कोथा
मृग पशु पक्षीरे लागिल सुधाइते * तोमरा देखेछ ऋष्यशृंगेरे याइते
कांदिया कांदिया जाय विभाण्डक मुनि * कत दूर गिया पान ग्राम एकखानि
सकल लोकेरे मुनि शोकेते सुधान * काहार ए ग्रामखानि कह विद्यमान
जोड़हात करि प्रजागण कहे बाणी * ऋष्यशृङ्ग मुनिवर इथे राजा तिनि
लोमपाद तांके कन्या दियाछे कौतुके * ग्राम पशु अश्व गज दियाछे यौतुके
एइ कथा कहिलेक यत प्रजागण * क्रोधमन गेल मुनि अति हृष्टमन

१ सन्नाटा २ खोज।

सकुसल सुवन बिलस संसारू * मिटेउ छोभ, मुनि करत विचारू
संतति-हीन अवध अजनन्दन[1] * करहिं शृंग सुत-याग अरंभन

दो० सोइ अवसर भेटउँ सुवन, भूप-निमंत्रन पाय।
अस विचारि, बन गमन किय, मुनिवर तप मन लाय॥ ८७॥

राजा दशरथ का पुत्रेष्टि-यज्ञ और नारायण का चार अंशों में जन्मग्रहण

मंत्र-सुमंत्र भूप मन भावा * अंग[2] हेत चतुरंग सजावा
चले लेन हित शृंग मुनीसा * लोमपाद - ढिग अवध - महीसा
दसरथ-खबरि अंग नृप पाई * पाद-अर्घ्य, मृदु असन[3] सजाई
पूजि राज-उपचार समेता * पूछेउ अंग आगमन-हेता[4]
दसरथ कही अंधमुनि बानी * समय पाय सुतजोग बखानी
अवध-पयान शृंग मुनि करहीं * सफल याग संतति हित रचहीं
सुनि, नृप भूप शृंग ढिग आये * मुनिहिं जोरि कर माथ नवाये
लोमपाद परिचय पुनि दीन्हा * रविकुलमणि दसरथ जग चीन्हा
सुता शान्ता मुनिहिं बिवाही * जनक[5] तासु दसरथ नृप आही
श्वसुर भूप, मुनि तासु जमाई * सुवन-अभाव ताप दुखदाई
सो तव कृपा होयँ सुतवन्ता * अवध गमन कीजिय भगवन्ता

ससार करिते पुत्र करियाछे साध * पुत्रेर कुशल शुनि खण्डिल विषाद
भावे अपुत्रक राजा अजेर नन्दन * ऋष्यशृंग करिबेन यज्ञ आरम्भन
निमन्त्रण हइबेक मम से यज्ञेते * सेइ काले हबे देखा पुत्रेर सहिते
एतेक भाविया मुनि गेल निज वास * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

दशरथ राजार पुत्रेष्टि यज्ञ ओ नारायणेर चारि अंशे अवतार

दशरथ राजारे सुमन्त्र इहा बले * मुनिके आनिते राजा दशरथ चले
दशरथ लोमपाद नृपतिर घरे * चतुरंग संगे यान हरिष अन्तरे
राजार पाइया वार्त्ता लोमपाद राजा * राज उपचारे यत्ने तांरे करे पूजा
मिष्टान्न प्रभृति दिया कराय भोजन * जिज्ञासिल कोन कार्य्ये तव आगमन
दशरथ बलिलेन मोर वाणी शुन * अयोध्याय लये चल शृंग एइ क्षण
अन्धकेर उक्ति आछे ये अतीत काले * पुत्रवान हब आमि ऋष्यशृंग गेले
एमत कहिले दशरथ नृपवर * लोमपाद लये गेल मुनिर गोचर
प्रणाम करेन दशरथ जोड़ हाते * लोमपाद परिचय लागिल कहिते
दशरथ राजा एइ शुनेछ आख्यान * तुमि कृपाकर यदि हन पुत्रवान
शान्ताकन्या विवाह ये दियाछि तोमारे * सेइ कन्या जन्मेछिल इहार आगारे
इहार जामाता तुमि तोमार श्वशुर * अपुत्रक तापित ये ताप कर दूर

१ दशरथ २ अंगदेश ३ जलपान ४ आने का प्रयोजन ५ पिता।

मुदित ध्यान लखि मुनि, गृहभूपा * चारि अंस प्रभु प्रगट अनूपा
अंधक मुनि कर बचन प्रमाना * अवध-पयान शृंग मन माना
चढ़ि रथ सहित सुता-जामाता * चले अवध पुरजन-सुखदाता
लोमपाद नृप संग सुहाये * दल-बल सहित नृपति-घर आये
लखि बशिष्ठ-मुनिगन, कह शृंगा * करहु अरंभन याग-प्रसंगा

सो० आदि विष्णु आराधि, पुनि निमंत्रि मुनिगन सकल।
भूपति - मंगल साधि, अश्वमेध रचना रचहु ॥ ८८ ॥

भूप निमंत्रण दिय दिग्देसा * जुरे पाय, मुनिवृन्द असेसा
पुलह, पुलस्त्य, पुलोम प्रकासा * गौतम, कौण्डिन्य, दुर्वासा
वंशम्पायन, भरत, पराशर * पिप्पलाद, शरभंग, निशाकर
अष्टावक्र, पतञ्जलि, गर्गा * गौतम, भरद्वाज तपवर्गा
कूर्म, मारकण्डेय तपोधन * सनक सनन्दन, ऋषी सनातन
भृगु, अगस्त्य, जैमिनि किय वासा * कपिल—सगर जिन सुतन विनासा
वेदवान, चक्रवान,[1] मरीची * दक्षराज, सावर्णि, दधीची
मत्स्यकर्णि जिन नीर निवासा * सौरभि विष्णु समान प्रकासा
वाल्मीकि तट - जमुन निवासू * सबन पूजि, नृप हृदय हुलासू

ध्यानेते जानिल मुनि मनेते प्रममे * एइ घरे जन्मिबेन विष्णु चारि अंशे
अन्धक मुनिर कथा कभु नहे आन * एतेक जानिया मुनि करिल पयान
तनया जामाता सङ्गे चडि निज रथे * अयोध्याय आइल राजा लोमपाद साथे
बशिष्टादि आइल सकल मुनिगण * ऋष्यशृंग बले कर यज्ञ आरम्भन
अश्वमेध यज्ञ कर विष्णु आराधन * यत मुनिगणे तुमि कर निमन्त्रण
दशरथ निमन्त्रण करे देशे देशे * निमन्त्रण पाइया यतेक मुनि आसे
अगस्त्य आइल आर पौलस्त्य पुलोम * आइलेन वैशपायन दुर्व्वासा गौतम
जैमनी गौतम पिप्पलाद पराशर * पुलह कौण्डिन्य मुनि आइल निशाकर
मार्कण्डेय मरीचि भरत भरद्वाज * अष्टावक्र मुनि भृगु कूर्म्म दक्षराज
गंग मुनि दधीचि आइल शरभग * पूजे राजा मुनिगणे बाड़े मने रग
पातालेते आइल कपिल राजऋषि * सगर सन्ताने ये करिल भस्मराशि
वेदवान चक्रवान आइल सावर्णि * जल माझे आछे से मुनि मत्स्यकर्णि
सनातन सनक से सनन्द-कुमार * सौरभि आइल मुनि विष्णु अवतार
आइल वाल्मीकि यमुनार कूले धाम * कश्यपेर पुत्र एल विभाण्डक नाम
कतेक आइल मुनि नाम नाहि जानि * राजार यज्ञेते एल तिन कोटि मुनि
तिन कोटि मुनि करे वेद उच्चारण * सबाकार वदने निःसरे हुताशन
पृथिवीते केह आछे एक पदे भर * केह अनाहारे आछे सहस्र वत्सर

१ चक्रवान ऋषि।

कश्यप-सुवन विभाण्डक आये * अगनित नाम बरनि जनि जाये
तीनि कोटि द्विज श्रुति उच्चारन * सकल मुनिन-मुख प्रगट हुताशन
कोउ छिति एक पाद आधारा * वर्ष सहस कोउ बिन आहारा
जटा सीस, तन बल्कल बसना * विष्णु-कथा तजि, आन न रसना
तीन कोटि इमि मुनिनि-समाजा * विपुल शिष्यदल सहित बिराजा
दिय निवास सन्मानि मुनीसा * आये अवध बहुल अवनीसा
मैथिल जनकराज-ऋषि आये * काशिराज नृप मल्ल सुहाये

दो० लोमपाद अंगाधिपति बंग-महिप घनश्याम।
भोज पुरन्दर आगमन, नृप मरीचपुर धाम ॥ ८६ ॥

अतुल तेज तैलंग-नरेसू * चम्पेश्वर नृप अवध प्रवेसू
कोटि अठासि पछाँह-भुवाला * निज पुर तजि लख-लख नरपाला
कर्नाटक, मागध, गंधारा * जेतक नृप तिन अवध अखारा[1]
पाय निमंत्रन - दशरथराऊ * समिटे अखिल भुवन-नरराऊ
राजन अकथ कहौं किमि रंगा * अगनित सचिव-सखा तिन संगा
कोटि अठासी लख नरराई * प्रथक नाम को सकिय गिनाई
सारभौम दसरथ महराजा * वार्षिक कर भेटैं सब राजा
सो धन सकल राज - भण्डारा * प्रथक बास प्रति भूप सँवारा

माथाय कपिल जटा वाकल वसन * नारायण कथा विना मुखे नहे आन
एमत आइल तथा तिन कोटि मुनि * सङ्गे कत शिष्य तार सख्या नाहि जानि
मुनिगण वासार्थ दिलेन वासाघर * पृथिवीर राजा आइल अयोध्या-नगर
मिथिलार आइल जनक राजा-ऋषि * मल्ल महाराज एल राज्य यार काशी
अगदेश अधिपति लोमपाद नाम * राजा बंगदेशेर आइल घनश्याम
मरीचिपुरेर राजा भोज पुरन्दर * चम्पापुर हइते आइल चम्पेश्वर
आइल तैलङ्ग राजा तेजेते असीम * आइल आटाशी कोटि ये छिल पश्चिम
मगध मागध आइल गाधार कर्णाट * लक्षलक्ष राजा एल छाडि राजपाट
उदयास्त गिरिते यतेक राजा बसे * दशरथ निमन्त्रणे सब राजा आसे
मेदिनी भुवने वैसे यत राजगण * नाना रङ्गे आइलेन सगी अगणन
प्रत्येक कहिते नाम नितान्त अशक्य * राजा यत आइल आटाशी कोटि लक्ष
यत राजा गेल दशरथेर गोचरे * राजचक्रवर्ती दशरथ सर्व्वोपरे
आसिया करिल दशरथ सह देखा * दिलेक वार्षिक कर समुचित लेखा
यत धन एने छिल राखिल भाण्डारे * प्रत्येके प्रत्येक वास दिल सबाकारे

१ जमाव।

रची यज्ञ नृप सरयू तीरा * सोइ शुचि भूमि चले तपधीरा[१]
योजन लंब एकासी अवनी * द्वादश इतर पच्छ लिय धरनी
चारि कोस मेखला बंधाई * शत योजन छिति-यज्ञ सुहाई
यज्ञभूमि मुनिगन लिय आमन * शुभ छन-लगन याग आरंभन
आदि स्वस्तयन मुनिगन गावा * पुनि दशरथ संकल्प सुहावा
विनय जोरि कर मधुरस साने * सकल तुल्य, बड़-छोट न जाने
कासु वरन ? मोहिं करहु अदेसू * कहेउ शृंग ऋषि सुनहु नरेसू
कुलगुरु प्रथम सुवन-जगमूला[२] * वरन वशिष्ठ शास्त्र अनुकूला

सो० तासु वरन न विवाद, उचित कहेउ ऋषिगन सकल।
मुनि समान मर्याद[३], अमित द्रव्य नृप दिय हरषि ॥ ६० ॥

करहिं वेदध्वनि संग तपोधन * भई प्रकट मुनि-वदन[४] हुतासन
करि शुचि अनल[५], याग सोइ थापा * अग्निकुण्ड, सोइ पावक व्यापा
आहुति यव - तिल - तण्डुल - रासी * घृत-घट सहस देयँ बनबासी
निरखि याग इमि हर्ष निरंतर * सुरगन सरग न थिर उर अन्तर
विश्वस्रवा - सुवन दससीसा * सुरन सूल नित लंक - अधीसा
कहत इन्द्र, किमि हे चतुरानन * यहि अवसर जन्महिं नारायन

यज्ञ करिछेन राजा सरयूर तीरे * मुनिगण गेलेन राजार यज्ञघरे
एकाशी योजन घर अति दीर्घतर * द्वादश योजन तार आड़े परिसर
चारिक्रोश बाधियाछे यज्ञेर मेखला * शतेक योजन उभे सेइ यज्ञशाला
मुनिगण बैसे गिया घरेर भितरे * शुभक्षणे शुभलग्ने यज्ञारम्भ करे
स्वस्तिकादि अग्रेते करये मुनिगण * सकल्प करिल तबे अजेर नन्दन
दाण्डाइल दशरथ जोड़ करि हात * कहिते लागिल सब मुनिर साक्षात्
छोट बड़ नाहि जानि तुल्य सर्वजन * आज्ञा कर कारे अग्रे करिब वरण
ऋष्यशृंग बलिलेन शुनह राजन * अग्रेते करह गुरु वशिष्ठ वरण
ब्रह्मार तनय आर कुलपुरोहित * उहार वरण आगे शास्त्रेते विहित
वशिष्ठेरे वरिया घुचाओ अभिमान * बड़ छोट केह नहे सकलि समान
भाल-भाल बलिया सकल मुनि बले * वस्त्र अलङ्कार राजा दिलेन सकले
सकले करिल एककाले वेदध्वनि * मुनि मुखे निःसरिल पावक तखनि
सेइ अग्नि पवित्र करिया मुनिगण * अग्निर कुण्डेते लये करिल स्थापन
आतप तण्डुल यव तिल राशिराशि * एके एके दिल घृत सहस्र कलसी
एक वर्ष यज्ञ करे राजा दशरथे * देवतार भय हैथा हइल स्वर्गेते
विश्वश्रवार पुत्र हय राजा दशानन * हीन ज्ञाने लंकाते खाटाय देवगण
महेन्द्र बलेन ब्रह्मा कोन बुद्धि करि * एइ काले जन्म कि लबेन श्रीहरि

१ तपस्वी लोग २ ब्रह्मा के पुत्र वशिष्ठ ३ प्रतिष्ठा ४ मुनियों के मुख से
५ यज्ञार्थ पवित्र अग्नि।

सफल याग, दसरथ-गृह ताता * होय तबहिं दसकंध-निपाता
मत मिलाय गमने सुरवृन्दा * छीर-उदधि जहँ आनँदकन्दा
विनय विरंचि विविधि संलग्ना * प्रभु जगपति किमि नींद-निमग्ना
रमा[१] परसि तहँ प्रभुपद बंदति * शयन अनन्त-सेज[२] त्रिभुवनपति
गे समीप सुर सकल समाजा * पन्नग-बिछवनि[२] विष्णु बिराजा
आभा-मेघ सलिल कस सोहा * अहिफन महस छत्र मन मोहा
तव निद्रा निद्रित जग जेता[३] * सकल विश्व तव चेतन चेता
कृपा-कोरि[४] सेवकन निहारी * विपति दूर कीजिय बनवारी
चौमुख-विनय[५] सुनत रस पागी * श्रीहरि छीर-सयन उठि त्यागी
जुरे सकल सुरगन चहुँ देखी * कहेउ शब्द एक नाथ विशेखी

सो० प्रगट अनुष्टुप छन्द, मुख मलीन सुरवृन्द लखि ।
पूछत आनँदकन्द, कहहु शत्रु को प्रगट तव ॥ ६१ ॥

विधि[६] सकोच कह सुनहु पुरन्दर * मम वर प्रबल दसानन निसिचर
सो तुम जाय सकल दुख-गाथा * बरनौ द्रवित होयँ भवनाथा
जोरि पाणि, सुर-गुरु[७] प्रभु आगे * सविनय करन दण्डवत लागे
मंगल रूप परम भगवाना * सबन विदित, रावह सुर-माना

पुत्रेर लागिया दशरथ यज्ञ करे * तॉर पुत्र हैले तबे दशानन मरे
एइ युक्ति करिया यतेक देवगण * क्षीरोद गेल समुद्रे यथा नारायण
चारिमुखे ब्रह्मा गिया करेन स्तवन * कत निद्रा यान प्रभु देव नारायण
पदतले लक्ष्मीदेवी करिछेन स्तुति * अनन्तशय्याय शुये आछेन श्रीपति
सकल देवता गिया दाण्डाइल कूले * देखिल येमन मेघ भासिछे सलिले
शुइया आछेन हरि अनन्त उपरे * वासुकि सहस्र फना तदुपरि धरे
सेवकगणेर प्रति प्रभु देह मन * तोमार निद्राय निद्रा चेतने चेतन
विपत्ति करह दूर श्रीमधुसूदन * चारिमुखे ब्रह्मा यदि करेन स्तवन
क्षीरोदे उठिया बसिलेन नारायण * चारि दिके देखिलेन यत देवगण
वसिया श्रीहरि करिलेन एक शब्द * से शब्दे हइल श्लोक चारि पद बद्ध
हरि करिलेन चारिदिके निरीक्षण * म्लान देखिलेन सब देवेर बदन
मलिन देखिया जिज्ञासेन नारायण * तोमा सबाकार शत्रु हैल कोन जन
विधाता बलेन शुन देव पुरन्दर * तुमि गिया कह कथा प्रभुर गोचर
आमि वर दियाछि दुर्द्दान्त रावणेरे * तुमि गिया कह दुख प्रभुर गोचरे
देवगुरु बृहस्पति जोड़ करि हात * प्रभुर गोचरे करिलेन प्रणिपात
अवधान करह ठाकुर भगवान * आपनि जानह यत देवतार मान

१ लक्ष्मी २ शेषशय्या ३ जितना भी, समस्त ४ कृपादृष्टि ५ ब्रह्मा की प्रार्थना
६ ब्रह्मा ७ बृहस्पति ।

नाथ-अनाथ, दीन कर त्राना * निगमागम[1] तुम सकल पुराना
विश्वस्रवा - तनय[2] दुर्दण्डा * विधि आराधि वर लहेउ प्रचण्डा
तेज-लंकपति, सुर श्रीहीना * सुरपुरत्रास दुसह तिन दीना
सविता-सोम न स्वर्ग प्रकासू * निसा-दिवस तम-निविड़[3] निवासू
दण्डहीन, हत यम-अधिकारा * बरुन न अधिपति जल-आगारा
पावक प्रबल तेज निर्वाना * कियो दरिद्र हरि धनद[4] खजाना
गतिविहीन भयभीत समीरा[5] * तजे मार्ग ग्रहगन, अति पीरा
सागर वेग न, मंद तरंगा * राग-रंग जनि कतहुँ प्रसंगा
वीना-नाद न नारद गीता * सुरपुर असुभ, सकल विपरीता
पावसादि षड्ऋतु कुसुमाकर * तजे समय भयबस दसकंधर
करि दुर्जय रावण जग माहीं * दै वर अब विरंचि पछिताहीं
विधि-वर पाय, विधिहिं प्रतिकूला * सुरपुर हरन दुसह दुखसूला

दो० छिनीं सुता, अपमान चहुँ, मलिन, न सुरपुर वास ।
ठौर न त्रिभुवन सुरन कहुँ, जहाँ जाँय तहँ त्रास ॥ ९२ ॥

अहह सरन पग प्रभु तव पावन * देव-देवि राखिय बधि रावन
सुनत, नाथ-उर क्रोध कराला * जिमि घृत पाय प्रज्वलित ज्वाला

आगम निगम तुमि भारत पुराण * अनाथेर नाथ तुमि कर परित्राण
विश्वश्रवा मुनि पुत्र राजा दशानन * पाइल ब्रह्मार वर करि आराधन
तार तेजे स्वर्गे देव रहिते ना पारे * देवेर देवत्व हरे दुष्ट बलात्कारे
घुचाइल यमेर यतेक अधिकार * सूर्य्येर उदय नाइ सदा अन्धकार
चन्द्रेर कतेक कब नाहि तार ज्योति * बहुकाल प्रभु स्वर्गे अन्धकार राति
वरुणेर घुचिल अगाध यत जल * निर्व्वाण हइल अग्नि नाहिक प्रबल
कुबेरेर हरे धन पाइल तरास * ग्रहगणेर अधिकार हइल विनाश
सम्वरिल पवन पाइया महाभय * समुद्रेर वेग अति मन्द मन्द बय
छाड़े बीणा नारद बीणाय छाडे गीत * अमंगल स्वर्गेयत हैल विपरीत
वसन्तादि अधिकार छाड़े छय ऋतु * नित्य भय पाइ सबे रावणेर हेतु
ब्रह्मार वरेते सेइ हइल दुर्ज्जय * तारे वर दिया ब्रह्मा निजे पान भय
ताँर वर पेये लङ्घे ताँहार वचन * स्वर्ग हैते खेदाड़िया दिल देवगण
काड़िया लइल से देवेर कन्या यत * देवेर शरीरे अपमान सहे कत
त्रिभुवते रहिते कोथाओ नाहि स्थान * यथा जाइ तथा सेइ करे अपमान
निवेदन करि प्रभु तोमार चरणे * रावणे बधिया राख देव देवीगणे
शुनिया प्रभुर क्रोध अन्तरे बाडिल * घृत पेये अग्नि येन प्रज्ज्वलित हैल

१ वेद-शास्त्र २ विश्वस्रवा का पुत्र रावण ३ घोर अंधकार ४ कुबेर ५ पवन ।

कर गहि चक्र सुदर्शनधारी * सुरन प्रबोधि गरुड़ असवारी
अधिक न सुरगन त्रास प्रसंगा * करौं मान-मद-रावन भंगा
अबहि बधौं, कह गरुड़-असीना * विधि सोइ समय निवेदन कीना
मम वर अमर प्रथम दसकंधर * बध न तासु बिन मानव-बन्दर
जो नर जनम लेयँ भगवाना * निसिचर मारि, करैं सुर-त्राना
वर के वीर, विपति मोहिं टेरा * सहज सुभाव सदा विधि केरा
भावी अमिट, चखौ निज करनी * सकल स्वर्ग तजि गमनी धरनी
मुनि विरंचि, हरि, विनय सुनावा * दुर्जय दनुज दुसह दुख गावा
प्रहरी-लंक दण्डधर भानू[1] * निज कर रंधति[2] पाक कृसानू[3]
सुरपति सुमन सँजोवति हारा * पवन करत नित मन्द बयारा[4]
छत्र छपाकर[5] छिति महरानी * मार्जन, वरुन पियावत पानी
घाटक घाम काटि उपहासू * दीन विलोकि दसा यम त्रासू
शनि-कुदीठ त्रैलोक विनासा * धोवत बसन लंकपति-बासा
दनुज-सुतन चटसार[6] गुजारा * सकल सृष्टि मैं सिरजनहारा

दो० रावन मन रंजन करत, वीनापानि[7] मुनीस।
भुवन-सिद्धि-सम्पति सकल, हित विलास-दससीस ॥ ६३ ॥

विनता-नन्दने हरि करेन स्मरण * चक्र हाते करि पक्षे करि आरोहण
कहिलेन देवगणे भय नाहि आर * रावणे एखनि ये करिब संहार
गरुडे चडिया चलिलेन जगन्नाथ * हेनकाले कहे ब्रह्मा प्रभुर साक्षात्
आमि वर दियाछि ये पूर्वे रावणेरे * एखनि करिले रण रावण ना मरे
नरेर उदरे यदि लओ हे जनम * नर वानरेर हाते ताहार मरण
प्रभुर साक्षाते ब्रह्मा कहेन ए कथा * जन्मेर नामेते प्रभु हेट करे माथा
वरेर समय ब्रह्मा हन आगुयान * विपदे पडिले बले रक्ष भगवान
कतबार दुख पाब ललाटे लिखन * पृथिवीते याब स्वर्ग करिया त्यजन
पुनश्च हरिरे ब्रह्मा कहेन बचन * दुष्ट रावणेर क्रीडा करह श्रवण
हाते अस्त्र सूर्य्यदेव लकार दुयारी * इन्द्र माला गाँथि देन चन्द्र छत्रधारी
आपनि त अग्निदेव करेन रन्धन * मन्द मन्द वातास करेन समीरण
बरुण बहिया जल देन निति निति * करेन मार्ज्जना गृह निजे वसुमती
शुनिले यमेर कथा हइबेक हास * काटिया आनेन तार घोटकेर घास
शनि दृष्टे त्रिभुवन भस्म हैया उडे * कापड धुइया देन शनि लङ्कापुरे
जगतेर कर्ता आमि ब्रह्मा महामुनि * पडाइ बालकगणे लङ्काते आपनि
रावणेर अग्रेते देव गायक नारद * रावण भुवन जिनि करेछे सम्पद

१ सूर्यदेव २ रसोई बनाते है ३ अग्निदेव ४ पंखा झलना ५ चन्द्रदेव
६ पाठशाला ७ नारद।

जो नर-जनम न भावै प्रभु-मन ※ हरि-रचना लीजै हरि-चरनन
रचउ विरंचि इतर सुरनाथा ※ तव जग तुमहिं समर्पित नाथा
सुनि विधि-विनय सुधा रससानी ※ भक्तविवस कह मंगल बानी
बरनउ युगुति[1] सकल चतुरानन ※ कासु उदर जनमउँ, केहि आँगन
कवन देस-कुल मम अवतारा ※ को मम जग परिजन-परिवारा
कह विधि, अवध भानुकुल-भूपा ※ कौशल्या पटरानि अनूपा
तासु गर्भ प्रभु पावन जन्मा ※ सुनि बोले मृदु बैन अजन्मा[2]
चिर परिचित मम ते दोउ प्रानी ※ भक्त पुरातन मम-वरदानी
सो वर सफल जनमि तिन गेहा ※ धरहुँ सुरन हित मानव-देहा
वानर-योनि जनमि सुरवृन्दा ※ नर-वानर मिलि असुर निकन्दा[3]
जानत विष्णु-गमन छितिलोका ※ कातर कमला[4] प्रभुहिं बिलोका
धरा जनम तव, नाथ वियोगू ※ कतक काल पुनि दरस सँयोगू
दुसह व्यथा, मोहिं तजिय न कन्ता ※ रमा गेय प्रनवति भगवन्ता
बोले हरि, विधि कहहु विचारी ※ लोकजननि[5] किमि व्यथा निवारी
जगती जनम बिना जगमाता ※ होय न प्रभु दसकंध निपाता
दिव्य जनम[6] छिति जहाँ विदेहा ※ सुता प्रकट मिथिलापति गेहा

जन्म निते हरि यदि हइला कातर ※ आपनार सृष्टि सब लह चक्रधर
आर इन्द्र आर ब्रह्मा करह सृजन ※ आपनार सृष्टि सब लह नारायण
एतेक बलिया ब्रह्मा करण वचन ※ भक्तवत्सल प्रभु ताहे देन मन
हे ब्रह्मन् इहार उपाय बल मोरे ※ कोन वंशे जन्म लब बल कार घरे
काहार उदरे आमि लइब जनम ※ आमारे वा अपन्य बलिबे कोन जन
ब्रह्मा बले जन्म लबे दशरथ घरे ※ सूर्य्यवंश पुण्येने कौशल्यार उदरे
विधातार वचने बलेन चक्रपाणि ※ दशरथ कौशल्या उभये आमि जानि
पूर्व्वेते आमार सेवा करिछे विस्तर ※ जन्मिब तोमार घरे दियाछि ए वर
नरेर गर्भेते आमि लइब जनम ※ वानरीर गर्भे जन्म लह देवगण
आमि नर हइ हयो तोमरा वानर ※ रावण मारिते येन हइओ दोसर
ब्रह्मा वाक्ये स्वीकार करेन नारायण ※ पदतले पडि लक्ष्मी जुडिल क्रन्दन
तव अवतार हबे पृथिवी मण्डले ※ तोमा दरशन आमि पाव कत काले
आमारे छाडिया कोथा याइबे श्रीहरि ※ विच्छेद-यन्त्रणा आमि सहिते ना पारि
लक्ष्मीर रोदनेते कान्दे कम्बुग्रीव ※ ब्रह्मारे जिज्ञासे कोथा लक्ष्मीरे राखिव
शुनिया से वाक्य ब्रह्मा निवेदन करे ※ उनि नाहि गेले कि रावण राजा मरे
अयोनि सम्भवा उनि जन्मिबेन चाषे ※ जनकेर घरे जन्म मिथिला प्रदेशे
एतेक बलिल यदि ब्रह्मा तपोधन ※ आदिकाण्ड गान कृत्तिवास विचक्षण

---

१ तरकीब २ जन्म - मृत्यु - रहित ब्रह्म ३ विनाश ४ लक्ष्मी ५ जगदम्बा
६ अलौकिक (अयोनि) जन्म ।

जनक ऋषि के हल जोतते समय लक्ष्मी का जन्म

दो० कथा हरिजनम बिलमि[1] कछु, पुनि बरनेउ कृतिवास।
जगदम्बा जिमि जानकी, जनमी जनक-निवास॥
वेदवती कुशध्वज-सुता तजी जबै निज देह।
बध निमित्त लंकेस, सिय प्रगटी धाम-विदेह॥ ६४॥

मिथिला-अधिप जनक ऋषिराजा * यज्ञभूमि जोतत सुतकाजा
लै हर जोतत खेत भुवाला * नभ उर्वसी गमन सोइ काला
लखि अप्सरा कामसर घाता * छिति ऋतुमती, रेत नृप पाता
अवनि-गर्भ सो डिम्ब-सरूपा[2] * जोतत भूमि जहाँ नित भूपा
हर परसत, नृप डिम्ब निहारी * किये टूक दुइ, कौतुक भारी
सुता रतन छवि रमा सरूपा * चपला सरिस, रुदन सुनि भूपा
चकित देव, उत शब्द अकासा * सीरभूमि जो सुता प्रकासा
तव तनया, पालौ गृह जाई * लै नृप अंक चले हरषाई
केहि दुख दैन हरन किय बाला ? * कहत रानि, नहिं उचित भुवाला
जोतत सीर लही यह सीता * पालहु रानि समोद सप्रीता
संततिहीन ! उमड असनेहा * सुता बढ़त दिन-दिन नृप-गेहा
केशपाश घन चवँर समाना * अधर ओष्ठ फल बिम्ब लुभाना

जनक ऋषिर चाषे लक्ष्मीर जन्म

श्री हरिर जन्म-कथा थाकुक एखन * आगेते कहिब माता लक्ष्मीर जनम
येखानेते वेदवती छाड़िल जीवन * सेखाने हइल दिव्य मिथिला भुवन
तार राजा हइल जनक नामे ऋषि * पुत्रेर कारणे राजा यज्ञभूमि चषि
स्वहस्ते लाङ्गले राजा यज्ञभूमि चषे * उर्वशी चलिया याय उपर आकाशे
ताहाके देखिया कामे जनक मोहित * हठात् ऋषिर वीर्य्य हइल स्खलित
दैवयोगे पृथिवी आछिल ऋतुमती * ऋषिवीर्य्य पड़िया हइल गर्भवती
डिम्बरूपे भूमि मध्ये छिल बहुकाले * भासिया उठिल डिम्ब लाङ्गल सिराले
डिम्ब भाङ्गि जनक करिल दुइ खान * कन्यारत्न देखि ताहे लक्ष्मीर समान
उडा-उडा करि कान्दे येन सौदामिनी * आचम्बिते आकाशेते हैल देववाणी
चाषभूमि हैते एइ कन्यार जनम * तव कन्या बटे एइ करिह पालन
शुनिया जनक बड़ हरिष अन्तरे * कन्या कोले करिया तखनि एल घरे
देखि कन्या राजरानी जिज्ञासे तखन * दुःख दिया काहारे आनिल कन्याधन
जनक बलेन क्षेत्रे कन्यार जनम * मम कन्या बटे तुमि करह पालन
अपत्य नाहिक स्नेह बाड़िल अन्तरे * दिने-दिने बाड़े लक्ष्मी जनकेर घरे
घन केशपाश तार येमन चामर * पाका बिम्बफल तुल्य तार ओष्ठाधर

१ टुकड़ा २ अंड के समान।

करगत सुकर सहज कटि अंगा * अँगुरि पदुमपग हिंगुल रंगा
तनछवि सुबरनलता प्रतीता[1] * सीता[2]-जनम नाम सो सीता
अतुल अकथ इंदिरा सरूपा * जेहि छवि मुग्ध विष्णु नररूपा
लक्ष्मी-जनम-कथा सुनि काना * लहै सुतिय, सुत, संपति नाना

पुत्रेष्टि-यज्ञ की समाप्ति पर यज्ञ का चरु राजा दशरथ की तीन रानियों द्वारा खाना और तीनों के गर्भ से चार अंशों में नारायण का जन्म

दो० जनकपुरी श्री-जनम उत, अवधपुरी श्रीकान्त ।
अमर सूल सुर सुखद, किय, लीला लीलाकान्त[3] ॥ ६५ ॥

यज्ञ, वर्ष लौं, दसरथ कीन्हा * यज्ञभूमि प्रभु दरसन दीन्हा
शंख चक्र कर पद्म गदाधर * वनमाला किरीट कुण्डलधर
शृंगिहिं केवल दरस सरूपा * लखत न आन[4] चतुर्भुज रूपा
कह मुनि, दसरथ-पुन्य महाना * जिन निकेत जन्मत भगवाना
कौतुक! सुरन कीन नभवानी * रामजनम, रावनबध जानी
अंधक सों नृप श्रीफल पावा * सो शृंगी चरु[5] सहित मिलावा
आहुति पूर्न शृंगि ऋषि दीना * विष्णु-रूप चरु प्रगटित कीना
चरु सँजति पुनि सुबरन थारी * सुभ छन मुनि दसरथहिं सवाँरी

मण्डित धरिल पारि ताहार बाकलि * हिंगुल मण्डित पादपद्मेर अंगुलि
परमा सुन्दरी कन्या येन हेमलता * सिराले हइल जन्म नाम राखे सीता
लक्ष्मीर रूपेर किवा करिब तुलन * यार रूपे भुलिब आपनि नारायण
यइ जन शुने एइ लक्ष्मीर जनम * धन पुत्र लक्ष्मी तारे देन नारायण
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व विचक्षण * गाइल ए आदिकाण्ड लक्ष्मीर जनम

दशरथेर पुत्रेष्टि यज्ञ श्रो यज्ञेर चरु तिन रानी के भक्षण एवं तिनेर गर्भे नारायणेर चारि अंशे जन्म

मिथिलाय हैल यदि लक्ष्मीर उत्पत्ति * अयोध्याय जन्म निते यान लक्ष्मीपति
दशरथ यज्ञ करे एकइ वत्सर * यज्ञस्थले आसि देखा दिलेन श्रीधर
शङ्ख चक्र गदा पद्म चतुर्भुज कला * किरीट कुण्डल कर्णे हृदे वनमाला
एइरूपे आसि देखा दिल नारायण * केवल देखिल ऋष्यशृङ्ग तपोधन
ऋषि बले दशरथ तुमि पुण्यवान * तव घरे जन्मिते आइल भगवान
हेनकाले देववाणी हैल चमत्कार * विष्णु जन्मे रावणेर करिते संहार
ऋष्यशृङ्ग मुनि दिल यज्ञते आहुति * यज्ञ हैते उठे चरु विष्णुर आकृति
विष्णुमन्त्रे ऋष्यशृग ताहे दिल काठि * ताते फेले दिल अन्धकेर फल गुटि
तुलिलेक चरु मुनि सुवर्णेर थाले * दशरथ हाते दिया कहे शुभकाले

१ मालूम पड़ती थी २ खेत जानने के बाद की रेखा को सीता कहते हैं ३ रामचन्द्र
४ अन्य किसी को ५ यज्ञ की आहुति के लिये हविष्यान्न ।

महरानिन चरु दीजिय जाई * ते सुतवती होयँ सो पाई
चरु नृप लीन, कीन मुनि बंदन * शुचिपथ महल चले अजनन्दन
कैकइ कौशल्या पटरानी * यज्ञप्रसाद देन मन मानी
दोउन, भाग दै भूप समाना * यज्ञभूमि दिसि कीन पयाना
रानि सुमित्रा सकल विलोका * भरत उसास, अतुल उर सोका
कवन द्रव्य मोहिं वञ्चित कीन्हा * हतभागिन मोहिं भूप न चीन्हा
जीवन विफल, विलग मोहिं राखी * केहि विधि सुख, अकेल जो चाखी[1]
करुनामयी कौशिला रानी * कहेउ, सुमित्रा! सुनु मम बानी

दो० सहभामिनि तीनिउ भगिनि, अर्द्ध देहुँ तोहिं अंस।
पै, मम सुत-सहचर सदा, रहै तोर अवतंस ॥ ६६ ॥

ममज[2] दास तव-तनय[3] जेठानी * दै वर मोहिं सनाथहु रानी
एक भाग निज हित धरि शेषा * दियेउ सुमित्रहिं चरु अवशेषा
कैकइ+ कौतुक सकल निहारी * अति सयानि, इमि गिरा उचारी
मम चरु-भाग रानि तव हेता * वचन देहु जो हर्ष समेता
मम चरु-अंस प्रकट तव नन्दन * मम - सुत - सखा सतत[4] मनरंजन
दीदी दया लहौं बड़भागी * ममज, दास तवमत - अनुरागी

प्रथमा नारी के लये कराओ भक्षण * एइ चरु हैते हबे तोमार नन्दन
मुनि चरु हाते दिल राजा वन्दे माथे * अन्तःपुरे गेल राजा सुपवित्र पथे
कौशल्या कैकेयी तार मुख्य दुइराणी * एकभाग छिल चरु कैल दुइ खानि
अग्रभाग दिल राजा कौशल्या राणीरे * शेष भागखानि दिल कैकेयी देवीरे
चरु दिया यज्ञशाले गेल दशरथे * हेन काले सुमित्रा मे लागिल कान्दिते
ऊर्द्धश्वासे आमि कहे छाड़िया निश्वास * कोन द्रव्य खेते राजा ना कैल आश्वास
आमिन दुर्भागा नारी विफल जीवन * आमारे वञ्चिया खेये कत पावे धन
शुनिया कौशल्या राणी ह'ये दयावती * बलिते लागिल राणी सुमित्रार प्रति
मने मानियाछि हेन तिनटि भगिनी * आपन भागेर तोमा दिव अर्द्धखानि
इहाते तोमार यदि जन्मये नन्दन * आमार पुत्रेर संगे रवक से जन
सुमित्रा बलेन दिदि एइ देह वर * मम पुत्र हय तव पुत्रेर नफर
अग्रभाग कौशल्या राखिया निज तरे * शेषभाग दिल तवे सुमित्रा भगिनीरे
ताहा देखि वसिया कैकेयी क्रूरमति * कपटे डाकिया कहे सुमित्रार प्रति
चरुर अर्द्धेक अंश तोमा दिव आमि * सुमित्रा भगिनी एइ सत्य कर तुमि
आमार चरुर अंश हबे ये नन्दन * आमार पुत्रेर संगी क'रो सेइ जन
सुमित्रा बलेन दिदि करिलाम पण * तोमार पुत्रेर दास आमार नन्दन

१ न्यायना　२ मुझसे उत्पन्न पुत्र　३ तुम्हारे पुत्र राम का　४ सदैव।

+ कैकेई का भाव हमने अनुवाद में कृत्तिवासानुसार नहीं वर्णन किया है। बदल दिया गया है।

सुनि कैकई अंस निज दीन्हा * तीनिउ संग पान चरु कीन्हा
हरि, इक अंस, जनम तन धारी * शुभ छन तीनि कोखि अवतारी
दिय नृप सविधि दच्छिनादाना * पूरन याग, द्विजन सन्माना
'नृप सुतवान' सवन वर दीना * तृप्त गमन नज-निज गृह कीना

श्रीराम का जन्म

इत, रानिन चरुपान प्रभावा * कोटिन भानु तेज तन छावा
असित केस सित वयस वृद्धानी * सो तजि, चरुबल तरुनि लखानी
विधि-माया, तीनिउ इक काला * भई ऋतुवती, विदित भुवाला
धारेउ गर्भ, भूप अनुमाना * बढ़त सतत शशिकला समाना
शुभ लच्छन दुइ मास वितीता * चौथ मास, नृप भई प्रतीता
पञ्चम मास गर्भ पगुधारा * समाचार सुभ जग विस्तारा

दो० पुरुबारध[1], मुमुखिन बदन[2], जिमि प्रभात कर चंद।
श्याम उरोज, सलज्ज मन, अहिनिसि[3] पुलक अनन्द ॥ ६७ ॥

कछु बीते रुचि मृतिकापाना * उन्नत उदर, नयन अलसाना
फरकति कछु उठवनि लग भारी * अभरन[4] खसति. अंग पियरारी
असह बसन, तन-बल नित छीना * आभा श्याम उरोजन लीना

एत शुनि शेषभाग दिलेन ताहारे * तिनजन खाइलेन चरु एकबारे
एक अंशे नारायण चारि अंश हैया * तिन गर्भे जन्मिलेन शुभक्षण पाइया
हेथा यज्ञ सांग करि राजा दशरथ * ब्राह्मणेरे धन दान करे विधिमत
ब्राह्मणे तुषिल करि नाना धन दान * सबे आशीर्व्वाद करे हओ पुत्रवान
बिदाय हइया सबे निज देशे जाय * आदिकाण्डे गाइल पुत्रेष्टि यज्ञ साय

श्री रामेर जन्म

हेथा तिन राणी चरु करिया भक्षण * कोटि सूर्य्य जिनि सेइ तिनेर वरण
हइया छिलेन वृद्धा शिरे पाका केश * चरुर भक्षणे येन प्रथम वयेस
विधाता सकल माया करेन घटन * एक काले ऋतुमती हैल तिनजन
दशरथ जानिलेन ए सब सन्दर्भ * ऋतुर लक्षणे जाना गेल सेइ गर्भ
एइमत तिन गर्भ बाड़े दिने दिने * दुइ मासे गर्भ जाना गेल सुलक्षणे
चारिमास गर्भेते प्रतीत हैल मन * पञ्चमास गर्भते शुनिल त्रिभुवन
प्रथम गर्भेते लज्जायुक्ता अहर्निशि * बदन हइल येन प्रभातेर शशि
कुचाग्र हइले काल उदर डागर * मृत्तिकार भक्षणेते सदा समादर
घन घन होइ उठे अलस नयन * पाण्डुवर्ण हैल अंग खसे आभरण
कृष्णवर्ण प्रकाश हइल स्तन बांटे * शरीरे ना रहे वस्त्र नित्य बल टुटे

१ गर्भकाल का पूर्वार्द्ध समय २ मुख ३ रातदिन ४ गहने।

बहुत गर्भ बीते नव मासा ※ लखि भूपति-हिय अमित हुलासा
पञ्चामृत कराय शुचि पाना ※ पावन गर्भ कीन सविधाना
पुन्य पुरातन, तरु फल आवा ※ कौसिल्या हरि सपने पावा
शंख चक्र कर पद्म गदाधर ※ दरस चतुर्भुज दिय सारंगधर
सुवन-भाव अंकहिं लिय रानी ※ कहेउ 'मातु!' प्रभु मञ्जुल बानी
प्रथम कीन मम बहु सेवकाई ※ सुफल, उदर तव प्रगटहुँ आई
पालहु मोहिं दै स्तन पाना ※ अस कहि पुनि अदरस भगवाना
भौंचक रानि निरखि सुख-सपना ※ सकल समोद दसरथहिं बरना
'मातु-मातु' मोहिं नाथ पुकारी ※ अन्धक-बर नृप सत्य बिचारी
हरषि द्विजन बहु सुबरन दाना ※ गत दस मास नृपति अनुमाना
जस-जस प्रसव-काल नियराई ※ तस-तस भूप मोद अधिकाई
अब-तब जनम, निकट, मन धरहीं ※ मंगलगान प्रजागन करहीं
हरि आगमन-भूमि अनुमाना ※ बसति गगन आतुर सुर नाना

दो० दस दिसि मंगल नखत चहुँ, शुभ ग्रह उदित अनन्द।
प्रथम पीर सुनि, प्रसवपुर[2] प्रविसीं[3] नारीवृन्द ॥ ९८ ॥

एइमत हइल से गर्भेर वर्द्धन ※ नयमास गर्भवती हैल तिनजन
देखि दशरथ राजा आनन्दित मन ※ पञ्चामृत दिया कैल गर्भेर शोधन
ये छिल प्राक्तन पुण्य ताहारि कारण ※ कौशल्यारे देन देखा प्रभु नारायण
स्वप्ने शंख चक्र गदापद्म शार्ङ्गधारी ※ चतुर्भुज रूपे देखा दिलेन श्रीहरि
पुत्रभावे हरिके कोले राणी कोले ※ कहिलेन कौशल्यारे डाकिया मा बले
पूर्व्वेते आमार सेवा करेछ आदरे ※ सेइ पुण्ये जन्मिलाम तोमार उदरे
आपनि तोमार गर्भे लयेछि जनम ※ पुत्र बलि स्तन दिया करह पालन
एत बलि अदर्शन हैल नारायण ※ कौशल्या बलेन किवा देखिनु स्वपन
कहिल सकल कथा दशरथ प्रति ※ मा बलिया आमारे ये डाकेन श्रीपति
शुनि दशरथ राजा हरषित मन ※ भावे बुझि सत्य हबे अन्धक वचन
दान द्विजगणेरे दिलेन कत स्वर्ण ※ एइरूपे दश मास हइल सम्पूर्ण
प्रसव समय यत निकट हइल ※ दशरथ भूपतिर आनन्द बाड़िल
एखन तखन राणी हइब प्रसव ※ प्रजागण गान करे सदा शुभ रव
येइ दिन भूमिष्ट हइबे नारायण ※ आकाश युड़िया बसिलेन देवगण
शुभ ग्रह सकल उदित स्थाने स्थाने ※ दशदिक मंगल सकल तारागणे
प्रथमे प्रथमा स्त्रीर गर्भेर वेदन ※ अन्तःपुरे प्रवेश करिल नारीगण

---

१ शीघ्र ही जिस क्षण भी २ सौर सूतिकागृह ३ प्रवेश किया।

शुक्ला नवमि चैत्र मधुमासा * शुभ छन जग जगनाथ प्रकासा
व्यथा न सोनित[1] गर्भ सुपावन * श्री हरि जनम लीन मनभावन
दीपशिखा जिमि तिमिर विनासा * प्रभु-तन-दुति रवि कोटि प्रकासा
श्याम गात प्रभु कुञ्चित कुन्तल[2] * निवरित मुख, सुधांसु[3] छवि झलमल
लंब अजानुबाहु मन रञ्जा * श्रवन खचित दृग नीलमकंजा[4]
नूतन, अकथ, सुकोमल अंगा * अधर ओष्ठ कम विंवित रंगा
जो छवि विश्व जुरै मिलि तीरा * अतुल, अगम श्रीनाथ - सरीरा
पुर-वनितन जय-कलरव कीन्हा * सम्हरि नार-छेदन मन दीन्हा
शुभदूती[5] कौशिल्या - दासी * खुससबरी नृप पाहिं प्रकासी
आभरन आदि सोइ पावा * दसरथ-उर उछाह अति छावा
वसुध गात विभोर अनन्दा * अगनित धन पाये द्विजवृन्दा
पुनि तरंग पुलकावलि छाई * शत-शत सुरभि दान मन भाई
सुभ छन पूँछि सुवनमुख हेता * अवलोकन नृप चले निकेता
रोहिनि-गेह चन्द्र जिमि गमना * सुरपति चले मनो शचि-भवना
चले भूप छवि-सुत अवलोकन * जहँ कौशिला-कोलि[6] मनमोहन
बहु सम्हारि शिशु उर लपिटाई * पुनि-पुनि चुम्ब चंदमुख राई

चैत्र मधु मास शुक्ला श्रीरामनवमी * शुभक्षणे भूमिष्ट ह'लेन जगत्स्वामी
गर्भव्यथा नाहि पाय नाहिक शोणित * शुभक्षणे श्रीहरि हइल उपनीत
अन्धकार घुचे येन ज्वलिलेक बाति * कोटि सूर्य्य जिनिया ताहार देहद्युति
श्यामल शरीर प्रभु चाचर कुन्तल * सुधांशु जिनिया मुख करे झलमल
आजानुलम्बित दीर्घ भुज सुलित * नीलोत्पल जिनि चक्षु आकर्ण पूरित
के वर्णिते हय शक्ति रक्त ओष्ठाधर * नवनीत जिनिया कोमल कलेवर
संसारेर रूप यत एकत्र मिलन * किसे व तुलना दिब नाहिक तेमन
जय जय हुलाहुलि दिल नारीगण * सावधाने करिलेन नाडिका छेदन
कौशल्यार दासी सेइ शुभवार्त्ता नामे * शुभ समाचार दिल गिया राजधामे
शुनि दशरथ पूर्ण पुलक शरीरे * अष्ट आभरण आरो दिलेन दासीरे
परम आनन्द राजा पासरे आपना * कत धन दिल द्विजे के करे गणना
आनन्द सागरे राजा भासे सेइ ठाँइ * पुनरपि दिल दान कत शत गाइ
गणक आनिया करिलेन शुभकाल * पुत्रमुख देखिबारे यान महीपाल
इन्द्र येन चलिलेन शचीर मन्दिरे * चन्द्र येन आसियाछे रोहिणीर घरे
कौशल्या बसियाछे नारायाण कोले * पुत्र देखिबारे राजा गेल हेनकाले
धीरे धीरे दशरथ पुत्र निल बुके * एक लक्ष चुम्ब तार दिल चाँदमुखे

१ रक्त २ घुँघराले केश ३ चन्द्रमा ४ कानों तक पहुँचे नीलकमलवत् विशाल नेत्र
५ 'शुभसम्वादिनी' दासी ६ कौशल्या की गोद में ।

दो० दरिद मोद निधि-कलस लहि, लोचन लोचनहीन
ताहू सों नृप अधिक सुख, तनय विधाता दीन ॥ ६६ ॥

भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न का जन्म

प्रथम अंश प्रगटत घनश्यामा * कैकइ छोभ जनम सुनि रामा
जनम कौशिला - सुत बड़भागी * विधि[1] न प्रथम मोहिं दीन, अभागी
नृप-सुत जेठ राज - अधिकारी * शास्त्र सकल अस नीति विचारी
पूछत मंत्र मंथरा तीरा * तब लौं बढ़ी प्रसव कै पीरा
मंगलघरी प्रगट पद्मासन * अंस द्वितीय जन्म नारायण
भरत सरूप सलोन अनूपा * नखसिख सकल राम अनुरूपा
गई मन्थरा जहँ अजनन्दन * कैकइ-उदर जनम तव नन्दन
मुदित भूप कैकई निकेता * चले सुवन-मुख दरसन हेता
आनन - सुत विलोकि महिपाला * बहु धन दान, द्विजन प्रतिपाला
पीर सुमित्रा प्रसव बहोरी * जन्मति जुगुल तनय कै जोरी
गौरवर्ण दोउ हरि - अवतारा * अनुपम छवि सौमित्रि - कुमारा
रूपसि-प्रसव जुगुल सुत देखी * वनितन जय-ध्वनि कीन विशेखी

दरिद्र पाइल येन निधिर कलस * ततोधिक आनन्दित राजार मानस
अन्धजन येमन नयन लाभे हय * ततोधिक दशरथ पाइया तनय
एतदिने दशरथ मनेते उल्लास * रामजन्म रचिल पण्डित कृत्तिवास

भरत, लक्ष्मण ओ शत्रुघ्नेर जन्म

एक अंश चारि अंश हैल नारायण * शुनिया दुःखित बड़ कैकेयीर मन
आजिहैते कौशल्याये बाड़िल सोहागे * मोरे पुत्र केन विधि नाहि दिल आगे
ज्येष्ठ पुत्र राजा हय सर्व्वशास्त्रे बले * मम पुत्र विधि आगे केन नाहि दिले
कैकेयी बलेन कुंजी रा करे केमन * बलिते बलिते हैल गर्भेर वेदन
छिलेन मायेर गर्भे करि पद्मासन * शुभक्षणे जन्मिलेन प्रभु नारायण
कौशल्या राणीर पुत्र रूप लावण्य * सेइ मुख सेइ नाक किछु नहे भिन्न
कुंजी गिया जानाइल भूपतिर घरे * हइल तोमार पुत्र कैकेयी उदरे
शुनि दशरथ राजा आपना पासरे * पुत्र मुख देखे गिया कैकेयीर घरे
पुत्र मुख देखि राजा अति हृष्टमति * धन वितरणेते देन अनुमति
सुमित्रार हइलेक गर्भेर वेदन * यमज उभय पुत्र प्रसवे तखन
गौर वर्ण हैल दोहे विष्णु अवतार * सुमित्रा प्रसव कैल यमज कुमार
यखन यमज पुत्र प्रसवे सुन्दरी * जय-जय हुलाहुलि दिल सब नारी

---

१ विधाता ।

दीन सगर्व खबरि पुनि चेरी * जोरी[1] नाथ जनम सुत केरी
सुनत अवधपति मोद अपारू * दीन लुटाय, द्विजन भण्डारू
निरखि सुतन मुख, भूप पयाना * करैं गनित[2] जहँ बुध-विद नाना
रविकुल धनि, नृप सुयस बखाना * सुभ ग्रह घरी अकथ भगवाना

दो० सारभौम[3] मंगल सुवन, रामजनम सुनि गान।
हरन त्रास-यम, लहनसुख, सुत, श्री, संपति-खान॥
चले दान लहि गनित-बुध[4] उत पुर अनँद-हिलोर।
अवध, प्रजा—चारिउ बरन, मगन, अवध सुख-सोर॥ १००॥

श्रीराम जन्म में सभी को आनन्द

छं० रघुनाथ-जनम सुनि, नाचत ऋषि-मुनि, दण्ड-कमण्डल हाथा।
नाचत सुर सुरपुर, धरा नारि-नर, अवध नचत नरनाथा[5]॥
नाचत विरंचि रंग, देवयानि संग, इन्द्र नर्त्त शचि-साथा।
जड़-जंगम जेते, नृत्य अचेते, वसुमति[6] नर्त्ति सनाथा॥
दिवि अभरन-धारी, रूपसि नारी, चलीं दरस भगवन्ता।
विद्याधरि-नर्तन, सकल नगर ध्वनि, रतन प्रदीप ज्वलंता॥

दासी गिया दशरथे कहिल गौरवे * आर दुइ पुत्र राजा सुमित्रा प्रसवे
शुनिया हइल तार आनन्द अपार * ब्राह्मणेरे लुटाइल सकल भाण्डार
चलिलेन दशरथ परम कौतुक * तिन घरे देखिलेन चारि पुत्र मुख
तिन दण्ड बेला हैल गणकेर मेला * खड़िते गणिया देखे शुभ क्षण वेला
सूर्य्यवंशे आछे बहु राजार सुकीर्त्ति * सबा हैते सेइ पुत्र राजचक्रवर्ती
इहार कोष्ठिर किबा करिब गणन * एमन लक्षण बुझि प्रभु नारायण
येइ जने शुने प्रभु रामेर जनम * धन पुत्र लक्ष्मी हय भय पाय यम
अयोध्याय हइल आनन्द कोलाहल * क्षत्रि वैश्य शूद्र सबे करिल मंगल
गणके तुषिल राजा दिया नाना धन * आदिकाण्ड गान कृत्तिवास विचक्षण

श्री रामेर जन्मे सकलेर आनन्द

रामेर जनम शुनि, नाचिल सकल मुनि, दण्ड कमण्डलु करि हाते।
स्वर्गे नाचे देवगण, मर्त्ये नाचे मर्त्यजन, हरिषे नाचिछे दशरथ॥
श्री देवयानिर संगे, नाचिछेन ब्रह्मा रंगे, शची संगे नाचे शचीपति।
स्थावर जंगम आर, सबे नाचे चमत्कार, उल्लासित नाचे वसुमती॥
दिव्य-दिव्य आभरण, परियत नारीगण, चलिजाय अनेक सुन्दरी।
चलि जाय राजपथे, श्रीरामेरे निरखिते, सम्मुखेते नाचे विद्याधरी॥

१ जोड़ी (दो) २ ज्योतिषी-गणना ३ चक्रवर्ती ४ ज्योतिषी ५ दशरथ
६ पृथ्वी।

कौशिला सुवन जनि[1], गगन सुरन ध्वनि, 'रघुपति जय श्रीकन्ता' ।
जन्मे नारायन, बधैं दसानन, सुरन कलेस-भनन्ता[2] ।।
प्रभु-ध्यान लगावैं, चरित जो गावैं, धनि ! भवसागर तरहीं ।
नर-पुन्य उदित, हरि देवलोक तजि ! धराधाम अवतरहीं ।।
यम-त्रास नसावनि, कथा सुपावनि, सुनि, सुत संपति लहहीं ।
पूरन अभिलासा, कवि कृतिवासा, वालमीकि अनुसरहीं ।।

श्रीराम-जन्म से रावणको आशंका एवं उसके निवारण का उपाय सोचना

अवध जनम जो प्रभु, तौ लंका * हित अतंक,[3] रावन मन संका
अचरज दनुज, सिंहासन हाला * गिरे मुकुट छिति, हाल बेहाला !
धरनि किरीट खसकि किमि आये * कौतुक कस ? अपसकुन दिखाये
कित घननाद ! आनु कोदण्डा * करौं बसुमती[4] - बासुकि[5] खण्डा
कहेउ विभीषण धर्म सरूपा * तव वध, प्रभु प्रगटे हरि रूपा
धरनि-सहसफन[6] कोप अकारन * आन न केहु अपराध दसानन
तबहिं सुरन नभबानी कीन्हा * दसरथ-सदन जनम प्रभु लीन्हा
सो सुनि चिन्तित अतिव दसानन * कहेउ बोलाय दूत शुक-सारन

रत्नेर प्रदीप ज्वले, पुरी पूर्ण कोलाहले, कौशल्या हइल पुत्रवती ।
गगनमण्डले थाकि, देवगण बले डाकि, जय-जय-जय रघुपति ।।
जन्मिलेन नारायण, बधिवरे दशानन, देवेर करिते अव्याहति ।
इहा शुने येइ जन, किम्बा करे अध्ययन, भवे मुक्त हय सेइ कृती ।।
वैकुण्ठ करिया शून्य, प्रकाशिते नरपुण्य, अवतीर्ण प्रभु भगवान ।
रचिल ये कृत्तिवास, पूर्ण करि अभिलाष, बन्दिया से वाल्मीकि पुराण ।।

श्री रामेर जन्मे रावणेर अमंगल आशंका एवं तन्निवारणेर उपाय चिन्तन

अयोध्याते यदि जन्म निलेन श्रीपति * लङ्काय आतंक देखे सदा लङ्कापति
आचम्बिते रावणेर सिंहासन दोले * माथार मुकुट खसि पड़े भूमितले
दशमुखे हाय - हाय करे दशानन * आचम्बिते मुकुट खसिल कि कारण
कोथा गेल इन्द्रजित आन धनुर्व्वाण * पृथिवी वासुकि करि करि खाना-खान
हेनकाले कहेन धार्म्मिक विभीषण * जन्मियाछे ये तोमार बधिबे जीवन
पृथिवीर प्रति क्रोध कर कि कारण * तोमारे बधिते जन्म निल नारायण
आर कारो अपराध नाहि दशानन * वासुकी काटिते एबे कह कि कारण
सेइकाले आकाशेते हैल देववाणी * दशरथ घरेते जन्मिल चक्रपाणि
शुनिया चिन्तित बड़ राजा दशानन * डाक दिया बले शुन शुक ओ शारण

१ जन्म देकर २ क्लेशहारी ३ आतंक, भय ४ पृथ्वी ५ शेषनाग ६ पृथ्वी और शेषनाग पर ।

लखहु अवनि पग-पग दोउ सोधी * कितै जनम रिपु मोर विरोधी
अबहिं हनौं सोइ सैसव-काला[1] * नतरु प्रबल पनपत जंजाला
बंदि लंकपति, आयसु धारी * लंघि उदधि, चर करैं विचारी
वैष्णव परम दूत शुक-सारन * त्रिभुवन प्रकट पुरंदर कारन
कह शुक, सुनु सारन ! अस भावै * श्रीपति अवध जनम मन आवै
धन्य भाग ! दोउ अवसर पाई * लहैं दरस प्रभु चरनन जाई
लखत अवध छबि सुरपुर भासा * घर-घर रतन प्रदीप प्रकासा
बिछलत पग, पथ चहुँ चिकनाई * साँझ प्रवेस महल दोउ पाई

दो० तहँ कौशल्या-अंक प्रभु, राजत बाल सरूप ।
जाकी जा विधि भावना, लहैं दरस अनुरूप ॥ १०१ ॥

युगुल बन्धु-चर भक्त महाना * दरस चतुर्भुज दिय भगवाना
शंख चक्र कर पद्म गदाधर * वनमाला, कुण्डल, किरीटधर
शत कोटिन विधि[2] स्तुति करहीं * हरि-तन तीनि लोक चर लखहीं
सनक, सनातनादि प्रह्लादा * नारद निरखि, चरन[3] अह्लादा[4]
भक्ति भरे दोउ, लखि भवमोचन * लोटि मही प्रस्रवति भरि लोचन
जोरि हाथ स्तुति सुख लहहीं * पुनि-पुनि सहस दण्डवत करहीं

एके एके देखे एस पृथिवी भुवने * आमार शत्रुर जन्म हैल कोनखाने
एखनि मारिब तारे अति शिशुकाले * प्रबल हइबे बड़ घटिबे जञ्जाले
रावणेर आज्ञा चर बन्दिलेक माथे * समुद्रेर पार हैया लागिल भाविते
परम वैष्णव दूत शुक ओ शारण * वासवेर द्वारी तारा जाने त्रिभुवन
शुक बले शुन मोर भाइरे शारण * अयोध्याय जन्मिलेन बुझि नारायण
आजिशुभ दिन हैल आमा दोंहाकार * भाग्यफले देखि गिया चरण ताँहार
एत बलि अयोध्याय दिल दरशन * देखिल अयोध्या येन वैकुण्ठ भुवन
रतन प्रदीप ज्वले प्रति घरे घरे * तैल हरिद्राय पथे चलिते ना पारे
अलक्षिते सान्धाइल कौशल्यार घरे * बसेछेने कौशल्या श्रीराम कोले करे
याहार मानसे थाके ये रूप बासना * सेइ रूपे प्रभुरे देखये सेइ जना
परम वैष्णव तारा भाइ दुइ जन * चतुर्भुज रूपे देखिलेन नारायण
शंख चक्र गदा पद्म चतुर्भुज कला * किरीट कुण्डल शोभे हृदे वनमाला
शत कोटि ब्रह्मा ताँरे करिछे स्तवन * प्रभुर शरीरे देखे ए तिन भुवन
प्रसंगेते देखिल ये सर्व्व पारिषद * सनक सनातन आदि प्रह्लाद नारद
एइ रूपे दुइ भाइ प्रभुरे देखिया * सहस्र प्रणाम करे भूमे लोटाइया
भक्तिभावे करये अनेक प्रणिपात * स्तवन करिछे तारा करि जोड़ हात

१ शिशुअवस्था में २ ब्रह्मा ३ दूतों को ४ हर्ष ।

राकस जाति अधम अज्ञानी * तव महिमा अपार किमि जानी
ब्रह्मादिक पद लहे न ध्याना * चरन[1] सो चरन[2] प्रतच्छ प्रमाना
कृपासिन्धु प्रभु गहन, गुनागर * दीजिय वर, निसिचर अति पामर
सदा रमन मन अंबुज-चरना * यहि विधि बंदि, लंक किय गमना
सुक-सारन मग मंत्र मिलावा * रावन सन सब कथा दुरावा
पलक निमेस अटे दोउ लंका * कहेउ, दनुजपति रहौ निसंका
तिल-तिल छानि, लखेउँ त्रैलोका * नाथ ! न तव-रिपु कतौं विलोका
खसे किरीट अमंगल जानी * जल स्नान तीरथन आनी
दीन, द्विजन दै सुबरन दाना * टरै विपति अपसकुन नमाना
खिली केतकी भादौं रंगा * कह ठठाय दसमुख इकसंगा

दो० अबुझ विभीषन ! बन्धु करु, सुक-सारन विस्वास।
घरनि सोधि आये, कतौं जनि मम रिपु आभास ॥ १०२ ॥

अवहिं कहा परिनाम लखाई * अवसर परे विलोकेउ भाई ![3]
आयसु पुनि पयोधि[4] दिय रावन * सकल तीर्थन सुचि जल लावन
तनिक न देर जोरि जुग पानी[5] * प्रस्तुत सकल तीर्थन - पानी
सोई सुचि सलिल कीन स्नाना * दरिद दुखीजन सुवरन दाना

राक्षसेर जाति मारा बड़इ अधम * तोमार महिमा जाने आमरा अक्षम
ये पद ब्रह्मादि देव नाहि पाय ध्याने * हेन पाद-पद्म देखि प्रत्यक्ष प्रमाणे
एइ निवेदन करि शुन महाशय * तव पादपद्मे येन मोर मन रय
कृपार सागर तुमि प्रभु गुणधाम * एत बलि गेल तारा करिया प्रणाम
पथे येते दुइ भाइ भाविलेक मने * एकथा कहिब नाइ पापी दशाननें
चक्षेर निमिषे तारा लङ्कापुरे गिया * रावणेरे कहे गिया आगे दाँड़ाइया
एके एके देखिलाम ए तिन भुवने * तोमार ये शत्रु आछे नाहि लय मने
मुकुट खसिल राजा हबे अपमान * एकाल तीर्थेर जले कर तुमि स्नान
सुवर्ण करह दान दीन द्विजवरे * अमंगल घुचिबे आपद याबे दूरे
दशमुख मेलिया रावण राजा हासे * केतकी कुसुम येन फुटे भाद्रमासे
ना बुझिया कथा कह भाई विभीषण * तोमार नाहिक शत्रु हेन लय मन
रावणेर कथा शुनि बले विभीषण * परिणामे एइ कथा करिबे स्मरण
रावण समुद्र बलि लागिल डाकिते * आसिया समुद्र दाँड़ाइल जोड़ हाते
राजा बले पृथिवीते यत तीर्थ आछे * सकल तीर्थेर जल आन मोर काछे
वाक्य मात्र बलिते विलम्ब ना हइल * सकल तीर्थेर जल सम्मुखे आइल
तीर्थजल दशानन करिलेक स्नान * दरिद्र दुखीरे राजा करे स्वर्ण दान

१ दूतों को २ चरण ३ विभीषण ने रावण से कहा ४ समुद्र ५ दोनो हाथ।

शत-शत सुरभि, शिला संकल्पा * अमित दान लंकेश सदर्पा
दान-पुन्य करि सकल विधाना * भयेउँ अमर, दसकन्धर जाना

वानरों का जन्म

इत नररूप जनम जगदीसा * उत सुरगन प्रगटत तन-कीसा[1]
निज-निज तेज देवगन दीन्हा * गर्भ वानरिन धारन कीन्हा
'सुरपति' अंस 'बालि' बलवाना * 'भानु' तेज 'सुग्रीव' महाना
कन्द मूल फल खाय रसाला * किष्किंधा तिन शौर्य विशाला
उद्गम धन बाढ़ति, धनरासी * तेज, तेज तहँ अवसि प्रकासी
सचिव 'जाम्ब' 'चतुरानन' धारा * 'हेमकूट' पुनि 'वरुन' - कुमारा
बाढ़ति दिन-दिन जिमि तरु-शाला * शंकर-सुत 'केसरी' विशाला
'यम' सुत पाँच तासु अनुहारा * प्रबल 'प्रमाथि' 'कुबेर' - कुमारा
'चन्द्र'-तेज 'दधिमुख' बलसीला * 'अग्नि' अंश सेनापति 'नीला'

सो० 'धन्वन्तरिहिं' 'सुषेन', ज्ञान द्रव्य-गुन सकल जिन ।
कपि 'सुषेन' कर दंन, सुत 'महेन्द्र' 'देवेन्द्र' दोउ ॥

दो० सुर जेते, निज तेज दै, जन्मे कपि बलवन्त ।
प्रथक-प्रथक, रसना अकथ, कोटिन कीस अनन्त ॥ १०३ ॥

यतेक काञ्चन दिल नाम कर कत * धेनु दान शिला दान करे शत-शत
दान पुण्य करिया बसिल दशानन * भाविल अमर आमि नाहिक मरण
कृत्तिवास पण्डितेर श्लोक विचक्षण * रामेर प्रीतिते हरि बल सर्व्वजन

वानरगणेर जन्म

नर रूपे जन्मिलेन प्रभु नारायण * बानर रूपेते जन्म निल देवगण
विधाता बलेन शुन यत देवगण * ये यथा वानरी पाओ कर आलिंगन
एक वानरीते रति इन्द्र सूर्य करे * दुइ पुत्र जन्मिलेक ताहार उदरे
हइल इन्द्रेर तेजे बालि कपिवर * सुग्रीव वीरेर जन्म दिलेन भास्कर
किष्किन्धार फल मूल खाइते रसाल * फलमूल खाय दोंहे विक्रमे विशाल
तेज हैते तेज बाड़े सम्पदे सम्पद * हइल बालीर पुत्र कुमार अङ्गद
हइल ब्रह्मार तेजे मन्त्री जाम्बुवान * हइलेन पवनेर तेजे हनुमान
हेमकूट नामे कपि वरुणनन्दन * पञ्च पुत्र यमेर ये यम दरशन
जन्मिल शिवेर तेजे केशरी वानर * दिने दिने बाड़ेन ये शाल तरुवर
अग्नि तेजे हइलेन नील सेनापति * कुबेरेर तेजे जन्मे वानर प्रमाथी
सुषेणेर जन्म हय धन्वन्तरि तेजे * अहिविद्या विश्वशास्त्र दिल तार माझे
महेन्द्र देवेन्द्र हइल सुषेण नन्दन * चन्द्रतेज दधिमुख हइल तखन
प्रतेक कहिले हय पुस्तक विस्तर * एकैक देवेर तेजे एकैक वानर
कृत्तिबास पण्डित ये सुखी सर्व दण्डे * वानरेर जन्म एवे गाय आदिकाण्डे

---

१ बानर शरीर ।

दशरथ के चारों पुत्रों का अन्नप्राशन और नामकरण

आतुर नृप इत, गत दिन चारी * पचयें प्रथम अशौच निवारी[1]
छठी पूजि पुनि राति-जागरन * अठयें शिशुन कलाई-बन्धन
पुनि निमंत्रि पुर-बाल समाजा * असन-बसन-अभरन दिय राजा
दिवस त्रयोदस अशुचि निवारा * कतक दान नृप नाहिं सम्हारा
चारिउ सुवन वयस षड्मासा * सबन सुभघरी अन्नप्रासा[2]
अवनि - महीप, निमंत्रन पाई * दशरथ-सदन जुरे सब आई
गुरु बशिष्ठ शुभ साइत देखी * दिय मुख अन्न समोद विशेखी
भूपति मुदित अंक लै चारी * मधु जल अन्न कञ्जमुख डारी
सुमुख नन्दनन पुनि बैठारी * कौतुक रत्न द्रव्य दिय भारी
सकल सतोष मुदित सब काहू * नामकरन कर सबन उछाहू
निगमागम[3] जँह स्रोत पुराना[4] * जासु जाप मों त्रिभुवन-त्राना
वालमीकि जोइ जप अविरामा * नाम कौशिला-सुत सोइ 'रामा'
सहन भार-मेदिनी[5] समर्था * राखेउ 'भरत' नाम सोइ अर्था
पुनि जे युगुल सुमित्रानन्दन * जेठ 'लखन' लघु सुत 'रिपुसूदन'
दसरथ सुनत चारि सुत नामा * दीन भूसुरन[6] अगनित ग्रामा

दशरथेर चारिपुत्रेर अन्नप्राशन ओ नामकरण

एकेक गणने ये हइल चारि दिन * पाँच दिने पाँचुटी करिल सुप्रवीण
छय दिने षष्ठीपूजा निशि जागरणे * दिल अष्ट कलाइ अष्टाहे शिशुगणे
डाकिया आने राजा बालक गणेरे * कापड पूरिया सोना दिल सबाकारे
त्रयोदशे राजार हइल अशौचान्त * कतेक करिल दान नाहि तार अन्त
छय मास वयस्क हइल चारि जन * कराइल सवाकार ओदन-प्राशन
आमन्त्रण करिया सकल क्षत्रगणे * आनाइल दशरथ आपन भवने
आसिया वशिष्ठ मुनि महानन्द मने * चारि पुत्र मुखे अन्न दिल शुभक्षणे
दशरथ चारि पुत्र ल'ये निज कोले * मिष्ठ अन्न दिल जल वदन कमले
बसिलेन चारि भाइ सुचारु वदन * कौतुके यौतुक दिल सबे रत्न धन
सकले यौतुक निले आसि राजधाम * विचार करेन सबे राखेन कि नाम
विचारिया चारिवेद आगम पुराण * ये मन्त्र हइते लोक पावे परित्राण
सेइ मन्त्र बाल्मीकि जपेन अविराम * कौशल्या पुत्रेर नाम राखिल श्रीराम
पृथिवीर भार सहिबेन अविरत * तेइ हेतु तार नाम हइल भरत
सुमित्रार हइयाछे यमज नन्दन * शत्रुघ्न कनिष्ठ तार ज्येष्ठ श्री लक्ष्मण
राजा चारि नन्दनेर शुनिलेन नाम * ब्राह्मणेरे दिल दान कत शत ग्राम

१ पहला नहान पड़ा (सौर में)। २ अन्नप्राशन, पसनी ३ वेद शास्त्र ४ पुराण
५ पृथ्वी का भार ६ ब्राह्मणों को।

रजतशिला, सुबरन अरु गाई ❋ शतविधि शत-शत बरनि न जाई

दो० सुरभि दुधारू सहस दिय, विविध दान सन्मान ।
सहित वशिष्ठ, असीसि नृप, मुनिगन कीन पयान ।। १०४ ।।

श्री राम-लक्ष्मण आदि की बालक्रीड़ा

छठे मास हरि चलत बकाईं ❋ बिहँसत चढ़त मातु करिहाँईं
छिन पितु-अंक, मातु छिन गोदी ❋ तोतरि बोल, दोउन हिय मोदी
ससिमुख राम, सुधा सम बतियाँ ❋ हँसी मंद, दुति उघरैं दतियाँ
वर्षगाँठ सुभघरी बहारा ❋ कटि करधनि गर कञ्चन हारा
भाल मध्य सुबरन लटकनिया ❋ पग झंकार रतन पैजनिया
विविध बालक्रीड़ा बहु करहीं ❋ नेह समान परस्पर धरहीं
राम चलत, लछमन पग डारा ❋ पुनि रिपुदमन भरत अनुसारा
लछमन - राम, भरत - रिपुसूदन ❋ निज चरु अंस लखे दोउ जन
पल न राम बिन, नृप कोउ काला ❋ तिल बिछोह दुख दुसह कराला
ध्यान न सुलभ चरन चतुरानन ❋ पुनि-पुनि चुम्ब तासु मुख राजन
नित्य बढ़त शशिकला प्रमाना ❋ सबन रूप लावण्य समाना
एक अंस हरि चारि सरूपा ❋ माया-राम विलोकत भूपा
सदा निहाल राम पै वारैं ❋ मन, मुनि अंधक-शाप विचारैं

रजत काञ्चन दिल नाम लब कत ❋ धेनु दान शिला दान करे शत-शत
नाना दान दिय करे बशिष्ठेर मान ❋ दुग्धवती गाभी दिल सहस्र प्रमान
आशीर्वाद करि घरे गेल मुनिगण ❋ आदिकाण्डे श्रीरामेर नाम सङ्कलन

श्रीराम लक्ष्मणादिर बालक्रीड़ा

छयमास वयस्क राम देन हामागुडि ❋ हासिया मायेर कोले यान गड़ागड़ि
क्षणेक मायेर कोले पितृकोले क्षणे ❋ वदने ना आसे कथा आध आध बोले
श्रीरामेर चन्द्रानने अमृत बचन ❋ प्रकाशित मन्द मन्द हासिते दशन
एक वर्ष वयस्क हइले भाइ कटि ❋ पीत धड़ा परिधान गले स्वर्णकाँठि
काँठिर मध्येते दिल सोनार किङ्किणी ❋ रतन नूपुर पाय रुणुरुणु ध्वनि
करेन श्रीराम खेला बालकेर सने ❋ परस्पर सम्प्रीति हइल चारिजने
श्रीराम चलिते पथे चलेन लक्ष्मण ❋ भरतेर चलवेते चलेन शत्रुघ्न
यार ये चरुर अंश जानिल ताहाते ❋ श्रीराम लक्ष्मणे मिले शत्रुघ्न भरते
यथा तथा यान राजा राम यान साथे ❋ एक तिल अदर्शने प्रमाद ताहाते
ब्रह्मा आदि याँर पद ना पाय मनने ❋ पुनः पुनः चुम्ब देन ताँहार वदने
चन्द्रकला येमन वर्द्धित दिने दिने ❋ रूप सेइ लावण्य बाड़िल चारिजने
एक विष्णु चारि भाइ मायार कारण ❋ राम देखि दशरथ भावे मने मन
सर्व्व क्षण दशरथ रामेरे नेहाले ❋ अन्धक मुनिर शाप मनें मने बले

मुनि-सराप मोहिं भा फलदाई * सुतन-दरस बिन जीव नसाई
वर्ष सहस नव—कौतुक राजू * पायेउँ 'राम' पुन्यफल आजू
नेह सबन, पुनि राम विशेखी * जीवन सफल सदा सुख देखी

दो० उठत मनोरथ विविध नित, लागेउ पञ्चम वर्ष।
पाटी-पूजन धाम गुरु, पठयेउ भूप सहर्ष ॥ १०५ ॥

श्री राम को शास्त्र और अस्त्र विद्या की शिक्षा

गुरुगृह पढ़न गये सब भाई * बरनाछरी बशिष्ठ सिखाई
विविध वर्ण, आकृति तिन नाना * अष्टशब्द+ हरि कुशल निधाना
काव्य, व्याकरन, श्रुति मन लाई * पारंगत स्मृति रघुराई
चौसठ कला अल्प दिन जाना * कवन शास्त्र प्रभु जासु न ज्ञाना
शेष अध्ययन, गुरुहिं प्रनामा * अस्त्र शस्त्र सीखत पुनि रामा
भोर बन्धु सब जाइँ अखारा * करइँ जोर भिरि मल्ल जुझारा
डण्डा-गुलि अरु लाठी हाँथा * डटत न कोउ विक्रम रघुनाथा
अचल मेरु सम प्रभु कर हाला * लरजत भट न देत कोउ ताला
भानुबंस जन्मत धनुधारी * चाप-सुमन धरि काननचारी
सायक राम जाहि संधाना * तीनिहु लोक न ताकर त्राना
जे नरेस दसरथ-प्रतिकूला * डरपत, राम-तेज तिन सूला

शाप दिल मुनि मोरे गौरव कारण * एइ पुत्र ना देखिले आमार मरण
नय हाजार वर्ष राज्य करिनु कुतूहले * राम हेन पुत्र पाइलाम पुण्य फले
पुत्र मुख देखि सदा जीवन सफल * दशरथ गृहे राम प्रथम प्रबल
एइ सब दशरथ करे अभिलाष * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

श्री रामेर शास्त्र ओ अस्त्र विद्या शिक्षा

पञ्च वर्ष गत हय हाते दिल खड़ि * पड़िते पाठना राजा बशिष्ठेर बाड़ी
क ख ग आठार फला बानान प्रभृति * अष्टशब्द पाठ करिलेन रघुपति
व्याकरण काव्यशास्त्र पड़िलेन स्मृति * अवशेषे लिखिलेन राम चतुःश्रुति
कोन शास्त्र नाहि तार हय अगोचर * चौद्द दिने चतुःषष्टि विद्याते तत्पर
विद्या पड़ि करिलेन गुरुरे प्रणाम * अस्त्र विद्या सेइ क्षणे शिखिलेन राम
प्रातःकाले चारि भाइ यान मालघरे * मल्लविद्या शिखिलेक सकले समादरे
गुलि दाँड़ा निया राम लाठरि खेलान * रामेर विक्रमे सब मालेर पयान
राम संगे कोन माल नाहि धरे ताल * सुमेरु पर्व्वते येन करिते साताल
सूर्य्यवंशी बालक धनुक भाल जाने * हाते फूलधनु राम बेड़ान कानने
धनु हाते करि राम यारे एड़े बाण * त्रिभुवने ताहार नाहिक परित्राण
दशरथ राजार विपक्ष यत छिल * रामेर विक्रम देखि सबे पलाइल

+ 'अष्ट शब्द' से तात्पर्य कदाचित् शब्दों के आठो कारकों के रूपों से है।

एक दिवस धनु-पुहुप सवाँरी * लखन सहित कानन पग धारी
मृगया हेतु फिरत दोउ कानन * असुर मरीच मिलेउ मनभावन
कहुँ अदरश्य कहुँ प्रगट सरूपा * आयो राम सम्मुख मृगरूपा
निरखत मृग, प्रभु कौतुक छावा * बान अचूक सुचाप चढ़ावा
उल्कापात सरिस सर जाई * असुर भीत, भजि चलेउ बराई

सो ० सो पलाय मतिमंद, साँस लीन मिथिलापुरी।
सुरगन अमित अनन्द, निरखि राम विक्रम विपुल ।। १०६ ।।

सब विधि प्रभु समरथ मनभावन * निसचय मरन निकट अब रावन
अथये[1] रवि, छिति साँझ सवाँरी * थकित लखन-मुख मलिन निहारी
एक दिवस-श्रम दुसह, अधीरा * हनि रिपु ककस[2] मिटइ द्विजपीरा
आमलकी[3] निचोरि मुख डारी * छुधा-तृषा मेटन सुखकारी
तालौं सरवर[4] अनुपम लखहीं * नीर विविध खग कलरव करहीं
कहेउ विरञ्चि सुनहु सुरनाथा * दसरथ-गेह जनम जगनाथा
नर-तन धरि प्रभु निज नहिं चीन्हा * रावन-हनन जनम जग लीन्हा
वन रन-असुर ! असन फल-मूला ! * वर्ष चतुर्दस किमि अनुकूला ?
अमिय[5] मृनाल[6] भरहु सुरराई * सुधापान श्रम-छुधा नसाई

यतने खेलेन राम फूलधनु हाते * एक दिन वने गेल लक्ष्मण सहिते
मृग चाहि दुइ जन बेड़ान कानन * तखन मारिच सगे हइल मिलन
कोन खाने गेल सेइ मारिच निशाचर * मृग रूप हैया गेल रामेर गोचर
मृग देखि रामेर कौतुक हइल मन * धनु के अव्यर्थ बाण जुड़िल तखन
छुटिल रामेर बाण तारा येन खसे * महाभीत मारीच पलाय महा त्रासे
श्रीरामेर बाण शब्दे छाड़िल से वन * जनकेर देशे गेल मिथिला भुवन
रामेर विक्रम देखि देवगण भाषे * एत दिने रावण मरिबे अनायासे
सूर्य्य अस्त गेल यथा बेलार विराम * रण श्रान्त लक्ष्मणेरे देखिलेन राम
मलिन हइया गेल लक्ष्मणेर मुख * देखिया श्रीराम पान अन्तरेते दुःख
एक दिन दुखे भाइ हइले एमन * केमने मारिबा बैरी राखिबे ब्राह्मण
आमलकी फल पाड़ि देन तार मुखे * क्षुधा तृष्णा दूरे गेल खान मनोसुखे
हेन काले देखिल निकटे सरोवर * नाना पक्षी जले आछे करे कलरव
एमन समये ब्रह्मा कन पुरन्दरे * जन्मेछे आपनि हरि दशरथ घरे
नव रूपे आपनाके विस्मृत आपनि * रावण मारिते मात्र अवतीर्ण तिनि
चतुर्द्दश वर्ष तिनि थाकिबेन वने * फल मूलाहारे युद्ध करिबे केमने
मृणाल भितर तुमि राख गिया सुधा * सुधापाने रामेर ना लागिबेक क्षुधा

१ अस्त हुये २ किस प्रकार ३ आवला ४ तालाब ५ अमृत ६ कमल का डण्ठल।

सुरपति सुधा नाल सरसावा * सोइ छन श्रीपति लखन बुझावा
लखन मृनाल तोरि प्रभु दीना * सुधा मृनाल पान दोउ कीना
छुधा, तृषा, श्रम गत; दोउ भाई * शयन सेज - पल्लव सुखदाई
श्रम उपरांत, नींद अस आई * सोवत मातु-अंक मनु पाई
निरखि न राम, इतै महतारी * अस्त-व्यस्त नृप निकट पधारी
उत अतिकाल, न सुत अवलोका * सभा विदा करि, भूप ससोका
लखहिं सुवन, चलि मातु-निवासू * भई भेंट दोउ मग-रनिवासू

दो० कौशल्या पूछत विकल, कहहु नाथ कित राम ?
भोजन विविध सेरात[1] मग जोहौं[2], तात न धाम ॥ १०७ ॥

सुध-बुध दसरथ सुनत बिलानी[3] * बूझत, सुत अलोप कस रानी ?
दोउ किय गमन कैकयी-धामा * पूछत—कतौं लखे तुम रामा ?
सुवन-कञ्जमुख दिवस न देखा * थिर न प्रान, उर त्राम बिसेखा
दरसन आजु राम गुनखानी * लहे न प्रभु, कह कैकयि रानी
जहँ सौमित्र[4] तहाँ रघुनाथा * सदा भरत रिपुसूदन साथा
नगर भ्रमत राजा अरु रानी * राम-सखा खेलत जहँ जानी

एइ आज्ञा पाइलेन देव पुरन्दरे * राखिया गेलेन सुधा मृणाल भितरे
हेनकाले लक्ष्मणेरे बलेन श्रीराम * मृणाल तुलिया आन करि जलपान
लक्ष्मण आनिया दिल श्रीरामेर हाते * दुइ भाइ सुधा खान मृणाल सहिते
क्षुधा तृष्णा दूरे गेल सुस्थ हैल मन * वृक्षपत्र पातिया ये करिल शयन
परिश्रमे सुनिद्रा हइल वृक्षतले * आछेन श्रीराम येन शुये मातृकोले
ना देखिया श्रीरामेर हइया कातर * आस्ते व्यस्ते गेल राणी राजार गोचर
हेथा राजा बहुक्षण रामे ना देखिया * मने सुख नाहि येन अज्ञान हइया
सबारे बिदाय दिया गेलेन आवासे * रामेरे देखिब बलि कौशल्यार पाशे
दुइ जने पथेते हइल दरशन * चिन्तिता हइया राणी जिज्ञासे तखन
प्रस्तुत आछये घरे खाद्य नाना विध * बहुक्षण रामे केन ना देखि सन्निध
दशरथ बले राणी कि कहिला कथा * देखिने ना पाइ रामे तारा गेल कोथा
बुझि राम रहियाछे कैकेयी आवासे * धेये गिया कैकेयीरे उभये जिज्ञासे
आजि आमि नाहि देखि श्रीरामेर मुख * प्राण नाहि रहे मोर बिदरये बुक
कैकेयी बलेन आमी किछुइ ना जानि * आजि हेथा नाहि देखि राम गुणमणि
आजि बुझि भुलिया रहिल कोनखाने * लक्ष्मण ये स्थाने आछे राम सेइ खाने
भरत सहित हेथा मिलिल शत्रुघ्न * अयोध्या-नगरे भ्रमे आइ दुइ जन

१ ठंढा हो रहा है २ रास्ता देख रही हूँ ३ गायब हो गई ४ लक्ष्मण।

पूछत ललकि—लखन-रघुबीरा ? * 'लखे न' सुनि उपजत पुनिपीरा
शावक[1]-हरन फुँकरति बाघिनि * फिरैं तीनि तिमि दसरथ-भामिनि
धुनत कपाल फिरत नरनाथा * मिलिहैं कवन गैल रघुनाथा
शाप-अंधमुनि आजुइ फूला * जीवन हत, वियोग-सुत सूला
सुवन-सोच रचि मीचु[2] विधाता * राम-लखन विन काय[3] निपाता
दिवस बीत, चहुँ निसि-तम छावा * तात-दरस, नृप आस नसावा
बिलखति रानिन आस गवाँई * प्रविसे तबहिं नगर रघुराई
वन्य कुसुम छवि, सारंग[4] हाथा * ठुमुकि धरत पग लछिमन साथा
भरत-रिपुघ्न[5] कौशिला तीरा * धाय कहत—आये रघुबीरा
सुनत रानि सोइ छन उठि धाई * द्वार राम-मुख परेउ लखाई

दो० धाय मात-पितु, लाय उर, लख-लख चुम्बत चंद ।
अंक लेत भरि, सिथिल तन, हिय न समात अनन्द ।। १०८ ।।

अंध - शाप हिय चोर नरेसू * कब विधि वाम, न मिटत कलेसू
दारिद्-निधि तुम लोचन-तारा * पलक वियोग प्रलय मनु धारा
भरत-रिपुघ्न बन्धु सिर नावा * राम मातु ढिग भोजन पावा

येइ येइ बालक खेलाय तार मने * ताहारे जिज्ञासे राम आछे कोन खाने
शुनिया सकले कहे शुन राजराणी * कोथा राम कोथाय लक्ष्मण नाहि जानि
कौशल्या सुमित्रा आर कैकेयी कामिनी * डम्बुर हाराये येन फुकारे बाघिनी
हृदे दुःखे दशरथ भाले मारे हात * कोथा गेले पाब आमि राम रघुनाथ
अन्धक मुनिर शाप घटिल एखन * रामे ना देखिया मम ना रहे जीवन
पुत्रशोके मृत्यु आजि सृजिल विधाता * रामे नाहि देखि यदि मरण सर्व्वथा
दिवसे सकल देखि घोर अन्धकार * श्रीराम लक्ष्मणे बुझि ना देखिब आर
एइमत कान्दे राणी बेला अवशेषे * हेन काले दुइ भाइ अयोध्या प्रवेशे
वनपुष्पे भूषित धनुक वाम हाते * नाचिते नाचिते आसे लक्ष्मणेर साथे
भरत शत्रुघ्न गिया गृहे कौशल्यारे * हेन माता आइलेन राम पुरद्वारे
तार मुखे एइ वाक्य शुनिते शुनिते * बाहिर हइल राणी श्रीरामे देखिते
धेये राजा दशरथ रामे करे बुके * एक लक्ष चुम्ब दिल ताँर चाँदमुखे
अन्धकेर शाप मुनि करे धुक् धुक् * कि जानिबा हन कबे विधाता विमुख
कौशल्या धाइया गिया रामे कैल कोले * एक लक्ष चुम्ब दिल वदन कमले
दरिद्रेर निधि तुमि नयनेर तारा * पलके प्रलय घटे हइ यदि हारा
भरत शत्रुघ्न तबे देखेन श्रीराम * दुइ भाइ आसि रामे करिल प्रणाम
मायेर आलये राम करिल भोजन * राजाराणी हइलेन सुस्थिर तखन

१ बच्चा २ मृत्यु ३ शरीर ४ धनुष ५ शत्रुघ्न ।

राजा, रानि, सकल पुरबृन्दा * सुखी, अवध चहुँ दरस अनन्दा

सीता के विवाह के प्रण के लिए शिवजी का धनुष-प्रदान

सतईं बरस राम पगु धारा * लक्ष्मी जनक-गेह अवतारा
जोतत सीर[1], सुता नृप पाई * सीता[2] सोइ रूपसी कहाई
सीता अतुल रूप गुन-खानी * मिथिला प्रगट मनौ श्री रानी
रमा, गौरि धौं सारद रूपा * जनक मुग्ध लखि सुता-सरूपा
कज्जल छबि मृगलोचन छाई * तिल-किंशुक[3] नासिका सुहाई
सुघर बाहु दोउ सुललित सोहा * इन्दु-सुधा सरसति छबि मोहा
करगत सुकर सहज कटि-अंगा[4] * अँगुरी सिय-पग हिंगुल-रंगा
अरुन कंज पद नूपुर बाजैं * राजहंस गति गमनत लाजैं
अमिय बैन मधु झरत सुबासा * तासु रूप दस दिसा प्रकासा
रोम-रोम लावण्य ललामा * वर सिय जोग लखिय केहि धामा
सोइ अनुहार न वर जग चीन्हा * प्रोहित सन बिदेह मत कीन्हा
कवन देस, कित सिय वर जोगू ? * इत चिंतित सुरपुर सुरलोगू

दो० कह विधि, सुरपति सुनहु मत, सात वर्ष रघुनाथ ।
सीता छवि निति बढ़त उत, चिंतित मिथिलानाथ ॥ १०६ ॥

राम इतर वर[5] तजैं नरेसा * सोइ हित चलिय समीप महेसा

कृत्तिवास पण्डितेर मधुर भणित * श्रीरामेर अरण्य-विहार सुललित

सीतार विवाह पणजन्य हरेर धनुक प्रदान

सात वत्सरेर राम अयोध्या-नगरे * लक्ष्मी हेथा जन्मिलेक जनकेर घरे
चाषेर भूमिते कन्या पाय महाऋषि * मिथिला हइल आलो परम रूपसी
अद्भुत सीतार रूप गुण मने मानि * ए सामान्य नहे कन्या कमला आपनि
कन्यारूप जनक देखेन दिने दिने * उमा कि कमला वाणी भ्रम हय मने
हरिणी नयने किबा शोभित कज्जल * तिल फूल जिनि तार नासिका उज्ज्वल
सुललित दुइ बाहु देखिते सुन्दर * सुधांशु जिनिया रूप अति मनोहर
मुष्टिते धरिते पारि सीतार कांकालि * हिंगुले मण्डित तार चरण अंगुली
अरुण वरण तार चरण कमल * ताहाते नूपुर बाजे शुनिते कोमल
राजहंसी भ्रम हय देखिले गमन * अमृत जिनिया तार मधुर वचन
दशदिक आलो करे जानकीर रूपे * लावण्य निःसरे कत प्रति लोमकूपे
जनक भावेन मने सीता दिब कारे * सीता योग्य बर नाहि देखि ए समारे
पुरोहित आनि राजा कहेन विशेषे * जानकीर योग्य वर पाब कोन देशे
जानकीरे विवाह करिबे कोन जन * स्वर्गेते करेन चिन्ता यत देवगण
विधाता बलेन शुन देव पुरन्दर * रामेर वयस मात्र सप्तम वत्सर
दिने दिने जानकीर रूप बृद्धिमान * पाछे अन्य वरे राजा सीता करे दान

---

१ हल २ जोत की रेखा अर्थात् 'सीता' से जन्म होने के कारण सीता नाम पड़ा
३ तिल-पुष्प के समान सफेद ४ कमर ५ राम के अलावा अन्य वर ।

धरि विधि-वचन सकल सुरवृन्दा * चले, शंभु जहँ परमानन्दा
कह विरंचि—शिव अंतर्यामी ! * जनक-गेह अस कीजिय स्वामी
तव सेवक आयसु सिर लेही * देय न इतर राम वैदेही
करि विधि विनय, गमन उत कीन्हा * परशुराम ! शिव आयसु दीन्हा
मम धनु लै विदेहपुर धरहू * मम आदेस जनक प्रति कहहू
जो समरथ जग शिवधनु - भंगा * सिया-विवाह रचिय सोइ संगा
राम रमापति बिन त्रयलोका * भञ्जक चाप न कतहुँ विलोका
आयसु - शंभु, चले भृगुवीरा * कर कोदण्ड[1] प्रचण्ड सरीरा
पीठ निषंग[2] जटा सिर धारा * धनु-प्रतञ्च[3] कर एक कुठारा
सुत - जमदग्नि जनकपुर आये * नृप प्रनम्य आसन बैठाये
पाद अर्घ्य सों नृप सन्माना * भृगुपति निरखि, मुनिन भय माना

राजा जनक की धनुर्भंग -प्रतिज्ञा

सिया-विवाह प्रसंग चलावा * सुनि मुनि-वचन जनक सुख पावा
विनय वचन निज भाग सराहा * मुनि-मत इतर न रचउँ विवाहा
पुनि भृगुराम चले तप कानन * गहि पद युगल विनय किय राजन
सिय - सौभाग्य सुअवसर पाई * विन तव सीख न रचउँ सगाई

एइ युक्ति देवगण करिया मनन * कैलास पर्व्वते गेल यथा त्रिलोचन
ब्रह्मा बलिलेन शुन शिव अन्तर्य्यामी * जनकेर घरे सीता रक्षा कर तुमि
से तव सेवक आज्ञा लंघिते ना पारे * येन राम विना अन्ये ना देय सीतारे
एतेक बलिया ब्रह्मा करिल गमन * भृगुरामे डाकिया कहेन त्रिलोचन
आमार धनुक निया करह पयान * जनकेरे घरे राख करि सावधान
आमार धनुर्भङ्ग करिते ये पारे * कह जनकेर येन सीता देय तारे
ए तिन भुवने इहा तोले कोन जन * सबे मात्र तुलिबेन प्रभु नारायण
पाइया शिवेर आज्ञा वीर भृगुपति * धनुक धरिया हाते करिलेन गति
माथाय जटार भार पृष्ठे दुइ तूण * एक हाते कुठार अन्येते धनुर्गुण
ब्रह्मारे येमन देवे करेन सम्भ्रम * जनक परशुरामे करेन से क्रम
प्रणाम करिया ताँरे दिलेन आसन * पाद्य अर्घ्य दिया ताँरे करेन पूजन
भृगुरामे देखि सब मुनिर तरास * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

जनक राजार धनुर्भंग पण

जिज्ञासिते लागिलेन जनक राजन * कोन कार्य्ये महाशय हेथाय आगमन
बलेन परशुराम तोमार दुहिता * सीता देह यदि राजा करि विवाहिता
जनक बलेन शुन ए कि चमत्कार * एत कि सौभाग्य आछे कपाले सीतार
सीतार विवाह काल हइबे यखन * करा याबे युक्तिमत कहिबे येमन

१ धनुष २ तरकस ३ धनुष की डोरी।

दो० तदपि तपोधन ! दरस कर, कब सौभाग्य बहोरि।
तव-सूने[1] केहि संग मुनि, करौं सिया गठजोरि ॥ ११० ॥

आयसु श्रवन धरहु मिथिलेसा * निरखहु कौतुक चाप महेसा
धरि प्रतञ्च, धनु भंजइ बीरा * सुता जोग वर सोइ रनधीरा
सो कहि, गमन कीन भृगुरामा * शंभु-धनुष तजि मिथिलाधामा
सत्तर योजन लंब प्रसारा * योजन दसक इतर[2] बिस्तारा
नृप प्रन—चाप चढ़ावैं डांगी * करौं तासु सन सिय-गठजोरी
मन्दिर जोजन दीर्घ एकासी * तँह धनु धरेउ शंभु अविनासी
ग्यारह जोजन गृह चौड़ाई * बिरद[3]-चाप दिग्देसन छाई

समस्त राजाओं एवं रावण का धनुष उठाने में असमर्थ होकर पलायन

सिया-वरन मन मबन उछाहा * जुरे जनकपुर जग-नरनाहा
जे-जे नृप जुरि गाल बजावैं * तिन धनु-मन्दिर जनक पठावैं
प्रन-विदेह—जो चाप चढ़ावै * यौतुक[4] अमित सहित सिय पावै
जिन सुरन धनु ढिग डग डारी * दरम होत पग परत पछारी

भृगु चले तपस्याय करिब गमन * देखो येन अन्य मत ना हय राजन
एतेक बलिया यदि भृगुराम यान * भृगुर चरण धरि जनक सुधान
तोमार साक्षात् आर पाव कन काले * कारे दिब कन्या आमि तुमि ना आइले
बलेन परशुराम आमार धनुक * राखि याव तव स्थाने देखिब कौतुक
धनुक तुलिया येबा गुण दिते पारे * रहिल आमार आज्ञा कन्या दिओ तारे
एत बलि भार्गव गेलेन स्थानान्तरे * पड़िया रहिल धनु जनकेर घरे
हरेर धनुक सेइ अपूर्व्व निर्म्माण * सत्तर योजन उभे धनुक प्रमाण
योजन दशेक धनु आड़े परिसर * करिलेन प्रतिज्ञा जनम ऋषिवर
ए धनुके गुण दिते ये जन पारिबे * सेइ जन जानकीरे विवाह करिबे
यतन करिया कैल धनुकेर घर * एकाशी योजन सेइ घर दीर्घतर
एगार योजन तार आड़ परिसर * धनुक पड़िया आछे ताहार भितर
सेइ धनुकेर कथा गेल देशे देशे * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवासे

सकल राजा ओ रावणेर धनुक तुलिते असमर्थ हइया पलायन

धनुकेर कथा यदि गेल देशे देशे * जानकी विवाह हेतु राजा सब आसे
पृथिवीते आछे यत राजा महत्तर * एके एके आसे सब जनकेर घर
आसिया सकल राजा अहकार करे * सबारे पाठाये देन धनुकेर घरे
जनक बलिल येबा तुलिबे धनुक * तारे सीता कन्या दिब परम यौतुक
धनुक तुलिते यत राजपुत्र जाय * देखिया सकल लोक पश्चाते गोड़ाय

१ आपकी अनुपस्थिति मे २ लबाई से इतर अर्थात् चौड़ाई ३ प्रसिद्ध ४ दहेज।

बहुते हुमकि जायँ धनु पाहीं * परस न, दरस होत भजि जाहीं
पट कसि, चाप चढ़ावत साजू * मरहिं जोर नरपति - युवराजू
अभिरि प्रानपन, थकित विचारे * चढ़ब दूर, धनु टरत न टारे
धनु-गुन[1] अडिग मेरु सम भारी * लाज विवस पुर तजि धनुधारी
डगर सबन निज गेह सम्हारी * बालक - जूथ हसैं दै तारी

दो० तिनहिं मिले मग भूप बहु, आवत सिय अभिलास।
सुनत चाप-कौतुक, तहँ, तजी दरस-धनु-आस ।। १११ ।।

उलटे पाँव फिरे निज देसा * दरस-परस कामना न सेसा
अगनित, अकथ अतिथि विस्तारा * तीन कोटि नृप पुर पग धारा
कोउ न समर्थ, अडिग धनु संकर * सजेउ लंकपति पुनि दसकंधर
लै मारीच, प्रहस्त, अकम्पन * सहित महोदर सजि निज स्यंदन
रावन मिथिला कीन पयाना * समाचार मिथिलापति जाना
पात्र मित्रगन सबन बुलाई * चढ़ेउ दनुजपति, खबरि जनाई
जो न हर्षि सिय ताहि विवाहू * हरइ जोर, किमि कहौ निबाहू
मग भेटे विदेह अगवानी * हँसा ठठाय सुभट अभिमानी
कह प्रहस्त, सुनु लंक-जुझारा * प्रस्तुत नृप तव शिष्टाचारा

घरेर द्वारे गिया ऊँकि दिया चाय * तुलिबार शक्ति कोथा देखिया पलाय
कत राजा राजपुत्र उद्यत हइया * तुलिते धनुक जाय वस्त्र काछाटिया
प्राणपणे तार धनु टानाटानि करे * तुलिबार साध्य किबा नाडिते ना पारे
सुमेरु पर्व्वत हेन धनुखान भारि * दिवे कि ताहाते गुण नाड़िते ना पारि
लज्जा पाइया सब राजा पलाइया जाय * हात ताल दिया सब बालक दौड़ाय
पलाइया जाय सब आपनार देशे * विवाह करिते अन्य राजागण आसे
पथ मध्ये देखा हय से सबार सने * धनुकेर पराक्रम तारा सब शुने
देखिबार काज नाइ शुनिया डराय * शुनिया शुनिया पथे अमनि पलाय
एतेक कहिले हय पुस्तक विस्तर * राजा तिन कोटि गेल मिथिला नगर
धनुक तुलिते ना पारिक कोन जन * लकाय थाकिया शुने लकार रावण
अकम्पन प्रहस्त मारीच महोदर * चारि पात्र ल'ये रथे चड़े लंकेश्वर
आइल सकले तारा मिथिला भुवन * जनक शुनिल रावणेर आगमन
जनक बलेन शुन पात्र मित्रगण * रावण आइल आजि हइबे केमन
स्वेच्छाय विवाह यदि ना दिब रावणे * काड़िया लइबे सीता राखे कोन जने
चलिल जनक राजा रावणे आनिते * देखिया रावण राजा लागिल हासिते
प्रहस्त डाकिया बले रावण राजारे * जनक आइल देख लइते तोमारे

---

१ धनुष की डोरी।

रथ तजि, असुर जनक भरि लीन्हा * बाहु प्रसारि अलिंगन कीन्हा
रत्न सिंहासन अतिथि सुहावा * उभय मधुर संलाप चलावा
जीवन सफल दरस तव पाई * कारन कवन दया दरसाई
कह दससीस, सुता तव सीता * करहु दान, सोइ चहउँ ग्रहीता
धन्य भाग मम, निसिचर-नाहा! * तव समान कित जोग विवाहा
तदपि बचन-बन्धन कछु मोरा * भृगुपति आनेउ धनुष कठोरा
भञ्जइ चाप वीर धनुधारी * सोइ, लंकेस! सिया-अधिकारी

दो० अवनि[1] न अब लौं सफल कोउ, सुभट, सुनहु दसभाल।
धनु चढ़ाइ, प्रन पूर करि, लेहु सुता-जयमाल ॥ ११२ ॥

आनन दसौं हँसा सुनि रावन * धनुबल भल बरनेउ मोहिं राजन
गिरि मंदर कैलास उठावा * चाप-भार लघु बात चलावा
भञ्जउँ सोइ, जब करउँ पयाना * तब लौं सुता करौ मोहिं दाना
मैं प्रन-विवस, करहु धनुभंगा * निरखैं सब तव भुजबल रंगा
पुनि प्रहस्त दिय मंत्र बिसेखा * प्रन-विदेह कछु अहित[2] न देखा
चढ़त चाप नृप अर्पहिं सीता * नतरु जोर-बल करिय ग्रहीता
टूटै धनुष, न संशय येही * मातुल[3]! बरौं अबै बैदेही
अभिमानी गमनेउ धनुगेहा * संग लंकपति, चले विदेहा

देखिया रावण तारे भूमितले उलि * दुइ बाहु प्रसारिया करे कोलाकुलि
बसाइल रावणेरे रत्न सिंहासने * सिष्टालाप करिलेन बसि दुइ जने
जनक बलेन आजि सफल जीवन * कोन कार्य्ये महाशय तव आगमन
दशानन बले राजा तव कन्या सीता * आमारे [illegible] दान आमि ये ग्रहीता
जनक बलेन इहा सौभाग्य लक्षण * [illegible] आछे कोन जन
आनिलेन भृगुराम धनु एक खान * हेन [illegible] नाहान देय टान
तुलिया धनुकखान भाग गिया तुमि * धनुकेर घर [illegible] समर्पिब आमि
शुनिया से दशमुखे हासिल रावण * आमार साक्षाते बल धनुक विक्रम
कैलास तुलेछि आमि पर्व्वत मन्दर * ताहारे जिनिया कि धनुक हबे भार
आगे सीता आनिया आमारे कर दान * यात्रा काले भागिया याइब धनुखान
जनक बलेन कर प्रतिज्ञा पूरन * देखुक सकल लोक धनुक भगन
प्रहस्त बलेन शुन राखा दशानन * यार ये प्रतिज्ञा भग ना कर कखन
धनुक भागिले राजा जानकीरे दिबे * इच्छाधीने नाहि देय बले काड़ि लबे
दशमुख बले मामा राखि तव कथा * धनुक भागिले येन ना हय अन्यथा
अहंकार करिया चलिल लंकेश्वर * देखाइते चलिल जनक नृपवर

१ पृथ्वी पर   २ अमंगल, बुराई   ३ मामा (प्रहस्त)।

धाई प्रजा, कुतूहल छावा ※ जानकि-वर विधि आजु पठावा
युवा, वृद्ध, अरु बाल-समाजा ※ धनुमंदिर पुर सकल विराजा
कौतुक योजन दीर्घ एकामी ※ ग्यारह परिसर[1] तासु प्रकासी
गृह विशाल जहँ चाप-महेसा ※ तासु द्वार लंकेस प्रवेसा
दुर्जय धनु निरखत रनबंका ※ लंकापति उपजी मन संका
बल सुमिरत छिन, पुनि भयभीता ※ असफल-सफल न हिय परतीता[2]
ताल प्रतच्छ[3], न अन्तस धीरा ※ धनु ढिग गयेउ दसानन वीरा
कटि कसि फेंट, सुभट बलधारी ※ चहेउ चाप भुजबीस उपारी[4]

दो० तमकि, हुमकि, उठि, बैठि बल, बिबिध करत दससीस ।
सिथिल गात, हिय लाज अति, टरत न धनुष-गिरीस ॥ ११३ ॥

मातुल ! थकित भुजा मम बीसा ※ सिखवति सुनि प्रहस्त, दससीसा
पुर उपहास असह, यहि कारन ※ तन भरि जोर, करौ बल धारन
भय तजि, धनु भञ्जिय केहु भाँती ※ साहस जोरि अड़ायेसि छाती
शिवगिरि मन्दर सहज उपारा ※ सोइ भुजबल, तिल धनुष न टारा
प्रन-पुरवनि प्रानन पर छाई ※ मातुल ! जुगुति एक मन भाई

शुनिया धाइल सव मिथिला नगर ※ सवे बले जानकीर आजि एल वर
युवा वृद्ध शिशु एक नाहि रहे घरे ※ कौतुक देखिते गेल राजार मन्दिरे
एकाशी योजन घर अति दीर्घतर ※ एकादश योजन ताहार परिसर
धनुक पड़िया आछि ताहार भितरे ※ आसिया रावण राजा दाण्डाइल द्वारे
दाण्डाय द्वारेते वीर डाँकि दिया चाय ※ देखिया दुर्जय धनु अन्तर डराय
मने भावे आमार घुचिल भारिभुरि ※ ये देखि धनुकखान पारि कि ना पारि
अन्तरे आतङ्क अतिमुखे आस्फालन ※ तुलिते धनुक जाय वीर दशानन
आँटिया कापड़ परे बाछिल काँकाले ※ कुड़ि हाते धरिल से धनु महाबले
आँकड़ि करिया तबे धनुखान टाने ※ तुलिते ना पारे आर चाय चारि पाने
नाके हात दिया बले कि करि उपाय ※ कि हइबे मामा धनु तोला नाहि जाय
प्रहस्त बलेन शुन राजा लङ्केश्वर ※ लोक हासाइला आसि मिथिला नगर
चिन्ता ना करिह तुमि ना करिह डर ※ गात्रे बल करि आर एक बार धर
पुनश्च धनुकखान टानाटानि करे ※ तथापि धनुकखान नाड़िते ना पारे
दशग्रीव बले आर नाड़िते ना पारि ※ प्राण जाय मामा तबू तुलिते ना पारि
कैलास तुलिनु मामा पर्व्वत मन्दर ※ ताहारे जिनिया मामा धनुकेर भार
एइयुक्ति मामा गो तोमार ठाँइ मागि ※ सबाइ मिलिया तुले धनुखान भाङ्गि

१ प्रसार-फैलाव २ प्रतीति, विश्वास ३ प्रकट मे जोश ४ उठाना ।

सब मिलि जोर करहिं इकसंगा * कह प्रहस्त, सियवर केहि संगा?
प्रान जाय पै राखिय माना * करि बल, हित साधिय बलवाना
मातुल[1]! जतन करौं सिख मानी * तदपि द्वार रथ राखहु आनी
हँसि प्रहस्त, रथ द्वार बुलावा * रावन पुनि बल अमित लगावा
तजी आस, चितवत नभ ओरा * सुरगन मनौ हँसत तेहि ओरा
रथ चढ़ि भजेउ लंक-अधिकारी * बालक हँसत बजावत तारी
मन गलानि उत गमनेउ रावन * इत सुरगन हिय ताप नसावन
बिन हरि, चाप चढ़ै केहि हाथा * श्री-वर कौन विना श्रीनाथा
दनुज-त्रास मिटि सीतल छाती * चिंता-जनक मिटी यहि भाँती
अमा-ग्रहन[2]-रवि अवसर देखी * नृप-मन सुत-कल्यान बिसेखी
हेमदान[3] सुरसरि असनाना * नृप उमंग, कृतिवास बखाना

श्री राम का गंगा-स्नान और गुह के साथ मित्रता तथा भरद्वाज मुनि के घर राम का धनुर्बाण प्राप्त करना

दो० सहित चारि सुत, भूप रथ, शत-शत हय, गज संग ।
गगन तुमुल रव[4] व्याप चहुँ, अमित[5] कटक चतुरंग ।। ११४ ।।

नृप-नृपसुत रथ दिव्य सुहाये * पन्थ दरस नारद के पाये

प्रहस्त बलिल शुन वीर दशानन * तबे त सीतार वर हबे कोन जन
पार वा ना पार आर एक बार टान * जाय प्राण राख मान एइ वाक्य मान
रावण बलिल मामा शुन मोरवाणी * तुलिते ना पारि शीघ्र रथ आन तुमि
ईषत् हासिया बले प्रहस्त ताहारे * रथ लये एइ आमि रहिलाम द्वारे
आरबार रावण धनुक खान टाने * तुलिते ना पारे चाय प्रहस्तेर पाने
कांकालेते हात दिया आकाशे निरखे * मने भावि पाछे आसि इन्द्र बेटा देखे
बुझिया प्रहस्त रथ दिल योगाइया * लाफ दिया रथे उठे धनुक एड़िया
पलाइया चलिल लङ्कार अधिकारी * सकल बालक देय तारे टिटकारी
लंकाय शंकाय गेल लंकार रावण * आकाशे थाकिया देखे यत देवगण
श्रीलक्ष्मीपतिर लक्ष्मी लबे कोनजन * तुलिबेक धनुक केवल नारायण
कृत्तिवास पण्डितेर कि कहिब शिक्षा * आदिकाण्ड गाइल सीतार हैल रक्षा

श्रीरामेर गंगास्नान ओ गुहकेर सहित मितालि ओ भरद्वाज मुनिर गृहे रामेर धनुर्व्वाण प्राप्ति

एक दिन दशरथ पुण्य तिथि पेये * गङ्गास्नाने यान राजा चार पुत्र ल'ये
हइबेक अमावस्या तिथिते ग्रहण * रामेर कल्याणे राजा दिबेन काञ्चन
तुरंग मातंग चले संगे शते शते * चारिपुत्र सह राजा चापिलेन रथे
चलिल कटक सब नाहि दिक पाश * कटकेर शब्दे पूर्ण हइल आकाश
चलेछेन दशरथ चारि दिव्य रथे * नारद मुनिर संगे देखा हय पथे

---

१ मामा २ अमावस्या पर सूर्य-ग्रहण ३ स्वर्णदान ४ शब्द ५ असीम।

पूछत हेतु गमन ? नृप भाषा * मुनि ! स्नान-गंग अभिलाषा
भूप अजान ! राम मुख दरसन * पुनि कित हेतु जाह्नवी परसन
भूतल पतितपावनी धारा * गंग, जासु पद-पदुम प्रसारा
गंग-स्नान पुन्य सोइ नाना * सुवन-रूप निरखहु भगवाना
नारद बचन नरेस प्रतीता * चलहु राम गृह, कहेउ सप्रीता
सुनि पितु बचन, कहत रघुराई * विधिन धर्म-पथ, रीति सदाई
तिनहिं बराय, मातु-डग[1] धरहीं * सुरसरि-सुकृत[2] सफल तन करहीं
पितु मन दीन कथन-रघुनन्दन * सहित उछाह बढ़ेउ नृप-स्यंदन[3]
तौ लौं पथ घेरेउ गुहराजू * कोटिक[4] तीन निषाद-समाजू
कहेउ, कटक इत कस अवधेसा ? * नित गहि पंथ बिगारत देसा
जो सुरसरि-स्नान उछाहू * तजि मम भूमि, आन पथ जाहू
सोइ मग गमन रुचिर यदि भूपा * प्रथम लखौं छबि राम अनूपा
राम-राम गुहपति मुख भाखा * रथ लुकाय रामहिं नृप राखा
सोचत धनु चढ़ाय नरनाथा * बध गुह हीन ! कवन जस हाथा ?
जीते सुजस न पौरुष लेसू * हारे त्रिभुवन अजस बिसेसू

मुनि बले कोथा राजा करिछ पयान * भूपति कहेन साध करि गंगास्नान
मुनि कहे दशरथ तुमि त अज्ञान * राम मुख देखिले के करे गंगास्नान
पतितपावनी गंगा अवनीमण्डले * सेइ गंगा जन्मिलेन याँर पदतले
सेइ दान सेइ पुण्य सेइ गंगास्नान * पुत्रभावे देख तुमि प्रभु भगवान
एत यदि नृपतिरे कहिलेन मुनि * राजा बले चल घरे राम रघुमणि
बापेर बचन सुनि बलेन श्रीराम * अनेक पाषण्ड आछे धर्म्मपथे बाम
गंगार महिमा आमि कि बलिते जानि * ना शुनिओ महाराज नारदेर वाणी
एत यदि बलिलेन कौशल्याकुमार * चलिलेन दशरथ राजा आर बार
चलिल राजार सैन्य आनन्दित है'या * गुहक चण्डाल आछे रथ आगुलिया
तिन कोटि चण्डालेते गुहक वेष्टित * हुड़ाहुड़ि बाधे दशरथेर सहित
गुहक चण्डाल बले शुन दशरथ * भाँगिया आमार देश करिले कि पथ
बारे बारे याह तुमि एइ पथ दिया * सैन्येते आमार राज्य केलिल भाँगिया
गंगास्नान करिते तोमार थाके मन * आर पथ दिया तुमि करह गमन
यदि इच्छा थाके हे याइते एइ पथे * देखाओ तोमार आगे पुत्र रघुनाथे
राम राम बलिया से गुहक डाकिल * रथमध्ये भूपति से रामे लुकाइल
निल दशरथ राजा धनुर्ब्बाण हाते * रथेर द्वारेते राजा लागिल भाविते
चण्डालेरे मारि किवा हइबेक यश * नीच जने जिनिले कि हइबे पौरुष
यदि पराजय हइ चण्डालेर बाणे * अपयश घुसिवेक ए तिन भुवने

१ गंगा माता की राह २ गंगा के पुण्य द्वारा ३ दशरथ का रथ ४ करोड़

दो० छाड़ेहू[1] पुनि पार नहिं, अभिरत उत चण्डाल ।
नृप विमूढ़-मन, करिय कस ? अरुझेउ मग जंजाल ।। ११५ ।।

बरसइँ बान, कोपि दोउ लरहीं * रिपु-सर निरखि, उभय मन डरहीं
तजहिं परस्पर बान कराला * यहि विधि ठनेउ युद्ध बहु काला
दसरथ पुनि पशुपति संधाना * गुहपति-हाथ बांधि रथ आना
सोचत—दरस न कृपानिकेता * सफल न रन पथ रोकन हेता
पग धनु कसि, पग सों धरि बाना * बिन कर[2] कौतुक रन गुह ठाना
रामहिं अचरज भरत जनावा * पग सन धनुयुद्ध-यश गावा
राम कुतूहल ! कला नवीना ! * देखन चले निषाद प्रवीना
गुहपति, निरखत छवि-रघुनाथा * नाय माथ, थिर भयेउ सनाथा
पूछत राम, कहहु रन-कारन ? * सुनहु कथा प्रभु शाप-निवारन
पाप पुरबुले[3], अधम शरीरा * लहि, अब लौं भुगतौं भव-पीरा
पितु बशिष्ठ-सुत जनम पुनीता * वामदेव मम नाम अतीता[4]
सुत विहीन दसरथ जेहि काला * अंध-सुवन-वध-पाप बेहाला[5]
तप-उपवन पकरे मम चरना * लोटत धरनि विकल मम सरना
राम नाम त्रय बार कहावा * सोइ प्रताप नृप-ताप नसावा
सोइ कारन पितु शाप कराला * जन्मेउँ अधम योनि चण्डाला

आमि यदि छाडि नाहि छाड़िबे चण्डाल * कि करिब पथे ए कि घटिल जञ्जाल
दुइजने बाणवृष्टि करे महाकोपे * उभयेर बाणेते दोंहार प्राण कांपे
एइ मत बाणवृष्टि हइल विस्तर * उभयेर सग्राम हइल बहुतर
दशरथ राजा एड़े पाशुपत शर * हाते गले गुहके बान्धिल नरेश्वर
गुहके बान्धिया राजा तुलिलेन रथे * बन्धने पड़िया गुहक लागिल भाविते
याहार लागिया आमि आगुलिनु पथ * देखिते ना पाइलाम से राम कि मत
एतेक भाविया गुह करे अनुमान * पायेते धनुक टाने पाये एड़े बाण
भग्न कहिल गिया रामेर गोचरे * एमत अपूर्व्व शिक्षा नाहि चराचरे
पायेते धनुक टाने पाये एड़े बाण * देखिते कौतुक राम गेलेन सेइ स्थान
येइ मात्र गुहक देखिल रघुनाथ * दण्डवत् हइया रहिल जोड़ हाते
श्रीराम बलेन धनु टानह केमन * गुह बले तोमारे कहिब से कारण
पूर्व्व जन्म कथा मम शुन नारायण * ये पापे हइल मोर चण्डाल जनम
अपुत्रक छिलेन यखन दशरथ * अन्धक मुनिर पुत्र करिलेन हत
मुनि हत्या करिया आसिल तपोवने * लोटाइया धरिलेन आमार चरणे
वशिष्ठेर पुत्र आमि वामदेव नाम * तिन बार राजारे बलाइ राम नाम
शुनिया वशिष्ठ शाप दिलेन विशाल * याह वामदेव पुत्र हओरे चण्डाल

१ न लड़ने पर भी २ बिना हाथ के ३ पूर्वजन्म के ४ व्यतीत काल का ५ परेशान ।

नाम एक, बध कोटि उबारन * तीनि बार केहि हेतु उचारन ?

दो० पितु-प्रकोप लखि, गहे पग, शाप-मुक्ति किमि नाथ ?
कहेउ, निवारन अधम गति, दरस राम रघुनाथ ॥ ११६ ॥

सोइ अब राम अवध अवतारा * जासु चरन मम पाप निवारा
भक्तन प्रिय तुम नाथ-अनाथा * दयासिंधु को अस रघुनाथा
श्वपच-शरीर घृना यदि करहू * नाम पतितपावन, हरि ! तजहू
विनय-सनी आकुल गुहबानी * सुनत राम दृग सरसत पानी
पितु सन विनय करत कर जोरी * गुहपति-मुक्ति याचना मोरी
राम ! न कछु अदेय तव हेतू * अर्पित गृह तव, हर्ष समेतू
पितु-अनुमति; आतुर रघुनन्दन * काटे निजकर गुहपति - बन्धन
लखन सोई छन अनल जराई * साखी राम-निषाद मिताई
हीन न तात ! सुनहु गुहभूपा * सब प्रकार तुम मम अनुरूपा
अधम अहौं, तुम अधम-सहाई * जग चहुँ पुजे राम-ठकुराई
करि मित्रता, बिदा गुह कीन्हा * सुरसरि-पथ दसरथ पुनि लीन्हा
फल अनन्त रविग्रहन पुनीता * दान धर्म स्नान सप्रीता
शत-शत सुरभि शिला किय दाना * कञ्चन, रजत, रतन विधि नाना

एक रामनामे कोटि ब्रह्महत्या हरे * तिन बार रामनाम बलालि राजारे
लोटाय पड़िनु आमि पितार चरणे * चण्डाल हइब मुक्त काहार दर्शने
पिता बलिल जबे पाबे श्रीराम दर्शन * तबेत हइबे मुक्त चण्डाल जनम
सेइ राम जन्मियाछे दशरथ घरे * चरण परश दिया मुक्त कर मोरे
अनाथेर नाथ तुमि भकतवत्सल * करुणासागर हरि तुमि हे केवल
चण्डाल बलिया यदि घृणा कर मने * पतितपावन नाम तबे कि कारणे
एतेक बलिया गुह लागिल कान्दिते * गुहेर क्रन्दने राम कान्दिलेन रथे
करपुटे दाण्डाइल पितार साक्षात् * देह भिक्षा गुहके बलेन रघुनाथ
राजा बले प्राण चाह प्राण पारि दिते * चण्डाले तोमाके दिब बाधा नाहि इथे
पाइया बापेर आज्ञा कौशल्यानन्दन * खसालेन निज हस्ते गुहेर बन्धन
श्रीराम बलेन अग्नि ज्वालह लक्ष्मण * गुहकेर सह करि मित्रता बन्धन
लक्ष्मण ज्वालिलेन अग्नि रामेर साक्षात् * गुह सहित मित्रता करेन रघुनाथ
येइ आमि सेइ तुमि बलेन श्रीराम * गुह बले घुचाइते नारि निज नाम
श्रीरामेर जगते हइल ठाकुरालि * प्रथमे करेन राम चण्डाले मितालि
बिदाय करिया रामे गुह गेल घरे * पुत्र लैया दशरथ गेल गङ्गा तीरे
अपूर्व अनन्त फल भास्कर ग्रहण * स्नान करि राजा दान करिल काञ्चन
धेनुदान शिलादान कैल शत शत * रजत काञ्चन तार नाम लब कत

दान-पुन्य करि नृप बहु भाँती * सुतन सहित पुनि निरखि सँझाती[1]
भरद्वाज - उपवन चलि जाई * बन्दि चरन-मुनि, बिनय सुनाई
सरन तपोधन तव, सुत चारी * अहह भाग तव चरन निहारी

दो० देहु असीस; बिलोकि तिन, सोचत मनहिं मुनीस।
तजि गोलोक प्रतच्छ लख[2] जग प्रगटे जगदीस ॥ ११७ ॥

तव सुत राम, जनक[3] जग केरा * जीवन सफल अवधपति केरा
छबि बिराट दूर्वादल स्यामा * अतुलित तबहिं लखेउ मुनि रामा
अंकुश बज्र ध्वजा पद पंकज * शंख चक्र कर पद्म गदा सज
शिव, बिरञ्चि जेते सुरलोका * भुवन राम तन[4], सकल बिलोका
मुनि-आश्रम आतिथि नृप पावा * सहित सैन तहँ रैन बितावा
शयनकक्ष मुनि राम लेवाई * सोवत, अर्धनिसा जब आई
अक्षय कवच दिव्य धनु साथा * सिरहाने राखेउ सुरनाथा
मुनिहिं सकल सो सपन दिखाई * भोर, चाप निरखेउ रघुराई
आयुध दिव्य शचीपति[5] दीन्हा * सो निसि-कथा कथन मुनि कीन्हा
मुनि प्रनम्य, हरि पितु ढिग जाई * सम्मुख धरेउ चाप - सुरराई
दसरथ मुदित; सहित सुत चारी * आगम अवध सबन सुखकारी

दान धर्म करिते हइल बेला क्षय * प्रदोषे यान राजा भरद्वाज आलय
बसिया आछेन मुनि आपनार घरे * चारि पुत्र सह राजा नमस्कार करे
जोड़ हाते बले राजा मुनिर गोचर * आनियाछि चारि पुत्रे देख मुनिवर
आशीर्व्वाद कर चारि पुत्रे तपोधन * बहुभाग्ये देखिलाम तोमार चरण
देखिया रामेरे भावे भरद्वाज मुनि * बैकुण्ठ हइते विष्णु आइला आपनि
मुनि बले राजा तव सफल जीविता * राम तव पुत्र किन्तु जगतेर पिता
भरद्वाज एइकाले देखे चमत्कार * दूर्व्वादल श्याम तनु परम आकार
ध्वज-वज्राकुशे शोभित पदाम्बुज * शङ्ख - चक्र - गदा - पद्मधारी चतुर्भुज
शंकर विरिञ्चि आदि यत देवगण * रामेर शरीरे आरो देखेन भुवन
समुचित आतिथ्य करेन भरद्वाज * सुखे रहिलेन सैन्यसह महाराज
रामेरे लइया मुनि अन्तःपुरे गिया * शयन करेन दोहे एकत्र हइया
यखन हइल रात्रि द्वितीय प्रहर * शियरे राखेन देवराज धनु.शर
स्वप्ने उपदेश एइ करेन मुनिरे * अक्षय धनुक तूण देह श्रीरामेरे
एतेबलि करिलेन वासव पयान * प्राते राम शियरे देखेन धनुर्ब्बाण
कहिलेन श्री रामेरे मुनि भरद्वाज * तोमारे दिलेन धनुर्ब्बाण देवराज
मुनिर चरणे राम करे प्रणिपात * आनिलेन सेइ धनु पितार साक्षात्
शुनि राजा दशरथ आनन्द हइया * आइलेन देशे चारि कुमार लइया

---

१ सायंकाल २ मालूम पड़ता है ३ पिता ४ राम के शरीर में बिराट रूप के दर्शन ५ इन्द्र।

राक्षसों द्वारा मुनियों के यज्ञों में विघ्न और उसके निवारण का उपाय

राजभोग ऐश्वर्य प्रपन्ना[1] * सब विधि सुख समृद्धि संपन्ना
मिथिला मुनिन यज्ञ सोइ काला * करैं भंग नित दनुज कराला
जब-जब मुनिगन याग रचावा * तबहिं मरीच रक्त बरसावा
मिथिला चहुँ दिसि याग-विहीना * मुनिन बोलाय जनक मत कीना
कौशिक-जुगुति सबन मन भाई * अवध जाय आनहु रघुराई

दो० भयो जगत अवतार प्रभु, निसिचर नासन हेत।
जनम राम बलधाम सोइ, दसरथ अवध निकेत ॥ ११८ ॥

कहेउ जनक, तुम बिन मुनिराई * याग-सिद्धि नहिं जतन लखाई
सबन प्रबोधि अवध मुनि गयऊ * राम-निवास उपस्थित भयऊ
प्रहरी-खबरि — भूप-मन चिन्तन * विधि न सीध, कस गाधियनन्दन[2]!
रघुकुल कौशिक विषम प्रभावा * बीतै कस? दसरथ भय छावा
सुविदित सत्यसंध हरिचन्दा * तिय-सुत बेचि कटे तिन फन्दा
संमय मन! मुनि-चरन पखारी * बन्दि, भूप मृदु गिरा उचारी
कौन गाधि-सुत पुष्कल[3] धामा * अहो भाग्य! आवउँ मुनि-कामा
कौशिक कहेउ सुनहु अवधेसू * मिथिला मुनिन अनन्त कलेसू

कृत्तिवास करे आश पाइ परित्राण * आदिकाण्ड गाइल रामेर गङ्गास्नान

राक्षसेर दौरात्म्ये मुनिदेर यज्ञपूर्णे व्याघात तन्निवारणेर उपाय

एइ रूपे दशरथ चारि पुत्र लैया * करेन साम्राज्य भोग सावधान हैया
हेथा मिथिलाय यज्ञ करे मुनिगण * यज्ञ पूर्ण नाहि हय राक्षस कारण
यज्ञ आरम्भन करे येइ मुनिवर * करे रक्त वर्षण मारीच निशाचर
यज्ञहीन हइलेक मिथिला भुवन * करे जनक युक्ति ल'ये ऋषि-मुनिगण
तार मध्ये बलिलेन विश्वामित्र मुनि * अयोध्याय गिया रामचन्द्रे आमि आनि
राक्षस बधेर हेतु धरि राम वेश * दशरथ गृहे अवतीर्ण हृषीकेश
वलिलेन जनक शुनह महाशय * तुमि रक्षा करिले ए यज्ञ रक्षा हय
विश्वामित्र सकलेरे करिया आश्वास * चलिलेन यथा राम अयोध्या निवास
उपस्थित हइलेन अयोध्यार द्वारे * द्वारी गिया जानाइल तखनि राजारे
भूपति शुनिबा मात्र विश्वामित्र नाम * चिन्तित कहेन बुझि आजि विधिबाम
विश्वामित्र मुनि एइ बड़इ विषम * प्रमाद घटाय किम्बा करे कोन क्रम
सूर्यवंशे छिल हरिश्चन्द्र महाराज * भार्या पुत्र बेचिया तारे दिल लाज
आसि वन्दिलेन राजा मुनिर चरण * शिष्टाचार पूर्व्वक करेन निवेदन
तव आगमने मम पवित्र आलय * आज्ञा कर कोन कार्य्य करि महाशय
विश्वामित्र बलेन शुनह दशरथ * श्रीरामेर देह यदि हय अभिमत

१ युक्त, प्राप्त २ गाधि के पुत्र विश्वामित्र ३ पवित्र।

सफल न याग, दनुज-उत्पाता * शोनित-स्रव, श्रुति-काज निपाता
जो मोहिं देव लखन-रघुराई * कटै विपति तौ, असुर-नसाई
आवइँ लौटि बितइ दिन चारी * रघुकुल-सुयस भुवन विस्तारी
मन संमय सो आगे आवा * धुनत सीस दसरथ भय छावा
सुत-वियोग मम काल कपाला[1] * अन्धक-शाप सतत[2] हिय साला[3]
बिन मुखचन्द्र-राम, छिन एका * दूभर जियब, न मुनि अतिरेका[4]
जीवन राम ध्यान सोइ ज्ञाना * पल बिन-दरस अचेत समाना
मम तन-मन अर्पित तव काजू * राम अदेय, छमहु मुनिराजू

दो० सोवहुँ निसि हिय राम धरि, सदा सचेत सभीत।
स्वप्न बिलग—जिय कण्ठगत, कतहुँ न काहु प्रतीत[6] ॥ ११६ ॥

श्रीराम को राक्षसों के साथ युद्ध के लिए भेजना दशरथ को अस्वीकार

छं० जिमि राम जनमे धाम मम, सो कथा-क्रम मुनि! श्रवन धरि।
सर तीर, कानन, सिन्धु—सुत-मुनिअंध, जल जिहि काल भरि।
आखेट घूमत, शब्द-जलघट, शब्दबेधी सर हनेउँ।
सो तो न पसु! मुनि-सुवन हत! धरि कन्ध अन्धक-वन गयेउँ ॥
सन्तान बिन, मन ग्लानि निसिदिन, ताप मुनि-सुत-बध हृदै।
तहँ अन्ध-दम्पति, कुपित बिलखत, मृत-बधिक—मोहिं शाप दै ॥

मुनिगण यज्ञ करे करिया प्रयास * राक्षस आसिया सदा करे यज्ञनाश
एइ भार महाराज दिलाम तोमारे * श्रीराम लक्ष्मणे देह यज्ञ राखिवारे
येइ मात्र विश्वामित्र कहेन ए कथा * भूपति भावेन मने हेंट करि माथा
पुत्रशोके मृत्यु मम लिखन कपाले * ना जानि हइबे मृत्यु मम कोन काले
अन्धकेर शाप मने करे धुक् धुक् * कखन मरिब नाहि देखे चाँदमुख
प्राण चाह यदि मुनि प्राण दिते पारि * एक दण्ड रामचन्द्रे ना देखिले मरि
अतएव रामचन्द्र ना दिब तोमारे * एक दण्ड ना देखिले हृदय बिदरे
आदिकाण्ड गाय कृत्तिवास विचक्षण * राम ध्यान राम ज्ञान राम से जीवन

श्रीरामके राक्षसंग्रह युद्धे प्रेरणे दशरथेर अस्वीकार

यखन शुइया थाकि, रामके हृदये राखि, भूमे राखि नाहिक प्रतीत।
स्वप्ने ना देखिले ताय, प्राण ओष्ठागत प्राय, चमकिया चाहि चारि भित ॥
येमने पेयेछि राम, कहि से सकल क्रमे, मृगया करिते गिया वने।
सिन्धु नामे मुनिवरे, सरोवरे जल भरे, तारे मारि शब्दभेदी बाणे ॥
मृत मुनि कोले करि, गेलाम अन्धकपुरी, देखि मुनि अग्निर समान।
पुत्र-पुत्र बलि डाके, मरा पुत्र दिलाम ताँके, पुत्रशोके से छाड़िल प्राण ॥

---

१ प्रारब्ध २ सदैव ३ खटकता रहा ४ कठिन ५ अत्योक्ति ६ विश्वास।

'मृत्युयोग वियोग-सुत'—मुनि शाप दिय बरदान सम।
यहि भाँति पाये चारि सुत, भयभीत हिय, मुनिनाथ! मम॥
स्वयं चलि, दलि दनुज, रच्छहुँ याग; सुनि मुनि कोप किय।
बिन लखन-राम न काम, चाहत कुसल कोसलनाथ हिय॥
दोउ सुवन दै. मुनिकाज करु, नतु शाप वंश विनासिहौं।
कौशिक कुपित लखि, कहत नृप, मुनि! कछुक अर्ज सुनाइहौं॥

राजा दशरथ का विश्वामित्र मुनि के साथ छल करके भरत और शत्रुघ्न को भेजना
और विश्वामित्र का कोप, फिर राम को भेजना स्वीकार

बारी बयस लड़ुरियाँ मीसा * रन न ज्ञान! किमि खरहिं, मुनीसा?
जेतक मैन चहहू तव हेतू * हनै दनुजगन कटक समेतू
रमट[1] कटक हित कित तपकानन? * एक राम समरथ खल नासन
नृप तव मैन न कारज लेसू * रविकुल, जहँ हरिचन्द नरेसू
दै छिति दान, बेचि सुत-दारा * सत्यसंध मम भार उतारा
तहँ लघु भ्रात मुनिन-उपहासू! * प्रगट भानुकुल आजु विनासू
निरखि कोप, नृप युगुति बनाई * भरत - रिपुहन समीप बुलाई
करहु अनुगमन मुनि आदेसू * नृप - प्रवञ्च[2] मुनि ज्ञान न लेसू

छिलाम सन्तान-हीन, मनोदुखे रात्रिदिन, बधिलाम सिन्धुर जीवन।
कुपिया सिन्धुर बाप, दिल मोरे अभिशाप, तेइ पाइलाम एइ धन॥
अतएव तपोधन, शुन मम निवेदन, आमि याब सहित तोमार।
विना श्रीराम लक्ष्मण, अन्य कि प्रयोजन, याहा चाह दिब शतबार॥
राजार वचन शुनि, कुपिलेन महामुनि, झाट देह तोमार कुमार।
आपन मङ्गल चाह, श्रीराम लक्ष्मणे देह, नहे वंश नाशिब तोमार॥

राजा दशरथ विश्वामित्र मुनिके प्रतारणा करिया भरत ओ शत्रुघ्न के प्रेरण
ओ विश्वामित्रेर कोप, तारपरे रामेर गमन स्वीकार

राजा बलिलेन मुनि करि निवेदन * धनुर्विद्या नाहि जाने कि करिबे रण
अत्यल्प वयस मम पुत्र चारि गुटि * शिरे चूल नाहि घुचे आछे पञ्चझुटि
अन्य सैन्य यत चाह लह तपोधन * ताहारा करिबे निशाचरे निवारण
शुनिया कहेन विश्वामित्र तपोधन * कटके खाइबे यत कोथा पाव धन
एका राम गेले हय कार्य्येर साधन * सहस्र कटके मम नाहि प्रयोजन
तव वंशे छिल ये हरिश्चन्द्र राजा * पृथिवी आमाके दिया करिलेक पूजा
तथापि ना पाइलेन मनेर सान्त्वना * भार्या पुत्र बेचिया से दिलेन दक्षिणा
एका राम तुमि दिते कर उपहास * सूर्य्यवंश बुझि आज हइल विनाश
चिन्तित हइया राजा भावि मने मने * डाकिलेन भरत शत्रुघ्न दुइ जने
दोहे दाँडाइल आसि मुनिर साक्षाते * राजा बलिलेन याह मुनिर सङ्गेते

१ फौज के लिए अन्न २ ठगाई, छल।

लखन-राम तिन दोउ अनुमानी * कौशिक चले मोद मन मानी
सरयू तीर पहुँचि मुनिराई * युगुल सुतन दुइ पथ दिखराई
सुगम पंथ दिन तीन चलाई * पहर तीन दुर्गम पथ पाई
दुर्गम मग ताड़का सुगरी[1] * लगति, खाति मुनिगन नित मारी
मन भावै सोइ मग अनुसरहीं * 'कुपथ न हेतु'—भूप-सुत कहहीं
एक दनुजि ! डरपत रनबंका ! * राम-लखन कस ? मुनि मन संका
बीतै कस अगनित खल पाई ? * किमि कोटिक दल-दनुज नमाई ?
धरत ध्यान मुनि नृप-छल जाना * दीन न राम, भरत पहिचाना

दो० फिरे गाधिसुत, कुपित अति, दसरथ किय उपहास !
सहित अवध पुरजन सकल, भूपति करौं विनास ।। १२० ।।

मुनि-दृग प्रगटी पावक-रासी[2] * जरत नगर आकुल पुरबासी
हाट-बाट चहुँ जरैं अटारी * राम समीप भजे नर-नारी
तुम तजि, दीन भरत नरनाहू * कौशिक-कोप अनल पुर दाहू
नगर त्रास लखि अति दुख पागे * धाय राम मुनि चरनन लागे
जेहि सिर पाप—दण्ड-अधिकारी ! * निरपराध कस संकट डारी

भूपतिर वञ्चनाय भ्रान्त तपोधन * मने भाविलेन एइ श्रीराम लक्ष्मण
आगे यान महामुनि पाछे दुइजन * सरयू नदीर तीरे दिल दरशन
मुनि बलिलेन शुन भूपति कुमार * हेथा गमनेर पथ आछे द्विप्रकार
एइ पथे गेले याइ तिन दिने घर * एइ पथे गेले लागे तृतीय प्रहर
तृतीय प्रहर पथे किन्तु आछे भय * सेइ पथे ताड़का राक्षसी नामे रय
ताड़िया धरिया खाय यत मुनिगण * कोन पथे याइबे तोमार लागे मने
बलिलेन भरत शुनह तपोधन * दुष्ट घाँटाइया पथे कोन प्रयोजन
एकथा शुनिया मुनि भाविलेन मने * इनि कि हबेन योग्य राक्षस निधने
एक राक्षसेर नाम शुनि एत डर * मारिबेन किसे इनि कोटि निशाचर
राजार शठता इनि भाबेन अन्तरे * श्रीरामे ना दिया राजा दिल भरतेरे
आमार सहित राजा करे उपहास * अयोध्या सहित आजि करिब विनाश
क्रोधे फिरिलेन पुनः विश्वामित्र ऋषि * निर्गत हइल तार नेत्र अग्निराशि
सेइ अग्नि लागे गिया अयोध्या-नगरे * प्रजार नावत घर द्वार दग्ध करे
कान्दिया चलिल प्रजा रामेर गोचरे * विश्वामित्र मुनि आसि सर्व्वनाश करे
तोमारे ना दिया राजा दिल भरतेरे * से कारणे ए आपद अयोध्या-नगरे
प्रजार क्रन्दन शुनि रामेर तरास * धाइया गेलेन राम विश्वामित्र पाश
मुनिर चरण धरि बले रघुमणि * प्रजालोके रक्षा प्रभु करह आपनि
अपराध येइ करे दण्ड कर तार * निरपराधीर दण्ड करा अविचार

१ राक्षसी २ अग्नि की लपटें ।

कोप अकारन, मुनि मन आवै * सोइ छन पूरुब धर्म नसावै
पितु सनेहबस मोहिं न दीना * करौं विदेह निसाचर-हीना
रच्छहु प्रजा, शमन! तपपुञ्जा! * राम-बचन मृदु मुनि-मन रञ्जा
तप प्रभाव, अमरित मुनि-लोचन * सरसि अवध किय संकट मोचन
हास न त्रास विपति कहुँ लेसू * मुनि-तप कौतुक राम बिसेसू!

यज्ञरक्षा के लिए मिथिला में श्रीराम-लक्ष्मण का जाना और मन्त्र-दीक्षा।

पञ्चशिखा सिर हरि अवतारा * मुग्ध राम-छबि मुनी निहारा
नभ शरदेन्दु[1] सरिस अभिरामा[2]! * शोभाधाम चलहु मम ग्रामा
मुनी कथा नृप, लखि न उपाऊ * सौंपेउ राम - लखन मुनिराऊ
रहु निचिन्त[3], दसरथ बड़भागी * राम हेतु भय संका त्यागी
तुमहिं न बोध, असुर-बध हेता * जनम राम-तन कृपानिकेता
नृप प्रबोधि, मुनि सुतन बुलावा * सोइ छन रघुबर विनय सुनावा

दो० जो अनुमति, आयसु-जननि, लै, पुनि करौं पयान।
नतरु अनन्तर, रुदन-रत, तजै अन्न-जल-पान ॥ १२१ ॥

चले बहोरि कौशिलाधामा * करि प्रनाम विनयेउ श्रीरामा
मिथिला असुर बिघिन[4] नित करहीं * नित तिन कोप विपुल मुनि मरहीं

मुनि हैया यद्द जन रागे देय मन * पूर्व्व धर्म्म नष्ट तार हय सेइक्षण
पुत्रे पाठाइते पिता हलेन कातर * यज्ञ रक्षा करि गिया मिथिला नगर
हासिलेन मुनिराज रामेर वचने * अयोध्यार पाने चान अमृत नयने
सकल करित पारे तपेर कारण * येमन अयोध्यापुरी हइल तेमन
मुनिर चरित्र देखि रामेर तरास * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

मिथिलाय यज्ञरक्षार्थे श्रीराम लक्ष्मणेर गमन ओ मन्त्र दीक्षा

शिरे पञ्च झुटि राम विष्णु अवतार * मुग्ध हइलेन मुनि रूपेते ताँहार
पूर्णिमार चन्द्र येन उदय आकाश * मुनि बलिलेन राम चल मोर देशे
जानिलेन महाराज रामेर गमन * लक्ष्मण सहित रामे करेन अर्पण
बलिलेन विश्वामित्र राजार गोचर * राम लागि चिन्ता ना करिह नरेश्वर
तुमि नाहि जानह रामेर गुणलेश * राक्षस बधिते अवतीर्ण हृषिकेश
श्रीराम लक्ष्मणे ल'ये आमि देशे याइ * स्थिर हओ महाराज कोन चिन्ता नाइ
राजारे कहिया एइ प्रबोध वचन * मुनि बलिलेन चल श्रीराम लक्ष्मण
श्रीराम बलेन मुनि यदि बल तुमि * मातृस्थाने बिदाय लइया आसि आमि
माये ना कहिया याब मिथिला नगर * कान्दिबेन अन्नजल छाड़ि निरन्तर
गेलेन श्रीरामचन्द्र मायेर गोचरे * प्रणाम करिया पदे बलेन मायेरे
आइलेन विश्वामित्र लइते आमारे * मिथिलाय जाइ आमि यज्ञ राखिबारे

---

१ शरत्पूनो का चंद्र २ मनोहर ३ बेफ़िक्र (निश्चिंत) ४ बिघ्न।

रच्छहुँ याग असुर संहारी * कौशिक चहत मोहिं महतारी
मंगल मन मुद आसिस-माई * लहि प्रसाद लौटउँ जय पाई
अवसर प्रथम, समर सुभ मोरा * उचित न मोच जननि मम ओरा
उपजी सुनत वेदना भारी * भीजे बसन, झरत दृग वारी
भरि सुअंक, कर फेरति सीसा * कातर हिय, बहु भाँति असीसा
मातहिं बहु प्रबोधि रघुबीरा * ढरकत, रुकत न लोचन नीरा
चरन धूरि पुनि सीस सँवारी * किय सुभगमन राम धनुधारी
राम-लखन गमने मुनि साथा * दृग जल, धरनि गिरे नरनाथा
ओझल राम न, तौ लौं दरसन * छिति पलोटि, नृप कातर क्रन्दन
समुझावत बहु सचिव सनेही * भावी[1] अमिट, न संशय येही
निरखि राम मुनि मोद-उछाहू * रचेउ दैव रघुनाथ - बिवाहू
विधि - अनुगत[2] अश्विनीकुमारा * तिमि दोउ, मुनि-पाछे पग धारा
विकल अवध-जन लौटति गेहा * उत बन विश्वामित्र स-नेहा
कुअँरन-बदन[3] मलिन रवितापा * अवलोकत मुनि संमय व्यापा
सो० रामहिं बन सों काम, वर्ष चतुर्दस व्यथा नित।
दुसह एक दिन घाम, अवधि[4] पूगि किमि काटिहैं ॥ १२२ ॥
सोइ विचारि मुनि मत थिर कीन्हा * रामहिं मंत्र-दीक्षा दीन्हा

शुद्ध मने आमारे आशीर्व्वाद कर * युद्धे जयी हइ येन प्रसादे तोमार
प्रथम युद्धेते यात्रा करितेछि आमि * आमार लागिया शोक ना करह तुमि
कौशल्या शुनिया तबे करिछे रोदन * भिजिल नयन नीरे नेत्रेर बसन
कातरा कौशल्या कोले करिया रामेरे * आशीर्व्वाद करिलेन कर दिया शिरे
मायेरे कहेन राम प्रबोध वचन * नेत्र नीर नेत्रेते हइल निवारण
मातृ पदधूलि राम वन्दिलेन माथे * शुभ यात्रा करिलेन धनुर्व्वाण हाते
श्रीराम लक्ष्मणे निया विश्वामित्र यान * महाराज नेत्रनीरे धरणी भासान
कत दूर गिया राम हन अदर्शन * भूमिते पड़िया राजा करेन क्रन्दन
राजा के प्रबोध करे यत पात्रगण * के करे अन्यथा याहा विधिर घटन
रामे देखि मुनिवर आनन्दित मन * रामेर विवाह हबे दैवेर घटन
आगे मुनिवर यान पाछे दुइजन * ब्रह्मार पश्चाते येन अश्विनीनन्दन
कान्दिते कान्दिते सर्व्वे गेल निज बासे * राम निया विश्वामित्र वनेते प्रवेशे
आगे मुनि यान पाछे श्रीराम लक्ष्मण * आतपे हइल म्लान दोहार वदन
ताहा देखि विश्वामित्र अन्तरे चिन्तित * एक दिने श्रीरामेर दुःख उपस्थित
रविर तापेते यदि मुखे आसे घाम * बहुकाल कि मते भ्रमिबे वने राम
विश्वामित्र एइ मत भाविया अन्तरे * कराइल मन्त्रदीक्षा श्रीरामचन्द्रेरे

---

१ होनी २ ब्रह्मा के पीछे मानो अश्विनीकुमार चल रहे हैं ३ मुख ४ मियाद।

रघुकुल जे पूर्वज, रघुवीरा ! * तजे प्रान शुचि सरयू तीरा
तीरथ पुन्य सलिल सोइ पावन * मार्जन[1] करि आवहु मनभावन
लेहु सुमंत्र दीक्षा आई * सकल शोक - भय - हेतु नसाई
सहस वर्ष नहिं छुधा - पिपासा * सुनि, नहाय, आये मुनि पासा
युगुल बंधु दिवि[2] मंत्र सिखावा * सुरगन निरखि अतुल सुख पावा
सोइ बल अनाहार बनवासा * विक्रम लखन इन्द्रजित[3] नासा
दिव्य - मंत्र - दीक्षित शिर नाई * मुनि-अनुगमन कीन रघुराई

श्रीराम द्वारा ताड़का राक्षसी का बध और अहल्या-उद्धार

बन - ताड़का जबहिं नियरावा * प्रथम प्रश्न मुनि पुनि दोहरावा
फूटत युगुल पंथ इत लखहू * मन भावै सोइ मग अनुसरहू
एक सुगम दिन तीनि चलाई * पहर तीनि, दुर्गम पथ पाई
दुर्गम पथ ताड़का सुरारी * लगत, खात, मुनिगन नित मारी
भयंकरी दानवि जित लागा * सो पथ, सुत ! न उचित अनुरागा !
मग विलंब, गुरु ! मोहिं न भावा * पहर तीनि द्रुत[4] पंथ सुहावा
जो निसिचरी करइ भटभेरा[5] * तौ न तासु बध पातक हेरा
कुपथ विभूरि उपज मुनि तापा * किमि उछाह रामहिं अस व्यापा ?

विश्वामित्र बलेन शुनह रघुवीर * स्नान करि एस गिया सरयू नदीर
यत राजा पूर्व्व सूर्य्यवंश हये छिल * एइ स्थाने प्राण छाड़ि स्वर्गवासे गेल
एइ पुण्यतीर्थे राम स्नान कर तुमि * तोमारे सुमन्त्र दीक्षा कराइब आमि
शोक दुःख कखन ना पाइबे अन्तरे * क्षुधा तृष्णा ना हइबे सहस्र वत्सरे
करिलेन रामचन्द्र से मन्त्र ग्रहण * रामेरे कहिते ताहा शिखिल लक्ष्मण
दृढ करि शिखिलेन भाई दुइजन * आनन्दित हइया देखिल देवगण
बहुकाल अनाहारे थाकिबे लक्ष्मण * ताहाते हइबे इन्द्रजितेर मरण
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्वेर शिक्षा * आदिकाण्ड गाइल रामेर मन्त्र दीक्षा

श्रीराम कर्त्तृक ताड़का राक्षसी-बध ओ अहल्या उद्धार

गुरुर चरणे राम करिलेन नति * रामे लैया विश्वामित्र करिलेन गति
ताड़कार वने आसि कहे अभिमत * रामे चाहि बलिलेन एइ दुटि पथ
एइ पथे याइ घर तृतीय प्रहरे * एइ पथे तिन दिने याइ मम घरे
तिन प्रहरेर पथे किन्तु भय करि * ताड़का राक्षसी आछे महा भयंकरी
ताड़िया धरिया खाय यत जीवगण * कोन पथे याइ बल श्रीराम लक्ष्मण
करिलेन राम गुरु-वाक्येर उत्तर * तिन दिन फेरे केन याब मुनिवर
यदि से राक्षसी पथे आइसे खाइते * विचारे नाहिक दोष ताहारे मारिते
रामेरे कहेन विश्वामित्र मुनिवर * ओ पथेर नामे मोर गाये आसे ज्वर

---

१ स्नान २ दिव्य, अलौकिक ३ मेघनाद ४ जल्दी वाला ५ झुरमुट, भमेला।

सो० भाजहु पग धरि सीस, भेंट ताड़का कतहुँ जो।
सुनत कथन, जगदीस, बिहँसि धीर बोलत बचन ॥ १२३ ॥

राम न नाम, विफल धनुबाना * हनउँ एक सर राकसि प्राना
सर द्वितीय लौं गुरू-दोहाई * तीज गहे मम धर्म नसाई
करि प्रन अटल, चले मुनि साथा * कानन अनुज सहित रघुनाथा
युगल बंधु बिच, मुनि छवि पावा * ठिठकि दूर, गृह-असुरि दिखावा
विक्रम बरनि, मनहुँ भय पाई+ * कुअँगन तजि, मुनि चले बराई
लखन जाहु सँग, गुरु भयभीता * तजब अकेल न उचित प्रतीता
लछिमन कहत विनय कर जोरी * अनुचर बिलग न प्रभु, मति मोरी
विक्रम विपुल विकट गति जाकी * तासन उचित न रन एकाकी
सुनहु लखन प्रिय ! मन भय त्यागी * कस समर्थ निसचरि हतभागी
जो मिलि सकल जुरहिं रन अर्था * अँगुरि न मम, सठ लंघ समर्था
गुरु-अनुगमन लखन पुनि कीन्हा * असुर-अरण्य राम पग दीन्हा
धनुर्दण्ड बिच धरि कर बामा * तानि तन्तु[1] दच्छिण कर रामा
फेंट-बसन कसि, सारंग[2] हाथा * दूर्वादल श्यामल रघुनाथा
धनुटंकार प्रथम, जग हाला * स्वर्ग, मर्त्य, पुनि चकित पताला
सुबरन-खाट ताड़का सोई * सुनि टंकार नींद तिन खोई

तोमार बासना आमि ना पारि बुझिते * मोरे निया याह बुझि राक्षसेरे दिते
यखन राक्षसी मोरे आसिबे ताड़िया * आमारे एड़िया दोंहे याबे पलाइया
गुरुर वचने हासिलेन प्रभु राम * विफल धनुक धरि व्यर्थ राम नाम
एक बाण विना कि द्वितीय बाण धरि * तोमार दोहाइ यदि तिन बाण मारि
एइमत रघुवीर प्रतिज्ञा करिते * चलिलेन मुनि सेइ ताड़का देखिते
उभय भ्रातार मध्ये थाक मुनिवर * दूर हैते देखाइल ताड़कार घर
कर बाड़ाइया तार घर देखाइया * अति त्रासे मुनिवर यान पलाइया
श्रीराम बलेन भाई मुनिर सहित * शीघ्र याह गुरु एका यान अनुचित
लक्ष्मण बलेन रामे जोड़ करि हात * थाकुक सेवक संग प्रभु रघुनाथ
शुनिले ताहार कथा बड़इ विषम * एकला केमने राम करिबे विक्रम
बलेन श्रीराम भाइ भय नाइ मने * कि करिते पारे भाइ राक्षसीर गणे
सकल राक्षसी यदि हय एक मिलि * लङ्घिते ना पारे मम कनिष्ठ अंगुलि
गेलेन मुनिर सङ्गे लक्ष्मण तखन * ताड़कार प्रति राम करेन गमन
बाम हाँटु दिया राम धनु मध्यखाने * दक्षिण हस्तेते गुण दिलेन से स्थाने
आँटिया सुपीत वस्त्र बान्धिलेन राम * बाम हाते धनुर्ब्बाण दूर्व्वादल श्याम
प्रथम दिलेन राम धनुके टङ्कार * स्वर्ग मर्त्त पाताले लागिल चमत्कार
शुये छिल राक्षसी से सुवर्णेर खाटे * धनुक टङ्कार शुनि चमकिया उठे

+ मुनि ने किशोरों की परीक्षार्थ भय का रूप दिखाया है। १ प्रत्यञ्चा २ धनुष।

नयन पसारि मुरारि[1] निहारी * हरित दूबदल सम छवि प्यारी

दो० आसन-हेत विरञ्चि दिय, कोमल मानव-चाम।
अबहिं हरौं तव प्रान, कहि, उठि धाई जित राम ॥ १२४ ॥

विप्रचर्म-पट खल तन धरही * भूर[2], चलत सो चरमर करही
कानन कुण्डल मुनिन-कपाला * मनुज - माल उर झूलत माला
रक्त-मांस, मुनि जरठ,[3] विहीना * अस्थि - चर्म तिनकर रसहीना
कोमल सरुचि मांस विधि दीना * दनुजि कथन रघुवर सुनि लीना
विपुल लोम[4] - युत ताम्र सरीरा * विकट दन्त जिमि लौह जँजीरा
भच्छन हित, मुख चली पसारे * लखि निसचरि प्रभु वचन उचारे
केतिक मुनि हनि देस उजारे * तजेउ पंथ तव-त्रास विचारे
पठवउँ आजु तोहिं यमलोका * कुपित निसिचरी प्रभुहिं विलोका
गर्जति निडर, विकट तन धारी * चली राम तन, शाल उपारी
बालक! सम्हरु, करौं तव पाना * नभ रव घोर, शाल संधाना
निरखि, राम सर एक चलावा * खण्ड-खण्ड, छिति विटप गिरावा
आयुध[5] विफल कोप अधिकाई * शिशुपाल तरु[6] लै पुनि धाई
तौलति कर, तकि प्रभु, रव घोरा * हरि-सर चलेउ दनुजि मुख ओरा

बसिया राक्षसी सेइ एक दृष्टे चाय * दूर्व्वादल श्याम रूप देखिल तथाय
उठिया चलिल सेइ राम विद्यमान * डाकिया बलिल आज लब तोर प्राण
ब्राह्मणेर चर्म तार गायेर कापड़ * चलिते ताहार वस्त्र करे खड़मड़
ब्राह्मणेर मुण्ड तार कर्णेर कुण्डल * मनुष्येर मुण्डमाला गलार उपर
बसिते आसन नाइ भावे मने मन * इहार चर्म्मेत हबे बसिते आसन
रक्त मास मुनिर शरीरे नाहि पाइ * अस्थि चर्म्म सार मात्र शुधू हाड़ खाई
अपूर्व्व इहार मास दिलेन विधाता * कहिलेन राम शुनि ताड़कार कथा
ताम्रवर्ण देखि तोर गाये लोमावली * दन्त गोटा देखि येन लोहार शिकलि
वदन व्यादन करि आइल खाइते * पाठाइब तोरे आजि यमेर घरेते
खाइया मनुष्य चेड़ी देश कैलि वन * तोर डरे पथे नाहि चले साधुजन
शुनिया रामेर वाक्य कुपिया अन्तरे * निकटे आसिया से विकट मूर्ति धरे
रामेरे खाइते जाय डरे नाहि पारे * शालगाछ उपाड़िल घोर हुहुङ्कारे
शालगाछ उपाड़िया घन दिल पाक * दूर-दूर करिया ताड़का दिल डाक
ताहा देखि रघुनाथ एड़िलेन बाण * बाणाघाते करिलेन गाछ खान-खान
गाछ काटा देखि कुपिया गेल वने * शिशपार गाछ देखि घन-घन टाने
शिंशपार गाछ तोले रामे मारिवारे * तार मुख भेदिलेन राम एक शरे

१ राक्षसी २ सूखे हुए ३ बूढ़े ४ रोम ५ अस्त्र ६ शीशम का वृक्ष।

तदपि ताड़का अति रन ठाना * उत प्रभु तजत बान पर बाना
पावस घन जिमि दामिनि नादा * गर्जे तर्जे सर समर विवादा
सुर-बानी सुनि परी अकासा * बिन सर वज्र न दनुजि-विनासा

दो० राम वज्रसर मारि हिय, राकसि छीन अचेत।
योजन दूरि पचास लौं, गिरी जाय सो खेत ॥ १२५ ॥

आर्त्तनाद करि त्यागेसि प्राना * सुनत दूरि, कौशिक हतज्ञाना
राम, पठयि राछसि यमगेहा * बन्दंउ चलि मुनि चरन स-नेहा
मुनि सचेत, रघुवर उर लाई * दुर्जय दनुजि तात जय पाई
विनयेउ राम, कहा बल मोरा ? * बिन गुरु-कृपा न कारज घोरा
कौशल्या - सुत ! सुनहु अनूपा * कस ताड़का ? लखिय चलि रूपा
निसिचरि निकट चले धरि धीरा * यदपि मृतक, मुनि कम्प शरीरा
मुनि-मन सोच ! भयावह रूपा * लखेउ न विकट तासु अनुरूपा
हनि ताड़का, राम दृगकञ्जा * चले भूमि जहँ जन्म - प्रभञ्जा[1]
उद्गम इत उनचास प्रभञ्जन[2] * कुअँर लखहु ! कह गाधियनन्दन
पवन-भूमि तजि, पुनि पग डारा * गौतमतिय - उपवन विस्तारा
मुनि आदेस, सुनु राजिवलोचन ! * उपल[3] परसि पग करु अघमोचन[4]

तथापि नाड़िया जाय रामे गिलिवारे * महावीर भय कभु नाहि करे तारे
बाणेर उपरे बाण शब्द ठनठनि * वर्षाकाले विद्युतेर येन झनझनि
श्रीरामेरे डाकिया बलेन देवगण * वज्रबाणे ताड़कार बधह जीवन
वज्रबाण लइ राम युड़िया धनुके * निर्घात बाजिल बाण ताड़कार बुके
बुके बाण बाजिते हइल अचेतन * ताड़का पड़िल गिया पञ्चाश योजन
डाक विपरीत छाड़ि छाड़िलेक प्राण * शब्द शुनि विश्वामित्र हैल हतज्ञान
पाठाइया ताड़कारे यमेर सदन * मुनिर चरण राम करिल वन्दन
चेतन पाइया बले गाधिर नन्दन * ताड़का मारिला बाछा कौशल्या जीवन
श्रीराम बलेन गुरु कि शक्ति आमार * ताड़कारे बधिलाम प्रसादे तोमार
मुनि बलिलेन शुन कौशल्यानन्दन * ताड़कारे देखि गिया ताड़का केमन
ताड़कारे देखिते मुनि करेन प्रस्थान * मरेछे ताड़का तबू मुनि कम्पमान
ताड़कारे देखिया भावेन मुनि मने * एमन विकट मूर्त्ति ना देखि नयने
ताड़कारे मारिया राम राजीवलोचन * पवनेर जन्मभूमि करेन गमन
विश्वामित्र कहे देख श्रीरामलक्ष्मण * एइ खाने हैल ऊनपञ्चाश पवन
पवनेर जन्मभूमि पश्चात् करिया * अहल्यार तपोवने गेलेन चलिया
मुनि बलिलेन राम कमललोचन * पाषाण उपरे पद करह अर्पण

१ पवन की जन्मभूमि २ उनचास वायु का उत्पत्ति-स्थान ३ पत्थर ४ पापमुक्त।

परमन मिला कहहु कस कारन ? * कौतूहल गुरु करिय निवारन
कौशिक कही पुरातन बाता * सिर्जि सहस रूपसी विधाता
तिन छवि एक सवाँरि अहिल्या * अतुल रूप जग तासु न तुल्या
रूपरासि सो गौतम - नारी ! * दिवस एक, मुनि तप पग धारी
मुनि-प्रिय-शिष्य—इन्द्र, मुनिवेसा * मुनि सूने, किय कुटी प्रवेसा

दो० कस अकाल प्रभु आगमन ? प्रश्न अहिल्या कीन ।
छम्मवेस सुरपति उतर, गौतम-तिय सों दीन ॥ १२६ ॥

हिय, तव रूप प्रिये ! स्मरना * मदन-दग्ध ! किमि तप-आचरना
गुरु-तिय-रति सुरपति मन डारा * सतवन्ती पति - आयसु धारा
छम्म वेस पति — शचिपति संगा * विवस अहिल्या-व्रत इमि भंगा
तप-निवृत्त गौतम गृह आये * आसन-मान नारि सों पाये
अवसर विन, शृंगार - प्रसंगा * प्रिय कस लखत चिह्न तव अंगा ?
सुनि ससंक, विनयेउ मुनिनारी * स्वयं नाथ करनी - अधिकारी
गिरेउ टूटि नभ गौतम-सीसा * सकल कथा सुनि विकल मुनीसा
धरत ध्यान, कौतुक सब जाना * पापहेतु - सुरपति, पहिचाना
इन्द्र ! इन्द्र ! मुनि गर्जि पुकारा * दबकति[1] पाँव पुरन्दर डारा
अनाहार, धधकत हिय आगी * बोलत दुगुन कोप मुनि पागी

शुनिया बलेन राम मुनिर वचने * पाषाणेते दिब पद किसेर कारणे
मुनि बलिलेन शुन पुरातन कथा * सहस्र सुन्दरी सृष्टि करिलेन धाता
सृजिलेन ता सबार रूपेते अहल्या * त्रिभुवने छिल ना सौन्दर्य्ये तार तुल्या
करिलेन अहल्याके विवाह गौतम * शिष्य गौतमेर इन्द्र अति प्रियतम
एक दिन गौतम गेलेन तपस्याय * गौतमेर वेशे इन्द्र प्रवेशे तथाय
अहल्या गौतम ज्ञाने करे सम्भाषण * आजके सकाले केन घरे आगमन
इन्द्र बले तव रूप हइल स्मरण * केमने करिब प्रिये तपस्याचरण
मदन दहने दग्ध हय मम हिया * निर्व्वाण करह प्रिये आलिङ्गन दिया
पतिव्रता नाहि लङ्घे पतिर वचन * तखनि शयनगृहे करिल गमन
गुरुपत्नी बलिया ना करिल विचार * धर्म्मलोप करिल वासव अहल्यार
तपस्या करिया मुनि आइलेन घरे * अहल्या आसन दिल अति समादरे
गौतम बलेन प्रिये जिज्ञासि तोमारे * शृङ्गार लक्षण केन तोमार शरीरे
अहल्या बलेन प्रभु निवेदि तोमारे * आपनि करिया कर्म्म दोषह आमारे
ए कथा शुनिया मुनि हेट कैल तुण्डे * आकाश भाङ्गिया पड़े गौतमेर मुण्डे
जानिलेन ध्यानेते गौतम मुनिवर * जाति नाश करिल आसिया पुरन्दर
इन्द्र इन्द्र बलिया डाकेन मुनिवर * पुथि काँखे करिया आइल पुरन्दर
दिनान्ते अभुक्त मुनि कुपित अन्तरे * द्विगुण ज्वलिया कहिलेन पुरन्दरे

१ भय से पैर दबाते हुये ।

नाना शास्त्र ज्ञान तैं लीन्हा * गुरु-दच्छिना तासु भल दीन्हा
गुरु-तिय-धर्म, नीच ! तैं भंगा * सठ ! तव होय योनिमय अंगा
पुनि, दिय शाप सुतिय अतिरूपा * बसइ तपोवन शिला - सरूपा
विकल चरन धरि रुदन अपारा * केहि विधि, नाथ ! शाप-निस्तारा ?
कातर तिय प्रबोधि अनुरागी * अमिट शाप मम सुनु हतभागी
दसरथ - गेह जनमि रघुनाथा * याग-छेम हित, कौशिक साथा

दो० गमनकाल, मग, चरन-रज, तिन परसत तव सीस ।
लहै मनुज-तन, रुदन तजु, सुमिरु कृपा जगदीस ॥ १२७ ॥

लच्छमन कहत विनय मुनि लीजै * ब्राह्मणि-मीम, चरन किमि दीजै
कतहुँ न द्विज, प्रस्तर यहि काला * सुनत पदुमदग राम कृपाला
परसेउ चरन, सिला तजि रूपा * शापमुक्त तिय भई अनूपा
अमित मोद, गौतम तहँ आये * निरखि अहिल्यहिं सुख अति पाये
बिगत अतीत, मिली पुनि जोरी * प्रभु-स्तवन करैं कर जोरी
भक्तन हित तरुकल्प अनूपा ! * दया सिन्धु ! अगतिन-गति रूपा !
किय निस्तार, युगुल प्रभु-सरना * नमन राम जय रघुपति - चरना
एक भाव मन प्रभु तल्लीना * रचेउ चरित कृत्तिवास प्रवीना

श्रीरामचन्द्र द्वारा तीन कोटि राक्षसों का संहार एवं मिथिलागमन

मुनिहिं कहेउ पुनि राजिवलोचन * भयेउ इन्द्र किमि शाप-विमोचन

तोके पड़ाइलाम ये आमि शास्त्र नाना * एतदिने भाल दिलि गुरुर दक्षिणा
जाति नष्ट कैलि तुइ ओरे पुरन्दर * योनिमय होक तोर सर्व्व कलेवर
अहल्या के शापिलेन क्रोधे मुनिवर * काननेते तोर तनु हउक प्रस्तर
अहल्या चरणे धरि कहिल तखन * कत काले हबे मोर शाप विमोचन
अहल्यारे कातर देखिया तपोधन * कहिलेन मम शाप ना हय खण्डन
जन्मिबेन जबे राम दशरथ घरे * विश्वामित्र लये जाबे यज्ञ राखिबारे
तोमार माथाय पद दिबेन यखन * तखनि हइबे मुक्त ना कर क्रन्दन
इहा शुनि लक्ष्मण बलेन शुन मुनि * केमने दिबेन पद उनि ये ब्राह्मणी
विश्वामित्र कहिलेन शुन रघुवर * ब्राह्मणी नहेन उनि एखन प्रस्तर
ए कथा शुनिया राम कमललोचन * तदुपरे करिलेन चरण अर्पण
ताहाते हइल तार शाप विमोचन * आह्लादित शुनिया गौतम तपोधन
अहल्या के देखिया सानन्द महामुनि * पुनर्व्वार करिलेन पुष्पेर छाउनि
दोंहे मिलि स्तव करे युड़ि दुइ कर * भक्तवाञ्छा कल्पतरु दयार सागर
जय-जय रामचन्द्र अगतिर गति * निस्तार दुयेरे प्रभु पदे करि नति
शुन सबे परे भाइ हैया एकमन * आदिकाण्ड गाइल अहल्या - विवरण

श्रीरामचन्द्र कर्त्तृक तिनकोटि राक्षस-बध ओ मिथिलाय गमन

श्रीराम बलेन प्रभु करि निवेदन * केमने हइल मुक्त सहस्रलोचन

विश्वामित्र कथा इमि बरनी * सहसयोनि - युत वासव[1] करनी
सोचत सुरगन, सुरपति लाजा * किमि निवरै[2] उपहास-समाजा
अश्वमेघ करि पावन यागा * अमित नेम-जप-तप अनुरागा
कायाकल्प, चिह्न जे अंगा * लोचन सहस भये एकसंगा
टोली[3], रत इमि कथा - प्रसंगा * पहुँची कछुक काल तट-गंगा
पाहन[4] पलटि भई मुनिगृहनी * केवट सुनत लुकायेसि तरनी[5]
कौशिक डपटि कहेउ, कैवर्त्त[6]! * आयसु-लंघ, मिलावहुँ गर्त्त[7]

दो० उड़े प्रान, आयेउ निकट, कहेउ कोपि मुनिनाथ।
सुरसरि पार उतारु मोहिं, युगुल किशोरन साथ ॥ १२८ ॥

केवट करुन कथा निज बरनी * छिद्र अनेक, जीर्न मम तरनी
उजुर न मुनि आयसु सिर धारौं * सबन कंध लै पार उतारौं
कित आनेउ छबि अतुल कुमारा * जिन पग छुअत शिला निस्तारा
सुनी कथा सोइ भय-उपजावन * इन रज-चरन तरत जुइ पाहन
पद-रज परसि तरुनि[8] भइ तरनी[9] * कित निवास ? गृह कुलटा घरनी[10]
नौका-हरन, हरन सब काहू * मुनि कित मम परिवार निबाहू ?
जो प्रभु, चरन - धूरि पखराई * तौ तरि[11]-परस[12] न भय अधिकाई
केवट - युक्ति विनय - रस पागी * अनुमति दीन राम अनुरागी

मुनि बलिलेन शुन दशरथ सुत * हइलेन वासव सहस्र योनियुत
लज्जायुक्त हइलेन देव पुरन्दर * कि हबे उपाय सब भावेन अमर
अश्वमेध करिलेन तखन वासव * योनि छिल घुचिया हइल नेत्र सब
एइ रूपे कथा वार्ता कहिते-कहिते * तिन जने चलिलेन गङ्गार कूलेते
पाषाण हइल मुक्त कैवर्त्त ता शुने * नौकाखानि लइया से पलाइल वने
कैवर्त्तके डाकिया कहेन तपोधन * ना आइले भस्म आमि करिब एखन
एत शुनि कैवर्त्तेर उड़िल जीवन * आसिया मुनिर काछे दिल दरशन
मुनि बलिलेन बलि कैवर्त्त तोमारे * गङ्गाय करह पार ए तिन जनारे
कातरे कैवर्त्त कहे करिया विनय * नौकाखानि जीर्ण मम शत छिद्रमय
तबे यदि आज्ञा कर मोरे तपोधन * स्कन्धे करि पार करि याह तिनजन
कोथा हैते आनिला ए पुरुष सुन्दर * पायेर परशे मुक्त करिल प्रस्तर
ए कथा शुनिया आमि सभय अन्तर * चरण धूलिते मुक्त हइल पाथर
नौका मुक्त हय यदि लागि पदधूलि * कि दिया पोषिब आमि मम पौष्यगुलि
करिबेक गृहिणी आमाके गालागालि * बलिबे मुनिर बोले नौका हाराइलि
यदि बल श्रीरामेर चरण धोयाइ * नतुबा लागिबे धूला तरणी हाराइ
तरणीते त्वराय करिते आरोहण * धोयाइल कैवर्त्त श्रीरामेर चरण

१ इन्द्र २ निवारण हो ३ मण्डली ४ पत्थर ५ नाव ६ केवट ७ धूल में ८ तरुणा स्त्री ९ नाव १० गृहिणी (पत्नी) ११ नाव १२ स्पर्श।

पग पखारि कुअँरन मुनि संगा * तरनि चढ़ाय पार किय गंगा
कहेउ राम यहि सम जग माहीं * हे प्रिय लखन ! अकिञ्चन नाहीं
परत दीठि शुभ राम कृपाला * तरनी कनकमयी तत्काला
सरिता उतरि लखन - श्रीरामा * पूछत कत, मुनि ! मिथिलाधामा ?
चलिय बेगि, मुनि कहत स-नेहा[1] * तीन कोस, सुत ! अबहिं विदेहा
राम - लखन आगम तप-कानन * मुनि-तिय चकित चितै मनभावन
द्वादस वयस पञ्च सिर चोटी * कौतुक ! हनहिं दनुज त्रयकोटी !
शत,शत पुन्य-पूर्व केहि जागी ? * जन्मेमि जननि कवन बड़भागी ?

दो० नारी, अच्छत-दूब लै, पुनि-पुनि देयँ असीस ।
असुर-निकन्दन राम लखि, प्रमुदित सकल मुनीस ॥ १२६ ॥

प्रथक दिवस तपवन विश्रामा * भोर निवेदन किय श्रीरामा
युगुल बन्धु आये जेहि काजा * अनुमति सोइ दीजिय मुनिराजा
सुनहु तात हे रघुकुल-चन्दा * रचहिं याग अब द्विज-मुनि-वृन्दा
अब लौं जब-जब याग रचावा * ताड़क - सुत शोनित[2] बरसावा
विप्र - स्वभाव न समुचित क्रोधा * किये कोप, जप-तप अवरोधा[3]
यज्ञ-काज अविलंब अरंभा * मुनि - प्रसाद मेटहुँ खल - दम्भा

श्रीराम लक्ष्मण विश्वामित्र एइ तिने * पाटनी करिया पार गेल भव जिने
श्रीराम बलेन शुन प्राणेर लक्ष्मण * इहार समान नाहि देखि अकिञ्चन
शुभदृष्टे श्रीराम चाहेन तार पाने * हइल सुवर्णमयी तरणी तत्क्षणे
हइलेन गङ्गापार श्रीराम लक्ष्मण * जिज्ञासेन कत दूरे मिथिला भुवन
मुनि बलिलेन राम चलह सत्वर * एखन मिथिला आछे तिन क्रोशान्तर
पार ह'ये यान राम सहित लक्ष्मण * कहिते लागिल देखि मुनिपत्नीगण
द्वादश वर्षेर राम शिर पञ्चझुँटि * मारिबेन राक्षस कमने तिन कोटि
कोन भाग्यवती पुत्र धरियाछे गर्भे * कत शत पुण्य से ये करियाछे पूर्व्वे
आशीष करेन सबे हाते दूर्व्वाधान * मुनिगण आइलेन करिते कल्याण
श्रीरामेरे निरखिया यत मुनिगण * आनन्दसागरे मग्न सह तपोधन
स दिन वञ्चिया सुखे श्रीरामलक्ष्मण * प्रातःकाले मुनिरे करेन निवेदन
ये कार्य्य करिते आइलाम दुइ भाई * सेइ कार्य्ये अनुमति करह गोसाई
मुनिरा बलेन शुन श्रीराम लक्ष्मण * एखाने करिब यज्ञ सकल ब्राह्मण
आमरा सकले करि यज्ञ आरम्भन * रक्तवृष्टि करे दुष्ट ताड़कानन्दन
ना पारि करिते क्रोध आमरा ब्राह्मण * यदि क्रोध करि हय धर्म्म उल्लङ्घन
श्रीराम बलेन प्रभु करि निवेदन * अविलम्बे कर यज्ञक्रिया आरम्भन

१ नेह-सहित २ रक्त, खून ३ रुकावट ।

राम - घोष, तपसी तत्काला ❋ लै कुश चले यज्ञ शुचि शाला
कुश - आसन कोउ-कोउ मृगचर्मा ❋ पूरुब मुख असीन तपकर्मा
करहिं वेदध्वनि बटु अनुरागी ❋ स्वतः मंत्र - बल प्रगटति आगी
गगन धूम्र साकल्य[1] सुवासा ❋ निरखि असुरगन किय उपहासा
निसिचर-रहत, न यज्ञ-अचारा ❋ तीनि कोटि दल सजि हुँकारा
विपुल सैन मारीच सजावा ❋ यज्ञस्थल समीप चढ़ि धावा
सैनन[2] मुनिगन राम चेतावा ❋ होहु सचेत, दनुजदल आवा
रघुवर-दीठि जहाँ लौं जाई ❋ अगनित असुर अनी छिति छाई
तत्पर लखन-राम धनुबाना ❋ खैंचि श्रवन लौं सर संधाना
लिये विटप - पाषान विशाला ❋ दानव समर, बदन विकराला

दो० निमिष माहिं रघुवर हने, तीखे विशिख कराल ।
कोटि असुर आहत किये, धनि-धनि दसरथलाल ॥ १३० ॥

जूझे कोटि दनुज रन हेता ❋ जुरे कोटि धनुधर पुनि खेता
अति सुतीक्ष्ण सर हीरा - जीरा ❋ इन्द्रबान छोड़ति रघुबीरा
पशुपति बान, छुरूप - सुरूपा ❋ दलति असुर, ध्वनि मारु अनूपा
गर झलमल मनि माणिक-माला ❋ हनेउ असुर दुइ कोटि कृपाला
देयँ असीस, मुदित मुनिराई ❋ जीतइँ समर राम दोउ भाई

शुनिया रामेर कथा तपस्वी सकले ❋ खोला कुश लइया गेलन यज्ञस्थले
केह व्याघ्रचर्म्म वँसे केह कुशासने ❋ बसिलेन पूर्व्वमुख हइया आसने
वेदपाठ करिते लागिलेन सकले ❋ मन्त्रेर प्रभावे से अग्नि आपनि ज्वले
यज्ञेर यतेक धूम उड़ये आकाशे ❋ देखिया राक्षसगण मने-मने हासे
जीयन्त थाकिते मोरा मुनि यज्ञ करे ❋ तिन कोटि निशाचर साजिया चलरे
तिन कोटि लइया मारीच निशाचर ❋ साजिया आइल तारा यज्ञेर भितर
सङ्केत श्रीरामेरे जानान मुनिगण ❋ आसियाछे राक्षसगण कर निरीक्षण
देखिलेन रघुवीर निशाचर गण ❋ व्यापियाछे वसुमति ना जाय गणन
श्रीराम लक्ष्मण करे धरि धनुर्व्वाण ❋ आकर्ण पूरिया बाण करेन सन्धान
पादप पाथर ल'ये आइल विस्तर ❋ भयङ्कर कलेवर करे निशाचर
कटाक्षेते निक्षेप करेन राम शर ❋ ताहाते पड़ल एक कोटि निशाचर
एक कोटि पड़े यदि रणेर भितर ❋ अन्य कोटि लइया आइल धनुशर
हीरा बाण जीरा बाण अति खर धार ❋ मारये इन्द्रेर बाण कौशल्या-कुमार
क्षुरूपा सुरूपा बाण पशुपत आर ❋ राक्षस उपरे पड़े बलि मार-मार
गलाते लाम्बित मणिमाणिक्येर काठि ❋ रामबाणे पड़िल राक्षस दुइ कोटि
श्रीरामेरे आशीर्वाद करे मुनिगण ❋ सबे बले जयी होक श्रीराम लक्ष्मण

१ हवनहेतु सामग्री २ इशारे से ।

विप्र-वचन मत, कतहुँ न भंगा * युगुल बन्धु खेलत रनरंगा
वरुण, पवन, कालानल पासा * अटल राम सर विविध प्रकासा
मायासर गंधर्व विशेखा * निज दल रिपुन राममय देखा
करहिं परस्पर मारामारी * सुरगन निरखि मोद मन भारी
डोलत धरा राम सर-घाता * तीन कोटि निसिचरन निपाता
सर तीखे तकि राम-सरीरा * मारहिं यातुधान[1] बलबीरा
बरसत सतत[2] दानवी सायक * अनुज सहित विचलित रघुनायक
जर्जर भयेउ गात - रघुवीरा * रुधिर - लालरी श्याम शरीरा
'दनुज-पराभव' 'जय रघुनन्दन'[3] * भाषत सुर-भूसुर जगवन्दन
स्वस्तिवचन-द्विज, बल अति प्रेरा * भिरे कुअँर रन जूझ घनेरा
खचित कान प्रभु बान चलावा * पावस घन जिमि झरी लगावा

दो० अर्द्धचन्द्र सायक कठिन, कौतुक बरनि न जाय ।
हनेउ प्रमुख दुइ सुभट रन, सोइ सर राम चलाय ॥ १३१ ॥

दोउ भट प्रमुख निरखि रनपाता * कुपित मरीच ताड़का-ताता
अलख[4] राम कित ? कहँ लघु भ्राता * तीन कोटि किन असुर निपाता ?
मम मा प्रान ताड़का त्यागे * मम कर निधन[5] असुर हतभागे

ब्राह्मणेर आशीषे ना हय हेन नाई * मार-मार करिया जुझेन दुइ भाई
वरुणास्त्र पाश वायुबाण कालानल * एड़िलेन बहु राम समरे अटल
मारिलेन श्रीराम गन्धर्व नामे शर * राममय देखिल सकल निशाचर
आपना आपनि सब काटाकाटि करे * सकल देवता देखि हासये अन्तरे
श्रीराम करेन युद्ध काँपाइया माटि * राम बाणे पड़िल राक्षस तिन कोटि
तिन कोटि पड़े यदि रणेर भितर * रामेर उपरे मारे चोख-चोख शर
निरन्तर बाण मारे निशाचर गण * धरिलेन सहिष्णुता कत दुइजन
हइलेन जर्जर बाणेते रघुवीर * शोणिते भासिया गेल श्यामल शरीर
आशीर्व्वाद करेन अमर द्विजचय * हउक रामेर जय राक्षसेर क्षय
ब्राह्मणेर आशीर्वादे बाड़िल ये बल * मार - मार करिया गेलेन रणस्थल
आकर्ण पूरिया बाण मारेन राघव * बरिषये बर्षार येमन मेघ सब
अर्द्धचन्द्र विशिखेर कि कहिब कथा * ताहाते काटेन राम दुइ पात्र माथा
दुइ पात्र पड़े यदि रणेर भितर * मारीच रुषिल तबे ताड़काकोडर
राम कोथा गेल कोथा गेल वा लक्ष्मण * तिन कोटि राक्षस मारिल कोनजन
श्रीराम बलेन ताड़कार हन्ता येइ * तिन कोटि राक्षस मारिल रणे सेइ

१ राक्षस २ लगातार ३ दानवों का नाश हो, राम की जय हो—नारा ४ छिपे हुए
५ नाश !

सुनि हरि-बैन मरीच रिसाना * रामहिं सर पर सर संधाना
जिमि बैसाख धूसरित धूरी * राम देहँ सठ बानन पूरी
कातर राम न, बीर अपारा * बरसहिं सर जिमि जलधर धारा
मायामृग सिय हरन बिचारी * देवन मीच - मरीच[1] निवारी[2]
बिशिष बज्र मन सुमिर कृपाला * प्रस्तुत प्रगटि भयेउ तत्काला
प्रभु सोइ कुलिशबान संधाना * हिय-मरीच तकि लाग निसाना
घायल चपकि बज्रसर संगा * उड़त यथा परहीन बिहंगा
भरमत दिवस सात अति कातर * धरनि लाग जहँ लंक, निसाचर
लंकवास — बहु हिंसाचारा * तजेसि अन्त लखि जगत असारा
बालक - रन मम होत निपाता * कुधन कुवृत्ति फसत किमि गाता
जटा शीश बल्कल परिधाना[3] * सयन-स्वपन रत रघुपति ध्याना
बटतर[4] तप मरीच मन लावा * इतर राम-रट आन न भावा
मिटे बिघिन, किय याग मुनीसा * अछत-दूब लै हरिहिं असीसा

दो० यज्ञ-शेष फल-मूल जे, सबन दीन रघुनाथ।
लखन सहित, निसि तपोवन, सोये करुनानाथ ॥ १३२ ॥

जुरी सभा ऋषिगनन प्रभाता * चर्चहिं सकल राम कै बाता
सहज न मनुज, राम अवतारा! * दसरथ - पुन्य प्रगट तनु धारा

मारीच शुनिया ताहा कुपिल अन्तरे * घन-घन बाण मारे रामेर उपरे
रामेर उपरे बाण पड़ितेछे नाना * वैशाख मासेते येन पड़ये झञ्झना?
महाबीर रामचन्द्र ना हय कातर * शरवृष्टि करेन येमन जलधर
मारीचेरे रक्षा करे भावि देवगण * मारीच मरिले नहे सीतार हरण
बज्रबाण बलि राम करिल स्मरण * आसिया से बज्रबाण दिल दरशन
श्रीरामेर बज्रबाण बज्र रे हुड़के * निर्घात पड़िल गिया मारीचेर बुके
बुके बाण बाजिया नाटाई येन घुरे * डाना-भाङ्गा पाखी येन उड़े जाय धीरे
भ्रमिते-भ्रमिते जाय मारीच कातर * सात दिने उत्तरिल लङ्कार भितर
बहु जीव खाइया मारीच लंकावासी * विवेक ससार त्यजि हइल सन्यासी
कहे यदि मरिताम बालकेर रणे * के करित दस्युवृत्ति कि करित धने?
शिरे जटा परिया बाकल परिधान * शयने स्वपने करे राममय ध्यान
वटवृक्ष तले तप कल आरम्भन * राम विना मारीचेर अन्य नाहि मन
हेथा यज्ञ मुनिर करिल समाधान * आशीष करेन रामे दिया दुर्व्वाधान
यज्ञ अवशेषे येइ फलमूल छिल * खाइते से सब फल श्रीरामेरे दिल
से रात्रि वञ्चेन राम मुनिर आश्रमे * प्रभाते एकत्र हन मुनिगण क्रमे
सभाते बसिया युक्ति करे सर्व्वजन * सामान्य मनुष्य नहे राम नारायण

---

१ मारीच की मृत्यु २ बचा ली ३ वस्त्र ४ बरगद के तले।

स्वतः यज्ञ - प्रभु[1] याग सम्हारी * अब न हेतु भय असुर - सुरारी
हरि जन्मे दानव-बध अर्था * सोइ प्रन - जनक निवाह समर्था
रामहिं कौशिक कहेउ सप्रीता * वत्स ! विदेह स्वयंवर - सीता
सिय-पितु प्रन ! शिवधनु जे भंगा * सुता समर्पित सोई भट संगा
अगनित भूप निरंतर आई * सभय चाप लखि, गये बराई[2]
रघुवर तव बल विपुल प्रतापू * मन प्रतीत[3] टूटइ शिवचापू
मुनि - आयसु - उलंघ अपकर्मा ! * को समर्थ ? पालन मम धर्मा
सुधा - मने मुनि वचन विनीता * चले विप्र, लै राम सप्रीता
धनुधर राम - लखन, चहुँ घेरी * टोली चली सन्त-मुनि केरी
अनुमति - राम गाधिसुत पाई * खबरि प्रथम चलि जनक जनाई
जनक, सभा मुनि - आगम देखी * दिय आसन सन्मानि विसेखी
कौशिक कहेउ, जनक तव-धामा * आये लखन सहित श्रीरामा
दुर्जय दनुजि ताड़ुका मारी * जिन गौतम-तिय शाप निवारी
जासु दरस सद्‌गति गुह पावा * जिन सर असुर त्रिकोटि नसावा

सो० द्वादस वर्ष ललाम, अनुज लखन, अनुपम युगुल ।
तव पाहुन[4] सोइ राम, अतुल वीर विक्रम प्रबल ॥ १३३ ॥

यिनि यज्ञेश्वर यज्ञ राखिलेन तिनि * दशरथ पुन्यफले अवतीर्ण इनि
राक्षसेर भय कर कि कारण आर * राक्षस बधार्थे हरि स्वय अवतार
करिलेन येइ पण जनक भूपति * राम बिना ताहात ना हबे अन्ये कृति
विश्वामित्र बलेन शुनह रघुवर * मिथिलाते हइबेक सीता स्वयम्बर
करेछे प्रतिज्ञा एइ जानकीर पिता * हरधनु भाङ्गिबे येइ तारे दिबे सीता
कत शत भूपति आइसे आर जाय * देखिया हरेर धनु सभये पलाय
देखिलाम ये तोमारे वीर बलवान * मने बुझि धनुक करिबे दुइखान
श्रीराम बलेन आज्ञा कर ये एखन * ताहा करि तव आज्ञा लङ्घे कोनजन
ए कथा कहेन यदि कौशल्या-नन्दन * रामेरे लइया यान सकल ब्राह्मण
हाते धनु करि यान श्रीराम लक्ष्मण * आगे पाछे चलिलेन सकल ब्राह्मण
विश्वामित्र बलिलेन शुन रघुवर * अग्रेते गमन करि जनकेर घर
ए कथा शुनिया राम बलेन ताँहारे * आगे गिया वार्ता देह जनक राजारे
विश्वामित्र देखिया उठिल सर्व्वजन * आइस बलिया दिल बसिते आसन
मुनि बलिलेन शुन जनक राजन * तव घरे आइलेन श्रीराम-लक्ष्मण
ताडकारे मारिलेन हेलाय ये जन * अहल्यार करिलेन शाप विमोचन
कैवर्त्तके तारिलेन सुकृपा दर्शने * तिन कोटि राक्षस मरिल यार बाणे
सेइ राम द्वादश वत्सर वय:क्रम * लक्ष्मण ताँहार भाई दुइ अनुपम

१ यज्ञ के स्वामी २ बचकर निकल गये ३ विश्वास ४ अतिथि ।

राज समाज कथन - मुनि भावा * वर सिय जोग विरंचि पठावा
पुरजन सकल दरस हित धाये * धरि कर बन्धु[1] अन्ध लौं आये
राम - लखन - दरसन अति नेहा * उमड़ेउ नगर, काज तजि गेहा
सीस पञ्चजटा केस सँवारे * मणि - माणिक - माला उर धारे
राम सहित मुनि जहँ नरनाहू * उर विदेहपति अमित उछाहू
सोचत मनहिं, सबन सन्मानी * सियवर विधि पठयेउ अब जानी
मुनि - आदेस, लखन - रघुराई * रहे जनक ढिग सीस नवाई
तिन मृदुबैन मोद अधिकाई * पुलकि भूप दोउ उर लपिटाई
योगी जनक! ध्यान सब भासा * मिथिला जगपति स्वयं प्रकासा
दुर्जेय शिवधनु जित आसीना * गमन स्वयंवर-थल नृप कीना
घोष कुतूहल प्रन दोहराई * सभा - सदस्य! सुनहु मन लाई
जो समर्थ शंकरधनु भंगा * सिया समर्पन सोइ भट संगा
कमलनयन, सुनि बचन - महीपा * गवने प्रभु शिव - चाप समीपा
सखिन सहित सिय चढ़ी अटारी * पूछत सोइ छन, कहु अँखियारी[2]!
लखन, सर्जनि को? कहँ सखि रामा? * सियहिं सकेत[3] बतावइँ भामा
श्याम दूबदल छबि रघुनाथा * निरखि, सुरन सिय नावइ माथा

ए कथा शुनिया सबे राज सभाजन * कहिल सीतार वर आइल एखन
आइल समस्त लोक करिते दर्शन * बन्धु कर धरिया आइल अन्धजन
सबे बले देखिब लक्ष्मण आर राम * मिथिलार सब लोक छाड़े गृहकाम
उभ करि बान्धियाछे शिरे पञ्चजटि * गलाते निर्मित मणि माणिक्येर काँठि
विश्वामित्र लइया यान जनकेर घरे * अनुव्रजि रामेरे लइल समादरे
उल्लासित कहेन जनक नृपवर * आइल सीतार वर एत दिन पर
कौशिक बलेन शुन श्रीराम-लक्ष्मण * जनकेरे प्रणाम करह दुइजन
गुरुवाक्य अनुसारे श्रीराम-लक्ष्मण * करिलेन राजा के उभये सम्भाषण
आलिङ्गन दिलेन जनक दोंहाकारे * भासिलेन तखन आनन्द पारावारे
महायोगी जनक जानेन अभिप्राय * गोलोक छाड़िया हरि देखि मिथिलाय
धूर्ज्जटि दुर्ज्जय धनु आछे येइ खाने * सभा सह गेल सेइ स्वयम्बर स्थाने
हेनकाले जनक बलेन कुतुहले * सभाय बसिया कथा शुनेन सकले
ये जन शिवेर धनु भाङ्गिवारे पारे * सीता नामे कन्या आमि समर्पिब तारे
ए कथा शुनिया राम कमल-लोचन * धनुकेर निकटेते करेन गमन
हेनकाले सीता देवी सह सखीगण * अट्टालिका परे उठि करे निरीक्षण
जानकी बलेन सखी करि निवेदन * कोनजन राम वा लक्ष्मण कोनजन
सीतार देखाय सखीगण तुलि हात * दूर्व्वादल श्याम ओइ राम रघुनाथ

१ साथी का सहारा लेकर २ सुलोचनी ३ इशारे से।

सो० नलिनिविलोचन राम, पुरवइँ वाञ्छित देवगन ।
कतहुँ विरञ्चि न बाम, पुनि-पुनि सुमिरत जानकी ॥ १३४ ॥

देवताओं के निकट श्री सीतादेवी की वर याचना

छ० कर जोरि युग, मन विकल आतुर, सुरन ध्यावति जानकी ।
करि दासि, पुरवइँ आस, गुननिधि राम रूपनिधान की ॥
वरुन, सुरपति, काल, सब दिक्पाल, गणपति, अग्नि जे ।
ते भूतनाथ सनाथ करि वर देहिं भगवति गौरिजे ॥
धरन-पालन, करनि-मंगल, जननि-जग माता, शिवा ।
बध-चण्ड-मुण्ड त्रिलोकि निर्भय भजत सुरगन निशि-दिवा ॥
मातु-पद प्रणिपात, रघुपति बिन न गति, जीवन वृथा ।
पति मिलैं रघुकुलचन्द, आनँददायिनी मेटउ व्यथा ॥

कुलिश कठिन धनु टरत न टारे * बल प्रयोग अगनित भट हारे
कोमल कमल राम इत अंगा * पितु - प्रन दारुन, अहह प्रसंगा
सिय - ससपंज[1] मुमन अनुमानी * सुखद प्रबोधि कीन नभबानी
सुमन - सरिस सिवसारंग, सीता * सहज राम - कर भंग प्रतीता
तजहु सोक - भय, जे जगवन्दन * सोइ तव पति रघुपति रघुनन्दन

रामेरे देखिया सीता भाविलेन मने * पाछे से विरिञ्चि करे वञ्चित ए धने
देवगणे प्रार्थना करेन सीता मने * स्वामी करि देह राम कमललोचने

देवगणेर निकटे सीता देवीर वर-प्रार्थना।

कृताञ्जलि सुचिन्तिता, प्रार्थना करेन सीता, शुनह सकल देवगण ।
यदि राम गुणनिधि, स्वामी करि देह विधि, तबे हय कामना पूरण ॥
शुनह देव हुताशन, आर शुन गजानन, शुनह आमार परिहार ।
महेन्द्र, वरुण, काल, शुन सबे दिक्पाल, महादेव करह निस्तार ॥
कात्यायनी भगवती, कर जोड़े करे स्तुति, पति देह राम गुणमणि ।
तुमि शिव, तुमि धाता, सकल देवेर माता, वेदमाता हरेर घरणी ॥
चण्ड, मुण्ड आदि यत, बधिले से कत शत, देवगणे करिला निस्तार ।
श्रीरामेरे पति देह, घुचाओ मनेर मोह, राम विना गति नाहि आर ॥
कमठ - कठोर धनु, श्रीराम कमल तनु, केमने तुलिबे शरासन ।
कत शत वीरगणे, ना पारिल उत्तोलने, दारुण पितार एइ पण ॥
सीतार एमन मन, बुझिलेन देवगण आकाशे हैल देववाणी ।
शुन गो जनकसुता, ना हइयो दुःखयुता, स्वामी तव राम गुणमणि ॥
फूलेर धनुक प्राय, हेलाय तुलिया ताय, भाङ्गिबेन कौशल्यानन्दन ।
देवतागणेर कथा, कभु ना हइबे वृथा, एइ कृत्तिवासेर वचन ॥

[1] पशोपेश ।

शिवधनु भंग और श्रीराम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न का विवाह तथा परशुराम-दर्प चूर्ण

धनुमंदिर धनु-धारन हेता * चले जबहिं प्रभु, नृपदल जेता
विस्मित, निरत[1] विविध अनुमाना * किमि समर्थ शिशु धनु संधाना ?
कह गाधिमित्र, नाथ ! धरि चापा * मेटहु, सभा कुतूहल व्यापा
अनुज-विनय, मुनि-आयसु पाई * बिहँसि, पिनाक[2] साधि रघुराई
सभा बिलोकि कहेउ, सुनु भाई * तोरत शिवधनु मन सकुचाई
पुनि प्रपंच धरि, सविनय हेरी * चहेउ कुअँर अनुमति मुनि केरी
भञ्जि चाप पुरवउ मनकामा * कौतुक सबन देखावउ रामा !
गुण टंकार — विपुल कोदण्डा * तड़-तड़ निमिष, भयेउ दुइ खण्डा
सभा अचेत, कम्प त्रयलोका * इत विदेह निवरेउ[3] मन सोका
बाजन बजत, बजत सहनाई * चहुँ मिथिला आनन्द बधाई
सबन विदेह निमंत्रन दीन्हा * गर धरि वसन समादर कीन्हा

दो० द्विज-सुमंत्र[4]-गृह राम इत, द्विजतिय करत बखान ।
राममातु धनि! जनक ढिग, उत मुनि[5] कीन्ह पयान ॥
मुनि - पद बन्दे जानकी, पूछत पुनि नरनाह ।
सुभ साइत अनुमति चहौं, रघुवर-सिया विवाह ॥ १३५ ॥

हरधनु भंग ओ श्रीराम-लक्ष्मण-भरत शत्रुघ्नेर विवाह ओ परशुराम दर्प चूर्ण

धनुकेर घरे राम गेलेन यखन * धनुक तोलह राम बले सर्व्वजन
यत राजा आछे तारा भाविल अन्तरे * देखिब केमने शिशु धनुभंङ्ग करे
विस्मित हइया सबे करे निरीक्षण * धनुक तोलह राम बले सर्व्वजन
लक्ष्मण बलेन शुन ज्येष्ठ महाशय * घुचाओ धनुक धरि सबार विस्मय
श्रीराम बलेन शुन गाधिर नन्दन * आज्ञा कर करिब कि धनुक धारण
एतेक बलिया राम सहास्य बदने * धनुक धारण करें देखे सर्व्वजने
धनुके तुलिया राम बलेन लक्ष्मणे * भाङ्गिब शिवेर धनु भय हय मने
धनुके अर्पिया गुण बलेन मुनिरे * ताहा करि याहा आज्ञा करिबे आमारे
मुनि बलिलेन राम देखाओ कौतुक * मनोरथ पूर्ण कर भाङ्गिया धनुक
आज्ञा पेये श्रीराम दिलेन गुणे टान * मड़ मड़ शब्दे धनु हैल दुइखान
सभार सकल लोक हाराइल ज्ञान * त्रिभुवन सघने हइल कम्पमान
हइलेन जनक भूपति हरषित * वाद्य बाजे मिथिला नगरे अगणित
गले वस्त्र दिया राजा अति समादरे * निमन्त्रण एके एके सबाकारे करे
सुमन्त्र ब्राह्मण रामे लये गेल घरे * सुमन्त्रेर ब्राह्मणी कौशल्या नाम धरे
कौशल्यार तुल्य केह नाह भाग्यवती * मा मा बलिया यार डाकेन श्रीपति
सुमन्त्र मुनिरे घरे राखिया रामेरे * विश्वामित्र गेलेन से जनकेर पुरे
सीतादेवी बन्दिलेन मुनिर चरन * आनन्दित हइलेन जनक यशोधन
जनक बलेन प्रभु करि निवेदन * सीतार विवाह जन्य कर शुभ क्षण

१ लीन २ शिवधनुष ३ मिट गया ४ मिथिला का कोई सुमंत्र ब्राह्मण ५ विश्वामित्र ।

नृप-प्रस्ताव पाय मुनि धाये * लखन सहित जहँ राम सुहाये
सुनहु तात! मम मंगल हेतू * करि विवाह पुनि जाहु निकेतू
बहुत काल बीतेउ मुनि-चरनन * आकुल अवसि मातु-पितु-परिजन
तासों अवध चलिय मुनिराई * बात एक मन और समाई
जन्मे सकल अनुज सँग, ताकी[1] * तिन तजि किमि विवाह एकाकी[2]
सुता चारि जहँ, तहँ मन माहीं * चारिउ बंधु ब्याहि घर जाहीं
वचन राम सुनि उपजेउ त्रासा * मुनि - कपार जिमि टूट अकासा
सुनहु विदेह! राम प्रतिकूला * बरनत दुसह तपोधन सूला
तजे अवध बीतेउ बहु काला * अवसि तहाँ पितु हाल बेहाला
अनुजन जनम लीन एक संगा * तिन तजि उचित न बरन-प्रसंगा
सुता चारि तहँ रचिय विवाहू * सुनि मुनि-वचन विकल नरनाहू
शतानन्द प्रोहित सोइ काला * दिय प्रबोध, थिर[3] होहु भुआला
भ्रात कनिष्ठ कुशध्वज नामा * सुता युगुल गुन-रूप ललामा
दुहिता दुइ रूपसि तव भूपा * सुता चारि इमि अर्पि[4] अनूपा
करौ भूप! जो रघुपति भावा * सुनि प्रमुदित मुनि हाल जनावा

ए कथा शुनिया मुनि गाधिर नन्दन * अमनि आइल यथा श्रीराम लक्ष्मण
मुनि बलिलेन राम एइ आमि चाइ * विवाह करिया घरे याह दुइ भाइ
श्रीराम कहेन प्रभु निवेदि तोमारे * आमा दोंहे लये चल अयोध्या-नगरे
बहुदिन आसियाछि तोमार सहित * विलम्ब हइले पिता हबेन चिन्तित
चारि भाइ जन्म लइयाछि एक दिने * से सबार छाड़ि करि विवाह केमने
ए चारि भ्राताके येइ कन्या दिबे चारि * चारि भाइ विवाह करिब घरे तारि
एइ वाक्य निःसरिल श्रीरामेर तुण्डे * आकाश भाङ्गिया पड़े कौशिकेर मुण्डे
दुःखित हइया मुनि गेलेन तखन * जनकेर निकटे दिलेन दरशन
जनक बलेन प्रभु करि निवेदन * सीतार विवाह दिन कर शुभक्षण
विश्वामित्र बलिलेन शुन नरपते * रामेर मनस्थ नहे विवाह करिते
कहिलेन बहुकाल छाड़ियाछि घर * विलम्ब हइले पिता हबेन कातर
ये चारि भायेरे चारि कन्या समर्पिबे * तार घरे रामचन्द्र विवाह करिबे
शुनिया भाबेन राजा करि हेंट माथा * सीता विना कन्या नाइ आर पाब कोथा
एतेक भविया राजा विषण्ण बदन * शतानन्द पुरोहित कहिछे तखन
केन राजा हइयाछ विचलित मन * तवे घरे चारि कन्या हइबे घटन
तोमार कनिष्ठ भाइ कुशध्वज नाम * तार दुइ कन्या आछे रूप गुणग्राम
तोमार दुहिता दुइ परमा सुन्दरी * चारि भाये समर्पण कर कन्या चारि
श्रीरामेर ये वासना हबे सेइ मत * ताँहारे जानाओ गिया समाचार यत

१ देखकर २ अकेले ३ स्थिर ४ अर्पण करके।

तात ! जनक - गृह कन्या चारी * रघुकुल चारि कुअँर अनुहारी[1]
दो० मनचाही दसरथ - सुवन, मनभाई मिथिलेस ।
सुता चारि अंत, कुअँर ! अब न विघिन लवलेस ॥ १३६ ॥
मुनिवर ! अबहुँ अटक[2] सुभकाजू * बन्धु न पितु, किमि मंगल-साजू ?
जो विदेह, मत, मुनि ! मन भावै * अवध मनुज चलि पितु लै आवै
विश्वामित्र जनक ढिग जाई * बरनेउ सकल कथन रघुराई
पठवौ अवध तुरत कोउ पायक[3] * शुचि-उन्नत विचार रघुनायक
रोम - रोम नृप पुलकित अंगा * मन-बच लहरति सुखद तरंगा
मुनिवर ! आन[4] न जोग लखाई * लावहु नृपति अवधपुर जाई
गाधितनय हिय अमित उछाहू * चले लेन जस[5] राम - विवाहू
सिद्धाश्रम — जहँ मुनिन समाजू * पूछत भेंटि कुतूहल काजू ?
अजय चाप त्रिपुरारि कठोरा * सुनी अवधसुत छिन महँ तोरा
सिय-कल्याण हेतु शिवसायक * स्वतः[6] टूट, बोले मुनिनायक
सिद्धाश्रम तजि मुनि पग धारा * कछुक काल भे सुरसरि पारा
मुनि पहुँचे जहँ गौतम नारी * शिला परसि पग रघुवर तारी
बहुरि चले जहँ जन्म प्रभञ्जन * सो तजि पार कीन ताड़कवन

हरषित हैया मुनि गाधिर कोडर * वार्ता गिया देन तबे रामेर गोचर
शुन राम नाहि देखि इहार बाधक * चारि भाये चारि कन्या दिबेन जनक
राम बलिलेन प्रभु करि निवेदन * सब भाइ हेथा नाइ करिब केमन
इहाते बाधक आरो आछे मुनिवर * विवाह करिते नारि पितृ अगोचर
आमार विवाह दिते यदि आछे मन * अयोध्याते मनुष्य पाठाओ एकजन
एतेक शुनिया मेल गाधिर नन्दन * कहिलेन जनकेरे सब विवरण
शुनिया भावेन राजा भावे गद गद * वचन मनेर अगोचर ए सम्पद
मुनि बलिलेन शुन जनक राजन * आनिबारे राजारे पाठाओ एकजन
राजा बलिलेन मुनि करि निवेदन * तोमा भिन्न के याइबे अयोध्या-भुवन
ए कथा शुनिया मुनि भाविलेन मने * घटक[7] हइया याई अयोध्या-भुवने
एइ यश आमार घुषिबे त्रिभुवने * विवाह दिलाम आमि श्रीराम लक्ष्मणे
एतेक भाविया मुनि करिल गमन * सिद्धाश्रमे प्रथमतः दिल दरशन
सुधाय सकल मुनि कि शुनि कौतुक * राम नाकि भाङ्गियाछे हरेर धनुक
मुनि कन करिबारे सीतार कल्याण * शिवधनु आपनि हइल दुइखान
विश्वामित्र सिद्धाश्रम पश्चात् करिया * गङ्गार कूलेते मुनि उत्तरिल गिया
गंगापार हइया चलिलेन मुनिवर * अहल्या येखाने छिल हइया पाथर
अहल्या तपोवन पश्चात करिया * पवनेर जन्मभूमि उत्तरिल गिया

१ अनुरूप २ रुकावट ३ दूत-प्यादा ४ दूसरा ५ यश ६ अपने आप
७ घटक—विवाह ते कराने वाले मध्यस्थ ।

चलि आये पुनि सरयू तीरा * परसेउ गाधि तनय शुचि नीरा
कहत सुदूर अवध-पुरवासी * दरसत सोइ तपसी बनबासी
राम-लखन गमने जिन साथा * सो किमि आजु बिना रघुनाथा

दो० खबरि दीन कोउ दसरथहिं, आवत मुनि बिन राम।
वज्रपात, आकुल, रुदन, कहाँ राम घनश्याम ॥ १३७ ॥

कस अकेल ? कित मम सुत प्राना ? * आजु अन्धमुनि-बचन प्रमाना
राम-लखन बिन — जल बिन मीना * दै निधि दीनहिं बिधि हरि लीना
रच्छन याग, असुर-उत्पाता * मेटन हेतु, लीन मम ताता
ते अलोप[1], टूटी सब आसा * हरेउ प्रान, मुनि सर्ब बिनासा
शावक बिन बाघिन बिकराला * बिकल रानि, तहँ गये भुवाला
अन्तःपुर अपार दुख आवा * अवध, प्रमाद सकल दिसि छावा
द्वादस बयस नवोढ़[2] किशोरा * हतेउ कतहुँ बन निसिचर घोरा
बिलखत भूप, न गात सम्हारी * बिश्वामित्र कुतूहल भारी
नेही[3] रहे प्रबोधि भुवाला * गुरु बशिष्ठ आगम सोइ काला
कौशिक कहौ कुअँर केहि भाँती ? * राम-कुसल कहि जुड़वउ छाती
परेउ न भल-अनभल[4] कछु काना * कह मुनि, रुदन अतुल कस ठाना ?
कस न, गाधिसुत ! अचरज कारन ? * अलख राम किमि धीरज धारन !

पवनेर जन्मभूमि राखि कत दूर * ताडकार वने यान पाछे सरयूर
करिलेन सरयूर नीर परशन * दूरेते थाकिया देखे अयोध्यार जन
आसिया ये मुनिराज रामे लये गेल * एका मुनि आसितेछे राम ना आइल
ए कथा कहिल गिया दशरथ प्रति * बज्रपात सम ज्ञान करेन भूपति
कान्दिया बाहिरे आमि अजेर नन्दन * रामे ना देखिया कहे कातर बचन
एका ये आइले मुनि राम मोर कोथा * हइल प्रत्यक्ष आजि अन्धकेर कथा
कोथा राम कोथा वा लक्ष्मण गुणनिधि * दरिद्रेर दिया निधि हरिलेन विधि
यज्ञ रक्षा हेतु ल'ये गेला निजवास * छलेते करिले मुनि मम सर्व्वनाश
राक्षस वधेर हेतु लइया कुमार * के जाने बधिबे मुनि पराण आमार
वार्त्ता पेये आइल राजार यत राणी * डम्बुर हाराये येन फुकारे बाघिनी
कौशल्या सुमित्रा राणी हाहाकार करे * प्रमाद पड़िल आजि अयोध्या-नगरे
द्वादश वर्षेर राम नेर नाहि पुरे * हेन रामे खाइल कि वने निशाचरे
आकुल हइल राजा अजेर कुमार * विश्वामित्र भाविलेन ए कि चमतकार
राजारे बुझाये कत पात्र मित्रगण * हेनकाले आइलेन वशिष्ठ ब्राह्मण
वशिष्ठ बलेन कह गाधिर नन्दन * रामेर मंगल शुनि जुड़ाक जीवन
एइ कथा शुनिया कहेन तपोधन * भालमन्द ना शुनिया कान्द कि कारण
वशिष्ठ बलेन मुनि कह कि आश्चर्य * रामे ना देखिया कार मन हय धैर्य्य

---

१ गायब २ नव-उम्र ३ स्नेही पात्र मित्र गण ४ भला-बुरा।

ज्ञान, ध्यान, जीवन घनश्यामा * चहुँ तम[1] अवध-भुवन बिन रामा
लेहिं चरन - मुनि, भूप अधीरा * पूछत, कितै लखन रघुवीरा ?
कहेउ गाधिसुत, सुनु नरनाथा ! * विक्रम - सुवन, बिरद् - रघुनाथा
निसचरि प्रबल ताड़का मारी * शाप-रहित किय गौतम नारी
दो० केवट कीन सनाथ, पुनि, दनुज कटक हनि राम ।
पुरये मुनिगन-याग सुचि, पहुँचे मिथिला धाम ॥ १३८ ॥
जहँ धनुभंग जनक प्रन ठाना * परसत[2] सोइ हारे नृप नाना
शिवधनु भंजि, राखि प्रन भूपा * लहेउ दान सिय राम - सरूपा
सुता चारि तहँ, सुत तव चारी * भूपति ! चलिय बरात सँवारी
दसरथ मुनि मुद - मंगल - गाथा * पुनि-पुनि मुनिपद बंदहिं माथा
सजी बरात अवध सजि आवा * लख-लख हय-गज-रथ चहुँ छावा
भरत-रिपुदमन आयसु पाई * सबन निमंत्रि, दीन पहुनाई
प्रथम चलेउ रथ मुनिन-समाजू * पुनि सुत युगुल सहित नरराजू
तीलौं कहति कौशिला रानी * जननि - स्वभाव सुधा सरमानी
राघव-तन किमि हारिद[3]-परसन * वर-सरूप सुत-छवि किमि दरसन ?
लखन-मातु कह मंजुल बानी * अमित उछाह सुधारस - सानी
दीदी ! लै रघुवर कर नामा * करहु सकल सुचि मंगल कामा

रामध्यान रामज्ञान राम से जीवन * राम बिना अन्धकार अयोध्या भुवन
लोटाये पड़ेन राजा मुनि पदतले * कोथाय लक्ष्मण कोथा राम एइ बले
विश्वामित्र बलेन शुनह यशोधन * पुत्रेर विक्रम कथा करह श्रवण
ताड़कारे मारिलेन कौशल्यानन्दन * अहल्या के करिलेन शापे विमोचन
कैवर्त्तके करिलेन कृतार्थ श्रीराम * राक्षस मारिया पूर्ण करिलेन काम
जनक करियाछिल धनुर्भङ्ग पण * ताहाते हारिया गेल यत राजगण
शङ्करेर धनुक करिया दुइखान * लक्ष्मीरूपा कन्या राम पाइलेन दान
चारि कन्या दिबेन जनक चारि भाये * चल महाराज शीघ्र दुइ पुत्र लये
ए कथा शुनिया राजा आनन्दे विह्वल * प्रणति करेन मुनिर चरण कमल
अयोध्याते तखन पड़िया गेल साड़ा * लक्षलक्ष हस्ती साजे लक्षलक्ष घोड़ा
नाना रूप रथ साजे अति सुशोभन * डाकिया आनिल राजा भरत शत्रुघ्न
त्वरा करि सबारे करिल निमन्त्रण * अयोध्यार लोक सब करिल साजन
अग्रे रथे चड़िलेन यतेक ब्राह्मण * चड़िलेन रथे राजा सह पुत्रगण
बलेन कौशल्या देवी सुमित्रा देवीरे * ना पाइ हरिद्रा दिते रामेर शरीरे
सुमित्रा बलेन दिदि केन भाव आर * रामेर नामेते करि मङ्गल आचार

१ अन्धकार २ छूते ही ३ हल्दी लगाना—एक मांगलिक कार्य ।

लख-लख हय-गज-रथ-पद यूथा * चली अनी चतुरंग वरूथा[1]
बिरदभाट, बटु[2] वेदन गाथा * उत विदेह रच रंग, सुहावा
रिधि-सिधि रमा जनम सिय केरा * मिथिला सुख, धन, धाम घनेरा
मग, सुपेय घृत क्षीर तड़ागा * आतिथि-भाव धारि तन जागा
अतुल राशि पकवान मिठाई * चहुँ बरात हित, भूप सजाई
दो० अवध - सैन सुखदैन मग, ठौर - ठौर जनवास[3]।
अमन-वसन-आमोद बहु, सब बिधि विविध सुपास ॥ १३६ ॥
रघुकुल-कटक लिये अजनन्दन * सरयू-सलिल परसि किय बन्दन
पुनि स्नान, अमित करि दाना * सुधा सरिस नृप किय जलपाना
सरिता उतरि अरण्य सोहावा * गाधि-सुवन इमि बचन सुनावा
जहाँ राम ताड़का विनासी * सोइ बन बिकट लखौ, गुनरासी
कस ताड़का दनुजि विकराला ! * लखिय, सोचि पग धरे भुआला
बिकट बदन परतच्छ निहारी * कौतुक ! किमि मृदु राम पछारी[5]
पवन जन्म जहँ भूमि अनूपा * पुनि गौतम-तिय-उपवन; भूपा !
पावन दरस हरत श्रम - पीरा * पहुँचे शुचि सुरसरि के तीरा !
जासु तरनि उतरे रघुनाथा * भेंटेउ सोइ निषाद नरनाथा

लक्षलक्ष पदादिक चलिलेक सङ्गे * चक्रवर्ती चलिलेन सैन्य चतुरंगे
रायबार पड़े भाट वेद विप्रगण * मिथिलार एबे किछु शुन विवरण
सीतारूपे लक्ष्मी स्वय तथाय जन्मिल * मिथिला नगर धने पूर्णित हइल
घृते दुग्धे जनक करिल सरोवर * स्थाने-स्थाने भाण्डार करिल मनोहर
चाल राशिराशि मुमिष्टान्न काँड़िकाँड़ि * स्थाने स्थाने राखे राजा लक्षलक्ष हाँड़ि
हेथा सैन्यगण लये अजेर नन्दन * सरयू नदीर तीरे दिल दरशन
सरयू नदीते राजा करि स्नान-दान * मिष्टान्न भोजन करे मिष्ट जलपान
त्वरिते सरयू नदी उत्तीर्ण हइया * ताड़कार बनेते प्रवेश करे गिया
कौशिक बलेन शुन अजेर नन्दन * एई बने ताड़का हइल निपातन
शुनिया बलेन राजा अजेर नन्दन * ताड़का देखिब प्रभु सेइ वा केमन
ताड़कार निकटे गेलेन दशरथ * देखेन पड़िया आछे आगुलिया पथ
ताड़का देखिया राजा भाविलेन मने * इहारे बालक राम मारिल केमने
ताड़कार वन राजा पश्चात् करिया * पवनेर जन्मभूमि देखिलेन गिया
पवनेर जन्मभूमि पश्चात् करिया * अहल्यार आश्रमेते उत्तरिल गिया
अहल्यार तपोवन पश्चात् करिया * गङ्गातीरे उपनीत हइलेन गिया
ये कैवर्त्त श्रीरामेर पार क'रे छिल * से राजार नाम शुनि नौका साजाइल

१ समूह २ ब्राह्मण ३ बारात के लिए निवास गृह ४ आराम ५ पछाड़ा।

अवध-कटक तरि[1] माजि उतारा * सिद्धाश्रम सुभ दरस[2] निहारा
बन उपवन, मुनि ! लखे ललामा * कतक दूर अब मिथिला-धामा
गाधिसुवन कह, सुनहु नरेसा * कोस तीनि मारग अवसेसा
मुनि - तिय कहइँ पूर मन - कामा * नृप ! निकेत तव जन्मे रामा
चले बहोरि विदेह-समीपा * प्रजा-सैन युत, अटे[3] महीपा
बाजन विविध बजत मन मोहा * हास-हुलास सकल दिसि सोहा
कौतुक-अस्त्र, खेल, उल्लासा * दूत जनक संवाद प्रकासा

दो० धाम जनक, सन्मानि बहु, भेंटि अवधपति लीन ।
समुचित शिष्टाचार पुनि, सविनय स्तुति कीन ॥ १४० ॥

सुत तव चारि, चारि मम बाला * लेहु दान, जो दया - भुआला
विहँसि अवधपति जनक प्रबोधा * बनी बात, कित लेस[4] विरोधा ?
जनक बंदि गवने निज धामा * दशरथ पठइ, बास जहँ रामा
पितु-आगम लगि, आयसु पाई * गहे तात-चरनन लपिटाई
पितु प्रनाम किय लखन, बन्दना * भरत-रिपुदमन रघुपति चरना
भरतहिं लखन, लखन रिपुसूदन * पद[5]-अनुसार करहि पद-पूजन
मिलहिं सनेह परस्पर चारी * तन-मन भूप, मोद लखि भारी
कोमल-दल सुपास बहु भाँती * मिथिला, सकल प्रफुल्ल बराती
व्यञ्जन बहु पकवान मिठाई * परसइँ, खाइँ, छटा छिति छाई

नौकाते हइल पार यत सैन्यगण * सिद्धाश्रम दर्शन करेन यशोधन
भूपाल बलेन मुनि निवेदन करि * कत दूर आछे आर मिथिला-नगरी
विश्वामित्र बलेन शुनह नृपवर * आछे आर तिन क्रोश मिथिला-नगर
मुनिपत्नी सबे बले राजा पूर्णकाम * याँहार औरसे जन्म लइलेन राम
सिद्धाश्रम दशरथ पश्चात् करिया * मिथिलार सन्निकटे उत्तरिल गिया
आह्लादित प्रजा सब आर सैन्यगण * नानाजाति अस्त्र खेले बाजाय बाजन
दूत गिया वार्त्ता दिल जनक राजारे * अनुव्रजि लओ राजा अजेर कुमारे
रथ हते नामिलेन अयोध्यार पति * करिलेन जनक आदरे बहु स्तुति
जनक बलेन राजा यदि कर दया * तव चारि पुत्रे देइ चारिटि तनया
दशरथ बलिलेन शुन हे जनक * सम्बन्ध हइल ठिक तबे कि बाधक
उभये हइल शिष्टाचार सम्भाषण * विदाय हइया राजा करेन गमन
येइ घरे बसिया आछेन रघुवीर * सेइ घरे चलिलेन दशरथ धीर
पितार आदेश पाइया हइया बाहिर * बन्दिलेन पितृ पदद्वय रघुवीर
लक्ष्मण बन्दिल गिया पितार चरण * रामेर चरण बन्दे भरत शत्रुघ्न
लक्ष्मण बन्दिल गिया भरते तखन * शत्रुघ्न आसिया बन्दे दोसर लक्ष्मण
चारि भ्राता परस्परे करे आलिगन * सुखे पुलकित अंग अजेर नन्दन
घाटेन नामिल केह उतरे वा माठे * केह पाक करि खाय सरोवर घाटे
खाओखाओ लओलओ एइमात्र शुनि * अन्न व्यञ्जनेते पूर्ण हइल मेदिनी

१ नाव पर २ दृश्य ३ पहुँचे ४ अंश—जरा भी ५ मर्यादा—छोटाई-बड़ाई ।

सोइ अवसर बशिष्ठ, नृपगेहा * चलि भेंटे जहँ सभा विदेहा
उठि सन्मानि कीन मुनि-बन्दन * स्वागत, पाद्य, अर्घ्य, अरु आसन
सिय-विवाह सुभ लगन विचारी * कहउ, तपोधन ! मंगलकारी
नखत पुनर्वस कर्कट कन्या * अनुपम लगन, महीप ! अनन्या[1]
दंपति-सुख, जनि कतहुँ बिछोहा[2] * सुनि मुनि-वचन सबन मन मोहा
उतै सुरन सुरपुर मन छोहा[3] * जो न होय सिय राम - बिछोहा
तौ बनगमन न बध - दसमाथा * देवन मिलि सोचत शचिनाथा[4]

दो० लगन सुकर्कट टरइ जिमि, कीजिय जतन विचारि ।
निरखि मयंक,[5] भरोस करि, बोले इमि असुरारि[6] ॥ १४१ ॥

नर्तकि[7] - भेष जनकपुर जाई * रचहु रंग, शशि ! छवि निखराई
सुध - बुध तजइँ नर्त सब देखी * बीतइ कर्कट लगन विसेखी
इत वशिष्ठ सुभ-लगन विचारी * दशरथ - हृदय मोद अति भारी
अभरन विविध भूप बहु साजी * अमित भार फल बहुल विराजी
खाँड, दूध, दधि, घृत-मधु भारा * सेवक चले लदे तिन थारा
द्विजन सहित, अधिवास[8] विचारी * जनक सभा वशिष्ठ पग धारी
आसन अर्घ्य पाद्य सन्मानू * लगन चढ़न मुनि कीन विधानू

गेलेन वशिष्ठ मुनि जनकेर घर * सभा करि बसियाछे जनक नृपवर
वशिष्ठे देखिया राजा करे अभ्यर्थन * पाद्य अर्घ्य दिल आर वसिन आसन
कहिते लागिल राजा जनक तखन * सीतार विवाह लग्न कर शुभक्षण
वशिष्ठ सभार मध्ये ज्योतिष मेलिल * पुनर्व्वसु कर्कटेते कन्या लग्न हैल
ताहाते विवाह विधि हइले घटन * स्त्री पुरुषे विच्छेद ना हय कदाचन
सेइ लग्न करिल ये यत बन्धुजन * स्वर्गे थाकि युक्ति करे यत देवगण
स्त्री पुरुषे विच्छेद ना हय कालान्तरे * केमने मारिबे तबे लकार ईश्वरे
करह मन्त्रणा एइ बलि सारोद्धार * लग्न भ्रष्ट कर गिया श्रीराम सीतार
नर्त्तकी हइया तबे याओ शशधर * नृत्य कर गिया तुमि जनकेर घर
तब नृत्य देखिले भुलिबे सर्व्वजन * अतीत हइबे तबे कर्कट लगन
शुभ लग्न करिया वशिष्ठ मुनिवर * वार्त्ता गिया दिलेन भूपतिर गोचर
आनन्दित हइलेन अजेर नन्दन * आयोजन करिलेन सर्व्व आभरण
भारे भारे दधि दुग्ध भारे भारे कला * भारे भारे क्षीर घृत शर्करा उज्ज्वला
सन्देशेर भार लये गेल भारिगण * अधिवास करिबारे चलेन ब्राह्मण
सभा करि ब'सेछेन जनक भूपति * सेखाने गेलेन वशिष्ठ महामति
द्रव्येर यतेक भार एड़िलेक गिया * वसेर बशिष्ठ कुशासन पातिया

---

१ बेजोड़ २ वियोग ३ क्षोभ ४ इन्द्र ५ चन्द्रमा ६ इन्द्र ७ नाचनेवाली
८ हल्दी, तेल, उबटन गीत आदि, प्रत्येक मांगलिक कार्य के पूर्व होनेवाले टेहले या रस्में, यहाँ पर लग्न चढ़ना ।

दूर्वा - धान मंगलाचारा * लगे होन, दोउ कुल अनुसारा
करहिँ वेद-ध्वनि द्विज समुदायी * कनकासन सिय चौक सुहायी
भूषण, वसन, भाल छवि चन्दन * सुभ परिधान करावहिँ परिजन
दै जलधार सुता तहँ लाये * खरचि द्रव्य बहु, जनक सोहाये
सिय - अधिवास संपदा सारी * पाय विप्रगन चले सुखारी
पुनि अधिवास - राम - आदेसू * पुलकि वशिष्ठ दीन अवधेसू
चारिउ कुअँर बिना उपवीता[1] * तिन अरंभ भए काज पुनीता
चौर, स्नान, गंध, कोपीना * मेखल, दण्ड, मंत्र, मुनि दीना
यहि विधि कुअँर चारि उपवीती * अमित दान दिय भूप सप्रीती

दो० तिन अधिवास, समोद नृप, करहिं स्वकुल अनुरूप ।
बरन विविध अभरन सजे, मंगल मूरति रूप ॥ १४२ ॥

श्राद्ध नान्दीमुख नृप कीन्हा * अतुल दान पुनि विप्रन दीन्हा
जे ब्राह्मणी, साथ जे दासी * निरखि राम अति हृदय हुलासी
मायन तैल हरिद्रा उबटन * मंगल गीत सहित किय सखियन
पुनि स्नान कलावा बन्धन * कुअँरन करन[2] सोह सुभ कंकन
निरखि चारि वर छवि एकसंगा * मनहु विराजत चारि अनंगा
मुक्तावलि उर मंजुल सोहा * पाग ललाट अतुल मन मोहा

घट संस्थापन करे येमन विधान * उपरेते आम्रशाखा नीचे दूर्व्वाधान
वेदध्वनि करिते लगिल ब्राह्मण * सीतारे आनिया दिल नाना आभरण
बसिलेन सीतादेवी सुवर्णेर पाटे * वेदमन्त्रे दिल गन्ध सीतार ललाटे
चारिजने अधिबास करिल तखन * वस्त्र पराइल आर नाना आभरण
जलधारा दिया कन्या लइलेक घरे * जनक भूपति सब द्रव्य व्यय करे
अधिवास द्रव्य लैया चलिल ब्राह्मणे * श्रीरामेर अधिवास करे सर्व्वजने
वशिष्ठ बलेन दशरथे सम्बोधिया * चारि तनयेर कर अधिवास क्रिया
राजा बले शुनह वशिष्ठ तपोधन * अयज्ञोपवीत एइ चारिटी नन्दन
क्षौरकर्म्म करालेन चारिटी नन्दने * आर यज्ञोपवीत हइल चारि जने
रामचन्द्र बसिलेन बापेर निकटे * चन्दन दिलेन चारि पुत्रेर ललाटे
चारिजन अधिवास करिल राजन * बसन पराये दिल नाना आभरण
नान्दिमुख करिलेन येमन विधान * नान्दीमुख उपलक्ष्ये करिलेन दान
कौशल्या ब्राह्मणी आर यत दासी लैया * आनन्द करेन सबे रामेरे देखिया
हरिद्रा माखान चारि वरे कुतूहले * अंगेते पिठालि दिल सखीरा सकले
तोला जले स्नान कराइल चारि वरे * मंगलसूता बान्धिलेक ताँहादेर करे
मंगल करिया बसिलेन चारिजन * देखिया सकले भावे ए चारि मदन
बान्धिल अपूर्ब्ब पाग मस्तक मण्डले * मनोहर मुक्ताहार शोभे वक्षःस्थले

१ यज्ञोपवीत २ हाथों में ।

बाजूबंद मुद्रिका कंकन * कुण्डल कान अमित मनरञ्जन
बसन दिव्य आभरन सरीरा * माइन सहित सोह रघुबीरा
सुभ विवाह छत्रिय-कुल रीती * सजैं दोल[1] कह भूप सप्रीती
सजे चारि चंदोल सोहावन * सोहत कनक-कलश जहँ पावन
चौदिक सुबरन - झालरि परहीं * बिच गजमुक्ता झलमल करहीं
चवँर, निसान सुमंगलकारी * ठौर - ठौर गंगाजल - झारी[2]
चारि वरन चन्दोल सजीले * दसरथ - ठाठ अकथ रोबीले
अभिमत[3] अभरन बहु परिधाना[4] * धारि, चढ़े रथ, कर धनुबाना
मन हुलास, सजि चली बराता * चारन विरद कीन विख्याता
नाचहिं नर्तक बाजन रोरा * ढाक, ढोल, ढफ, नभ अति सोरा

सो० बजे बयालिस साज, दोल अरोहन सुतन किय।
दगड़ दमामे बाज, बीना, बँसुरी माधुरी ॥ १४३ ॥

बजत बाजने पारी-पारी * कछु न सुनात कोलाहल भारी
कहुँ असि[5]-ढाल सुभट चमकावैं * तुरगसवार[6] कतक शत धावैं
कहुँ सूरमा लिये सर-चापा * मस्त ! बगत मोद चहुँ व्यापा
नचत चन्द्र ! उत जुरी समाजा * जनक-सभा रसरंग विराजा
सोइ अवसर कोसलपति आये * धाय जनक सन्मानि लेवाये
रेल - पेल दोउ दल अगवानी[7] * दर्सक भिरैं, कहैं कटुबानी

अंगुले अगुरी करे अंगद बलय * कर्णेते कुण्डल दिल शोभे अतिशय
दिव्य वस्त्र परिधान भाइ चारिजन * अपर अंगेते दिल नाना आभरण
क्षत्रिय विवाह करे चतुर्द्दोल परे * साजाइते चतुर्द्दोल कहे नृपवरे
चारि दिके दिल नाना सुवर्णेर धारा * झलमल करे गज मुक्तार झारा
गङ्गाजल चामर दिलेक ठाँइ ठाँइ * चतुर्द्दोल साजाइल हेन आर नाइ
आपनार सुसाज करेन दशरथ * परिधान परिच्छद यत मनोमत
रथोपरि चड़िलेन हाते धनुःशर * शुभयात्रा करिलेन सानन्द अन्तर
भाटे रायबार पड़े नाचे नट गण * बाजना बाजाय कत ना जाय गणन
दमामा दगड़वाजे बियाल्लिश बाजना * चतुर्द्दोले आरोहण करे चारि जना
ढाक ढोल बाजाइछे डम्प कोटि कोटि * चारि दिके उठिल वीणार झटपटि
कत ठाँइ बाजाइछे जोड़ा जोड़ा सानि * काँशि बाँशी यतवाजे नियम ना जानि
ढालि पाइक जाय खाँड़ार चिकिमिकि * कत शत अश्वारोही कत वा धनुकी
चन्द्रनृत्य करिछेन जनक सभाय * हेनकाले दशरथ गेलेन तथाय
तारे अनुब्रजिया लइलेन जनक * द्वारे ठेलाठेलि करे उभय कटक
प्रथमेते उभयेते हैल ठेलाठेलि * ठेलाठेलि हइते हइल गालागालि

१ श्रीवर के लिये एक प्रकार की सवारी, पालकी २ गंगाजली ३ मनचाहे ४ वस्त्र
५ तलवार ६ घोड़सवार ७ पेशकारा।

सोम-नर्त[1]—मन मुग्ध लोभाना * कब कम लगन ? सबन बिसराना
सोइ छन राम-लखन तहँ आये * शतानन्द इमि बचन सुनाये
'माधिय लगन', न केहु दिय काना * मोहित, प्रबल विरञ्चि - विधाना
बीती लगन, होस[2] जनि काहू * आये पुनि जहँ विहित विवाहू
कुअँर चारि मण्डप तर आये * द्विज - समाज प्रति सीस नवाये
चन्दन चौक राम बैठाई * बनितन कृत पैपुजी सोहाई
दूर्वाधान शीश श्रीरामा * चरन परसि दधि हुलसहिं बामा
श्रीवर वरन कीन अनुरागी * चलीं बहोरि गेह रसपागी
शाखोच्चार घरी पुनि जानी * निज-निज उपरोहितन बखानी
शतानन्द किय विनय हुलासा * रविकुल करहु बशिष्ठ प्रकासा

दो० रघुकुल - गुरु दीन्हेउ उतर, चन्द्रवंश विस्तारि ।
कहहु प्रथम; सुनि तपोधन, बोले सभा निहारि ।। १४४ ।।

चन्द्रवंश-वर्णन

चन्द्रवंश कर दिव्य प्रकासू * कहउँ, श्रवन मंगलमय जासू
उदधि सुरासुर मंथन करनी * जासों प्रगट 'रमा' जगजननी
सोइ मंथन जग जनम 'सुधाकर' * भूतल 'चन्द्र' नाम छवि-आगर
'बुध' मतिमान चन्द्रसुत जानी * तासु 'पुरुरुवा' सुवन बखानी
पुनि 'पुरुकृष्ण' पुरुरुवानन्दन * 'शतावर्त्त' तिनकर जगवन्दन
'आर्यावर्त्त' तनय पुनि तासू * 'सेपदि' जनम महाशय जासू

चन्द्रनृत्य देखिन भूलिल सर्व्वजन * ताहे मग्न कोथा लग्न के करे गणन
आगे आइलेन राम पश्चात् लक्ष्मण * शतानन्द बले कन्या कर समर्पण
भाल मन्द केह कारो ना शुने वचन * अनीन हइल लग्न सबे विस्मरण
ल'ये गेल सवाकारे विवाहेर स्थले * चारि भाइ बँसे छाया मण्डपे तले
प्रणाम करेन सर्व्व सकल ब्राह्मणे * वरण करिल रामे वसन चन्दने
नारीगण करिलेक वरण विधान * पाये दधि दिल आर शिरे दूर्व्वाधान
वरण करिया गेल यत सखीजन * दुइ पुरोहित करे कथोपकथन
शतानन्द बलेन वशिष्ठ महाशय * सूर्य्यवंश कि प्रकार देह परिचय
वशिष्ठ बलेन मुनि हवे बोझाबुझि * कहो देखि तुमि चन्द्रवंशेर कुलजि

चन्द्रवंश-कथन

शतानन्द बले मुनि सभार भितर * शुन चन्द्रवंशेर विस्तार मुनिवर
देवासुर मन्थन करिल सिन्धु नीर * ताहे लक्ष्मी जगन्माया हइल बाहिर
सागर मन्थनेते जन्मिल शशधर * चन्द्र नाम हइल ताँहार मनोहर
हइल चन्द्रेर पुत्र बुध मतिमान * पुरूरवा नामे हैल ताँहार सन्तान
पुरुकृष्ण नामे हैल ताँहार कुमार * शतावर्त्त नामे पुत्र विदित संसार
आर्य्यावर्त्त नामे हैल ताँहार तनय * सेपादि नामेते ताँर पुत्र महाशय

---

१ चन्द्रमा का नाच २ होश—सुधबुध ।

'बाण' बहोरि 'रेत' सुत जाही * जगत-विदित 'ध्रुव' प्रगटत ताही
तिनके 'स्वर्ग', 'सर्व' सुत-स्वर्गा * कीन प्रकास चराचर वर्गा
सर्व - तनय 'हैहय' छबिरूपा * अंगज 'अर्जुन' सुभट अनूपा
चिरजीवी तिन सुत 'निमि' धीरा * मथेउ सबन मिलि तासु सरीरा
निमि-तन मथन, जनम 'मिथि' पावा * मिथिला जिन रमनीक बसावा
(जनक)'सीरध्वज', 'कुशध्वज' नन्दन * मिथि के प्रगट युगुल जगबंदन
प्रमुदि वशिष्ठ कही, मुनि ज्ञानी! * सुनी चन्द्रकुल धन्य कहानी

सूर्यवंश-वर्णन

भानुवंश बरनउँ मनरंजन * जासु आदि कुलपुरुष निरञ्जन
'शिव''विधि''हरि' सुविदित तिनरूपा * सुता 'कंदिनी' एक अनूपा
सो किय 'जरत्कारु' मुनि-अर्पन * जरत्कारु कंदिनी समर्पन

सो० तिन की सुता ललाम, 'भानु' नाम प्रगटी जगत।
ऋषि 'जमदग्नि' सुधाम, मुनिबामा होइ, गई जहँ ॥ १४५ ॥

तासु गेह मंगल अवतंसा * हरि स्वरूप प्रगटेउ एक अंसा[1]
सोइ एक दिवस रेत-विधि पाई * जन्मेउ सुत 'मरीच' सुखदाई
'कश्यप' सुत-मरीच, जिन व्यापी * 'सूर्य' तासु अति प्रखर प्रतापी
सूर्यवंश 'मनु' जग - विख्याता * तासु 'सुषेन' सूनु[2], सुखदाता

बाण नामे पुत्र हैल जाने सर्व्वजन * रेतनामे तार पुत्र अति विचक्षण
ध्रुव नामे तार पुत्र विदित भूतले * स्वर्ग नामे तार सर्व्वलोके बले
पुत्र स्वर्ग राजार से सर्व्व नाम धर * हैहय नामेते तार पुत्र मनोहर
नन्दन हैहयेर अर्जुन नाम धरे * निमि नामे तार पुत्र विदित अमरे
निमिर कीर्त्तिते व्याप्त सकल संसार * निमि नामे ताँहार ये हइल कुमार
सकले मिलिया तार मथिल शरीर * ताहाते जन्मिल पुत्र मिथि नामे वीर
सेइ बसाइल एइ मिथिला-नगर * जनक कुशध्वज हैल ताँहार कोङर
वशिष्ठ बलेन शुनिलाम विवरण * आमि कथा कहि तबे ताहे देह मन

सूर्यवंश कथन

आदि पुरुषेर नाम हैल निरञ्जन * ब्रह्मा विष्णु महेश्वर पुत्र तिन जन
तिन पुत्र हइल तनया एक जानि * सकले ताहार नाम राखिल कन्दिनी
जरत्कारु मुनि पुत्र नारद वीणापाणि * ताहाके विवाह दिल कन्दिनी भगिनी
सबे गीत गाय नारद बाजाय बीणा * ताहाते जन्मिल भानु नामे तार कन्या
ताहाके विवाह दिल जमदग्नि वरे * एक अंशे नारायण जन्मिल तार घरे
ब्रह्मार काछेते तार पड़िलेक बीज * ताहाते जन्मिल पुत्र नामेते मारीच
मारीचेर पुत्र हैल नामेते कश्यप * ताँहार तनय सूर्य्य प्रचण्ड प्रताप
सूर्य्येर हइल पुत्र मनुनाम तार * मनुर नामेते सर्व्व व्यापिल संसार

१ परशुराम २ पुत्र।

पुनि 'प्रसेन' छिति कीरति पाये * नृप 'युवनाश्व' तनय तिन जाये
'मान्धाता' पुनि तासु बंसधर * तासु भूप 'मुचकुन्द' कीर्तिकर
'धुन्धुमार' आँगन तिन सोहा * 'इला' जासु नन्दन मन मोहा
'शतावर्त्त' क्रम रविकुल आई * 'आर्यावर्त्त' जन्म सुभ पाई
'भरत' धरा चहुँ यश पुनि छावा * भारत नाम हेतु सोइ पावा
भरत-तनय 'इक्ष्वाकु' धनुर्धर * प्रोहित-पद वशिष्ठ लिय जाकर
पुनि सुमंत्र सारथि जिन स्यन्दन * 'भूधर' सोइ महीप कर नन्दन
भूधर-'खाण्ड', खाण्ड-सुत 'दण्डा' * पुरनारी - हारी बरबण्डा[1]
दण्ड - सुवन 'हारीत' बखाना * तिन 'हरिबीज' प्रबल जग जाना
तनय तासु 'हरिचन्द' प्रतापी * सत्यसंध महिमा जग व्यापी
कौशिक सकल दान जिन अर्पी * काया, काञ्चन हूत समर्पी
चिरशासन पूरन अभिलासा * तासु बंसधर सुत 'रुहिदासा'

दो० 'मृत्युञ्जय' पुनि आगमन, तिन 'त्रिशंकु' तपरूप ।
जिन जन्मे 'रुक्मांगद', सील - धर्म - यस - रूप ॥ १४६ ॥

द्वादश वर्ष कीन उपवासा * धर्म सुवन तिन 'मरुत' प्रकासा
'अनारण्य' पुनि रविकुल-नाथा * तिन - बध कीन लंक - दसमाथा

मनुर हइल पुत्र सुषेण नामेते * प्रसेन ताँहार पुत्र विदित जगते
प्रसेनेर पुत्र युवनाश्व नाम धरे * राजा युवनाश्व हय अयोध्या-नगरे
युवनाश्व राजार कहिब किबा कथा * ताँहार जन्मिल पुत्र नामेते मान्धाता
मान्धातार पुत्र हैल मुचुकुन्द नाम * गुणवान धुन्धुमार ताँर पुत्र नाम
ताँहार हइल पुत्र इला नाम धरे * ताँर पुत्र शतावर्त्त अयोध्या-नगरे
आर्य्यवर्त्त नामे ताँर हइल नन्दन * भरत ताँहार पुत्र जाने सर्व्वजन
भरत राजार आर कि कब आख्यान * याँर नामे पृथिवीर भारत पुराण
ताँर पुत्र हइल इक्ष्वाकु नरपति * वशिष्ठ पुरोधा याँर सुमन्त्र सारथि
ताँहार भूधर नामे हइल नन्दन * खाण्ड नामे ताँर पुत्र अयोध्या-भूषण
हइल खाण्डेर बेटा दण्ड नाम धरे * से प्रजार कामिनी के बलात्कार करे
ताँर पुत्र हइल हारीत नाम धरे * हरिबीज ताँर पुत्र विदित संसारे
हरिबीज राज्य करे परम आनन्द * हइल ताँहार पुत्र नाम हरिश्चन्द्र
याँर दान लइलेन गाधिर नन्दन * बिकाइया आपनि ये शुधिला काञ्चन
हरिश्चन्द्र राज्य करे पूर्ण अभिलाष * ताँहार हइल पुत्र नाम रुहिदास
से रुहिदासेर पुत्र नाम मृत्युञ्जय * त्रिशंकु ताँहार पुत्र यिनि तपोमय
ताँर पुत्र रुक्माङ्गद अयोध्या निवासी * द्वादश वत्सर काल करे एकादशी
रुक्माङ्गद जन्माइल धार्म्मिक तनय * ताँर पुत्र हइल मरुत महाशय
अनारण्य ताँर बेटा जाने सर्व्वजन * ताँहाके मारिया गेल लङ्कार रावण

---

१ उद्दण्ड ।

'बाहु' अनारण्यक-तन जाता * तिन शिवभक्त 'सगर' विख्याता
सगर-सूनु 'असमंज' धर्मधर * 'अंशुमान' तिन धर्म-धुरंधर
जिनके प्रगट 'भगीरथ' भूपा[1] * जिन-तप सुरसरि बही अनूपा
सुर, नर, असुर—सृष्टि जिन तारी * भागीरथी भुवन विस्तारी
'वितपत' प्रगट वंसधर तासू * अवधरतन 'विवरन' सुत जासू
पुनि 'असर्पि', जिन सुवन 'दिलीपा' * तिन-'रघु' प्रबल प्रचण्ड महीपा
साका जिन रघुबंस चलावा * जासु नाम, रविकुल जस पावा
सब विधि 'अज' पितु सम रघुनन्दन * तासु तनय प्रस्तुत जगवंदन
'दसरथ शौर्य्य-वीर्य्य गुणधामा * धार्मिक लखौ सुवन 'श्रीरामा'
वंशावलि वशिष्ठ जस गाई * प्रोहित सहित सभा मन भाई
गर[2] धरि बसन, दसरथहि पेखी * विनती करहुँ विदेह विसेखी
कोशलपति तव सुत बलधारी * शरण, समर्पित तनया चारी
बोले दसरथ, सुनउ विदेहा * सुवन चारि अर्पित तव नेहा
समधी उभय निरत[3]-संभाषन * सोइ छन चतुरी सकल सखीगन

दो० विविध भाँति लाईं सकल, भूषन बसन ललाम।
अस सा-क[4] सिय साजिये, मुग्ध होयँ लखि राम ॥ १४७ ॥

आमलकी[5] मलि सिर स्नाना * पुनि तन सोह दिव्य परिधाना

हइल ताँहार पुत्र बाहु नृपवर * शिवभक्त पुत्र तार हइल सगर
असमञ्ज नामे तार हइल नन्दन * ताँर बेटा अंशुमान धर्म्मपरायण
अंशुमान राजा राज्य करिल कौतुके * मरिल ताँहार वंश आर नाहि थाके
भगीरथ तार बेटा अयोध्या-नगरे * गङ्गा आनि उद्धारिल देव दैत्य नरे
वितपन नामे तार हइल नन्दन * विवर्ण ताँहार पुत्र अयोध्या-भूषण
ताँहार हइल बेटा असर्पि राजन * दिलीप ताहार बेटा जाने सर्व्वजन
दिलीपेर सुत रघु बड़ बलवान * रघुवंश बलि यार बंशेर आख्यान
रघुर तनय अज पितार समान * ताँर पुत्र दशरथ देख विद्यमान
दशरथ राजा शौर्य्यवीर्य्य गुणधाम * ताँर ज्येष्ठ पुत्र एइ धार्म्मिक श्रीराम
एतेक वशिष्ठ मुनि बलिल सबाके * शुनि शतानन्द मुनि हात दिल नाके
गले वस्त्र दिया बले जनक राजन * तव पुत्रे कन्या दिया लइनु शरण
दशरथ बलिलेन जनक राजारे * शरण लइनु दिया ए चारि कुमारे
दुइ राजा उठि तबे कैल सम्भाषण * कन्या आन आन बले यत बन्धुगण
हेन वेश भूषण पराय सखीगण * याहाते मोहित हय श्रीरामेर मन
सखी देय सोनार मस्तके आमलकी * तोलाजले स्नान कराइल चन्द्रमुखी

---

१ पृष्ठ ६६ पर सूर्यवंश के वर्णन में अंशुमान का पुत्र दिलीप, दिलीप के भगीरथ—ऐसा वर्णन है। यहाँ अंशुमान के पुत्र भगीरथ है। यह पाठभेद संग्रहकर्ता की भूल है। कदाचित प्रथम विवरण अशुद्ध है। २ गले में पट लपेटकर—विनय सूचक ३ लीन, तन्मय ४ सजधज ५ आँवला।

रुचि-रुचि आलिन केस सँवारी ※ लटन लसी वेणी मनहारी
बिन्दी कुंकम भाल सोहाई ※ जिमि नभ, प्रभा-बालरवि छाई
मुक्ता सहित सोह नकबेसर ※ तन सुवास शुचि सलिल सकेसर
चञ्चल नयन सुकज्जल धारी ※ लोचन लचत मनोज निहारी
झिलमिल हार कण्ठ अति शोभा ※ उर कञ्चुकी जरी[1] मन लोभा
करनफूल कनकावलि न्यारी ※ भुज भुजबन्द छटा अति प्यारी
दोउ कर चूरी शंख बिराजी ※ तापर कञ्चन कंकन साजी
पग - अँगुरिन नूपुर बजनारे ※ प्रचुर बसन - भूषन छबि धारे
कनकचौक छबि जुड़वति छाती ※ चहुँ दिक् दीप्ति जोति-अवहाती[2]
दुहितन सविधि सहचरिन साजी ※ मण्डप - तर पुनि लाइ बिराजी
पुष्पाञ्जलि दै सिय - कर जोरी ※ राम सहित मत भाँवरि फेरी
अवसर, ओट भई जब सखियाँ ※ मिलीं राम-सिय सकुचित अँखियाँ
सलिल - धार दै, राम लेवाई ※ चलीं, कछुक पुनि सिय लै जाई
राखिन जहँ पटनई[3] अँधेरी ※ आली कहैं राम-तन हेरी
'षष्ठी'[4] कर पूजन मन लाई ※ करहु कुअँर इत मंगलदायी

दो॰ चहुँ अँधेर, सिय-पग चहेउ, देन सखिन हरि-हाथ ।
सिया-सकुच, चुरियन खनक, सजग भये रघुनाथ ॥ १४८ ॥

चिरुणीते केश आँचड़िया सखीगण ※ चूल बान्धि पराइल अङ्गे आभरण
कपाले तिलक दिल निर्म्मल सिन्दूर ※ बालसूर्य्य सम तेज देखिने प्रचुर
नाकेते बेसर दिला मुक्ता सहकारे ※ पाटेर आछड़ा दिल सकल शरीरे
चञ्चल नयने किबा कज्जलेर रेखा ※ कामेर कामना येन गुणे जाय देखा
गलाय ताहार दिल हार झिलिमिलि ※ बुके पराइया दिल सोनार काँचलि
उपर हातेते दिल ताड़ स्वर्णमय ※ सुवर्णेर कर्णफुले शोभे कर्णद्वय
दुइ बाहु शङ्खेते शोभित विलक्षण ※ शङ्खेर उपरे साजे सोनार कङ्कण
वसन पराये तारे सुन्दर प्रचुर ※ दुइ पाये दिल तार बाजन नूपुर
सुवर्ण आसने बसिलेन रूपवती ※ चारिदिके ज्वालि दिल सोह गेर वाति
चारि भगिनीत वेश करि विलक्षण ※ तखन मण्डपे गिया दिल दरशन
पुष्पाञ्जलि दिया तबे नमस्कार करे ※ प्रदक्षिण सातबार करिल रामेरे
अन्त.पट घुचाइल यत बन्धुगण ※ सीता रामे परस्पर हैल दरशन
जलधारा दिया तार कन्या दिल परे ※ शोयाइल जानकीरे अन्धकार घरे
वरेरे आनिते आज्ञा करे सखीगण ※ आसिया करुन राम षष्ठीर पूजन
हाते धरि आनाइल रामेरे तखन ※ सीतार हात धरि तोल बले सखीगण
तखन भावेन मने सीता ठाकुरानी ※ पाये हात देन पाछे राम गुणमणि

१ जरी के काम वाली २ सोहाग बाती (दीपक) ३ नीची पटी हुई अंधेरी कोठरी
४ षष्ठी माता—कुलदेवी दुर्गा ।

सिय-कर मञ्जु राम गहि लीन्हा * सुमुखिन निरखि ठठोली[1] कीन्हा
कोउ कह सियहिं लीन धरि हाथा * कोउ कह पग परसे रघुनाथा
षष्ठी - पूजन, सिय - पग - परसन * सो मसखरी[1] विफल भइ बनितन
वर-कन्या आगमन बहोरी * रोहिनि-चन्द्र गगन जिमि जोरी
सबिधि सुभग संपन्न बिवाहू * कन्यादान दीन नरनाहू
यौतुक[2] अमित दास अरु दासी * विविध सुपास दीन सुखरासी
दम्पति लिये, देत जलधारा * चलि रनिवास जनक पग धारा
राजा - रानी पाक बनावा * दोउन परसि जेवनार करावा
सखियन सेज सुहाग सजाई * सिया सहित शोभित रघुराई
भरत निवास माण्डवी संगा * लखन - उर्मिला रत रसरंगा
श्रुतिकीरति - रिपुसूदन रमना * निज - निज वास प्रमोद निमग्ना
हास - हुलास सुमिथिला - धामा * बनिता करैं चुहल[3] तकि रामा
हँसि - हँसि करैं रञ्जना[4] एही * तुम न राम, सरवरि[5] बैदेही
रूपसि अतुल सिया, तुम कारे * बिहँसि, राम बोलत ढिठियारे[6]
अब सहवास सुन्दरी पाई * धन्य होहुँ छबि सों छबि पाई
अति खिसियई[7], सकल हतज्ञाना * मुग्ध, राम-पद तजि मन-प्राना

करिलेन सीता वाम हस्ते शङ्खध्वनि * हाते धरि सीतारे तोलेन रघुमणि
स्त्री लोकेरा परिहास करे छल पेये * केह बले हाते धरे केह बले पाये
पूर्व्वापर वर कन्या आइले दुजने * रोहिणीर सह चन्द्र येमन गगने
कन्यादान करे राजा विविध प्रकारे * पञ्च हरीतकी दिया परिहास करे
बहु दास दासी राजा दिल कन्या वरे * जलधारा दिया कन्या वर लैल घरे
राजराणी गिया परे करिल रन्धन * वरकन्या दुइ जने करिल भोजन
साजाय वासर घर यत सखीगण * राम सीता ताहाते वञ्चेन दुइजन
उर्मिला सहित सुखे वञ्चेन लक्ष्मण * माण्डवीर सहित भरत विचक्षण
श्रुतकीर्त्ति सहित आछेन शत्रुघ्न * एइरूपे वासरेते वञ्चे चारिजन
सानन्द हइल सब मिथिला भुवन * रामके देखिते जाय यत नारीगण
परिहास करे सबे रामेर सहित * तुमि ये जानकी पति ए नहे उचित
एइ कथा राम हे तोमाके बलि भाल * सीता बड़ सुन्दरी तुमि हे बड़ काल
हासिया बलेन राम सबार गोचर * सुन्दरीर सहवासे हइब सुन्दर
परिहास करिबे कि हाराइल ज्ञान * श्रीरामेर चरणे मजाय मन प्राण

---

१ मजाक २ दहेज ३ छेड़खानी, मनोरंजन ४ बातें बनाना ५ समान ६ ढीठ वचन ७ लज्जावश सकोच।

दो० लखनलाल ढिग गईं पुनि, ठगीं चितइ तिन ओर।
अनुज न कहुँ घट बन्धु सों, अनुपम रूप किशोर॥
लखन गुनी, गर वसन धरि, वनितन दीन लजाय।
करैं मसखरी राम सन, लखौं सरिस तिन माय॥ १४६॥

कोशल-कुअँर चारि छविखानी * लोचन करहिं सनाथ सयानी
निज अनुरूप कामिनिन पाई * रंग रसाल रमत सब भाई

परशुराम का दर्प-चूर्ण

भोर उदित रविकिरन-समाजा * सभा सपरिजन भूप विराजा
बजत जनक-घर अनँद बधाई * किय बशिष्ठ याचना-बिदाई
कातर जनक, अतुल पितुमोहा * कहत, दुसह तत्काल बिछोहा[1]
वर्ष एक आयसु पहुनाई * रहैं जनकपुर सिय-रघुराई
बिहँसि प्रबोधि कहेउ अजनन्दन * प्रान छाड़ि तन तुमहिं समर्पन
तो अरदास[2] करिय स्वीकारू * मम गृह सकल लहैं जेवनारू
दसरथ पुलकि अनुमती दीनी * उतै विदेह व्यवस्था कीनी
रानी कुशल रसोई-रंधन * एक द्रव्य सों शत-शत व्यञ्जन
करि स्नान जनात-बराती * परिजन-पुरजन, जाति-विजाती
पंगत-क्रम[3], पारुस रुचिकारी * भोजन लहि सुतृप्त नर-नारी
रामलला जेवनार विराजे * षटरस, दूध, दही सब साजे

येखाने वसिया आछे अनुज लक्ष्मण * सेखाने चलिया जाय यत सखीगण
अग्रज येमन तार अनुज लक्ष्मण * भूलिल रामेरे तारा हेरिया लक्ष्मण
गले वस्त्र दिया ब'ले लक्ष्मण गुणमणि * रामे परिहास करे से मोर जननि
लज्जायुक्त हये तबे यत सखीगन * पुनर्व्वार जाय यथा रन नारायन
एइ रूपे चारि स्थाने करि दरशन * मानिल कामिनीगण सफल नयन
चारि भाइ तुल्य चारि लइया सुन्दरी * नाना सुखे कौतुके वञ्चेन विभावरी

परशुरामेर दर्प-चूर्ण

प्रभात हइले रात्रि उदित तपन * सभा करि वसिलेन यत बन्धुगण
बाजिन आनन्द वाद्य जनक भवने * विदाय मागेन गिया वशिष्ठ ब्राह्मणे
जनक बलेन अति हइया कातर * राम सीता राखि याओ एकटि वत्सर
हासिया बलेन तबे अजेर नन्दन * शरीर लइया याब राखिया जीवन
बलेन जनक राजा शुनहे वचन * सकले आमार घरे करिबे भोजन
भाल-भाल बलिया दिलेन अनुमति * आयोजन करिलेन जनक भूपति
राजा राणी घरे गिया करेन रन्धन * एक अन्न सह आर पञ्चाश व्यञ्जन
स्नान करि आसिया सकल प्रजागण * आनन्दित हैया सबे करेन भोजन
भोजन करेन राम परम हरिषे * दधि दुग्ध दिल राजा भोजन विशेषे

१ वियोग २ निवेदन ३ ज्योनार मे बैठने की व्यवस्था।

भोजन तदुपरि कीन आचमन * सादर पान सुगंधित अर्पन
विगत-निसावत[1] पुनि श्रीरामा * मिथिलाधाम कीन विश्रामा
भोर होत नृप लीन बिदाई * सजा अवध-दल, आयसु पाई

दो० दान अपरिमित दुखिन दै, दीन अयाचक कीन।
चारि दोल[2] चढ़ि, चले सब, कुअँर-बधू आसीन ॥ १५० ॥

माथे मौर, दिव्य परिधाना * तेज सरूप, सोह धनुबाना
भाइन सहित दूबदल स्यामा * चंदोलन अरूढ़ श्रीरामा
मुदित, अवध तन, नृप पग दीना * स्यंदन दिव्य वशिष्ठ असीना
मोइ छन चहुँ अपसकुन निहारी * द्विजवर ! कस विपरीत बयारी[3]
कस होनी ? कस विपति-विरोधा ? * सुनि वशिष्ठ भूपतिहिं प्रबोधा
हे कोशलपति ! तव सुत चारी * राजत कुशल समुख[4] सुखकारी
का सक तव अपसकुन विचारे ? * सुनत, बजे पुनि कटक नगारे
बाजत तुमुल घोष नभ छावा * परशुराम-हिय कंपन आवा
बाजन-रव मिथिलापुर एही * बरन कीन कोउ नृप बैदेही
कवन भूप ? सोचत भृगुराई * जनक व्यस्त इत बागबिदाई[5]
वर-कन्या-बिछोह, गर भरहीं * लख-लख चुंब भूप मुख करहीं
कहत, सिया भरि अंक, भुआला * लली ! कीन अब लौं प्रतिपाला

सुतृप्त हइया सबे करे आचमन * कर्पूर ताम्बुले करे मुखेर शोधन
से रात्रि थाकेन राम तथा पूर्व्ववत् * प्रातःकाले विदाय मागेन दशरथ
राम सीता चतुर्द्दोले करि आरोहण * दीन दुःखीरे धन करेन वितरण
दिव्य वस्त्र परिधान माथाय टोपर * दुर्व्वादलश्याम राम हाते धनुःशर
परे तिन भ्राता चापिलेन चतुर्द्दोले * परम आनन्द राजा अयोध्याय चले
दिव्य रथे चड़िलेन वशिष्ठ ब्राह्मण * किन्तु चतुर्द्दिके राजा देखे अलक्षण
राजा बलिलेन शुन वशिष्ठ ब्राह्मण * चारिदिके देखि केन एत अलक्षण
कि जानि केमने हबे विपद घटन * वशिष्ठ बलेन शुन अजेर नन्दन
चारि दिके चारि पुत्र देख विद्यमान * के करिते पारे तव अशुभ विधान
बाजनार महाशब्द उठिल आकाश * परशुरामेर चित्ते लागिल तरास
मिथिलाते शुनि केन वाद्येर बाजना * सीता के विवाह बुझि करे कोन जना
मने मने युक्ति करे सेथा मुनिवर * हेथा राजा विदाय करेन कन्यावर
लक्ष लक्ष चुम्ब दिया बदन कमले * जनक करिया कोले जानकीरे बले
करिलाम बहु दुःखे तोमारे पालन * बारेक मिथिला बलि करिओ स्मरण

१ पिछली रात के समान ही २ वर-वधू योग्य सवारी, पालकी, (डोला शायद इसी का अपभ्रंश है।) ३ उलटी हवा ४ साक्षात् ५ बारात बिदा होने पर, ग्राम की सीमा तक सम्बन्धी को विदा करने जाने की रस्म।

कबौं - कबौं पितुपुरी बिसूरी[1] * सास - ससुर सेइय पदधूरी
कोउ प्रति इर्ष्या, राग न द्वेषू * सुख - दुख सम अदृष्ट[2] संतोषू
सतत स्वामिपद सेइय सीता * करुन, सीख पितु दीन सप्रीता
तब लौं आइ सखी, सहबोली * परिचारिका करुन रस घोली

सो० चली सबन तजि सीय, दरस चन्द्रमुख होय कब ?
सकल-दसा दयनीय, सिसकि सिसकि रोदन करहिं ॥ १५१ ॥

जनक बिदा सिय - रघुबर कीना * शत सहस्र धन विप्रन दीना
सोइ अवसर कर कठिन कुठारा * जामदग्न्य[3], 'रहु ! रहु !' ललकारा
खड्ग, चर्म[4] तन, सर-कोदण्डा * महा भयानक वेष प्रचण्डा
भीमवेग धावत करि गर्जन * प्रस्तुत रुद्ररूप भृगुनन्दन
गात विकंपित कोसलराई * राम - लखन मुनि चरनन लाई[5]
सविनय मौन; निरखि सोइ काला * परशुराम कह, सुनिय भुआला !
जनक-गेह शिवधनु केहि भंगा ? * को तुम ? बरनउ सकल प्रसंगा
मम सुत राम, नाथ ! तव दासा * सोइ - कर छुवत प्रतञ्च विनासा
अग्निपुन्ज कोपे भृगुरामा * मम समता[6] राखेसि सुत-नामा
परशुराम भूतल मोहिं जानी * आन[7] राम कस नाम बखानी
मो मुनि, नरपति विनय सुनाई * छमहु दोस तपसी द्विजराई

श्वशुर श्वाशुड़ि प्रति राखह सुमति * राग द्वेष असूया ना कर कार प्रति
सुख दु:ख ना भाविओ यआछे कपाले * स्वामीसेवा सीता ना छाड़िओ कोन काले
झियारी बहुरी सब आसिया तखन * गलाय धरिया सब जुड़िल क्रन्दन
आमा सबा छाड़िया कि चलिला जानकी * आर कि हइबे देखा सीता चन्द्रमुखी
राम सीता विदाय करिलेन जनक * द्विजेर दिलेन धन सहस्र संख्यक
हेन काले जामदग्न्य हातेते कुठार * रह रह बलिया डाकिछे बार बार
खड्ग चर्म्म धनु:शर शरीरे ग्रथित * भीमवेगे भार्गव हइल उपस्थित
महा-भयानक वेश देखिया मुनिर * दशरथ भूपतिर कम्पित शरीर
एक हाते रामे धरि अपरे लक्ष्मणे * मुनिर चरणे राजा दिल सेइ क्षणे
मुनि बले दशरथ बलि हे तोमारे * धनुक भाङ्गिल केबा जनकेर घरे
दशरथ कहेन आमार पुत्र राम * गुण दिते धनुके हइल दुइखान
महाकोपे ज्वलिया बलेन भृगुराम * मम सम करि राखियाछ पुत्र नाम
आमि त परशुराम विदित भूतले * हेन जन आछे के ये राम नाम बले
ए कथा शुनिया राजा बलेन वचन * दोष क्षमा कर प्रभु तपस्वी ब्राह्मण

१ याद करते हुये २ भाग्य पर ३ परशुराम ४ मृगचर्म ५ पैरों पर झुकाकर
६ समान ७ अन्य व्यक्ति को ।

रक्तनयन कह, सुनु अज्ञानी ! * निपट विप्र - तपसी अनुमानी
बोलन मन्द, अबुझ मम करनी * क्षत्रिय-हीन कीन यत[1] धरनी
मम कुठार कृत इकइस बारा * बही मही चहुँ शोनित-धारा
कश्यप सौंपि धरा नित दीनी * 'तापस द्विज' कहि, ताकर हीनी
मम गुरु-चाप, मूढ़ जोइ भंगा * मस्तक रहित करौं सोइ अंगा

सो० कहेउ भूप, भय मानि, महाबीर विक्रम विपुल !
छमहु सुबालक जानि, तबहिं लखन बोले बचन ॥ १५२ ॥

बीरन विरद - बखान न हेतू * सो गावत निज मुख भृगुकेतू
क्षत्रि विनाम मगहेउ जो बल * सोइ जुग राम-लखन बिन भूतल
सुनि कटु गिरा-लखन विषमानी * भृगुपति कोपि कहेउ इमि बानी
जीर्न[2] चाप भञ्जि नहि पारा * मम धनु - गुन[3] चढ़ये निस्तारा
अस कहि धनुष दीन रघुराई * सिय मन उपज सोच अधिकाई
राम सुयोग[4] एक धनु तोरा * पितु-प्रन राखि बरन किय मोरा
पुनि भृगु आनि धरेउ धनु शूला * सौतिन सरिस किधौं प्रतिकूला
दीन सदर्प चाप भृगुरामा * तासु भार बिनसइँ श्रीरामा
सो हँसि बाम - पानि[5] रघुबीरा * सहज लीन, अति पुलक सरीरा
कौतुक लखहु लखन ! धनुधारी * यहि धनुही गरिमा मुनि भारी

बलेन परशुराम , आरक्त नयन * तुच्छ ज्ञान कर देखि तपस्वी ब्राह्मण
नि:क्षत्रिय भूमि करि तिन सप्तबार * रक्ते नदी बहाइल आमार कुठार
समस्त पृथिवी करि कश्यपेर दान * तपस्वी ब्राह्मण बलि कर अपमान
आमार गुरुर धनु भाङ्गिलेक येइ * ताहाके बधिया आजि प्रतिफल देइ
भूपति बलेन भये कम्पित शरीर * बालकेर अपराध क्षम महावीर
रुषिया कहेन तबे सुमित्रा - कुमार * कथाय कि फल कर वीरेर आचार
क्षत्रिय विनाश तुमि करेछ यखन * तखन ना जन्मेछिल श्रीराम लक्ष्मण
एतेक बलिल यदि सुमित्रानन्दन * कुपित परशुराम कहेन वचन
जीर्ण धनु भाङ्गिया ये देखाइल गुण * आमार धनुके राम देह देखि गुण
एतेक कहिया धनु दिलेन तखन * जानकी भावेन नम्र करिया बदन
एक बार धनुक भाङ्गिया अकस्मात् * करिलेन विवाह आमारे रघुनाथ
आर बार धनुक आनिल भृगुमुनि * ना जानि हबे मोर कतेक सतिनी
धनुखान भृगुराम दिल बड़ दापे * मरे त मरुक राम धनुकेर चापे
धनुक देखिया अति प्रसन्न अन्तरे * हासिया धरेन राम धनु वाम करे
श्रीराम बलेन हे लक्ष्मण धनुर्द्धर * ए धनुकेर गरिमा करेन मुनिवर

१ जितनी भी, समस्त २ जीर्ण, पुराना। ३ धनुष की डोरी ४ संयोग से ५ बायें हाथ में।

हे मुनिबीर ! धनुष किय अर्पन * तो सर कीजिय नाथ समर्पन
खोई सुमति, कुमति भृगु छाई * निज - मर दीन पाणि[1] - रघुराई
बल-आहत, मुनि सायक दीना * सर बिलगत[2] मुनि तेज-बिहीना
दै भृगुपति निजकर हरि-अंसा * रहे सहज द्विजकुल - अवतंसा
बोले बचन भानुकुलकेतू * धनु-प्रतंच धारन कहु हेतू !
जो तव चाप तजै तव सायक * तो मुनि तव पंचत्व - बिधायक[3]

दो० हेरि, लखन-मन जानिबे, मन कीन्हेउ भगवंत ।
कहेउ अनुज, प्रत्यंच धरि, कीजिय संसय अंत ॥ १५३ ॥

पुलकि सकौतुक, सुनि, रघुराई * दिय प्रतंच - भृगुधनुष नवाई
धनुटंकार गगन लौं हाला * स्वर्ग देवगन, शेष पताला
त्राहि - त्राहि रघुपति ! रघुबीरा ! * बिकल सहसफन थिर न मरीरा
चाप निवारि हरौ उर - शूला * सो मुनि लखन कहेउ अनुकूला
करौ तात बासुकि कर त्राना * अनुज - बैन बिहँसे भगवाना
चाप उठाय, सबन प्रभु आगे * मुनि सों बचन कहन इमि लागे
हे मुनि ! बचेउ बिप्रबध अर्था * तदपि मोर सायक अव्यर्था[4]
रोध[5] - पताल, स्वर्ग - अवरोधू * कस कीजिय ? मुनिवर अनुरोधू
परशुराम - मन उपजेउ ज्ञाना * चीन्हेउ दयासिन्धु भगवाना

श्रीराम बलेन शुन ओहे वीरवर * धनु यदि दिले तबे देह एक शर
सुबुद्धि परशुरामे कुबुद्धि लागिल * तखनि रामेर हाते शर योगाइल
येइ श्रीरामेर हाते मुनि शर दिल * आपनार तेज राम सकल हरिल
आपनार तेज राम लइल यखन * हइल मुनिर पुत्र सामान्य ब्राह्मण
श्रीराम बलेन शुन मुनिर नन्दन * धनुकेते गुण दिब किसेर कारण
तोमार धनुके यदि गुण दिते पारि * तोमार धनुकबाणे तोमाके संहारि
लक्ष्मणेरे जिज्ञासा करेन राम शेषे * धनुकेते गुण दिइ मुनिर आदेशे
लक्ष्मण बलेन शुन ज्येष्ठ महाशय * धनुकेते गुण दिया दूर कर भय
ए कथा शुनिया राम हासिया कौतुके * धनु नोयाइया गुण दिलेन धनुके
धनुक टङ्कार गिया उठिल गगन * पाताले बासुकी काँपे स्वर्गे देवगण
पाताले बासुकी बले देव रघुवीर * धनुखान तोल मोर बुक होक स्थिर
लक्ष्मण बलेन शुन अग्रज श्रीराम * धनुखान तोल ये बासुकि पाय त्राण
एइ कथा शुनिया हासिया रघुनाथ * तुलिलेनसेइ धनु सबार साक्षात्
श्रीराम बलेन शुन मुनिर नन्दन * तोमारे ना मारि ब्रह्मबधेर कारण
अव्यर्थ आमार बाण कि हबे एखन * स्वर्ग रोध करि किम्वा पाताल भुवन
ये आज्ञा बलिया बले मुनिर नन्दन * चिनिलाम तोमारे ये तुमि नारायण

१ हाथ में २ अलग होते ही ३ मृत्यु का हेतु ४ अचूक ५ रुद्ध कर दें—रोक दें ।

बिना धर्म - पथ, आन उपाऊ * रोधिय स्वर्ग, सुलभ जनि काऊ
सायक तजेउ राम करि क्रोधा * भार्गव - स्वर्गपंथ अवरोधा ?
विनयेउ परशुराम श्रीरामा * पुनि तप हेतु गये नितधामा
पुलकित मनो गवा धन पाई * दसरथ मन प्रमोद अधिकाई
हे सुत ! तात ! अंक गहि लीन्हा * राम कमल मुख चुम्बन कीन्हा
गुरु सों बचन कहन इमि लागे * बाजन अब न प्रयोजन आगे
रामादिक चंदोल सुहाये * अवध ओर पुनि भूप सिधाये

दो० कटक सहित पहुँचे तबै, सिद्धाश्रम श्रीराम।
सकल मुनिन-पद बंदि प्रभु, सविनय कीन प्रनाम ॥ १५४ ॥

मुनिवनितन रघुपति - सिय देखी * उर अन्तस तिन हर्ष बिसेखी
राम सरिस, सिय सब गुनखानी * धन्य पिता, धनि जननि बखानी
आगे चलि सरयू करि पारा * नगर अयोध्या नृप पग धारा
शोभा अकथ, अवध-छबि न्यारी * प्रमुदित बाल, बृद्ध, नर - नारी
नभ चँदवा छबि देत बिताना[1] * ध्वजा - पताका रंजित नाना
सुता-कुलबधुन, निज-निज द्वारे * घृत प्रदीप दीपहिं सँभियारे
कनककलस, बंदन अमरारी[2] * नरियल रंभा[3] सगुन सुपारी
ग्राम प्रदच्छिन करि अजनन्दन * नगर समीप बजाये बाजन

धर्म्मद्वारा स्वर्ग पाय नाहि हय आन * स्वर्गपथ रुद्ध कर देव भगवान
एक शर मारिलेन ना करिया क्रोध * परशुरामेर करे स्वर्ग - पथ रोध
श्रीरामेर स्तुति करे श्री परशुराम * तपस्या करते मुनि यान नित्यधाम
दशरथ पाइलेन येन हारा धन * आनन्दित तेमनि हइल ताँहार मन
पुत्र पुत्र बलिया करेन रामे कोले * लक्ष लक्ष चुम्ब देन वदन कमले
भूपति बलेन शुन वशिष्ठ ब्राह्मण * बाजनाय आर किछु नाहि प्रयोजन
चतुर्द्दोले श्रीराम करेन आरोहण * अयोध्याते द्रुतगन करेन गमन
सिद्धाश्रमे श्रीराम दिलेन दरशन * प्रणाम करेन सबे मुनिर चरण
मुनिपत्नी आइल श्रीरामे देखिबारे * राम सीता देखे ताँरा हरषि अन्तरे
इहार जननी धन्य धन्य एर पिता * येमनि गुणेर राम तेमनि ए सीता
तथा हैते चलिलेन परम हरिषे * उत्तरिला गिया सबे आपनार देशे
अयोध्यार ये शोभा ता वर्णिते ना पारि * आनन्द-सागरे मग्न बाल वृद्ध नारी
नाना वर्ण पताका उड़िछे नाना-स्थल * उपरे चाँदोया शोभे गगन मण्डल
कुलबधू आर यत प्रजार कुमारी * घृतेर प्रदीप ज्वाले द्वारे सारि सारि
सुवर्णेर पूर्ण कुम्भे दिल आम्रसार * गुवाक कदली नारिकेल राखे आर
ग्राम प्रदक्षिण करे अजेर नन्दन * ग्रामेर निकटे गिया बाजाय बाजन

---

१ तम्बू २ आम के पत्तों की बन्दनवार ३ केला।

कौशल्यादिक तीनिउ रानी * परछन बधुन चलीं सुखसानी
चलीं पुरवधू तिन संग भाई * घर-घर पुरी बजत सहनाई
जय-जय! सुमन वृष्टि सुरवृन्दा * नाचैं, उर उल्लास अनन्दा
बहुअन बगल सोबरन कलसी * दै सुभ सबन आत्मा हुलसी
हरा-भरा तिन सीस धराई * फेला खील तहाँ छिटकाई
कुल अनुरूप सुमंगल रीती * सविधि सबै पुरवइँ अति प्रीती
सुभ साइति, रानिन मँह देखा * चन्द्रमुखिन लखि जूड़ विशेखा
अभरन, बसन, रत्नमय भूषन * नाना यौतुक दीन सर्वजन

दो० यौतुक रघुपति लहेउ जो, अतुलित विविध प्रकार।
तासों परिपूरन भयेउ, अमित राम-भण्डार॥
लहेउ सिया यौतुक यतक, निरखि रमा सकुचाय।
चारि कुअँर उत परसि पग, जननिन बन्देउ जाय॥
रानिन दीन असीस बहु, धन सुत, आयु बखानि।
सुतन लिये दसरथ अवध, मगन पाय सुखखानि॥
सुख संपति सासन सकल, सुरपुर-स्वर्ग समान।
सलिल सरिस कृतिवास इमि, ललित कीन हरिगान॥
आदिकाण्ड गाथा परम, पावन इतै विराम।
रचौं अयोध्याकाण्ड पुनि, बन्दि सियावर राम॥ १५५॥

कौशल्या कैकेयी आर सुमित्रा रमणी * चारिवधू आनिते चलिल तिन राणी
मङ्गले चलिल रङ्गे पुरवासी नारी * सानन्द सकल पुरी बाजे तुरी भेरी
देवगण वरिषण करे पुष्पराशि * जय दिया नाचे सबे आनन्द उल्लासि
चारि वधू कक्षे दिल सुवर्ण कलसी * व्यवहार मत कर्म्म करे पुरवासी
कक्षे दिल कलसी मस्तके दिल डाला * छड़ाइया फेले सेइ खाने खइ कला
बधूमुख शुभक्षणे राणीरा देखिल * निरखिया चन्द्रमुख बुक जुड़ाइल
नाना विधि यौतुक दिलेन सर्व्वजन * मणिमय आभरण वसन भूषण
यौतुकेते पान राम यत अलङ्कार * ताहाते हइल पूर्ण ताँहार भाण्डार
पाइलेन सीतादेवी यतेक यौतुक * निजे लक्ष्मी तिनि ताँर ए नहे कौतुक
श्रीराम लक्ष्मण आर भरत शत्रुघ्न * बन्दिलेन गिया सबे मायेर चरण
चारि पुत्रे आशीर्व्वाद करे राणीगण * चिरजीवि हओ पाओ बहु पुत्र धन
चारि पुत्र ल'ये राजा सुखी बहुतर * सुखे राज्य करे येन स्वर्गे पुरन्दर
कृत्तिवास रचे गीत अमृत-समान * एत दूरे आदिकाण्ड हैल समाधान

* आदिकाण्ड समाप्त *

भगवान राम का



विराट स्वरूप

श्री गणेशाय नमः

कृत्तिवास रामायण

(हिन्दी पद्यानुवाद, बँगला मूल सहित)

मंगलाचरण

श्लोक—वामांके च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके,
भाले वालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट्।
सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्व्वाधिपः सर्व्वदा,
सर्व्वः सर्व्वगतः शिवः शशिनिभः श्री शंकरः पातु माम्॥ १॥
प्रसन्नतां यो न गतोऽभिषेकतस्तथा न मम्लौ वनवासदुःखतः।
मुखाम्बुज श्रीरघुनन्दनस्य मे सदास्तु तन्मञ्जुलमंगलप्रदम्॥ २॥
नीलम्बुजश्यामलकोमलांगम् सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौ महाशायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम्॥ ३॥

दो० आदि काण्ड स्वागत निरखि, हिय न समात हुलास।
अवधकाण्ड प्रस्तुत करहुँ, ज्यों वरनेउ कृतिवास॥

श्री रामचन्द्र के राजा होने का प्रस्ताव

अथ शुचि काण्ड-अयोध्या श्रवणम् * कैकयि - वचन राम - वनगमनम्
विमलासन पट निर्मल भूपा * वृद्ध, धवल छवि केश अनूपा
सिंहासन दसरथ जहँ सोहा * भूपन जुरि मधुबैनन मोहा
राम-विवाह, देहिं नजराना * हय, गज, रत्न, आभरन नाना

श्री रामचन्द्रेर राजा हइबार प्रस्ताव

द्वितीय अयोध्याकाण्ड शुन सर्व्वजन * कैकेयीर वाक्ये राम जाइवेन वन
वृद्ध राजा दशरथ, शिरे शुभ्रकेश * आसन वसन शुभ्र, शुभ्र सर्व्ववेश
राजत्व करेन राजा वसि सिंहासने * आइल सकल राजा राज - सम्भाषणे
हस्ती अश्व नाना रत्न नाना आभरण * विवाह - यौतुक रामे देन राजगण

जोरि जुगल कर, नावहिं माथा * धन्य! धन्य! दसरथ नरनाथा
हे नृप-मुकुट! बिनय सुनि लीजै * उचित, राजपद रामहिं दीजै
बारी वयस, जासु भय पाई * चलेउ दनुज मारीच बराई
त्रिभुवन, अतुल वीर गुनसागर * लखि तिन नृप! सुख लहै चराचर
सुनि सिख, उर न अनन्द समाई * सो दबाय, नृप करि चतुराई
रूखे रुख भूपति इमि भाषा * 'रामहिं राजु सबन अभिलाषा'
खल दलि[1], प्रजा सुवन सम तोषा * वृद्धहिं राज-हरन केहि दोषा
अन्तस[2] मोद प्रकट अति कोपा * लखि, भूपन-हिय धीरज लोपा
तिन-भय बिहँसि, भूप समुझावा * लखि मसखरी[3], नृपन बल आवा
तजि भय, लेहु बशिष्ठ बुलाई * 'रामहिं-राजु' सबन सुखदाई
आयसु सुनि, उर अमित अनन्दा * दसरथ-पद बन्दत नृप-वृन्दा
सुहृदन टेरि, कहेउ नृप वचना * राम-तिलक शुभ कीजिय रचना

दो० फूले विविध प्रसून, छबि, चहुँ बसन्त मधुमास।
मोर होत रघुवर तिलक, आजु साज अधिवास॥ १॥

सोइ-हित, सकल द्रव्य यहि लागे[4] * लाय, सँजूति, धरहु गुरु-आगे
स्यन्दन बेगि, सुमन्त्र! सजाई * आनहु मम गोचर रघुराई

नमस्कार करिलेन जोड़ करि हाथ * महाराज दशरथ तुमि लोकनाथ
एक निवेदन करि शुन नृपवर * श्रीरामेरे राजा कर सर्व्व गुणाकर
बालक श्रीराम चुले पञ्चझुंटि धरे * मारीच राक्षस पलाइल यांर डरे
रामतुल्य वीर आर नाहि त्रिभुवने * राम राजा हइले सानन्द सर्व्वजने
अन्तरे सानन्द राजा शुनिया वचन * वाक्यच्छले सबार बुझेन राजा मन
श्रीराम हइले राजा सवार सन्तोष * आमि वृद्धकाले करिलाम किवा दोष
पुत्रवत् पालि प्रजा, करि दुष्टे दण्ड * कोनदोषे आमार घुचाओ राजदण्ड
आनन्दित अन्तरे बाहिरे उष्ठ चापे * भूपतिर कोप देखि सर्व्वराजा कांपे
सवारे सभय देखि दशरथ कय * परिहास करिलाम ना करिह भय
वशिष्ठेरे डाकि आनि कुलपुरोहित * रामे राजा कर सबे ह'ये हरषित
भूपतिर अनुज्ञा पाइया सर्व्वजन * करिल सकले तांर चरण बन्दन
भूपति बलेन शुन पात्रमित्रगण * रामे राजा करिब, करह आयोजन
नानापुष्प विकाश वसन्त चैत्रमास * कालि राजा हबे राम आजि अधिवास
अधिवास करिते यतेक द्रव्य लागे * से सकल द्रव्य आहरण कर आगे
श्रीरामेर अधिवासे यत द्रव्य चाइ * से सकल आनि देह वशिष्ठेर ठाँइ
सुमन्त्र सारथि, तुमि चलह सत्वर * रथे करि आन रामे आमार गोचर

१ दमन करके २ मन में ३ मज़ाक ४ इसी समय।

सारथि धाय चलेउ स्रोइ काला * आनेउ राम, जहाँ महिपाला
रथ तजि दूरि, उतरि भुइँ आये * बन्दि चरन - पितु सीस नवाये
दै असीस, रघुबरहिं महीपा * बैठारेउ हिय - हरषि समीपा
सिंहासन सुत - पितु छबि पाये * सचिव - सभासद सकल सुहाये
तारावलि बिच पूनमचन्दा * सो छबि सभा सच्चिदानन्दा
सुवनहिं संसद - सम्मुख सिखावा * विविध नीति - नृपधर्म बुझावा
प्रथमरानि - सुत तुम युवराजू * पालहु प्रजा, सम्हारहु काजू
सुनि अरदास[1], सबन हित भारी * सासन सदा भुवन जसकारी
राजनीति - पटु धर्मधुरीना * नित्य कीर्ति, सुत ! लहहु नवीना
यद्यपि परम रूपसि परनारी * तदपि तासु तन दीठि[2] न डारी
बिलमति जो परवधू नरेसू * विनसति स्वयं विनामति देसू
पर - पीड़न, पर - हिंसाचारा * कबहुँ न पर - धन - हरन विचारा
सरनागत - रिपु अभय प्रमाना * बिन अपराध हरन जनि प्राना
पूजि देव - द्विज पालहु धर्मा * जप-तप-यज्ञ विहित शुभ कर्मा

दो० नित इन - सुफल सुपावनी, कीरति लहहु ललाम ।
सज्जन-चित, सब-जनन प्रति, दया राखि, हे राम ! ॥ २ ॥

दुखदायी नर रत - परनारी * करनी सरिस दण्ड अधिकारी

आज्ञा मात्र सुमंत्र चलिल शीघ्रगति * श्रीरामेरे आनिल येखाने महीपति
कतदूरे रथ हैते नामिलेन राम * पितार चरणे पड़ि करिल प्रणाम
आशीर्व्वाद करिलेन राजा श्रीरामेरे * सिंहासने बसालेन हरिष अन्तरे
पिता-पुत्र बसिलेन सिंहासनोपरे * पात्र मित्र सकले वेष्टित नृपवरे
नक्षत्र-वेष्ठित येन पूर्ण शशधर * सेइमत शोभित हइल रघुवर
पुत्रेरे शिखान पिता सभा-विद्यमान * राजनीति धर्म्म आर विविध विधान
प्रथमा रानीर तुमि प्रथम नन्दन * भूपति हइया कर प्रजार पालन
लोकेर आदाश तुमि शुनिबे यतने * तोमार महिमा येन सर्व्वत्र बाखाने
राजनीति - धर्म तुमि शिख सावधाने * याहाते महिमा तव बाड़े दिने दिने
देखह परेर यदि परम सुन्दरी * ना देखिह से सबारे ऊर्द्धदृष्टि करि
राजा यदि परदार करे व्यवहार * आपनि से मजे पापे, मजाय ससार
राजा ह'ये पीड़ा दिले हय महापाप * परलोके नरकेते पाय महाताप
परहिंसा परपीड़ा ना करिह मने * कभू ना करिह राम लोभ परधने
शरण लइले शत्रु कर परित्राण * अपराध विना कारो ना लइओ प्राण
तप - जप धर्म - कर्म करिबे विहित * ना हइओ देव द्विज - भक्तिते रहित
यज्ञ दिते बहु यश करिबे सद्व्यय * सर्व्वजने दयालु हइओ सदाशय
परदार परपीड़ा करे जेइ जन * शास्त्र अनुसारे तारे करिबे शासन

---

१ फ़र्याद, नालिश २ दृष्टि ।

लखि अपराध, दण्ड सुविचारा * नृपहिं न दोष शास्त्र अनुसारा
दुखियन दया, सनेह अनाथा * सरिस न पुन्य अन्य रघुनाथा!
गुरु - द्विज - देव भक्ति परितोषू * रत सब-हित, कहुँ दुःख न रोषू
धर्म - नीति - सिख भूप बखानी * इत, हिय मुदित कौशलारानी
सुत - कल्यान हेतु बहु दाना * अन्न - वस्त्र - धन वितरन नाना
विप्र - ब्रह्मचारी - मुनि - चारन * सबन विविध सन्मान सुहावन
जेते लोक रानि जँह पाये * दियेउ बुलाय दान मनभाये
जमघट - सबन; जहाँ नरनाहा * रामतिलक सुनि भाग सराहा
कोउ गावत, कोउ नृत्य विभोरा * 'क्लेश न रामराज', चहुँ सोर[1]
राम - दरस हित, हुलसत आये * तिन सब अवध मान - सुख पाये
मातु - दरस हित, जननी - धामा * चले ललकि हिय पुनि श्रीरामा

श्री रामराज्याभिषेक का अधिवास

गत सुखरैनि अरुन - छवि छाई * पितु - ढिग मुदित चले रघुराई
भक्तिभाव बन्देउ पितु - चरना * दशरथ - मुख पुनि आशिष - वचना
लीन बिठाय सिंहासन भूपा * दोउ - हिय हर्ष - उमंग अनूपा
दशरथ कहेउ, ध्यान, सुत! दीजै * धर्म - कर्म चित दै, सुनि लीजै

अपराध - मत दण्ड क'रो सावधाने * दोष नाहि राजार से शास्त्रेर विधाने
दु:खित अनाथ राम, यदि केह हय * ताहारे पालिले पुण्य, सर्व्व शास्त्र कय
देव - गुरु - ब्राह्मण तुषिबे भक्तिमने * देख, सर्व्वजन येन दु:ख नाहि जाने
राजनीति - धर्म्मराजा शिखान रामेरे * शुनिया कौशल्या रानी हरिष अन्तरे
रामेर कल्याणे रानी करे नानादान * स्वर्ण-रौप्य अन्न-वस्त्र सहस्र प्रमाण
मुनि ब्रह्मचारी यत भट्ट - विप्रगण * सवाकारे देन रानी नानाविध धन
यत - यत लोक आछे यत - यत स्थाने * सबारे आनिया रानी तोषे नानाधने
आइल यतेक लोक राज - विद्यमाने * रामचन्द्र राजा हबे शुनि भाग्य माने
केह नाचे केह गाय आनन्द विशेष * राम राजा हइले ना हबे कारो क्लेश
यत यत लोग आछे अयोध्या नगरे * रामेर निकटे जाय हरिष अन्तरे
सकलेर समादर करिया समान * जननी - दर्शने राम करेन पयान
मातृगृहे उपस्थित मने कुतूहली * अयोध्याकाण्डेते गान प्रथम शिकलि

श्रीरामेर राज्याभिषेके उद्योग ओ अधिवास

सुखेते वञ्चिया रात्रि उदित अरुणे * आनन्दे गेलेन राम पितृ सम्भाषणे
भक्तिभरे पितार बन्देन श्रीचरण * रामेरे कहिल राजा शुभाशीर्व्वचन
सिंहासने बसाइल राजा श्रीरामेरे * पिता पुत्र उभयेर आनन्द अन्तरे
राजा बलिलेन, राम कर अवधान * यत कर्म करियाछि, कहि तव स्थान

---

१ शोर कुलाहल।

दो० यज्ञ - श्राद्ध - तर्पन विहित, देव - पितर - ऋन हेत ।
छत्र धारि, पुनि प्रजागन, पालहु नेह समेत ॥ ३ ॥

सुफल यज्ञ, तुम सम सुत पाये * राजनीति, नृपधर्म निभाये
जीवन साँझ, वृद्ध मम गाता * कखन[1] मरन ! कहि जात न ताता
तुमहिं राजपद देन सुहावा * पालहु प्रजा, मनहिं अति भावा
आज घरी, सासन तव माथा * करहु दमन - रिपु, मित्र - सनाथा
पै, निसि सपन लखेउँ उत्पाता * उदित धूम[2] नभ उल्का पाता
पूनम चन्द - ग्रहण जगरीती * अमा - ग्रास - ससि[3], कस विपरीती
असगुन बहु जंजाल कुसपना * गर्दभ चढ़ि, दच्छिन दिसि गमना
मृत्यु निकट जनु, असुभ बिसेखी * जीवन सफल तिलक तव देखी
अनुज भरत - हिय मर्म न जाना * तिन न राजपद तदपि विधाना
जेठ बराय[4], न लघु - अधिकारा * ताते राम सम्हारहु भारा[5]
इत-उत रिपु तव, राम ! अनेका * अपन - बिरान, न सहज विवेका
को केहि घरी बवण्डर - कारन * भल, मम - रहत छत्र करु धारन
भोर 'पुष्य', तव सासन - साजू * सुभ अधिवास 'पुनर्वसु' आजू
पितु सिख सुनि, पुनि पाय बिदाई * अन्तःपुर गमने रघुराई
कौशल्या सह - सखिन बिराजा * मुदित सातशत रानिसमाजा

यज्ञ करि तुषिलाम यत देव गणे * तुषिलाम पितृलोके श्राद्ध ओ तर्पणे
राजा ह'ये करिलाम लोकेर पालन * पुत्र तोमा हेन पाइ यज्ञेर कारन
पालिलाम राजनीतिधर्म्म अनिवार * तोमारे करिब राजा भावियाछि सार
वृद्ध हइलाम आमि, मरिब कखन * तोमारे करिब राजा पाल सर्व्वजन
आजि हैते तोमारे दिलाम राज्यभार * स्वपक्ष पालन कर विपक्ष संहार
किन्तु आज कुस्वपने देखेछि उत्पात * आकाश हइते भूमे हय उल्कापात
पूर्णिमाय चन्द्रग्रास शास्त्रेते विहित * देखि अमावस्याय ए अति विपरीत
इत्यादि जञ्जाल आमि देखिनु स्वपने * गर्द्दभेर पृष्ठे चड़ि गेलाम दक्षिणे
कुस्वप्न देखिनु आजि, निकट मरन * राजा तुमि हओ तबे सफल जीवन
कनिष्ठ भरत, तार ना जानि आशय * तारे राज्य दिते कभु उपयुक्त नय
ज्येष्ठ - सत्वे कनिष्ठेर नाहि अधिकार * तुमि राजा हओ राम कर अंगीकार
कत-शत शत्रु तव आछे केतस्थाने * केवा शत्रु केवा मित्र केवा ताहा जाने
आमि विद्यमाने धर छत्र नव - दण्ड * कि जानि आसिया पाछे के हय पाषण्ड
आजि अधिवास पुनर्व्वसु सुनक्षत्र * पुष्य काल हइबे, धरिबे दण्ड - छत्र
एतेक बलिया रामे दिलेन बिदाय * अन्तःपुरे रामचन्द्र गेलेन तथाय
बसेछेन कौशल्या वेष्ठिता सखी वृन्दे * सातशत रानी तथा आछेन आनन्दे

१ किस क्षण २ धूम्रकेतु ३ अमावस्या में चन्द्रग्रहण ४ टाल कर ५ राज्यभार ।

सविधि देव - पूजन - रत रानी * राम - प्रवेस निरखि हुलसानी

दो० बन्दि मातु - पद, जोरि कर, बहुरि दण्डवत कीन।
कहेउ कथा रघुबर सकल, अखिल राजु पितु दीन ॥ ४ ॥

तिलक बिहान[1], आजु अधिवासू * मोहिं देन पद, सबन हुलासू
सुभ संवाद देन तव तीरा * आयेउँ मातु, कहेउ रघुबीरा
पूजहु देवि सकल विधि जननी ! * रहैं सदा मम - मंगल - करनी
सुनि उर मुदित, मातु अनुरागी * बहु सुत - कुशल मनावन लागी
चिरञ्जीव सुत, सब सुख - खानी * लहहु अनुग्रह शंभु - भवानी
तप अति कठिन महेस, मनावा * उदर सरिस तव सुत मैं पावा
सुभ छन तव जन्मत मम धामा * राजमातु पद पायेउँ, रामा !
रानि सुमित्रा मम रसपागी * लखन तासु तव अति अनुरागी
तव कल्यान, सदा तव चिन्तन * सुहृद अनन्य सुमित्रानन्दन
कौशल्या बखान[2] लवलीना * अन्तःपुर लछिमन पग दीना
मातहिं किय कर जोरि प्रनामा * हँसि अनुज तन बिहँसे रामा
समुद सप्रेम अनुज लपिटाने * बोले बचन सुधा रस साने
मन प्रति नेह अतुल तव धीरा * बिलग न काउ, दोउ एक शरीरा
परम सखा ! मम सिर यदि राजू * दोउ मिलि तासु सम्हारहिं काजू

देवपूजा करे रानी नाना उपहारे * हेनकाले श्रीराम गेलेन तथाकारे
रामेर देखेन रानी सहास्य - बदन * मायेर चरण राम करेन बन्दन
मायेर सम्मुखे दाँड़ाइया रघुनाथ * कहेन सकल कथा करि जोड़ हाथ
आमेरे दिलेन पिता सर्व्व राज्यखण्ड * आजि अधिवास कालि पाव छत्रदण्ड
मोरे राजा करिते सबार अभिलाष * शुभ वार्त्ता कहिते आइनु तवपाश
नाना उपहार माता, कर इष्ट-पूजा * मम प्रति तुष्टा येन हन दशभुजा
एतेक शुनिया रानी हरषित - मन * रामेर कल्याण करिलेन अगनन
कौशल्या बलेन, राम, हओ चिरजीव * तोमार सहाय हौन पार्व्वती ओ शिव
अनेक कठोरे आमि पूजिया शंकरे * तोमा हेन पुत्र राम, धरिनु उदरे
शुभक्षणे जन्म निला आमार भवने * राजमाता हइलाम तोमार कारने
सुमित्रा सपत्नी से आमारे अनुरक्त * तार पुत्र लक्ष्मण तोमार बड़ भक्त
तोमार कुशल बहु चाहे सर्व्वक्षन * अति हितकारी तव सुमित्रानन्दन
एतेक कौशल्यादेवी कहिलेन कथा * हेनकाले श्री लक्ष्मण आइलेन तथा
लक्ष्मणेरे देखिया हासेन रघुनाथ * कौशल्यारे वन्देन लक्ष्मण जोड़ हाथ
लक्ष्मणेरे प्रेमभरे दिया राम कोल * कहेन सहास्य मुखे कत मिष्ट बोल
मम भक्त भाइ तुमि परम - सुस्थिर * तुमि आमि भिन्न नहि एकइ शरीर
आमार हितैषी तुमि, यदि पाइ राज्य * उभयेते मिलिया करिब राजकार्य्य

१ कल सुबह २ प्रशंसा मे।

कहि इमि वचन, विदा पुनि लीन्हा * रानिन सकल सुभासिस दीन्हा
राम-लखन पितु ढिग; लखि भूपा * कहेउ आजु सुभघरी अनूपा
दो० नारद आदि बशिष्ठ जे, सबै राज - रुख पाय!
आयोजन रघुवर - तिलक, करैं विविध हरषाय ॥ ५ ॥
अवध निमंत्रित बहु नृप - वृन्दा * राम - राज सुनि, सबन अनन्दा
विद्याधरी, यूथ - गंधर्वा * गीत - वाद्य - नर्तन - रत सर्वा
ललित घोष 'जय' चहुँ इकसंगा * उड़ें ध्वजा लख - लख बहु रंगा
हय, गज, रथ, सारथि, बहु बाजा * सदल नृपन बहुरंग समाजा
अथ अधिवास मुनिन मन दीन्हा * रामहिं सुमिरि वेद-ध्वनि कीन्हा
ढिग - ढिग नरियल सगुन सुपारी * पुरबालन[1] घृत - दीप सवाँरी
विमल रतन चहुँ झलमलकारी * ध्वजा - विरञ्जित सजीं अँटारी
रतन - जटित शोभित परिधाना * अवध - प्रजा उल्लास महाना
रत - रसरंग लोक दिग्देसा * जुरे अवध, हिय हर्ष विसेसा
उत्सव - दरस सुरन मन कीना * निज - निज बाहन नभ - आसीना
शिव, विरञ्चि, सुरगन, सुरराजू * अखिल भगवती देवि - समाजू
ते अधिवास सकौतुक लखहीं * वर्षन - सुमन गगन सों करहीं

एतेक बलिया राम हइला बिदाय * आशीर्व्वाद करिल सकल रानी ताँय
गेलन पितार काछे श्रीराम - लक्ष्मण * राजा बले, आइस राम, हैल शुभक्षण
वशिष्ठ नारद आदि आइल सेस्थाने * आज्ञा पेये आयोजन करे सर्व्व जने
निमन्त्रण करिया आनिल राजगन * रामराजा हवेन सकल हृष्टमन
विद्याधरी नाचे, गाय गन्धर्व्व संगीत * चतुर्भिते जयध्वनि शुनि सुललित
लक्ष - लक्ष पताका उड़िछे नानारंगे * नाना देश हैते राजा आसे सैन्यसंगे
नाना रगे रथ - रथी हस्ती घोड़ा साजे * नानाजाति वाद्य शुनि नानादिके बाजे
अधिवास करिते आइल ऋषिमुनि * रामजय बलिया करिछे वेद - ध्वनि
नारिकेल गुवाक रोपिल सारि - सारि * घृतेर प्रदीप ज्वाले प्रजार कुमारी
नानारत्ने निर्म्माइल लक्ष - लक्ष घर * विविध पताका उड़े चालेर उपर
पृथ्वी ते आछे यत नाना उपहार * ताहा आनि लक्ष-लक्ष भरिल भाण्डार
नाना रत्ने शोभित बसन परिहित * अयोध्यार यत लोक सबे आनन्दित
आइल देशेर लोक अयोध्यानगरे * केह नाचे केह गाय सानन्द अन्तरे
अधिवास देखिते आइल देवगन * अन्तरीक्षे रहे सबे चापिया बाहन
ब्रह्मा - शिव - शक्र आदि यत देवगन * भगवती आदि करि देवी अगनन
अधिवास देखिते आसिया सर्व्वजन * कौतुकेते पुष्पवृष्टि करेन तखन

१ नगर की कुमारियाँ।

देखि मुनिन मन नायेउ माथा * पाद - अर्घ्य पूजेउ रघुनाथा
कहेउ बशिष्ठ, राम - अधिवासा * होय उचित जिमि शास्त्र प्रकासा
छत्र - दण्ड पितु - रहत[1] सम्हारी * सुवन ययाति नहुष[2] अनुसारी
पुनि स्वस्तयन बशिष्ठ उचारा * भुवन राम - जयघोष प्रसारा

सो० निरखि पूर्ण अधिवास, पुलकि, चले सुरगन सरग।
नत-गीत-रत-रास, अवध अखिल वनिता सकल ॥ ६ ॥

राम सिया उपवास, हुलासा * चन्दन चर्चित अंग सुवासा
धन-संपदा सबन लहि दाना * कौतुक लखि गृह कीन्ह पयाना
शुभ मुहूर्त पूरन अधिवासा * नृप सन हरषि बशिष्ठ प्रकासा
सुनि बिहँसे, हिय प्रमुदित भूपा * द्विजन तृप्त किय, दान अनूपा
सन्ध्या विगत नखत नभ छाये * लखि अधिवास, सकल गृह आये
तन पट दिव्य, गंध चहुँ छाई * सुरभि-सुमन, सुख निद्रा आई
निसा छीन रवि - बैभव जागा * मन अति मोद, शयन सब त्यागा
सुनि अभिषेक - राम सुखकारी * विह्वल अति सुर-मुनि नर-नारी

श्री रामचन्द्र की राज्यप्राप्ति पर सब प्रफुल्लित

छं० हय-गज-रथ साजन, बहु बिधि बाजन, मुनिगन जय-जय करहीं।
धनवन्त-भिखारी, चहुँ जयकारी, उर लावत, सुख लहहीं ॥

ऋषिगणे देखिया उठिया रघुनाथ * पाद्य अर्घ्य दिया पूजे करि प्रनिपात
बशिष्ठ बलेन, राम, शास्त्रेर विहित * तव अधिवास आमि करि जे उचित
पितृ विद्यमाने धर दण्ड आर छाति * नहुष राजार येन तनय ययाति
बशिष्ठ करेन सुमंगल वेदध्वान * अखिल भुवने रामजय - शब्द शुनि
अधिवास रामेर हइल समापन * आनन्दे देखिया स्वर्गे गेल देवगन
जय - जय हुलाहुलि करे रामागन * नृत्य - गीते आनन्दित अयोध्याभुवन
राम - सीता उपवासी रहे दुहजन * चन्दने चर्च्चित अंग सकौतुक मन
नाना रत्न धन सबे दिलेक यौतुक * निजालये गेल सबे देखिया कौतुक
बलेन बशिष्ठ मुनिराजार सदने * अधिवास रामेर हइल शुभक्षने
शुनिया हासेन राजा आनन्दित मने * नानारत्न दाने राजा तुषिल ब्राह्मणे
हइल बेलार शेष नक्षत्र गगने * अधिवास देखि घरे गेल सर्व्वजने
सुगन्धि - पुष्पेर गन्ध बहे चतुर्भित * देव तुल्य वेश परि सबाइ निद्रित
रात्रि अवसान हय सूर्य्येर उदय * शयन त्यजिल सबे सानन्द हृदय

श्रीरामचन्द्रेर राज्य-प्राप्तिते सकलेर आनन्द

रथ रथी घोड़ा साजे, नाना रंगे वाद्य बाजे, मुनि सब करे जयध्वनि।
जय-जय हुलाहुलि, करे सबे कोलाकुली सर्व्व लोक कि दुःखी कि धनी ॥

१ पिता की मौजूदगी में २ नहुष राजा के पुत्र ययाति के समान।

शिशु-नारि सुहासिन, सुमन सुवासिन, घर-घर लखत प्रमोदा।
सुरवसन सवाँरी, पुरवरनारी, नाच - गान रत - मोदा॥
दुख - क्लेश नसावन, सबन सुहावन, राम - तिलक सुखकारी।
त्रिभुवन - प्रिय रामा, पावन नामा, मुक्तिदेन भयहारी॥
बैकुण्ठ निवासी, भार विनासी, राम विष्णु अवतारा।
सब जन सुख पावैं, अस मन आवैं, चिदानन्द तन धारा॥
सब सोक भुलाने, आनँद साने, अखिल अवधपुर वासी।
सुर-पट-आभूषन, दिव्य सोह तन, विह्वल चहुँ सुखरासी॥
पुनि-पुनि गुन गावा, जय-जय छावा, वनितन उपज उमंगा।
बनि रघुपति-दासी, सब दुख नासी, लहैं विविध सुखसंगा॥
अमरित घट तुल्या, काण्ड अयुध्या, श्रवन न पातक योगू।
कृतिवास बखाना मानस गाना, अन्त स्वर्ग-सुख भोगू॥

भरत को राज्य और राम को बनवास दिलाने की मन्थरा की सलाह

आम्रसार युत सुवरन झारी ❋ यथा शास्त्र सब विधि शुभकारी
मञ्चन रतन - झालरी सोहा ❋ पथ बहुरंग पताकन मोहा
घर-घर कनक-कलश मन लोभा ❋ रत्नावली चौतरन शोभा

सब लोक आनन्दित, गन्ध - पुष्पे सुशोभित, आमोद प्रमोद सब करे।
स्वर्गपुरी तुल्य वेष, अयोध्यार सर्व्वदेश, नाचे - गाय हरिष अन्तरे॥
सबे भावे रघुपति, हइबेन महीपति, घुचिल सबार आजि क्लेश।
ना हइबे दुःख शोक, आनन्दित सर्व्वलोक, निस्तार पाइल सर्व्व देश॥
घुचिल सकल भय, सबाइ आनन्दमय, राम नाम पाइबे निष्कृति।
राम विष्णु अवतार, लवेन सबार भार, बैकुण्ठेते करिवे बसति॥
एतेक भाविया मने, आनन्दित सर्व्वजने, आनन्दे पासरे - आपना।
अयोध्यार यत लोक, भुलिल सकल शोक, आनन्दे पूरित सर्व्वजन॥
नाना वस्त्र अलंकार, परिधान सबाकार, रूपे-वेशे देव अवतार।
आनन्दे विह्वलप्राय, राम गुण सबे गाय, जय - जय करे बार - बार॥
अयोध्या नगरवासी, बले सब दास-दासी, मने ह'ये अति - हरषित।
घूचिबे सबार दुख, भुञ्जिबे विविध सुख, एत बलि सबे आनन्दित॥
मधुर अयोध्याकाण्ड, शुनिते अमृतभाण्ड, यात हय पापेर विनाश।
रामायण जेइ शुने, कृत्तिवास ओझा भने, हय अन्तकाले स्वर्गवास॥

भरतके राजा करिया राम के बने पाठाइते कैकेयीर प्रति कुब्जीर मन्त्रणादान

पूर्ण स्वर्ण कुम्भेर उपरे आम्रसार ❋ शास्त्रेर विहित सब मंगल आचार
नाना रत्ने निर्म्माइल टुगी शत - शते ❋ नाना वर्ण पताका उड़िछे प्रतिपथे
प्रति घरे शोभा करे सुवर्णेर झारा ❋ नाना - रत्न लक्ष-लक्ष निर्मित चौतारा

रत्न - जटित सुरपुरी सरूपा * रम्य सकल छबि सुभग अनूपा
सुरपुर यथा सकल छबिखानी * मंगलपुरी अवध दरसानी
भावी अमिट, न मेटनहारा * कब खसि परै विपत्ति-पहारा
शाप अप्सरा दुन्दुभि पाई * लै भुइँ जनम मन्थरा आई
कूबर तासु काँस - घट रूपा * कुटिल, क्रूर कर्मिणी अनूपा

दो० कैकयि - दासी मंथरा, कुअँर भरत कै धाय।
राम विपति कर मूल सो, रची विरञ्चि बनाय ॥ ७ ॥

नृपति, विवाह, लही यह दासी * राम - तिलक जिन ऊबासाँसी
कुत्सित रूप स्वभाव कराला * कूबरि-बास, तासु घर घाला
जनम तासु रघुपति-दुख हेतू * कैकयि कुयश, मरन-नृपकेतू
जेहि मारग दसकंध निपाता * जानि मन्थरहिं रचेउ विधाता
चकित मंथरा बाहेर आई * लखेउ मुदित पुरजन समुदाई
राम-राजु सुनि पुलकित लोका * अण्टा चढ़ि सो चेरि विलोका
पुनि तँह दासिन-जमघट हेरी * चेरिन टेरि, बुझावत चेरी
कस उल्लसित नगर जनवृन्दा * कौशल्या हिय अमित अनन्दा
राम - मातु कर दान महाना * संगिनि ! सकल करौ अनुमाना
कहेउ चेरि तव मति बौरानी * राम-तिलक सुभघरी न जानी

नानारत्नेनिर्मित आगार सारि - सारि * जिनिया अमरावती रम्यवेशधारी
इन्द्रपुरे येमन सबार रम्य वेश * तेमनि मंगलयुक्त अयोध्यार देश
दैवेर निर्व्वन्ध कभु ना हय खण्डन * के जाने पड़िबे आसि प्रमाद कखन
पूर्व्वे जन्मे छिल ये दुन्दुभि अप्सरा * जन्मिल से कुब्जीह, ये नामेते मन्थरा
तार पृष्ठे कुब्ज येन भरन्त डाबरी * कुटिला कुरूपा कुब्जी क्रूरकर्मकारी
कैकेयीर चेड़ी भरतेर धात्रीमाता * रामेर दुःखेर हेतु सृजिल विधाता
दशरथ पेयेछिल विवाहे से चेड़ी * राम राजा हन देखि करे घड़फड़ि
आकृति - प्रकृतिते कुत्सित देखितारे * सर्व्वनाश करे कुब्जी, थाके यार घरे
रामेर दुःखेर हेतु तार उपादान * राजार मरण, कैकेयीर अपमान
मरिबे रावन याते विधाता से जाने * विधाता सृजिल तारे एइ से कारणे
आचंवितै कुजी चेड़ी आइल बाहिरे * आनन्दित प्रजा सब देखिल नगरे
टगेर उपरे उठि कुजी ताहा देखे * राम राजा हवे, महा हरषित लोके
चेड़ी - चेड़ी एकटाइ टुंगीर उपरे * कुंजी - चेड़ी जिज्ञासिल इतर चेड़ीरे
कि - कारणे हरपित अयोध्या नगर * कि हेतु कौशिल्या रानी हरिष अन्तर
कि जन्य रामेर माता करे बहुदान * सबे मिलि तोमारा कि कर अनुमान
आर चेड़ी बले, तुमि ना जान मन्थरा * रामेरे करिते राजा भूपतिर त्वरा

आयु समीप निरखि, नृप भावा * तुरत राम - अभिषेक सुहावा
दासी - वचन मंथरहिं शूला * बज्रघात सम हिय - प्रतिकूला
झनकि कैकयिहिं कोसि[1] कुदासी * लपकी, विधि अच्छर अविनासी
केहि संकोच, कुबुद्धि अबूझी * भल अनभल निज सुत नहिं सूझी
भरत बराय, राम हित राजू * दुख, अपमान, मरन तव साजू
राम वनगमन, भरतहिं राजू * नृप वर माँगि सफल करु आजू

सो० बञ्चित रघुपति-राज, निज सुत सासन सकल तव।
सकल रानि-सरताज, राजमातु-पद लहहु पुनि ॥ ८ ॥

कैकइ कहइ — धर्मसुत रामा * विन अपराध आचरब वामा
राम सदा मम आदर करहीं * तिन अनहित केहि विधि अनुसरहीं
राम जेठ सुत, ज्ञानगुनागर * सासन उचित सबन सुखसागर
सब बिधि राम छत्र-अधिकारी * तोष, विपुल धन - मंगलकारी
राम-राज सुख भरत समाना * राममातु मम रखिहैं माना
खुसखबरी, मम गौरव जागा * देहुँ इनाम, चेरि ! मुँहमांगा
रामहिं राजु सबन मुदकारी * सो तजि कस विषाद तैं धारी
अमित रामगुन रानि बखाना * सोचति किमि चेरिहिं सन्माना

राजार निकट मृत्यु गनिया असार * एइ हेतु रामेरे दिलेन राज्यभार
एमत शुनिल कुञ्जी से चेड़ीर मुखे * बज्राघात हय येन मन्थरार बुके
विधातार बाजि केवा करये खण्डन * कैकेयीरे गालि दिते करिल गमन
कैकेयी आपन घरे छिलेन शयने * सत्वर मंथरा गिया कहिल से खाने
निर्बुद्धि कैकेयि शुये आछ कोन लाजे * तोमार भरत आजि मनोदुःखे मजे
अपमाने मरिबि तुइ शोकेर सागरे * भरते एड़िया राजा रामे राजा करे
भरतेरे राजा कर राख निज पन * राजारे कहिया रामे पाठाओ कानन
राम राजा हइले किसेर अधिकार * भरत हइले राजा सकलि तोमार
एके त राजार तुमि हओ मुखयरानी * भरत हइले राजा, राजार जननी
कैकेयी बलेन, राम धार्म्मिक तनय * कोन दोषे रामेर करिब अपचय
आमार गौरव राम राखे अतिशय * करिते रामेर मन्द उपयुक्त नय
गुणेर सागर राम बिचारे पण्डित * पितृराज्य ज्येष्ठ पुत्र पाइते उचित
राम राजा हइले सन्तुष्ट सर्व्वजने * सवाकारे तुषिवेन राम बहु धने
भरतेरे राज्य राम दिवेन आपनि * राखिबेन आमार गौरव बड़रानी
राम रजा हइले आमार बहुमान * शुभ वार्त्ता कहिलि, कि दिव तोरे दान
राम राजा हइबेन हृष्ट सर्व्वजन * हरिषे बिषाद कुजी कर कि कारन
यत गुन रामेर, कैकेयी ताहा जाने * मन्थराके दान दिते चिन्ते मने - मने

१ दुर्वचन कह कर।

तन-भूषन निकारि कैकेई * कर-मन्थरहिं नेह भरि देई
निरखि मौन, पुनि दीन दिलासा * रामराज तब पुरवउँ आसा
फरकत ओंठ कम्प उत चेरी * कुवचन कहत कैकयिहिं हेरी
अभरन झटकि निहारति रानी * कोपपुञ्ज दृग बोलत बानी
अहित दुखी, तव हित मम प्रीती * मम मित्र तबहुँ तुमहिं विपरीती
सौति-सुवन नृप ! लखि हर्षानी * तुमसों मनु कौशिला सयानी[1]
सुतहिं रहत पति, राजु दिवावा * दासी सौति, योग तब आवा
सिय रानी ! बढ़िरानि सुपासा * बनि पछिलगू[2] कैकयिहि बासा

दो० यदपि रानि - सरताज तुम, रामहिं राज दिवाय ।
राममातु - पतिदर्प लखि, उर सालत अधिकाय ॥ ६ ॥

भरत ओट[3] नृप मातुलगेहा * नृपहिं न दोष समान सनेहा
सौति-विभव-सुख सौतिन भावा * अनहोनी ! सुनि निरखि न पावा
लालि-पालि किय भरत सयाने * सो सुत आजु विमातु - ठिकाने
बिलग न राम लखन दोउ भाई * करइँ राजु - सुख, भरत बिहाई[4]
लखि तव तनय - पराभव, रानी ! * मम हितबानि न तुमहिं सुहानी
भरतहिं राजु न अवधनिवासू * दुर्लभ तव मुख, सतत प्रवासू
रुचिर रानि ! तौ बाँधहु साजू * राम गमन वन, भरतहिं राजू

अंग हैते अलंकार खुलि शशव्यस्ते * आदरे कैकेयी देन मन्थरार हस्त
कैकेयी कहेन, कुजी, ना कर उत्तर * राम राजा हैले धन दिब त विस्तर
कुपिना मंथरा नेड़ा, दुइ ओष्ट काँपे * कैकेयिरे गालि पाड़े अतुल प्रतापे
हाथ हैते अलंकार छड़ाइया फेले * दुइ चक्षु रांगा करि कैकेयीरे बले
कैकयि, तोमार दुःख आमार अन्तरे * बलि हित बिपरीत बुझाओ आमारे
सपत्नी तनय राजा तुमि आनन्दिता * कौशल्या तोमार चेये बुझिते पण्डिता
निज पुत्रे राजा करे स्वामीर सोहागे * थाकिबा दासीर न्याय कौशल्यार आगे
थाकिल कौश याराणी सीतार सम्पदे * दाँड़ाइते नारिबि सीतार परिच्छदे
कौशल्या जिनिले तुमि सोहागेर दापे * निज पुत्रे राजा करे सेइ मनस्तापे
भरत थाकिल गिया मातामह घरे * राजार कि दोष दिब ना देखे ताहारे
सतिनेर आनन्देते सानन्दा सतिनी * हेन अपरूप कभु ना देखि ना शुनि
लालिया पालिया बड़ करिनु भरते * मातापुत्रे पड़िलासे कौशल्यार हाते
श्रीराम-लक्ष्मण दुइ एकइ शरीर * उभये करिबे राज्य भरत बाहिर
तबे त भरत तोर हइल वञ्चित * हितकथा बलिलाम, बुझिस अहित
भरत ना पेये राज्य ना आसिबे देशे * ना देखिबे तव मुख थाकिबे प्रवासे
मन्त्रणा करिया रामे पाठायो कानन * भरतेरे राज्य देह, यदि लय मन

---

१ चतुर २ पिछलगू ३ निगाह से दूर ४ त्याग कर ।

कूबरि - बचन सुबुद्धि विनामा * सुनि कुमंत्र मन उपजी आसा
सबन - सुरासुर राम पियारे * अकथ त्रिघिन कूबरि तहँ डारे
मैं अबोध, मम कण्टक रामा * सुहृदि ! सदा तैं आवति कामा
भरत विदेश, राम अभिषेकू * करि कछु जतन मिटावइ सोकू
गुननिधान रघुपति पितुप्राना * तिन वनगमन न जोग लखाना
भल न राम पावइँ अधिकारू * निरपराध किमि देस - निकारू
भरत विदेस, सुवन-नृप चारी * बाटहिं राजु अंस - अनुसारी
राम जेठ ! जनि भूलु सयानी * किमि तव मति सोचति बौरानी
राम गिरा - मधु सबन सुखारी * नृप किमि तिनहिं करइँ बनचारी

दो० सहज न सामन भरत हित, बहुरि राम बनवास ! ।
केहि विधि ? दासी ! जतन कछु करि पुरवइ मम आस ॥ १० ॥

कहँउँ उपाय, रानि सुनि लीजै * भरतहिं सुलभ राजपद कीजै
कथा पुरातन सुनु धरि ध्याना * अजहुँ याद भल, करहुँ बखाना
संबर असुर युद्ध जेहि काला * क्षत - विक्षत तन विषम भुवाला
परिचर्या तव सुखद निहारी * हरषि भूप वर-वाचा हारी
पुनि विषहरी[1] ग्रसित नरपाला * मुख घृत चूसि मिटायेउ ज्वाला

शुनिया कुब्जीर कथा कैकेयीर आश * कुब्जीर बचने तार हैल बुद्धिनाश
राम हेतु देव दैत्य आदि लोक सुखी * प्रमाद पाड़िल चेड़ी कोथाओ ना देखि
कैकेयी बलेन कुजी तुमि हितैषिनी * राम मम मन्दकारी किछुइ ना जानि
भरत प्रवासे, राम राजा हबे आजे * केमने अन्यथा करि युक्ति बल कुब्जी
नृपतिर प्राण राम गुणेर सागर * केमने पाठाब तारे बनेर भितर
घरेते राखिब वरं राज्य नाहि दिब * कोन दोषे श्रीरामेरे बने पाठाइब
चारि पुत्र आछे तार भरत विदेशे * अंश अनुसारे भाग हइबेक शेषे
ज्येष्ठ भाइ आछे तार कर विवेचना * कह देख कुजी तुमि कर कि मंत्रणा
सबे तुष्ट श्रीरामेर मधुर बचने * हेन रामे केमने पाठाबे राजा बने
भरत पाइबे राज्य ना देखि उपाय * युक्ति बल भरत कि रूपे राज्य पाय
कि प्रकारे रामेर हइबे बनबास * भरतेरे राज्य दिया पुराइब आश
कुब्जी बले युक्ति चाह, युक्ति दितपारि * हेन युक्ति दिब ये भरत राजा करि
पूर्व्व कथा सकल आमार आछे मने * से सकल कथा कहि, शुनि सावधाने
पूर्व्वे युद्ध करिल ये दानव सम्बर * सेइ युद्धे महाराज क्षत कलेवर
ताहाते करिले तार तुमि सेवा - पूजा * सुस्थ हये वर दिते चाहिलेन राजा
आर बार राजार ये हइल विस्फोट * ताप दिते मुखेर ठेकिल दुइ ठोंट

१ जहरीला अंगूठा का फोड़ा ।

रक्त - पूयमय तव मुख देखी * सहन-शक्ति तव निरखि विशेषी
तव सेवा नृप-रोग नसावा * पुनि वर देन भूप मन भावा
जब जब धरी देन वर आई * तुम नरपतिहिं कहेउ समुझाई
नाथ ! मंथरा जब मन लावै * मम वर उभय धरोहरि[1] पावै
पुनि बरनेउ मोहिं सकल कहानी * अजहुँ याद, तुम भले भुलानी
राम - राज - पद धरी समीपा * तव गृह आवन चहत महीपा
निराभरन भूषन बिथराई * तजि पट, वसन मलिन तन लाई
अस्त-व्यस्त चहुं, विन आहारा * अवनि पलोटहु[2] कोपागारा
यहि विधि निरखि विकट तव रूपा * जस-जस आतुर पूँछहिं भूपा
तस-तस मौन, रुदन करु रानी * धीरज देहिं नृपति भय मानी
कोप - हेतु पूँछहिं बहु भाँती * अवसर ताकि वसूलहु थाती[3]

दो० कथा पुरातन स्मरन, नृपहिं न कछु सन्देहु ।
वचन बाँधि, प्रन सत्य करि, मांगि युगुल वर लेहु ।। ११ ।।

भरतहिं राज, राम वनवासू * यहि विधि दोउ वर करहु प्रकासू
चौदह वर्ष राम वनचारी * छिति चहुँ भरत विभव विस्तारी
रुख लखि नृप तव, प्रान गवावैं * राम गमन वन दुलुखि[3] न पावैं
अति अनुराग अतुल तव प्रीती * फिरहिं वचन प्रन करि, न प्रतीती[4]

रक्त पूय यतेक लागिल तव मुखे * तव मत दुःख राजा देखिल सम्मुखे
तोमार सेवाय राजा पाइल निस्तार * वर दिते चाहिल तोमारे पुनव्वार
तखन बलिल तुमि राजार गोचर * कुञ्जी जबे वर चाह तबे दिओ वर
दुइबारे दुइ वर थाक तव ठाँई * कुञ्जी जबे वर चाहे तबे येन पाई
एइ कथा कहिला आसिया मोर स्थाने * तुमि पासरिले, मोर सब आछे मने
आजि राम राजा हबे बेला अवशेषे * आगे आसिबेन राजा तोमार सभाषे
पट वस्त्र एड़ि पर मलिन बसन * खसाइया फेल यत गायेर भूषन
भूमिते पड़ियाथाक त्यजिया आहार * राजा जिज्ञासिबे तव देखिया आकार
जिज्ञासा करिबे राजा कोपेर कारन * ना दिया उत्तर तुमि करिओ रोदन
विविध प्रकारे तोमा करिबे सांत्वना * याचिबे तोमारे वस्त्र अलंकार नाना
तबे पूर्व्व निर्ब्बन्ध कहिबे तार स्थान * आगे सत्य कराइया पिछे मांग दान
पूर्व्वकथा राजार अवश्य हबे मने * दुइ वर मागिओ राजार विद्यमाने
एक वरे कराइबे राजा भरतेरे * आर वरे पाठाइबे अरण्ये रामेरे
चतुर्द्दश वर्ष राम थाके यदि वने * पृथिवी पुराबे तुमि भरतेर धने
तुमि यदि प्रान चाह, राजा प्रान देय * राम हेन प्रिय पुत्रे बनेते पाठाय
एमनि आसक्त राजा तोमार उपर * सत्ये बद्ध आछे केन नाहि दिबे वर

१ धरोहर (अमानत) २ भूमि पर लोटो ३ टाल न सकें ४ विश्वास नहीं होता ।

मंत्र - मंथरा कुमति जगावा * अमम अधर्म न भय मन आवा
ब्रह्मशाप - हत कैकयि रानी * जेहि कारन भूमि भस्म भुलानी
पितुगृह कबहुँ विप्र इक आवा * बालापन, कछु व्यंग्य सुनावा
सुनि कटु व्यंग्य विप्र मन तापा * कोपि कैकयिहिं दीन्हेउ शापा
जेहि विधि तैं कृत मम उपहासू * अखिल भुवन तव कुयस प्रकासू
ब्रह्मशाप कर अमिट प्रभावा * कुफल तासु इमि आगे आवा
कैकयि अतिव मोद मन छावा * कर-कूबरि धरि उर लपिटावा
पुलकि कहेउ तुम सम गुनखानी * चहुँ दिसि मोहिं न कतौं लखानी
कथन न अनुचित, मन अति माना * तैं हित परम, अहित चहुँ आना
तव तन चन्द्रकला उजियारी * कहि गर सुमनमाल तिन डारी
कूबर रतन हार कर साजा * कबहुँ अयाच्य[1] भरत लहि राजू
मम हित तव अपार सेवकाई * तासु एवज[2] पुरवहुँ दिन पाई

दो० आजु राम बन-गमन हित आयुसु देहिं नरेस।
मुख मज्जन जलपान तब, तबहि तजहुँ यहु वेस ॥ १२ ॥

तव सम्मुख मम प्रन यहु दासी * आजुहि राम लखहुँ बनवासी

दशरथ से कैकेयी की वर याचना

सुनि कूबरी कहइ हुलसानी * अब विलंब कर काज न रानी

फिरिल कैकेयी रानी कुब्जीर बचने * अधर्म्म अयश किछु नाहि करे मने
घोर ब्रह्मशाप आछे कैकेयीर तरे * सेइ दोषे कैकेयी प्रमाद एत करे
पित्रालये कैकेयी छिलेन शिशुकाले * करिया छिलेन व्यंग ब्राह्मणेर छले
ताहाते जन्मिल ब्राह्मणेर मन ताप * कुपिया ब्राह्मण तारे दिल अभिशाप
देखिया करिस व्यग कहिस कर्कश * सर्व्वलोके गाय येन तव अपयश
कैकेयीर ब्रह्मशाप ना हय खण्डन * सेइ हेतु घटिलेक ए सब घटन
अनंतर कैकेयीर प्रसन्न बदन * करे धरि कुब्जीर करिल आलिंगन
कुब्जीर कैकेयी कहे अति हृष्टमने * तव तुल्य गुणवती ना देखि भुवने
यत बल, सकलि से नहे त कुत्सित * सकलि अहित मम तुमि मात्र हित
गौर वर्ण धर तुमि येन चन्द्रकला * गलाय तुलिया देह दिव्य पुष्पमाला
रत्नहार लओ, पर कुब्जेर उपर * भरत हइले राजा दिब ए विस्तर
येमन विस्तर सेवा करिले आमार * यदि दिने पारि तव शुधिब से धार
यदि राजा रामेरे पाठाय आजि बन * तबे से करिब स्नान करिब भोजन
प्रतिज्ञा करिनु आमि तव विद्यमाने * बने पाठाइब रामे देखह प्रमाणे
कैकेयीर कथा शुनि कुब्जीर उल्लास * रचिल अयोध्याकाण्ड कवि कृत्तिवास

दशरथेर निकट कैकेयीर बर-प्रार्थना

कुब्जी बले कैकेयि बिलंब नाहि साजे * राम राजा हइले नहिबे कोन काजे

१ जिसको माँगने की जरूरत न रहे २ बदले में।

रामहिं राज मिलत, पछिताऊ * बहुरि न कछु अवशेष उपाऊ
तासों प्रथम बनावहु काजा * धरहु रूप, आवत अब राजा
सुनत, फेंकि अभरन तत्काला * अवनि विलोटति हाल बेहाला
इत कैकेयी-मिलन उछाहू * आतुर चले मुदित नरनाहू
कछु बतलाय लौटि पुनि आवौं * तुरत राम शिर छत्र धरावौं
जा न जाहिं, बहु गिला-गुजारी * धन जन राजु न कुछ सुखकारी
दशरथ मृत्यु सीस मँडरानी * हेरत कच-कच कहँ रानी
कोपभवन जँह लोटति धरनी * पहुँचे भूप, लखउ विधि करनी
सहज स्वभाव न कछु अनुमाना * कस छरछंद[1] कैकयी ठाना
नृप हतबुद्ध, मर्म नहिं जानी * जिमि अजगरी, फुंकरत रानी
युवा रानि, अति बृद्ध नरेसू * तिय तजि नृपहिं न गति अवसेसू
पति जहँ जरठ[2], तरुनि अति नारी * सो वृद्धहिं प्रानन ते प्यारी
कैकइ रूप निछावर प्राना * तासु दुःख नृप तजहिं पराना
पूँछेउ मृदु स्वर लर्जति अंगा * बाधिनि-भय वन कम्प कुरंगा[3]

दो०. कहा क्रोध ! कारन कवन ! कहेसि कोऊ कटु बानि ।
अंग व्याधि, केहि वेदना, धरनि विलोटति रानि ॥ १३ ॥

यावत न देय राजा रामे सिंहासन * तावत राजार ठाँय कर निवेदन
एखनि आसिबे राजा तोमा संभाषणे * जे रूपे कहिबा ताहा चिन्ता कर मने
शुनिया कुब्जीर वाक्य कैकेयी सेकाले * आभरन फेलाइया लुटे भूमि तले
हेथा राजा दशरथ हरषित मने * चलिलेन कौतुके कैकेयी संभाषणे
भाविलेन संभाषिया आसिया सत्वर * श्री रामे करिब आमि छत्र-दण्डधर
नाहि गेले कैकेयी करिबे अनुयोग * धन जन विफल आमार राज्य भोग
दशरथ नृपतिर निकट मरण * घरे घरे कैकेयीरे करे अन्वेषण
जे घरे कैकेयी देवी लोटे भूमि परे * बिधिर निर्बन्ध राजा गेल सेइ घरे
पूर्व्वज्ञाने गेल राजा ना जाने प्रमाद * गड़ागड़ि जाय रानी करिछे विषाद
सरल हृदय राजा एत नाहि बुझे * अजगर सर्प येन कैकेयी गरजे
दशरथ अति वृद्ध कैकेयी युवती * कैकेयी बिहने तार नाहि आर गति
कैकेयी युवती नारी, दशरथ बुड़ा * बुड़ार युवती नारी प्राण हैते बाड़ा
प्राणेर अधिक राजा कैकेयीरे देखे * उड़िल राजार प्राण कैकेयीर दुखे
धीरे-धीरे जिज्ञासेन कम्पित अन्तरे * बने मृग डरे येन बाघिनीर डरे
कि हेतु करिला क्रोध बलकार बोले * कोन व्याधि शरीरे लोटाओ भूमि तले

१ मक्कर २ बूढ़ा ३ हरिन।

जो कछु रोग - कलेस शरीरा * वैद्य बुलाय हरौं तव पीरा
सारभौम - नृपतिन नरपाला * मम सम अवनि न अन्य भुवाला
नाम प्रताप भीत सुर लोका * सदा द्वार प्रस्तुत त्रय - लोका
अखिल धरा अधिकार प्रसारा * धन जन सकल चरन तव हारा
कवन हेतु प्रिय साधेउ माना * सुनत सुमुखि पुरवहुँ अरमाना
सुनि नृप-वचन भरोस सयानी * लगी कहन पुनि कथा पुरानी
रोग न तन, कलेश अपमाना * पाय वचन पुनि माँगहुँ दाना
भूप रानि - छलछंद न बाँचा * देन युगुल वर हारी वाचा
व्याघ्र फंद मृग फसत अबूझा * नृप मतिमन्द न मारग सूझा
सुमुखि ! प्रगट करु निज अभ्यंतर[1] * करहुँ सत्य, मम वचन न अंतर
जो भावै सो पावै दाना * कहँ लग कहौं, समर्पन प्राना
कहेउ रानि, भूपति प्रन भाषी * अष्टलोकपालन[2] करि साखी
रवि, शशि, नखत, योग, तिथि, वारा * निसि, दिन साखी सब संसारा
रुद्र एकादश, द्वादश भानू * अखिल चराचर, मरुत,[3] कृशानू[4]
नृप-प्रन, वर-याचन मम आजू * लखहु लोक त्रय, स्वजन, समाजू
गये दिनन थाती[5] वर दोऊ * दै मोहिं आजु उरिन नृप होऊ

व्याधि पीड़ा यदि हय तोमार शरीरे * वैद्य आनि सुस्थ करि बलह आमारे
पृथिवीमण्डले यदि बसुमती - पति * आमार समान राजा नाहि गुणवति
शुनिया आमार नाम देव डरे काँपे * त्रिभुवन द्वारे खाटे आमार प्रतापे
समस्त पृथिवी मध्ये मम अधिकार * धन - जन यत आछे सकलि तोमार
कोन कार्ये कैकेयि करह अभिमान * आज्ञा कर ताहाइ तोमार करि दान
एत यदि कैकेयी राजार पाय आश * पूर्ब्व कथा तार आगे करिल प्रकाश
रोग, पीड़ा नहे मोर पाइ अपमान * आगे सत्य कर पिछे मागि आमि दान
कैकेयी प्रमाद पाड़े राजा नाहि जाने * सत्य करे दशरथ त्रियार बचने
महापाश लागि येन वने मृग ठेके * प्रमाद घटिबे पाछु राजा नाहि देखे
भूपति बलेन, प्रिये, निज कथा बल * सत्य करि यद्यपि तोमारे करि छल
जेइ द्रव्य चाह तुमि ताहा दिब दान * आछुक अन्येर काज दिबे तारि प्रान
कैकेयी बलेन सत्य करीला आपनि * अष्टलोकपाल साक्षि, शुनु सत्यबानी
नक्षत्र भास्कर चन्द्र योग तिथि वार * रात्रि दिन साक्षी हओ सकल संसार
एकादश रुद्र साक्षी द्वादश आदित्य * स्थावर-जंगम साक्षी, यारा आछे नित्य
स्वर्ग मर्त्य पाताल शुनह बाप माइ * सबे साक्षी, राजार निकटे बर चाइ
अवधान कर राजा धार मोर धार * मोर धार शोधि तुमि सत्ये हओ पार

---

१ मन की बात २ शिव, कुबेर, इन्द्र, वरुण, अग्नि, वायु, यम, नैऋत ये आठ लोकपाल हैं ३ पवन ४ अग्नि ५ धरोहर।

दो० रन घायल तन सेयि तव, बिष-वृष्ण पुनि उपचार।
अति प्रसन्न वर दीन यह, मोहिं नृपति दोउ बार ॥ १४ ॥

कहेउँ, मंथरा जब मन लावै * मम वर उभय धरोहर पावै
अजहु अमानत दोउ तव तीरा * पूरन आस करहु, प्रनवीरा
प्रथमहिं भरत समर्पन सासन * दूजे राम पठावहु कानन
चौदह वर्ष राम बनचारी * भरत रहैं इत राजु सम्हारी
कस दुरन्त[1]! सुनि कम्प शरीरा * नृपहिं न चेत, सम्हार न धीरा
कैकइ-वचन-सेल हिय घाला * घसिलि उठे, लहि चेत भुवाला
हिय लर्जत विमूढ़ मुख धूरी * कहेउ मन्द स्वर कछुक बिसूरी
पापिनि! तैं मम घात विचारी * देहैं कुयश जगत नरनारी
बिना राम मैं जीवनहीना * मम कुघात-दुर्मति केहिं दीना
गवनहिं वन रघुपति पुर त्यागी * तबहिं घरी मम मरन, अभागी!
पति जीवन पतिनिहिं सुखरासी * पति कर वध कुल तीनि विनासी
पति करि हनन, सुवन कहँ राजू * चण्डालिन तव कस अपकाजू
भरत खबर सुनि जीवन तजहीं * निश्चय नतरु प्रान तव हरहीं
जो पातक लखि जीवनदाना * तबहुँ न पार विविधि अपमाना

युद्धे ह'ये छिल तव क्षत कलेवर * सेविलाम ताहे दिते चेये छिले वर
करिलाम पुनर्व्वार विस्फोटे तारन * तुष्ट ह'ये वर दिते चाहिला राजन
तबे आमि बलिलाम तोमार गोचर * कुब्जी जबे वर चाहे तबे दिओ वर
दु'बारेर दुइ वर आछे तव ठाँइ * दुइ वर सेइ राजा एइ क्षणे चाइ
एक वरे भरतेरे देह सिंहासन * आर वरे श्रीरामेरे पाठाओ कानन
चतुर्द्दश वत्सर थाकुक राम वने * तत्काल भरत बसुक सिंहासने
दुरन्त वचने राजा हइल कम्पित * अचेतन हइलेम नाहिक सम्बित
कैकेयी-वचन येन शेल बुके फुटे * चेतन पाइया राजा-धीरे धीरे उठे
मुखे धूला उठे राजा काँपिछे अन्तरे * हतज्ञान दशरथ बले धीरे धीरे
पापीयसि, आमार वधिते तव आश * स्त्री-पुरुष यत लोक कहिबे कुभाष
राम विना आमार नाहिक अन्यगति * आमारे वधिते तोरे के दिल दुर्म्मति
राज्य छाड़ि यखन श्रीराम जाबे वन * सेइ दिन सेइ क्षणे आमार मरण
स्वामी यदि थाके तबे नारीर सम्पद * तिन कुल मजाइलि स्वामी करि वध
स्वामी वध करिया पुत्रेरे दिबि राज्य * चण्डाल-हृदया तुइ करिलि कि कार्य्य
यद्यपि भरत आसि एइ कथा शुने * आपनि मरिबे, कि मरिबे सेइ क्षणे
मातृ-वध-भये यदि ना लये परान * करिबे तथापि तोर बहु अपमान

१ घोर कष्टकारक।

डमेसि भुजंगिनि, विष तव घोरा * गृह-तव चरन, मरन मनु मोरा
दो० कवन भूप अस नारिवस, को कामिनि-लवलीन।
कमनीया के कथन परि, निज नन्दन तजि दीन ॥ १५ ॥
मानुष-आयु सहस दस त्रेता * नौ हजार विलसेहुँ सुख जेता
एक हजार शेष मम आयू * तव हित मरन विना परमायू
उमिर न पूरि, लीन तैं प्राना * चहउँ बन्दि पग जीवनदाना
कैकइ-पद नृप लोटति धरनी * शिथिल अंग नयनन निर्झरनी
भोरहिं राजसभा कर साजा * भुवन-नृपन-दल जहाँ विराजा
लगन चढ़ी लखि, तिलक न दूरी * किमि तिन नयन झोंकिये धूरी
रच्छिय प्रान, छमा मोहिं कीजै * निज सोहाग सों खेल न कीजै
रहेउ न कुल कोउ नारि अधीसा * निज कर मरन मोल मैं लीसा
कामिनि बस जन—सकल विनासा * अवधकाण्ड कृतिवास प्रकासा

पिता-प्रणरक्षार्थ राम बन-गमन उद्योग

प्रन करि, वचन भूप तुम दीन्हा * करत पूर्ण, हिय कातर कीन्हा
सत्य-धर्म-तप कठिन कमाई * मिटे तासु किमि राम सहाई
तजत सत्य तब सर्ब विनासू * पालन-सत्य स्वर्गपुर वासू
अब लौं रवि-शशि-कुल नरनाथा * तिन यश विरद भुवन गुनगाथा

विषदन्ते दंशिलिरे काल भुजंगिनि * तोरे घरे आनि शेषे मजिनु आपनि
कोन राजा आछे एन कामिनीर वश * कामिनीर कथाय के त्यजेछे औरस
दश हाजार वर्ष लोक जिये त्रेतायुगे * नय हाजार वर्ष राज्य करि नाना भोगे
आर एक हाजार वत्सर आयु आछे * परमायु थाकिते मजिनु तोर काछे
प्रमाइ थाकिते एत बधिब परान * पाये पड़ि कैकेइ, करह प्राणदान
कैकेयीर पाये राजा लोटे भूमि तले * सर्व्वांग तितिल तांर नयनेर जले
प्रभाते बसिब कल्य सभा विद्यमाने * पृथिवीर मत राजा आसिबे सेस्थाने
अधिवास रामेर हइल सबे जाने * बलिया कि भाण्डाइब से सकलजने
क्षमा कर कैकेयि करह प्रान रक्षा * निज सोहागेर तुमि बुझिला परीक्षा
सौभाग्य ना हय केह अमार ए वंशे * तोर दोषे नहे आमि मजि निज दोषे
स्त्री वंश ये जन तार हय सर्व्वनाश * गाइल अयोध्याकाण्ड कवि कृत्तिवास

पितृ-सत्य-पालनार्थ श्री रामचन्द्रेर वन-गमनोद्योग

कैकेइ बलेन सत्य आपनि करीला * सत्य करि वर दिते कातर हइला
सत्य धर्म्म तप राजा करे बहु श्रमे * सत्य नष्ट करेले कि करिबेक रामे
सत्य लंघे केह तार हय सर्व्वनाश * जे सत्य पालन करे, स्वर्गे तार बास
यत राजा हइले चन्द्र सूर्य वंशे * से सबार यशोगुण सकले प्रशंसे

नृप ययाति शर्मिष्ठा रानी * देवयानि पुनि नृप - पटरानी
सबन छोट शर्मिष्ठा - नन्दन * रानिवचन तिन राजु समर्पन
'शिवि' महिपाल भुवन विख्याता * विक्रम अतुल वीर बड़ दाता

दो० लचर[1] दीन अति विप्र इक, देखे लोचन-हीन।
काढि नैन दोउ द्विजहिं दै, तासु विपति हरि लीन ॥ १६ ॥

द्विज - दुख - हरन बचन नरराई * पालन हित निज दीठि गवाँई
सत्य पालि गवने सुरलोका * रविकुल पुनि इक्ष्वाकु विलोका
चहुँ इक्ष्वाकुवंश जग नामा * तासु नाम तव - कुल सरनामा
पितु कर धर्म निबाहन हेतू * अनुजहिं नृपति कीन कुलकेतू
सत्य-धर्म जग होत न करनी * अगम सिन्धु तौ बोरत धरनी
दोउ वर देन वचन, नृप! हारी * कस कातर, कस पाँव पछारी
माया - नारि - मर्म को जाना * रानि - फंद दसरथ हत ज्ञाना
लोटत अवनि छोभ नरनाहू * यहु मरभण्ड[2] विदित जनि काहू
काल्हि व्यतीत राम - अधिवासू * आजु सबन अभिषेक हुलासू
शुभ मुहूर्त, केहि कारन देरी * पूँछत सकल बशिष्ठहिं घेरी
अतुल तेज चहुँ नृप अस छावा * अन्तःपुर कोउ पग न बढावा
लखहु सुमंत्र किते अवधेसू * तुम बिन आन न सदन प्रवेसू

ययाति नामेते राजा पालिल पृथिवि * देवयानि नामे तार मुख्य महादेवी
शर्मिष्ठार पुत्र हएल सबार कनिष्ठ * पत्नीर वचने राजा तारे दिल राष्ट्र
शिवि नामे राजा छिल पृथिवीर पाता * असम साहसी वीर, नहे अल्प दाता
द्विज एक छिल तार दुइ आँखि शून्य * अत्यंत दरिद्र तार नाही मिले अन्य
सेइ अन्ध शिवि राजे सत्य कराइल * निज दुइ चक्षु शिवि तारे दान दिल
आपनि हइल अन्ध चक्षे नाहि देखे * सत्य पालि सेइ राजा गेल स्वर्गलोके
इक्ष्वाकु नामेते राजा छिल सूर्यवंशे * इक्ष्वाकुर वंश बलि सकले प्रशंसे
पितृ सत्य करिलेन इक्ष्वाकु पालन * कनिष्ठ भ्रातार तरे दिल राज्य धन
पृथिवी डुबाते पारे सागरेर नीरे * सागर न बाड़े पूर्व्व-सत्य पालिबारे
आमारे करिया सत्य दिले दुइ वर * एखन कातर केन हओ नृप वर
नारीर मायार सन्धि पुरुषे कि पाय * दशरथ पड़िलेन कैकेयी मायाय
भूमे गड़ागड़ि राजा देय अभिमाने * एतेक प्रमाद कथा केह नाहे जाने
हइयाछे अधिवास जाने सर्व्वजन * सबे बले वशिष्ठ, हइल शुभक्षण
काले श्री रामेर हइयाछे अधिवास * आजि केन बिलंब ना जानिसे आभास
राजार प्रतापे हय त्रिभुवन वश * भितरे जाइते केह ना करे साहस
पात्र - मित्र बले शुन सुमंत्र सारथि * तोमा बिना अन्तःपुरे कारो नाहि गति

१ लाचार २ विनाशकारी विघ्न।

आमंत्रित भूप अवध पुरि आये * सुलगन सुनि अभिषेक सुहाये
अवगत करहु, सुमंत्र ! महीपा * कस विलंब, शुभ घरी समीपा
लखेउ सुमंत्र, भवन महिपाला * लोटत धरनि अचेत बेहाला
कस विवर्न¹ आकुल नरराई * राम - तिलक सुघरी नियराई
दो० समारोह हित, रहे पुर, अगनित भूप विराज।
राजसभा पग धारिये, अब विलंब केहि काज ॥ १७ ॥
हा, सुमंत्र ! तुम मर्म न जाना * मम बध यतन कैकई ठाना
अशुभ बैन हिय हूलेसि गाँसी * तासु बचन बँधि स्वयं विनासी
धरि मम कथन, राम द्रुत² लावौ * बैठि अबहिं कछु जुगुति बनावौ
कैकइ कहेउ न देर लगावो * सारथि ! अबहिं रघुपतिहिं लावौ
सुनि, रथ लै सुमंत्र, जहँ रामा * द्वार त्यागि रथ प्रविशेउ धामा
करि प्रनाम, पुनि दीन संदेसू * मत कछु किय कैकई - नरेसू³
पठयेउ लेन, तुमहिं निज साथा * आयसु चलहु बेगि रघुनाथा
प्रियजन - प्रमुख सुमंत्रहि जानी * आसन दै रघुपति सन्मानी
बोले, पितु - आयसु मम माथा * अबहिं सुमंत्र चलहुँ तव साथा
पुनि - सीतहिं श्री राम बुझावा * मम अभिषेक विमातु न भावा
विदित न, छल मंथरा सुझावा * रचना कवन विमातु रचावा

झट जाह सुमंत्र सारथि अन्तःपुरे * सकल देशेर राजा आसिआछे द्वारे
राम अभिषेक आसियाछे देवगण * एतक्षण विलब राजार कि कारण
सुमंत्र सारथि गेल सकलेर बोले * देखे राजा, अज्ञान लोटाय भूमितले
बलेछे सुमंत्र केन लोटाओ राजन * रामे राजा करिते हइल शुभक्षण
त्रिलोकेर राजा सब आसियाछे द्वारे * विलंब ना कर राजा चलह बाहिरे
राजा बलिलेन पात्र ना जान कारण * मोरे बध करिवारे कैकेयीर मन
बुके शेल मारियाछे बलिया कुवाणी * तार सत्ये बन्दी आमि हयेछि आपनि
रामे शीघ्र आनगिया आमार बचने * तुमि आमि राम युक्ति करि तिनजनें
कैकेयी बलेन जाह सुमंत्र त्वरित * शीघ्र रामे आन नहे विलब उचित
शुनिया लइया रथ सारथि चलिल * उपस्थित रघुपति जेखाने हइल
बाहिरे थुइया रथ गेल अन्तःपुरे * जोड़ हाते कहे गिया रामेर गोचरे
कैकेयीर संगे राजा युक्ति करे घरे * मोरे पाठाइला तिनि लइते तोमारे
मुख्य पात्र सुमंत्र श्रीराम तहा जानि * गौरवे दिलेन तारे आसन आपनि
बलेन श्रीराम पित्र आज्ञा शिरे धरि * विलंब न करि आर चल यात्रा करि
यात्रा काले श्रीराम बलेन शुन सीता * आमि राज्य पाइब विमाता चिन्तान्विता
कोन युक्ति कुंजी दिल विमातार तरे * ना जानी विमाता आजि कोन युक्ति करे

१ विकृत २ शीघ्र ३ राजा और कैकई ने।

पितहिं साधि कस जुगुति, न जाना * किमि पितु मम हित करहिं बिधाना
यहि विधि विदा लीन रघुराई * सिय कोठ लौं मठवन आई
बाहेर निरखि लोक[1] रघुनाथा * धाव-धाय चहुँ जोरत हाथा
राम-लखन रथ युगुल विराजा * दरसन हित चहुँ जुरेउ समाजा
हाँफति गर्भवती लौं आई * तजि भय-हिचक कुलवधू धाई

दो० धन परिजन पतिसुख सकल, तिनसों उपज विराम।
पाप नसावन चलि परीं, राम - दरस अनुराग ॥ १८ ॥

पुरजन चहुँ बंदहिं रघुनाथा * गावहिं सकल, राम गुनगाथा
बड़भागी लहि राम रजाई[2] * जन्म जन्म तव करि सेवकाई
तव मुख दरस सदा मन करहीं * लखि तव पद भवसागर तरहीं
नारि मुग्ध लखि रूप ललामा * सील लचे, तर चितवहिं रामा
दरस विभोर, तजत पछिताहीं * चलीं गेह, थिर कोउ-मन नाहीं
वहिर्सदन[3], तजि लछिमन, रामा * कीन प्रवेश कैकयी - धामा
कैकेई जहँ, नृप नत धरनी * लोटत, लखी राम यह करनी
रघुपति विनय कीन, कहु जननी * केहि बिषाद पितु लोटति धरनी
लखत मोहिं रिस[4] तजि हर्षाहीं * पूछेहु, आजु बचन मुख नाहीं
मम अपराध कुपित कछु ताता * कवन चूक पितु करत न बाता

राजा सह कैकेयी कि करे अनुमान * जानि आसि पिता कि करेन संविधान
सीता स्थाने लइलेन श्रीराम बिदाय * प्रकोष्ठे तिनेक सीता अनुव्रजि जाय
बाटीर बाहिर हइलेन रघुनाथ * चार भिते धाय लोक करि जोड़हाथ
श्रीराम-लक्ष्मण दोहे चड़िलेन रथे * देखिते सकल लोक धाय चारि भिते
ऊर्ध्व श्वासे धाइलेक नारी गर्भवती * लज्जा-भय नाहि माने कुलेर युवती
कि करिबे स्वामी, कि करिबे धने-जने * घुचिबे सकल पाप राम दरशने
सारि-सारि लोक सबे दाण्डाइया चाय * यतगुण श्रीरामेर सर्व्वलोके गाय
बहु भाग्ये पाइलाम तोमा हेन राजा * जन्मे-जन्मे राम येन करि तव पूजा
सर्व्व क्षण देखियेन तोमार बदन * सर्व्व लोक मुक्त हबे देखिया चरन
राम रूपे मजाइल नारीगन चित * नयने ना चान राम परनारी भित
रूप देखि नारी सब मने पुड़े मरे * कपाल निंदिया सबे गेल निज घरे
घरे गिया स्त्री सबार मन नहे स्थिर * पितृ पार्श्वे गमन करेन रघुवीर
एक वृहन्दरे बहिः रहेन लक्ष्मन * भितर आवासे राम करेन गमन
राजा दशरथ भूमे लोटे अभिमाने * कैकेयी राजार काछे आछे सेई खाने
श्रीराम बलेन, माता कह त कारन * केन पिता विषादित भूमि ते शयन
कोप जदि करेन हासेन मोरे देखे * आजि जिज्ञासिले केन कथा नाहि मुखे
कोन दोषे करिलाम पितार चरणे * उत्तर ना देन पिता किसेर कारणे

१ ममता। २ राज्य ३ घर के बाहर ४ क्रोध।

भरत - रिपुदमन मातुल देसू * और वियोग-तिनि मलिन नरेसू
कै अपराध आन कोउ कीना * छिति लोटति, दारुन दुख दीन्हा
कै तुम कछुक कहेउ कटु बाता * सत्य सत्य बरनउ मोहि माता
पितु बिन व्यर्थ राज-सुख नाना * सुबहुं सत्य तो पावहुं प्राना
पितु आयसु पालब सुखकारी * मातु! सकल बरबउ बिस्तारी
तात-कथन तव-मुख सुनि काना * त्यागहुँ राज, बिसर्जहुँ प्राना

दो० सरल हृदय, इमि कैकई, पायेउ अवधकिशोर।
कथा पुरातन कहि चली, कस हिय तासु कठोर ॥ १६ ॥

संबर - रन .तन जर्जर भूपा * मम सेवा लखि मुदित अनूपा
विषभूब पुनि सेयेउँ नरनाहा * अवसर युगुल देन वर चाहा
प्रथमहिं भरत राज - अधिकारी * दूजे वर रघुपति बनचारी
लहउँ धरोहर अब दोउ बाचा * नृपहिं याद, पुरवहुँ प्रन साँचा
चौदह वर्ष मूल - फल खाई * रहहु जटा तन बल्कल छाई
सुनत राम हँसि बोले वयना * आयसु सीस, अबहिं वनगमना
पितहिं न त्रास - प्रयोजन माता * तव बानी मोहिं वचन - विधाता
आज्ञा करहु न संशय लेसू * सर्वोपरि मोहिं तव आदेसू
पिता वचन तव प्रीति निहारी * चौदह वर्ष रहौं बनचारी

भरत शत्रुघ्न दुइ भाइ नाहि देशे * मातुलेर आलयेते रहिल प्रवासे
बहुदिन गत न पाइल दुइ जन * सेइ मनोदुःखे बुझि विरस वदन
कोन जन किवा करियाछे अपराध * भूमे लोटाइया तेइ करेन विषाद
तुमि बुझि पितारे कहिला बहु वाणी * सत्य करे कह गो विमाता ठाकुरानि
करिबे कि राज्य भोगे पितार अभावे * आमारे कहगो सत्य प्राण पाइ तबे
कि आज्ञा पितार आमि करिब पालन * सेइ कथा माता मोरे करह वर्णन
आछुक पितार कार्य्य तोमार वचने * राज्यछाड़ि, प्रानछाड़ि, किछाड़ि जीबने
श्रीराम सरल कैकेयी पाप - हिया * कहिते लागिल कथा निष्ठुर हइया
दैत्य-युद्धे महाराज घायेते जर्जर * ताहे सेविलाम, दिते चाहिलेन वर
विस्फोट हइल पुनः करि सेवा-पूजा * ताहे अन्यवर दिते चाहिलेन राजा
एक वरे भरत करिब दण्डधारी * आर वरे राम तुमि हओ वनचारी
दूइवारे दुइ वरे आछे मम धार * मम धार शुधि तारे सत्ये कर पार
शिरे जटा धरि तुमि परिवा बाकल * बने चौद्द वत्सर खाइबा मूल-फल
शुनिया कहेन राम सहास्य - बदने * तोमार आज्ञाय माता एइ जाइ बने
करियाछ कोन काजे पितारे मूर्च्छित * लांघिते तोमारे आज्ञा नहे त उचित
आछुक पितार काज तुमि आज्ञा कर * तव आज्ञा सकल हइते महत्तर
तव प्रीति हवे रबे पितार वचन * चतुर्दश वत्सर थाकिब प्रिया बन

भरतहिं तुरत बुलावहु देसू * भरत राज मोहिं हर्ष अशेषू[1]
विमल भरत, तिल दोष न गाता * धन - जन - राज देहु तिन माता
कैकइ कहेउ, प्रथम वनवासू * तबहिं भरत यहि धाम निवासू
मोरे कथन रोष जनि कीजै * जटा धारि कानन पथ लीजै
शीश लचाय सुनत नृप वानी * भय न लाज, कस बोलत रानी
राम विमातहिं दीन दिलासा * देर न गमन आजु वनवासा
जै छन सिय सौंपहुँ महतारी * तै छन रहहु धीर तन धारी

दो० धरा विलोटत अवधपति, छावा विपुल विषाद।
स्वप्न सरिस श्रवनन परत रानि - राम संवाद ॥ २० ॥

पिता चरन बंदेउ रघुनन्दन * दुसह पीर! भूपति किय क्रन्दन
चले परसि पग जब रघुराई * 'हाय - राम!' कहि मूर्छा आई
मुख न बोल, नहिं चेत सरीरा * बाहेर भये लखन - रघुबीरा
प्रान समान लखन तजि आना[2] * कोऊ कतहुँ भेद नहिं जाना
हवन धूप देवन घृतबाती * कौशिल्या पूजहि बहुभाँती
बहु विधि भरा - सजा रनिवासू * रानि सात शत जहाँ निवासू
रानि सात सौ औ बहुनारी * कैकइ एक न परत निहारी
ढिग - कौशिला रानि समुदाई * चरचा रामतिलक चहुँ छाई

भरतेरे त्वरिते आनाओ माता देश * भरत हइले राजा आनंद अशेष
कोन गुण नाहि माता ताहार शरीरे * धन - जन - राज्य - भोग देह भरतेरे
कैकेयी बलेन राम आगे जाह बन * भरत आसिबे तबे एइ निकेतन
आमार कथाय कोप न करहि मने * शिरे जटा धरि तुमि आजि जाह बने
हेंट माथा करिया शुनेन महाराज * कि कहिब, कैकेयीर मुखे नाहि लाज
कैकेयीर प्रति राम करेन आश्वास * विलंब नाहिक आजि जाब वनवास
यावत् मायेरे सीता करि समर्पण * तावत् विलंब माता सहिबा एखन
भूमे लोटाइया राजा आछेन विषादे * शुनेन दोंहार वाक्य स्वप्न सम बोधे
रामचन्द्र पितार चरण द्वय बन्दे * दशरथ क्रन्दन करेन निरानन्दे
पितारे प्रणामि राम चलेन त्वरित * 'हा राम' बलिया राजा ह'लेन मूर्च्छित
मुखे नाहि शब्द राजा नाहिक चेतन * हइलेन बाहिर जे श्रीराम लक्ष्मन
रामेर ए सब कथा केह नाहि शुने * प्राणे दोसर मात्र लक्ष्मण से जाने
करेन कौशल्या देवी देवता पूजन * धूप - धूना - घृतदीप ज्वालिया तखन
नाना उपचारे रानी पूरियाछे घर * सात शत सपत्नी से घरेर भितर
सबे मात्र कैकेयी नाहिक एक जन * सात शतरानी आर बहु नारीगण
कौशल्यार काछे थाके सात शतरानी * 'राम जय' एइ मात्र शब्द सदा शुनि

१ अपार २ अन्य किसी ने।

आय राम बन्देउ पुनि माई * आशिष दीन मोद अधिकाई
तुमहिं राज निज पितु किय दाना * रमा प्रसीदि[1] करइ कल्याना
राज अनन्त, अवनि प्रतिपाला * सुख विलसहु बहुबिधि बहुकाला
पद पंकज शिव - गौरि मनावा * उदित पुन्य, सुत नृपपद पावा
कहेउ राम, सुख हेतु न जननी * करगत निधि छीनेउ विधि-करनी
आजु, लखन, हम, तुम, सिय चारी * मरन योग दुख सिंधु मझारी
तुमसन प्रगट करत भय माता * रचेउ विघ्न कैकई विमाता
भरतहिं राजु मोहिं वनवासू * मत, विमातु निज कीन प्रकासू

दो० सुनि अचेत धरनी गिरी, निरखि, विकल रघुनाथ।
हाय मातुवध पाप मनु, लिखी नरक - गति माथ ॥ २१ ॥

जननि, बन्धु दोउ सम्हरि उठावा * बहु छन जतन चेत पुनि आवा
बानी छीन कहेउ महरानी * कहहु सकल सुत सत्य कहानी
मम सौगंध दुराव[2] न ताता * कौन दोष वन दीन विमाता
दोष विमातु न कछु प्रिय जननी * भावी अमिट, अटल विधि-करनी
परिचर्या - पति पुनि - पुनि कीन्हा * हरषि युगुल वर भूपति दीन्हा
मम अभिषेक निरखि यहि लागे * नृप सन वर विमातु दोउ मांगे

हेन काले श्री राम मायेर पद बन्दे * आशीर्वाद करे रानी परम आनन्दे
तोमारे दिलेन राजा निज राज्य दान * सुप्रसन्ना राजलक्ष्मी करुन कल्यान
नानाविधि सुख भुञ्ज हओ चिरजीवी * चिरकाल राज्यकर पालह पृथिवी
सेविलाम शिव - शिवा - चरनकमले * तुमि पुत्र राजा हओ सेइ पुण्य फले
श्रीराम बलेन माता हर्ष कर किसे * हातेते आइल निधि गेल दैव दोषे
तुमि आमि सीता आर अनुज लक्ष्मण * शोक-सिन्धु-नीरे आजि मजि चारिजन
भीत हइ तोमारे कहिते आमि कथा * प्रमादे पाड़िल माता कैकेयी विमाता
विमातार चरणे जाइते एल वन * भरतेरे राज्य दिते विमातार मन
शुनिया पड़िल रानी हइया मूर्च्छित * 'मा मा बलि' रामचन्द्र डाकेन त्वरित
'मा मा मा' बलिया राम उच्चैःस्वरे * डाके 'मातृ वध करि बुझि डुबिनु नरके'
कौशल्यारे धरि तोले श्रीराम लक्ष्मन * बहुक्षणे कौशल्यार हइल चेतन
चैतन्य पाइया रानी बले धीरे-धीरे * सकल वृत्तान्त सत्य कहत आमारे
मोर दिव्य लागे जदि ताँड़ाह आमाय * कि दोषे कैकेयी वने तोमारे पठाय
श्री राम बलेन माता दैवेर घटन * विमातार दोष नाहि विधिर लिखन
पितृसेवा बिमाता करिल बार-बार * दुइ वर दिते छिल पितार स्वीकार
आजि आमि राजा अब सकलेर आगे * शुनिया बिमाता सेइ दुइवर मागे

१ प्रसन्न होकर २ छिपाव।

भरतहिं प्रथम राज अधिकारू * दूजे वर मम देस निकारू
पति बिन गति न, सदा करि सेवा * मल विमात जीतेउ पितुदेवा
पितु - पद, मातु ! होत तव प्रीती * तो न होत अस आजु अनीती
तनय - वचन दारुन दुखदाई * कौशिल्या - उर सेल समाई
कदली कटत विलोटत धरनी * 'तात ! तात !' कहि विलपत जननी
गुननिधान नन्दन वनचारी * लखि किमि सकउँ प्रान तन धारी
प्रथम वरन[1], मैं नृप - पटरानी * सौति कैकई पातक - खानी
राजहिं छलि, मम सुत वनवासा * करि पापिनि मम सकल विनासा
मरन अकाल न रविकुल राजू * सो न प्रान मम निकसत आजू
देव - देवि बहु पूजे चरना * अहह ! तासु फल सुत - वनगमना

दो० अखिल भूप रविकुल कबहुँ, रहे न नारि अधीन ।
आजु सवति[2] के फंद फँसि, नृपति अजस जग लीन ।। २२ ।।

नारि - कथन सुत पठवइ कानन * तेहि पितु आयसु उचित न पालन
कहेउ लखन—तिय-बस पितु कहहीं * तौ कस राजु विसर्जन करहीं
जेठहिं राजु सदा चहुँ गावा * केहि अपराध अरण्य पठावा
राजु प्रथम दै, पुनि वनवासू * अमिट भुवन पितु अजस-प्रकासू

एक वरे भरते करिते दण्डधर * आर वरे आमि जाइ वनेर भितर
स्वामि बिना स्त्री लोकेर नाहि आरगति * विमातार सेवाय पितार प्रीति अति
तुमि यदि सेवा माना करिते पितारे * तबे केन एत ताप घटिबे तोमारे
एत यदि कहिलेन श्रीराम मायेरे * फुटिल दारुण शेल कौशल्या अन्तरे
काटिले कदली लेन लोटाय भूतेले * 'हा पुत्र' बलिया रानी राम प्रति बले
गुणेर सागर पुत्र यार जाय बन * से नारी के मने आर राखिबे जीवन
राजार प्रथमा जाया आमि महारानी * चण्डाली हइल मोर कैकेयी सतिनी
घटाइल प्रमाद कैकेयी पापीयसी * राजारे कहिया रामे करे बनबासी
सूर्यवंश राज्ये नाहि आकाल मरन * एई से कारने मम ना जाय जीवन
पूजिलाम कत - शत देव - देवीगणे * तार की ए फल बाछा तुमी जाह बने
सूर्यवंशे यत - यत राजा जन्मे छिल * बल देखि, स्त्रीर वाक्ये के हेन करिल
आयश राखिलि राजा नारीर वचने * स्त्रीवाध्य पितार वाक्ये केन जाबे बने
स्त्रीर वाक्ये जिनि पुत्रे पाठान कानने * तेमन पितार कथा ना शुनिओ काने
लक्ष्मण बलेन सत्य तव कथा पूजि * स्त्रीवश पितार वाक्ये केन राज्य त्यजि
ज्येष्ठपुत्र राज्य पाय इहा सबे घोषे * हेन पुत्रे बने राजा पाठाम कि दोषे
आगे राज्य दिया परे पाठान कानने * हेन अपयश पिता राखेन भुवने

१ पाणिग्रहण २ सौत पत्नी ।

खबरि न जब लौं होय प्रचारा * करइँ राम शासन अधिकारा
नृप उन्मत्त कुमति सठियानी * सदा विवस, बस-कैकइ रानी
आयसु; भरत हनउँ यहि लागे * शासन लाय धरउँ प्रभु आगे
मैं सेवक, अनुमति तव पावौं * भरत-कटक छिन धूरि मिलावौं
जो कहुँ स्वयं गहउ धनु-सायक * को समर्थ समुहै[1] रघुनायक
कौशल्या पुनि कीन समर्थन * वचन-विमातु उचित नहिं कानन
करि निबाह इक पितु-प्रन पालन * भरतहिं सकल समर्पहु सासन
दूजे प्रन पालन जनि हेतू * बन तजि, अवध रहौ रघुकेतू
तजि मम कथन, पितु-वचन धारी * पितु सों श्रेष्ठ सदा महतारी
दुसह गर्भ दुख, पुनि तव पालन * दुलखत[2] सोइ जननी केहि कारन
बहु पितु-वचन! तुच्छ मम बानी * कौन शास्त्र मत? सुनी न जानी
कथा राम पुनि सविनय बरनी * पितु पद परम, पूज्य तव जननी

दो० परशुराम पितु-वचन धरि, काटेउ जननी शीस।
पितु आयसु गोबध कियेउ, अष्टावक्र मुनीस॥ २३॥

सन्तति - सगर कलेसन गाथा * मातहिं पुनि बरनेउ रघुनाथा
यदपि विकल मम-दुख अति ताता * सतपथ अटल तबहुँ लखु माता
सो पितु-वचन करौं जनि पालन * जीवन वृथा, वृथा सुख - सासन

यावत् ए सब कथा ना हय प्रचार * तावत् श्री रामचन्द्र लह राज्य भार
वार्द्धक्य दुर्बुद्धि राजा नितान्त पागल * करियाछे वाध्य तांरे कैकेयी केवल
यदि रघुनाथ, आमि तव आज्ञा पाइ * भरते खण्डिया राज्य तोमारे देओयाइ
आमि एइ आछि राम तोमार सेवक * आज्ञा कर भरतेर काटिब कटक
तुमि यदि हस्ते प्रभु धर धनुर्व्बाण * तव रामे कोन जन हबे अग्रुयान
कौशल्या बलेन राम कि बले लक्ष्मण * विमातार वाक्ये तुमि केन जाबे बन
पालह पितार एक - सत्य अंगीकार * भरतेर देहे तुमि सब राज्य भार
अन्य सत्य पालिते नाहिक प्रयोजन * देशे थाक राम तुमि ना जाइओ बन
मायेर वचन लंघि पितृ वाक्य धर * पिता हैते माता तव अति महत्तर
गर्भे धरि दुःख पाय स्तन दिया पोषे * हेन मातृ-आज्ञा राम लंघ तुमि किसे
बापेर वचन राख लंघ मातृवाणी * कोन शास्त्रे हेन कथा कथाओ ना शुनि
श्रीराम बलेन माता शुन एक कथा * पिता से परम गुरु तोमार देवता
देखह परशुराम पितार कथाय * अस्त्राघात करिलेन मायेर माथाय
पितार आज्ञाय अष्टाबक्रेर गोवध * सगर जन्माय पुत्रगणेर आपद
सत्य बा लघेन पिता सत्येते तत्पर * मम दुःखे पिता कत हबेन कातर
पितृ सत्य यदि आमि ना करि पालन * वृथा राज्य भोग मम वृथा इ जीवन

१ सामना कर सके २ बात टालते हो।

तजैं विमातु, लखत[1] पितुदेवा * निसि दिन, मातु ! करेउ तिन सेवा
कौशिल्या हटकेउ रघुराई * तव वनगमन प्रान मम जाई
जननी - वध समान नहिं पापा * पातक, जासु विपुल संतापा
जनक उलंघन[2], जननी घाता * गुरुतर कवन विचारहु ताता
ताल देहिं, लछिमन रिसि पाई * मति - भ्रम तुमहिं, कहेउ रघुराई

छं० राजपाट अनुराग, तात ! तव उत्कण्ठा जस भारी ।
तस वनगमन लगन मनमोहन मोहि रुचिर मुदकारी ॥
कूबरि दोष न दोष विमातहिं, घातैं चली विधाता ।
नेह सनी इमि नतरु होत किमि मम विपरीत विमाता ॥
तनय भरत सों, लखत मोर मुख, तेहिं अपराध न लेसू ।
विधि की गति विधि जानत नीके, छमहु बन्धु, तजि रोषू ॥
सुख-दुख लिखा ललार, भोग विन अमिट कर्म के बन्धन ।
तोष - वचन सुनि रोष फुंकरत गर्जि सुमित्रानन्दन ॥

धनु प्रतञ्च धरि डग चहुँ धरई * लछिमन सुभट कोपि पुनि कहई
मामन तजहिं, होयँ वनचारी * राज भोग तजि साकाहारी
तप संन्यास आदि द्विज - कर्मा * युद्ध सदा प्रिय क्षत्रिय - धर्मा
कबहुँ न क्षत्रिय कानन काजू * परि रिपु - वचन तजै निज राजू

बर्ज्जिवेन विमातार पिता लय मने * करिह नाहार सेवा तुमि रात्रि दिने
कौशल्या बलेन राम सत्य जाइ बन * तुमि बने गेले आमि त्याजिब जीवन
मातृवध करिले हइबे तव पाप * मातृ वध पापे राम पावे बड़ ताप
पितृ सत्य पालिबे जे मायेर मरणे * कोन पाप बड़ राम, भाव देखि मने
आस्फालन लक्ष्मण करेन अतिशय * श्रीराम बलेन तव बुद्धि भाल नय
यत यत्न कर तुमि राज्य लइवारे * तत यत्न करि आमि जाइते कान्तारे
विमातार दोष नहे दोषी नहे कुब्जी * सकलि देखिबे भाइ विधातार बाजी
विमाता जानेन भाल आमार चरित्र * जानिया शुनिया करिलेन विपरीत
भरथ हइते तौर आमा प्रति आशा * विमातार दोष नाइ आमार दुर्द्दशा
जे दिन जा हवे ताहा विधि सब जाने * दुःख ना भावि ओ भाइ क्षमा देह मने
दुःख ना भुञ्जिले कर्म्म ना हय खण्डन * सुख-दुःख देख भाइ ललाट लिखन
प्रबोध ना माने काल सर्प येन गर्ज्जे * सुमित्रा कुमार वीर घन - घन तर्ज्जे
धनुकेते गुन दिया चाहे चारि भिते * कुपिया लक्ष्मण वीर लागिल कहिते
राज्य खण्ड छाड़िया हइब बनवासी * राज्यभोग त्यजि फल-मूल अभिलाषी
सन्यास तपस्या यत ब्राह्मणेर कर्म्म * क्षत्रियेर सदा युद्ध सेइ तार धर्म्म
क्षत्रिय कोथाय के करेछे बनवास * शत्रुर वचने केन छाड़ि राज्य आश

१ मालूम पड़ता है २ अवज्ञा ।

रिपु सम जगत विमातहिं ख्याती * सो हित राजु तजिय केहि भाँती
पितु मन सदा रमत तुम रामा * पितु कर मरन, तजत तव धामा
तुम विन पितु पयान परलोकू * जननि दुसह घातक सुत-सोकू
तव बिछोह पितु-मातु नसावन * तिन बध हेतु बनहु केहि कारन

दो० धिक् अजानु भुजदण्ड मम, खड्ग चर्म्म धनु शूल।
रघुपति आयसु मिलत छन, करउँ भरत निर्मूल ॥ २४ ॥

हेतु न सम्पति, सकल असारा * दास रहत प्रभु विपति पहारा!
रघुपति कहेउ, न भरतहि दोषू * निपट अजान, अकारन रोषू
भरत अबूझ, अभिसन्धि[1] न ज्ञाना * अमिट, अनुज! विधिरचित विधाना
बहु कौशिल्या-लखन बुझावा * राम दयामय तनिक न भावा
मातहिं पुनि प्रबोधि कह वचना * आयसु मिलै आजु वन-गमना
दृग जल, कहेउ जननि इमि रोई * अब धौं मिलन सुवन! कब होई
बहु आराधि मंत्र जो पाये * राम-स्रवन[2] कौशिला सुनाये
चौदह वर्ष कुशल वन करहीं * अष्टलोकपति छाया धरहीं
विधि, हरि, गौरि, गनेश, कुमारा[3] * रमा, सरस्वति, रुद्र एगारा[4]
द्वादश भानु छत्र शिर धरहीं * छित-जल-थल सुत-मंगल करहीं

सबे जने विमाता शत्रुर मध्ये गणि * तार वाक्ये राज्य छाड़े कोथाओ ना शुनि
तोमा विना पितार मनेते नाइ आन * तुमि वने गेले पिता त्याजिवेन प्रान
तोमा विना पिता जाइबेन परलोके * प्रान त्यजिबेन माता तोमार पुत्र-शोके
एइ शोके पिता-माता मरिबे दु'जने * पिता-माता बध तुमि कर कि कारने
अकारणे हेर ए आजानु-बाहु-दण्ड * अकारणे धरि आमि धनुक प्रचण्ड
अकारणे धरि खड्ग चर्म्म भल्ल शूल * आज्ञा कर भरतेरे करिब निर्म्मूल
सकलि हइल व्यर्थ ए सब सम्पद * आमि दास थाकिते प्रभुर ए आपद
श्रीराम बलेन तार नाहि अपराध * भरत ना जाने किछु ए सब प्रमाद
अकारणे भरतेरे केन कर रोष * विधिर निर्ब्बन्ध इहा ताहार कि दोष
रामेरे प्रबोध देन कौशल्या लक्ष्मण * दयामय राम नाहि शुनिन वचन
मायेरे कहेन राम प्रबोध-वचन * आज्ञा कर माता आजि जाइ आमि वन
कौशल्या कहेन रामे सजल नयने * ना जानि हइबे कबे देखा तव सने
जे मंत्र कौशल्या पेये छिल आराधने * सेइ मंत्र दिल रानी श्री रामेर काने
चतुर्द्दश वर्ष वने थाकिबे कुशले * अष्ट लोकपाल राख आमार छाओयाले
ब्रह्मा विष्णु राखुन कार्त्तिक गणपति * लक्ष्मी सरस्वती रक्षा करुन पार्व्वती
एकादश रुद्र आर द्वादश जे रवि * जले-स्थले रक्षा तोमा करुन पृथिवी

१ षड्यंत्र २ कानों में ३ स्वामिकार्तिक ४ एकादश रुद्र।

चौदह वर्ष रहै मम जीवन * तौ सुत ! लौटि होय मम दरसन
बन्दि मातु पद, लीन बिदाई * सिय ढिग चले लखन-रघुराई
उदित कर्म मम सिय ! कछु आजू * वचन-विमातु मिलेउ बनसाजू
बीतेउ वर्ष ब्याहि घर आई * रचेउ फन्द बिच कैकइ माई
भरतहिं राजु तासु अभिलासा * सोइ कारन मम - हित बनबासा
चौदह वर्ष रहउँ बनचारी * निसि दिन प्रिय सेवहु महतारी

दो० जनकनन्दिनी बैन-पति, सुनि अति भई निरास ।
कहेउ चरन-श्रीनाथ बिन, केहि बिधि अवध निवास ॥ २५ ॥

नाथ ! परम गुरु तुम मम देवा * करि अनुगमन करउँ प्रभु सेवा
जियब संग पति, पति सहमरना * स्वामिन ! गति-नारी बिन पति ना
प्रियतम ! बस अकेल बनबासी * प्रस्तुत मग सेवा हित दासी
भरमत विविध दुःख बनदेसू * कछु चलि संग बटावउँ क्लेसू
कहौ जु, 'सिय ! वन विपति महाना' * प्रभु मुख दरस मिटैं दुख नाना
तव हित रोग शोक नहिं जाना * तव सेवा दुख सुखद महाना
उचित न संग चलब प्रिय ! तोरा * दण्डक वन दारुन अति घोरा
सिंह व्याघ्र निसिचर-दल फिरई * वयस बारि[1] साहस किमि करई
राजसदन बहु सुख बहु भोगू * दण्डक भ्रमन मूल - फल योगू

चौद्द वर्ष रहे यदि आमार जीवन * तबे तोमा सने पुनः हबे दर्शन
विदाय लइया राम मायेर चरणे * गेलेन लक्ष्मण सह सीता संभाषणे
श्रीराम बलेन सीता निज कर्म्म दोषे * विमातार वाक्ये आमि जाइ वनवासे
विवाह करिया एक वर्ष आछि घरे * हेन काले विमाता फेलिल महाफेरे
ताहार वचने आमि जाइ वनवास * भरतेरे राज्य दिते विमातार आश
चतुर्द्दश वर्ष आमि थाकि गिया वने * तावत् मायेर सेवा कर रात्रि दिने
जानकी बलेन मुख हइया निराश * स्वामि विना आमार किसेर गृहवास
तुमि से परम गुरु तुमि से देवता * तुमि यथा जाओ प्रभु आमि जाइ तथा
स्वामि विना स्त्री लोकेर नाहि आर गति * स्वामीर जीवने जीये - मरणे संहति
प्राणनाथ एकाकेन हबे वनवासी * पथेर दोसर हब संगे लह दासी
वने प्रभु भ्रमण करिबे नाना क्लेश * दुःख पासरिबे यदि दासी थाके पाश
यदि बल, सीता वने पावे नाना दुःख * मत दुःख घुचे यदि देखि तव मुख
तोमार कारणे रोग-शोक नाहि जाने * तोमार सेवाय दुःख सुख सम मानि
श्रीराम बलेन शुन जनक दुहिते * विषम दण्डक वन न जाइओ साथे
सिंह-व्याघ्र आछे तथा राक्षसी-राक्षस * बालिका हइवा केन करके साहस
अन्तःपुरे नाना भोगे थाक मनःसुखे * फल मूल खेये केन भ्रमिबे दण्डके

---

[1] कम उम्र ।

इत पर्यंक[1] सुखद सुखशयना * उत कुस - काँस चरन दुखदयना
दोउ विरूप हम-तुम छबि-हीना * होयँ निरखि दोउ प्रीति-विहीना
चौदह वर्ष अवधि करि पूरी * दोउ सुख करहिं, न कछु अति दूरी
तजि मन सोच, शांति करु धारन * फिरत विषम वन दनुज हजारन
काँपत अधर, कोप सुनि व्यापा * रामहिं कहेउ सहित संतापा
कवन हेतु पितु दिय श्रीचरना * पण्डित कहत अबुझ सम वचना
भय मानत राखत तिय तीरा * तिनहिं सराहिय किमि बलवीरा

दो० जेठ बंधु - सासन गहत, भरत न कीन विलंब ।
तहाँ, नारि तव, बोलिये, रहै कवन अवलंब ॥ २६ ॥

करगत राजु हरन छिन माहीं * नारि - हरन तहँ अचरज नाहीं
वन अनुगमन कष्ट कुस - घाता * प्रभु संगति तृन सम सुखदाता
वन भरमत तन लागै धूरी * लखौं अगरु - चन्दन सम रूरी[2]
तव सह जो निवास तरु - छाहीं * सो सुख सुलभ स्वर्ग मोहिं नाहीं
दुख, सुख सकल अहार, विहारा * मोहिं अनुभूति नाथ अनुसारा
उपजै छुधा तृषा श्रम कारन * निरखि श्याम छबि करौं निवारन
तप - उपवन बहु तीरथ पावन * दरस, भ्रमन गिरि विविधि सुहावन
शैशव, जब पितुधाम निवासा * मुनिजन कीन्ह भविष्य प्रकासा

तोमार सुसज्जा शय्या पालंक कोमल * कुशांकुरे विद्ध हबे चरण कमल
तुमि आमि दोंहे हव विकृत आकृति * दोंहे दोंहाकारे देखि ना पाइब प्रीति
चतुर्द्दश वर्ष गेले देख बुझि मने * एइ काल गेले सुखे थाकिब दूजने
चिन्ता ना करिओ कान्ते, क्षान्त हओ मने * विषम राक्षस गुला आछे सेइ वने
श्रीरामेर वचने सीतार ओष्ठ काँपे * कहेन रामेर प्रति कुपित सन्तापे
पण्डित हइया बूल निर्ब्बोधेर प्राय * केन हेन जने पिता दिलेन आमाय
निज नारी राखिते जे करे भय मने * देख ताय वीर बले कोन वीरजने
राज्य मिते भरत ना करिल अपेक्षा * तार राज्ये स्त्री तोमार किसे पारे रक्षा
जे जन ग्रहण करे राजत्व तोमार * लइबे तोमार नारी विलंब कि तार
तव संगे बेड़ाइते कुश-काँटा फुटे * तृणहेन वासि तुमि थाकिले निकटे
तव संगे थाकि जदि लागे धूलि गाय * अगरु-चन्दन-चुया[3] ज्ञान करि ताय
तव संगे थाकि यदि पाइ तरु मूल * स्वर्गधाम नहे कभु तार सम तुल्य
तव दुःखे दुःख मम सुखे सुखभार * आहारे आहार आर विहारे विहार
क्षुधा-तृषा लागे यदि भ्रमिया कानन * श्याम रूप निरखिया करिब वारण
बहुतीर्थ देखिब अनेक तपोवन * नाना विधि पर्व्वते करिब आरोहण
लखन पितार घरे छिलाम शैशवे * बलितेन आमाके देखिवा मुनि संबे

१ पलँग २ सचमुच ३ चोवा (चोभा) ।

सुनहु जनक! सिय सुता तुम्हारी * पति सहचरी होय बनचारी
विप्र वचन, प्रभु! कबहुँ न व्यर्था * विधि वनवास रचेउ मम अर्था
जो मोहिं तजौ, तजउँ मैं प्राना * कतहुँ न तिय - वध पातक त्राना
कहेउ राम, बहु बिधि मैं जाँचा * सिय! संकल्प अटल तव साँचा
प्रिय! वनवास हेतु तव प्रीता * अभरन[1] तजहु, चलहु वनरीती
उपजेउ मोद सुनत वैदेही * भूषन विविध सकल तजि देही
सम्मुख जे सुपात्र द्विज वृन्दा * सौंपि कहेउ, उर अमित अनन्दा
द्विज - वनितन अर्पन परिधाना * द्विजगन! सफल करहु मम दाना

दो० निज संपति-धन-बसन बहु, सिय वितरित सब कीन।
चितइ लखन तन राम पुनि, मधुर सिखावन दीन ॥ २७ ॥

पालहु प्रजा, देस रहि, नीके * दासी दास राखि मन सबके
राजलोभ मन कबहुँ न लेसू * पुरजन परिजन हरहु कलेसू
जब पितु-जननि शोक मम करहीं * तव मुख निरखि शांति कछु लहहीं
हम तुम बिलग, अनुज! कहुँ नाहीं * मम वियोग, लखि तुमहिं भुलाहीं
लखन कहउ, चलिहौं प्रभु साथा * अनुचर जानि, लेहु रघुनाथा
मैं तुम एक, विदित विधि पाहीं * बिन मम, नाथ! काज वन नाहीं
संग मातु सिय, वन-वन फिरहीं * बिन सेवक अपार दुख लहहीं

शुन हे जनक राज, तोमार दुहिता * करिबेन वनवास पतिर सहिता
ब्राह्मणेर - कथा कभु ना हय खण्डन * बनबास आछे मम ललाटे लिखन
तुमि छाड़ि गेले आमि त्याजिब जीवन * स्त्री वध हइले नाहि पाप विमोचन
श्रीराम बलेन बुझिलाम तव मन * तोमाय परीक्षा करिलाम एतक्षण
हइयाछे वनवास हेतु तव मन * खुलिया फेलह तव गाय आभरण
एतेक शुनिया सीता हरिख अंतरे * खुलिलेन अलंकार या छिल शरीरे
सन्मुखे देखेन यत ब्राह्मण सज्जन * ता सबारे देन तिनि निज आभरण
आभरण समर्पिया कन सीता वाणी * भूखन परेन येन तोमार ब्राह्मणी
सीतार भाण्डारे छिल बहु वस्त्र - धन * से सकल करिलेन तिनि वितरण
श्रीराम बलेन शुन अनुज लक्ष्मण * देशे ते थाकिया करि सबार पालन
दास-दासी सबाकारे करि ओ जिज्ञासा * राज्य लइवारे भाइ ना करिह आशा
पिता-माता कातर हबेन मम शोके * कतक हबेन शान्त तव मुख देखे
जेइ तुमि सेइ आमि शुनह लक्ष्मण * एकेरे देखिले हय शोक निवारण
लक्ष्मण बलेन आमि हइ अग्रसर * संगे आमि थाकिब हइया अनुचर
जेइ तुमि सेइ आमि विधि ताह जाने * आमि यदि ग्रह थाकि कि करिबे बने
सीता संगे के मने भ्रमिबे वने-बने * सेवके छाड़िले दुःख पावे दुइ जने

---

१ आभूषण।

राजलली दुख कबहुँ न जाना * बिना दास वन विपति महाना
जो वन-गमन—कहेउ रघुनायक * बाँधहु लषन ! विषम धनुसायक
विकट दनुज दल, वन रन घोरा * जीतिय, धरि धनुवान कठोरा
आयसु पाय बिलंब न लाये * अतुल तीक्ष्ण सर लखन जुटाये
धन भण्डार यतक[1] यहि लागे[2] * आनहु अनुज ! धरहु मम आगे
धन मम कछु न प्रयोजन आना[3] * करहु सकल विप्रन हित दाना
कुल प्रोहित ऋषि मुनिन समाजू * दै धन तृप्त करहु तिन आजू
द्विज कुलीन जहँ लग जहँ पावौ * मन वाञ्छित तिन आस पुरावौ
दुखी दरिद्र अपंग[4] भिखारी * जस चाहना, करौ अनुसारी

दो० मम वियोग जिन वेदना, विकल जहाँ जे लोक।
वर्ष चतुर्दश हेतु धन, दै मेटहु तिन शोक ॥ २८ ॥

आयसु पाय राम रघुराई * धरेउ विपुल धन संपति लाई
अमित दान ! धन बचेउ न कोशा * राम सबन मृदु बैनन तोषा
करि मम याद सोक नहिं काजा * भरत करइँ प्रतिपाल समाजा
भरत विमल तन-मन नहिं दोषू * तिन आचरन सदा संतोषू
करि उत्सर्ग[5] रत्न बहु नाना * कोष न शेष, अखिल[6] किय दाना
बचेउ न कछु, सब द्रव्य लुटावा * त्रिजटा नाम विप्र सुनि पावा

राजार कुमारी सीता दुःख नाहिं जाने * सेवक बिहने दुःख पावेन कानने
श्रीराम बलेन भाइ जावे यदि वन * बाछिया धनुक-वाण लह रे लक्ष्मण
विषम राक्षस सब आछे सेइ वने * धनुर्वाण लह येन जयी हइ रणे
पाइया रामेर आज्ञा लक्ष्मण सत्वर * भाल-भाल वाण सब बाँधिला विस्तर
श्रीराम बलेन, शुन लक्ष्मण सत्वरे * तल्लास करह धन कि आछे भाण्डारे
धने आर आमार नाहिक प्रयोजन * ब्राह्मण सज्जने देह आछे यत धन
मुनि-ऋिष आदि करि कुलपुरोहित * से सबारे धन दिया तोषह त्वरित
बाछिया-बाछिया आनि कुलीन ब्राह्मण * येवा यत चाहे तारे देह तत धन
अनेक दरिद्र आछे भिक्षा मागि खाय * से सबारे देह धन येवा यत चाय
मम दुःखे यत लोक हइबेक दुःखी * चतुर्दश वर्ष येन हय तारा सुखी
पाइला लक्ष्मण यदि श्रीराम आदेश * ताँहार सम्मुखे धन आनेन अशेष
भाण्डार करेन शून्य धन वितरणे * सवारे तोषेन राम मधुर वचने
आमालागि तोमरा न कारिओ क्रन्दन * करिबे भरत भाइ सवारे पालन
कोन दोषे नाहि भाइ भरत-शरीरे * बड़ तुष्ट आछि आमि तार व्यवहारे
नाना रत्न करिलेन राम परिहार * दाने शून्य करिलेन यतेक भाण्डार
सकल भाण्डार शून्य नाहि आर धन * हेन काले वार्त्ता पाय त्रिजट ब्राह्मण

---

१ जितना भी २ इसी समय ३ अन्य, इतर ४ लाचार ५ त्याग ६ सर्वस्व।

निपट दीन, सुनि विरद महाना * मति न धीर सुनि अतुलित दाना
गति असमर्थ, विलोचन हीना * गृहनी[1] टेरि सिखावन दीना
याचक राम अगाध्य बनावा * हम दोउ जरठ[2] मरन नगिचावा
तुम अशक मैं नारि बिचारी * उदर चलै किमि ? संकट भारी
गिरत-परत द्विज लकुटि[3] सहारे * कीन गोहार राम के द्वारे
त्रिजटा नाम, शिथिल मम-गाता * द्विज दरिद्र मोहिं रचेउ विधाता
गृह ब्राह्मणी, जरठ सुतहीना * मरत दोऊ नित अन्न विहीना
चलेउँ लकुटि बल, करहु सनाथा * दीनहिं गति न विना रघुनाथा
कहेउ राम, धन शेष न लेसू * लख धेनु लै गमनौ देसू
लहि गोदान मोद अधिकाई * चलि गोसदन समेटत गाई

दो० शिखा बाँधि पुनि छड़ी लै, गिरत परत पग दीन।
वमन धेनु पकरत विफल, लखेउ सबन द्विज दीन ॥ २९ ॥

सुरभिन[4] द्विज भुरमुट भयकारी * हसत कोऊ, कोउ निरखि दुखारी
ब्रह्मघात पातक शिर जानी * रघुपति कहेउ सुकोमल बानी
कहत सकोच, एक लख गाई * कठिन सम्हारब हे द्विजराई !
संकट एक धेनु बस कीन्हे * जियहु न धेनु लात हनि दीन्हे
गैयन सहित देहुँ मैं ग्वाला * करै सदा सुरभिन प्रतिपाला

बड़इ दरिद्र से त्रिजट नाम धरे * दान-कथा शुनिआ से धड़ फड़ करे
चलिते शकति नाइ चक्षु क्षीण हय * ब्राह्मणी ताहाके हित उपदेश कय
दीनेरे करेन धनी दिया राम धन * तुमि आमि बुड़ा-बुड़ी मरि दुइजन
तुमि वृद्ध आमि वृद्ध दुःख ये अपार * के आर पुषिबे कोथा मिलिबे आहार
शुनिया ब्राह्मण तबे नड़ि भर करे * अति कष्टे गिया कहे रामेर गोचरे
आमि द्विज दरिद्र त्रिजट नाम धरि * वृद्ध काले ब्राह्मणी के पुषिते ना पारि
पुत्रहीन आमारा के करिबे पालन * अनाहारे बुड़ा - बुड़ी मरि दुइ जन
नड़ि-भर करिया ये आइनु संप्रति * तोमा बिना दरिद्रेर नाहि आर गति
श्रीराम बलेन, द्विज, आसियाछ शेषे * धन नाइ, लक्ष धेनु ल'ये जाह देशे
धेनु-दान पेये द्विज हरिष अन्तरे * कापड़ आँटिया जाय पालेर भितरे
वृद्ध करि कूल बाँधि नड़ि करि हाते * पालेते प्रवेश करे उठिते - पड़िते
बुड़ार विक्रम देखि भावे सर्व्व जने * धेनुते मारिबे आजि ए वृद्ध ब्राह्मणे
हासिया विह्वल केह, केरो व विषाद * ब्राह्मणेर बध हेतु घटाल प्रमाद
श्रीराम बलेन, द्विज, कहिते डराइ * ना पारिबे लइबारे एक लक्ष गाइ
एक धेनु लइते तोमार ए संकट * मरिबारे जाह केन धेनुर निकट
धेनुर सहित दान दिलाम गोयाल * गोयाले राखिबे धेनु थाके यतकाल

१ पत्नी ने २ वृद्ध ३ लाठी ४ गायों के साथ।

निर्धन अति द्विज, मोहिं प्रतीती * लेहु इतर धन जो तव प्रीती
अस अभिलाष न कछु रघुनन्दन * गोधन आन[1] न नाथ प्रयोजन
अमित क्षीर सुख दोउ नित लहहीं * कतक बेंचि धन संग्रह करहीं
सब की गति तुम नाथ-अनाथा * वरनि सकै को तव गुनगाथा
गो-लख लै द्विज चलेउ निवासा * अवधकाण्ड वरनेउ कृतिवासा

श्री राम-लक्ष्मण-सीता की वन-यात्रा और शृंगवेरपुर गमन

रघुपति सवन विभव विस्तारे * कौतुक ! दरिद धनी भये सारे
तजि प्रभु राज चले वनवासा * शिर धुनि विकल सकल निज वासा
पुर तजि चले अतुल दोउ वीरा * युगुल मध्य छबि सीय सरीरा
अवध प्रजा विलाप अति भारी * सिय पाछे धाईं पुरनारी
सकी न जेहि रवि-किरन निहारी * सो सिय आजु प्रकट वनचारी
चतुर्दोल सुवरन असवारी * सो रघुपति भूतल पदचारी

दो० देखी अस अनरीति जनि, कबहुँ न सुनेउ प्रसंग।
बाल वृद्ध वनिता सकल, रोय उठे इकसंग ॥ ३० ॥

तपवन - गमन राम जग - नाथा * पितुपद चले नवावन माथा
बुद्धि लोप दसरथ हत ज्ञाना * सुत-वनगमन ! बचैं किमि प्राना
नृप - मति कुमति कैकई नासी * राम सरिस सुत किय वनवासी

अनुमाने बुझि तुमि बड़इ निर्धन * आज्ञा कर, दिते पारि अन्य किछु धन
द्विज बले प्रभु, नाहि चाहि आर धन * धेनु-धन बिना नाहि अन्य प्रयोजन
बुड़ा-बुड़ी धेनु-दुग्ध खाइब अपार * कत दुग्ध बिकि दिया पूरिब भांडार
अनाथेर नाथ तुमि सकलेर गति * कहिते तोमार गुण काहार शकति
एक लक्ष धेनु ल'ये द्विज गेल देशे * रचिल अयोध्याकांड कवि कृत्तिवासे

श्री राम, सीता ओ लक्ष्मणेर वनवास यात्रा ओ शृंगवेरपुरे गमन

रामेर प्रसादे बाड़े सबार ऐश्वर्य्य * दरिद्र हइल धनी शुनिते आश्चर्य्य
राज्य खण्ड छाड़ि राम जान वनवासे * शिरे हाथ दिया कांदे सबे निजवासे
माझे सीता आगे-पाछे दुइ महावीर * तिन जन हइलेन पुरीर बाहिर
स्त्री-पुरुष कांदि यत अयोध्या-नगरी * जानकीर पिछे जाय अयोध्यार नारी
ये सीता ना देखि तेन सूर्य्यार किरण * सेइ सीता वने जान देखे सर्व्वजन
जेइ राम भ्रमितेन स्वर्ण चतुर्द्दोले * सेइ प्रभु राम पथ बाहेन भूतले
कोथाओ ना देखिहेन कोथाओ ना शुनि * हाहाकार करे वृद्ध - बालक - रमणी
जगतेर नाथ राम जान तपोवने * विदाय लइते जान पितार चरणे
बुद्धि नाहि भूपतिर हरियाछे ज्ञान * राम बने गेले तांर किसे बांचे प्रान
राजारे पागल कइल कैकेयी राक्षसी * रामहेन पुत्रे हाय कैल वनवासी

---

१ अन्य।

निकट मरन - नृप होत प्रतीती * सोइ कारन मति अस बिपरीती
कानन चले सहित सिय स्वामी * तजि सुख सकल लखन अनुगामी
सब जन करइँ अनुगमन रामा * वर्ष चतुर्दश वन विश्रामा
पुर अरु धाम अखिल तजि देई * बिलसइँ भरत - सहित कैकेई
निवसइँ भालु श्रृगाल अगाधा[1] * राजहिं माय पूत बिन बाधा
रसना सबन बिरद[2] रघुबीरा * तीनिउ[3] चले, उतै नृप तीरा
पहुँचे जब बरोठ रघुनन्दन * बिलपत सुनेउ सदन अजनन्दन
अहह कैकई तव विष मारन * सब बिधि मिटेउँ, कुटिल! तव कारन
कीन्ह निसिचरी रघुकुल हासा * हाय ! राम सम सुत बनवासा
किमि वनगमन निरखिहौं नन्दन * लखि पयान मम प्रान विसर्जन
मोह न प्रान, एक मोहिं शोकू * परवस नारि अजस चहुँ लोकू
जीते विषद[4] भूप रन सर्वा * काँपत देव दनुज गन्धर्वा
जीतेउँ समर असुर - पति संबर * अर्द्धासन मोहिं देत पुरंदर

दो० नारि-वचन निर्बन्ध फँसि, दसरथ तजे परान।
रहै चिरंतन अमर यह, जग अपकीर्ति महान ॥ ३१ ॥

लखि मम अन्त, सिखै नर नीके * रहै अधीन कबहुँ जनि तिय के
तव पातक तव सुतहिं उतारा * तुम दोउ सन मम आजु किनारा[5]

मने बुझि राजार ये निकट मरण * विपरीत बुद्धि हय, एइ से कारण
जानकी सहित राम जान तपोवन * राज्य-सुख भोग छाड़ि चलिल लक्ष्मण
पुरी शुद्ध सबे जाइ श्रीरामेर सने * चौद्दावर्ष एक ठाँइ थाकि गिया वने
अयोध्यार घर-द्वार फेलाइ भांगिया * कैकेयी करुक राज्य भरते लइया
शृगाल-गर्द्दभ थाक अयोध्या नगरे * माये - पोये राजत्व करुक एकेश्वरे
एइ रूपे श्रीरामेरे सकले बाखाने * राजार निकटे द्रुत जान तिन जने
प्रकोष्ठेर बाहिरेते रहे तिन जन * आवास भितरे राजा करेन क्रन्दन
भूपति बलेन, रे कैकेयि भुजंगिनि * तोरे आनि मजिलाम सवंशे आपनि
रघुवंश-क्षय हेतु आइलि राक्षसि * राम हेन पुत्रके करिलि वनवासी
के मने देखिब आमि राम जाय वन * राम वने गेले आमि त्यजिब जीवन
प्रान जाक, ताहे मम नाहि कोन शोक * आमारे स्त्रीवश बलि घुषिवेक लोक
बड़-बड़ राजा आमि जिनिलाम रणे * देव-दैत्य-गन्धर्व्व काँपये मोर बाणे
जेइ राजा जिनिलेक दानव सम्बर * जार अर्द्धासने स्थान देन पुरन्दर
सेइ राजा दशरथ स्त्री लागिया मरे * एइ अपकीर्त्ति मोर थाकिल संसारे
स्त्रीर वश ना हइबे अन्य कोन नर * आमार मरणे लोक शिखिल विस्तर
वर्ज्जिबे भरत तोर एइ अनाचारे * आमि वर्ज्जिलाम तोरे आर भरतेरे

---

१ अगणित २ प्रशंसा ३ राम सीता-लक्ष्मण ४ बड़े-बड़े ५ कोई सम्बन्ध नहीं।

तजउँ तुमहिं अरु भरत कुमारा * तर्पन श्राद्ध न कछु स्वीकारा
सुनहिं बरोठ तीनि बन-चारी * विलपत नृप जिमि गिरा उचारी
पितु की व्यथा-व्यथित दोउ भाई * उठे रोय लखि तात-रुनाई
अन्तर्सदन भूप दुखलीना * पहुँचि सुमंत्र दण्डवत कीना
नाथ! राम, सिय-लखन समेतू * आयसु चहत बनगमन हेतू
सचिव! मूढ़ मैं, बुद्धि गवाँई * रानि सात शत आनहु जाई
चलेउ सुमंत्र मानि नृपबानी * आनेउ वेगि सात शत रानी
सोहैं सकल भूप चहुं घेरी * चारु चन्द्र चहुँ नखतन ढेरी
पुनि सुमंत्र नृप-आज्ञा पाई * आनेउ सीय, लखन, रघुराई
पितु पद बन्देउ रघुकुलकेतू * आयसु चहेउ गमन बन-हेतू
सुनत न थिर, नृप रुदन अपारा * सुलभ न सुत अब मिलन हमारा
इत निवास तौ प्रान नसावौं * तुम सँग चलि कानन सुख पावौं
सुनि समुझाय कही रघुनाथा * पितु अरण्य अनुचित सुत-साथा
तौ इक रैन रहौ रघुवीरा * निसि निवास कीजिय इक-तीरा

दो० निरखि तात! भरि नयन छबि, रैन[1] लहउँ आनन्द।
आजु बाद प्रिय सुवन! मोहिं, दुर्लभ तव मुखचन्द ॥ ३२ ॥

आजि हैते तोर आमि करिनु बर्ज्जन * ना लइब भरतेर श्राद्ध वा तर्पण
थाकि अन्य प्रकोष्ठते ताँरा तिनजन * शुनेन राजार सर्व्व-विलाप-वचन
राजार दुःखेते दुखी श्रीराम-लक्ष्मण * राजार क्रन्दने कान्दे भाइ दुइजन
आवास भितरे देखे, कान्देन भूपति * हेन काले उपनीत सुमंत्र-सारथि
जोड़ हाते वार्त्ता कहे राजार गोचर * निवेदन, अवधान कर नृपवर
श्रीराम लक्ष्मण सीता जान आजि वने * बिदाय लइते आसिलेन तिन जने
भूपति बलेन, मत्र, नाहि मम ज्ञान * सातशत महाराणी आन मोरे स्थान
पाइया राजार आज्ञा सुमंत्र सारथि * सातशत महाराणी आने शीघ्रगति
सातशत महाराणी चारिदिके बँसे * तारागण-मध्ये येन चन्द्रमा प्रकाशे
सुमंत्र राजाज्ञा मते चलिल तखन * श्रीराम-लक्ष्मण सीता आने तिनजन
जोड़ हाते बन्दे राम पितार चरणे * आज्ञा कर, बने जाइ एइ तिन जने
शिरे घात हाने राजा करे हाहाकार * मम संगे देखा बाछा ना हइबे आर
हेथा ना रहिब आमि, ना रबे जीवन * तोमार सहित राम, जाब तपोवन
श्रीराम बलेन, पिता, ए नहे बिहित * पुत्रसंगे पिता जाय, ए नहे उचित
भूपति बलेन, राम, थाक एक राति * एक रात्रि तव सने करिब बसति
भालमते देखिब तोमार सुबदन * पुनर्व्वार मुखचन्द्र ना हबे दर्शन

[1] रात्रिभर।

रुकहिं रैन, पितु तदपि बिछोहा * निसि-हित सत्य उलंघ न सोहा
तिथि वनगमन सुनिश्चित आजू * तजि, विमातु-मन-मलिन न काजू
तपसिन अन्न न उचित लखाई * सेवहिं कन्द मूल वन जाई
सत्य पालि, पितु ऋन उद्धारी * कुल - भूषन सोइ सुत जसकारी
कह नृप, हे सुमंत्र! मन दीजै * हय-गज-रतन बहुल धन लीजै
वन - प्रदेश बहु पुण्यस्थाना * द्विज-तपसिन लखि करहु प्रदाना
जस - जस आयसु देहिं नरेसू * तस उपजत कैकई कलेसू
मुख मलीन काया कुम्हलानी * नृप तन हेरि कहेउ कटुबानी
भरतहिं राज देन तुम हारी * कुटिल हृदय, कस पाँव पछारी
तवकुल सगर सुकीर्ति प्रकासा * सुवन - जेठ असमञ्ज निकासा
तुमहिं व्यथा त्यागत रघुराई * पालन - सत्य तुमहिं दुखदाई
सुनि कटुवचन कहेउ नृप बानी * पापमयी सुनु कैकयिरानी
दुराचार असमञ्ज कुमारा * गर धरि बहु बालकन सँहारा
आय सगर ढिग तिन पितु-जननी * दुखियन कही भूप-सुत करनी
तजि तव राज, अन्त कहुँ जाहीं * तव सुत जुलुम सहन अब नाहीं
जो पुनि तुमहिं प्रजा - अनुरागा * करौ कुअँर असमंजस त्यागा

श्रीराम बलेन, यदि निश्चित गमन * एक रात्रि लागि केन सत्य उल्लंघन
आजि आमि वने जाब, आछे ए निर्व्वन्ध * ना गेले विमाता मने भाविबेन मन्द
आजि हैते अन्न आमि करिनु बर्ज्जन * वने गिया फल-मूल करिब भक्षण
तारे पुत्र बलि ये कुलेर अलंकार * पितृसत्य पालिया शोधये पितृधार
भूपति बलेन, शुन, सुमंत्र वचन * अश्व हस्ती संगे देह आर बहुधन
अरण्येर मध्ये आछे बहु पुण्य स्थान * ब्राह्मण तपस्वी देखि करिबे प्रदान
धन दिते राजा यदि करेन आश्वास * कैकेयी अन्तरे दुखी, छाड़िल निःश्वास
सर्व्वांग हइल शुष्क, म्लान हैल मुख * राजारे निन्दिल बहु पेये मन दुख
भरतेरे राज्य दिते करि अंगीकार * कुटिल हृदय, कर अन्यथा ताहार
तव वंशे छिलेन सगर महाशय * असमञ्ज - पुत्रे बर्ज्जे प्रधान तनय
रामेरे बर्ज्जिते आजि मने लागे व्यथा * आपनि करिया सत्य करिले अन्यथा
एत यदि भूपतिरे कहिल कैकेयी * नृपति कहेन, शोन् पापीयसि कहि
सगरेर पुत्र असमञ्ज दुराचार * गला चापि बालकेरे करित संहार
तार माता-पिता पाय दुःख पुत्रशोके * जानाइल सगर - राजाय प्रजालोके
तव राज्य छाड़ि राजा, जाब अन्य देश * असमञ्ज प्रजागणे देय बड़ क्लेश
केमने थाकिबे प्रजा, ये देशे एमन * प्रजा यदि चाह, पुत्रे करह बर्ज्जन

दो० सुनत तजेउ असमञ्ज खल, सगर लोकमत मानि।
तिल न दोष, केहि विधि तजौं, रघुनन्दन, कहु रानि! ॥ ३३ ॥

जगजीवन जगहित मम रामा * केहि विधि कहउँ, तजौ सुत! धामा
सुनि पितु-वचन कहेउ रघुराई * उचित विमातु - वचन अधिकाई
राज-पाट तजि बन पथ धारन * हय-गज-धन तेहि सकल अकारन
दण्ड पाणि[1] बल्कल बस अंगा * केवल सिया - लखन मम संगा
चर्चा परत कैकई काना * तुरत दीन बल्कल परिधाना[2]
देखेउ गहत बसन रघुनाथा * रुकेउ न रुदन अयुध्यानाथा[3]
लखन राम प्रिय बल्कल धारा * रुदन सात शत रानि अपारा
सिय-तन पट-तरु[4] जबहिं निहारा * चहुँ लोचनन, बही जलधारा
हे हरि! बमन गाछ सियकेरे * पीर सूल सम हिय नृप केरे
दया न लखि रघुवंश-किशोरा * शिला सरिस हिय कैकयि! तोरा
डसेसि एक! विष तीनिहुँ व्यापा * लखन - सिया किमि वन-संतापा
पितु कर वचन राम शिर भारा * लछिमन-सिय कस देस निकारा
विकल, बसन लखि वधू, नरेसू * किय निषेध परिजन सियवेसू
पतिब्रत हेतु चली पति संगा * पितु-प्रन भार न कहुँ सिय-अंगा
सुनत सुमंत्र सदन तन धाये * अभरन रतन दिव्य बहु लाये

असमञ्जे बर्ज्जे राजा लोक-अनुरोधे * श्रीरामेरे बर्ज्जि आमि कोन् अपराधे
जगनेर हित राम जगत - जीवन * हेन रामे के कहिबे, जाओ तुमि वन
लखन बलेन राम पितृ विद्यमाने * भाल युक्ति बलिलेन माता तव स्थाने
राज्य छाड़ि याहार जाइते हय वन * अश्व-हस्ति-धने तार कोन् प्रयोजन
गाछेर बाकल परि दण्ड करि हाते * जानकी लक्ष्मण मात्र जाइबेक साथे
बाकल परिबे राम, कैकेयी ता शुने * बाकल राखिया छिल, दिल ततक्षणे
बाकल आनिया दिल श्रीरामेर हाते * कान्देन बाकल देखि राजा दशरथे
लक्ष्मणेर सीतार बाकल तिन खानि * रोदन करेन देखि सातशत रानी
अश्रुजल सबाकार करे छल - छल * केमने परिबे सीता गाछेर बाकल
हरि - हरि स्मरण करये सर्व्वलोके * बज्राघात हय येन भूपतिर बुके
सबे बले कैकेयि, पाषाण तोर हिया * तिलेक ना हय दया श्रीरामे देखिया
एक जने दंशिया दंशिल तिनजने * लक्ष्मण - सीतारे केन पाठाइलि बने
पितृसत्य पालिते श्रीराम जान बन * जानकी-लक्ष्मण जान किसेर कारण
बधूर बाकल देखि राजार क्रन्दन * पातृ-मित्र बले, सीता परुन बसन
पितृसत्य पुत्र पाले, बधूर कि दाय * पतिव्रता सीता देवी पश्चात गोड़ाय
नानारत्ने परिपूर्ण राजार भाण्डार * सुमंत्र सुनिया आने दिव्य अलंकार

---

१ हाथ में २ वस्त्र ३ दशरथ ४ वृक्ष की छाल के वस्त्र।

पग नूपुर, कंकन कर सोहा * मकराकित कुण्डल मन मोहा
दो० रत्नावलि, कटि करधनी, अनुपम बाजूबंद।
अँगुरिन हीरक मुद्रिका, सिय छवि करत दुचंद ॥ २४ ॥
चुरियाँ शंख सुरम्य सुहावन * भूषन विविधि विचित्र लुभावन
अनुपम वसन सजी इमि सीता * मनहुँ सकल लोकन छवि जीता
अभरन-छवि, सिय-छवि अनुरूपा * कीन प्रनाम जाय ढिग भूपा
बन्दि ससुर-पद, लीन बिदाई * सास समीप जोरि कर आई
मन धरि सुनु सिय सीख हमारी * निसिदिन पति-सेवा सुखकारी
राजबधू पुनि राजकुमारी * तव आचरन अनुसरइँ नारी
पति निर्धन धनवन्त समाना * वनितन¹ उचित अन्त नहिं ध्याना
मातु! सीख तव भल पतिसेवा * पूजउँ सदा चरन पतिदेवा
सोइ लालसा, न मन कछु ध्याना * सोइ कारन वन, मातु! पयाना
धर्म-सीख बहु पितुगृह पावा * इतर नारि सम मोर न भावा²
मम-हित-रत सर्वोपरि जननी * दिय उपदेस सदा सुभकरनी
भाग सराहेउ सुनि कौशिल्या * लहेउँ धन्य बहुआरि³ तव तुल्या
सियहिं प्रबोधि, राम सों कहेऊ * तप-उपवन सचेत सुत! रहेऊ
त्रिभुवन चहुँ सिय छवि उजियारी * सावधान! भय कानन भारी

जानकी परेन ताड़ तोड़न नूपुर * मकर-कुण्डल हार अपूर्व्व केयूर
मणिमय माला आर विचित्र पाशुलि * हीरार अंगुरी परि शोभिल अंगुलि
दुइ हाते शंख तार अद्भुत निर्माण * एइरूपे करिल भूषण परिधान
पट वस्त्र परिलेन अति मनोहर * त्रैलोक्य जिनिया रूप धरिल सुन्दर
येमन भूषण तार तेमनि आकार * श्वशुर जानकी दुवा करे नमस्कार
विदाय लइया सीता श्वशुर-चरणे * जोड़हात अरि रहे श्वश्रु विद्यमाने
कौशल्या कहेन, सीता, शुनु सावधाने * स्वामि सेवा सतत करिबे रात्रि दिने
नृपतिर बहुयारी, राजार कुमारी * तोमार आचारे आचरिबे अन्य नारी
निर्धन हउक स्वामी अथवा सधन * स्वामि विन स्त्रीलोकेर अन्ये नहे मन
जानकी बलेन, गो कौशल्या ठाकुरानि * स्वामि सेवा करिते जे आमि भालजानि
स्वामि सेवा करि मात्र, एइ आमि चाइ * से कारणे ठाकुरानि, वनवासे जाइ
धर्म-कर्म यत करियाछि पितृ घरे * इतर स्त्रीलोक प्राय ना भाव आमारे
मायेर अधिक जे आमार भाव व्यथा * हित उपदेश ताइ शिखाइला माता
ताँर कथा शुनिया कहेन महाराणी * तोमा हेन बधू आमि भाग्य बलि मानि
बधूर प्रबोध दिया बुझान श्रीरामे * सतर्क थाकिओ राम, मुनिर आश्रमे
जानकीर रूपे चमत्कृत त्रिभुवन * सावधाने रबे राम भयानक वन

---

१ स्त्रियों को २ विचार ३ बहू।

कहेउ सुमित्रा पुनि निज - नन्दन * पितु सम जेठ बन्धु रघुनन्दन
सदा देव सम सेवहु भ्राता * मों सन अधिक जानकी माता
दो० लखन - मातु तन हेरि पुनि, कहेउ कोसलाधीस ।
करहिं तीनि जन बन - गमन, मातु चहौं आसीस ॥ ३५ ॥
कानन तीनि समोद निवासू * त्रिभुवन तिनहिं न कहुँ, भय-त्रासू
पुनि बन्दना सात शत माई * रघुपति याचत सबन बिदाई
बहुरि प्रणाम कैकयी - चरना * अनुमति मातु मिलै बनगमना
भली - बुरी निकसी कछु बानी * छमहु, मातु ! मन गिला न मानी
कुपित पापमति मौन सुहावा * राम हेत मुख शब्द न आवा
जब लौं बन, सौंपहुँ पितु, माता[1] * सब विधि जतन करहु सुख ताता
आस न प्रान, कहेउ पितुदेवा * किमि तव जननि करै मम सेवा
तात ! एक अनुरोध न टारौ * रथ चढ़ि दिवस-तीनि पग धारौ
लख भूपति—अनुमति रघुनन्दन * निरखि सुमंत्र सजायेउ स्यन्दन
सहित अनुज-सिय रथ, भगवाना * लखन सवाँरेउ आयुध नाना
तजेउ राजु वन-पथ प्रभु लीन्हा * बहु नर - नारि अनुगमन कीन्हा
धाये अमित, अवधपुर वासी * राज - सदन के सकल निवासी
हे सुमंत्र ! रोकहु कछु स्यंदन * लखइँ चन्द्रमुख - छबि - रघुन्दन

सुमित्रा बलेन शुन तनय लक्ष्मण * देव ज्ञाने श्रीरामे देखिबे सर्व्वक्षण
ज्येष्ठभ्राता पितृ तुल्य सर्व्वशास्त्रे जानि * आमार अधिक तव सीता ठाकुरानी
श्रीराम बलेन, शुन सुमित्रा सताइ * आशीर्व्वाद कर, आमि वनवास जाइ
वनेते तिनेर तिन थाकिब दोसर * त्रिभुवन काहरेओ नाहि मोर डर
बन्देन सबारे राम, यत राजरानी * सबाकारे ठाँइ राम मागेन मेलानि
नमस्कार करिलेन कैकेयी - चरणे * अनुमति कर माता जाइ आमि वने
भालमन्द बलि याछि दुरक्षर बानी * मने किछु ना करिह, देहगो मेलानि
पापिष्ठा कैकेयी ताहे अति क्रूरमति * भालमन्द ना बलिल श्रीरामेर प्रति
मायेरे सँपेन राम नृपतिर पाय * यावत् ना आसि, पिता पालिह माताय
राजा बलिलेन यदि रहे ए जीवन * तबे त तोमार माये करिब पालन
आमार ए आज्ञा राम, ना कर लंघन * तिन दिन रथे चढ़ि करह गमन
राजाज्ञाय रथ आने सुमंत्र सारथि * जाइबेन तिनदिन रथे रघुपति
श्रीराम लक्ष्मण सीता उठिलेन रथे * तोलेन आयुध नाना लक्ष्मण ताहाते
राज्यखण्ड छाड़िया श्रीराम जान बने * पाछे-पाछे धाय कत स्त्री पुरुष गणे
भांगिल सकल राज्य अयोध्या नगरी * श्रीरामेर पाछे धाय सब अन्तःपुरी
डाक दिया सुमंत्रे बलिछे सर्व्वजन * रथ राख श्रीरामेर देखि चन्द्रानन

१ कौशल्या के प्रति ।

अरुझत काँट, हँकत, नृप धावहिं * सुतन-सीय-तन दीठि जमावहिं
सुनहु सुमंत्र कहेउ रघुराई * पितु - दुर्दसा दुसह दुखदायी
रथ - गति वेग करउ यहि रूपा * सुलभ होय जनि दरसन - भूपा

दो० सुनि सुमंत्र बोले बचन, तव आयसु मम सीस।
तदपि याचना कछु करौं, सुनउ विनय जगदीस ॥ ३६ ॥

पुरजन परिजन सहित नरेसू * रथ अनुसरत अखिल, तजि देसू
तव निति दरसन तिनहिं सुखारी * कोउ न देन पग चहत पछारी
राज, प्रजा, परिवार न कामा * मानहु कथन, कहेउ श्रीरामा
रथ गतिवान करौ यहि रूपा * झलक न पाय सकैं मम भूपा
आयसु धारि तुरंग बढ़ावा * पवन - वेग स्यन्दन गति पावा
ओझल भयेउ दरस कछु काला * गिरे अचेत अवनि नरपाला
सबन सम्हारि महीप उठावा * धूरि पोंछि मुख जल सरसावा
गत दिन एक तदपि अति म्लाना * जीवन कठिन सबन अनुमाना
ग्रसित-चन्द्र[1] सम असित[2] नरेसू * केहु विधि लै, किय सदन प्रवेसू
सधत न अंग, गिरे नृप धरनी * लीन उठाय भरत कै जननी
चण्डालिनि ! मम छुवइ न गाता * पापिनि ! तैं कीन्हेसि पतिघाता

काँटा-खोंचा भांगि राजा ऊर्द्धश्वासे धाय * श्रीराम लक्ष्मण सीता कत दूरे जाय
श्रीराम बलेन, शुन सुमंत्र सारथी * देखिते ना पारि आमि पितार दुर्गति
रथेर कराओ तुमि त्वरित गमन * पितार सहित येन ना हय दर्शन
सुमंत्र बलेन, आज्ञा ना करिब आन * एक वाक्य बलि आमि कर अवधान
भांगिल राजार संगे अयोध्या नगरी * रथेर पश्चाते ओइ देख सर्व्वपुरी
राजार सहित यदि हय दरशन * तबे ना देशेते लोके करिबे गमन
श्रीराम बलेन, बलि सुमंत्र तोमारे * प्रयोजन नाहि मोर राज्य परिवारे
मन वाक्य आपनि ना पार लंकिवारे * झाट रथ चलाओ, ना देखा दिब कारे
श्रीरामेर आज्ञा मते सुमंत्र - सारथि * चालाइल रथखान पवनेर गति
कत दूरे गिया रथ हैल अदर्शन * भूमिते पड़ेन राजा ह'ये अचेतन
राजारे धरिया तोले अमात्य सकल * शरीरेर धूलि झाड़े, मुखे देय जल
एक दिन-शोके तार मूर्त्ति हैल म्लान * राजार जीवन नाइ, करे अनुमान
राहुते गिलिले चन्द्रे हय जे मूरति * कृष्ण वर्ण हैल राजार आकृति प्रकृति
राजारे धरिया सबे ल'ये गेल देश * अन्त:पुर - मध्ये तारे कराय प्रवेश
गड़ागड़ि जान दशरथ भूमि तले * हेनकाले कैकेयी राजारे धरि तोले
नरपति बलेन, ना छुंइस पातकिनि * स्त्री हइया स्वामी के बधिलि चंडालिनी

१ राहुग्रस्त चन्द्रमा २ कालिमा छायी थी।

प्रथम जबहिं युवती कैकेई * अहिनिसि मम संगति मन देई
प्रगटेउ कुफल रूप सोइ मोहा * सर्वनाश, हा! राम - बिछोहा
कौशिल्यागृह पुनि नृप गयऊ * दोउ दुख समिटि एक रस भयऊ
रुदन चारि दिन थिर कोउ नाहीं * दोउ जन दुखी एक दुख माहीं
मुनिगन वेद, योगिजन योगू * तजेउ, प्रजा रुचि रही न भोगू

दो० हय-गज-मृग आहार बिन, आहुति अगिनि न लेय।
प्रजा अन्न तज, निसि तिया, पति-सुख ध्यान न देय॥
रुदन अहिर्निशि, शयन बिन, चहुँ जग शून्य उदास।
राम लखन पहुँचे उतै, तट - तमसा के पास॥ ३७॥

कूल विविध वन किंशुक फूले * राजहंस जल - कलरव भूले
तमसा - तीर आजु विश्रामा * आयसु दीन सुमंत्रहिं रामा
घोरन छोरि सरित हनवाये * बाँधि, रुचिर जलपान कराये
अस्ताचल रवि, संध्या आई * तमसा स्नान कीन रघुराई
तरुतर लखन सेज-तृन साजा * सुख - शय्या सिय - राम विराजा
लछिमन नीर - कमण्डल लीन्हा * पै - पखार - रघुपति सिय कीन्हा
निसि जागरन लखन धनुधारी * मुग्ध अनुज - गुन राम निहारी
तमसा-तट निसि सकल विराजे * भोर सुमंत्र तुरग रथ साजे
प्रातस्नान नियम आचारा * करि उतरे हरि तमसा पारा

কৈকেয়ী, যখন ছিলি প্রথম - যুবতী * রাত্রিদিন থাকিতিস্ আমার সংহতি
তাহার কারণ এই হইল প্রকাশ * রাম-ছাড়া করিয়া করিলি সর্ব্বনাশ
গেলেন শোকার্ত্ত রাজা কৌশল্যার ঘর * দোঁহার হইল শোক একই সোসর
রাত্রিদিন নাহি ঘুচে দোঁহার ক্রন্দন * একশোকে কাতর হ'লেন দুই জন
মুনি বেদ ছাড়িলেন, যোগী ছাড়ে যোগ * পাবক আহুতি ছাড়ে, প্রজা ছাড়ে ভোগ
মাতংগ আহার ছাড়ে, ঘোড়া ছাড়ে ঘাস * রংধন-ভোজন নাহি, লোকে উপবাস
যামিনীতে কামিনী না যায় পতিপাশ * সসার হইল শূন্য, সকলে নিরাশ
রাত্রি-দিন কান্দি লোক করে জাগরণ * গেলেন তমসা কূলে শ্রীরাম - লক্ষ্মণ
নানা বন ফুলে ফোটে সে নদীর কূলে * রাজহংস ক্রীড়া করে তমসার জলে
সুমন্ত্রের প্রতি আজ্ঞা করিলেন রাম * তমসার কূলে আজি করিব বিশ্রাম
রথ-অশ্ব স্নান করাইল তার জলে * জলপান করাইয়া বান্ধে তার কূলে
অস্তগিরি গত রবি, বেলার বিরাম * তমসার জলে স্নান করেন শ্রীরাম
কমণ্ডলু ভরি জল আনিয়া লক্ষ্মণ * রাম-সীতা দু'জনার পাখালে চরণ
লক্ষ্মণ বৃক্ষের তলে বিছাইল পাতা * করিলেন তাহাতে শয়ন রাম - সীতা
হাতে ধনু লক্ষ্মণ রহিল জাগরণে * প্রীতি পাইলেন রাম লক্ষ্মণের গুণে
তমসার কূলেতে বঞ্চেন এক রাতি * প্রভাতে যোগায় রথ সুমন্ত্র - সারথি
প্রাতঃস্নান-আদি করি নিয়ম-আচার * হইলেন শ্রীরাম তমসা নদী পার

जहँ - जहँ स्यंदन करत विरामा * लोक लेयँ जुरि परिचय - रामा
नारि अधीन वृद्ध अवधेसा * सुत, सुतवधू निकारेउ देसा
परत जहाँ पितु - निन्दा काना * प्रभु तजि अन्त करत प्रस्थाना
कछुक दूर गोमती सुहाई * सरिता पार कीन रघुराई
हंसन केलि सलिल अति सोभा * सो लखि राम-लखन-मन लोभा
सिय ! इक्ष्वाकु-अवनि[1] लखु प्यारी * सर्वविदित शोभा अति न्यारी
धरेउ दण्ड इक्ष्वाकु नरेसा * मम पुरिखन पुनीत यहु देसा

दो० सहित लखन, सिय, मुदित मन, चिदानंद जहँ जाहिं ।
जुरत तहाँ, जन, विविध मत, विनय करत प्रभु पाहिं ॥ ३८ ॥

तुम तजि अब न राज - कल्याना * कस विधि रचेउ अरण्य - विधाना
तुम सम सुहृद न मम जग कोऊ * कहि पितु-अयस[2] विदा सब होऊ
पितु निन्दा सुनि राम दुखारी * तजत देस, पग देत अगारी
गति - विहंग[3] लाँघत बहु देसू * कौशलपुर रथ कीन प्रवेसू
सिय सुन्दरी ! निरखु छवि न्यारी * मम मातुल[4] नगरी यह प्यारी
दान द्विजन किय गंग - प्रदेसू * सुत सम पालत प्रजा नरेसू
पुर बिच अतुल - गंग छवि रूपा * यज्ञ - कुण्ड तट पाँति अनूपा
कदली नरियर आम सुपारी * तरु कूलन अनुपम हरियारी

जेखाने - जेखाने श्रीरामेर रथ रय * तथाकार लोक आसि लय परिचय
वृद्धकाले दशरथ बाध्य वनितार * हेन पुत्र - पुत्रबधू पाठाय कान्तार
शुनेन जेखाने राम पितार निन्दन * करेन से स्थान ह'ते त्वरित गमन
तमसा छाड़िया आर गोमती प्रभृति * नदी पार हइलेन राम महामति
जले हंस केलि करे अति सुशोभन * सेइ नदी पार हैला श्रीराम-लक्ष्मण
श्रीराम बलेन, सीते, सर्वत्र विदित * इक्ष्वाकुर राज्य एइ देखे सुशोभित
एइ देशे इक्ष्वाकु धरिल छत्र - दण्ड * मम पूर्व्व पुरुषेर देख राज्यखण्ड
यथा - यथा जान राम प्रसन्न - हृदय * से-देशेर यत लोक आसि निवेदय
तोमार विहने राम, राज्येर विनाश * कोन विधि सजिल तोमार वनवास
सवाकारे रामचन्द्र दिलेन मेलानि * भालवास आमारे तोमारा, भालजानि
करिया राजार निन्दा सबे जाय घरे * पितृनिन्दा शुनि राम गेलेन अन्तरे
पक्ष हेन उड़े रथ, जाय नाना देश * कोशलेर राज्ये राम करेन प्रवेश
श्रीराम बलेन, शुन जानकि सुन्दरि * मम मातामहेर आछिल एइ पुरी
पुत्रवत् करिलेन प्रजार पालन * गंगातीरे दियाछेन ब्राह्मण - शासन
नगरेर मध्ये गंगा शोभे कुतूहले * सारि-सारि यज्ञकुण्ड तार दुइकूले
कदली गुवाक नारिकेल आम्रसार * दुइतीरे रोपियाछे शोभित अपार

१ महाराज इक्ष्वाकु की धरती (राज्य) २ पिता की अपकीर्ति ३ पक्षियों की चाल से ४ मामा की ।

कूलन[1] ऋषि - मुनि शुचि[2] स्नाना * विप्र वेद - ध्वनि मगन महाना
आयसु दीन सुमंत्रहिं रामा * भागीरथी आजु विश्रामा
प्रभु के वचन सबन मन भाये * रथ सों उतरि अवनि सब आये
तट तुरंग सारथि लै जाई * तरु - तर सिया लखन रघुराई
अथये[3] भानु साँझ नगिचानी * श्रृंगबेर[4] नगरी दरसानी
श्रृंगवेर लखि हुलसे रामा * लखन लखौ, प्रिय केवट - धामा
मम प्रिय अंग बिलग जनि कोई * लहि मम दरस सुखी अति होई
तासु निकेत, संग बतलाई * पुरवहिं मन, अभिन्न प्रिय पाई

दो० रंग विरंगे रस भरे मधुर विविध फल स्वाद।
पथ-विवरन बहु मिलै पुनि, करहिं विविध संवाद ॥
कहि सुमंत्र सों राम इमि निवसे केवट-धाम।
कृत्तिवास पण्डित कियेउ रचना अमित ललाम ॥ ३९ ॥

श्रीराम द्वारा सुमंत्र को विदा

विनय कीन सारथि शिर नाई * आयसु कवन मोहिं रघुराई
कमलनयन मुख मञ्जुल बयना * लै रथ अवध करउ तुम गमना
रहेउँ रथी[5] पितु - आयसु धारी * गत दिन तीन, न काज-सवारी[6]
पथ दिन तीन, अयुध्या जाई * पितु सन सकल कहेउ समुझाई

दुइ कूले विप्रगण करे वेदध्वनि * दुइ कूले स्नान करे यत ऋषिमुनि
सुमंत्रेर प्रति तबे बलेन श्रीराम * गंगातीरे रहि आजि करिब विश्राम
सुमंत्र- लक्ष्मण दोंहे दिला अनुमति * रथ हैते उलिलेन चारि महामति
राम-सीता-लक्ष्मण बसेन वृक्षमूले * सुमंत्र चालाय अश्व जाह्नवीर कूले
भास्कर पश्चिमे जान बेला अवशेषे * तखन गेलेन राम श्रृंगवेर देशे
श्रृंगवेर देश देख राम हृष्टमति * बलिते लागिला तबे लक्ष्मणेर प्रति
गुहक चण्डाल हेथा आछे मम मित * आमारे पाइले मिता हबे हरषित
श्रीराम बलेन, शुन सुमंत्र सारथि * मितार बाटीते आमि थाकि एकराति
कहिब शुनिब वाक्य दोंहे दोंहाकार * विशेषतः जानिब पथेर समाचार
नानाविध फल खाब कदली काँटाल * सुरंग नारंगी आदि खाइब रसाल
राम वने जाइते रहेन सेइ देशे * गाहिल अयोध्याकाण्ड कवि कृत्तिवासे

श्रीरामेर निकट हइते सुमन्त्रेर विदाय

जोड़ हाथ करि बले सुमंत्र सारथि * आमारे कि आज्ञा कर, करि अवगति
बलेन शुनिया राम कमललोचन * रथ लये देशे तुमि करह गमन
तिन दिन रथे आसि पितार आदेशे * तिन दिन अतीत हइल, जाओ देशे
आर तिन दिने जाबे अयोध्या नगर * सकल कहिबे गिया पितार गोचर

१ गंगा के दोनो किनारों पर २ पवित्र ३ अस्त हुए ४ चण्डालगढ़-चुनार
५ रथ पर सवार ६ रथ का प्रयोजन।

वृद्ध पितहिं तजि कानन आये * दारुन दुख जनि मिटत मिटाये
रहि पितु तीर न सेयेउँ चरना * अनहोनी किमि अस विधि-रचना
भरत प्रानप्रिय मातुल - देसा * बिन आगमन मिटइ जनि कलेसा
आवइँ सुनत, विलंब न काजू * सेवइँ पिता, सम्हारहिं राजू
बन्दि जननि बरनेउ यहि भाँती * नृप कर जतन करइँ दिन राती
पीरा हरइँ, लखइँ गृहलोकू * मम सुधि तजइँ, बिसारइँ सोकू
पग बन्देउ पुनि कैकइ जननी * तासु न दोस अमिट विधि करनी
कहि संबाद पितुहिं दैं धीरा * नतरु बिकल होइ तजइँ सरीरा
मम कुल तव सुमंत्र! अति आदर * हेतिन[1] विनय कहेउ मम सादर
लोचन जल, सारथि के बयना * लहौं दरस कब पंकजनयना
चले सुमंत्र अतुल दुख - साने * रथ - तुरंग - गति पवन पयाने
इत विचार रघुपति मन आवा * संसय सो सिय - लखन बुझावा

जयंत काक का नेत्र-बेधन

दो० अवधपुरी सों दूर नहिं भृंगवेरपुर वास।
सुनि सुमंत्र सों भरत नित जब-तब आवहिं पास ॥ ४० ॥

जब लौं खबरि भरत मम लहहीं * सुरसरि उतरि गहन वन गहहीं
गुह सन पुनि मन्तव्य प्रकासा * चित्रकूट गिरि कीन्ह निवासा

वृद्ध पिता छाड़िया आसिनु देशान्तरे * एमन दारुण शोक किमते पासरे
पितृसेवा ना करिनु थाकिया निकटे * कोथाओ ना देखि, हेन कोन जने घटे
प्रानेर भरत भाइ, थाके से विदेशे * भरत आनिया राज्य करिबे हरिषे
यतदिन भरत ए कथा नाहि शुने * ततदिन रवे मातामहेर भवने
मायेर चरणे जानाइबे नमस्कार * आमाहेतु शोके येन ना करेन आर
रात्रि-दिन सेवा येन करेन पितार * मोरे पासरिबे माता देखिया संसार
परिहार जनाइबे कैकेयीर प्रति * ताँर किछु दोष नाइ, इहा दैवगति
पितार चरणे जानाइबे समाचार * अस्थिर हइले तिनि मजिबे संसार
तुमि हेन महापात्र सुमंत्र-सारथि * इष्ट कुटुम्बेर ठाँइ जानाबे मिनति
सुमंत्र श्रीरामे कहे करिया क्रन्दन * आर कतदिने राम, पाब दरशन
विदाय लइया जाय सुमन्त्र कान्दिया * अति शीघ्रगति गेल रथ चालाइया

राम लक्ष्मणादिर पर्य्यटन ओ जयन्त काकेर नेत्र-बेधन

सुमंत्र विदाय दिया श्रीराम चिन्तित * मन्त्रणा करेन सीता-लक्ष्मण-सहित
हेथा हैते अयोध्या निकट बड़ पथ * एखाने थाकिले निते आसिबे भरत
सुमंत्र कहिबे, आछि शृंगवेर-पुरे * शुनिले भरत निते आसिबे सत्वरे
यावत सुमंत्र पात्र नाहि जाय देशे * गंगापार ह'ये चल जाइ वनवासे
गुहकेरे प्रति तबे बलेन श्रीराम * चित्रकूट शैल गिया करिब विश्राम

---

१ हितू (हित चाहने वालों से)।

गंग तरंग कठिन उतराई * करि सहाय प्रन राखहु भाई
कोटिन नाव निषाद - अधीना * सुवरन - तरनि[1] सुसज्जित कीना
विनय कीन, निसि अधिक विरामा * करहु राम ! पावन मम धामा
निसि प्रभुसंग वास सुखदाई * उचित न तात ! कहेउ रघुराई
जो यहि बीच भरत कहुँ आवैं * तौ पितु - वचन विघिन बहु लावैं
बेगि, सुहृद ! करु सुरसरि पारा * सुनि गुहपति आयसु सिर धारा
शृंगबेर - पुर लेन विदाई * तत्पर लखन सिया रघुराई
भोर नाव गुहराज सजावा * सुर-सलिला[2] पुनि पार करावा
सिय छबि मध्य अतुल दोउ बीरा * चले कोस दुइ सुरसरि तीरा
भरद्वाज पुनि आश्रम आवा * रैन - निवास तहाँ मन भावा
नखतन बिच नभ चन्द्र विराजा * भरद्वाज तिमि मुनिन - समाजा
जनकसुता, लछिमन, रघुराई * मुनि - चरनन बन्देउ सिर नाई
दसरथ-तनय राम मम नामा * लछिमन अनुज, सहित सिय बामा
मुनि ! पितु-बचन हेतु प्रतिपालन * वर्ष चतुर्दस सेवहिं कानन

दो० राम कथा सुनि, धाय मुनि, प्रभुहिं विष्णु सम लीन ।
पाद्य अर्घ्य पूजन अतिथि, विविध समादर दीन ॥ ४१ ॥

देखिया आतंक हय गंगार तरंग * झाट पार कर, येन नहे सत्य भंग
सातकोटि नौका तार गृहक चण्डाल * आनिल सोनार नौका, सोनार केराल
गृह बले, करिलाम तरणी-साजन * एक रात्रि राम, हेथा बञ्च तिनजन
एक रात्रि थाकि राम, तोमार सहित * श्रीराम बलेन, मित्र, ए नहे उचित
एखाने रहिते आजि मन शंका पाय * भरत आसिया पाछे प्रमाद घटाय
विलम्ब न कर बन्धु, झाट कर पार * गृह बले झटिति करिब तोमा पार
गुहेर बाड़ीते राम थाकि एक राति * विदाय लाइया परे जान शीघ्रगति
प्रातःकाल नौका गुह करिल साजन * पार हैया कूलेते उठेन तिनजन
माझे सीता आगे पाछे दुइ महावीर * दुइ क्रोश पथ बहि जान गंगातीर
श्रीराम बलेन भरद्वाजेर निकटे * आजिगिया करिबास थाके नि.संकटे
मुनिगणे वेष्टित बसिया भरद्वाज * तारागण मध्ये येन शोभे द्विजराज
हेनकाले सेखाने गेलेन तिनजन * तिनजन बन्दिलेन मुनिर चरण
श्रीराम बलेन, शुन मुनि महाशय * तिनजन तव ठाँइ दिइ परिचय
दशरथ - तनय आमरा दुइ जन * श्रीराम आमार नाम कनिष्ट लक्ष्मण
पितृ-सत्य पालित ह'येछि वनचारी * संगेते प्रेयसी मोर जनककुमारी
राम-कथा सुनि मुनि उठेन सम्भ्रमे * पाद्य अर्घ्य दिया पूजा करेन श्रीरामे

---

१ सोने की नौकाएँ २ गंगा ।

राम प्रतच्छ विष्णु अवतारा * ध्यावत जिनहिं सकल संसारा
जिन तप-पूजन रत मुनि-वृन्दा * आये धाम सच्चिदानन्दा
सानुज राम-रमा छवि देखी * धनि जीवन धनि दिवस विसेखी
गंग-यमुन बिच मोर सुवासू * बन न हेतु, इत करहु निवासू
अवध निकट नित पुर नरनारी * घेरहिं आय, विपति मुनि! भारी
यमुनापार गहन वन-देसू * निर्जन कतहुँ करहु निर्देसू
जहँ निवास निर्विघ्न सुहावन * सुनि हरि-बचन कहेउ मुनिपावन
मुनिगन बसत जहाँ बट-छाहीं * तप उपवन सम जग सुख नाहीं
करत केलि बन खग-मृग-वृन्दा * सुमधुर विविध मूल फल कन्दा
दरस तपोवन ताप नसाई * मुनिन सहित निवसउ रघुराई
भरत शोध तब लहइँ न लेसू * तरनि[1] हीन दुर्गम यहु देसू
भेला[2] बाँधि जाहु सुत! पारा * रवितनया[3] जल अगम अपारा
पर्नकुटी[4] निसि कीजिय पावन * होत विहान[5] जाहु मनभावन
दुइ योजन दुइ पहर चलाई * दरस तपोवन तहँ सुखदाई
मुनि-आश्रम, मुनि-आयसु पाई * निसि रुकि, भोर चले रघुराई
दोउ लँग[6] बन्धु युगुल धनुधारी * मध्य मञ्जु छबि जनकदुलारी

मुनि बलिलेन, तुमि विष्णु अवतार * विष्णु आराधने तप करये संसार
याँर तप-आराधन करे मुनिगणे * सेइ विष्णु आइलेन आमार भवने
श्रीराम-लक्ष्मण-लक्ष्मी देखि तिनजने * आपनारे धन्य बलि मान एतदिने
गंगा यमुनार मध्ये आमार वसति * वनवास वञ्च एथा थाकह संहति
श्रीराम बलेन, मुनि, अयोध्या सन्निधि * अयोध्यार लोकेरा आसिवे निरवधि
एथा हैते कोन स्थान आछये निर्जन * यमुनार पारे हय अपूर्ब्ब-कानन
कह मुनि, कोथाय करिब निवसति * शुनि भरद्वाज कहे श्रीरामेर प्रति
चित्रकूटे मुनिगण बैसे वृक्षतले * मृग-पक्षी-वनजन्तु रहे कुतूहले
नाना फल-मूल पावे बड़ह सुस्वाद * तपोवन देखि राम घुचिवे विषाद
मुनि सकलेर संगे थाक सेइ देश * भरत तोमार तथा ना पावे उद्देश
एइ देशे नाहि राम, नौकार सञ्चार * भेला बाँधि यमुनाय ह'यो तुमि पार
भिन्न हस्त यमुनार बाड़ परिसर * निम्नता ना जाने लोक, गभीर विस्तर
एक रात्रि हेथा राम, वञ्च तिनजन * कालि तुमि जाइओ मुनिर तपोवन
हेथा हैते तपोवन दुइटि योजन * दुइ प्रहरेर मध्ये जावे तिन जन
भरद्वाजाश्रमे राम वञ्चि एक राति * प्रभाते विदाय लये जान शीघ्रगति
उभय वीरेर हाते दिव्य धनुःशर * मध्ये सीता, दुइ-पार्श्वे दुइ सहोदर

१ नाव २ काठ का पुल ३ यमुना ४ मड़ैया ५ भोर ६ दोनो तरफ।

दो० सिय पग परत लुभावने, आगे सीतानाथ।
सोहत मानौ जलद बन सौदामिनि[1] के साथ॥ ४२॥

काक जयंत[2] गगन महरावा * सिय छबि निरखि उतरि ढिग आवा
तन-मन अबुध न रुकत सम्हारे * स्तन तकि वायस[3] नख मारे
पुनि भय-विवस उड़त षटमासा * लै परान पहुँचेउ कैलासा
इत मैथिली त्रस्त, रव कीन्हा * रघुपति कुशल अनुज सों लीन्हा
कहेउ लखन अस को जगजाता[4] * सकइ निहारि जानकी माता
अधिक सुमित्रा सों सिय जननी * गयेउ काक कित करि अपकरनी[5]
लखत, बिंधि मर लेउँ पराना * इत सीता सुमिरेउ भगवाना
वायस गयेउ, अंग नख मारी * तन प्रभु! तासु वेदना भारी
सुनि रघुपति सायक संधाना * जहँ खग चलत अनुसरत बाना
तजि कैलाश सुरपुरहिं धावा * तबहुँ राम-सर बिलग न पावा
लीन्ह जयंत सरन - सुरनायक[6] * द्विज-तन धरि प्रगटेउ रघु-सायक
सुरपति! कथन मोर अनुसरहू * काक जयंत समर्पन करहू
वध के योग अधम अपकारी * तिन रच्छहिं निज-मरन विचारी
इन्द्र न काक सरन दै पाये * सर सम्मुख बिहंग धरि लाये
खग के दरस कोप सर कीना * बिन्धि कियेउ इक नयन विहीना

आगे राम यान, पाछे श्रीराम-रमणी * सजल जलद सह येन सौदामिनी
जयंत नामेते काक छिल से आकाशे * देखिया सीतार रूप आसे सीता पाशे
सहसा सीतार गाये पड़िल उड़िया * सुतीक्ष्ण नखरे वक्षः दिल आँचड़िया
उड़िया चलिल काक पाइया तरास * छ'मासेर पथ गेल पर्व्वत कैलास
डाकेन जनकसुता भये उच्चैःस्वरे * श्रीराम बलेन, भाइ सीतारे के मारे
शुनिया रामेर कथा कहेन लक्ष्मण * सीतारे प्रहारे, हेन आछे कोन जन
सुमित्रा-अधिक माता सीता ठाकुरानी * आँचड़िया गेल काक कोथा नाहि जानि
देखिते ना पाइ काक, गेल कोनखाने * बानेते बिन्धिया तारे मारिब पराने
हेनकाले श्रीरामे बलेन देवी सीता * आँचड़िया गेल काक ह'येछि व्यथिता
काके मारिवारे राम पुरेन सन्धान * जेशे-जेशे चलिल काक, तथा जाय बान
कैलास छाड़िया काक स्वर्गपुरे जाय * मारिते रामेर बान पाछू-पाछू धाय
इन्द्रेर निकटे काक लइल शरण * रामेर ऐषिक बाण हइल ब्राह्मण
ब्राह्मण वेषेते संइ गेल इन्द्र ठाँइ * लहिलेन, आमि ये जयन्त काक चाइ
करियाछे मन्द-कर्म बधिब जीवन * राखिबे ये जन काक, ताहारि मरण
राखिते नारिल काके देव पुरन्दर * आनिया दिलेन काके बानेर गोचर
जयन्तेरे देखि रोषे श्रीरामेर वाण * विन्धिया करिल तार एक चक्षु काण

१ बिजली २ इन्द्र का पुत्र काक के रूप मे ३ कौआ रूपी जयंत ४ संसार में उत्पन्न ५ पातक ६ इन्द्र की शरण।

पुनि लायेउ जयंत जहँ रामा * अभय कीन लखि करुणाधामा

दो० लखि कुदीठ लोचन तजेउ, लखु, सिय ! खल उपहास ।
चलेउ जयंत निकेत निज, वरनि कही कृतिवास ॥ ४३ ॥

श्रीराम का चित्रकूट में अवस्थान और दशरथ-मृत्यु

प्रखर किरन मग भानु प्रतापा * जनकलली सहि सकत न तापा
हिंगुल छलकि पदंगुलि आवा * आतप छबि - नवनीत[1] बहावा
मुनि - प्रदेश गमनत पथ रामा * जुरि आईं देखन मुनि - भामा[2]
सिय लखि मुनि-तिय पूछहिं वानी * विपिन - रमन कस रूपसि रानी !
लखत, मनौ तुम राजदुलारी * वरनउ सत्य सकल सुकुमारी
बिम्ब[3] अधर दूर्वादल श्यामा * भुज अजानु[4] शोभा अभिरामा
मञ्जुल मुख, सोहत धनुवाना * सुमुखि ! संग को रूपनिधाना
सकुच, नयन नत, बोलि न आवा * 'मम प्रियतम' ! सिय सैन[5] बुझावा
मृदु गति सिय पद पंकज परहीं * चलि तट-यमुन दरस सब करहीं
गहन अतल तल, राम प्रभावा * घुटनन सुगम यमुन जल आवा
नौकादिक न बांध विस्तारा * पग चलि गये कलिन्दी पारा
तहँ मुनि - पद बन्दे रघुराई * निरखि मोद मुनि मन न समाई

श्रीरामेर काछे दिल बिन्धि एक आँखि * करुणासागर राम ना मारेन पाखी
श्रीराम बलेन, सीता, देख अपमान * जे चक्षे देखिल सेइ चक्षु हैल काण
अपमान पेये काक गेल निज देशे * रचिल अयोध्याकाण्ड कवि कृत्तिवासे

श्रीरामेर चित्रकूटे अवस्थान ओ दशरथेर मृत्यु

दिवाकर - किरण - उत्तापे उत्तापिता * चलिला कातरा अति जनक-दुहिता
हिंगुलमण्डित ताँर पायेर अंगुलि * आतपे मिलाय येन ननीर पुत्तली
मुनिर नगर दिया जान तिन जन * देखिते पाइल पथे मुनि-पत्नी-गन
जिज्ञासा करिल सबे जानकीर प्रति * पदव्रजे याओ केन तुमि रूपवती
अनुभव करि तुमि राजार नन्दिनी * सत्यपरिचय देह, के बट आपनि
दूर्वादिल श्याम-तनु अति मनोहर * आजानु-लम्बित-भुज, रक्त-ओष्ठधर
सुन्दर बदन देखि अति चमत्कार * करे धनुर्व्वाण उनि के हन तोमार
लाजे अधोमुखी सीता, न बलेन आर * इंगिते बुझान, हनि स्वामी ये आमार
कमलिनी-सीता पथे जान धीरे धीरे * उपस्थित हन शेषे यमुनार तीरे
ताहार गभीर जल पाताल प्रमान * रामेर प्रभाव हय हाँटुर समान
ना जानिया भेला ताहे बान्धेन लक्ष्मण * हाँटुजल पार ह'ये करेन गमन
मुनिर चरण राम बन्देन तखन * देखिया रामेरे मुनि हरषित मन

१ नैनू की पुतली २ मुनि-पत्नियाँ ३ लाल ४ घुटनों तक भुजाएँ ५ संकेत द्वारा ।

तुम अवतार सम अविनासी * कस तपवेस अरण्य - निवासी
मुनिवर ! तात-बचन शिर धारी * तापस तन जीवन बनचारी
सप्रुद लखन - सिय - राम विरामा * उत सुमंत्र गवने निज धामा
चलि दिन तीन अवध पुनि आये * नृपहिं दण्डवत शीश नवाये

दो० तीन दिवस पथ, नृपतिवर ! शृंगवेरपुर ग्राम ।
मुनि-प्रदेश पावन जहाँ, तजेउँ लखन - सिय - राम ॥ ४४ ॥

विदा समय कहि बहु मधुवयना * तव पद बन्देउ पंकजनयना
सील[1] सरिस प्रभु-वचन सुखारी * लछिमन - कथन कोप अधिकारी
धनु दुर्दण्ड शेष सम गर्जन * मौन, शान्त रम सिय-छवि दर्शन
सुनि सुमंत्र - मुख करुन कहानी * सहित समाज पुरी बिलखानी
रानि सात शत विकल अपारा * रुदन अखिल निसि, नाहिं सम्हारा
तव लौं नृप, अतीत-सुधि आई * कौशिल्यहिं सो कथा सुनाई
अमिट वचन-द्विज, सत्य कहानी * मृगया[2] हेतु फिरहुँ वन, रानी !
सुवन - अन्धमुनि श्रवनकुमारा * सरयू नीर लेन पग धारा
घट जल भरत शब्द सुनि काना * मृग अनुमानि वान सन्धाना
सर उर लगत, 'हाय !' द्विज कीन्हा * केहि अपराध प्रान को लीन्हा

मुनि बलिलेन, राम, तुमि नारायण * तपस्वीर वेषे केन बने आगमन
श्रीराम बलेन, मुनि, पितार आदेशे * बिपिने करिब वास तपस्वीर वेशे
तिन जन चित्रकूटे रहेन अक्लेशे * एदिके सुमंत्र गिया उत्तरिल देशे
छयदिन उत्तरिल अयोध्या नगरे * जोड़ हाते दाण्डाइल राजार गोचरे
कहिते लागिल पात्र नमस्कार करे * रामे राखि आइलाम श्रृंगवेरपुरे
सेथा हैते आइलाम राजा, तिन दिने * राम सीता लक्ष्मण रहेन सेइस्थाने
विदाय दिलेन राम मधुर-वचने * प्रणिपात करिलेन तव श्रीचरणे
रामेर येमन शील, तेमनि वचन * गर्ज्जन करिया किछु बलिल लक्ष्मण
प्रचण्ड कोदण्ड धरि गर्ज्जे येन फणी * किछु मात्र ना बलिल सीता ठकुराणी
एतेक सुमन्त्र यदि बलिल बचन * पुरीर सहित सबे पुड़िल क्रन्दन
सातशत महादेवी राजार रमणी * कान्दिया विकल भावे पोहाय रजनी
केह कारे ना शान्ताय, सबे अचेतन * पूर्व्वकथा राजार ये हइल स्मरण
कौशल्यार ठाँइ राजा कहे पूर्व कथा * महाजन वाक्य कभू ना हय अन्यथा
मृगयाते जाइलाम सरयूर तीरे * अन्धमुनि-पुत्र कलसीते जल भरे
मम ज्ञान मृग सब करे जलपान * बाण-त्याग करिलाम पुरिया सन्धान
भरिते सलिल तार फुटे बाण बुके * प्राण गेल बलिया मुनिर पुत्र डाके

---

१ स्वभाव २ शिकार ।

मुनि विमूढ़ गवनेउँ तेहि तीरा * मुनि - सुत आहत लखेउँ सरीरा
हे नृप कवन दोष मोहिं मारा * मम परिवार वज्र सम डारा
अंध मातु पितु निसि-दिन सेवा * मरन मोर तिनकर जिउ-लेवा[1]
श्रीफल वन पितु-जननि निवासा * लै मोहिं अंक चलहु तिन पासा
नतरु शाप - पितु पावहु राऊ * भावी अमिट, न आन उपाऊ
मुनि-नन्दन पुनि तजे पराना * भरि सुअंक, मैं कीन पयाना

दो० श्रवन-मातपितु अन्ध जँह, बसत त्रिल्ववन माहिं ।
धरेउँ जाय शव,जानि दोउ, अति बिलपहिं बिलखाहिं ॥ ४५ ॥

हे महीप ! निर्मम[2] अपघाती * कवन दोष बिन्धेउ सुत-छाती
चलहु वेगि लै सरयू तीरा * तर्पन-सुवन करउँ सोइ नीरा
चलेउँ टेकाय कथन अनुसारा * करि तर्पन मुनि शाप उचारा
सुत वियोग दोउ स्वर्ग सिधाये * उर अति विकल धाम हम आये
रानी ! अमिट अंध मुनि-शापा * निश्चय आजु मरन संतापा
तिलछत[3], करि विलाप तन हारा * बोल बंद, तन सीतल सारा
लखि नृप मौन, सबन मन भाई * भूपति नींद मनहुँ कछु आई
भोर, दण्ड दुइ दिन चढ़ि आवा * रानिन चहेउ महीप जगावा
गात छुवत भ्रम सबन नसाना * नारी[4] लोप, अंग विन प्राना

कोन अपराधे प्राण निल कोन जने * एतेक शुनिया आमि गेलाम से स्थाने
मुनिपुत्र बले, राजा, पाड़िला प्रमाद * आमारे मारिला केन किवा अपराध
अन्धमाता-पिता आमि पुषिरा विदिने * बुड़ा - बुड़ि मरिवेक आमार मरणे
अन्धमाता-पिता आछे श्रीफलेर बने * करि मोरे कोले राजा चल सेइ स्थाने
यावत् आमार पिता नाहि देन शाप * मोरे लये चल तुम यथा वृद्ध बाप
इहा विना आर तव नाहि प्रतिकार * एतेक बलिला मोरे मुनिर कुमार
अन्ध बुड़ा-बुड़ि बसि आछे येइ खाने * मुनिपुत्र कोले करि गेलाम से स्थाने
मुनि बलिलेन राजा, बड़इ निर्दय * कि दोषे मारिले बल आमार तनय
आमारे लइया जाइ सरयूर कूले * पुत्रेर तर्पण आमि करि सेइ जले
मुनिरे लइया जाइ सरयूर तीरे * पुत्रेर तर्पण करि शापिल आमारे
'पुत्रशोके मृत्यु' बलि गेला स्वर्गवास * देशे आइलाम आमि पाइया तारास
से मुनिर वाक्य कभू ना हय खण्डन * आजिकार रात्रे रानि, आमार मरण
से अन्ध मुनिर शाप फले अतःपरे * छट् फट् करे राजा, वाक्य नाहि सरे
'हा राम' बलिया राजा त्यजिल जीवन * निद्रा जाय दशरथ, हेन लय मन
पुरी शुद्ध सबे कान्दि पोहाय रजनी * राजारे चियाते गेल सातशत राणी
दुइ दण्ड बेला हय, सूर्य्येर उदय * एतक्षण निद्रा जाय राजा महाशय
अनन्तर राजारे करिल मृत ज्ञान * नाड़िया चाड़िया देखेन नाहि तार प्राण

१ प्राणहरने वाला। २ निर्दय ३ कलपते थे ४ नाड़ी।

खाय पछार. गिरीं सब धरनी * पकरि चरन-नृप, रोवहिं रमनी
पुत्र - वियोग कौशिला पागी * लखि पति-शोक चेतना त्यागी
सत्पथ सदा सत् - वचन धारे * सत्य पालि नृप स्वर्ग सिधारे
अचल सत्य नृप पुण्यश्लोकू[1] * सुरपुर-गमन हरेउ तव शोकू
सुत - वनगमन स्वामि - सुरलोका * तदपि जियउँ सहि दारुन शोका
दुसह ताप छिति बिलखत रानी * मुनि बशिष्ठ बोले मधु बानी
कहा सीख ! तुम स्वयं सयानी[2] * मृत-हित रुदन न समुचित रानी

दो० अवनि पालि, नृपधर्म करि, गमने स्वर्ग नरेस।
महरानी प्रतिपालिये, धर्म-कर्म जे शेस ॥ ४६ ॥

धरिय तैल बिच शव-नरनाहू * भरत बोलाय कराइय दाहू
भूप-देह धरि जतन, बिहानू * उचित सचिवगन करहुँ विधानू
सत्य पालि नृप सुरपुर पाई * बिन नृप राजु अतुल दुखदाई
शासन रहित कुशल जनि लेखू * पावस कबहुँ न बरसइ देखू
तरु फल-हीन, विफल सब धर्मा * जागत चहुँ दिसि त्रिविध कुकर्मा
अनुशासन सेवक जनि रहहीं * तस्कर[3] दस्यु[4] उपद्रव करहीं
छत्रहीन - छिति, प्रजा दुखारी * हय गज घटत संपदा सारी
लूट - पाट पुरजन धनहारी * चहुँदिसि सन्न[5]! अतुल भयकारी

आछाड़ खाइया पड़े कदली येमनि * राजार चरण धरि कान्दे सब राणी
एके पुत्र शोके राणी परम दुःखिता * पतिशोके ततोधिक, हइला मूर्च्छिता
सत्यवादी राजा तुमि, सत्ये बड़ स्थिर * सत्य पालि स्वर्गे गेले त्यजिया शरीर
सत्य, ना लांघिले तुमि, बड़ पुण्यश्लोक * स्वर्गवासी ह'ये एड़ाइले पुत्र-शोक
स्वर्ग गेल राजा, आर राम गेल वन * दुइ शोके प्राण मोर थाके कि कारण
भूमे गड़ागड़ि जाय कोशल्या तापिनी * कोशल्यारे बुझान बशिष्ठ महामुनि
तोमारे बुझाब कत, नहे न उचित * मृत हेतु कान्द यत, सब अनुचित
स्वर्गते गेलेन राजा पालिया पृथिवी * तांर धर्म्म-कर्म्म कर, तुमि महादेवी
राजारे राखह करि तैल-मध्यगत * देशे आसि अग्निकार्य्य करिबे भरत
बासिमड़ा हइया आछेन महाराज * प्रातःकाले युक्ति करे अमात्य-समाज
सत्य पालि भूपति गेलेन स्वर्गवास * अराजक हैल राज्य, पाइ बड़ त्रास
अराजक राज्येर सर्व्वदा अकुशल * अराजक प्रथिवीते नाहि हय जल
अराजक राज्ये वृक्ष नाहि धरे फल * अराजक राज्ये धर्म्म सकल विफल
अराजक राज्ये भृत्य बश नाहि हय * अराजक राज्ये सर्व्वक्षण दस्युभय
अराजक राज्येते तुरंग हस्ती छोटे * अराजक राज्येते प्रजार धन लोटे
अराजक राज्ये सदा हय डाका चुरी * अराजक राज्ये देखि बड़ भय करि

१ पवित्र चरित्र वाले २ बुद्धिमती ३ चोर ४ डाकू ५ सुनसान।

नृपसूने रिपु करैं चढ़ाई * जंजालन[1] परि प्रजा नसाई
गगन न घन, सुरपति प्रतिकूला * चौमुख फलत अशुभ दुख - शूला
जहँ न राजु, तिय पति विपरीती * करैं पुरुष पर - वनितन प्रीती
हित विपरीत, सकल अनरीती * बिन नृप धर्म न कर्म न नीती
अनुभव - पक्के[2] भुआल - प्रतापा * सुखी प्रजा, जनि संशय व्यापा
तिन अतंक[3] व्यापत त्रयलोका * तिन सन्मान कुशल चहुँ लोका
अस्थिर राजु जहाँ नृप नाहीं * जहँ नृप, कुशल, प्रजा सुख माहीं
लाय भरत, शासन अधिकारू * दै, सब जन कीजिय स्वीकारू

दो० बन्धु-गमन वन, पितु-मरन, दुख न जतावहिं लेस।
लावहु भरत तुरंत चलि, धावन[4] मातुल देस ॥ ४७ ॥

सुनि उर भरत अनन्त कलेसू * मन विराग लौटहिं जनि देसू
कैकयि-दोष कान सुनि पावैं * तौ पुनि भरत अवध नहिं आवैं
भरत दूर जहँ केकयनाहा[5] * तनय चारि ! पुनि पितु बिन दाहा
लावहु भरत शीघ्र गति जाई * स्वजन - बशिष्ठ सलाह मिलाई
सम्मत सब, आयसु - गुरु धारा * चले लेन जहँ भरतकुमारा
चलि हस्तिनापुरी दिन तीना * भोर कुरंग देस पग दीना

अराजक राज्ये अन्य नृपति गरजे * अराजक राज्ये प्रजा-लोके दुःखे मजे
अराजक राज्ये ना वरिषे पुरन्दर * अराजक राज्येते अशुभ बहुतर
अराजक राज्ये नारी नाहि रहे पाशे * अराजक राज्ये स्वामी अन्यनारी तोषे
अराजक राज्ये सदा हिते विपरीत * अराजक राज्ये थाका अति अनुचित
राज्य करिलेन वृद्ध-राजा महाशय * तांहार प्रतापे लोक थाकित निर्भय
स्वर्ग-मर्त्य-पाताल कांपित तांर डरे * राज्येर कुशल छिल बुड़ार आदरे
हेन-राजा-विना राज्य करे टलमल * राजा हैले राज्यरक्षा, प्रजारकुशल
राज्य दिते भरतेरे सर्व्व-अंगीकार * भरतेर आनि देशे देह राज्यभार
भरत आछेन मातामहेर बसति * दूत पाठाइया तांर आन शीघ्रगति
राजा स्वर्गगत, राम चलिलेन वने * एत घोर प्रमाद भरत नाहि जाने
भरतेरे ना कहिबे ए सब घटन * तबे ना करिबे सेइ देशे आगमन
मातृ-दोष शुनिले भरत ना आसिबे * पितृ शोके मनोदुःखे देशांतरी हबे
भरत मातुल गृहे अयोध्या पासरा * चारिपुत्र सत्वे दशरथ वासिमरा
बुद्धिर सागर पात्र मन्त्रणा विशेषे * चलिलेन भरतेरे आनिबारे देशे
करिलेन अनुज्ञा बशिष्ट पुरोहित * भरतेरे आनिबारे चलिल त्वरित
हस्तिनानगरे गेल तृतीय दिवसे * परदिन गेल तारा कुरंगेर देशे

१ झमेलों में २ महान अनुभव वाले ३ आतंक ४ दूत ५ केकय देश के राजा।

चले नगर नीहार[1] सुखेला * रमा[2] बसति जहँ ज्ञान अनन्ता
चलि दिन-रैन सुरम्य लखानी * छवि मनहरन पुरी दरसानी
सुरपुर सरिस लखेउ इक देसू * प्रचुर सुकर्म, कुकर्म न लेसू
सलिला वेणु पार अवतरहीं * दोउ तट, विप्र जहाँ तप करहीं
विविध नदी-नद, गुहा मंझाई * देस-देस दिन - रैन चलाई
पँचये दिन गिरिनगर विरामू * जहँ कैकय नरेस कर धामू
लस्त-पस्त तन श्रम अधिकाई * करि भोजन सुख निद्रा आई
भरत भेंट अवसर जनि आवा * सुधागान कृतिवास सुनावा

भरत का अयोध्या आगमन

सदन भरत सोवत पर्यंका * लखि कुस्वप्न उर उपजी संका
भोर, सभा बिच भरत विराजा * सचिव सनेहिन जुरा समाजा

दो० यथा-योग मिलि परस्पर करैं बन्दनाशीष।
कुशल-भरत, पूछहि सकल, द्विज गन देहिं असीस॥
मुख न बोल, जड़, विरस मन, पुनि पुनि लेत उसास।
पूछत परिजन कुशल, तब कीन्हेउ भरत प्रकास॥ ४८॥

वरनेउ भरत अमंगल सपना * अवनिपात[3] रवि-ससि खसि[4] मगना

नीहारेर राज्ये गेल त्वरित-गमने * लक्ष्मी-अधिष्ठान सदा ज्ञान हय मने
रात्रिदिन सबे पथे चलिल सत्वर * पुनर्बार राज्ये गेल देखे मनोहर
आड़ि कूलदेशे गेले येन सुरपुर * कुकर्म्म वर्ज्जित लोक, सुकर्म्म प्रचुर
बह वेणु नदी पार हैल सर्व्वजन * जार दुइ कूले वैसे अनेक ब्राह्मण
नद-नदी कन्दर हइल बहु पार * बहु देशे देशान्तरे एड़ाय अपार
गिरिराज देशेते कैकय राजा वैसे * उत्तरिल गिया पात्र पंचम दिवसे
रात्रिदिन पथश्रमे हइया विकल * रन्धन भोजन करे पेये रम्यस्थल
भरतेर संगे नाहि हय दर्शन * पथश्रमे निद्रा जाय ह'ये अचेतन
कृत्तिवास-पण्डितेर वाणी अधिष्ठान * रचिल अयोध्याकांड अमृत समान

भरतेर अयोध्या आगमन

प्रभाते भरत आसि बसेन देवीयाने * आइल अमात्यगण तांर संभाषणे
यथायोग्य नमस्कार करे पितृगण * ब्राह्मण-पण्डित करे कुशलाशीर्व्वचन
मित्रगण आसिया आलाप करे कत * इतरे सम्भावे करे व्यवहारमत
भरत विषण्ण अति, मुखे नाहि शब्द * निश्वास प्रबल बहे, हये अति स्तब्ध
भरतेरे जिज्ञासा करेन पात्रगण * शुनिया भरत कन कहिन वचन
कुस्वप्न देखेछि आजि रात्रि अवशेषे * चन्द्र-सूर्य खसि येन पड़िल आकाशे

१ वर्फ से मण्डित नगर २ लक्ष्मी ३ धरती पर टूट पड़े ४ खिसक कर।

आय खबरि इक वृद्ध प्रकासी * लखन राम सिय काननवासी
सचित तेल मनो शव-ताता * लखि कुस्वप्न कंपित मम गाता
बंधु चारि बिच पितु-निर्वाना * इतर न मोहिं कोउ सपने लखाना
अशुभ सपन सब-जन दुखदाई * भरतहिं तदपि कहेउ समुझाई
मिटइ विसेख असुभ नृपनन्दन * सविधि देवि-देवन-पद वंदन
दीनन दान, द्विजन सत्कारू * सुत! न धरमि यहि सम प्रतिकारू
दान-प्रभाव हरत सब क्लेशू * स्वजन, सचिव-गन इमि उपदेशू
करि स्नान अमित धन नाना * पूजि देव, कीन्ह बहु दाना
धन अशेष, अस दान अपारा * तहुँ न तृप्त मन-भरत उदारा
संसद केकयराज प्रतापी * सुरगन बिच सुरपति सम व्यापी
शोभित भरत समीप नरेशू * अवध-दूत सोइ घरी प्रवेशू
पायक प्रथम भूपहिं शिर नावा * भरतहिं पुनि संवाद सुनावा
यह मुद्रिका राम संकेतू * अवध तुरंत चलहु कुलकेतू
पथ विराम सों विपुल अकाजू * पठवहु कुअँर अवध, नृप! आजू
देखत भरत, अवधपति आतुर * कहहिं प्रबन्ध विविध, नर चातुर

स्वप्ने एक वृद्ध आसि कहिल वचने * श्रीराम लक्ष्मण सीता गियाछेन वने
देखिलाम मृत पिता तैलेर भितर * एइ स्वप्न देखि आमि कम्पित अंतर
चारि भाइआर पिता छइ पंचजन * पाञ्चेर मध्येते देखि पितार मरन
भरतेर कथा शुनि [illegible] * पात्र-मित्र भरतेरे करिछे आश्वास
देखियाछ कुस्वप्न नृपतिकुमार * शुनह भरत, कहि तार प्रतिकार
देवतार पूजा तुमि कर सावधाने * ब्राह्मण-दरिद्र तुष्ट कर नाना दाने
इहा विना भरत नाहिक उपदेश * दान द्वारा तोमार घुचिबे सर्वक्लेश
[illegible] * स्नान करि, भरत आनेन द्रव्य नाना
[illegible] * करेन भरत दान सकल भाण्डार
[illegible] * दिलेन सकल द्विजे, सीमा नाहि यार
सकल भाण्डार शून्य, नाहि आर धन * तथापि ताहार किन्तु स्थिर नहे मन
[illegible] प्रतापशाली कैकय भूपति * हेथाने बसिल गिया येन सुरपति
[illegible] * अयोध्यार दूत गिया तखन प्रवेश
[illegible] * भरतेर आगे, दूत कहे सब कथा
[illegible] * भरत, झटिति देशे करे आगमन
[illegible] * [illegible] बल, [illegible] राहित नाहि पार
[illegible] * भरतेरे पाठाओ कहेन महाराज
कथार प्रबन्ध तारा कहिल विशेष * [illegible] तोमाय [illegible] संवार [illegible]

[illegible] ३ दीप, ४ [illegible] ५ दूत ६ पायक, संवाददाता।

दो० कथन मध्यकछ, सपन उत, बुधि दोऊ विपरीत ।
भरत कुतूहल ! सकल सुनि, उर जनि होय प्रतीत ॥
पितु मंगल, जननिन कुशल, कुशल लखन-सिय-राम ।
कहि उर संशय हरहु चर ! सुखी सकल मम धाम ॥
वेगि अवध चलि कुशल सब लखहु, चरन मत दान ।
मातामह - पद बन्दि द्रुत, कुँअर बिदाई लीन ना ॥ ९६ ॥

नृपति विपुल धन, हय-गज नाना * असन वसन आभरन सन्माना
भरत रिपुदमन रथ आसीना * शत शत सैन अनुगामन कीना
भानु निमत संध्या निमराई * अवधपुरी पहुँचे सब जाई
राम - सोक तहुँ रुदन अपारा * नगरी चहुँ विषाद विस्तारा
विकल भरत पूछहिं केहि कारन * कस दुखरूप प्रजा किय धारन
आगम मम, दिन गये निहारी * मिलत, न बोलत कोउ नर-नारी
पायक रहे मौन सिर नाई * भल - अनभल सुख बात न आई
अवध - नारि - नर सहज सुभावो * कबहु न कोउ बोहिं अशुभ कुभावो

भरत-विलाप

अति संशय ! चलि जनक - निकेतू * तात न तँह लखि विस्मय - हेतू
मरनकाल तजि कैकइ - धामा * कौशिल्या - गृह नृपति विरामा
तहँ शव - भूप तैल बिच धारी * भरत न ज्ञात कथा यह सारी

शुनिया भरत किछु ना हन प्रतीत * यत स्वप्न देखिलाम, सब विपरीत
भरत बलेन, बल पितार मंगल * श्रीराम लक्ष्मण भाइ आछेन कुशल
कैकेयी, कौशल्या आर सुमित्रा जननी * सकलेर मंगल बल हे दूत, शुनि
दूत बले, राजपुत्र ! सबार कुशल * सबारे देखिबे यदि शीघ्र देशे चल
प्रणाम करिया मातामहेर चरणे * लइलेन भरत विदाय सेइ क्षणे
हाती-घोड़ा दिल राजा बहुमूल्य धन * असन - वसन आर नाना आभरण
शत्रुघ्न - भरत दोहे चड़िलेन रथे * कत शत सैन्य चले सादिर सहिते
सूर्य्य जान अस्तगिरि, वेला अवशेषे * हेनकाले सबे तारा अयोध्या प्रवेशे
श्रीरामेर शोके लोक करिछे क्रन्दन * अयोध्यार सर्व्वलोक विरसवदन
जिज्ञासेन भरत हइया विषादित * प्रजालोक कान्दे केन, नहे हरषित
अनेक दिनेर परे आइलाम देशे * कोथा ना आइसे केह, केह ना सम्भाषे
एत शुनि दूतगण हेंट करे माथा * केहइ नाहि कहे कोन भाल मन्द कथा
अयोध्यार सर्व्वलोक आछे नियमे * अशुभ संवाद नाहि कहे कोन क्रमे

पितार मृत्यु एवं श्रीराम प्रभृतिर वनगमन-संवादे भरतेर विलाप

देखिल, नाहिक पिता, मातृ निकेतन * भरत भाविया किछु ना पान कारण
मृत्युकाले दशरथ कौशल्यार घरे * तथा तार मृत देह तैलेर भितरे
भरत आछेन अति मानिया विस्मय * प्रथमे गेलेन तिनि पितार आलय

पिता - हीन पितु - मंदिर देखी * चले जननि ढिग, क्लेश विसेखी
रत्नासन विराज कैकेई * मन न विषाद, मोद उर लेई
तनय - राजसुख - भरम भुलानी * लखेउ भरत चलि कैकइ रानी
बन्देउ मातुचरन शिर नाई * सुत लखि सिंहासन तजि धाई
भरि भुअंक चुम्बति सुत-आनन * कहेउ कुशल ननिहार बतावन

दो० बन्धु, जननि, पितु तव कुशल, मंगल कैकय-गेह ।
उत्कण्ठा तजि, प्रथम मम, हरहु मातु सन्देह ॥ ५० ॥

अवध सकल विपरीत निहारी * कोउ न मुदित सब लखत दुखारी
लोक उदास सोक चहुं घोरा * लखि अपवाद करैं मम ओरा
पितु-मंदिर पितु दरस न पावा * हाहाकार अवध कस छावा
कहेउ न कोउ अबलौं अपकरनी * पुलकि कैकई निज मुख बरनी
अचल सत्यवादी सत् वीरा * तव पितु सत्-पथ तजेउ सरीरा
नृप-वियोग दुख नगर मँझारा * गिरे भरत सुनि खाय पछारा

छं० कदली सम अचेत गिरि धरनी, धूल-धूसरित काया ।
पितहिं बिसूरि विलाप-भरत लखि बिलखत जन-समुदाया ॥

भरत पितार गृह शून्यमय देखि * मायेर आवासे जान ह'ये मनोदुःखी
कैकेयी वसिया आछे रत्न-सिहासने * पड़ियाछे प्रमाद, मनेते नाहि गणे
पुत्रेर राजत्व लोभे आछे मनःसुखे * भरत गेलेन तबे मायेर सम्मुखे
भरतेरे देखिया त्यजिल सिंहासन * भरत करेन तांर चरण बन्दन
मुखे चुम्ब विमाराणी पुत्रे लैल कोले * कुशल जिज्ञासा करे तांरि कुतूहले
केकय-भूपति पिता आछेन कुशले * कुशले आछेन मम सोदर सकले
मंगले आछेन माता-विमाता-सकल * पितृराज्य राजगिरि - देशेर मंगल
भरत बलेन, माता, ना हओ विकल * माता-पिता-भ्राता तव सबार कुशल
तोमार बान्धव यत, केह नाहि मरे * सकल मंगल तव जनकेर घरे
तुमि यत जिज्ञासिले, दिलाम उत्तर * आमि ये जिज्ञासि, ताहा कह त सत्वर
अयोध्यार राज्य केन देखि विपरीत * सकले विषण्ण, केह नहे हरषित
चतुर्दिके लोक केन करिछे क्रन्दन * आमारे देखिया केन करिछे निन्दन
पितार आलये केन ना देखि पितारे * अयोध्यानगर केन पूर्ण हाहाकारे
ये कथा कहिते कारो मुख ना आइसे * हेन कथा कहे राणी परम हरिषे
सत्यवादी तव पिता, सत्ये बड़ स्थिर * सत्य पालि स्वर्गेते गेलेन सत्य-वीर
शून्य राज्य आछे तव पितार मरणे * भरत आछाड़ खेये पड़ेन से क्षणे
काटिले कदली केन भूमिते लोटाय * धूलाय पड़िया वीर गड़ागड़ि याय
मूर्च्छागत भरत ह'लेन पितृशोके * देखि तांरि कान्दिया विकल अन्यलोके

सुनहुँ शास्त्रविद्! कहसि कैकयी, तव दुख हिय-विदारन।
केहि पितु-मातु अमर? सुत! सासन करु धीरज हिय धारन॥

सुरपुर - गमन - तात सुनि पाई * वरनउ कहाँ लखन - रघुराई
रामहिं राजभार पितु दीन्हा * वानप्रस्थ निज कहँ मन कीन्हा
विदित योजना बनी बनाई * किमि अन्यथा भई कहु माई
अयुत[1] वर्ष निश्चित पितु-आयू * स्वर्ग-गमन किमि बिन परमायू
पति-विछोह कर तुमहिं न सूला * मन उपजत, तुम अनरथ-मूला[2]
सुख न समात, रानि अस भावा * नाना विधि मो सुतहिं सुनावा
लखन सहित रघुपति वनवासी * अनुगामिन सिय भई प्रवासी
कानन राम गये केहि कारन * मातु! कथन तव हृदय विदारन
परतिय - हरन न पर - धनहारी * कवन दोष रघुपति वनचारी
सुतहिं कैकई सकल सुनावा * प्रथम अपार राम - गुन गावा

दो० धर्म-धुरीन, अनन्त गुन, जनक-जननि के प्रान।
राम भक्तप्रिय कर तिलक, सुनि सुख सबन समान॥ ५१॥

तिलक बिहान[3] आजु अधिवासू * राम-राज सुख सबन हुलासू
पठयेउँ तबहिं राम वन-देसू * सुत! तव-हित पद लहेउँ नरेसू
राम-वियोग दुसह नरराई * हाय राम! कहि सद्गति पाई

कैकेयी बलिल, पुत्र कर अवधान * तोमारे क्रन्दने मोर विदरे परान
सर्व्वशास्त्र जान तुमि भरत अन्तरे * पिता-माता ल'ये केबा कोथा राज्य करे
भरत बलेन शुनि पितार मरण * श्रीराम लक्ष्मण ताँरा कोथा दुइजन
महाराज रामेरे अर्पिया राज्यभार * करिबेन आपनि केवल सदाचार
एइ सब युक्ति पूर्व्वे छिल, आमि जानि * ताहार अन्यथा केन, कह ठाकुराणी
अयुत-वत्सर[4] जानि पितार जीवन * न'हाजार वर्षे ताँर मृत्यु कि कारण
राजार मरणे तव नाहिक विषाद * अनुमाने बुझि तुमि करेछ प्रमाद
राजकन्या कैकेयी बाड़िछे नानासुखे * कतमत कथा बले यत आसे मुखे
राम बने गेलेन, लक्ष्मण ताँर साथे * मने कि भाविया सीता गेलेन पश्चाते
भरत बलेन, केन राम यान बने * पराण विदरे माता तोमार वचने
हरिलेन कार धन कार वा सुन्दरी * कोन दोषे हइलेन राम वनचारी
कैकेयी सकल कहे भरतेर स्थाने * रामेर अशेष गुण प्रथमे बाखाने
भक्तवत्सल राम धर्म्मेते तत्पर * जनक-जननी-प्राण गुणेर सागर
श्रीराम हइले राजा सबार कौतुक * रामेर प्रसादे लोक पाय नानासुख
कालि रामराजा हबे, आजि अधिवास * हेनकाले रामेरे दिलाम वनवास
तोमारे राजत्व दिया, राम जान वन * 'हा राम' बलिया राजा त्यजिल जीवन

१ दस हजार २ विष की जड़ ३ दूसरे दिन (कल) ४ दस हजार वर्ष।

करगत राम राजु अब तोरा * कहा मातु बाल किशोरा
करहु राज सासन पद साजी * राज्यश्री तब भाल विराजी

भरत शत्रुघ्न द्वारा केकेयी मंथरा की भर्त्सना

भाव कुवत सम भरतहिं लागा * दहकति कहेउ, अतुल अनुरागा
निज मुख पाप कथा अस बानी * परहु नरक अधम अति जननी
नृप-कुल जनमि सुनेउ केहि काला * जेठ रहत करहिं अनुज भुआला
पिता, पितामह धर्म सरूपा * तिन गृह निसिचरि जनम अनूपा
प्रकटी दनुजि मनुज-तन धारी * मन रघुवंश-विनास विचारी
राम-शोक पितु प्रान गवाँवा * तैं कस राम अरण्य पठावा
पति-प्रसाद संपति सुख रासी * पति-वध तव कुल तीनि विनासी
पाप पुरबुले कछु मम लागे * लहेउ जन्म तव गर्भ अभागे
दीन्ह मातु ह्वै दारुन शोकू * काटि शीस पठवउँ यमलोकू
अस निसिचरि-तन जरत न पापा * भले मातु-नाम तासु न तापा
जिमि निज जननि, बधे भृगुरामा * उर उपजत पठवउँ सुरधामा

दो० अनल सरिस दहकत भरत, अंग न कोप समात।
निरखि चली हटि कैकई, मनही मन पछितात ॥ ५२ ॥

मातृऋण पुत्र कभू शुधिते ना पारे * राम लये छिल राज्य, दिलाम तोमारे
राजा हये राज्य कर, बसि राजपाटे * राजलक्ष्मी आछे, पुत्र तोमार ललाटे

भरत-शत्रुघ्न कर्तृक कैकेयी ओ कुब्जीर प्रति भर्त्सना

घायेते लागिले घा ज्वलये जेमनि * तेमनि भरत बले हये ज्वालातन
निज गुण कह माता आपनार मुखे * आपनि मजिले माता डुबिले नरके
राजकुले जन्मिया शुनिले कोन खाने * कनिष्ठ हइबे राजा ज्येष्ठ विद्यमाने
तोर पिता-पितामह करे धर्म्म कर्म्म * से वंशेते हइल केन राक्षसीर जन्म
निशाचरी हये तुइ हइलि मानुषी * रघुवंश क्षय हेतु आइलि राक्षसी
श्रीरामेर शोके राजा त्यजन जीवन * तुइ केन श्रीरामेरे पाठाइलि वन
राजार प्रसादे तोर एतेक सम्पद * तिन कुल मजाइलि स्वामी करि वध
पूर्व्व जन्मे करियाछि कत कदाचार * सेइ पापे तोर गर्भे जनम आमार
मा हइया तनयेरे दिलि एत शोक * इच्छा हय काटिया पाठाइ यमलोक
एमन राक्षसी तुइ, नाहि देखि कोथा * तो हेन मातार वधे नाहि कोन व्यथा
जे मत परशुराम काटिल मायेरे * तेमनि करिते वाञ्छा, किन्तु मारि डरे
राम पाछे वैर जेन बलिया मातृघाती * लवे ना ताके मम हुके निवसति
भरत ज्वलंत-अग्नि-तुल्य क्रोधे ज्वले * देखिया कैकेयी सबे जाय अन्तराले

---

१ हाथ में आया २ पूर्व जन्म के।

वृथा अनर्थ ! सोच उर छावा * सखि केहि कुमति-प्रमाद रचावा
भरत समीप रिपुदमन आये * रुदन करहिं दोउ अति बिलखाये
तात ! तात ! कहि अंक लगावा * दोउ तन, दुहुन नयन जल छावा
दोष मंथरा मन अनुमानी * कहैं सकोपि बन्धु दोउ बानी
रामहिं, राज, भूप रुचिकारी * कुबरि कस प्रपञ्च विस्तारी !
मिलत मंथरा जियत न जाई * विधिगति चेरि नजर-तर आई
अभरन छवि पट रंग विरंगा * चन्दन वास सुवासित अंगा
कूबर-मुकावलि छवि खानी * राम-प्रवास चेरि हुलसानी
अशुभ, प्रफुल्ल भरत ढिग आई * प्रहरी तब लौं खबरि जनाई
नृपति-मरन रघुपति बनवासी * सकल-विनास-हेतु यह दासी
तासु मरन विनसइ दुख सारा * सुनि रिपुघ्न कुब-चेरि विचारा
कुपित, केस धरि, रमरि घुमावा * चाक-कुम्हार समान नचावा
सिथिल केस कछु, भजित आई * कैकयि-सदन गोहार मचाई
भरत-रिपुदमन लीन्हे प्राना * अहह रानि ! मम कीजिय त्राना
पुनि शत्रुघ्न केस धरि लाये * भीषम मार-प्रहार मचाये
कूबर-मुकावलि ईमि टूटी * नभ तजि धरनि नखत-छवि छूटी

जाइते जाइते रानी करेन बिषाद * कार लागि करिलाम एतेक प्रमादि
आइलेन शत्रुघ्न करिते संभाषण * भरतेर क्रन्दने कान्देन शत्रुघ्न
'भाइ-भाइ' बलिया भरत निल कोले * दुजनार अंग तिते नयनेर जले
अनुमाने बुझिलेन, कुब्जीर ए क्रिया * कहिते लागिल दोंहे कुपित हइया
रामेरे दिलेन राजा निज छत्र दण्ड * कोथा हते कुब्जी माझे प्रमाद प्रचण्ड
पाइले कुब्जीर देखा वधिब जीवने * विधिर निर्बन्ध कुब्जी आइल तखन
शोभा पाय पटु वस्त्र आर आभरण * सर्व्वाङ्ग भूषिता कुब्जी सुगन्धि चन्दन
मुक्ताहार शोभे तार कुब्जेर उपर * श्रीरामेर बनवासे प्रफुल्ल अन्तर
एतेक प्रमाद हये, कुब्जी नाहि जाने * भरतेर निकटे आइसे हृष्ट मने
हेन काले द्वारि बले शुन शत्रुघन * एइ कुब्जी हेतु वृद्ध राजार मरण
एइ कुब्जी रामे पाठाइल वनवास * एइ कुब्जी करिल सकल विनाश
एइ कुब्जी मजाइल अयोध्या नगरी * एइ कुब्जी करिल सकल दुःखे तरि
शत्रुघ्न बलेन, भाइ, इच्छा करे मन * एखन कुब्जीर आमि बधिब जीवन
शत्रुघ्न कुपित हये धरे तार चुले * चुले धरि कुब्जीरे से फेले भूमि तले
हिंचडिया लये जाय ताहारे भूतले * कुमारेर चाक येन घुराइया फेले
'मरि-मरि' बले कुजी परित्राहि डाके * चुल छिंडे केश, से कैकेयी घरे ढोके
कुजी बले, कैकेयि, करह परित्राण * भरत-शत्रुघ्न मोर आइल मरण
शत्रुघ्न प्रवेश कोठे कैकेयीर घरे * चुल धरि कुब्जीरे से आइल बाहिरे
तबु तार कुब्जे हार करिछे शोभन * प्रहारे छिंडिया पडे येन तारागण

दो० भरत-धाय, पुनि मुँहलगी, कैकेयी कै दासि।
रक्षसनी लोटति अधम, विधि गति! सकल विनासि ॥
चेरी-दुर्गति निरखि, बढ़ि, पुनि इटि रानि पछार।
लेयँ प्रान कहुँ, रिपुदमन, उर अति भय-सञ्चार ॥ ५३ ॥

कह शत्रुघ्न सुनहु मम बाता * भजे¹ न गति, जनि सुकृति विमाता
तुम सिरमौर सातसत रानी * पितु न कबहुँ दुलखी² तव बानी
नृपनन्दिनी, नृपति - प्रियरानी * जात न तव दुर्भाग्य बखानी
तव सुख-सरिस न सुख शचि³ पावा * दासी - कुमति पताल पठावा
तव बध किये न दुख मम जाई * वृथा मातु - बध पाप कमाई
तव सम्मुख बध तव प्रिय चेरी * सुलगहु, मरहु विषम दुख हेरी
पकरि केस रगरत मुख धरनी * लखि हिय कम्प भरत कै जननी
हिये टिहुन⁴ गर चापि बहोरी * मुद्गर - घात दीन पग तोरी
कूबरि पंगु रक्त चहुँ छावा * तन विरूप⁵ रिपुदमन बनावा
चेरि अचेत प्रान अवसेसू * नारि - हनन भय भरत विसेसू
पुनि-पुनि अनुजहिं करि परितोषू * नारि - घात समुझावहिं दोषू
अस्थि सेस तन रक्त न चर्मा * तजहु न अब, तो होय अधर्मा
आयसु-राम तात! हिय धारी * लेहु न पाप सीस बध-नारी

कैकेयीर मुख्यदासी, धात्री भरतेर * सर्व्वांग भिजिल रक्ते, एइ कर्म्मफेर
चूले ध'रे ल'ये जाय, कुंजे लागे छड़ * शत्रुघ्नेरे देखिया कैकेयी दिल बड़
चेड़िरे मारिल, पाछे प्रहारे आमाय * एइ मने करि त्रासे कैकेयी पलाय
शत्रुघ्न बलेन, शुन कैकेयी विमाता * पालाइया नाहि गाह, कहि एक कथा
सात शत रानी जिनि तोमार प्रताप * बलिते तुमि'या, ताइ करितेन बाप
राजार महिषी तुमि राजार नन्दिनी * तोमा सम दुर्भागा स्त्री ना देखि ना शुनि
शचीर अधिक सुख, बले सर्व्वलोके * आमी कि मारिया मात, डुबिब नरके
दासीर कथाय बुझि गेल रसातल * दोष अनुरूप आमि की बलिबे बल
यदि तोमा बधि पाणे दु:ख नाहि घुचे * मातृ बध करिया नरके डुबि पाछे
तोमार चेड़िरे मारि तोमार सम्मुखे * पुड़िया ज्वलिया येन मर एइ शोके
चुले धरि चेड़ीरे माटीते मुख घसे * देखिया कैकेयीरानी काँपिछ तरासे
बुके हाँटु दिया से कुंजीर धर गला * मुद्गरेर आघाते भांगिलि पा'र नला
एकेत कुत्सिता कुंजी, तार हएल बोका * सर्व्व गाए छड़पेल, येन रक्तबोका
अचेतन हएल कुंजी, श्वास मात्र आछे * भरत भाबेन, नारीहत्या हय पाछे
धीरे-धीरे भरत बलेन सुवचन * नारीहत्या हब पाछे शुन शत्रुघन
रक्तचर्म्म नाहि आर, अस्थिमात्रसार * नारी बध हय पाछे ना मारिह आर
नारीहत्या महापाप, शुन शत्रुघन * यदि एइ पापे राम करेन कुजन

१ भागकर २ बात काटी ३ इन्द्राणी ४ घुटना ५ भद्दा, कुरूप।

रघुपति आन[1] समादर कीन्हा * प्रान बकसि रिपुसूदन दीन्हा
रहत कैकई दुर्गति नाना * मार-प्रहार! बचे बस प्राना
सुर तजि भला मनुज किमि जानैं * होनहार अस किमि पहिचानैं

दो० राम सिंहासन दीन पितु, जननि भई प्रतिकूल।
बिधि-गति केहि बिधि जानिये, यहै भरत-उर सूल ॥ ५४ ॥

तृप्त न बिलसि अतुल सुखखानी * दासी-कुमति शनि बौरानी
भयेउँ कलंकित जननी-काजा * पहुँचत राम-मातु पहँ लाजा
कहेउ रिपुघ्न, न मातहिं रोषू * भल जानहिं केहि-कर कस दोषू

कौशल्या वशिष्ठ सहित भरत की मंत्रणा और दशरथ-अन्त्येष्ठि

इत बिलखत यहि बिधि दोउ भाई * कौशिल्या-गृह सकल सुनाई
राम-मातु पहँ चलि शिरनावा * कहि सुत, भरतहिं अंक लगावा
दोउ-तन भीज दुहुन दृग वारी * बोली मातु दुसह-दुख-मारी
तिलक बिहान[2], आजु अधिवासू[3] * कैकइ दीन जबहिं बनवासू
परतिय-हरन न परधन-हारी * केहि अपराध राम बनचारी
मैं कण्टक, मोहिं तापस वेषू * दै पठवहु जहँ सुत अवधेषू
दुख ललार[4], तिन कहँ दुख काजू * माय-पूत बिलसहु सुख-राजू
व्यंग-बोल सुनि भरत उदासा * मैं तो मातु! राम कर दासा

नाहि मातृहत्या करि श्रीरामेर डरे * एत शुनि शत्रुघ्न से छाड़िल कुब्जीरे
लइलेन कुब्जीरे कैकेयी विद्यमान * एतेक प्रहार तबु रहिल पराण
भरत बलेन, भाइ, सब देव जाने * एतेक घटिबे भाई, जानिब के मने
श्रीरामे दिलेन पिता राजसिंहासन * के जाने, करिबे माता अन्यथाचरण
स्वर्गेर भोग भञ्जे, तबु नाहि आँटे * राजार महिषी कि चेड़ीर वाक्ये खाटे
आमि दुष्ट हइलाम जननीर दोषे * कौशल्यार काछे जाब के मन साहसे
शत्रुघ्न बलेन, ताँर ना हइबे रोष * आपनि जानेन माता, यार यत दोष
भरत-शत्रुघ्न हेथा करेन रोदन * कौशल्या बसिया घरे करेन श्रवण

कौशल्या-वशिष्ठेर सहित भरतेर मन्त्रणा ओ दशरथेर अन्त्येष्टि

भरत शत्रुघ्न गिया भाइ दुइ जन * करिलेन कौशल्यार चरण वन्दन
'पुत्र' बलि कौशल्या भरते निल कोले * उभयेर सर्व्व अंग तितिल नेत्र-जले
कालि राजा हबेराम, आजि अधिवास * हेनकाले तव माता दिल वनवास
हरिल काहार धन, राम कार नारी * कोन दोषे पुत्रे मोर करे देशान्तरी
आमारे करिया दूर घुचाओ ए काँटा * पाठाओ रामेर काछे, शिरे धरि जटा
कौशल्या बलेन, शुन कैकेयी-नन्दन * मायेपोये राज्य कर आनन्दे एखन
दुःखभागी एइजन, सेइ पाय दुःख * माये पोये भरत, भुञ्जह राज्यसुख
भरत कातर अति कौशल्या-वचने * रामेर सेवक आमि, तुमि जान मने

१ सौगंध २ कल (दूसरे दिन) ३ मंगलाचार ४ भाग्य।

राम वन-गमन, मोर न दोषू * चरन सौंह[1] तव, करहु न रोषू
नृपति प्रजा - पीड़क दुखकारी * तासु पाप परि होहुँ दुखारी
नेह न नृप प्रति, सासन-द्रोही * अधम प्रजा सम गति मम होही
गुरु दच्छिना न, विद्या पाई * श्रम लइ मूल्य देत सकुचाई
निज बखान पर - निन्दाकारी * हरइँ धरोहर पर-धन-हारी

दो॰ गहौं राजु रघुनाथ छलि, मन मोरे अभिसन्धि[2] ।
नसैं लोक दोउ, गति लहउँ नरक, शंभु सौगन्धि[3] ॥ ५५ ॥

भरत - शपथ सुनि बोली माता * भल मोहिं ज्ञात हृदय तव ताता !
राम सरिस तुम धर्म सरूपा * सदा धर्म रुचि दोउ अनुरूपा
चौदह वर्ष बितइ जब आवैं * राम न धाम जियत मोहिं पावैं
पितु बिन-दाह अबहुँ, अति लाजा * भरत करहु तिन अंतिम काजा
अजस मातु, पुनि पितु परलोकू * बंधु - बिछोह अहिर्निमि[4] सोकू
मम हित पितु रामहिं वन दीन्हा * तबहुँ प्रवेस अवध मैं कीन्हा

छं॰ कह बशिष्ठ, सर्वज्ञ भरत तुम, सीख तुमहिं किमि दीजै ।
गमन स्वर्ग नृप सत् पथ, रोदन ! सकल पुण्य सुत ! छीजै ॥
तनय राम गुणधाम तासु पितु अमर, मरण के माषैं ।
गुरु प्रबोध, जनि बोध, भरत मन छोभ, वचन सम्भाषैं ॥

मम मते यदि राम गियाछेन बने * दिव्य करि माता आमि तोमार चरणे
राजा यदि प्रजा पीड़े, ना करे पालन * आमारे करुन विधि से पाप-भाजन
प्रजा ह'ये राज्यद्रोह करे जेइ लोके * सेइ पापे पापी ह'ये डुबिब नरके
विद्या पेये जे ना करे गुरुर सेवन * कर्म्म करि दक्षिणा ना देय जेइ जन
आपना बाखाने येवा परनिन्दा करे * सेइ महा पाप राशि घटुक आमारे
स्थाप्य धन हरणे ते हय जे पातक * सेइ पापे पापी ह'ये भुञ्जिब नरक
रामेरे वञ्चिया राज्य यदि आमि चाइ * इह-परकाल नष्ट, शिवेर दोहाइ
शपथ करेन हेन भरत तखन * कौशल्या बलेन, पुत्र जानि तव मन
रामेर हृदय धर्म्मे जेमन तत्पर * तोमार हृदय पुत्र, एकइ सोसर
चौद्दवर्ष गेले राम आसिवेन देश * ततदिने मम प्राण हइबे निःशेष
आछे मृतदेह घरे, पाइ बड़ लाज * शीघ्र कर भरत, पितार अग्निकाज
पितृ - शोके भ्रातृशोक मायरे अयश * भरत करेन खेद रजनी - दिवस
आमाहेतु पिता मरे भ्राता बनबासी * जानिले एतकि आमि देशे फिरे आसि
बशिष्ठ बलेन, तुमि भरत, पण्डित * तोमारे बुझान आमि ए नहे उचित
सत्य पालि भूपति गेलेन स्वर्गवास * ताँहार कारणे कान्दे, हय पुण्यनाश
राम - हेन पुत्र याँर गुणेर निधान * के बले मरिल राजा, आछे विद्यमान
एइ रूपे बुझान वशिष्ठ महामुनि * भरत ना कहे किछु, कहे खेदवाणी

१ सौगंध २ षड्यंत्र ३ कसम ४ दिनरात ।

बन्धु-बिछोह, मरन पितु दारुन, ककस[1] धीर उर धारौं।
थिर न प्रान, दुख दोउ महान, किमि जीवन, काहि निहारौं॥
मेघमुँदी-छवि छीन-चन्द्र-सम मलिन-बदन कुम्हिलाने।
सचिव-सखा-गुरु सहित भरत पितु-मंदिर ओर पयाने॥
शोक निरत तिन रानि सात शत, चली कुअँर सब घेरे।
'अहह तात! तव गति, न बात मुख' कहइँ भरत पितु नेरे[2]॥
सने सोक इत लोक दरस-हित, तिन दीजिय संतोषू।
जननि-दोष, पितु! मैं निर्दोष, जनि रोष, छमहु मम दोषू॥

कहेउ बशिष्ठ छोह सुत तजहू * दाह, श्राद्ध - तर्पन - पितु करहू
यहु सब जेठ सुवन अधिकारा * सूने राम, सीस तव भारा
चन्दन अगुरु काष्ठ लदवाये * घृत मधु कलश पूर्ण मँगवाये
रतन प्रवाल मौक्तिक नाना * चतुर्दोल भल सजेउ विमाना
सुमन सुवासित हार सुहाये * नृप - तन सहित विमान सजाये
जेते अवध नगर नर - नारी * कर धरि शीश भरत अनुसारी[3]
प्रजा बंधु - जन सरयू तीरा * काढ़ि तैल सों नृपति - शरीरा
सरयू - जल स्नान कराई * सबन निरखि मन करुना आई
शुभ्र बसन सुन्दर परिधाना * मृगमद[4] लेप सुगंध महाना

किमते धरिव प्राण पितार मरणे * किमते धरिब प्राण रामेर बिहने
किरूपे हइब स्थिर काहारे निरखि * दुइ शोके प्राण रहे कोथाओ ना देखि
शशधर येमन हइले मेघाच्छन्न * विवर्ण भरत अति, तेमनि विषण्ण
पात्र - मित्र - सगेते बशिष्ठ पुरोहित * पितार निवासे जान लोकेते वेष्टित
सातशत राणी तारा शोकते निराश * भरतेरे संगे गेल राजार निवास
भरत बलेन, पिता, एइ तव गति * उठिया सम्भाष कर भरतेर प्रति
तोमारे देखिते आसियाछे पुरजन * उठिया सवारे कह प्रबोध-वचन
मातृदोषे आमासह ना कह वचन * यदि थाके अपराध, कर विमोचन
बशिष्ठ बलेन, त्यज भरत, क्रन्दन * पितृ अग्निकार्य्य श्राद्ध करह तर्पन
पितृकार्य्ये ज्येष्ठ तनयेर अधिकार * राम देशे नाहि, तुमि करह सत्कार
अगुरु-चन्दन-काष्ठ आने भारे-भारे * घृत मधु कुम्भ पूरि आनिल सत्वरे
मुकुता प्रवाल आने बहुमूल्य धन * चतुर्द्दोल आनिल विचित्र सिंहासन
सुगन्धि पुष्पेर माल्य, गन्ध मनोहर * चतुर्द्दोले चड़ाइल राजारे सत्वर
अयोध्यानगरे यत स्त्री पुरुष आछे * शिरे हात दिया जाय भरतेर पाछे
तैलेर भितरे आछि लेन महाराजा * सरयूर तीरे ल'ये जाय बन्धु-प्रजा
स्नान कराइल तीरे सरयूर जले * देखिया कातर अति हइल सकले
शुकल - वस्त्र पराइल, सुन्दर उत्तरी * सर्व्वांग भरिया दिल सुगन्धि-कस्तूरी

१ किस प्रकार २ पिता के शव के समीप ३ पीछे चले ४ कस्तूरी।

मंजुल माल सुमन बहुरंगा * सोहत गर आदिक नृप अंगा

दो० चिता अगुरु चन्दन सजी शयन करायेउ भूप।
तीन लख गो-दान करि, यथा शास्त्र अनुरूप॥
पितु सम्मुख घृत अनल लै, दाह भरत तहँ कीन।
तर्पन करि सरयू - सलिल, पिण्ड पितहिं पुनि दीन॥ ५६॥

अवनि अचेत भरत दुख दारुन * कहेउ बहोरि हेरि नर - नारिन
करौं तात सह अनल प्रवेसू * पुरजन सकल जायँ निज देसू
पितु परलोक, बंधु वन माहीं * मम अब देस प्रयोजन नाहीं
कहेउ बशिष्ठ अकारन शोकू * निश्चय मरन, जनमि यहि लोकू
सकेउ न जग कोउ मृत्यु निवारी * मरि पुनि जीव जन्म - अधिकारी
अमर न कोउ, नित जीवन - मरना * तजहु विषाद, चलहु सुत! अयना[1]
अवध उजार[2] शून्य तन धारे * लिये भरत, गुरु पुरी पधारे
भरत अखिल निसि रोय बिताई * विलपत सदा, कहाँ रघुराई?
तेरहीं श्राद्ध पिण्ड करि दाना * विधिवत अमित दान किय नाना
हय गज, धरनि, नगर, बहु ग्रामा * तरु, उपवन, परिधान[3] ललामा
सोन सात लख विप्रन अर्पा * सुरभी[4] सुवरन सजी समर्पा
लख तिरासी कञ्चन भारा * अतुल दान - जस चहुँ विस्तारा

नानाविध कुसुमेर माल्य - मनोहर * यथास्थाने दिल ताँर गलार उपर
चितार उपरे ल'ये कराय शयन * हेंटे ऊर्द्ध्व काष्ठ दिल अगुरुचन्दन
तिन लक्ष धेनु दान करेन भरत * राजार सम्मुखे आनि यथा शास्त्रमत
पितारे करेन दाह घृतेर अनले * करिलेन तर्पणादि सरयूर जले
तर्पण करिया पिण्ड दिया नदी पाड़े * भरत मूर्छित ह'ये मृत्तिकाते पड़े
भरत बलेन, सबे जाह निज देश * पितार अग्निते आमि करिब प्रवेश
पिता परलोके गत, भ्राता गेल वने * देशेते जाइब आमि कोन प्रयोजने
बशिष्ठ भरते बले, इहा युक्ति नय * जन्मिले मरण आछे, ए कथा निश्चय
मरणेरे एड़ाइते ना पारे संसारे * मरिले सबार जन्म हय आर बारे
सकले मरेन, केह नहेत अमर * क्रन्दन संबर, हे भरत चल घर
शून्य रहियाछे अद्य अयोध्यानगरी * भरतेरे बशिष्ठ निलेन राजपुरी
कान्दिया भरत पोहाइलेन रजनी * विलाप करेन सदा, कोथा रघुमणी
त्रयोदश दिवसे करेन श्राद्ध-दान * नानादान करेन, ये शास्त्रेर विधान
मातंग तुरंग आर पुरी भूमि ग्राम * विविध वसन शाल आर शालग्राम
विप्रे दान देन सोना सात लक्ष तोला * धेनु-दान करिवेन सोनार मेखला
त्रि-अशीति लक्षमण सोनार भाण्डार * वितरण करिलेन, धन नाहि आर

---

१ घर २ उजड़ा हुआ ३ वस्त्र ४ गाय।

कीन अठासी लख गोदाना * भुवन न दाता भरत समाना
जेते रवि - शशि - कुल - नरनाथा * धरा न काहु दान अस गाथा

भरत से राज्यभार-ग्रहण की प्रार्थना

निबटत नृप के अंतिम काजा * जुरेउ भरत ढिग हितुन - समाजा
सागर लौं सासन विस्तारे * तुमहिं सौंपि नृप स्वर्ग सिधारे

दो० अवधभूप - पद भरत लै, करहु प्रजा - प्रतिपाल।
होइ सुपात्र सासन तजौं, विनसै राज-भुवाल ॥ ५७ ॥

बर्जेउ भरत, न रघुकुल रीती * लघुहिं राजु तजि जेठ, अनीती
सासन गहत लगावहिं लोगू * मम सिर सकल जननि-अभियोगू
रामहिं राज उचित सब रूपा * चलि तिन लाइ बनावहुँ भूपा
छत्र दण्ड रघुनाथहिं अर्पन * तिलक उचित तिन राज समर्पन
सविनय लाइ बनाय नरेसू * राम एवज[1] गमनउँ बनदेसू
ऊँच - नीच पथ सुगम कराई * हय - गज - कटक चलै जिमि भाई
आयसु - भरत विलंब न काजा * कहेउ जोरि कर[2] सकल समाजा
अजस कैकई देस प्रसारा * तव यश अखिल भुवन विस्तारा
भल-अनभल[3] प्रस्तुत दोउ रूपा * मातु - अजस[4] सुत - सुजस[5] अनूपा

अष्टाशीति लक्ष धेनु करिलेन दान * पृथिवीते दाता नाहि भरत समान
यत-यत राजा हैल चन्द्र-सूर्य्य कुले * हेन दान केह कोथा ना करे भूतले

पात्र मित्र सह भरतेर राज्यशासन-मन्त्रणा।

समाप्त हइल श्राद्ध, निवारिल दान * पात्र - मित्र कहे गिया भरतेर स्थान
आसमुद्र राज्य आर अयोध्यानगरी * तोमारे अर्पिया राजा गेला स्वर्गपुरी
पितृ दण्ड-राज्य तुमि छाड़ कि कारण * राजा ह'ये कर तुमि प्रजार पालन
तोमा विना राज्य धर्म्म अन्ये नाहि साजे * तुमि राजा ना हइले पितृराज्य मजे
भरत बलेन, पात्र, ना बलिह आर * ज्येष्ठ सत्त्व कनिष्ठेर नाहि अधिकार
राजा ह'ये यदि आमि बसि राज पाटे * मायेर यतेर दोष आमाते से घटे
राज्येर उचित राजा रामचन्द्र भाइ * रामेरे करिब राजा, चल तथा जाइ
यत अभिषेक द्रव्य लह राज्यखण्ड * तथा गिया श्रीरामे अर्पिब छत्रदंड
रामे राजा करिया पाठाब निज देशे * रामेर बदले आमि जाब वनवासे
समान करह यत उच्चनीच बाटे * सुखे पथे जाय येन घोड़ा हाती-ठाटे
भरतेर आज्ञाय सकले पड़े ताड़ा * भरते बलेन सबे करि हात जोड़ा
तोमार जतेक यश घुषिवे संसारे * कैकेयीर अपयश भारत - भितरे
भाल मन्द सकल हेथाय विद्यमान * मायेर हइल निन्दा, पुत्रेर बाखान

१ बदले में २ हाथ ३ भले-बुरे दोनो पक्ष ४ अपकीर्ति ५ सुकीर्ति।

श्रीराम को लाने के लिए भरत की वन-यात्रा

कहेउ भरत जनि समय गवाँवौ * हय-गज-कटक सहित सब धावौ
रथ सारथी तुरंग मतंगा * चले राम हित भरतहिं संगा
छोट बड़े अन्तःपुर - वासी * रानि समाज, दास अरु दासी
दल - बल चलेउ रघुपतिहिं आनै * छोट - बड़ा कोउ रोक न मानै
बहु रथ - रथी विपुल सामन्ता * वृद्ध सैनपति सैन अनन्ता
कौशल्यादि सुमित्रा रानी * रानि सात शत सकल पयानी[1]
लीन बशिष्ठ जतक[2] मुनि यूथा * अखिल राज नर - नारि - बरूथा[3]

दो० कुटिल चेरि संग केकई, रुकी भरत-भय मानि।
कछु मंजिल करि, सभा बिच, कह बशिष्ठ, इमि बानि ॥
स्वयं जतन जो विधि करैं, धाम न लौटहिं राम।
दुखद अकारथ परिसरम[4], भरत विफल तव काम ॥ ५८ ॥

राम वचन - पितु गमने कानन * पितु-दिय-राजु, तजहु केहि कारन
गुरु, प्रोहित-पद परम पुनीता * कहेउ भरत, कस कथन अनीता
शत-शत मम बन्दन तव चरना * बहुरि न कहेउ अमंगल वचना
गति न मोर बिन रघुपति-चरनन * करहुँ आनि प्रभु, राजु समर्पन

श्रीराम के आनिवार जन्य भरतेर बनयात्रा

भरत बलेन, आर तोमरा ना बल * हाती-घोड़ा-कटक समेत सब चल
घोड़ा-हाती चले, रथ साजाये सारथि * भरत आनिते रामे जाय शीघ्र गति
दास-दासी चलिल राजार यतनारी * छोट - बड़ सकले चलिल अन्तःपुरी
श्रीरामे आनिते जाय सकल कटक * बाल-बृद्ध, केह कारो ना माने आटक
अनन्त सामन्त चले बृद्ध-सेनापति * भरतेर साथे चले बहु रथ - रथी
कौशल्या सुमित्रा जान उभय सतिनी * आर सबे चलिल राजार यत राणी
बशिष्ठादि करिया यतेक मुनिगण * राज्य शुद्ध चलिल सकल पुरजन
कैकेयी ना जान मात्र भरतेर डरे * कुटिला कुंजीर सह रहिलेन घरे
कतदूर गिया पथे हइल देओयान * बलिलेन बशिष्ठ भरत - विद्यमान
यत्न करि आपनि बिधाता यदि आसे * रामेरे आनिते तबु ना पारिबे देशे
रामेरे आनिते केन करिला उद्योग * ना पारिबे आनिते केवल दुःखभोग
पितृ सत्य पालिते गेलेन राम वन * पिता दिल राज्य, तुमि छाड़ कि कारण
भरत बलेन, मुनि, तुमि पुरोहित * ह'ये पुरोहित केन करह अहित
तोमार चरणे मोर शत - नमस्कार * हेन अमंगल बाक्य ना कहिओ आर
रामेर चरण विना गति नाहि आर * रामेरे आनिया आमि दिब राज्यभार

१ प्रस्थान किया २ जितने भी ३ झुण्ड ४ परिश्रम।

भरत द्वारा श्रीराम की खोज

गुरु की सीख न भरतहिं भाई[१] * चले सवेग सुमिरि रघुराई
यमुना - पार राम वनदेसू * शृंगवेर - पुर भरत प्रवेसू
जुरेउ अखिल दल, निरखि महाना * सुरसरि तट, गुहपति अनुमाना
कोउ नृप समर करन मन लावा * निज बल[२] सकल निषाद सजावा
बदि, लखि अवध-कटक, मन चेता * आगम - भरत राम - रन - हेता
बलकल बसन पठइ वन आजू * भरत न चैन, हरन करि राजू
सजहिं, विषम सर-धनु धरि संगा * दलहिं अवध दल, तुरग, मतंगा
करि खरिहान,[३] न बहुरहिं[४] देसू * बजत दमाम, सबन रन - वेसू
कहेउ भरत, गुहगन ! जनि चिन्ता * करहु, अनुज मैं श्री भगवन्ता
कलसिन दधि, मधु, घृत अरु छीरा * आनेउ अमित अमिय फल तीरा
केला, गरी, अँगूर, सुपारी * कटहल, आम, अरम्ब[५] सवाँरी
रोहित-चितल मत्स्य बहु भारा * आनि धरेउ जहँ कटक अपारा

सो० भरत राम - अनुकूल, तौ भल विधि सनमानिये ।
जो मन कछु प्रतिकूल, सरित मिलावौं हनि सकल ॥ ५९ ॥

मन - निषाद ससपञ्ज[६] घनेरे * सुवचन कहि सुमन्त्र तव टेरे

भरतेर श्रीरामान्वेषण

युक्ति दिया नाहि पारे भरते राखिते * श्रीरामे स्मरिया जान भरत त्वरिते
आछेन यमुना पारे राम बनवासे * भरत गेलेन तथा शृंगवेर देशे
पृथिवी जुड़िया ठाट एक चापे जाय * गंगातीरे बसि गुह करे अभिप्राय
कोन राजा आइसे समर करिवारे * आपनार ठाट गुह एक ठाँइ करे
चिनिलेक बिलम्बेसे अयोध्यार ठाट * आपन कटके गुह आगुलिल बाट
गुह बले, देखि भरतेर सेनागण * श्री रामेर सहित करिते आसे रण
पराइया बाकल से पाठाइल बने * राज्यखण्ड निल, तबु क्षमा नाहि मने
साजरे चण्डाल-ठाट चापे दिया चाड़ा * विषम शरेते आजि काटि हाती घोड़ा
सर्व्व सैन्य काटिया करिब भूमिगत * देशे बाहुड़िया येन ना जाय भरत
मार-मार बलिया दगड़े दिल काठि * हेन काले भरत गुहरे बले भेटि
शुन रे चण्डालगण व्यस्त हओ नाइ * आसियाछे भरत रामेर छोटभाइ
दधि दुग्ध घृत मधु कलसी कलसी * अमृत समान फल आन राशि-राशि
नारिकेल गुवाक कदली आम्रसार * द्राक्षा फल पनस आनह भारे-भार
भाल मत्स्य आन सबे रोहित-चितल * शिरे बोझा, कान्धे भार वहरे सकल
यद्यपि भरत करे श्रीरामेरे राजा * भाल मते करे तबे भरतेर पूजा
भरत आसिया थाके शत्रुभावे यदि * भरतेर ठाट काटि बहाइब नदी
सात-पाँच गुहक भाबिछे मने-मन * हेनकाले सुमन्त्र कहेन सुवचन

१ पसन्द आई २ सेना ३ काट कर खलिहान कर दें ४ लौट न सकें ५ ढेर के ढेर ६ संशय ।

आये भरत लेन रघुराई * केहि पथ गये राम, कहु भाई
राम-लखन सिय गत अति दूरी * दरस - लालसा इतै न पूरी
कहि, पुनि भरतहिं नाइसि माथा * बरनी कथा सकल गुहनाथा
बन तव सैन, अनुज्ञा पाई * देहुँ सुपास[1] करौं पहुनाई
जब लग सुलभ न रघुपति-दरसन * अनशन सबन, न जल लौं परसन[2]
गंग - तरंग विपति अधिकाई * होयँ पार तव पाय सहाई
मग भल विदित, कहेउ गुहनाथा * चलहुँ ससैन कुअँर ! तव साथा
संसय मन जनि होत प्रतीती * लच्छन निरखि कछुक विपरीती
बन्धु - मिलन कर साज अनूपा * दल - बल विपुल अतुल भयरूपा
केवट ! मम मन - मर्म न जाना * राम - चरन तजि अन्त न ध्याना
एक राम हम सबन - नरेसू[3] * आये सकल लेवावन देसू
कह केवट, धनि कैकयि - नन्दन * तव जस गान करैं जग बन्दन
राम - सुहृद रघुपति - मनभावन * रघुकुल धन्य कीन तुम पावन
कै दिन कियेउ वास प्रभु साथा ? * गुहपति ! पद बंदेउ रघुनाथा !
मातु कलंक शीस मम छावा * कहु निषाद ! कहँ राम पठावा

दो० दुइ निसि नाथ सनाथ किय, रहे संग मम धाम ।
लखन धनुर्धर भक्तियुत, प्रभु सेवत अविराम ॥ ६० ॥

आइलेन श्रीरामेर लइते भरत * बल गुह, श्रीराम गेलेन कोन पथ
गुह बले, हेथा देखा ना पावे भरत * श्रीराम लक्ष्मण सीता बहुदूर गत
भरतेरे गुह तबे नोंजाइल माथा * मेट दिया गुह तारे कहे सब कथा
गुह बले, ठाट तव बनेर भितरे * आज्ञाकर, थाकुक अतिथि-व्यवहारे
भरत बलेन, ठाट रबे अनशन * यावत् श्रीराम सह नहे दरशन
ये देखि गंगार टेउ, पड़िब प्रमादे * तुमि यदि पार कर, जाइ निरापदे
गुह बले, आमार कटक पथ जाने * कटक सहित आमि जाइ तव सने
तोमार वचने आमि ना जाइ प्रतीत * मने तोला पाड़ा करे, देखि विपरीत
कोनरूप धरि एले भ्रातृ-दरशने * कटक साजन देखि भय हय मने
भरत बलेन, मन ना जान आमार * रामेर चरण-विना गति नाहि आर
राम विना राजत्व लइते अन्ये नारे * राज्य सह आइलाम रामे लइवारे
बले, गुह धन्यवाद तोमारे आमार * तव यश घुषिवेक सकल संसार
तोमा-भाइ-हेतु धन्य रघुनाथ मित्र * रघुवंश धन्य तुमि करिले पवित्र
शुन चण्डालेर राजा, भरत बलेन * श्रीरामेर करिले हे पूजा कतदिन
आमि दोषी हइलाम जननीर दोषे * बल गुह, श्रीराम गेलेन कोन देशे
गुह बले एखाने छिलेन एकराति * एकरात्रि एक ठांइ छिलाम संहति
लक्ष्मण रामेर भक्त सेवे रात्रि दिने * धनुःशर हाते करि थाके सर्व्वक्षणे

१ सुविधा, आराम २ स्पर्श ३ हम सबों के राजा ।

पठइ सुमंत्र, सोच उर गाढ़े * नेरे[1] भरत रहइँ नित ठाढ़े
चलि निषाद कहुँ अंत बनावैं * जहँ प्रिय भरत शोध जनि पावैं
राम महावन पथ यहु धारा * सबन, गंग मैं पार उतारा
सकल शोध केवट सों पाई * अवध - कटक सोइ मारग जाई
चले भरत जनि दूर बिसेखी * तृण - शैय्या तरु - तर इक देखी
शैय्या-वसन-अंश[2] लपिटाना * लखि प्रभु - शयन तहाँ अनुमाना
वसन गिरेउ खसि गहन[3] अगारी * प्रभु-तन-दुति[4] सम झलमलकारी
कहँ तृणसेज ? कहाँ रघुराई ? * लखि उर भरत सोच अधिकाई
केहि बिधि लखन सिया केहि रूपा * भल चीन्हेउ आवरण अनूपा
भरत गिरे छिति खाय पछारा * धाय सुमंत्र सुअंक सम्हारा
दुख पर दुख, सुधि-बुधि सब खोई * सुनत विलाप शिला द्रव[5] होई
अहिनिसि, बंधु - बिछोह सताए * उठे भरत बहु विधि समुझाए
हय, गज, कटक, रानि-महरानी * बितई निसा अन्न बिन पानी
भरत बिहान[6] जाह्नवी तीरा * सदल जुरे चहुँ खूर गँभीरा
कोटिन केवट, अगनित तरनी * सुरसरि - तट कहुँ लखत न धरनी
भरत सहित दल - अवध अपारा * छिन महँ गुहपति पार उतारा

सुमन्त्रे विदाय दिया चिन्तिलेन मने * हेथा भरतेर हात एड़ाब केमने
हेथा हैते जाइ आमि अन्य कोन स्थले * भरत ना देखा पावे ये खाने थाकिले
एइपथे ताँहारा गेलेन महावने * गंगापार करिया राखिनु तिनजने
गुह-स्थाने पाइया सकल समाचार * सेइ पथे गमन हइल सबाकार
ताहा एड़ि भरत कतक दूरे गेले * तृण-शय्या देखिलेन एक-वृक्षतले
तदुपरि शुये छिला राम बनबासी * तृण लग्न आछे पटुका पड़ेर दशी
कापड़ेर दशीते स्खलित आभरण * करे, झिकिमिकि येन सूर्य्येर किरण
ताहा देखि भरत चिन्तेन सकातरे * केमने शुइल प्रभु खड़ेर उपरे
केमने लक्ष्मण छिल, केमने जानकी * चिनिलाम आभरण, करे झिकिमिकि
आछाड़ खाइया पड़े भरत भूतले * सुमन्त्र धरिया तारे लइलेक कोले
भरत उभय शोके हइल अज्ञान * भरतेर क्रन्दनेते विदरे पषाण
अनेक प्रबोध - वाक्ये उठेन भरत * श्रीरामेर शोके दुःख पान अविरत
घोड़ा-हाती-पदातिक सातशत राणी * उपवासे सेइखाने बञ्चिल रजनी
प्रभाते भरत जान महाकोलाहले * कटक समेत रहे जाह्नवीर कूले
गुहक चण्डाल आछे भरतेर संगे * नौका आनि पार करे गंगार तरंगे
बहुकोटि नौकर गुहक अधिपति * आनाइया तरणी छाइल भागीरथी
तरणी मानुषे गंगा पूर्ण दुइकूले * हइल कटक गंगा पार एकतिले

१ नज़दीक २ वस्त्र का टुकड़ा ३ गहना ४ प्रकाश ५ पिघलनी ६ प्रातः दूसरे दिन ।

छं० हय गज सैन अनंत सहित सामंत रानि-महरानी ।
तरनि साजि, सुरसरि उतारि, गुहराज कहेउ मधुबानी ।।
चलहुँ देस, कारज न सेस, अरदास-दास[1] मन धारी ।
लेहु टेरि लउटत बहोरि, जनि सेवक हिये बिसारी ।।
कहेउ भरत, हे रामसखा ! तैं मम-बन्दन-अधिकारी ।
भरि सुअंक रघुपति जिन मेले[2], तिन-पूजन सुखकारी ।।
चंदन अगुरु रतन धन अर्पन करि लीन्हेउ लपिटाई ।
लहि प्रसाद गुह गमनेउ देस, भरत जितै रघुराई ।।

दो० दहिने माधव तीर्थ-पथ, तजि निज कटक महान ।
कछुक जनन लै तपोवन, कीन्हेउ भरत पयान ।। ६१ ।।

भरद्वाज मुनि आश्रम जाई * बंदेउ भरत चरन सिर नाई
दशरथ - तनय भरत मम नामा * अनुज लखन अग्रज मम रामा
हे मुनि ! वन आयेउँ तव सरना * दरस मिलै किमि रघुपति - चरना
राखि पंथ बिच कटक अपारा * इत अकेल कस भरतकुमारा
हेतु - आगमन जानि न पावा * निज संसय मुनि कुवँर सुनावा
मुनि ! तुम कहँ अजान कछु नाहीं * छल प्रपंच मोरे मन नाहीं
सात अछोहिन[3] कटक अनंता * तिनि निबाह किमि उपवन - संता[4]

जाइल सामन्त सैन्य शीघ्रनदी पार * घोड़ा हाती कटक हइल परे पार
सोनार नौकाय पार हन यत राणी * परे पार हइलेक सात अक्षौहिणी
गुह बले, आमार सेखाने नाहि कार्य्य * विदाय करह आमि जाइ निजराज्य
फिरिया यखन देशे करिबे गमन * आमारे आपन - ज्ञाने करिबे स्मरण
भरत बलेन, गुह, श्रीरामेर मित * करिते तोमार पूजा आमार उचित
याँरे कोल दिया छेन आपनि श्रीराम * आमार उचित तारे करिते प्रणाम
आपनि भरत ताँरे देन आलिंगन * सुगन्ध चन्दन देन बहुमूल्य धन
प्रसाद पाइया गुह गेल निज देशे * चलिलेन भरत श्रीरामेर उद्देशे
माधव तीर्थेर काछे आछे जेइ पथ * ताहारे दक्षिण करि चलेन भरत
हस्ती-अश्व प्रभृति राखिया सेइ स्थाने * अल्प लोके भरत गेलेन तपोवने
महामुनि भरद्वाज आछेन बसिया * भरत बलेन ताँर चरण बन्दिया
दशरथ-तनय भरत मम नाम * लक्ष्मण कनिष्ठ मम ज्येष्ठ हन राम
रामेर उद्देशे आमि आसियाछि वन * कह मुनि, कोथा ताँर पाव दरशन
जिज्ञासेन मुनि तारे, कोथा आगमन * एकेश्वर आसियाछ ना बुझि कारण
कटक-सकल तुमि राखियाछ पथे * कोन भावे आसियाछ, ना पारि बुझिते
भरत बलेन, आमि कपट ना जानि * ध्यान करि मुनि, सब जानह आपनि
सकल कटक मम सात अक्षौहिणी * कोन खाने रबे ठाट, भय करि मुनि

१ दास की प्रार्थना २ मिलन किया ३ अक्षौहिणी ४ संत के आश्रम में ।

भार बिपुल दल, मुनिन कलेसू * यहि भय सबन तजेउँ बन-देसू
आयउँ एक राम अनुरागा * सहज भाव दल मारग त्यागा

छं० बस रामहिं देस लिवाइ चलइँ, लौ[1] एक धरे समिटी नगरी।
दिन-रैन रुकी जनि, सैन थकी, न समाय तपोवन सो सिगरी॥
बिहँसे मुनि, तात! इतै, सुख-वास सुपास[2] सबै-सुरनाथपुरी।
सुत-कैकइ के न समात हिये किमि सिन्धु समाय इतै गगरी॥

भरद्वाज आश्रम में साक्षात स्वर्गपुरी-आगमन

कहेउ बिहँसि मुनि, तजि सुत! चिंता * आनहु सकल समाज अनंता
तप-उपवन दुरलभ कछु नाहीं * मुनि सिरजेउ कौतुक छिन माहीं
मुनि जब जेहि अभिमंत्रि बुलावा * यज्ञ-भूमि ततछन सोइ आवा
प्रथम विश्वकर्महिं आदेसू * रचहु सुरपुरी-सरिस प्रदेसू
अस्सी योजन पुरी प्रसारा * रचहु, विविधि-सुबरन आगारा
छत-प्राचीर-कनक सब भाँती * घाट विशाल सोवरन पाँती
दिव्य सरोवर नगर मझारा * नील धवल नित कमल-बहारा

दो० कनक-पात्र, कंचन-पलँग, रत्नासन, इमि सैन[3]।
कस्तूरी कुंकुम सुरभि सुर-वनितन सह सैन[4]॥ ६२॥

सर्व्वशुद्ध आइले आश्रमे हबे क्लेश * ते कारणे सैन्य मम बाहिर अशेष
आश्रम पीड़ने मुनि, करि बड़ भय * अन्य सब बाहिरे आछये महाशय
राज्यशुद्ध आसियाछे अयोध्यानगरी * रामेरे लइया जाब, एइ बाञ्छा करि
सातिशय श्रान्त सैन्य पथ परिश्रमे * कोन खाने रबे ठाट तोमार आश्रमे

भरद्वाज आश्रमे स्वर्गपुरी-आगमन

भरतेर कथा शुनि, आज्ञा देन मुनि * आपन इच्छाय आन यत अक्षौहिणी
दिव्यपुरी दिब आमि, दिब दिव्यवासा * अतिथि सवारे आमि करिब सुश्रुषा
भरत बलेन, देखि खान कत घर * केमने रहिबे ठाट, कटक विस्तर
भरतेर कथाय कहेन हासि मुनि * प्रयोजन-मत घर पाइबे एखनि
कटक आनिते जान भरत आपनि * हेथा चमत्कार करे भरद्वाज मुनि
यज्ञशाले गिया मुनि ध्यान करि वैसे * यखन याहारे डाके, तखनि से आइसे
विश्वकर्म्मा प्रथमतः हन आगुयान * आश्रमे अपूर्व्व पुरी करिते निर्म्माण
मुनि बले, विश्वकर्म्मा शुनह वचन * निर्म्माण करह, येन महेन्द्र-भुवन
अशीति योजन करे पुरीर पत्तन * सोनार आवास-घर करिल गठन
सोनार प्राचीर आर सोनार आओयारी * सोनार बान्धिल दीर्घ घाट सारि-सारि
पुरीर भितर करे दिव्य-सरोवर * श्वेत-नील पद्म ताहे शोभे निरंतर
सुवर्ण पालंक करे रत्न सिंहासन * देवकन्या ल'ये ठाट करिबे शयन
करिल सोनार बाटा, सोनार डाबर * कस्तूरी कुंकुम राखे गन्ध मनोहर

१ लौ, लगन २ सुविधा ३ सेना ४ शयन करना।

जे नद - नदी धरातल छाई * मुनि बल योग तपोबल आई
विपुल स्रोत जल सरित घनेरी[1] * यमुन, प्रभास, सिंधु कावेरी
कृष्णा, प्रबल नर्मदा धारा * गोदावरि, गोमती प्रसारा
भैरव, महानदी जल पावन * सरयू - तरपन मुकुति - दिवावन
गंडक, कौशिक, पुष्कर संगा * मंदाकिनि अरु धवलतरंगा
सुरभित सुरुच ईख मधुसानी * विविध सरित लखि थकन नसानी
घृत-सलिला, पुनि दधि अरु छीरा * घृत विशुद्ध प्रवहति जिमि नीरा
नदी सात शत, वेग तरंगा * आई पतितपावनी गंगा
भरद्वाज तप - पुंज विशाला * सकल देव पुनि दश दिक्पाला
सुरपति सहित अप्सरा आई * जिनि छवि-किरन धरनि चहुँ छाई
रवि - छवि छुवत हेमगिरि - शृंगा * बिसरे काज, न सुधि - बुधि अंगा
उपवन धनद कुबेर पधारे * चहुँ दिसि कनकमयी बिस्तारे
मलय - पवन आगम तजि मेरू * सुरभित मन मोहत सब केरू
इन्दु[2] अमियरस चहुँ दिसि पानू * रवि, शनि, नव-गृह, वरुण, कृशानू[3]
वसुगण, मरुत समिटि उनचासा[4] * जुरि मुनि - उपवन कीन प्रकासा
नारद, तुम्बुरादि[5] गंधर्वा * समिटे नर्त - नर्तकी सर्वा

यत-यत नदी आछे पृथिवी-मण्डले * योग बले मुनि आनाइल सेइ स्थले
सातशत नद आर नदी यत छिल * यमुना प्रभास आदि सेखाने आइल
आइल नर्म्मदा नदी, कृष्णा गोदावरी * आइल भैरव सिन्धु गोमती कावेरी
सरयू तनया नदी आर महानद * तर्पणे याहार जले पाय मोक्षपद
कालिन्दी, पुष्कर, नदी आइल गण्डकी * श्वेतगंगा स्वर्णगंगा आइल कौशिकी
इक्षुरस नदी आइल, सुगन्धि सुस्वाद * मधुरसनदी आइल, घुचे अवसाद
दधि-दुग्ध-घृत आदि रहे चारिभिते * घृतनदी बहिया आइसे शुधु घृते
सातशत नदी तथा अति वेगवती * आइलेन आश्रमे आपनि भागीरथी
भरद्वाज ठाकुरेर तपस्या विशाल * आइलेन सर्व्वदेव, दश दिक्पाल
देवकन्यागण ल'ये आइल पुरन्दरे * याहादेर रूपेते पृथिवी आलो करे
हेमकूटे देखि येन सूर्य्येर किरण * आछुक अन्येर काज, भुले मुनिगण
आइलेन कुबेर धनेर अधिकारी * सोनार बासन थाले आलो करे पुरी
सुमेरु पर्व्वत हैते आइल पवन * मलयेर वायुते सबार हरे मन
आइलेन सुधाकर सुधार निधान * परम कौतुके सबे करे सुधापान
आइलेन अग्नि आर जलेर ईश्वर * शनि आदि नवग्रह, संगे दिवाकर
मरुद्गण वसुगण येवा यथा रय * आइल सकल देव मुनिर आलय
तुम्बुरु-नारद आदि स्वर्गेर गायक * आइल नर्त्तकी कत, कत व नर्त्तक

---

१ बहुत सी २ चन्द्रमा ३ अग्नि ४ उन्चास प्रकार के पवन ५ तुम्बुर गंधर्व आदिक।

दो० आवत भरत, निमेष[1] बिच, रचना कीन ललाम।
बसी सुरपुरी तपोवन, उजरि गयेउ सुरधाम॥
कटक सहित मोहे भरत, नगरी रम्य विलोक।
शंकाकुल सुरगन सकल सोचत उर सुरलोक॥ ६३॥

भरत-नेह-बस तजि बनबासू * जो प्रभु लौटहिं अवध निवासू
सुर मुनि संत मिटै जनि त्रासा * कतहुँ न पुनि दसकंध विनासा
सुरगन-हिय यह पीर समाई * सोचि सतर्क रहे चहुँ छाई
भरद्वाज इत कौतुक कीन्हा * अवध-समाज मोहि मन लीन्हा
यथायोग चहुँ सुखद निवासू * ध्यान करत सब सुलभ सुपासू
तन फुलेल पुनि मज्जन करहीं * कोउ सर, कोउ सलिला-पथ गहहीं
अवसर प्रथम! गंग असनाना * तरपनादि तिन मोद महाना
सरन[2] असंख्य तुरंग-मतंगा * करत केलि क्रीड़ति जल-रंगा
उपवन मुनि-प्रभाव अतिरेका[3] * नव सरिता बहि चलीं अनेका
करि स्नान बसन बहुरंगा * चंदन लेप सुवासित अंगा
अखिल सैन जेहि जस रुचिकारी * भूखन-बसन विविध तिन धारी
सबकर भूखन-बसन समाना * प्रभु-सेवक न जात पहिचाना
जेंवन[4] हित, पंगतिन[5] पधारी * कनक-पट्टि चहुँ कंचन-थारी
स्वर्ण-पात्र अरु सुबरन-धामा * स्वर्णमयी दिसि सकल ललामा

देवशून्य हइलेक इन्द्रेर नगरी * भरद्वाज-आश्रम हइल स्वर्गपुरी
हेनकाले सैन्य सह भरत आइसे * एतेक करिल मुनि चक्षुर निमिषे
निरखिया भरतेर लागिल विस्मय * तखन मन्त्रणा करे स्वर्गे देव चय
भरतेर संगे यदि राम यान देशे * देवगण मुनिगण मरिवेन क्लेशे
राम देशे गेले, नाहि मरिबे रावण * साधुलोके सकलेर नितान्त मरण
ये रूपे ना जान राम अयोध्या भुवन * तेमन करह युक्ति, मरुक रावण
देवगण मुनिगण करेन मंत्रणा * भुवन मण्डल घिरि रहे सर्व्वजना
यार योग्य ये आवास, जाय सेइ जन * येदिके ये चाहे, तार ताहे रहे मन
माखिया सुगन्ध-तैल स्नान करिवारे * केह जाय नदीते, केह व सरोवरे
कोन पुरुषेते गंगा ये जन न देखे * करे स्नान-तर्पण से परम कौतुके
हस्ती अश्व कटक चलिल सुविस्तर * जलकेलि करे सबे गिया सरोवर
भरद्वाज मुनिर कि अपूर्व्व प्रभाव * कत नदी आश्रमे आपनि आविर्भाव
स्नान करि परे सबे विचित्र वसन * सर्व्वांग लेपिया दिल सुगंधिचन्दन
बहुविध परिच्छद परे सैन्यगण * यार याते वासना, परिल आभरण
सवार समान वेश, समान भूषण * केवा प्रभु केवा दास नाहि निरूपण
भोजने बसिल सैन्य बन्धु परिपाटी * स्वर्णपीठ स्वर्णथाल स्वर्णमय बाटि
स्वर्णेर डाबर आर स्वर्णमय झारि * स्वर्णमय घरेते बसिल सारि सारि

१ पलक मारते २ तालाबों में ३ अत्यन्त ४ भोजन के लिए ५ पंक्तियों मे।

सुरवनितन पारुस सुखकारी * अलख ! न दरसन परसनहारी
बरा पिठवरा, बरी, मुंगौरी * गरी - भरी अमरित दुधपूरी

दो० चन्द्रकला व्यञ्जन विविध, सोभित सुमन लवँग।
दधि, मधु, घृत, पायस[1] मधुर, को सक बरनि प्रसंग ॥ ६४ ॥

चौविधि[2] सुरभि[3] सुरस मन माने * सकल खाय जनि तबहुँ अघाने
तनि - तनि उदर कंठ लौं आए * दुसह ! अचम्य[4] शयन-ग्रह आए
शयन पर्यंक, भामिनी संगा * सुर - वनिता सुखचापहिं अंगा
मंजुल मंद सुगंध बयारी[5] * पंचम स्वर पिक कूजति प्यारी
अलि-अलिनी[6]-गुंजन चहुँ छावा * नर्त्त - अप्सरा मदन[7] जगावा
रितु बसंत सुख रैन अनंता * रमनिन रमत सैन, सामन्ता
रसना सबन एक रट लागी * साध[8] न देस स्वर्ग-सुख त्यागी
दुर्लभ जोग अतुल सुख पाई * धाम न काम, जाय सो जाई
सकल समाज अनंद - विभोरा * भरत एक लौं[9] प्रभु पद ओरा
भरत हेतु मुनि कीन्ही रचना * तिन न नेह, तजि रघुपति - चरना
भोर भरत बन्देउ मुनि जाई * सुख सों निसि तव धाम बिताई
अब करि दया मिटावहु पीरा * कहँ मुनि ! दरस मिलै रघुबीरा

देवकन्या अन्न देय, सैन्यगण खाय * के परिवेषण करे जानिते ना पाय
चन्द्रपुलि बड़ा पिठा मुगेर सामूली * सुधामय दुग्धे फेले नारिकेल पुलि
निर्म्मल कोमल अन्न येन यूँथिफूल * खाइल व्यञ्जन कत, नाम हैल भूल
घृत दधि दुग्ध मधु मधुर पायस * नानाविध मिष्ठान्न खाइल नानारस
चर्व्य-चूष्य-लेह्य-पेय सुगन्धि सुस्वाद * यत पाय तत खाय, नाहि अवसाद
कण्ठावधि पूर्ण हैल, पेट पाछे फाटे * आचमन करि ठाट कष्टे उठे खाटे
खाटे गिया प्रिया ल'ये करिले शयन * देवीरा आसिया करे शरीर मर्द्दन
मन्द मन्द गन्ध बहे अति सुललित * कोकिल पञ्चम स्वरे गाय बहु गीत
मधुकर-मधुकरी झंकारे कानने * अप्सरीरा नृत्य करे मातिया मदने
अनन्त सामन्त सैन्य लइया रमणी * परम आनन्दे वञ्चे वसन्त रजनी
सबे बले, देशे जाइ, हेन साध नाइ * अनायासे स्वर्ग मोरा पाइनु हेथाइ
एत सुख ए-संसारे केह नाहि करे * जे जाय से जाक, आमि ना जाइब घरे
हेन सुखे भुञ्जे ठाट, भरत ना जाने * रामेर चरण बिना नाहि ताँर ध्याने
एतेक करेन मुनि भरत - कारण * भरत भावेन मात्र रामेर चरण
प्रभाते भरत गिया मुनिरे जिज्ञासे * छिलाम परम सुखे तोमार निवासे
कह मुनि, कोथा गेले पाइब श्रीराम * उपदेश करिया पुराओ मनस्काम

---

१ दूध २ चबाने, चूसने, चाटने और पीने योग्य चार प्रकार के द्रव्य ३ सुगंधित ४ आचमन करके ५ हवा ६ भ्रमर-भ्रमरी ७ कामदेव ८ लालसा ९ लगन।

साधु ! साधु ! मुनि वचन उचारा * भक्त न भरत सरिस संसारा
माँगु माँगु मनु - वाँछित ताता * अमिट वचन मम जग विख्याता
एक मात्र अनुनय मुनि पाहीं * लहौं दरस चलि रघुपति पाहीं
बोले मुनि, सुनु कैकयि - नंदन * निवसति चित्रकूट रघुनंदन

छं० जदपि न लौटहिं धाम, राम के दरस मिलैं तहँ जाये।
मुंनिन सलाहन, चित्रकूट तन, भरत ससैन सिधाये॥
दस दिसि धूरि धुंध चहुँ छायी, जमुन कीन्ह उतराई।
कटक प्रफुल्लित राम-खबर सुनि चलेउ पवन-गति धाई॥

सो० पाय राम सहवास, गिरिवासी - मुनि पुलकि अति।
सैन-सोर सुनि त्रास, राम ! राम ! रच्छा करहु॥ ६५॥

भरत, रिपुदमन, कटक असेसू * अतुल सघन छबि तापस बेसू
राम - लखन - सिय उपवन वासू * पर्णकुटी रचि करहिं निवासू
द्वार राम, सिय कुटी विराजी * बाहेर लखन सरासन साजी

श्रीरामचन्द्र से भरतादिक का मिलन

सानुज भरत, दीन अति वेसू * तब लौं आश्रम कीन प्रवेसू
गरे वसन अरु लोचन नीरा * मारग स्रम कुम्हिलान सरीरा
प्रभु - पद - कमल दण्डवत कीन्हा * पुलकित राम अंक भरि लीन्हा

मुनि बले, जानिलाम भरत, तोमारे * तव तुल्य भ्रातृ-भक्त ना देखि संसारे
वर माग भरत, आमि हे भरद्वाज * जारे जेइ वर दिइ, सिद्ध हय काज
भरत बलेन, मुनि अन्ये नाहि मन * वर देह, श्रीरामेर पाइ दरशन
बले, मुनि श्रीरामेर जानि सविशेष * देखा पाबे, किन्तु राम ना जावेन देश
चित्रकूट पर्व्वते आछेन रघुवीर * तथा गेले देखा हबे, एइ जान स्थिर
अन्य अन्य मुनिगण दिल ताहे साय * भरतेर सैन्यगण चित्रकूटे जाय
दशदिक् हइल धूलाय अन्धकार * जाइल भरत - सैन्य यमुनार पार
रामेर सन्धान पेये प्रफुल्ल कटक * वायुवेगे चले सबे, ना माने आटक
यत हय चित्रकूट पर्व्वत निकट * तत तथाकार लोक भावये विकट
चित्रकूट - पर्व्वत - निवासी मुनिगण * श्रीरामेर सहवासे सदा हृष्टमन
सैन्य - कोलाहल शुनि सभय अन्तरे * 'रक्षा कर रामचन्द्र' बले उच्चैःस्वरे
हेनकाले भरत - शत्रुघ्न उपनीत * सबार तपस्वि - वेश अयोध्या सहित
श्रीराम लक्ष्मण आर जनकेर बाला * बसति करेन निर्म्माइया पर्णशाला
तार द्वार बसिया आछेन रघुवीर * जानकी ताहार मध्ये, लक्ष्मण बाहिर

श्रीरामचन्द्रेर सहित भरत प्रभृतिर मिलन

हेनकाले भरत शत्रुघ्न दीनवेशे * श्रीरामेर आश्रमेते आसिया प्रवेशे
गल वस्त्र भरत, नयने बहे नीर * पथ - पर्य्यटने अति मलिन शरीर
पड़िलेन श्रीरामेर चरण - कमले * आनन्दे श्रीराम तारे लइलेन कोले

मिला भेंटि आसिस सत्कारू * समुचित करत अवध परिवारू
गहि पद कहेउ, कवन मुँह लागी * वन - आगमन राज - पद त्यागी
सहज नारि - मति कुमति निवारू * उचित न परि तिन - कथन प्रवारू[1]
छमहु नाथ सत्वर[2] चलि देसू * करहु राज उर मिटइ कलेसू
अवध - मुकुट तुम अवध सरूपा * तुम बिन अवध दिवस निसिरूपा
चलि प्रभु ! राज सम्हारहु भारा * सेवहुँ पद पायक[3] अनुसारा
रघुपति कहेउ भरत ! तुम ज्ञानी * तबहुँ कहत कस अनुचित बानी
वन आयेउँ पितु - आयसु धारी * उचित न दोष विमातु बिचारी
चौदह वर्ष वचन - पितु धारी * अवधपुरी चलि निरखहिं प्यारी
तजहु प्रसंग न करहु अबेरी[4] * बरनौ प्रथम कुशल पितु केरी

दो० नृप गोलोक पयान किय, सुनि बशिष्ठ सों बैन ।
सहित लखन - सिय मूर्छित, विलपत करुना - ऐन[5] ॥ ६६ ॥

कहेउ बशिष्ठ, धीर धरि रामा * करहु शास्त्र - सम्मत पितु - कामा
अशुचि[6] तीन दिन, श्राद्ध सवाँरी * तुम सुत जेठ पिण्ड - अधिकारी
भरत संग बहु द्रव्य अपारा * लै बैपरहु सुरुचि अनुसारा
विज्ञ[7] ! धरहु धीरज उर माहीं * तुमहिं सीख - समरथ जग नाहीं
भूप सत्य पथ सुरपुर वासा * रुदन किये तिन पुण्य विनासा

परस्पर सम्भाषण करे सर्व्वजन * यथायोग्य आलिंगन पदादि बन्दन
भरत कहेन धरि रामेर चरण * कार वाक्ये राज्य छाड़ि वने आगमन
वामाजाति स्वभावतः वामा बुद्धि धरे * तार वाक्ये के कोथा गियाछे देशान्तरे
अपराध क्षमा कर, चल प्रभु देश * सिंहासने बसिया घुचाओ मनःक्लेश
अयोध्या-भूषण तुमि, अयोध्यार सार * तोमा विना अयोध्या दिवसे अन्धकार
चल प्रभु अयोध्याय, लह राज्यभार * दासवत् कर्म्म करि आज्ञा अनुसार
श्रीराम बलेन, तुमि भरत, पण्डित * ना बुझिया केन बल, ए नहे उचित
मिथ्या अनुयोग केन कर विमाताय * बने आइलाम आमि पितार आज्ञाय
चतुर्द्दश वत्सर पालिया पितृवाक्य * अयोध्या जाइब आमि देखिबे प्रत्यक्ष
थाकुक से सब कथा, शुनिब सकल * बलह भरत, आगे पितार कुशल
वशिष्ठ कहेन, राम, ना कहिले नय * स्वर्गवासे गियाछेन राजा महाशय
शुनि मूर्च्छागत राम-जानकी-लक्ष्मण * भूमिते लोटाय बहु करेन रोदन
बशिष्ठ बलेन बलि व्यवस्था इहाते * तिन दिन तोमार अशौच शास्त्र-मते
पितृश्राद्ध करिते ज्येष्ठेर अधिकार * तिनदिन गेले श्राद्ध करिबे राजार
सकल भाण्डार आछे भरतेर साथे * लह धन, कर व्यय प्रयोजन मते
संवर संवर शोक राम महामति * तोमारे बुझाते पारे, आछे कोन कृती
सत्यहेतु भूपति गेलेन स्वर्गवास * रोदन करिया केन पुण्य कर नाश

१ परदेश निवास २ शीघ्र ३ सेवक ४ विलम्ब ५ करुणाधाम ६ सूतक ७ ज्ञानवान ।

संचित तेल गात नरनाहू * भरत आय कीन्हेउ मृत दाहू
पुनि कर्तव्य कर्म किय नाना * अगनित अमित निरंतर दाना
भरत दान - गति बरनि न जाई * कोटि - कोटि धन बिप्रन पाई
उपजेउ भुवन न कोउ नरनाथा * भरत समान दान जिन गाथा

(श्रीराम द्वारा पितृ-श्राद्ध)

गुरु सों राम अनुज्ञा लेहीं * तर्पन श्राद्ध करन मन देहीं
द्रुति चलि फल्गु नदी के तीरा * आये लखन सीय रघुबीरा
सलिल नहाय ध्यान पितु धरहीं * नाम गोत्र लै तर्पन करहीं
बैठे राम लखन बैदेही * संग सकल दायाद[1] सनेही
अवध - समाज राम अनुसरही * प्रभुहिं घेरि चहुं आसन लहहीं
संका धरी राम गुरु आगे * बिन परमायु[2] प्रान पितु त्यागे !
अयुत वर्ष मुनि ! रविकुल - आयू * कस पितु स्वर्ग गमन अल्पायू[3]

दो० कहेउ बशिष्ठ भुवाल तजि देहँ गये परलोक ।
लही शांति, यहि विधि मिटेउ, दुसह ताप सुत-शोक ॥ ६७ ॥

कहेउ सुमंत्र, इतै तुम आये * 'हाय राम !' कहि भूप सिधाये
पितु - गति सुनत दिये सब रोई * श्राद्ध द्रव्य उत संचित होई
तप - उपवन निवसत मुनि - वृन्दा * नेउतेउ सबन सच्चिदानन्दा

छिलेन तैलेर मध्ये मृत महाराज * भरत आसिया करिलेन अग्निकाज
आरो ये कर्त्तव्य-कर्म्म करिया भरत * करिलेन कत शत दान अविरत
ताहार दानेर कथा शुन परिपाटि * एकैक ब्राह्मणे देन धन एक कोटि
यत यत राजा हइलेन चराचरे * भरत समान दान केह नाहि करे

(श्रीराम कर्तृक दशरथेर श्राद्धादि-सम्पादन)

श्रीराम बलेन, हे बशिष्ठ पुरोहित * आज्ञाकर, पितृ श्राद्ध करिये विहित
श्रीराम लक्ष्मण सीता चलेन त्वरित * हइलेन फल्गु नदी तीरे उपनीत
सकले सलिले स्नान करिया तखन * करिलेन नाम गोत्र लइया तर्पण
स्नान करि तीरेते बसेन तिनजन * तखन बसिल सबे आत्म बन्धुगन
यथा राम तथा हय अयोध्यानगरी * रामचन्द्रे बेड़िया सब बसिल पुरी
श्रीराम बलेन, मुनि, जिज्ञासि कारण * आयुःसत्वे मरिलेन पिता कि कारण
अयुत वत्सर लोक सूर्य्यवंशे जिये * काल पूर्ण ना हइते मृत्यु कि लागिये
बशिष्ठ बलेन, राजा गिया परलोके * रक्षा पाइलेन राम, तोमा पुत्रशोके
सुमन्त्र कहिल गिया, तुमि गेला वन * 'हा राम' बलिया राजा त्यजिल जीवन
पितृकथा शुनिया कान्देन तिनजन * एदिके श्राद्धेर द्रव्य हय आयोजन
तपोवने छिलेन यतेक मुनिगण * पितृ श्राद्धे श्रीराम करेन निमंत्रण

१ कुटुम्बी २ पूरी उम्र ३ अकाल मृत्यु ।

कीन श्राद्ध पुनि फल्गू तीरा * पिण्ड समर्पन किय शुचि[1] नीरा
भोजन - वसन दान विधि नाना * मुनिन - द्विजन सब विधि सन्माना
मुनि परितृप्त वचन शुभ कहहीं * पिण्ड पाय नृप सुरपुर लहहीं
कहेउ वशिष्ठ, पुरइ पितु - कामा * भरतहिं करउ अनुज्ञा रामा !
तुम बिन भरत न गति रघुराई ! * होयँ सुखी तव अनुमति पाई
मुनि ! मोहिं भरत प्रान ते प्यारे * भरत भेंटि उर सुख विस्तारे
बिलग न भाव, एक दोउ भाई * भरत - राजु, गुरु ! मोर रजाई[2]
गवनैं अवध करैं तत्काला * सचिवन सहित प्रजा - प्रतिपाला
पुरी नृपति बिन, भय मन आवै * कब को रिपु सूने[3] चढ़ि धावै
तुम सर्वज्ञ, सिखावन नाहीं * भल - अनभल - विवेक तव पाहीं
वर्ष चतुर्दस अवधि बिताई * सुख सों रहइँ अवध सब भाई

श्रीराम-पादुका सिंहासनासीन कर भरत द्वारा राज्य

विनय जोरि कर भरत सुनाई * मम सिर राज न सोभा पाई
प्रभु - पादुका सिंहासन धारी * दास प्रजा - पालन अधिकारी
दो० जहाँ पादुका नाथ की, त्रिभुवन-भय कस काम ? ।
अर्पन करि पुनि भरत सों, पुलकि कहेउ इमि राम ।। ६८ ।।
नन्दिग्राम थापहु रजधानी * तहँ बसि तात ! काय - मन - बानी
देखहु राज सम्हारहु काजू * सावधान पालहु पितु - राजू

पितृश्राद्ध करिलेन फल्गुनदी तीरे * पितृ पिण्ड समर्पण करेन से नीरे
मुनिगण कहे, कि राजार परिणाम * पिण्ड तिनि देन, यिनि निजे मोक्षधाम
श्रीरामेर बलेन बशिष्ठ महाशय * भरतेर प्रति राम कि अनुज्ञा हय
तोमा विना भरतेर नाहि आर गति * बुझिया भरते राम, कर अनुमति
श्रीराम बलेन. मुनि, हइलाम सुखी * प्राणेर अधिक आमि भरतेरे देखि
भरते आमाते नाहि करि अन्य भाव * भरतेर राजत्वे आमार राज्य लाभ
जाओ भाइ भरत, त्वरित अयोध्याय * मन्त्रिगणे ल'ये राज्य करह तथाय
सिंहासन शून्य आछे, भय करि मने * कोन शत्रु विपद् घटावे कोन क्षणे
तोमारे जानाव कत, आछ ये विदित * विवेचना करिबे सर्व्वदा हिताहित
चतुर्द्दश वत्सर जानह गत प्राय * चारिभाइ एकत्र हइब अयोध्याय

(सिंहासने श्रीरामेर पादुका राखिया भरतेर राज्यशासन)

जोड़ हाते भरत बलेन सविनय * केमने राखिब राज्य, मम कार्य्यं नय
तोमार पादुका देह, करि गिया राजा * तबे से पारिब राम, पालिबारे प्रजा
तोमार पादुका राम, थाके यदि घरे * त्रिभुवने भरत काहारे नाहि डरे
श्री राम बलेन, हे भरत प्राणाधिक * पादुका लइया जाह, कि कब अधिक
नन्दिग्रामे पाट करि कर राज - कार्य्य * सावधान हइया पालिह पितृराज्य

१ पवित्र २ शासन, हुकूमत ३ राजा की अनुपस्थिति में ।

प्रभु - पादुका भरत सिर धारी * अतिव विभोर मोद उर भारी
करि अभिषेक बन्धु - पदत्राना[1] * हरि - आयसु लहि कीन पयाना
बिछुरत रुदन कुलाहल भारी * सुनत न काउ केहु सकत सम्हारी
राम अंक भरि बिलखत जननी * भिजये बसन नयन - निर्झरनी
लखन - मातु लखनहिं उर लाई * करत बिलाप दुसह दुख पाई
सीतहिं सकल समाज बिलोकी * आकुल रुदन सकेउ जनि रोकी
राम - बिछोह सबन दुखदायी * भरतहिं बिदा कीन रघुराई
चित्रकूट गिरि रम्य सुहावा * कछु दिन तहँ निवास मन भावा
तीन दिवस चलि पन्थ बिताये * भरत ससैन अवध पुनि आये
बिश्कर्महिं[2] भगवन्त पठाये * नन्दिग्राम बहु धाम रचाये
रत्न सिंहासन आसन साजी * पदत्रान - प्रभु युगुल बिराजी
राज - छत्र छबि उपर सुहाई * नीचे पुनि मृगचर्म बिछाई
भरत चलावत सासन काजू * सहित सनेहिन सचिव - समाजू
राम नाम सब पाप बिनासा * मुक्ति दैन बैकुण्ठ निवासा

दो० अवध काण्ड गाथा रुचिर कृत्तिवास किय गान ।
सुधा - कलश संगीतमय सुललित सुखद बखान ॥ ६९ ॥

दशरथ-हेतु सीता द्वारा पिण्डदान

गिरि, सिय सहित राम दोउ भाई * बर्षी - श्राद्ध - भूप - तिथि आई
लखन-सिया लखि सोचत रामा * किमि पितु श्राद्ध सवाँरहिं कामा

श्रीरामेर पादुका भरत शिरे धरे * भावे पुलकित अंग, प्रफुल्ल अन्तरे
पादुकार अभिषेक करिया तथाय * चलिलेन भरत श्रीरामेर आज्ञाय
यात्राकाले उठे महाक्रन्दनेर रोल * कोनजन शुनिते ना पाय कारो बोल
कान्देन कौशल्यारानी रामे करि कोले * वसन भिजिल ताँर नयनेर जले
सुमित्रा कान्देन कोले करिया लक्ष्मणे * सकले क्रन्दन करे सीतार कारणे
भरतेरे विदाय करिया रघुवीर * चित्रकूटे किछु दिन रहिलेन स्थिर
सैन्यगण - सहित भरत अतःपरे * तिन दिने आइलेन अयोध्या - नगरे
विश्वकर्म्मा पाठाइया देन भगवान * नन्दिग्रामे अट्टालिका करेन निर्म्माण
रत्न सिंहासनेते भरत पटु पाति * तदुपरि पादुका राखिया धरे छाति
तार निम्ने श्रीभरत कृष्णसार चर्म्मे * पात्र मित्र सहित थाकेन राजकर्म्मे
राम नाम लइते जे करे अभिलाष * सर्व्व पापे मुक्ति तार, वैकुण्ठ निवास
कृत्तिवास कविर संगीत सुधाभाण्ड * किवा मनोहर गीत ए अयोध्याकाण्ड

दशरथेर उद्देशे सीतार पिण्डदान

राम सीता रहिलेन पर्व्वत - उपर * दशरथ मृत्यु पूर्ण हैल संवत्सर
कहिला श्रीरामचन्द्र सीता - लक्ष्मणेरे * कि दिया करिब श्राद्ध पितृ संवत्सरे

---

१ खड़ाऊँ २ विश्वकर्मा ।

तब लौ जुगुति एक मन भाई * नजर मुद्रिका मानिक आई
मुँदरी[1] लै सानुज पग धारे * रमत इतै सिय फल्गु - किनारे
कौतुक ! रेनु[2] रमत वैदेही * दरस दीन मृत श्वसुर[3] सनेही
हे सिय, करु मम कथन प्रमाना * छुधा अगिनि मम निकसत प्राना
तै मम बधू ! श्वसुर सत्कारै * रेनु - पिण्ड दै छुधा निवारै
कह सिय, पितु ! न मोहिं इन्कारी * पति बिन तदपि न मैं अधिकारी
राम सरिस मोहिं सब विधि सीता * सम अधिकारिनि, करह प्रतीता
तजि ससपञ्ज[4] करहु जस भाषी * चन्द्रवदनि ! समुहे करि साखी
सुनि सिय इन्द्रमुखी सुख पाई * प्रभु - प्रिय 'तुलसी' आदि बुलाई
पुनि बट, फल्गु नदी, द्विजराई * साखी देन सबन सखराई[5]
पूछहिं आय यदा रघुनाथा * कहेउ श्वसुर कै पावन गाथा
सिकता-पिण्ड[6] ग्रहण मुदि[7] कीन्हा * दसरथ - रथ सुरपुर - पथ लीन्हा
सिय कहँ विपति पिण्ड नृप होता * कृत्तिवास कह छोभ समेता

ब्राह्मण, तुलसी, फल्गुनदी-प्रति सीता-शाप और बटवृक्षहेतु आशीष

सामग्री - सराध उत लीन्हे * तबहिं सवेग राम पग दीन्हे

तखन करेन युक्ति श्रीराम दैत्यारि * भञ्जित करिया आन माणिक्य अंगुरी
अगुरी लइया गेला दुइ सहोदरे * सीता आरम्भिला खेला फल्गुनदी तीरे
खेलेन लइया बालि सीता बहुमते * आसिलेन दशरथ सीतार साक्षाते
दशरथ कहिलेन, शुन ओ मा सीता * क्षुधार ज्वालाय आमि ना पारि तिष्ठिते
तुमि बधु, आमि तव श्वसुर ठाकुर * अर्पिया बालिर पिण्ड क्षुधा कर दूर
सीता कहिलेन, देव, कहिये तोमारे * किमते अर्पिब पिण्ड राम अगोचरे
राजा कन सीतादेवि कहि तवस्थान * आमार निकटे तुमि रामेर समान
मने किछु ना करिह, ओ मा चन्द्रमुखि * लोकजन डाकि आनि क'रे राखि साक्षी
'भाल-भाल' बलि कहे सीता चन्द्रमुखी * आद्येर तुलसी तुमि ह'ये थाक साक्षी
जिज्ञासा करेन राम फिरि आसि यदि * कहिबेन बटवृक्ष आर फल्गु नदी
ब्राह्मण देखिया सीता करेन ज्ञापन * दशरथ - कथा सब कहिबे ब्राह्मण
इहा शुनि दशरथ हर्षे उठि रथे * लइया बालिर पिण्ड गेला स्वर्गपथे
कृत्तिवास पण्डितेर रहिल विषाद * श्वशुरेर पिण्डदाने बधूर प्रमाद

ब्राह्मण, तुलसी ओ फलगुनदीर प्रति सीतार अभिशाप एवं बटवृक्षेर प्रति ताँहार आशीर्व्वाद

हेथा प्रभु रामचन्द्र अति - त्वरापर * श्राद्धेर सामग्री ल'ये आइला सत्वर

---

१ अँगूठी २ बालू ३ श्वसुर स्व० दशरथ ४ संशय ५ यह गवाही देने का वचन ले लिया कि दशरथ ने सीता से पिण्ड ग्रहण किया ६ नदी की बालू के पिण्ड ७ प्रसन्न होकर।

दो० रामहिं देखि समोद मन कहेउ कुतूहल! नाथ।
इत प्रतच्छ दरसन दिये श्वसुर पूज्य नरनाथ॥ ७०॥

मोहिं दिय श्राद्ध करन आदेसू * गये पिण्ड लहि, स्वर्ग नरेसू
हे सिय! जे साखी तिन लावौ * अघटन[1] घटित प्रमान करावौ
साखी विप्र, विनय किय सीता * तिनहिं पूछि, प्रभु! करहु प्रतीता
पुनर्श्राद्ध, द्विज लोभ विचारी[2] * वचन असत्य कहन मन धारी
हे द्विज श्रेष्ठ! कहेउ रघुनन्दन * मम पितु लहे इतै तुम दरसन?
कह द्विज, वचन सत्य रघुनाथा * दरस न मोहिं दसरथ नरनाथा
सुनि घट-घट-व्यापी मुसकाने * सियसुन्दरी-नयन सकुचाने
असत् वचन द्विज, अति संतापू * सिय अति कोप, दीन तेहिं शापू
यदपि लखपती, द्रव्य असंखू * भिक्षा-वृत्ति करहु दिग्दंखू
रघुपति कह भरोस केहि वानी * चन्द्रवदनि! तेहि आनहु रानी!
आदिप्रिया तव, तुलसी, नाथा! * तिन मुख सकल सुनौ प्रभु! गाथा
तुलसी प्रति हरि बोलत वानी * वरनउ पिण्ड-प्रदान-कहानी
राम रिझाय सिया-विपरीती * तुलसी-मन इमि उपज अनीती

श्रीरामे देखिया सीता हरिष अन्तरे * निवेदन करिलेन रामेर गोचरे
सीता कहिलेन, शुन प्रभु रघुवर * आश्रमे आसिया छिला अजेर कोडर
आमारे करिते श्राद्ध कन दशरथ * लइया बालिर पिण्ड गेला स्वर्गपथ
राम कहिलेन, किसे प्रत्य हय कथा * साक्षी करि राखियाछि, कन देवी सीता
साक्षीरे आनिया सीता, बलाओ एखन * साक्षी पाइलेइ मोर प्रत्यय हय मन
सीता कहिलेन, प्रभु करि निवेदन * जिज्ञासा करह तुमि डाकिय ब्राह्मण
ब्राह्मण बलेन खर्व्व करिब सीतारे * मिथ्या वाक्य कब आजि रामेर गोचरे
डाकिया ब्राह्मणे जिज्ञासेन रघुनाथे * तोमारा देखेछे मोर पिता दशरथे
ब्राह्मण कहेन तबे रामेर साक्षाते * आमरा ना देखियाछि राजा दशरथे
ए कथा शुनिया राम कन हासि-हासि * लज्जाय मलिन हैल सीता सुरूपसी
मिथ्या हिक ब्राह्मण, एतेक दिले ताप * क्रोधे तनु थर-थर, दिनु तोमा शाप
लक्ष-लंकार दृव्य यदि थाके तव घरे * भिक्षार लागियाये ओ' देश-देशान्तरे
राम कन कान्देन सीता चन्द्रमुखी * आर केह थाकेत, बलाओ देखि साक्षी
एतेक शुनिया कन सीता सुरूपसी * आनिया बलान् प्रभु आद्येर तुलसी
अतः पर तुलसी कानन तथा हेरि * कहिलेन रघुनाथ, कह द्रुति करि
पिण्ड-प्रदानेर तुमि जान विवरण * तुलसी कहेन, यथा कहेन ब्राह्मण
तुलसी भावेन राम मोरे निवे हाते * मिथ्या कथा कब आमि रामेर साक्षाते

१ अनहोनी २ दुबारा राम द्वारा श्राद्ध होने पर दान-दक्षिणा-प्राप्ति का लोभ।

कहहु सत्य, बोले रघुबीरा * लखे पिता मम फल्गू तीरा
विप्रवचन तुलसी दुहरावा * तब पितु-दरस न प्रभु! मै पावा
सुनि मन अतुल ताप सिय व्यापा * सुनु तुलसी! तव प्रति मम शापा

छं० हरि सीस लसी तुलसी, मम रीस, पचीसन ठौर जमै धरनी।
दुखदायिनि! श्वान-शृगालन के मल-मूत्र अपावन माहिं सनी॥
सिय-कोप कराल नितै तुलसी, जु जुरे, उजरै, भुगतै करनी।
मुस्काय कहैं रघुनाथ, सिया! अब कौन गवाह कि है बरनी[1]॥

दो० फल्गु नदी मम साक्षी[2], कीन सिया संकेत।
सरित तजेउ सत, लोभ-बस, राम-द्रव्य के हेत॥ ७१॥

नलिनिविलोचन पूछत बानी * मम पितु लखेउ फल्गु महरानी
फल्गु असत्य वचन§ दुहरावा * मैं अजनन्दन - दरस न पावा
धीरज छूट, सिया अति रोदन * फल्गु! न गति तव शाप-विमोचन
अन्तःसलिल[3] बहे सब काला * लंघ छीन - जल श्वान - शृगाला
हे सिय सुमुखि! कहेउ रघुबीरा * साखी और कौन तव - तीरा
कह सिय, अतिव लाज मन माहीं * पूछहु तदपि नाथ! बट[4] पाहीं

राम बले तुलसि शुनह मोर कथा * साक्षाते देखेछे मोर दशरथ पिता
तुलसी बलेन तबे प्रभु रघुवरे * आमरा ना देखियाछि तोमार पितारे
कथा शुनि जानकीर जन्मे मनस्ताप * यारे या तुलसि आमि दिनु तोरे शाप
एत दुःख दिलि तुइ आमार अन्तरे * आभूमि जन्मिओ तुमि लैया सर्व ओरे
क्रोध भरे सीतादेवी कहेन एमन * तोर पत्र श्रीहरिर आदरेर धन
अपवित्र स्थाने तोर अवस्थित हबे * शृगाल कुक्कुर मूत्र - पुरीष त्यजिबे
हासिया बलेन राम, शुनह जानकि * आर केह थाकेत, बलाओ तारे साक्षी
सीता कहिलेन शुन प्रभु गुणनिधि * आर साक्षी आछे सेइ फल्गु महानदी
फल्गु भावे, मिथ्या कर श्रीरामेर स्थले * दिबेन कतइ द्रव्य राम मोर जले
फल्गुरे सुधान राम कमललोचन * तुमि देखियाछ किवा अजेरनन्दन
फल्गुनदी कहे, शुन प्रभु रघुनाथे * आमि नाहि देखियाछि राजा दशरथे
एतेक शुनिया सीता कान्दे उच्चैःस्वरे * आजि आमि दिब शाप ए फल्गु नदीरे
अन्तःशीला ह'ये तुमि बह सर्व्वकाल * तोमारे डिंगिया जाबे कुक्कुरे-शृगाल
श्रीराम बलेन शुन सीता चन्द्रमुखि * आर केह थाकेत बलाओ आनि साक्षी
सीता कहिलेन राम लज्जा बोध करि * वटवृक्ष आनि साक्षी बलाओ दैत्यारि

१ पारी, नम्बर २ साक्षी, गवाह ३ जल-प्रवाह प्रकट न होकर छीया रहे ४ बरगद।

§ विष्णुप्रिया तुलसी ने सौत सीता के प्रति ईर्ष्या के कारण और ब्राह्मण तथा फल्गु नदी ने राम के द्वारा पुनः पिण्डदान होने पर क्रमशः पुनः दान-दक्षिणा और पिण्ड पाने के लोभ में असत्य गवाही दी।

पुरवहु एक साथ, तरु भषी * बरनउँ कथा, नाथ मैं साखी
राम-रमा छबि युगुल निहारी * बरनउँ सकल सत्य मन धारी
सुनि तरु - वचन मोद अधिकाई * राम - बाम सिय जाय सोहाई
अनुपम निरखि युगुल छवि प्यारी * वट कर - जोरि विनय विस्तारी
प्रभु-पद विनय एक रघुकेतू * 'चिन्तामणि' तव नाम न हेतू
जग विख्यात 'दयामय' नामा * उबरत पतित, लहत तव - धामा
जड़ जंगम जे चेतन नाना * घट - घट नित व्यापत भगवाना
चिन्तामणि निमग्न जग - चिन्ता * किमि पितु - पिण्ड अबुध भगवन्ता
महिमा नाम वृथा इमि होई * कहै न 'चिन्तामणि' जग कोई
निजहिं भूलि संसार - सनेही * परे भरम लहि मानव - देही

दो० तुलसी, सरिता फल्गु दोउ, विप्र अनुसरन कीन।
लोभ-विवस बानी असत, हे प्रभु ! साखी दीन ॥ ७२ ॥

मिथ्या कथन रुचिर जनि स्वामी * उचित प्रवञ्च[1] न अन्तर्यामी
शत - शत कोटि जनम तप करई * समता - सतवादी जनि लहई
सिकता - पिण्ड[2] गहे सिय हाथा * निजकर पुलकि लीन नर - नाथा
सो करि पान, तृप्त, सुखसाने * मम नैननतर[3] स्वर्ग पयाने

बटवृक्ष आसि कहे प्रभु रघुवर * साक्षी दिब, यदि मोर जुड़ाओ अन्तर
राम-सीता युग्म रूप हेरिब नयने * तबे आमि साक्ष्य दिब तव विद्यमाने
वृक्ष कथा शुनि सीता आनन्दित मन * रामेर बामेते सीता दाँड़ान तखन
हेरिया युगल रुप निजेर नयाने * जोड़ हस्ते, बले बृक्ष राम-विद्यमाने
तोमार चरणे प्रभु एइ निवेदन * 'चिन्तामणि' नाम तुमि धर कि कारण
दयामय - नाम तव सर्व्व लोके कय * पतिते तराओ ताइ नाम 'दयामय'
स्थावर - जंगम आदि यत जीवगण * सर्व्व जीवे सर्व्वक्षण आछ नारायण
संसारेर चिन्ताकर नाम 'चिन्तामणि' * सीता पिण्ड दिला किना ना जान आपनि
चिन्तामणि नामे तव कलंक रहिल * आजि हैते चिन्तामणि नामटि डुबिल
चिन्ताय व्यकुल ह'ये भुलेछ आपना * मायाय मानुष हैले, किछु नाहि जाना
बट वृक्ष कहे शुन कमललोचन * मिथ्या साक्ष्य इहारा दिलेक सर्व्वजन
धनलोभे मिथ्या कथा कहिल ब्राह्मण * ब्राह्मणेर अनुरोधे अन्य दुइजन
आमि यदि मिथ्या बलि एके हबे आर * अंतर्य्यामी नारायण फाँकि देओया भार
शतकोटि जन्म तप करे जेइ जन * सत्यवादि सम किन्तु ना हय कखन
बालिपिण्ड ल'ये छिला सीता डान हाथे * आपनि लइला ताहा राजा दशरथे
खाइया सीतार पिण्ड प्रफुल्ल अन्तरे * देखिते देखिते राजा गेला स्वर्गपुरे

---

१ छल २ बालू के पिण्ड ३ मेरे देखते देखते।

छं० तुलसी, द्विज, फल्गुनदी-बिपरीत, सुनी बट की प्रभु सत्य-कथा।
अश्वत्थ सदा चिरजीव अमर तव बानि नसवानि सीय-व्यथा ॥
अति जेठ जलाक म' सीतलता, अरु माह म' सीत अलोप तथा।
सुनि सीय असीस सियापति की, सिय बोलति, बानि न मोर वृथा ॥
पतझार न पल्लव - हीन[1] कबौं, तरु - डारिन पात नये लहरैं।
अति मञ्जुल सीतल छाँह सदा, श्रम-ताप हरैं, मन-मोद भरैं ॥
गदिया[2] बहु पात-जटान लदे, तहँ नित्य विहंग[3] विहार करैं।
तरु पुंगव हे ! तव-संग लहे, सब क्लेश बटोहिन[4] के निवरैं ॥
पुनि - पुनि तरुहिं असीसत जाई ❋ रामप्रिया सिय दीन बिदाई
लखन - राम - सिय पर्ब्बत बासू ❋ गयाधाम कछु कथा प्रकासू

गया-माहात्म्य

चित्रकूट सानुज - सिय रामा ❋ निवसि, चले पुनि गया सुधामा
वरनहु कथा पुरातन, नाथा ❋ उत्पति - धाम सुपावन गाथा
पिण्ड पितर पठवत प्रभु - धामा ❋ श्रवन लालसा कथा ललामा
सुनु सिय ! अति प्राचीन कहानी ❋ दनुज एक दुर्जय अभिमानी
सुरपति - रन सुरगनन पछारी ❋ प्रबल 'गयासुर' अति बलधारी

शुनिया वृक्षेर कथा कन रघुवर ❋ चिरजीही हओ बट अक्षय अमर
पिण्डदान करि मने भाबेन जानकी ❋ बारे बारे सबाकारे करियाछि साक्षी
तुष्ट ह'ये वर दिब तोमाय केवल ❋ शीतकाले उष्ण हबे ग्रीष्मते शीतल
पुनर्व्वार सीता तारे दिला एइ वर ❋ डाले डाले हबे नव पल्लव विस्तर
मनोहर सुशीतल रबे अनिवार ❋ निष्पत्र ना हबे शाखा कदापि तोमार
सुशीतल राखिबे जे जाबे तव तले ❋ सर्व्वदा आनन्दे रबे निजपत्र फले
एइ रूपे बटवृक्षे आशीर्व्वाद करि ❋ विदाय दिलेन तारे रामे सुन्दरी
पर्व्वत उपरे रन राम लक्ष्मण सीता ❋ एखन कहिब किछु गयाधाम कथा
कृत्तिवास पण्डितेर कथा सुधाभाण्ड ❋ परम पवित्र एइ अयोध्यार काण्ड

गया माहात्म्य

चित्रकूट छाड़ि राम सीता ओ लक्ष्मण ❋ गयाधामे गिया शेषे दिला दरशन
सीता बले, शुन प्रभु करि निवेदन ❋ पूर्व्वकथा कह आमि करिब श्रवण
कि निमित्त गयाधाम हइल एखाने ❋ इथे पिण्ड दिले जाय वैकुण्ठभुवने
राम बले शुन सीता आमार वचन ❋ पूर्व्वकथा कहि आमि ताहे देह मन
पूर्व्वे हेवा छिल दैत्य गयासुर नाम ❋ तार सने करे इन्द्र भीषण संग्राम
गयासुर दैत्य तार महाशक्ति छिल ❋ इन्द्रादि यतेक देव सबारे जिनिल

१ बिना पत्तों के २ बरगद के फल ३ पक्षी ४ यात्रियों।

अश्वमेध, करि जज्ञ अनन्ता * भयेउ अमर अक्षय बलवंता
केहु न गिनत जग, तन विकराला * जीते अखिल देव - दिक्पाला
सुरगन विकल विरञ्चहिं टेरी * 'गति न', कहत दुर्गति सब केरी
असुर अतंक, न कहुँ निस्तारा * करहु प्रजापति ! सबन उबारा[1]
कातर देव - समूह निहारी * चले विरञ्चि सहित त्रिपुरारी

दो० विधि-महेस रन विषम करि, सक न जीति संग्राम ।
कह विरञ्चि, तुम सम, दनुज ! जग न पुण्य-बल-धाम ॥ ७३ ॥

प्रबल दनुजपति ! तव तन थापी[2] * रचना - यज्ञ - कामना व्यापी
कहेउ गयासुर, शिव - चतुरानन * दोउ मम तन ऊपर लहि आसन
करहु याग पुरवहु निज आसा * तबहुँ न सम्भव मोर विनासा
कहि, उतान[3] भुइँ परा सुरारी[4] * शिव - विरञ्चि तहँ यज्ञ सवाँरी
गिरि-पाषान अवनि बहु भाँती * देवन सकल धरेउ तेहि छाती
वेदी रची दनुजपति - गाता[5] * करत याग जहँ शंभु - विधाता[6]
सुरगन अखिल, विरञ्चि महेश्वर * सुरन सहित सुर - अधिप पुरन्दर[7]
तन विराट् ! तिन भार अपारा * गय - तन अतुल बोझ विस्तारा
करहिं जज्ञ पशुपति - चतुरानन * तहँ प्रतच्छ[8] भइ प्रगट हुतासन[9]

अश्वमेध आदि करि नाना यज्ञ करे * अक्षय अमर ह'ये रहे कलेवरे
प्रकाण्ड शरीर तार कारेओ ना माने * एके एके जिनिल यतेक देवगणे
तार भये देवगण तिष्ठिते ना पारे * ब्रह्मार निकटे गिया सर्व स्तव करे
गोसाइँ, असुर भये नाहि अव्याहति * एइबार रक्षा कर ओहे प्रजापति
समस्त देवेर ब्रह्मा देखिया काकूति * आपनि आइला संगे ल'ये पशुपति
करिला भीषण रण दोंहे तारसने * तथापि जिनिते नारे ब्रह्मा-त्रिलोचने
ब्रह्मा बले दैत्य तुमि बड़ बलवान * तोमार समान केह नाहि पुण्यवान
सेइ हेते गयासुर शुनह वचन * तोमार उपर यज्ञ करिब एखन
शुनिया ब्रह्मार कथा कहे गयासुरे * दोंहे मिलि यज्ञ कर आमार उपरे
आमार उपर यज्ञ कर दुइ जन * तथापि इहाते मोर ना हवे मरण
चित् ह'य गयासुर पड़िल सेखाने * बसिला करिते यज्ञ ब्रह्मा त्रिलोचने
पृथिवीते पाषाण - पर्व्वत यत छिल * गयासुर उपरे सकलि चापाइल
यज्ञ सज्जा आनि देय यत देवगण * आरम्भिला यज्ञ तबे ब्रह्मा त्रिलोचन
यतेक देवता मह ब्रह्मा - महेश्वर * एकमन ह'ये सबे हैला गुरुभर
विराट् मूरति धरि गयेर उपर * बसिलेन देवगण सह पुरन्दर
अग्नि ज्वालि यज्ञ करे ब्रह्मा, त्रिलोचन * मूर्त्तिमान ह'ये अग्नि उठे सेइ क्षण

१ उद्धार २ शरीर पर वेदी स्थापित करके ३ चित्त लेट गया ४ दैत्य गयासुर ५ दैत्य के शरीर पर ६ शिव और ब्रह्मा ७ इन्द्र ८ प्रत्यक्ष ९ यज्ञ-अग्नि ।

कलसन घृत आहुति लहि आगी * नभ लौं लपट प्रज्वलित लागी
तन - वेदी जहँ जज्ञ प्रकासा * तबहुँ गयासुर - अंग न त्रासा
दनुज न लेस, असेस पराना * पूरन याग, सुरन अनुमाना
उठेउ झारि, तन विकट सम्हारा * गिरे दूरि तरु - उपल - पहारा[1]
मम विनास देवन - बस नाहीं * सुनि सभीत सुरगन मन माहीं
सुर - संकट लखि कृपानिधाना * चलि रन घोर असुर सन ठाना
विक्रम - विपुल - गयासुर देखी * श्रीपति - उर सन्तोष विसेषी

दो० दनुज-पछारेउ, ताहि सिर, हरि पद-पंकज दीन ।
पिण्ड विष्णु-पद पितर लहि, होत परम-पद लीन ॥
गया-धाम पावन कथा, अवधकाण्ड इति गान ।
कृत्तिवास अनुरूप पुनि, अथ अरण्य - सोपान ॥ ७४ ॥

अग्निमध्ये घृत ढाले कलसे-कलसे * प्रदीप्त हइया अग्नि अम्बर परशे
असुर उपरे यज्ञ यद्यपि करिल * तथापि असुर ताहे भय ना पाइल
सबे बले गयासुर परान त्यजिल * यज्ञ सांग करि फोंटा सकले परिल
गयासुर बले सबे यज्ञ सांग हैल * गात्र झाड़ा दिय वीर तखनि उठिल
पाहाड़ पर्वत वृक्ष पड़े बहु दूरे * देखि यत देवगण पड़िव फाँफरे
गयासुर बले, शुन ओहे देवगण * तोमादेर हाते मोर ना हबे मरण
एतेक शुनिया देवगणे लागे त्रास * देवगण - त्रास देखि आसि श्रीनिवास
गयासुर सह आरम्भिला घोर रण * गयासुर - पराक्रमे तुष्ट नारायण
पराजिया गयासुरे देव दामोदर * स्थापिलेन पादपद्म तार शिरोपर
विष्णुपदे गय-शिरे येबा पिण्ड देय * पितृगण मुक्त ह'ये मोक्षधामे जाय
सेइ हेतु गयाधाम नामेते प्रकाश * समाप्त अयोध्याकाण्ड कहे कृत्तिवास

---

१ वृक्ष-पत्थर-पहाड़ ।

श्री गणेशाय नमः

कृत्तिवास रामायण

अरण्य काण्ड

(हिन्दी पद्यानुवाद, बँगला मूल सहित)

मंगलाचरण

श्लोक—मूलं धर्म्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददं
वैराग्याम्बुजभास्करं कलुषहं ध्वान्तापहं तापहम् ।
मोहाम्भोधरपुञ्ज - पाटनविधौ भीमानिलं शङ्करं
वन्दे ब्रह्मकुलं कलङ्कशमनं श्रीरामचन्द्रप्रियम् ॥ १ ॥

सान्द्रानन्द पयोदशोभनतनुं पीताम्बरं तारकं
पाणौ लग्नशरासनं कटिलसत्तूणीरभारं वरम् ।
राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेन संशोभितं
सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं श्रीरामचन्द्रं भजे ॥ २ ॥

चित्रकूट में श्रीरामादि का निवास

दो० अवधपुरी निवसत भरत, विनय-सील-गुन-धाम ।
चित्रकूट गिरि रमत उत, सहित लखन-सिय राम ॥
सोइ पावन गिरि बसत पुनि, बहु तपसी-मुनि-वृन्द ।
भल-अनभल, सुख-दुख सदा लखैं राम-मुख-चन्द ॥

चित्रकूटे श्रीरामादिर अवस्थान ओ राक्षसभये मुनिगणेर प्रस्थान

करिलेन अयोध्याय भरत गमन * चित्रकूट पर्व्वते रहेन तिन जन
चित्रकूट पर्व्वते अनेक मुनि वैसे * भाल-मन्द जखन जे, रामेरे जिज्ञासे

दिवस एक, श्रवनन[1] कुछ कहहीं * मुनि, लखि राम, मौन ह्वै रहहीं
निरखि मुनिन पूछत रघुवीरा * कहि निज सोच ? हरौं मम पीरा
सुख-दुख बिलग[2] न, संग बसेरा * संकठ परे अहित सब केरा
हे मुनि जो विपत्ति कहुँ हेरी * सुनत निवारन करौं, न देरी
राम - बचन मुनिगन सकुचाने * वृद्ध एक बोलत रस - साने
बरनउँ व्यथा सकल रघुवीरा * जेहि कारन मुनि - वृन्द अधीरा
खर, दूषन पुनि, अनुज-दशानन * दुष्ट दनुज, तिन सुभट हजारन
चहुँदिसि यातुधान[3] वन फिरहीं * उपवन प्रविसि उपद्रव करहीं
यज्ञ अरंभ - गंध खल पाई * करत ध्वंस, द्विज चलत बराई
तोरत माण्ड, मूल फल खाहीं * द्विजगन भय-बस कुटिन लुकाहीं
तजि वन इतर[4] तपोवन गमना * मुनि - मत गोप,[5] राम ! मैं वरना
निर्जन वन निवसउ केहि रूपा * सहित बन्धु, तिय लिये सुरूपा
वन जहँ ऋषि - मुनि नजर न कोई * चहुँ दल-दनुज ! गुजर किमि होई
विक्रम विपुल अतुल बल - धामा * तदपि निवास दुसह वन रामा
तजि वन अन्य तपोवन जाहीं * रघुपति - दरस सुलभ तहँ नाहीं
जेहि जहँ स्वजन सुठौर लखाने * सतिय वृन्द-मुनि वेगि पयाने

एक दिन मुनि गण करे कानाकानि * जिज्ञासा करेन राम धनुर्व्वाण पाणि
कह-कह मुनिगण, कि करे मंत्रणा * आमारे ना कहि केन बाड़ाउ यंत्रणा
आमरा सकले करि एकत्र वसति * एकेर क्षतिते हय सबाकार क्षति
यदि कोन विपद् ह'येछे उपस्थित * आमारे जानाउ, आमि करिब विहित
राम-वाक्ये मुनिगण पड़िलेन लाजे * वृद्ध एक मुनि उठि बले तार माझे
ये मंत्रणा करितेछि मोरा रघुवर * ताहार वृत्तांत कहि तोमार गोचर
रावणेर दुइ - भाइ दुष्ट निशाचर * तार मध्ये ज्येष्ठ खर, दूषण अपर
ताहार सामन्त गण चतुर्द्दिके भ्रमे * कत उपद्रव करे प्रवेशि आश्रमे
यज्ञ आरंभन मात्र आसिया निकटे * यज्ञ नष्ट करे, द्विज पलाय संकटे
राक्षसेर डरे लुकाइया घरे आसि * फलमूल काड़ि खाय भांगेय कलसी
एइ वन छाड़िया जाइबे अन्य वन * कानाकानि करिलाम एइ से कारन
छाड़े मुनिगण यदि, शून्य हबे वन * शून्य वने केमने रहिबे तिन जन
सीता अति रूपवती, एइ वन माझे * केमने राखिबा राम, राक्षस-समाजे
विक्रमे विशाल तुमि जानि मोरा मने * कत संवरिया राम, थाकिबे कानने
आमरा ए वन छाड़ि अन्य वने जाइ * तोमार सहित आर देखा हबे नाइ
स्त्री - पुरुषे मुनिगण चलेन सत्वर * यार यथा छिल स्थान कुटुम्बेर घर

१ कान में २ अलग ३ राक्षस ४ अन्य ५ मन की बात।

दो० राम निहारत सघन वन, मुनि-विहीन जन-हीन।
सोचत पुनि रघुनाथ जिमि, कृत्तिवास रचि दीन ॥ १ ॥

अत्रि-आश्रम में अनुसूया-सीता मिलन

जो कहुँ भरत लेन पुनि आवैं * किमि तिन वचन वृथा करि पावैं
चित्रकूट सों अवध न दूरी * भरत-भक्ति मोरे प्रति पूरी[1]
मत विचारि मन स्थिर कीन्हा * दच्छिन दिसि रघुपति पग दीन्हा
श्रम करि चलत चले रघुराई * अत्रि - तपोवन दरस सुहाई
जहँ मुनि अत्रि - धाम अति पावन * सतिय - बन्धु[2] बन्देउ मनभावन
निरखि राम, मुनि आनँद साने * पाद - अर्घ्य - आसन सन्माने
मुनि निज तियहिं समर्पेउ सीता * राखहु तनया - सरिस सप्रीता
करुणा धौं श्रद्धा तन धारी * सोचत सिय, मनु स्वयं पधारी
धवल वसन सब धवलित वेसा * आजीवन तप पकए केसा
कै[3] तपलीन तपस्या रूपा * गायत्री जग - बन्द्य अनूपा
युगुल पाणि प्रनवति वैदेही * मुनि - वनिता मुदि आशिष देही
पुनि सीतहिं आसन सन्मानी * उर प्रफुल्ल बोलीं मधुबानी
नृपनन्दिनी नृपति - गृह आई * दोउ कुल, प्रभा-शील-गुन छाई

উঠি গেল মুনিগণ শূন্য দেখা যায় * শ্রীরাম ভাবেন তবে তাহার উপায়
কৃত্তিবাস পণ্ডিতের মধুর পাঞ্চালী * গাইল অরণ্য-কাণ্ডে প্রথম শিকলি

অত্রি-আশ্রমে শ্রীরামগমন এবং অনুসূয়া নিকটে সীতার পরিচয়

আমা নিতে ভরত আইলে পুনর্ব্বার * কেমনে অন্যথা করি বচন তাহার
চিত্রকূট অযোধ্যা নহেত বহু দূর * ভরত ভ্রাতার ভক্তি আমাতে প্রচুর
রঘুনাথ এমত চিন্তিয়া মনে-মনে * চিত্রকূট ছাড়িয়া চলিলেন দক্ষিণে
কত দূর যান তারা করি পরিশ্রম * সম্মুখে দেখেন অত্রি মুনির আশ্রম
প্রবেশিয়া তিন জন পুণ্য তপোবন * বন্দনা করেন অত্রি মুনির চরণ
রামে দেখি মুনির উঠিয়া যতনে * পাদ্য অর্ঘ্য দিয়া বসাইলেন আসনে
আপনার পত্নী ঠাঁই সমর্পিয়া সীতা * বলেন পালহ যেন আপন দুহিতা
দেখি মুনি পত্নী কে ভাবেন মনে সীতা * মূর্তিমতি করুণা কি শ্রদ্ধা উপস্থিতা
শুক্ল বস্ত্র পরিধান শুক্ল সর্ব্ববেশ * করিতে - করিতে তপ পাকিয়াছে কেশ
তপস্যা ধরিয়া মূর্তি করেন তপস্যা * জ্ঞান হয় গায়ত্রী কি সবার নমস্যা
কৃতাঞ্জলি নমস্কার করিলেন সীতা * আশীর্ব্বাদ করিলে অত্রির বনিতা
মুনিপত্নী বসাইয়া সম্মুখে সীতারে * কহেন মধুর বাক্য প্রফুল্ল অন্তরে
রাজকুলে জন্মিয়া পড়িলেন রাজকুলে * দুই কুল উজ্জ্বল করিলে গুণে শীলে

१ पूर्ण २ सीता-लक्ष्मण सहित ३ या तो।

तजि सुख विपुल भई बन-गामिनि * सुफल राम-तप लहि सिय भामिनि
कह सिय, मातु ! न सम्पद - हेतू * मम निधि दूर्व्वादल रघुकेतू
पति बिन नारि बृथा सुख-भोगू * पति तजि जग न अन्य धन - जोगू

दो० सकल ज्ञान - गुनधाम जे, मम जितेन्द्रिय नाथ ।
कस न सेयि तिन चरन रज, जननी ! होउँ सनाथ ।। २ ।।

धन-जन-सम्पद, देवि ! न कामा * चहौं असीस रमन - पद - रामा
अनुसूया लखि निज अनुसारी * तृप्त बैन - सिय सुनि सुखकारी
सिय उर लाइ कीन सत्कारू * भूषन दिव्य विविध उपहारू
तव सत् - सील मुग्ध मैं सीता * निज मुख बरनउ कथा - अतीता[1]
सुनु भगवती ! कहति वैदेही * जन्म - कथा मम अद्भुत एही
नभ उर्वसी उड़त लखि चीरा * हर - जोतत - नृप जनक अधीरा
जनक - रेत[2] गिरि धरनि अनूपा * जन्म दीन छबि सुता सुरूपा
दिव्य अयोनि जन्म इमि पावा * हर[3] तजि भूप मोहिं उर लावा
निज तनया सम मन अनुमानी * तौ लौं सुरन कीन नभवानी
जन्म - अयोनि रूपसी काया * हे नृप ! तव औरस यह जाया
सीता - जनम[4] नाम धरु सीता * भूप कुतूहल सुनेउ सप्रीता
दुखी-दीन-द्विज दिय बहु दाना * नृप अर्पेउ मोहिं रानि - प्रधाना[5]

ए सब सम्पद छाड़ि पति संगे जाय * हेन स्त्री पाइला राम बहु तपस्याय
सीता कहिलेन मा सम्पदे किवा काम * सकल सम्पद मम दूर्व्वादल श्याम
स्वामी विना स्त्री लोकेर कार्ये किवा धने * अन्य धने कि करिबे पतिर विहने
जितेन्द्रिय प्रभु मम सर्व्व गुण-गुणी * हेन पति सेवा करि भाग्यये न मानि
धन जन सम्पद नाहि चाय भगवती * आशीर्व्वाद कर येन रामे थाके मति
शुनिया सीतार वाक्य तुष्ट मुनिदारा * आपनार येमन सीतार सेइ धारा
समादरे सीतारे दिलेन आलिंगन * दिवा अलंकार आर बहुमूल्य धन
तुष्टा ह'ये सीतारे कहेन भगवती * तव पूर्व्व वृत्तांत कहगो सीते सती
जानकी बलेन देवी कर अवधान * आमार जन्मेर कथा अपूर्व्व आख्यान
एक दिन उर्व्वशी जाइते वस्त्र ऊड़े * ताहा देखि जनक राजार वीर्य पड़े
सेइ वीर्य्ये जन्म मोर हइल-भूमिते * उठिल आमार तनु लांगल चषिते
अयोनि सम्भवा आमि जन्म महीतले * लांगल छाड़िया राजा मोरे निल कोले
निज कन्या बलि राजा मने अनुमानि * हेन काले आकाशे हइल देववाणी
देवगण डाकि बले जनक भूपति * जन्मिल तोमार वीर्य्ये कन्या रूपवती
अयोनि सम्भवा एइ तोमार दुहिता * लांगलेर मुखे जन्म नाम राख सीता
एतेक शुनिया राजा हरषित मन * दीन द्विज दुःखिरे दिलेन बहुधन
प्रधान देवीर ठांइ दिलेन आमारे * आमारे पालेन देवी विविध प्रकारे

१ बीती हुई २ वीर्य ३ हल ४ हल से जन्म होने के कारण ५ पटरानी ।

नेह पली सब विधि बहु नीके * दिन - दिन बढ़हुँ अंक जननी के
सो लखि नृप-मन कौतुक व्यापा * भट, जो शंभु चढ़ावै चापा
सोइ कर ग्रहन करै वैदेही * प्रकट भुवन प्रन दारुन एही
नृप - नन्दन तेरह लख वीरा * लखि पिनाक[1] हिय सकल अधीरा
दो० बिन भेटे पितु, विकल मन, ते सब चले पराय।
मम-विवाह-प्रन विफल लखि, व्यथा-भूप अधिकाय ॥ ३ ॥
छं० तहँ सानुज राम तबै प्रगटे, बिहँसे धनु हेरि कै टेरि कह्यो।
जनि बेर, धरौं गुन[2] चाप अभै, कर वाम पिनाकहिं राम गह्यो ॥
छुवतै धनुभंग, सबै लखि दंग, तिलोक झनाझन सोर छयो।
छिति-स्वर्ग-पताल मची भुविचाल चहूँ दिसि कम्प कराल भयो ॥
सिर लट जासु उमिर गभुवारी * विक्रम भुवन कुतूहल भारी
मोहिं पद-राम[3] देन पितु-बानी[4] * पितु - सूने[5] मन राम न मानी
सुत - विवाह सुनि अमित उछाहू * आये साजि अवध - नरनाहू
यहि विधि मैं पाये रघुनन्दन * लखन - उर्मिला पुनि गठबन्धन
युगुल भतीजिन भूप विदेहा * भरत - रिपुघ्नहिं दीन स - नेहा
पूरुब कथा, मातु ! मैं बरना * जेहि विधि लहे राम प्रभु-चरना

दिने-दिने बाड़ि आमि मायेर पालने * आमा देखि जनक चिन्तेन मने मने
जेइ जन गुणे दिबे शिवेर धनुके * तारे समर्पिब सीता परम कौतुके
दारुण प्रतिज्ञा एइ भुवने प्रचार * तेर लक्ष्य वर एल राजार कुमार
धनुक देखिया सबाकार प्रान कापे * ना सम्भाषि पितारे पलाय मनस्तापे
प्रतिज्ञा करिया आगे ना पान भाविया * के मने सम्पन्न हबे जानकीर बिया
हेनकाले उपस्थित श्रीराम - लक्ष्मण * धनुक देखिया हास्य करेन तखन
धनुकेते गुण दिते सर्व्वलोके बले * धनुखान धरि राम बाम हाते तोले
गुण योग करिते से धनुखान भांगे * सबे स्तब्ध तार शब्द त्रिभुवने लागे
धनुकेर शब्दे येन बहिल झंझना * स्वर्ग-मर्त्त-पाताले काँपिल सर्व्वजना
शिरे पंचझूटि राम विक्रमे विस्तर * चूड़ा कर्णवेध हय लोके चमत्कार
विवाह करिते पिता बलिल आमारे * ना करेन स्वीकार पितार अगोचरे
राज्यसह दशरथ आसिया सम्भाषे * रामेर विवाह देन परम सन्तोषे
श्रीराम करिलेन आमार पाणिग्रह * लक्ष्मणेर दार-कर्म ऊर्मिलार सह
कुशध्वज कुमार जे दुइ कन्या छिल * भरत शत्रुघ्न दोंहे विवाह करिल
भगवती पूर्व्वकथा एइ कहिलाम * हेनमते मिलिलेन मम स्वामी राम

१ शिव-धनुष २ धनुष की डोरी, प्रत्यंचा ३ राम के चरणों में ४ जनक का कथन ५ दशरथ की अनुपस्थिति में।

सिय-वृतांत मुनि-तियहिं सुहावा * सेंदुर भाल सुहाग चढ़ावा
कण्ठ हार-मणि, भुज भुजबंधन * कुण्डल श्रवन, हेम कर-कंकन
नकबेसर गजमुक्ता भाई * पदपंकज त्रिभुवन छवि छाई
गौर-वरन श्री-वमन अनूपा * मुनितिय साजेउ सिया सुरूपा
संध्या विगत, निसा पुनि आई * सीतापति-पद सिया सुहाई
लखि सिय, उमा-रमा सकुचाहीं * समता रूप चराचर नाहीं
सिय-सोभा-विमुग्ध रघुराई * मुनि-उपवन सुखरैन बिताई

रामादिक का दण्डकारण्य-दर्शन

करि स्नान भोर, पुनि तर्पन * मुनि-पद सीस धरे तीनिउ जन
अत्रि महामुनि आशिष दीन्हा * समुचित सीख राम बहु लीन्हा
सुनहु तात! यह निसिचर-देसू * दनुज त्राम चहुँ विविधि कलेसू

दो॰ कछु आगे, रमणीक अति, सुवन! दण्डकारण्य।
तहँ निवास चलि कीजिये, उपवन सुखद सुरम्य ॥ ४ ॥

मुनि-पद बन्दि चले अवधेसू * दण्डक वन विच कीन प्रवेसू
आगे राम, लखन अनुसारी * मध्य सोह छवि जनकदुलारी
सुरभित फल-प्रसून बहुरंगा * मुग्ध! मोर-ध्वनि, गुञ्जत भृंगा
नाना खग मधु कलरव करहीं * सरन[1] प्रचुर[2] पंकज[3] मन हरहीं

एत यदि सीतादेवी कहेन काहिनी * परितुष्ट हइलेन मुनिर गृहणी
ब्राह्मणी सीतार भाले दिलेन सिन्दूर * कण्ठे मणिमय हार बाहूते केयूर
कर्णेते कुण्डल करे कञ्चन कंकण * नूपुर शोभित हय कमल चरण
नासाय बेसर देन गजमुक्ता ताय * बस्त्र पट्ट अधिक शोभित गोर गाय
प्रदोष हइल गत प्रवेशे रजनी * रामेर निकटे जाय श्रीराम-रमणी
उमा-रमा नाहि पान सीतार उपमा * चराचरे जनक-दुहिता निरुपमा
देखिया सीतार रूप हृष्ट रघुमणि * मुनिर आश्रमे सुखे वञ्चेन रजनी

श्रीरामादिर दण्डकारण्य-दर्शन

प्रभाते करिया स्नान आर तर्पण * तिनजन बन्दिलेन मुनिर चरण
आशीर्व्वाद करिलेन अत्रि महामुनि * कहिलेन उपदेश उपयुक्त वाणी
शुन राम राक्षस प्रधान एइ देश * सदा उपद्रव करे बहु देय क्लेश
अग्रेते दण्डकारण्य अतिरम्य स्थान * तथा गिया रघुवीर कर अवस्थान
मुनिर चरणे राम करिया प्रणति * दण्डक कानन मध्ये करिलेन गति
आगे जान रघुनाथ पश्चात् लक्ष्मण * जनक-तनया मध्ये कि शोभ तखन
फल पुष्प देखन गन्धेते आमोदित * मयूरेर केकाध्वनि भ्रमरेर गीत
नाना पक्षी कलरव शुनिते मधुर * सरोवरे कत शत कमल प्रचुर

१ तालाबों में २ बहुत अधिक ३ कमल।

रामहिं लखि मुनिगन वनवासी * स्तुति करहिं जानि अविनासी
राजभोग, बनवास समाना * घट - घट तुम व्यापक भगवाना
सुधा - सलिल - फल राम अहारा * मधुसेवन श्रम - पन्थ निवारा¹
देखहिं दण्डक - दृश्य सुहावन * चले सतिय सानुज मनभावन
लखन, सिया पुनि आगे रामा * जहँ-तहँ छवि निरखत अभिरामा

विराध राक्षस-वध

दुर्जय दनुज विकट विकराला * कौतुक प्रकट भयो तेहि काला
हिय कठोर शोनित² सम नयना * हनत वन्य - पसु मानत भय ना
गिरि सम गात अजेय अनन्ता * रक्तिम³ मुख मनु अगिनि ज्वलंता
सघन जटा शिर, तन अति विस्तर * चमकत शिराजाल लम्बोदर
सिंहनाद, घन - गर्जन ! भारी * मूर्ति 'विराध' दनुज भयकारी
सियहिं दाबि दानव नभचारी * करत तर्ज - गर्जन बहु भारी
सिय-भच्छन, मुख दनुज पसारा * लखि रामहिं कटु बैन उचारा

दो० तापस तन, वन-वन फिरत, संग सलोनी नारि ।
वनवासी मुनिगन भ्रमित-मोहित रूप निहारि ॥ ५ ॥

सबन अहार करौं यहि लागे * तव परिचय, किमि ? कहु हतभागे !
क्षत्रिय - कुल रघुपति मम नामा * लखन अनुज, तिय सिया ललामा

वन मध्ये अनेक मुनिर निवसति * श्रीरामेरे देखिया हरिषे करे स्तुति
राज्ये थाक वने थाक तोमार समान * यथा तथा थाक राम तुमि भगवान
रम्य जल रम्य फल मधुर सुस्वाद * आहार करिया दूर गेल अवसाद
देखिते हइल इच्छा दण्डक कानन * तिन जन मन सुखे करेन भ्रमण
आगे राम मध्ये सीता पश्चात् लक्ष्मण * नाना स्थले कौतुक करेन निरीक्षण

विराध राक्षस बध

हेनकाले दुर्ज्जय राक्षस आचम्बित * विकट आकारेते सम्मुखे उपस्थित
रागा दुइ-आँखि तार खोखर हृदय * वनजन्तु धरि मारे कारे नाहि भय
दुर्जय शरीर धरे पर्व्वत समान * ज्वलत आगुन येन रांगा मुख खान
शिरे कटा दीर्घ जटा, दीर्घ सर्व्वकाय * लम्बोदर अस्थिसार शिरा गणा जाय
मेघेर गर्ज्जन न्याय छाड़े सिंहनाद * महाभयंकर मूर्त्ति राक्षस विराध
सीतार राक्षस गिया लइलेक कक्षे * तर्ज्जन गर्ज्जन करे थाकि अन्तरीक्षे
सीतार खाइते चाय मेलिया बदन * श्रीरामे कहये कटु करिया तर्ज्जन
तपस्वीर वेशे राम, भ्रमिस् कानन * देखाइया कामिनी भुलास् मुनिगण
तोदेर सबारे आजि करिब भक्षन * झाट परिचय देह, तोरा कोन् जन
श्रीराम बलेन आमि क्षत्रियकुमार * लक्ष्मण अनुज, जाया जानकी आमार

१-थकन मिटाई २ रक्त ३ लाल ।

पुनि, विरूप तन संसयकारी * को तुम वन भरमत वनचारी !
कहेउ दनुज, बकवाद न काजू * भच्छहुँ सबन, उबार न आजू
नाम 'विराध' निरंकुस[1] बापू * 'कालनाम' पितु जगत - प्रकासू
तन अभेद्य वर पाय विधाता * निर्भय मुनिन असंख्य निपाता
कहेउ राम सुनि असुर - प्रलापा * मम मन, लखन ! कुसंमय व्यापा
विपति विदेस, देस तजि गही * दुर्जय दनुज ग्रसयि वैदेही
कहेउ लखन, प्रभु ! संसयहारी * हरहु कलेश निसिचर संहारी
अनुज विनय, रघुवर बल पाये * असुर - हिये, सर सात चलाये
तन-विराध जनि बिशिख[2] प्रभावा * लोह-दण्ड शठ विपुल[3] चलावा
सो लखि, राम हनेउ सर एका * दण्ड विफल किय खण्ड अनेका
अस्त्र विहीन दनुज - उर त्रासा * मायावी उड़ि चलेउ अकासा
दिव्य बाण तब प्रभु संधाना * गिरेउ धरनि यमदूत समाना
आहत तजेसि सवेगि सभीता * अवनि[4] अचेत गिरी तहँ सीता
गात 'विराध' रक्त चहुँ सरही * जोरि जुगुल कर स्तुति करही

छं० शाप-ग्रस्त मम गात अधम, तव बान परसि जिन मुक्ति मिली ।
शरण, नाथ ! कीजिय सनाथ, हे प्रणतपाल रघुवंशबली ॥

देखिहे तोमार केन विकृति आकृति * बनेते बेड़ाउ तुमि, हउ कोन जाति
राक्षस बलिल आमि ये हइ से हइ * सबार खाइब आजि छाड़िब र नइ
'विराध' आमार नाम थाकि यथा-तथा * कालनामे मम पिता विदित सर्व्वथा
कत मुनि बधिलाम विधातार वरे * अभेद्य शरीर मोर भय करि कारे
लक्ष्मणेरे श्रीराम कहेन पेये भय * जानकीरे खाय बुझि राक्षस दुर्ज्जय
आसिलाम निजदेश छाड़िया विदेशे * सीतारे खाइल आजि दारुण राक्षसे
लक्ष्मण बलेन, दादा ना भाविह ताप * राक्षसेरे मारिया घुचाउ मनस्ताप
लक्ष्मणेर वाक्येते रामेर बल बाड़े * मारिलेन सात वाण राम तार घाड़े
सात वान खाइया से किछु नाहि जाने * हाते छिल जाठागाछ मारिल से क्षणे
ताहा देखि श्रीराम छाड़ेन एक वान * जाठागाछ तखनि हइल खान-खान
जाठागाछ काटा गेल, राक्षसेर त्रास * अस्त्र नाहि, निशाचर उठिल आकाश
छाड़ेन ऐषिक वाण दशरथ - सुत * पड़िल विराध, येन कृतान्तेर दूत
आघाते कातर आछाड़िया फेले सीता * भूमिते पड़ेन सीता हइया मूर्च्छिता
वाणाघाते विराधेर देह रक्ते भासे * जोड़ हात करि जाय श्रीरामेर पाशे
जोड़ हाते राक्षस श्रीरामे करे स्तुति * तव वाण स्पर्श राम, पाइ अव्याहृति
शापे मुक्त करिला आमार ए-शरीर * लइलाम शरण चरणे रघुवीर

१ स्वच्छंद २ बाण ३ बृहत् ४ पृथ्वी पर ।

स्वामि जासु अभिराम राम, धनि ! छवि-ललाम सो जनकलली ।
चरन बन्दि गति लहौं, कहौं प्रभु ! दनुज-देह जेहि भाँति मिली ॥
दो० नाम 'किशोर'—कुबेर-चर, सबविधि मो-पर प्रीत ।
तिन प्रकोप पाई कुगति, बरनउँ कथा अतीत ॥ ६ ॥

लिये धनद[1] बहु संग नवेली * मदन - केलि विहरत रँगरेली
तहँ दुर्दैव परेउँ मैं जाई * लखि मोहिं सबन ग्लानि अति छाई
शाप - कुबेर—असुर तन पावौं * दण्डक-वन गति अधम बितावौं
पुनि करि दया कहेउ धननायक[1] * मुक्तिदैन - तव रघुपति - सायक
तव सर परसि आजु निस्तारा * लहि शव अगिनि, होहुँ भव-पारा
लखन-रचित करि चिता प्रवेसू * * स्यन्दन[2] दिव्य, दिव्य तन-वेसू
गमनेउ स्वर्ग दरस - प्रभु पाई * कृत्तिवास कृत कथा सुहाई

शरभंग मुनि के आश्रम में राम-गमन

हेरि लखन-सिय-तन, रघुनन्दन * कहेउ, चलिय शरभंग-तपोवन
गोमति - पार[3] अलौकिक धामा * द्वादश योजन दूरि ललामा
तप-प्रभाव जिमि अनल ज्वलन्ता * तहाँ ख्याति - शरभंग अनन्ता
वन बास रैन, भोर-छवि छाई * हित मुनि - दरस, चले - रघुराई
तब लौं तहँ सुरनाथ सुहाए * मुनि शरभंग-मिलन हित आये

धन्य-धन्य सीतादेवी, राम यार पति * तोमा परशिया पाइ शापे अव्याहति
पूर्व्वकथा आमार शुनह रघुपति * कुवेरेर शापे मोर एहेन दुर्गति
किशोर आमार नाम, कुबेरेर चर * आमाते सर्व्वदा तुष्ट धनेर ईश्वर
एक दिन कुवेर लइया नारी गने * रगस्थले केलि करे मातिया मदने
कर्म्मदोषे आमि तथा हइ उपनीत * आमारे देखिया तारा हइल लज्जित
कोपे शाप आमारे दिलेन धनेश्वर * दण्डककानने गिया हउ निशाचर
पश्चाते करुणा करि बलेन वचन * श्रीरामेर शरे हबे शाप - विमोचन
पाइलाम तव वाण-स्पर्श अव्याहति * मृत देह पोड़ाइले पाइब निष्कृति
लक्ष्मणेर उद्योगे राक्षस देह पुड़े * दिव्य देह धरिया से दिव्य रथे चड़े
राम दरशने चर गेल स्वर्गवास * रचिल अरण्यकाण्ड द्विज कृत्तिवास

श्रीरामेर शरभंग मुनिर आश्रमे गमन

श्रीराम बलेन, चल जानकि लक्ष्मण * गोमतीर पारे शरभंग तपोवन
हेथा हैते सेइ स्थान द्वादश योजन * अद्भुत देखिबे से मुनिर तपोवन
तपेर प्रभावे ये ज्वलन्त अनल * शरभंग मुनिर विख्यात सेइ स्थल
सेइ दिन श्रीराम रहेन सेइ वने * प्रभाते उठिया यान मुनि दरशने
हेन काले उपनीत तथा शचीनाथ * शरभंग- मुनि सह करिते साक्षात्

---

१ कुबेर २ रथ ३ गोदावरी के पार ।

स्यन्दन दिव्य, दिव्य परिधाना * सुरपति सोह सहित सुर नाना
रथ झालरि मनि-मुक्ता रंगा[1] * चपल सारथी, पवन तुरंगा
नील-पीत चहुँ विविध पताका * दूर मन्जु छवि रघुपति ताका
विलमि, लखन! निरखहु यहि देसू * मुनि-उपवन को करति प्रवेसू

दो० रथ तजि मुनि शरभंग पहँ, जाय नवाएउ माथ।
पुनि आगम-मन्तव्य निज, विनय कीन सुरनाथ ॥ ७ ॥

मुनि! तिहुँलोक-ईश प्रभु रामा * दरसन हित आये तव धामा
तुम सर्वज्ञ, न कथन प्रयोजन * दनुज-दलन प्रगटे रघुनन्दन
धरहु तीर मम यहु धनु-बाना * मिलहिं राम, तब करिय प्रदाना
पुनि सुरपति सुरपुरी सिधाये * मुनि समीप रघुपति इत आये
करि प्रनाम, मुनि-आशिष पावा * प्रभु-स्तुति मुनीस पुनि गावा
जोगिन-दुर्लभ दरस दिखाई * कीन्ह सनाथ अनाथहिं आई
कुटी पुनीत कीन भगवन्ता * लखि छवि लहौं धाम-श्रीकन्ता
अर्पन दिव्य इन्द्र-धनुबाना * शत वत्सर-तप करि पुनि दाना
यहु तन जीर्ण विसर्जेहुँ आजू * धरेउँ सँजूति[2] दरस-प्रभु काजू
लखन सहित कछु रुकिय निमेसू[3] * करउँ समुख तव अगिनि प्रवेसू

रथोपरि पुरन्दर आसे शुद्धवेशे * देवगण वेष्टित ताँहार चारि पाशे
रथ शोभा करे मणि-मुक्तार झारा * वायुवेगे चले घोड़ा सारथिर त्वरा
चारि दिके शोभे नील-पीत-पताकाय * दूरे थाकि रामचन्द्र देखिलेन ताँय
अनुजेरे बलेन, थाकह एइ क्षण * जानि आगे, आश्रमे प्रवेशे कोनजन
इन्द्र आसि मुनिवरे करि नमस्कार * निवेदन करिलेन कार्य्य आपनार
शुन मुनि रामरूपी त्रिलोकेर नाथ * आसिबेन तव सह करिते साक्षात्
राक्षस बधेर हेतु ताँर अवतार * आपनि त त्रिकालज्ञ जानाव कि आर
तवस्थाने राखिलाम एइ धनुर्व्वान * आइले ताहारे तुमि करिवा प्रदान
एत बलि स्वर्गपुरी जान पुरन्दर * प्रवेश करेन राम यथा मुनिवर
प्रणाम करेन शरभंग मुनिवरे * आशीर्व्वाद करिया कहेन मुनि ताँरे
अनाथ छिलाम वने हइले हे नाथ * योगे याँरे देखा भार ति यिह साक्षात्
आइला आपनि विष्णु आमार निवास * तोमा दरशने मम हबे स्वर्गवास
शत वत्सरेर तप करिलाम दान * एइ लह इन्द्रदण्ड दिव्य धनुर्व्वान
शरीर छाड़िब आमि अति पुरातन * प्रान राखिया छिलाम तोमार कारन
क्षणेक लक्ष्मण सह बैस एइखाने * अग्निते शरीर त्यजि तव विद्यमाने

१ सौंदर्य २ बलपूर्वक ३ निमेष, क्षण।

मुनि रचि कुण्ड अनल दहकाई * तासु लपट नभ - मण्डल छाई
कौतुक सानुज सतिय विलोका * मुनि-साहस लखि विस्मित लोका
ऊर्ध्वतुण्ड, रट राम, न शेषू * अगिन प्रदच्छिन, कुण्ड प्रवेसू
अनल जरेउ तन, जीव प्रकासा * मनहुँ पुरुष उठि चलेउ अकासा
लहि प्रभु-दरस, गमन गोलोका * सुफल पुण्य-मुनि, सबन त्रिलोका
मानस मुग्ध कुतूहल करनी * मुनि शरभंग-कथा इमि बरनी

श्री राम का वनभ्रमण

छं० अहा ! राम-सत्संग हेतु मुनि-संघ जुरे ज्ञानी-तपसी ।
फलाहार कोउ बिन अहार व्रत चतुर्मास के अतुल जसी ॥
गाछ-बसन मृगचर्म कमण्डल सीस जटान भभूति लसी ।
मुनिवृन्दन के अभिनन्दन कहँ प्रभु धाय उठे रघुबंस-ससी ॥
दो० जोरि जुगुल कर, मुनिन पँह, रघुपति कीन प्रनाम ।
पुनि मुनीस स्तुति करहिं, अभय कियेउ तिनि, राम ॥ ८ ॥

उपवन, अब न दनुज सञ्चारू * हे मुनि ! निकट असुर - संहारू
राम - लखन तपसिन अनुसरहीं * दरसन भूमि तपोवन करहीं
धनु टंकार कीन रघुवीरा * वैदेही सुनि अमित अधीरा
वन-जीवन ! अरु आयुध हाथा * कस विपरीत ! असंगति नाथा

शरभंग कुण्ड काटि ज्वालेन अनल * ज्वलिया उठिल अग्नि गगनमण्डल
कौतुक देखेन सीता श्रीराम लक्ष्मण * मुनिर साहस देखि विस्मित भुवन
राम-राम उच्चारिया मुनि ऊर्द्धतुण्ड * अग्नि प्रदक्षिण करि झाँप देन कुण्ड
पुड़िया मुनिर देह हइल अंगार * अग्नि हैते उठे एक पुरुष आकार
गोलोके गेलेन मुनि निज पुण्यफले * देखिया सवार मन पूर्ण कुतूहले
राम दरशने मुनि यान स्वर्गवास * रचिल अरण्य काण्ड कवि कृत्तिवास

श्रीरामचन्द्रेर वन-भ्रमण

सम्भाषिते श्रीराम आइल मुनि-ऋषि * केह-केह फल खाइ केह उपवासी
अनाहारी केह वा बरिषा चारिमास * केह - केह सर्व्वकाल करे उपवास
गाछेर बाकल परे, शिरे जटा धरे * मृगचर्म्म परे केह कमण्डलु करे
मुनिगणे देखिया उठिला रघुनाथ * करेन प्रणति स्तुति करि जोड़ हाथ
मुनिगणे करे स्तुति रामेर गोचर * श्रीराम बलेन, प्रभु, ना करिह डर
तपोवने नाथू हब राक्षस - संचार * अविलम्ब हइवेक राक्षस - संहार
मुनिगण - संगे - संगे श्रीराम लक्ष्मण * तपोवन - दरशने करेन गमन
धनुके टंकार दिला राम रघुवीर * देखिय सीतार मन हइल अस्थिर
वने प्रवेशेन राम, हाते धनुर्व्वान * निषेध करेन सीता राम विद्यमान

केहि कारन निसिचरन - विवादा * हिंसा कर परिनाम प्रमादा
बरनउँ कथा पुरातन, रामा * सुनिय नाथ दूर्वादल श्यामा
बारी वयस, यदा पितु - गेहा * बरनेउ पूरुब - कथा विदेहा
कोउ मुनि 'दच्छ' तपोवन रहही * तासु समीप खड्ग कोउ धरही
पातक जो हेराय[1] पर - थाती[2] * सोचि जतन राखेउ सब भाँती
तब लौं वृद्ध, न समरथ अंगा * लखेउ दच्छ तहँ दीन - विहंगा[3]
भावी प्रबल कुबुद्धि विकासा * लै मुनि खड्ग विहंग विनासा
अस्त्र - कुसंग कुमति उपजावा * अस्त्र - हेतु पातक मुनि छावा
पालन सत्य भये वनचारी * कवन प्रयोजन असुर सँहारी
सुनि सिय-सरल-वचन रघुराई * दिय प्रबोध बहु बिधि समुझाई
स्वर्ण-सरोज-सुमुखि सुनु सीता * मैं असंक, प्रिय किमि भयभीता
तेजपुञ्ज मुनिवृन्द सहाई * तिन सिय ! किमि कहु भय दुखदाई ?

दो० रमत पंथ, मारग लखेउ, सरवर दिव्य सरूप ।
जेहि भीतर सों सुनि परत, धुनि-संगीत अनूप ॥ ६ ॥

लखि विस्मित पूछत रघुकेतू * सर-बिच गान ! कहौ मुनि ! हेतू
सुनहु राम, यहि देस अनूपा * कीन कठिन तप मुनि तपरूपा
मुनि तपभंग हेतु सुरराई[4] * तप - उपवन अप्सरन पठाई

राक्षसेर सने केन करह विवाद * अकारण प्राणिवधे घटिबे प्रमाद
पूर्व्वेर वृत्तान्त एक कहि तव स्थान * दूर्व्वादल श्याम राम, कर अवधान
शिशुकाले यखन छिलाम पितृघरे * कहिलेन पिता पूर्व्व आख्यान आमारे
दक्ष नामे एक मुनि छिला तपोवने * ताँर स्थाने खड्ग स्थाप्य राखे एकजने
पाप हय हरिले परेर स्थाप्य-धन * यत्ने खड्गखानि ताइ राखेन ब्राह्मण
एक वृद्ध पाखी सेइ तपोवने वैसे * नड़िते चड़िते नारे प्राचीन वयसे
मुनिरे कुबुद्धि पाय, दैवेर लिखन * सेइ खड्गाघाते वधे पाखीर जीवन
हाते अस्त्र थाकिले लोकेर ज्ञाननाशे * हइल मुनिर पाप से अस्त्रेर दोषे
सत्य पालि देशे चल एइ मात्र पन * राक्षस मारिया तव कोन प्रयोजन
सरला जनकबाला कहिले एमति * बुझान प्रबोधवाक्य ताँर सीतापति
कनक कमलमुखि जनककुमारि * आमार नाहिक भय, कि भय तोमारि
महातेजा मुनिगण यादेर सहिते * तादेर किसेर भय, बल देखि सीते
जाइते देखेन ताँरा दिव्य सरोवर * शुनेन अपूर्व्व गीत ताहार भितर
विस्मित हइया जिज्ञासेन रघुमणि * जलेर भितर गीत केन शुनि मुनि
मुनि बलिलेन हेथा छिल एक मुनि * करित कठोर तप दिवस रजनी
तपोभंग करिते ताँहार पुरन्दर * पाठाय अप्सरागणे, यथा मुनिवर

१ खो जाय २ धरोहर ३ सामान्य पक्षी ४ इन्द्र ।

देवांगना अलौकिक सोभा * मदनदग्ध मुनि-मन तिनि लोभा
'पञ्च-अप्सरा' नाम प्रदेसू * अबहुँ बसति ते लुकि यहि देसू
अनख नयन, पुरान अस कहहीं * गीत-नर्त्त, कानन सुनि परहीं
लीलापति सुनि कथा ललामा * लखि उपवन गमने मुनि-धामा
तहँ सन्मान पाय पहुनाई * तीनिहुँ जन सुखरैन बिताई
कहुँ दस-पाँच कहूँ षट-मासा * बन-उपवन प्रभु कीन निवासा
दिवस मास कहुँ पाख अतीते * अवधि-प्रवास वर्ष दस बीते
सानुज सतिय एक दिन रामा * मुनि सुतीक्ष्ण-पद कीन प्रनामा
सीतापति मधुबैन प्रकासा * पद-अगस्त्य बंदन अभिलासा
कहेउ सुतीक्ष्ण पूर्ज तव कामा * करहु सुफल चलि कुम्भज[1]-धामा
पिप्पलवन तिन अनुज-निवासू * आजु रैन तहँ कीजिय बासू
भोर जाहु सुत जहाँ तपाकर * मुनि अगस्त्य मनु अवर-प्रभाकर[2]
लीन बिदा, दच्छिन दिसि आई * पिप्पलवन पहुँचे रघुराई

दो० निज आश्रम रघुवीर लखि, मुनिवर-उर अति प्रीत ।
राम-लखन-सिय समुद मन, तहँ, निसि कीन बितीत ।। १० ।।

अगस्त्य एव वातापि-इल्वल आख्यान

मारग गहेउ भोर पुनि रामा * लखहु लखन ! इत कुंभज-धामा

आइल अप्सरागण मुनिर निकटे * देखिया पड़िल मुनि मदन-संकटे
एस्थानेर ख्याति पञ्च अप्सरा बलिया * अद्यापि आछये तारा हेथा लोकाइया
नृत्य गीत करे तारा नाहि जाय देखा * एमन अपूर्व्व कथा पुराणेते लेखा
शुनिया मुनिर कथा कौतुकी श्रीराम * तपोवन देखिया गेलेन मुनिधाम
आतिथ्य करेन मुनि समादर करि * तिन जन बञ्चिलेन सुखे विभावरी
कोथा पाँच-सात मास कोथा दशमास * कोथा बार-मास राम करेन प्रवास
एइ रूपे बने-बने करेन भ्रमण * अतीत हइल दश वत्सर तखन
एक दिन सीता सह श्रीराम लक्ष्मण * कर पुटे बन्दे मुनि-सुतीक्ष्ण-चरण
सुतीक्ष्ण मुनिर राम कहेन सुभाष * अगस्त्येरे प्रणाम करिते करि आश
मुनि बले, जाह राम अगस्त्येर धाम * ताथा गिया ताँहार पूराउ मनस्काम
ताँहार कनिष्ठ आछे पिप्पलीर बने * अद्य गिया वासा कर ताँर तपोवने
कल्य गिया पाइबे अगस्त्य-तपोवन * ताहाते आछेन मुनि द्वितीय तपन
बिदाय लइया राम चलेन दक्षिणे * उपनीत हइलेन पिप्पलीर वने
श्रीराम पाइया मुनि पाइलेन प्रीति * सेइ रात्रि तथा राम करिलेन स्थिति

अगस्त्य मुनि कर्त्तृक वातापि ओ इल्वलेर बृत्तान्त

प्रभाते उठिया राम करेन गमन * लक्ष्मणे देखान राम अगस्त्येर वन

१ अगस्त्य ऋषि २ दूसरे सूर्य ।

यहि वन दुष्ट दनुज इक भारी * निज आलय[1] मुनि तेहि संहारी
सुनि सौमित्र कुतूहल छावा * मुनि किमि यमपुर असुर पठावा !
अनुज ! कथा सुनु, दनुज प्रतापी * युगुल - बन्धु 'इल्वल' - 'वातापी'
मायावी माया बहु करहीं * छल-करि द्विजन-प्रान चहुँ हरहीं
पटु संगीत सुविज्ञ अनूपा * अनुज संग तन मेष - सरूपा
इल्वल फिरत द्विजन जहँ पावै * सादर तिनहिं निमंत्रि बुलावै
मेष - मांस भोजन रुचिकारी * जेहि छन विप्र उदर निज धारी
इल्वल - हाँक[2] सुनत वातापी * उदर चीरि प्रगटत संतापी
विप्र-घात यहि विधि नित करहीं * वन-वन असुर सहोदर फिरहीं
उर अति छोभ, दनुज ढिग जाई * मुनि अगस्त्य कामना सुनाई
अतिथि-विप्र आयेउँ चलि दूरी * मेष - मांस - मंसा करु पूरी
अनाहार अतिकाल उपासू * रुचिभर मांस चहौं तन पासू
सुनि अति मोद असुर उर माहीं * मास - अभाव इतै मुनि नाहीं
माया - मेष अनुज वातापी * रंधति तासु मांस आतापी[3]
इत समोद जेंवत[4] मुनिराई * पुनि - पुनि खल परसत पुलकाई

दो० सुरसरि[5] आवाहन कियो, कौतुक कीन अगस्त्य ।
भागीरथी अलखिता[6], बसीं कमण्डल - मध्य ॥ ११ ॥

एइ वने छिल एक दानव दुर्ज्जन * तार वध मुनिवर करिला आश्रम
शुनिया लागिल लक्ष्मणेर चमत्कार * मुनि ह'ये असुरे मारेन कि प्रकार
श्रीराम बलेन, भाइ शुन अवान्तर * इल्वल-वातापि छिल दुइ सहोदर
मायावी असुर तारा, नाना माया धरे * वातापि हइया मेष ब्रह्मवध करे
तार भाइ इल्वल, से जानिते संगीत * लोक मध्ये भ्रमे, येन अद्भुत पण्डित
आदर करिया द्विज करे निमंत्रण * ऐ मेष-मासे दिया कराय भोजन
ब्राह्मणेर उदरे मेषेर मांस थाके * वातापि बाहिर हय इल्वलेर डाके
पेट चिरि बाहिराय विप्रगण मरे * एइ रूप करि भ्रमे दुइ सहोदरे
ब्रह्मवध शुनिया अगस्त्य महामुनि * इल्वलेर ठाँइ दान मांगिला आपनि
दूर हंते आइलाम पथिक ब्राह्मण * मेषमांस मोरे आजि कराउ भोजन
मुनि बले बहुदिन आछि उपवास * भोजन करिब आजि गाड़लेर मास
मुनिर वचन शुनि इल्वल उल्लास * कहिल, खाइबे मुनि कत मेष-मास
वातापि गाड़ल हय मायार प्रबन्धे * गाड़ल काटिया मांस रान्धिल आनन्दे
बड़ आशा करि मुनि भोजनेते बंसे * हाते थाला करिया इल्वल आसेपाशे
'गंगादेवी' बलि मुनि मने-मने डाके * अलक्षित गंगादेवी कमण्डलु ढाके

---

१ आश्रम में २ पुकार ३ इल्वल ४ भोजन करते थे ५ गंगा ६ ओझल।

छं० मेष-रूप बातापि-मांस के रुचिर पाक आयेउ आगे।
कुंभज-कोप कराल ज्वाल नयनन सों अनल-बान त्यागे।।
गंगोदक[1] प्रति ग्रास पान करि, उदर विपाक करन लागे।
ब्रह्मायुध कर जाप, शाप मुनि, मायावी छल-बल भागे।।
'निकरु बन्धु बातापि! उदर-मुनि चीरि', पुकार करै इल्वल।
गज पै सिंह समान गर्जि मुनि दनुज-विनास किये कौशल।।
अट्टहास मुनिनाथ कियो, 'शठ! बुद्धि-आसुरी तव निष्फल!
उदर विपाक भयो हे दानव! पुनि-पुनि अनुज गोहार[2] विफल।।

अनुज वियोग, दनुज भरमाना * मुनि त्यागेउ उत प्रबल अपाना
अगिनि विषम तेहि इल्वल जारा * असुर – जुगुल इमि मुनि संहारा
दनुज पराभव, मुनिन सनाथा * अभय तपोवन किय मुनिनाथा
दरसन सकल सिद्धि - सुखदाई * सोइ अगस्त्य - उपवन पहु माई
पहुंचे आश्रम दीनदयाला * शिष्य एक भेंटेउ तेहि काला
कहेउ लखन, मुनि–दरसन हेतू * आये द्वार राम रघुकेतू
कहेउ शिष्य पुनि चलि मुनिधामा * प्रस्तुत द्वार लखन - सिय - रामा
सुनि संवाद पुलकि मुनि कहहीं * आनहु वेगि! भुवनपति अबहीं
सदा योगिजन ध्यान लगावैं * सवन - पुण्य! ते उपवन आवैं

मुनि बले, बहुदिन मम उपवास * भोजन करिब आमि गाड़लेर मास
गंगाजल पिया मुनि ब्रह्ममंत्र जपे * मुष्टि-मुष्टि मांस से भोजन करे कोपे
मुनिर उदरे मास प्राय हय पाक * बाहिर इल्वल डाके, घन-घन डाक
इल्वल बलिल, एस बातापि, बाहिरे * मुनि बले कोथा तुमि पावे बातापिरे
गर्जिया येमन धरे सिंह भक्ष्य हाती * इल्वले मारिते युक्ति करे महामति
पण्डित हइया तव बुझि नाहि घटे * तोमार बातापि एइ आछे मम पेटे
से कथाय पासरिल असुर आपना * बात कर्म्म करे मुनि येमन झंझना
वातकर्म्मे अग्निते इल्वल पुड़िमरे * एइ मते मुनि दुइ दानवेरे मारे
ए रूप मारीया सेइ दानव दुर्ज्जय * तपोवन रक्षा केला मुनि महाशय
उपनीत मोरा से अगस्त्य - तपोवने * सर्व्व कार्य्य सिद्ध हय याँर दरशने
प्रवेशिते जान राम अगस्त्येर घरे * हेनकाले शिष्य एक आइल बाहिरे
ताँहारे देखिया तबे बलेन लक्ष्मण * आसिलेन राम मुनि-सम्भाष-कारण
एइ वाक्य शुनि शिष्य गेल अभ्यंतरे * कहिल रामेर कथा मुनिर गोचरे
श्रीराम लक्ष्मण सीता द्वारे तिनजन * आज्ञा विना केमने करेन आगमन
रामेर संवादे मुनि ह'ये आनन्दित * आज्ञा करिलेन शिष्य, आनह त्वरित
सवाकार पूज्य राम आइलेन द्वारे * योगिगण अनुक्षण ध्यान करे याँरे

१ गंगाजल २ पुकार।

मुनि - आयसु, प्रवेश रघुनाथा * दरस, कीन मुनि, मनहिं सनाथा
तीनिउ जन अगस्त्य - पद बन्दे * निरखत छबि मुनि अमित अनन्दे
तजि बैकुण्ठ भये वनवासी * को जानै मन - गति अविनासी
लखन अलौलिक अनुज न दूजा * सदा निरत सुख - दुख तव पूजा
तात ! श्रान्त, लीजिय सत्कारू * जुरे जतन बटु[1], विविध प्रकारू
राम लखन सिय आयसु पाई * करि भोजन तहँ रैन बिताई
भोर कृत्य, पुनि चलि मुनि तीरा * विविध वार्ता - रत रघुबीरा

दो० मुनिवर ! पितु के सत्य हित कानन कीन प्रवास ।
मुनि आयसु, मुनि-सीख धरि, चलि तहँ करहुँ निवास ॥ १२ ॥

पंचवटी में श्रीराम - जटायु मिलन

कह मुनीश, हे पुण्यश्लोकू * जहँ तव चरन तहाँ सुरलोकू
तट - गौतमी[2] दिव्य वन जाई * निवसहु पञ्चवटी सुखदाई
बिसकर्मा - निर्मित धनुबाना * कुंभज[3] रामहिं कीन प्रदाना
लै मुनि विदा लखन - सिय साथा * दच्छिन दिशि गमने रघुनाथा
तेहि प्रदेस खग रहत जटाई * दसरथ - सुवन - खबरि सुनि पाई
धाय उपस्थित जहँ सियनाथा * दीन यथोचित परिचय गाथा
गरुड़ - सुवन, मोहिं कहत जटाई * तव पितु - मम प्राचीन मिताई[4]

सवारे लइया गेल मुनिर आज्ञाय * देखिया मुनिर मनोभ्रम दूरे जाय
अगस्त्येर चरण बन्देन तिनजन * अगस्त्य बलेन- किवा अपूर्व्व दर्शन
गोलोक छाड़िया प्रभु, एले वनवास * ना जानि तोमार आछे किवा अभिलाष
लक्ष्मणेरे चरित्रे आमार चमत्कार * दुःखे-दुखी, सुखे-सुखी लक्ष्मण तोमार
पथश्रान्त आछ राम, करह भोजन * आज्ञामते शिष्यगण कैल आयोजन
मुनिर आदरे राम करेन भोजन * निशीथिनी तथाय बञ्चेन तिनजन
समापिय प्रातःकृत्य श्री रघुनन्दन * अगस्त्येर सहित करेन आलापन
पितृ सत्य पालिवारे आसियाछे वने * आज्ञा कर मुनिवर, थाकि कोन स्थाने

(श्री रामेर पंचवटीते अवस्थान ओ जटायुर-परिचय)

अगस्त्य बलेन शुनि रामेर वचन * येखाने थाकिबे, सेइ महेन्द्र भुवन
गोदावरी तीरे राम पञ्चवटी वन * सेइ स्थाने गिया सुखे थाक तिनजन
दिव्य धनुर्व्वाण विश्वकर्म्मार निर्म्माण * श्री रामेरे अगस्त्य ताहा करिलेन दान
अगस्त्येर स्थाने राम लइया विदाय * चलेन दक्षिणे सीता - लक्ष्मण - सहाय
जटायु नामेते पक्षी, से देशे वसति * पाइया रामेर वार्त्ता आसे शीघ्रगति
श्री रामेर सम्मुखे हइया उपस्थित * आपनार परिचय देन यथोचित
'जटायु' आमार नाम गरुड़नन्दन * तोमार बापेर मित्र आमि पुरातन

१ ब्रह्मचारी गण २ गोदावरी के किनारे ३ अगस्त्य ४ मित्रता ।

जेठ बन्धु खगपति सम्पाती * रामहिं कही कथा सब भाँती
कबहुं भयेउँ दसरथहिं सहाई * जिमि अवधेस - मित्रता पाई
अहा राम धनि लछिमन सीता * कीजिय चलि मम धाम पुनीता
चले विहंग - विनय अनुसारी * पञ्चवटी लखि उर सुख भारी
लखन ! रचहु इत कुटी ललामा * नित स्नान गौतमी धामा
पल्लव - बाँस कुटी निर्माना * कही लखन, प्रभु कृपानिधाना
जेहि थल रुचिर सुआयसु पावौं * पर्न - कुटी रमनीक बनावौं
गोदावरि - सुनीर छवि पूरी * धवल पीत बहु शिला सिंदूरी
घाट प्रसून[1] खिले जहँ नाना * गुञ्जत भृंग[2] मत्त मधु - पाना
लखन ! रचहु इति कुटी सुहावन * मञ्जुमयी सीतहिं मनभावन

सो० लखन जानि रुचि-राम, दिवस एक बिच निरमयेउ ।
रम्य अलौकिक धाम, लता, पता, तृन, सुमन-युत ॥

दो० द्वार कलश परिपूर्ण, पुनि, अगिनि पूजि रघुनाथ ।
गृह प्रवेश सानन्द शुभ, कीन बन्धु, तिय साथ ॥ १३ ॥

वन्य कुटी छवि आनँद - साने * अवध - महल - ऐश्वर्य भुलाने
आयसु मिलत, सदा प्रभु पासा * कहि खगपति उड़ि चलेउ अकासा
पंख पसारि गयेउ छिन[3] देसू * इत विश्राम रैन अवधेसू
गोदावरि प्रभात स्नाना * हेतु चले पुनि कृपानिधाना

पक्षिराज सम्पाति आमार बड़ भाइ * आरो परिचय राम, तोमारे जानाइ
पूर्व्वे दशरथेर क'रेछि उपकार * तोंइ से ताँहार संगे मित्रता आमार
आइस आइस राम-सीता मोर घरे * इहा कहि वासादिल अति समादरे
तिनजने अनुमति ल'ये गेल पाखी * पञ्चवटी देखिया श्रीराम बड़ सुखी
लक्ष्मणे बलेन राम, बाँध वासा घर * गोदाबरी जले स्नान करि निरन्तर
लक्ष्मण बलेन, देव आपने प्रधान * कोन स्थाने बाँधि घर, कर संविधान
देखेन श्रीराम स्थान गोदावरी तीरे * सुशोभित श्वेत-पीत-लोहित प्रस्तरे
निकटे प्रसर घाट ताहे नाना फूल * मधुपाने मातिया गुंजरे अलिकुल
श्रीराम बलेन, हेथा बाँधे वासा-घर * जानकीर मनोमत करह सुन्दर
श्रीरामेर आज्ञाय लक्ष्मण बाँधे घर * एक दिने निर्म्माइल अति मनोहर
पूर्ण कुम्भ द्वारे स्थापि आनि पुष्पराशि * अग्निपूज्य करिया हइला गृहवासी
लता-पाता निर्म्मित से कुटी पाइया * अयोध्यारे अट्टालिका गेलेन भूलिया
जटायु बलेन, राम, आसि हे एखन * यखन करिबे आज्ञा, आसिब तखन
एत बलि पक्षिराज उड़िल आकाशे * दुइ पाखा सारि गेल आपनार देशे
रजनी वञ्चिया राम उठि प्रातःकाले * स्नान करिवारे जान गोदावरी जले

१ पुष्प २ भौंरे ३ क्षण भर में ।

सुरभित सुमन सुदर्शन राशी * सेवहिं देव नित्य अविनाशी
सुलभ सुस्वादु कंद फल मूला * सुखद, सीत गोदावरि - कूला
सुखमय सदा सन्त - सत्संगा * करत केलि मिलि वृन्द - कुरंगा
सीय कबहुँ कुछ मनहिं बिसूरति[1] * भूलति निरखि मञ्जु प्रभु - मूरति
रामहिं देस, विदेस समाना * आत्मसरूप सदा भगवाना
अद्भुत लखन - चरित मनहारी * बन सेवत रामहिं अनुसारी

शूर्पनखा के नासा - कर्ण छेदन

पञ्चबटी गत दिवस अनेका * घटना घटित भई तहँ एका
शूर्पनखा भगिनी दसकंधर * भ्रमत परी छबि मञ्जु नयन-तर
निरखि राम - लावण्य ललामा * मदमाती लागे सर - कामा
जिन छबि शत कन्दर्प[2] लजाहीं * सम-समान[3] अति सुख तिन पाहीं
छलिनि दुष्ट निसिचरी विरूपा * तजि निज रूप भई रति - रूपा
धर्म - किरीट जितेन्द्रिय रामा * पापिनि फन्द न अंकुर जामा

दो० दुर्बल दुःसाहस करत आरोहन गिरिशृंग ।
चहति रिझावन, करति छल विपुल सियापति संग ॥ १४ ॥

बहु करि हाव - भाव मृगनयनी * मुख प्रफुल्ल, पूछत मधुवयनी
क्षत्रिय - कुल पुनि तापस वेसू * कस विचरत इत कानन - देसू

सुगन्ध सुदृश्य नाना कुसुम तुलिया * नित्य-नित्य श्रीराम करेन नित्य-क्रिया
फल मूल आहरण करेन भक्षन * सुमिष्ट शीतल गोदावरीर जीवन
ऋषिगण सह सदा करेन निवास * करेन कुरंगगन सह परिहास
सीतार कखन यदि दुःख हय मने * पासरेन तखनि श्रीराम दरशने
रामेर येमन देश, तेमनि विदेश * आत्माराम श्रीराम नाहिक कोन क्लेश
लक्ष्मणेर चरित्र विचित्र मने वासि * श्रीरामेर वनवासे जिनि वनवासी

(शूर्पनखार नासा-कर्ण-छेदन)

एरूपे रहेन पञ्चवटी तिनजन * हेन काले घटे एक अपूर्व्व घटन
रावणेर भग्नी, तार नाम शूर्पनखा * अकस्मात् रामेर सम्मुखे दिल देखा
भ्रमिते भ्रमिते गेल रामेर सदने * श्रीरामेरे देखिया से मातिल मदने
शतकाम जिनिया श्रीराम रूपवान * सुख हय, यदि मिले समाने समान
एत भावि मायाविनी दुष्टा निशाचरी * रति रूप धरे निज रूप परिहरि
जितेन्द्रिय श्रीराम धार्मिक शिरोमणि * रामे भुलाइबे किसे अधर्म्मचारिणी
पर्व्वत नाड़िते चाहे हइया दुर्व्बला * भुलाइते श्रीरामे पातिल नाना छला
हाव-भाव आविर्भाव करिया कामिनी * श्रीराम जिज्ञासा करे सहास्य वदनी
राजपुत्र बट किन्तु तपस्वीर वेश * एमन कानने केन करिले प्रवेश

---

१ वाद करती थी २ कामदेव ३ बराबर की जोड़ी ।

दण्डक बसत दनुज अति घोरा * फिरहु निसंक, न साहस थोरा
जो कहुं मिलैं, दूर ते नाहीं[1] * परहु सुदर्शन ! संकठ माहीं
चन्द्रबदनि को संग अनूपा * तुम सम को यहु पुरुष सुरूपा
सरल हृदय, परिचय दिय रामा * दसरथ - सुवन, अवध मम धामा
अनुज लखन, तिय सिया पियारी * पालन - सत्य भये वनचारी
इति मम कथा, कहौ निज धामा * को तुम हे सुन्दरी ललामा
तिलोत्तमा, उर्बसि धौं आई * अनुपम छबि मेनका सुहाई
सहज सुभाव कहेउ प्रभु एही * सूर्पनखा सुनि परिचय देही
रावन - भगिनि वास मम लंका * एकाकिनि[2] चहुं फिरहुं निसंका
देस - विदेस रमहुँ, भय नाहीं * बनौं नारि तव, रुचि मन माहीं
बन्धु लंकपति, तेज महाना * सोवत कुम्भकर्ण बलवाना
भ्रात सुशील सुधर्म विभीषन * बन्धु जुगुल इति खर अरु दूषन
अनुजा मैं इन सबन दुलारी * होहुँ धन्य लहि कृपा तुम्हारी
गिरि सुमेरु पर्वत कैलासू * करहिं भ्रमन चहुं तव सहवासू

दो० प्रियतम ! चलिय सुदूर जहँ, नहिं मानव-सञ्चार ।
केलि सकौतुक दोउ करैं, अहि निसि सदा बिहार ॥ १५ ॥

मन भावै, चलि गगन उड़ाहीं * तब सीता एते गुन नाहीं

दण्डक कानने आछे दारुण राक्षस * हेन वने भ्रम तुमि, ए बड़ साहस
बहुदूर नहे, तारा आछये निकटे * हेन रूपवान तुमि, पड़िले सकटे
संगे देखि चन्द्रमुखी, इनि के तोमार * केवा ए पुरुष तव समान आकार
सरल हृदय राम देन परिचय * मम पिता राजा दशरथ महाशय
इनि भ्राता लक्ष्मण, प्रेयसी सीता इनि * सत्यहेतु वने भ्रमि, शुनिले भामिनि
शुनिले आमार, देह निज परिचय * कि बट आपनि, कोथा तोमार आलय
परम सुन्दरी तुमि लोके निरुपमा * मेनका उर्व्वशी किवा हवे तिलोत्तमा
जिज्ञासा करिल राम सरल हृदय * शूर्पनखा आपनार देय परिचय
लंकाय वसति, आमि रावण-भगिनी * नाना देशे भ्रमि आमि ह'ये एकाकिनी
देशे देशे भ्रमि आमि, कार नाहि भय * तोमार कामिनी हइ, हेन वाञ्छा हय
लंकापुरे वैसे भाइ दशानन राजा * निद्रा जाय कुम्भकर्ण भ्राता महातेजा
अन्य भ्राता सुशील धार्मिक विभीषण * भाइ खर-दूषन एखाने दुइ जन
अति आदरेर आमि कनिष्ठा भगिनी * तोमार हइले कृपा, धन्य बलि मानि
सुमेरु-पर्व्वत आर कैलास-मन्दर * तोमा सह बेड़াइব, देखिब विस्तर
तथा जाव यथा नाहि मनुष्य संचार * तुमि आमि कौतुकेते करिब विहार
मनः सुखे बेड़াइব अन्तरीक्ष-गति * एत गुण नाहि धरे तव सीता सती

---

१ वे दूर नहीं हैं २ अकेली ।

जो प्रतिरोध लखन - सिय करहीं * मम मच्छन अकाल ते मरहीं
लखहु राम मम रूप अनूपा * सिय - तुलना, मैं अति अतिरूपा
अति कुत्सित विरूप तव सीता * सम तिय लहि उर उपजहि प्रीता
मन - विहंग - रुचि जब जहँ देखी * दिन विहार, निसि रंग विसेखी
सियहिं सचेत राम पुनि कीन्हा * निसचरि-प्रति विनोद मन दीन्हा
तासु रूप - गुन - विरद बखानी * पुनि बोले रघुपति मृदु बानी
मम कर गहे सौति - सन्तापू * बरहु लखन गुन प्रबल प्रतापू
मञ्जुल छवि विलसहु मम भाई * तरुन किशोर, सीख मम पाई
कनक - गौर, अब लौं तिय नाहीं * सुखद निवास करहु तिन पाहीं
सुलभ न जग तुम सम छवि-खानी * लखनहिं कहेउ, सत्य सब मानी
युवा अकेल ! राग नहिं रंगा * लहहु संग मम रैन - तरंगा
कहेउ लखन, मैं रघुपति - दासा * उचित न अनुचर-प्रति अभिलाषा
भुवन अनन्य अवध के राजा * पुजहु रानि बनि सकल - समाजा
सिय सों तुम सब भाँति विसेखू * तव - तुलना गुन - रूप न लेखू
सिय मानुषी विफल तव आगे * रघुपति पाँय धरहु यहि लागे

दो० वचनमात्र सुनि, लखन तजि, बिन जाने उपहास ।
मदमाती पुनि धाय उत, गई राम के पास ॥ १६ ॥

प्रतिवादी हय यदि जानकी - लक्ष्मण * राखिया नाहिक कार्य्य करिब भक्षण
आमारे देखह राम, केमन सुवेश * सीताय आमाय रूप अनेक विशेष
कुवेश तोमार सीता, बड़ह घृणित * हेन भार्य्या सेने थाक, मने हय प्रीत
यखन येखाने इच्छा, सेखाने तखनि * विहार करिब गिया दिवस-रजनी
श्रीराम बलेन सीता न करिह त्रास * राक्षसीर सहित करिब परिहास
परिहास करेन श्रीराम सुचतुर * राक्षसीरे भाँड़ाइते बलेन मधुर
आमार हइले जाया पावे से सतिनी * लक्ष्मणेर भार्य्या हउ, एइ बड़गुनी
सुन्दर लक्ष्मण भाइ, मनोहर वेश * यौवन सफल कर, कहि उपदेश
लक्ष्मण कनकवर्ण परम सुन्दर * लक्ष्मणेर भार्य्या नाहि, तुमि कर वर
तोमा हेन रूपवती पावे कोन स्थले * सत्य ज्ञाने निशाचरी लक्ष्मणेरे बले
तुमि युवा हइया एकाकी वञ्च राति * रसक्रोड़ा भुञ्ज तुमि आमार संहित
लक्ष्मण बलेन, आमि श्रीरामेर दास * सेवकेर प्रति केन कर अभिलाष
भुवनेर सार राम, अयोध्यार राजा * रानी तुमि हइले करिबे सबे पूजा
गुण कि धरेन सीता तोमार गोचर * तोमाय सीताय देखि अनेक अन्तर
रामेर भजह तुमि ह'ये सावधान * मानुषी कि करिबेक तोमा विद्यमान
उपहास नाहि बुझे वाक्यमात्रे धाय * लक्ष्मणेरे छाड़िया रामेरे काछे जाय

पुनि अभिराम राम! मैं आई * भच्छहुँ सिय, मग - काँट नसाई
ग्रसन हेत, मुख दनुजि पसारा * हेरि बिकल सिय भय बिस्तारा
दच्छिन ओट[1] बाम कहुँ लेही * लखे राम आकुल वैदेही
सूर्पनखा धावै जित सीता * काँपति कदली - सरिस सभीता
बोले रघुपति, तजि उपहासू * लखन करहु दानवी विनासू
लखन प्रकोपि बान सन्धाना * काटे तासु नासिका - काना
कुत्सित! नासा - श्रवन नसाने * अधर-चिबुक[2]-मुख शोनित-साने

चौदह राक्षस सेनापतियों का बध

गात रक्त, नासिका छिपाई * खर-दूषन ढिग बिलपत जाई
टेरि सैनपति कह खर - दूषन * केहि मम भगिनी कीन कुरूपन
सिंह - भाग जम्बुक किमि ताका * निज-हित मूढ़ कीन विष - पाका
बनहिं सिन्धु-तट दनुजन-थाना[3] * सहस चतुर्दस भट बलवाना
भय न लंकपति! हमहिं न जानै * गरल सँजूति मृत्यु सन्मानै
बोली बैठि[4] छीन अति बानी * तात! लखे वन दुइ नर प्रानी
ते मुनिबेस जदपि मुनि नाहीं * फिरत, नारि सुन्दरि तिन पाहीं
अधम वासना परि जेहि काजा * भई कुगति बरनत मोहिं लाजा

पुनर्व्वार आइलाम राम, तव पाशे * घुचाइब व्याघात सीतारे गिलि ग्रासे
बदन मेलिया जाय सीता गिलिवारे * त्रासेते विकल सीता राक्षसीर डरे
क्षणे वामे, क्षणेते दक्षिणे जान सीता * देखिलेन रघुनाथ सीतारे व्यथिता
जेइ दिके जान सीता, से दिके राक्षसी * राक्षसीर डरे काँपे जानकी रूपसी
श्रीराम बलेन, भाइ, छाड़ उपहास * इंगित बलेन, कर इहार विनाश
क्रोधेते लक्ष्मण वीर मारिलेन वाण * एक वाणे ताहार काटिल नाककान
खान्दा नाक धान्दा लागे, भासे रक्त स्रोते * राक्षसीर उष्ठाधर भासिल शोणिते

(शूर्पनखार रक्षक चतुर्द्दश राक्षस सेनापति बध)

शूर्पनखा जाय खर-दूषनेरे पाशे * नाके हात दिया कांदे रक्ते मात्र भासे
कहे खर-दूषन राक्षस सेनापति * कोन बेटा कैल हेन भगिनी दुर्गति
ए देखि बाघेर घरे घोगेरे बसति * मारिवार औषध के बाँधिल दुर्म्मति
सागरेर कूले थाना वनेर भितरे * उखाड़िया कोन् बेटा एल मरिवारे
खर-दूषनेर थाना यमेर समान * योद्धा चौद्द हाजार जाहाते बलवान
रावणेरे नाहि माने, आमारे ना जाने * मारिवार उपाय सृजिल कोन् जने
बसिय त शूर्पनखा कहे धीरे धीरे * आसियाछे दुइ नर वनेर भितरे
मुनि तुल्य वेश धरि किन्तु नहे मुनि * संगे ल'ये भ्रमे एक सुन्दरी कामिनी
एक कार्य्ये गिया भ्रष्टा कहे आर काज * मनेर वासना से कहिते बासे लाज

---

१ बाइ ओटी २ ओठ-ठोढ़ी ३ राक्षसों की चौकी ४ आवाज बैठी हुई।

मानुस - मास साध उर लाई * श्रवन - नासिका जाय नसाई

दो० प्रमुख चतुर्दस सैनपति, तिन खर कहेउ बोलाय ।
राम - लखन हनि, देहु पुनि, गृद्ध - वायसन[1] आय ॥ १७ ॥

जे नर हेतु भगिनि - अपमाना * करहु माँस तिन शोनित पाना
मूसल मुद्गर सैल सुहाये * जिमि यमदूत, सैनपति धाये
मारु - मारु पुनि हाँक लगावा * चहुँ दिसि असुर - कुलाहल छावा
जहँ अवधेस जुरे सब वीरा * सविनय निकसि कहेउ रघुबीरा
वन फल-मूल गुजर ! केहि कारन ? * बिन अपराध करौ रन धारन
दानव दुष्ट, विनय-रघुनन्दन * सुनि सकोप बोले करि गर्जन
तापस जीवन हमहिं न रोषू * भगिनि विरूप कीन केहि दोषू
ए तव कर्म, न जीवन - साधा * केहि मुख पूछत निज अपराधा
दुइ मानुष, इत कटक अपारा * तिन आयुध छिन तव संहारा
सकल निसाचर यहि विधि कहहीं * वर्षन अस्त्र उपक्रम[2] करहीं
तजेउ विशिष[3] रघुपति - कोदण्डा * मूसल मुद्गर अगनित खण्डा
चौदह बान हने पुनि रामा * दनुज चतुर्दस गे यमधामा
लौटि निषंग राम - सर आये * प्रभु - प्रताप खल सकल नसाये
कृत्तिवास पण्डित कृत गाथा * यश पुराण - सम्मत रघुनाथा

गेलाम मनुष्य मांस खाइवार साधे * नाक कान काटे मोर एइ अपराधे
छिल चौद्द जन जे प्रधान सेनापति * जूझिवारे खर सबे दिल अनुमति
रामेरे मारिया आन लक्ष्मण सहित * गृध्र आर काके खाक् तादेर शोणित
जार ठाइ भगिनी पाइल अपमान * तार रक्त-मांस सबे कर गियापान
लइया झकड़ा शेल मुषल मुद्गर * सेनापति सबे धाय यमेर किंकर
मार मार बलिया धाइल निशाचर * कोलाहले पूरित हइल दिगंतर
सकले आइल, यथा श्रीराम-लक्ष्मण * बाहिरे आसिया राम कहेन तखन
फल-मूल खाइ मात्र, वास करि वने * विना अपराधे आसि युद्ध कर केने
एइ मत विनये कहिले रघुवर * रामेरे डाकिया बले दुष्ट निशाचर
तपस्वीर मत थाक, कि करे वारण * भगिनीर नाक-कान काट कि कारण
जेइ कर्म्म करिलि जीवने नाहि साध * कोन् मुखे बलिस, ना करि अपराध
तोरा दुइ मनुष्य आमरा बहुजन * आमादेर अस्त्राघाते मरिबि एखन
एइ मत कहिया से सकल राक्षस * करे अस्त्र वरिषन करिया साहस
एक वाणे रामचन्द्र काटेन सकल * खण्ड खण्ड हइ से मुद्गर मुषल
चतुर्द्दश वाणे राम पूरेन सन्धान * चतुर्द्दश निशाचर त्यजिल पराण
नेउटिया आसे वाण श्रीरामेर तूणे * राक्षस विनाश हय श्रीरामेर गुणे
कृत्तिवास पण्डित विदित सर्व्वदिके * पुराण शुनिया गीत रचिल कौतुके

१ कौओं को　२ पुरुषार्थ　३ बाण ।

श्रीराम सहित खर और दूषन का युद्ध

निरखि चतुर्दस सुभट विनासा * सूर्पनखा - उर अतुलित त्रासा
खरहिं कहेउ, दानव - दल जेता * निष्फल कुजस लीन रन खेता

सो० राम-बान निष्प्रान, किय नायक जे चतुर्दस।
सुनि खर असुर-प्रधान, भगिनि दीन सन्तोष बहु ॥

दो० छिन मेटहुँ उर - ताप तव, लखु मम तेज अनन्त।
तीक्ष्ण अस्त्र पुनि लिय सहस-चौदह भट बलवन्त ॥ १८ ॥

मणि, प्रवाल-बहु साज समेतू * खर विचित्र रथ अद्भुत केतू
इत-उत[1] रवि-शशि सम उजियारा * दुति दमकति मणि-मुक्ता-हारा
अद्भुत स्यन्दन सुबरन साजी * जोरे आठ पवनगति बाजी[2]
अगनित अस्त्र-शस्त्र पुनि लीना * विजय - खंभ गहि खर आसीना
ध्वज गृद्धिनि गिरि असगुन कीना * रथ गति मन्द, तुरग गति - हीना
घन सम दूषन - गर्जन घोरा * हनौं राम पुनि लखनकिशोरा
असुर अपार कटक छवि छाई * लखन हेरि बोले रघुराई

श्रीराम सहित युद्ध में दूषन का पतन

सैन - सोर श्रवनन नियराई * सियहिं अन्त कहुँ राखहु जाई
मम बल दुगुन रहे तुम पासा * किन्तु रनस्थल सिय अति त्रासा

श्रीरामेर सहित खर ओ दूषनेर युद्ध

चौद्‌दजन युद्धे पड़े शूर्पनखा देखे * त्रास पेये कहे गिया खरेर सम्मुखे
जूझिवारे पाठाइला भाइ चौद्‌दजन * अपयश करिल न साधि प्रयोजन
जेइ चौद्द राक्षसे पाठाले रणस्थान * रामेर वाणेते तारा हाराइल प्रान
खर बले देख तुमि आमार प्रताप * घुचाइब एखनि तोमार मनस्ताप
लइया चलिल निज अस्त्र खरशान * निशाचर चतुर्दश - सहस प्रधान
प्रवाल प्रस्तर छटा ताहे नानामणि * विचित्र पताका ध्वज रथेर साजनि
रथगुला चन्द्र-सूर्य्य जिनिय उज्ज्वल * प्रवाल - मुकता - हार करे झलमल
कनक रचित रथ विचित्र निर्म्माण * वायुवेगे अष्टघोड़ा रथेरे योगान
अस्त्र शस्त्र तावत् तुलिया रथोपर * रथ-स्तंभ धरि उठे महाबली खर
आचम्विते गृधिनी पड़िल रथध्वजे * ना चले रथेर घोड़ा बले मन्द-तेजे
मेघेर गर्ज्जने गर्ज्जे राक्षस दूषण * रामेरे मारिबे आगे पश्चाते लक्ष्मण
राक्षस धाइल यत परम कौतुके * कृत्तिवास रामायण रचे मनःसुखे

श्रीरामेर सह युद्धे दूषणेर मृत्यु

श्रीराम बलेन शुन सैन्य कलकलि * सीता ल'ये लक्ष्मण, त्यजह रणस्थली
थाकिले आमार काछे हइते दोसर * किन्तु हेथा थाकिले पावेक सीता डर

---

१ इधर-उधर २ घोड़े।

बेगि गुफा राखहु सिय जाई * मानि लखन आयसु रघुराई
गये सुदूर; लखैं इत सर्वा * जुरे सुरासुर नभ गन्धर्वा
कौतुक राम पराक्रम एका * सहस चतुर्दस दनुज अनेका
'दूषन' डपटि कही रघुनाथा * चहत मनुज रन दानव-साथा
दूषन बचन मोद खर पावा * 'खर' षट-सहस सेन लै धावा
बल[1] समान, दूषन रनरंगा * युगुल सहस भट त्रिशिरा संगा
चौदह सहस दनुज चहुँ सोरा[2] * खर सकोप, हुमकेउ प्रभु ओरा

दो० यथा सुशोभित सिंह परि, बिपुल श्रृगालन-वृन्द ।
सोहत निसिचर-निकर बिच रघुपति रघुकुल-चंद ।। १६ ।।

अष्ट तुरग-रथ सारथि प्रेरे * हने विषम 'खर' बान घनेरे
प्रभु सर साधि कीन सन्धाना * खंड-खंड किय निसिचर-बाना
बरसावत सर दोउ धनु-वीरा * अतिसय जर्जर दुहुन-सरीरा
आहत कीन परस्पर गाता * युगुल गात चहुँ रक्त प्रपाता
जोरे चाप सहस पुनि सायक * दनुजन हने कोपि रघुनायक
मरे-मरे चहुँ परी पुकारा * भगदर[3] निसिचर कटक मँझारा
सहस असुर पठये यमधामा * सर-गन्धर्व गहेउ पुनि रामा

विलम्ब ना कर भाइ, चलह सत्वर * सीता के राखह गिया गुहार भितर
एत यदि लक्ष्मणेरे बलिलेन रामे * दूरेते लक्ष्मण सीता गेलेन सम्भ्रमे
देव-दैत्य-गन्धर्व्व आइल सर्व्वजन * अन्तरीक्ष थाकिया सकले देखे रन
एका राम चतुर्द्दश सहस राक्षस * केमने जिनिबे राम, बड़इ साहस
डाकिया श्रीराम बले दूषण तखन * मनुष्य हइया तोर मोर सने रण
दूषनेर वचन शुनिया खर हासे * राक्षस हाजार-छय सहित आइसे
त्रिशिरार संगे दुइ हजार राक्षस * खर सैन्य यत, तत दूषनेर वश
चतुर्द्दश सहस्र राक्षस कलकलि * श्रीरामे रुषिया जाय खर महाबली
वेष्टित राक्षसगण मध्ये राम एका * शृगाल-वेष्टित येन सिंह जाय देखा
सारथि चालाय रथ ताहे अष्टघोड़ा * रामेर उपरि फेले मारिल झकड़ा
सन्धान पूरिया राम छाड़िलेन वान * काटिया खरेर वान कैला खान-खान
दुइ जने वाण वर्षे, दोंहे धनुर्द्धर * दोंहेदोंहा विन्धि वाणे करिल जर्ज्जर
उभयेर गा रहिया रक्त पड़े स्रोते * निज निज गात्र रक्त दुइ वीर तिते
श्रीराम सहस्र वाण जुड़िया धनुके * अति क्रोधे मारिलेन राक्षसेर बुके
निशाचरगण-मध्ये उठे कलकलि * मरि मरि बलिया पलाय कतगुलि
सहस्र राक्षस पड़े श्रीरामेर वाणे * जोड़ेन गन्धर्व अस्त्र राम धनुर्गुणे

१ सेना २ शोर, कुलाहल ३ भगदड़ मची ।

अखिल निसाचर रक्त नहाये * भ्रमित[1], परस्पर रारि मचाये
एकहि एक घात प्रतिघाता * षट - सहस्त्र खर - सैन निपाता
सैन - विहीन, शेष खर धीरा * दूषन, कुगति निहारति तीरा
लीन कमान, कीन रन घोरा * महाशूल प्रेरेउ प्रभु ओरा
बहु सर राम तजैं तकि शूला * छुवत शूल ते सब प्रतिकूला
अक्षय शूल, पूजि विधि, पावा * वर - विरञ्चि जग अमिट प्रभावा
राम निपुन - रन, युक्ति नवीना * शूल सहित भुज खंडित कीना
चन्दन - युत दूषन - भुजदंडा * भयेउ अचेत, गिरत भुइँ खंडा
दुसह पीर दूषन निष्प्राना * देवन रघुपति - विरद बखाना

दो० सुमन - वृष्टि सुरगन करहिं जय दुन्दुमी बजाय।
कृत्तिवास, दूषन - मरन रहे राम - जस गाय॥ २०॥

श्रीराम के साथ युद्ध में 'खर' की मृत्यु

छं० रन - खेतन दूषन जूझतही, खर कातर, नैनन नीर झरै।
'विन नायक सैन कियो रघुनायक', धाय कै वीर प्रहार करै॥
कम राम न विक्रमधाम असुर, भट सों भट कोपि लरै अभिरै।
नभ अर्वुद-खर्वुद वान, चहूं अँधियार, नहीं जग सूझि परै॥

सकल राक्षस वाणे हैल रक्तमय * आपना आपनि कारो नाहि परिचय
आपना-आपनि करे निर्घात प्रहार * खरेर हाजार छय राक्षस संहार
पड़िल सकल वीर, खर मात्र आछे * सेनापति दूषन आइल तार काछे
आगु ह'ये प्रवेशिल आपनि संग्रामे * महाशूल निक्षेप से करिल श्रीरामे
ये वाण छाड़ेन राम शूल काटिवारे * शूले ठेकि पड़े किछु करिते न पारे
पेयेछे अक्षय शूल बिधातार वरे * त्रिभुवने सेइ वर अन्यथा के करे
वाणेते पण्डित राम, नाना बुद्धि घटे * शूल सह दूषणेर दुइ हात काटे
दूषणेर दुइ हात चन्दने भूषित * काटा गेल, पड़िल से हइया मूर्च्छित
ज्वालाय दूषण वीर त्यजिल परान * देवगण श्रीरामेर करिछे बाखान
कृत्तिवास रामायण गाहिल कौतुक * दूषणादि सेनानी पड़िल अरण्यके

श्रीरामेर सहित युद्धे खरेर मृत्यु

दूषण पड़िल, खर लागिल भाविते * कातर हइया वीर नेत्र जले तिते
हाते अस्त्र करिया धाइया आगुसारे * एत सेनापति मोर एका राम मारे
रामे देखि खर वीर अग्निर आकार * दशदिक् जलस्थल वाणे अन्धकार
अर्व्वुद खर्व्वुद वाण एड़ियासे खर * डाक पाड़ि रामे वीर करिछे उत्तर

---

१ गंधर्व बाण के प्रभाव से भ्रम में विमूढ़।

ललकारि कहै खर, आजु लखौं तव बान-प्रताप कहा गिनती।
मम हाथ विनास ललार लिखेउ, इत आवन की उपजी कुमती ।।
जहँ देव लुकान फिरैं भय सों, तहँ मानव-दर्प की काह गती।
सुनु दानव! प्रान हरौं तव आजु, सरोष कहेउ पुनि सीयपती ।।

जो धनु-चाप दीन शरभंगा * सो सठ! अक्षय दिव्य निषंगा[1]
राम-कथन सुनि चाप-प्रतापा * खर खल-हृदय कुसंसय व्यापा
तासु त्रास लखि, प्रभु सर मारे * खर-कोदण्ड[2] खण्ड करि डारे
टूट चाप, उपजी उर चिन्ता * अवर लीन धनु दनुज तुरंता
पुनि तकि बान-बुन्द झरिलाये * जल-थल-गगन त्रिपुल चहुँ छाये
नाना अस्त्र अनन्त प्रकासा * 'जीतहुँ राम' अमित उल्लासा
भंजेउ दनुज चाप-भगवाना * धनु-अगस्त्य पुनि प्रभु संधाना
आयुध दिव्य अलौकिक करनी * निसिचर-चाप गिरेउ कटि धरनी
स्वयं विष्णु लीन्हे कर वाना * खण्ड-खण्ड रथ ध्वजा निसाना
धरनि विलोटत सारथि-सीमा * अनल वान छाँड़ेउ जगदीसा
हने प्रान तिन अष्ट तुरंगा * पुनि-पुनि असुर-चाप किय भंगा
खर अभिमंत्रि गदा हनि मारी * चलत तहाँ बरसत अगियारी

मानुष हइया तोर एत अहंकार * देवगण नाहि पारे तुई कोन छार
कत वाण मारिस अग्रेते याक् देखा * आमार हस्तेते तोर मृत्यु आछे लेखा
श्रीराम बलेन, खर, लव तोर प्राण * मुनिस्थाने पेयेछि अजेय धनुर्व्वाण
शरभग दियाछेन ए अक्षय तूण * यत चाइ तत पाइ, नाहि हय न्यून
श्रीरामेर वचनेते लागे चमत्कार * त्रासे खर चिन्तिल संशय आपनार
त्रासित देखिया खरे राम एड़ वाण * काटिया खरेर धनु करे खान खान
काटा गेल धनुक चिन्तित ह'ये खर * लइल धनुक आर अति शीघ्रतर
रामेर ऊपर करे वाण-वरिषन * जल-स्थल चतुर्दिक छाइल गगन
नाना अस्त्रे दशदिक करिल प्रकाश * रामे जिनिलाम बलि मनेमने हास
ये धनुके रघुनाथ करिछेन रन * राक्षसेर वाणे ताहा हइल छेदन
ये धनुक दिलेन अगस्त्य मुनिवर * से धनुके सन्धान पूरेन रघुवर
स्वयं विष्णु रघुवीर पूरिला संधान * काटिलेन खरेर हातेर धनुर्व्वान
रथ-ध्वज-पताका करेन खण्ड-खण्ड * भूमिते लोटाय रणे सारथिर मुण्ड
अग्निवाण एड़ेन धनुके दिया चाड़ा * काटिलेन श्रीराम-रथेर अष्ट घोड़ा
रामेर दुर्ज्जय वाण तारा हेन छाटे * आरवार खरेर हातेर धनु काटे
मंत्र पड़ि खर वीर महागदा एड़े * यतदूर जाय गदा ततदूर पोड़े

१ तरकश २ धनुष ३ निशाना मारा।

उगिलत अनल त्रिरुप सब जारे * गगन प्रकाश गुर्ज विस्तारे
अग्निनि शमन[1] जनि, गदा अनूपा * त्रिभुवन मानहुँ अनल स्वरूपा
सो लखि 'आग्नेय' सर धारा * अन्तरिच्छ प्रति रघुपति मारा
विशिष तजै गिरि सरिस अँगारा * कौतुक - गदा भई जरि छारा

दो० लखि अवसर तजि विपुल सर, खर-तन जर्जर कीन।
दनुज-कलेवर, राम सर, विन्धि रक्त रँगि दीन॥ २१॥

खर निरस्त्र, हिय धरकत[2], धाई * चहेउ कुपित रघुपतिहिं चबाई
लीलहिं राम, हेतु खर धावा * दिव्य बान रघुनाथ चलावा
गिरत वज्र जिमि पर्वत फारी * तिमि सर निसिचर-अंग विदारी[3]
निसिचर चौदह सहस - निकंदन * सुरगन जस गावत रघुनन्दन
वचन विरञ्चि राम सन कहहीं * देव सदा तव मंगल करहीं
तव रन निरखि शिवहिं संतोषू * सुरनाथहिं सब विधि परितोषू[4]
वरुन कुबेर अष्ट - दिकपाला * प्रस्तुत प्रणवति दीनदयाला
तव प्रसाद स्वच्छन्द विहारू * सुरगन सुखी सहित परिवारू
चलि सिय-लखन राम-पद बन्दे * सुखद वार्ता सकल अनन्दे
विक्षत गात - नाथ, सिय देखी * नयन नीर, उर छोभ विसेखी
रन, कौतुक वरनहिं रघुवीरा * सुमिरि कैकयी, मीतहिं पीरा

गाछेर निकटे गेले गाछ सब ज्वले * आलो करि आसे गदा गगनमण्डले
अग्नि जले गदाते, ना हय शान्तवाणे * त्रिभुवन एकाकार, छाइल आगुने
आर वाण छाड़ेन श्रीराम मत्र प'ड़े * पृथिवी छाड़िया वाण अन्तरीक्ष जोड़े
वाण मुखे ज्वले अग्नि पर्व्वत आकार * अग्निवाणे गदा तार हइल संहार
पाइलेन श्रीराम तखन अवसर * खरेर शरीर वाणे करेन जर्ज्जर
सर्व्व कलेवर तार तितिल शोणिते * रक्ते राँगा ह'ये वीर चाहे चारभिते
हाते अस्त्र नाहि आर, रथ हैने उले * रुषिया श्रीरामे वीर गिलिवारे चले
रामे गिलिवारे खर धाय महारोषे * श्रीराम ऐषिक वाण जुड़िलेन त्रासे
बज्राघाते पर्व्वत येमन दुइ - चिर * गाये प्रवेशिले वाण पड़े खर - वीर
चतुर्दश सहस्र राक्षस पड़े रणे * श्रीरामेरे बाखाने आसिया देवगणे
विरिञ्चि बलेन, राम कर अवधान * सकल देवता करे तोमार कल्यान
हइलेन शंकर तोमार रणे सुखी * महेन्द्र तोमाते तुष्ट तव रण देखि
कुबेर - वरुण आदि यत देवगण * अष्टलोकपाल आदि करेन स्तवन
तोमार प्रसादे एवे बेड़ावे स्वच्छन्द * यथा तथा देव - देवी रहिबे आनन्द
श्रीरामे बन्देन गिया जानकी-लक्ष्मण * करेन सकले वीर इष्ट संभाषण
अस्त्रक्षत देखिया रामेर कलेवरे * जानकीर नेत्रनीर झरझर झरे
ताँहारे कहेन राम रण विवरण * शुन सीता कैकयी के करिल स्मरण

१शान्त २ धड़कता था ३ फाड़ दिया ४ संतोष।

रावण - शूर्पनखा संवाद

लखि रन-राम विकल उर संका * सूपनखा गवनी पुनि लंका
कुगति कहत, जहँ निसिचर - भूपा * कुत्सित, नाक न कान, विरूपा
कहत निरखि जन, यह कुल-नासन * खर - दूषन ग्रसि, ग्रसै दसानन
सोहत सभा भूप दसमाथा * सुरन बिराजत जिमि सुरनाथा
आसन निहित सचिव आसीना * सूपनखा, तहँ दरसन दीना

दो० नाक न कान भयंकरी, जहँ लंकेस भुआल।
कहत सभा बिच दुर्वचन, सुख सोवत दसभाल ॥ २२ ॥

अहि - निसि रत कौतुक-शृंगारू * दण्डक अखिल असुर संहारू
राम अकेल, कामिनी संगा * साथ न सैन तुरंग - मतंगा[1]
एक राम सब दनुज निपाते * सुनि विवरन मुख-सूपनखा ते
कटक-वेष किमि वनहिं प्रवेसू ? * अहह ! बरनु, पूछत लंकेसू
को पितु ? पुनि कहु तासु प्रतापू * कस विक्रम बल सायक - चापू
सुनु रावन, ते दसरथ - नन्दन * वन भरमत पितु - सत्य निबाहन
तापस वेस जदपि मुनि नाहीं * अति कमनीय नारि तिन पाहीं
सहस चतुर्दस निसिचर कानन * एक राम - सर सकल विदारन
राम-अनुज बल-लखन अपारा * तिन सों समर न केहु निस्तारा

रावण - शूर्पनखा संवाद

रामेर संग्राम यत शूर्पनखा देखे * शंकाकुला लंकाय चलिल मनोदुःखे
रावणे कहिते जाय आत्म - समाचार * नाक-कान काटा तार बीभत्स आकार
जार काछे जाय खाँड़ी, सेइ भय पाय * खेये खर-दूषणे रावणे खाइते जाय
सभा करि बसियाछे रावण भूपति * सुरगण सहित जेमन सुरपति
बसियाछे निजनिज स्थाने मंत्रिगण * हेनकाले शूर्पनखा दिल दर्शन
नाक कान काटा तार मूर्त्ति खानि कालि * सभा मध्ये रावणेरे देय गालागालि
शृगार-कौतुके राजा थाक रात्रि दिने * राक्षस करिते नाश राम आइल वने
स्त्री-मात्र ताहार संगे, केह नाहि आर * यत छिल दण्डकेते करिल संहार
हाती-घोड़ा नाहि तार जानकी दोसर * यतेक राक्षस मारे राम एकेश्वर
शुनि शूर्पनखार दुःखेर विवरण * हाहाकार करिया जिज्ञासे दशानन
कतेक कटक तार कि प्रकार वेश * भयंकर वने केन करिल प्रवेश
काहार नन्दन राम केमन सम्मान * केमन विक्रमी से केमन धनुर्व्वान
शूर्पनखा बले दशरथेर नन्दन * पितृसत्य पालिया बेड़ाय वने - वन
तपस्वीर वेश धरे, नहे त तपस्वी * संगे करि ल'ये भ्रमे परम रूपसी
चतुर्दश सहस्र राक्षस वने छिल * एका राम सकलेरे संहार करिल
रामेर कनिष्ठ से लक्ष्मण महावीर * तार सह सकलेरे संहार करिल

१ घोड़े-हाथी।

भामिनि - राम पद्मिनी रूपा * विश्वमुग्ध कमनीय अनूपा
सिय छवि अतुल, रूप जग नाहीं * रम्भादिक उर्बसी लजाहीं
नरपुंगव तुम पुरुष - समाजू * तव अनुरूप तासु छवि साजू
करि छल राम-लखन भरमाई[1] * हरहु बेगि, रावहु सिय लाई
जिमि कुल-दनुज दीन सन्तापू * तिय-बिछोह परि विनसहि आपू
सूपनखा - मुख सुनी कहानी * सिय छवि उर-लंकेस समानी
सभा - सदन मन जुगुति बनावै * किमि छलि राम, सिया हरि लावै

दो० शूर्पनखा रोदन मनौ, सीस मृत्यु दसकंध।
विधि अच्छर भावी प्रबल, अकथ भाग्य निर्बन्ध ॥

सो० कोउ मन-मन मुसकान, सूपनखा बिलपत निरखि।
भगिनि - कुगति धरि ध्यान, लंकापति समुझावही ॥ २३ ॥

रावण - मारीच परामर्श

दिवस एक दसमुख - रुख पावा * सारथि तुरत विमान सजावा
पुष्पक रथ विज्ञान - प्रकासू * स्वयं समीर[2] सारथी जासू
हीरा मुक्ता मानिक रत्ना * सुबरन - साज खचित बहु यत्ना
रथ - छवि पुरत मनोरथ सारे * अष्ट - तुरग कौतुक विस्तारे
लंकेश्वर रथ दिव्य सुहावा * विद्युत गति समान रथ धावा
देस, नदी - नद बहु उतराई * सिन्धु पार शत योजन जाई

रामेर महिषी सीता, साक्षात् पद्मिनी * त्रैलोक्यमोहिनी - रूपनारी - शिरोमणि
सीतार रूपेर सम नाइ आर नारी * ऊर्व्वशी, मेनका, रंभा हारे रूपे तारी
येमन महत् तुमि पुरुष समाजे * तार रूप केवल तोमाते मात्र साजे
रामेरे भाँड़ाउ, आर भाँड़ाउ लक्ष्मणे * आनह रमणीरत्न यत्ने एइ क्षणे
येमन सन्ताप दिल से राक्षस - कुले * तेमन से मरुक सीतार शोकानले
शूर्पनखा यत बले, राजा सब शुने * सुन्दरी सीतार कथा भावे मने - मने
युक्ति करे रावण बसिया सभास्थले * रामे भाँड़ाइया सीता आनिब कि छले
विधातार माया नर बूझिते के पारे * शूर्पनखा कान्दिल रावण बधिवारे
केह शूर्पनखार कथाय मन्द हासे * गाइल अरण्य - काण्ड गीत कृत्तिवासे

रावण का मारीच से परामर्श

आर दिन दशानन आइल बाहिरे * बुझिया राजार मन सारथि सत्वरे
आनिल पुष्पक रथ अपूर्व्व गठन * से रथेर सारथि आपनि समीरन
हीरा-मुक्ता-माणिक्य प्रभृति रत्नमणे * खचित, रचित कत संचित काँचने
मनोरथे ना आइसे रथेर सौन्दर्य्य * अष्ट अश्व बद्ध ताहे, देखिते आश्चर्य्य
सेइ रथे आरोहण करे लंकेश्वर * विद्युते प्राय रथ चलिल सत्वर
नाना देश नद - नदी छाड़िया रावन * सागर लघिया जाय शतेक योजन

१ भटका कर २ पवन।

तहाँ श्याम-बट[1] बिटप बिशाला * अस्सी योजन मूल पताला
पद प्रकाण्ड[2] सत्तर, तरु-डारी[3] * शत योजन चहुँ दिसि बिस्तारी
शाखा चारि सरिस गिरि-शृंगा * जहँ ऋषि, बालखिल्य मुनि संगा
तप रत, तप-उपवन मारीचा * निवसि करत तप मुनिगन बीचा
रावन रथी तपोवन आवा * लखि मारीच त्रास उर छावा
काँपति सर्प दरस-उरगारी[4] * जग यम-दरसन जिमि भयकारी
कह दसमुख, तुम दनुज-प्रधाना * लंक न समरथ तुमहिं समाना
दस सहस्र गज हे बल-धारन * सुर-गन्धर्व सदा भय-कारन
सिन्धु नाँघि इत तव वनदेसू * आयेहुँ मम सिर कठिन कलेसू
दण्डकवन रजनीचर सारे * राम अकेल! सबन संहारे

दो० खर दूषन त्रिशिरा सुहृद, हा! अपजस कर धाम।
मम-तव जीवन रहत धिक्, सकल बिनासे राम॥ २४॥

सुपनेखहिं न नाक नहिं काना * मनुज कीट कृत अस अपमाना
मानव छुद्र उपद्रव घोरा * मैं पुनि मेघनाद सुत मोरा
लेहुँ न रिपु-करनी प्रतिकारू * तौ धिक् मम त्रिलोक-अधिकारू
सुहृद सुयोग्य! शरन तव आजू * सुनहु व्यथा, पुरवहु मम काजू

श्याम वट पादप योजन शत डाल * अशीति योजन मूल गियाछे पाताल
चारि डाल देखि येन पर्व्वतेर चूड़ा * सत्तर योजन हैं से गाछेर गोड़ा
तप करे बालखिल्य आदि मुनिगण * मारीच उद्देशे तथा चलिल रावण
यथा तप करे से मारीच निशाचर * रथे चापि गेल तथा राजा लंकेश्वर
मारीच पाइल भय रावनेरे देखि * सर्प येन भीत हय गरुड़े निरखि
त्रास पाय लोक यथा यम दरशने * मारीचेर त्रास तथा देखिया रावने
रावण मारीचे बले, तुमइ प्रधान * लंकाय ना देखि पात्र तोमार समान
अयुत हस्तीर बल तोमार शरीरे * देवता गन्धर्व्व सदा भीत तव डरे
बड़ दुःखे आइलाम तोमार गोचरे * सागर लंघिया आमि वनेर भितरे
दण्डकारण्येते छिल यत निशाचर * सबाकारे संहारिल राम एकेश्वर
त्रिशिरा-दूषन-खर आदि यत भाइ * सबारे मारिल राम केह आर नाइ
धिक् धिक् आमारे, तोमारे धिक् धिक् * तुमि-आमि एक लक थाकिते अधिक
शूर्पनखा भगिनीर काटे नाक कान * हइया मनुष्य कीट करे अपमान
आपनि रावण आमि, पुत्र मेघनाद * घटाइल क्षुद्र राम एतेक प्रमाद
ना करि इहार यदि आमि प्रतीकार * त्रिलोकेर आधिपत्य विफल आमार
आजि लइलाम आमि तोमार शरण * पात्रकार्य्य कर पात्र, करह श्रवण

१ श्याम पत्तो वाला बरगद २ तना ३ शाखाएँ ४ गरुड़।

सुनी एक तेहि सुन्दरि नारी * अकथ रूप - गुन छबि - उजियारी
तासु हरन, तब पाय सहाई * दसन[1] जीभ मारीच दबाई
कस दुर्मति उपजी दसभाला * केहिं कुमंत्र दीन्हेउ यहि काला
प्रानाधिक रामहिं सियरानी * हरन तासु, मनु लंक नसानी
रघुपति - रार[2] द्वार - यमधामा * तिन सों छल-बल एक न कामा
कुम्भकर्ण घननादिक जेते * सकल कुअँरगन जूझहिं तेते
अतुल रम्य जग लंका नगरी * शमन तात ! नतु उजरहि सगरी
बन्दौं पद, सुनु विनय हमारी * छमहु, लंक - जन - हित उर धारी
करि विवाद आनहु वैदेही * फसहिं विपति - घन लोक - सनेही
मंत्रि - कुमंत्र राज्य श्री - नासा * सचिव - सुमति तहँ सम्पति - वासा
मत्त गयन्द[3] विवम उन्माद * जरहि लंक दसकन्ध - प्रमाद
सकल भुवन रघुपति - गुन - गाना * तासु विरह पितु तजे पराना

दो० सदा राम-उर सिय बसै, रमत न प्रभु-मन अन्त ।
सीता के मन एक छबि, सदा चरन - भगवन्त ॥ २५ ॥

सकल भुवन तव सकुशल रहहीं * सुहृद - सगोत मोद नित करहीं
तजि सिय - हरन अमंगल - जोगू * लहु परमायु विपुल सुख भोगू
भक्ति अनन्य जासु हरि - चरना * रावन ! तव निष्फल सिय - हरना

शुनि तार परम सुन्दरि एक नारी * रूप-गुण-कथा तार कहिते ना पारि
ताहारे हरिब करि तोमारे सहाय * शुनिया मारीच कहे करि हाय हाय
अबोध रावण, एकि तोमार युकति * कि दिल ए कुमंत्रणा तोमारे सम्प्रति
प्राणाधिका रामेर से जानकी सुन्दरी * हरिले ताँहारे कि रहिबे लंकापुरी
राम सह विवादे जाइबे यमपुरी * श्रीरामेर निकटे ना खाटिबे चातुरी
कुम्भकर्ण मेघनाद हइबे विनाश * मरिबे कुमारगण, हवे सर्व्वनाश
मनोहर लंकापुरी, नाहिक उपमा * सृष्टि नष्ट ना करिह, चिते देह क्षमा
पाये पड़ि लंकानाथ, करि हे मिनति * क्षमा देह, रक्षाकर लंकार बसति
आनह यद्यपि सीता करिया विवाद * सवाकार उपरेते पड़िबे प्रमाद
कुमंत्रीर बचनेते राजलक्ष्मी त्यजे * सुमंत्री मंत्रणा दिले लक्ष्मी तारे भजे
छुटिले ये मत्त हस्ती, ना रहे अंकुशे * लंकापुरी तेमति मजिबे तव दोषे
त्रिदित रामेर गुण आछे सर्व्वलोके * प्राण दिल दशरथ राम-पुत्र-शोके
सीता विना रामेर ना जाय अन्ये मन * सीतार श्रीराम - पदे मनःसमर्पण
तोमार कुमार सब थाकुक कुशले * ज्ञाति पात्र तोमार थाकुक कुतूहले
बहुभोग करिबे, हइबे चिरजीवी * आनिते ना कर मने श्रीरामेर देवी
राम-विने सीतादेवी अन्ये नाहि भजे * तबे तारे रावण, हरिबे कोन काजे

---

१ दांतों में २ बैर-लड़ाई ३ हाथी ।

विह्वल निरखि रूप परनारी * सकुल विनास न रंच[1] विचारी
भटकहिं राम, धरहु मृग - वेसू * छलि, तिय हरहिं, कहेउ लंकेसू
जो तव संग चलहुँ मृगगाता * प्रथम मोर, पुनि तोर निपाता
सुफल न काज, विपति बहु बाधा * उचित न प्रभु सन तव अपराधा
भल - अनभल सुजान दृढ़ - धर्मा * पूँछि विभीषन, तजहु अकर्मा
विज्ञ धर्म - मति त्रिजटा तीरा * लहि मति हरहु नारि - रघुवीरा
राम न मानव, विष्णु सरूपा * नतरु अतुल विक्रम केहि रूपा
भगिनि - कुगति उर छोभ न लाई * अगनित दनुज - विनास भुलाई
त्रिशिरा - खर - दूषन तजि पीरा * बिलसहु सुख निज रच्छि सरीरा
चौदह सहस दले, तिन नारी * छलि, सवंश तव प्रानन - हारी
तव बल - तेज विदित दसभाला * कहँ तुम पुनि कहँ राम कृपाला
निज मुख जस[2] बरनहु, उत रामा * तुम सम बहु जीते बलधामा
नारि, सुवन तजि सुबरन लंका * करहुँ इतै तप, पुनि प्रभु - शंका

सो० तबहुँ बिबस तव त्रास, जो रघुपति ढिग जाइहौं।
निश्चित मोर विनास, यहि कारन, हे लंकपति ! ॥

दो० जाहु धाम सिय लोभ तजि, सुनत रोष दसमाथ।
कृत्तिवास पण्डित रचेउ, कथा विमल रघुनाथ ॥ २६ ॥

परस्त्री देखिले तुमि हउ बड़ सुखी * सवंशे मरिबे राजा पाछू, ताहि देखि
राजा बले, मारीच हरिन हउ तुमि * भाण्डाइया रामेरे हरिब सीता आमि
मारीच बले मृगवेशे जाव तार काछे * आगेते आमार मृत्यु, तव मृत्यु पिछे
कार्य्यसिद्धि ना हइबे, पड़िबे संकटे * अपराध ना करिह रामेर निकटे
परिणाम भाल-मन्द विभीषण जाने * जिज्ञासा करिह से धार्म्मिक विभीषणे
धार्म्मिका त्रिजटा आछे, बुझिते पण्डिता * यदि बले आनिने से तबे आन सीता
मनुष्य नहेन राम स्वयं त्रिविक्रम * नतुवा अन्येर कार एत पराक्रम
मने ना करिह शूर्पनखार अवस्था * मरिल राक्षस बहु ताहाते कि आस्था
दूषण-त्रिशिरा-खर लागि नाहि दुःख * आपनि बाँचिले ये भुँजिबे नाना सुख
चतुर्द्दश - सहस राक्षस जेइ मारे * सवंशे मरिबे राजा नारिबे[3] ताहारे
तोमार विक्रम जानि, शुन लंकेश्वर * श्रीरामे तोमाय देखि अनेक अन्तर
आपन-विक्रम तुमि बाखाउ आपनि * तोमा हेन लक्ष-लक्ष जिने रघुमणि
छाड़िलाम भार्य्या-पुत्र स्वर्ण लंकापुरी * तपस्वी हइया तबू श्रीरामेर डरि
तथापि तोमार स्थाने नाहिक एड़ान * पाठाउ रामेर काछे नाशिते पराण
आमार वचन तुमि शुन लंकेश्वर * सीता-लोभ छाड़िया चलिया जाह घर
यत बले मारीच, रावण तत रोषे * रचिल अरण्यकाण्ड द्विज कृत्तिवासे

१ किञ्चित भी २ यश ३ पराजित न कर सकोगे।

रावण को मारीच का उपदेश

भेषज[1] अरुचि, काल जेहि सीसा * सुनी न, कोपि कहेउ दससीसा
कुम कुबुद्धि, दुर्मति मारीचा * मनुज प्रसंसि, कहति मोहिं नीचा
शठ पठवहुं सम्प्रति[2] यमलोकू * डोलति धरा सुयश चहुं लोकू
का नर ! निर्जित सुरासुर नाना * मम आगम तें कृत अपमाना
मनुज राम बल - बुद्धि - विहीना * मम सम्मुख जस बरनन कीना
हीन दनुज कुल, मानव गाथा ! * गावत अधम, फिरेउ तव माथा
जो पशुपति[3] लौं करहिं निषेधू * तबहुं न सीय - हरन अवरोधू
भरमित राम दूर करि देही * सूने[4] पाय हरहुं वैदेही
रूप कुरंग चलहु मम संगा * भय न त्रास नहिं युद्ध प्रसंगा
पुनि मारीच सुमंत्र प्रकासा * आगम-सिय तव सकुल विनासा
अब लौं हरन कीन बहु नारी * यहि अवसर न तोर निस्तारी[5]
पुत्र कलत्र बन्धु परिवारा * सुहृद सकल विनसहिं यहि बारा
वनिता सकल नसावन - नारी * तजि,[6] पुर चलहु सुभट बलधारी
सागर - दर्प वृथा दससीसा * बोरहिं स - कुल सिन्धु जगदीसा
प्रथम मरहुं हरि - दरसन पाई * पुनि सवंस दसकन्ध नसाई

(रावणेर प्रति मारीचेर उपदेश)

औषध ना खाय जार निकट मरण * यत बले मारीच, ता' ना शुने रावण
रुषिया रावण कहे मारीचेर प्रति * कुबुद्धि घटिल तोर शुन रे दुर्म्मति
नरेर गौरव कर मन्द बलि मोरे * आमि यदि मारि तोरे, के राखिते पारे
आमार प्रतापे सदा कम्पिता मेदिनी * मनुष्येर किवा कथा, देव-दैत्ये जिनि
आसिलाम तव घरे कर तिरस्कार * मोर अग्रे मनुष्येर कर पुरस्कार
बल-बुद्धि-हीन हय राम नर जाति * निशाचर कुले तुमि राखिले अख्याति
निषेध करेन यदि देव पंचानन * तथापि आनिब सीता, ना हय खंडन
भाण्डाइया रामेरे लइया जाह दूरे * हरिया आनिब सीता, पेये शून्य पुरे
आमार सहित जावे तोमार कि भय * युद्ध ना करिब आमि देखह निश्चय
शुनिया मारीच ताहा बलिल वचन * आनिले सीतारे हबे सवंशे मरण
ह'रेछ अनेक नारी पेयेछ निस्तार * ना देखि निस्तार राजा हरिले एबार
पुत्र मित्र एकत्र बान्धव परिवार * एइबार सवाकार हइबे संहार
एक नारी आनिया मजाबे यत नारी * एइ लोभ छाड़ि फिरि जाह लंकापुरी
सागरेर दर्प कर, सागर कि करे * सवंशे तोमारे राम डुबावे सागरे
आगेते मरिब आमि राम - दरशने * पश्चाते मरिबे तुमि, परे पुरीजने

१ औषध २ इसी समय ३ शंकर ४ एकान्त ५ छुटकारा ६ एक नारी लाकर सारी स्त्रियों से हाथ धोना पड़ेगा इसलिए सीता की कामना छोड़ कर लंका लौट चलो ।

राम - लखन सों करि छल धारन * तबहुं न संकठ होय निवारन

दो० मम माया उपवन तजैं, जाँय दूर यदि राम।
तबहुं अकेल न जानकी, लखन विराजत धाम ॥ २७ ॥

अतुल बीर लछिमन जेहि पाहीं * तहँ प्रवेम - समरथ जग नाहीं
जो कुछ और करहु मनमानी * तजहु आस सिय, मट अभिमानी
सबन जनावहु चलि निज धामा * उपजी सुमति, तजेहु दुष्कामा
पुनि संकल्प अटल यदि तोरा * कुसमय कथन बिसूरेउ[1] मोरा
राजा - सचिव युक्ति मिलि कीना * उत्तर शीघ्र हेलि रथ दीना

मारीच का माया-मृग-रूप धारण

नभ मरीच - दसकन्ध सुहाये * रथ तजि दण्डक वन दोउ आये
सुनु मारीच कहेउ दसकंधर * छवि माया मृग धरहु मनोहर
कौतुक छिनहिं भयेउ मृगरूपा * सुबरन - गात सुचित्र अनूपा
मृदु नवनीत सरिस तेहि अंगा * चौपद खुर छवि धवलित रंगा
भृंग[2] प्रवाल[3] अलोक दिवाकर * ओंठ इन्दु, गर बिम्ब निशाकर
त्रिभुवन अतुल समुज्ज्वल काया * कञ्चनमय प्रदीप्त मृगमाया
सुवरन बिच-बिच कज्जल-धारी[4] * रक्तिम जीभ चमक रतनारी

श्रीराम - लक्ष्मणे भाण्डाइब कि मायाय * ना देखि उपाय किछु ठेकिलाम दाय
आमार मायाय राम यदि छाड़े घर * एका ना रहिबे सीता, थाकिबे सोदर
जे घरे थाकिबे वीर सुमित्रानन्दन * से घरे प्रवेश करे हेन कोन् जन
यथा - तथा जाउ तुमि बलि लंकेश्वर * ना कर सीतार चेष्टा चलि जाह घर
हरिते गेलाम सीता, ना हरिनु ताय * देशे गिया एइ कथा जानाह सबाय
यदि सीता आनिते नितांत कर मन * परिणामे मम कथा करिबे स्मरण
राजा पात्र करे युक्ति ह'ये एक मति * रथे चापि उत्तरेते चले शीघ्र गति
फूलियार कृत्तिवास गाय सुधाभाण्ड * रावणेरे मजाइते विधातार काण्ड

मारीचेर माया-मृग रूप धारण

रावण मारीच सह चलिल गगने * उत्तरिल दोंहे गिया दण्डक कानने
मारीचेर कर धरि कहे लंकेश्वर * मृगरूप धर तुमि देखिते सुन्दर
मृगरूप धरिल मारीच निशाचर * विचित्र सुचित्र तार स्वर्ण कलेवर
नवनीत सदृश कोमल कलेवर * श्वेतवर्ण चारि खुर देखिते सुन्दर
दुइ भृंग तार येन प्रवाल - प्रस्तर * उज्ज्वल बिम्बिक तार येन दिवाकर
जिनिया त्रैलोक्य स्वर्णमृग मनोहर * दुइ उष्ठ शोभे गले येन निशाकर
स्थाने-स्थाने रांगा, मध्ये कज्जलेर रेखा * रागा जिह्वा मेले, येन रतन झलका

---

१ याद करना २ सींग ३ मूँगा के समान ४ काली रेखायें।

रोम रोम दमकत मनु मोती * लोचन युग दीपित मणि ज्योती
चपला धौं रतनन - उजियारी * कपट वेस खल माया धारी

मारीच बध

मृग छबि मुग्ध, रुकेउ वन रावन * प्रकट कपट-मृग चहुं दिसि धावन
घूमि लखत निज सुन्दरताई * पहुँचेउ जहाँ सीय - रघुराई

दो० मञ्जुल मूर्ति विराजहीं उपवन सीता - राम।
दरस दीन तहँ कपट-मृग रूप नयन - अभिराम ।। २८ ।।

छं० रजनीचर-वंस-विनासन औ, सिय सागर-दुःख अथाह परै।
मृग-कंचन सिर्जि विरंचि कियो, जिमि देवन की विपदा निवरै ।।
यदि आयसु नाथ मिलै तो कहौं सिय बानि सों बानि-सुधा निमरै।
मृग-चर्म कुतूहल पर्णकुटी, तेहि आसन चित्त प्रमोद भरै ।।

सादर सुनि सिय - बचन ललामा * लखन निहारि कहेउ श्रीरामा
हरिन विचित्र तात इत आवा * चित्र अतिव रमनीक सुहावा
विपुल चन्द्र - छबि गात सुहाई * किरन - प्रभा रोमावलि छाई
अगिनि - लपलपी कुंकुम - रसना[1] * लोचन मञ्जु नखत जिमि गगना
वर्ण - प्रवाल[2] युगुल लघु शृंगा * कर्ण रम्य दुति लखहु कुरंगा

लोमावलि देखि येन मुकुतार ज्योति * दुइ चक्षु ज्वले येन रतनेर बाति
नाना माया धरे दुष्ट मायार पुतलि * रत्नेर किरण किबा शोभित बिजली
मृगरूप देखिया रावणराजा हासे * गाइल अरण्यकाण्ड - गीत कृत्तिवासे

मारीच-बध

वन मध्ये लुकाइया रहिल रावण * आलो करि चले मृग रत्नेर किरण
देखिया आपन मूर्ति आपनि उलटे * चलिते चलिते गेल रामेर निकटे
राम - सीता बसिया आछेन दुइ जन * सेइ खाने मृग गिया दिल दरशन
राक्षस वंशेर ध्वंस करिवार तरे * डुबाइते जानकीरे बिपत सागरे
देवगणे विपदे करिते परित्राण * करिला विधाता हेन मृगेर निर्म्माण
श्रीरामे बलेन सीता मधुर वचन * अनुमति हय यदि करि निवेदन
एइ मृगचर्म्म यदि दाउ भाल वासि * कुटीर कौतुके राम बिछाइया बसि
शुनिया सादरे राम सीतार वचन * डाक दिया लक्ष्मणेरे बलेन तखन
अद्भुत हरिण भाइ देख विद्यमान * अपूर्व्व मुन्दर रूप काहार निर्माण
दुइ पाशे शोभा करे चन्द्रेर मण्डलो * धवल किरण येन गाये लोमावली
रांगा जिह्वा मेले, येन अग्नि हेन देखि * आकाशेर तारा येन शोभे दुइ आँखी
दुइ शृंग अल्प देखि प्रवालेर वर्ण * रूपे आलो करितेछ रम्य दुइ कर्ण

---

१ केसर के रंग की जीभ २ मूँगा के रंग के।

यहि मृग - चर्म मुग्ध वैदेही * करहु विचार लखन मन एही
गति-विधि हरिन-सुरूप निहारी * लखन प्रभुहिं प्रति गिरा उचारी
मुनि बरनेउ, बन असुर-निकाया * स्वारथ हेत करत बहु माया
करि मन मुग्ध सबन भरमाई * पियत रक्त पुनि गात चबाई
फसैं सकल तिन फन्द अनूपा * धरत विविध, खल, माया रूपा
कौतुक मृग यहि सम जग नाहीं * निश्चय असुर - कपट यहि माहीं
कै मारीच कि सहज कुरंगा * मोचनीय प्रभु ! प्रथम प्रसंगा
कुशलबुद्धि जस लखन बतावा * घटित भयेउ सब आगे आवा
इन मारीच दनुज केहि हेतू * आगम तात ! कहेउ रघुकेतू
बध - मारीच न भय द्विजघाता * जिमि अगस्त्य वातापि निपाता
जो कोउ अन्य, लखन ! निसि-चारी * मारि तपोवन - सूल निवारी

दो० जो न असुर, मृग-मञ्जु तौ, धरि पालहिं, अति प्रीत ।
नतरु मारि, आवहुं इतै, लहि मृगचर्म पुनीत ॥ २६ ॥

लौटहुं करि आखेट कुरंगा * करहु चौकसी रहि सिय संगा
सदा सचेत, सीख हिय माहीं * परै न तात विपति परछाहीं
सुनि तरु - ओट रावनहिं भावा * यहि अवसर सिय - हरन सुहावा
भावी विधि - अच्छर अनुकूला * सिय सम सतिहिं दुसह दुख-सूला
उपवन लखन राखि, रघुनाथा * मृग अनुसरत, बान - धनु हाथा

जानकी चाहन एइ हरिणेर चर्म्म * देखि बुझ लक्ष्मण इहार किबा मर्म्म
लक्ष्मण मृगेर रूप करि निरीक्षण * श्रीरामे बलेन किछु प्रबोध वचन
मायावी असुर शुनियाछि मुनि मुखे * पातिया मायार फाँद आपनार सुखे
रूपे भुलाइया आगे मन सबाकार * वने गिया रक्त माँस करये आहार
नाना माया धरे दुष्ट मायार पुत्तलि * आमा सब भाडिबारे पाते महाजालि
अवश्य राक्षस आछे सहित इहार * नतुबा न देखि हेन मृगेर संचार
भालमते इहा आगे करिब निर्णय * मारीचेर माया कि स्वरूप मृग हय
लक्ष्मण सुबुद्धि अनिबुझि नाहि टुटे * यत युक्ति बलिलेन सकलि से घटे
लक्ष्मणे वचने कहेन रघुवीर * मारीच आइल किसेकर भाइ स्थिर
यद्यपि मारीच हय ब्रह्मवधे पापी * मारिब ताहारे, येन अगस्त्य वातापी
से नाह' ये यद्यपि राक्षस अन्यजन * मारिया करिब निष्कण्टक तपोवन
राक्षस ना हय यदि हय मृगजाति * रत्न मृग धरिले पाइब मनःप्रीति
धरिते ना पारि यदि मारिब पराने * मृगचर्म्म लइया आसिब एइखाने
यावत् मारिया मृग नाहि आसि घरे * तावत् लक्ष्मण, रक्षा करह सीतारे
आमार बचन कभु ना करिह आन * प्रमाद न पड़े येन ह'यो सावधान
वृक्ष आड़ थाकिया रावण सब शुने * मने भावे जानकीरे हरिब एक्षणे
यखन या' हबे ताहा विधिर लिखन * सीताहेन सती दुःख पान से कारण
श्रीराम करेन सज्जा, हाते धनुःशर * यान मृग मारिते लक्ष्मणे राखि घर

इत प्रभु-सर उत दसमुख-त्रासा * भजे[1] मरीच न प्रानन आसा
हनहिं राम नतु बधै दसानन * आजु घरी मम प्रान नसावन
मरन - राम - पद मंगल - हेतू * निसिचरपति - कर नरक - निकेतू
खल - गति सिथिल, शंक उर भारी * धरत पैग पुनि भजत पिछारी
छन समीप, छन दूरि कुरंगा * रचत विपुल छल नाना रंगा
ओझल[2] कबहुँ, कबहुँ नियराई * दुरत अनुसरत लखि रघुराई
धरहिं कान धरि, लेहिं न प्राना * मृग तन, प्रभु न बान संधाना
किन्तु निरखि कञ्चन मृग-माया * दनुज प्रतीत भई रघुराया
कबहुँ दरस अदरस छल रूपा * दानव खल मारीच अनूपा
दिव्य बान रघुपति संधाना * लगेउ हृदय सो बज्र समाना
निसिचर प्रकट पलोटत[3] धरनी * दुसह वेदना जात न बरनी

दो० राम तुल्य स्वर, हाँक दिय, अन्तहुँ हित - लंकेस ।
अहह दनुज ! धावहु लखन ! नतरु प्रान मम सेस ।। ३० ।।

राम - गुहार[4] लखन सुनि आवैं * सिय तजि कुटी, बन्धु हित धावैं
मन मारीच जुगुति यह धारी * लखन ! लखन ! भरि कण्ठ पुकारी
सो सुनि राम विकम्पित गाता * प्रथम, असुर छिन माँहि निपाता
मन ससंक सायक कर लीन्हे * उत सिय - ओर तुरत पग दीन्हे

श्रीरामेरे देखिया मारीच भावे मने * पलाइला गेले मोरे मारिबे रावणे
आमारे मारिबे राम नतुवा रावण * आमार कपाले आजि अवश्य मरण
वरञ्च रामेर हाते मरण मंगल * रावणेर हाते मृत्यु नरक केवल
मारीच सशंक ह'ये जाय धीरे धीरे * आगे धाय पिछे जाय चाय फिरेफिरे
क्षणे जाय क्षणे चाय क्षणे हय दूर * नानारंगे चले मृग मायाय प्रचुर
क्षणेक निकटे जाय क्षणेक अन्तरे * श्रीराम निकटे गेले पलाय से दूरे
प्राणे मरिवेक मृग, न मारेन वाण * निकटे पाइले मृग धरि दुइकान
क्षणेक चिन्तिया राम बुझेन कारण * स्वरूपतः मृग नहे हबे दुष्ट जन
क्षणे अदर्शन हय क्षणे मृग देखि * मायारूप धरियाछे मारीच पातकी
एषीक विशिख राम पूरेन संधान * मारीचेर बुके बाजे बज्रेर समान
वाणाघाते मारीच से पड़िल अन्तरे * राक्षसेर मूर्ति धरे हाहाकार करे
तखन मारीच करे रावणेर हित * रामेर डाकेर तुल्य डाके आचम्बित
आइस लक्ष्मण झाट कर परित्राण * राक्षसे मिलिया भाइ लय मोर प्राण
मारीच भाविल इहा, डाकिले एमनि * रामेर वचन मानि आसिबे एखनि
'लक्ष्मण-लक्ष्मण' बलि डाके उच्चैःस्वरे * शुनिया रामेर कम्प हय कलेवरे
मारीच बुकेर वाण खसे टान दिते * मारीचेरे संहारिया वाण ल'ये हाते
सीतारे निकटे राम चलेन त्वरिते * कृत्तिवास मारीच - वध गाय अरण्येते

---

१ भाग कर २ गायब ३ जमीन पर लोटने लगना ४ पुकार ।

सीता हरण

परी निसाचर - धुनि सिय काना * माया - स्वर रघुनाथ - समाना
आरत वचन न संसय एही * लखनहिं हेरि कहत बैदेही
विकल बन्धु तव दानव-त्रासा * गमनहु तुरत, लखन प्रभुपासा
बोले लखन, न कछु भयकारी * आवैं वेगि राम मृग मारी
कहँ रघुपति ! कहँ आरत बानी ! * हेतु न, मातु ! कहा अकुलानी
शिवधनु - भंग तुम्हैं सुधि नाहीं * हनै राम, भट को जग माहीं
प्रानन परे न कातर वानी * निश्चय यह न राम मुख - वानी
उपवन सून, न कोउ तव तीरा * तजब न उचित, मातु मोहिं पीरा
उर अधीर सिय अति रिस-पागी * कुवचन कहन लखन प्रति लागी
वन्धु - विमातन चाल विरानी[1] * मम प्रति तव दुर्मति मैं जानी
भरतहिं राज, हरहु तुम नारी * भरत संघ अभिसन्धि[2] तुम्हारी
मेटि राम, यहि छन मम आसा * साध, बुझावन चहउ पिपासा

दो० आन पुरुष छाँही परे, तजहुँ प्रान, सुनि बैन।
परमधार्मिक, विमलमन, लखनलाल बेचैन ॥ ३१ ॥

जलचर थलचर जे नभचारी * साखी ! सिय दुर्वचन उचारी
सीख न तोप, करत पुनि रोषू * नेउतत सिय विनास निज दोषू

रावण कर्तृक सीता-हरण

दूरेते राक्षस करे रामतुल्य ध्वनि * राक्षसेर मायाय रामेर शब्द शुनि
हेथा सीता शुनिया से करुण वचन * बलिलेन झाट जाउ देवर लक्ष्मण
आर्त्तस्वरे श्रीराम जे डाकेन तोमारे * देख गिया ताँहारे कि राक्षसेते मारे
लक्ष्मण बलेन नाइ श्रीरामेर भय * मृग मारि आसिबेन किसेर विस्मय
श्रीरामेर मुखे नाइ कातर वचन * एत व्यस्त हउ माता किसेर कारन
रामेरे मारिते पारे, नाहि कोन् जन * तुमि कि जानना देवि धनुक-भंजन
रामेर वचन देवि, आमि नाहि शुनि * प्राण गेले रामेर कातर नहे वाणी
कारे राखि तोमार निकट केबा रहे * शून्य घरे थाका तव उपयुक्त नहे
प्रबोध ना माने सीता ह'ये उतरोली * शिरे घा हानेन सीता देन गालागाली
वैमात्रेय भाइ कभू नहे त आपन * आमा प्रति लक्ष्मण तोमार बुझि मन
भरत लइल राज्य तुमि लउ नारी * भरतेर संगे खड़ आछये तोमारि
मनेर वासना कि साधिबे एइ बेला * आमार आशाते कि रामेरे कर हेला
अपर पुरुषे यदि जाय मम मन * गलाय काटारि दिया त्यजिब जीवन
लक्ष्मण धार्मिक अति मने जाहि पाप * सकलेरे साक्षी करे पेये मनस्ताप
स्थलचर जलचर अन्तरीक्षचर * सबे साक्षी हउ सीता बले दुरक्षर
प्रबोध न माने सीता आरो बले रोषे * आजि मजिबेक सीता आपनार दोषे

१ सौतेले भाइयों की रीति ही गैरों सी होती है २ गाँठ-गाँठ।

निकसि लखन चहुँ रेख खँचाई * जेहि उलंघि कोउ कुटी न आई
देवन सौंपि, राम-पद ध्याई * लखन, सियहिं पुनि विनय सुनाई
आयसु देहु, छमा करु माई * द्रवित नैन सिय करुना छाई
चले प्रणम्य लखन, विधि वामा * विटप ओट रावन बलधामा
तापस वेस सुअवसर पाई * धरि छल रूप सिया ढिग जाई
झोरी, दण्ड-कमण्डल रूपा * भगवा[1] वसन सुरूप अनूपा
मधुवयनी मृगनयनि ललामा * सीय-छटा लखि उपजा कामा
रसमय करत मधुर सम्भाषू * केहि कुल पुनि केहि देस निवासू
केहि दुहिता केहि प्रानपियारी * मनुज न, प्रतिमा कनक-सवाँरी
लखि उरोज-छबि, छबि मन मोहा * तव तन रम्य वसन भल सोहा
व्याघ्र-सिंह दण्डक वनवासू * केहि बल तहँ सुन्दरी निवासू
सुनि तपसिहिं निज कथा बखानी * अमिय सनी सिय की मधुवानी
जनक-सुता सीता मम नामा * दशरथ-बधू, नाथ मम रामा
लखनलाल लाये फल नाना * तव अर्पन, द्विज! कीजिय पाना

दो० अतिथि-भक्त रघुवंसमणि अतिथिन तिन अति प्रीत।
लहैं परम सुख पाय तव, मुनिवर! दरस पुनीत ॥ ३२ ॥

गन्ती दिया बेड़िलेन लक्ष्मण से घर * प्रवेश ना करे केह घरेर भितर
स्वयं विष्णु रघुनाथ ताँर पत्नी सीता * शून्य घरे राखि उहे सकल देवता
आमारे विदाय कर सीता ठाकुराणी * आर किछू ना बलिह दुरक्षर वाणी
शिरे घात हाने सीता, नेत्र जले तिते * सीतारे, प्रणमि जान लक्ष्मण त्वरित
हइल विमुख विधि चलेन लक्ष्मण * थाकिया वृक्षेर आड़े देखिछे रावण
एन क्षणे रावणेर सिद्ध अभिलाष * तपस्वीर वेश धरि जाय सीता पाश
भिक्षा झुलि करे धरे स्कन्ध धरे छाति * सकल वसन रागा, धरे नाना गति
परम सुन्दरी सीता वचन मधुर * ताँर रूप देखिया रावण कामातुर
रावण मधुर वाक्ये सीतारे सम्भाषे * कोन जाति नारी तुमि थाक कोन देशे
काहार झियारी तुमि कार प्रियतमा * मानवी ना हउ तुमि, सोनार प्रतिमा
सुगठित दुइ स्तन शोभा करे हारे * उत्तम बसन शोभे तोमार शरीरे
विषम दण्डक वने हिंस्र व्याघ्र वंसे * एमन सुन्दरी थाक केमन साहसे
परिचय देन सीता तपस्वीर स्थाने * अमृत सिञ्चिल येन मधुर बचने
जनकनन्दिनी आमि, नाम धरि सीता * दशरथ-पुत्रबधू, रामेर वनिता
रह द्विज, फल आनि दिवेन लक्ष्मण * सेइ फल दिब, तुमि करिउ भक्षण
अतिथिरे भक्ति राम करेन यतने * बड़ प्रीति पाइबेन तोमा दरशने

१ गेरुए।

कम सिर जटा कहहु मुनिकेतू * नाम, जाति, भिक्षाटन-हेतू ?
यहि विधि सुनि वृतांत-वैदेही * लंकापति निज परिचय देही
अग्रज मम कुवेर धन-धामा * मुनिन प्रकट मम रावन नामा
बन तप करत अवधि बहु बीती * लहि तव दरस अतुल मन प्रीती
असन[1] गिरिस्त समादर करहीं * लै फल-मूल मोद मन भरहीं
आजु प्रथम दर्शन तव पाहीं * लै भिक्षा निज आश्रम जाहीं
भइ अबेर[2] जदि करहु विधानू * आजु पुण्य-तव दान-स्नानू
आगम राम लखत अति देरी * सुमुखि होत मोहिं बेर घनेरी[3]
विप्र ! पञ्चफल प्रस्तुत गेहा * करहु पान, सिय कहत स-नेहा
मैथिलि ! मैं अरण्य-व्रतचारी * आश्रम-भीख न मुनि अधिकारी
प्रभु आयसु विन बाहेर आई * देहुँ भीख, यह द्विज ! कठिनाई
कह दसकंध अबेर न कीजै * नतरु जाहुं घर, उत्तर दीजै
अतिथि विमुख रामहिं न सुहाई * धर्म-कर्म यत सकल नसाई
लिखा ललार न तेहि प्रतिकूला * भावी विधि-अच्छर-अनुकूला
लिये सिया फल बाहेर आई * बढ़ेउ पतित खल निसिचर धाई
गहेउ बेगि कर, विस्मित सीता * कस विपरीत ! कहेउ भयभीता

दो० दुष्ट दुराचारी दनुज, दूर ! दूर ! खल दूर ! ।
मम कारन विनसै स-कुल, कुटिल कुचाली कूर ॥ ३३ ॥

जिज्ञासि तोमारे मुनि शिरे धर शिखा * कि जाति नाम धर, केन कर भिक्षा
एतेक बलेन सीता तपस्वीर ज्ञाने * निज परिचय देय राजा दशानने
ज्येष्ठ भाइ कुबेर धनेर अधिकारी * एइ वने बहुकाल आमि तप करि
रावण आमार नाम जाने मुनिगणे * बड़ प्रीति पाइलाम तोमा दरशने
फल-मूल दिया करि उदर पूरण * गृहस्थेर घरे गेले कराय भोजन
तोमार सहित आजि अपूर्व दर्शन * भिक्षा दिले जाइ चले निज निकेतन
हइल अनेक बेला करये विधान * तोमार पुण्येते गिया करि स्नान-दान
श्रीरामेर आसिते विलम्ब बहु देखि * हइल स्नानेर वेला देख चन्द्रमुखि
जानकी बलेन द्विज करि निवेदन * पंच फल घरे आछे करह भक्षण
रावण बलिल, सीता, व्रत करि बने * आश्रमे ना लइ भिक्षा जाने मुनिगणे
जानकी बलेन, द्विज, एक कथा कहि * आज्ञाविन प्रभुर घरेर बाहिर नाहि
रावण बलिल, भिक्षा आनह सत्वर * नतुवा उत्तर देह, जाइ निज घर
जानकी बलेन, व्यर्थ अतिथि जाइबे * धर्म कर्म नष्ट हबे, प्रभु कि बलिबे
विधिर निर्व्वन्ध कभु ना हय अन्यथा * विधिर लिखन मत घटिलेक तथा
फल-हाते बाहिर से हइला जानकी * लइते आइल दुष्ट रावण पातकी
धरिया सीतार हाथ लइल त्वरित * जानकी बलेन हाय ! कि विपरीत

---

१ भोजन २ विलम्ब ३ बहुत देर ।

सुनु सीता मम परिचय-गाथा * लंक धाम, मैं निसिचर-नाथा
लोचन बीस भुजा लखु बीसा * जग जाहिर दसमुख दससीसा
आयेउँ उपवन तापस रूपा * करहु कृपा लहि दास सरूपा
सुरपुर सरिस पुरी मम लंका * जग-दुर्लभ चलि लखहु निसंका
छबि-विमुग्ध तव बड़ अभिलासी * महिषी[1] सकल करौं तव दासी
तुम सिरमौरि सबन पटरानी * आश्रित सकल, सुमुखि! तव रानी
पुजहु, मान-सम्मान प्रकासू * कनक-रत्नमय-धाम निवासू
दुखमय जनम साथ रघुनाथा * सुख अनन्त बिलसहु मम साथा
कम्प त्रिलोक लखत मम बाना * मनुज राम मोहिं कीट समाना
बुद्धि न आयु! हीन तव कन्ता * युगजुग मैं चिरायु बलवन्ता
वेष अनूप सुरूप लुनाई[2] * तुम सम रूपसि मम मन भाई
सिया कुपित सुनि रावन-वचना * अभिमत[3] अथक[4] कहहि दुर्वचना
रे शठ! पतित तोर दसमाथा * सकुल विनास करहिं रघुनाथा
राम सिंह तैं निपट श्रृगाला * केहि बल भीरु! बजावत गाला
विष्णुरूप रघुपति मनभावन * कहँ समता तव असुर अपावन
सूने लखन विसूने रामा * नतरु सकत करि किमि दुष्कामा

दूर ह्'रे दुराचार पापिष्ट दुर्जन * आमा लागि हबे तोर सवंशे मरण
रावण बलिल सीता शुनह वचन * आत्म-परिचय कहि, आमि दशानन
राक्षसेर राजा आमि लंका निकेतन * कुड़ि हात कुड़ि चक्षु, दशटि वदन
तपस्वीर वेश धरि आसि तपोवन * अनुग्रह कर मोरे आमि दास जानि
इन्द्रेर अमरावती जिनि लकापुरी * जगत् दुर्लभ ठाँइ देखिबे सुन्दरि
तोमार रूपेते आमि बड़ भालवासि * अन्य यत महिषी तोमार हबे दासी
सर्व्वोपरि तोमारे करिब ठाकुराणी * तुमि अन्न दिले अन्न पावे अन्यरानी
हइबे तोमार पूजा बाड़िबे सम्मान * सुवर्ण माणिक्यमय हवे तवस्थान
करिया रामेर सेवा जन्म गेले दुःखे * रहिले आमार सेवा रवे नाना सुखे
त्रिभुवन आमार वाणेते कम्पमान * मनुष्य रामेरे आमि कीट तुल्य ज्ञान
अल्प बुद्धि रामेर से अत्यल्प जीवन * युगे युगे चिरजीवी आमि दशानन
सीता तुमि सुन्दरी लावण्य आर वेशे * तोमाहेन सुन्दरी आमाके अभिलाषे
कोपान्विता सीतादेवी रावण-वचने * रावणेरे गालि देन यत आसे मने
अधार्मिक नगण्य अधम दुराचार * करिवेन राम तोरे सवंशे संहार
श्रीराम केशरी, तुइ श्रृगाल येमन * कि साहस ताँहारे बलिस् कुवचन
विष्णु अवतार राम, तुइ निशाचर * रामे आर तोरे देखि अनेक अन्तर
यदि राम थाकि तेन अथवा लक्ष्मण * करितिस् केमने ए दुष्ट आचरण

---

१ रानियाँ २ लावण्य ३ मनमाने ४ बिना रुके हुये।

दो० उपवन आजु सहाय बिन, पाय अकेली मोहिं ।
अहा, दुष्ट मम हरन किय, आवत लाज न तोहिं ॥ ३४ ॥

कटकटाहिं दसमुख बत्तीसी * काँपति सीय पात - कदली सी
असुर भयंकर रूप दिखावा * सबविधि गर्जि - तर्जि समुझावा
केहि गुन राम रीझ तव प्राना * बनन फिरत वल्कल - परिधाना[1]
जग न सुलभ सुख बिलसहु लंका * सुनत सीय अति त्रस्त ससंका
रे मतिमन्द पातकी रावन * तव करनी तव प्रान - नसावन
लिखा ललार अमिट फल - भोगू * नतरु जुरत किमि सकल कुयोगू
जनकलली, वनिता श्रीरामा * नृपमनि दसरथ - बधू ललामा
स्वयं रमा ! जननी जगवन्दन * अचरज आजु असुर के बन्धन
बिलखति त्रास, करुन सियबानी * हे प्रभु कहाँ राम गुनखानी
देवर लखन सिंह - बल - धारी * सूने हरत मोहिं निसिचारी
सत्य कथन तव कीन विधाता * आवहु बेगि उबारहु ताता
विकल मैथिली अतुल विलापू * करै त्रान को यहि सन्तापू
सिय रथ, बिबस - निसाचरराई * जिमि घन सौदामिनी सुहाई
संकट परि ध्यावत श्रीरामा * नयनन छवि दूर्बादल श्यामा
असुर दिव्य रथ सिय नभ जाई * चितवत मनौ निकट रघुराई

एकाकिनि पाइया आमारे वनमाझ * हरिस् आमारे दुष्ट नाहि तोर लाज
करे दुष्ट कुड़ि पाटि दन्त कड़िमाड़ * जानकी काँपिन येन कलार बागुड़ि
प्रकाशे राक्षस मूर्ति अति भयंकर * अधिक तर्ज्जन करे राजा लंकेश्वर
कि गुणे रामेर प्रति मजे तोर मन * बल्कल परिया से बेड़ाय वने वन
देखिबे केमने करि तोमार पालन * ताहाशुनि जानकीर उड़िल जीवन
जानकी बलेन ओरे पातकी रावण * आपनि मजिलि तुइ आमार कारण
देवेर निर्ब्बंध कभु ना हय खण्डन * नतुवा एमन केन हबे संगठन
जनकेर कन्या जिनि रामेर कामिनी * श्वशुर जाँहार दशरथ नृपमणि
आपनि त्रिलोक-माता लक्ष्मी अवतार * ताँहारे राक्षसे हरे ए कि चमत्कार
त्रासेते कान्देन सीता हइया कातर * कोथा गेले प्रभुराम गुणेर सागर
सिंहेर विक्रम सम देवर लक्ष्मण * शून्य घर पेये मोरे हरिल रावण
तुमि यत बलिले, हइल विद्यमान * झाट आइस देवर करह परित्राण
अत्यन्त कातरा सीता करेन रोदन * एमत समये रक्षा करे कोन जन
सीतारे धरिया रथे तुलिल रावण * मेघेर उपरे शोभे चपला येमन
विपदे पड़िया सीता डाकेन श्रीराम * चक्षु मुदि भावेन से दूर्व्वादल श्याम
सीता ल'ये रावण पलाय दिव्य रथे * राम पाछे आसे बलि देखे चारि भिते

१ छाल के वस्त्र ।

सुरगन ! प्रभुहिं कहेउ विधि एही ॥ रावन हरन कीन वैदेही
दो० उदित कर्म विधि बाम कस, डारेउ विपति पहार ! ।
कोउं न बन्धु, दसकन्ध हनि, विपति बचावनहार ॥ ३५ ॥
रामहिं विटप - लता जे कानन ! ॥ जेहि विधि हरी, कहेउ, सिय रावन
मृदु - प्रबोध - दसमुख जनि भावै ॥ बढ़त शोक सिय रुदन मचावै
हाय, असुर छल जानि न पाई ॥ रेख लाँघि गृह बाहेर आई
लखन न हठ करि विवस पठावत ॥ गिरत न गाज, न यहु दुख आवत
कह दसभाल वृथा सिय ! रागा[1] ॥ लहि तव सरिस रतन केहि त्यागा
जनकललौ सुनि कहत सशोका ॥ वेग गमन तव शठ ! यमलोका
रावन सुनि कटुवैन रिसाना ॥ रथ प्रेरित गति पवन समाना

जटायु-रावण युद्ध

गरुण - सुवन खग नाम जटाई ॥ उत सिय रुदन दूरि सुनि पाई
उड़ेउ गगन चहुं दीठि पसारी ॥ असुर - फन्द सिय फसी विचारी
सुभट - विश्व चीन्हत खगनाथा ॥ अहह ! लंकपति यहु दसमाथा
पंख पसारि गगन तन धावा ॥ पंख नखन बहु रारि मचावा
भल मोहिं विदित अधम निसिचारी ॥ शठ रावन तैं पापाचारी
ढायेउ लंक न तव रघुकेतू ॥ हरन तासु तिय कहु केहि हेतू

जानकी बलेन, शुन यत देवगण ॥ प्रभुर कहिउ सीता हरिल रावण
हाय विधि, कि करिले, फेलिले विपाके ॥ एमन ना देखि बन्धु सीतारे जे राखे
बनेर भितर यत आछ वृक्ष-लता ॥ श्रीरामे कहिउ हृता तोमार वनिता
वचन मधुर यत बुझाय रावण ॥ लोकेते जानकी तत करेन रोदन
आगे यदि जानिताम राक्षस दुर्जन ॥ घरेर बाहिर आमि हव कि कारण
हाय, केन लक्ष्मणेरे दिलाम बिदाय ॥ लक्ष्मण थाकिले कि घटित हेन दाय
रावण बलिल, सीता, भाव अकारण ॥ पाइले एमन रत्न छाड़े कोन् जन
जानकी बलेन, शोन् दुष्ट निशाचर ॥ अल्पायु हइया तुइ जाबि यम-घर
कुपिल रावण राजा सीतार वचने ॥ चालाइल रथखान त्वरित गगने

जटायुर सहित रावणेर युद्ध

जटायु नामेते पक्षी गरुड़ - नन्दन ॥ दूर हैते शुनिल से सीतार क्रन्दन
आकाशे उठिया पक्षी चतुर्दिके चाय ॥ देखिल, रावण राजा सीता ल'ये जाय
त्रिभुवने यत वीर, पक्षीर गोचर ॥ देखिया चिनिल पक्षी राजा लंकेश्वर
दुइ पाखा पसारिया आगुलिल बाट ॥ रावणेरे गालि दिया मारे पाख-साट
डाक दिया बले पक्षी, शोन् निशाचर ॥ आपन ना जानिस् रे पापी लंकेश्वर
कोन दोषे हरिलि श्रीरामेर सुन्दरी ॥ रघुनाथ नाहि हिंसे तोर लकापुरी

---

[1] क्रोध ।

सूर्पनखा कामातुर जाई * स्वयं नासिका कान नसाई
दसरथ सदा धर्म अति प्रीती * तासु बधू हरि तोहिं न भीती
वृद्ध, सिथिल तन, हे भुज - बीसा * फल सम नतरु विदारत सीसा
दो० ऊँचे उठि नभ, हेरि चहुं, लखेउ न कहुं रघुनाथ।
झपटि भिरेउ दसमाथ सन महाबली खगनाथ ॥ ३६ ॥
चोंचन, विपुल पंख - नख - घाता * रथ विखण्डि सारथी निपाता
गगन कठिन रन खग विस्तारा * रावन - तन बहु मास विदारा
विरथ लंकपति, रथ - ध्वज भंगा * विकल सकोपि प्रज्वलित अंगा
राखेउ सीय महीतल आनी * पुनि उड़ि चला व्योम[1] अभिमानी
वमन सँभारि, सुअवसर ताकी * वन सिय भाजि चली एकाकी[2]
चहुं गिरि शृंग, बीच वन भारी * बन भटकत विन पंथ विचारी
दारुन अति विलाप भयभीता * विकल गगन सुरगन लखि सीता
युद्ध - त्रस्त कछु, वृद्ध जटाई * तरु विराम जनि साँस समाई
खगपति सिथिल निरखि तरु-डारी * माया - बल रथ असुर सवाँरी
सिय धरि स्यन्दन[3] बेगि बढ़ावा * महा सुभट पुनि काम बनावा
पुनि जटायु विक्रम बल साधा * ठनेउ विषम रन युद्ध अगाधा
कस विहंग ! दसकन्ध बखाना * पर - हित तजत व्यर्थ निज प्राना

शूर्पनखा गिया छिल रमणेर साधे * नाक कान काटा गेल सेइ अपराधे
राजा दशरथ बड़, धर्म्मेते तत्पर * पुत्रवधू ताँहार हरिल नाहि डर
कि कव, ह'येछि वृद्ध टोट हैल भोता * नतुवा फलेर मत छिड़िनाम माथा
आकाश उठिया देखे राम बहु दूर * कामड़े आँचड़े तार रथ कैल चूर
पाखसाट मारे पक्षी आर देय गालि * रावणेर संगे युद्ध करे महाबली
आकाशे उठिया पक्षी छोंदिया से पड़े * रावणेर पृष्ठ मांस खान खान छिंड़े
छिड़िल ठोटेर घाय सारथिर मुण्ड * रथ-ध्वज भागिया करिल खण्ड खण्ड
अति व्यस्त दशानन ज्वले क्रोधानले * रथ हैते सीतारे राखिल भूमितले
भूमे राखि सीतारे से उठिल आकाशे * सवरेन वस्त्र सीता पलायन आशे
पलाइते जान सीता नाहि पान पथ * चर्तुद्दिके महावन वेष्टित पर्व्वत
भयेते कान्देन सीता करिया व्यग्रता * अन्तरीक्ष हाहाकार करेन देवता
जुझे पक्षिराज, किन्तु, अन्तरे तरास * बृक्ष डाले वैसे गिया घन बहे श्वास
बले टुटा पक्षिराजे देखिया रावण * माया करि रथखान करिल साजन
आर वार रावण सीतारे तोले रथे * चलिल से महाबली पूर्ण मनोरथे
आर वार जटायु साहसे करि भर * महायुद्ध करे पक्षी अति घोर तर
रावण बलिल, पक्षी, शुनह वचन * परलागि केन प्राण देह अकारन

---

१ आकाश २ अकेले ३ रथ।

बचु रे बचु, हे महिप - विहंगा * काटि पंख नतु करहुं अपंगा
यहि विधि दोउ अभिरत ललकारत * दोउ अति सुभट परस्पर मारत
मत्त मतंग न मानत हारी * एक न एकहिं सकहिं निवारी
रतन किरीट सीस दस धारे * चोंचन टूक - टूक करि डारे

दो० आशुतोष - तप - पुण्य बल, रहे कुशल दस माथ ।
तदपि सीस बिन केश करि, कुगति कीन खगनाथ ॥ ३७ ॥

सिय कर गहे, न सर सन्धानू * खग - रन भयेउ असुर अपमानू
रावन पुनि सिय धरनि उतारी * लै रथ वेगि भयेउ नभचारी
हनेउ बतीस सहस सर नाना * घायल खग तन आकुल प्राना
दुर्जय दसमुख ! चहुं जग ख्याती * निपट बिहंग युद्ध केहि भाँती
भिरेउ प्रानपन साहस ठाना * मग जोहत आवैं भगवाना
दनुज हेरि खग टरत न टारे * अर्द्धचन्द्र सर पंख निवारे
आहत धरनी गिरेउ जटाई * कहि बिलखत समीप सिय आई
तैं मम श्वसुर[1] ! बिसर्जेउ प्राना * निसिचर-कर[2] न प्रान मम त्राना
रावन हेतु जनम जग मोरा * अब न दरस रघुवंसकिशोरा
दरसन पाय लखन - रघुराई * तबहिं तात तव प्रान नसाई
वन प्रभु मिलहिँ, कहेउ समुझाई * हरन कीन सिय निसिचरराई

अतःपर पक्षिराज निज प्राण रक्ष * यावत् तोमार नाहि काटि दुइ पक्ष
दुइ जने घोर-रवे हैल गालागालि * दुइ जने युद्ध करे दोंहे महाबली
अंकुश न माने मत्त मातंग येमन * केह कारे करिते नारिल निवारण
रावणेर मुकुट से रत्नेते निर्म्माण * ठोंट दिया पक्षी ताहा करे खान खान
रावणेर पूर्व्वपुण्ये रहे दशमाथा * शिवेर प्रसादे ताहा ना हय अन्यथा
किन्तु केश छिड़िया करिल खण्ड खण्ड * निष्केश हइल रावणेर दशमुण्ड
पक्षियुद्धे ताहार हइल अपमान * धरियाछे सीतारे केमने छाड़े बाण
आर बार सीतारे राखिल भूमि तले * रथ शुद्ध रावण उठिल नभस्तले
बत्रिश हजार बाण रावण एड़िल * सर्व्वांगे फुटिल, पक्षी कातर हइल
दुर्जय रावण राजा त्रिभुवने जिने * कि करिते पारे तार पक्षीर पराने
रामेर अपेक्षा करि रहे पक्षिवर * प्राणपने युझिल साहसे करि भर
रावण देखिल, पक्षी बले नाहि टुटे * अर्द्धचन्द्र बाणे तार दुइ पाखा काटे
भूमिते पड़िया पक्षी करे छट्फट् * आसिया कहेन सीता पक्षीर निकट
आमा लागे श्वशुर जे हाराले जीवन * रावणेर हाते आछे आमार मरण
आमार हइल जन्म रावण कारण * आर ना पाइब श्री रामेर दरशन
दर्शन पाइबे जबे श्रीराम-लक्ष्मण * तावत् रहिबे तव एइत जीवन
प्रभुरे देखह यदि वनेर भितर * बलिह, तोमार सीता हरे लंकेश्वर

१ दशरथ-मित्र होने से जटायु भी श्वसुर के समान २ रावण के हाथ से ।

सागर पार लंक रजधानी ※ हरेउ गगन-पथ जहँ सियरानी
बिहग[1] अपंग दसा निज बरनी ※ लखेउ सकल मम पौरुष-करनी
लखन-राम करिहैं तव त्राना ※ तजहु रुदन आवइँ भगवाना
उभय कथन सुनि हँसेउ दसानन ※ रथ लखि, सीय भगेउ दुखदारुन
पुलकि बहोरि रथहिं बैठारी ※ रुदन-सीय सुनि शिलन दरारी[2]

दो० जनि भरोस, जनि आस कहुं, सियहिं विपुल संताप।
दीन वेष, तन छीन अति, बहुविधि दुसह विलाप ॥ ३८ ॥

फँसी गरुड़ मुख साँपिनि जैसे ※ क्रन्दन करुण अकथ सिय तैसे
सीता-कुवचन धरत न काना ※ रथ चढ़ि नभ गति-पवन पयाना
खग-रन लस्त-पस्त दसमाथा ※ उर भय ! मिलि न जायँ रघुनाथा
सरपट भजेउ न साँस समाई ※ तासु वेग लखि पवन लजाई

सुपार्श्व पक्षी द्वारा रावण का अवरोध

रामहिं चीन्ह[3] तजति वैदेही ※ भूषन-सुमन, गगन छवि देही
गर-आभरन सीय तजि दीन्हा ※ सो गिरि धरनि सुहावनि कीन्हा
जनकलली मनि मुक्ता हारा ※ हिमगिरि सरसति सुरसरि धारा
राम ! राम ! हा राम ! विलापू ※ सुरगन गगन विपुल संतापू
कहाँ लखन ! कहँ छवि रघुनन्दन ※ इक छन मिलइँ अभागिनि दरसन

सागरेर पारे घर बैसे लंकापुरी ※ अन्तरीक्ष ल'ये गेल तोमार सुन्दरी
जटायु बलेन, सीता, नाहि मोर हात ※ यत युद्ध करिलाम, देखिले साक्षात्
आमार वचन शुन ना कर क्रन्दन ※ तोमा उद्धारिबे माता, श्रीराम-लक्ष्मण
उभयेर कथा शुनि दशानन हासे ※ रथ देखि जानकी काँपेन महात्रासे
पुनर्व्वार सीतारे तुलिल रथोपरे ※ सीतार विलाप शुनि पाषाण विदरे
अपार भाविया सीता नाहि पान कूल ※ अति-कृशा दीनवेशा कान्दिया आकुल
सीतार विलाप कत लिखिबे लेखनी ※ गरुडेर मुखे येन पड़िल सापिनी
सीता यत गालि देन, रावण ना शुने ※ रथे चड़ि वायु वेगे उठिल गगने
रावण पक्षीर युद्धे हैल लण्ड-भण्ड ※ कि जानि आसिया राम काटिबेन मुण्ड
एइ भये रावण पलाय ऊर्द्ध्व श्वासे ※ तार सह जाइते ना पारिल बातासे

सुपार्श्व-पक्षि-कर्त्तृक रावणेर लंका-गमने बाधा प्रदान

रामे जानाइते सीता फेलेन भूषण ※ सीतार भूषण पुष्पे छाइल गगन
आभरण गलार फेलेन सीता देवी ※ से भूषणे सुशोभिता हइल पृथिवी
छिड़िया फेलेन मणि-मुकुतार झारा ※ हिमालय हैते येन पड़े गंगाधारा
श्रीराम बलिया सीता करेन क्रन्दन ※ अन्तरीक्ष हाहाकार करे देवगण
जानकी बलेन, कोथा श्रीराम-लक्ष्मण ※ ए अभागिनीरे देखा देह एइक्षण

१ पक्षी-जटायु २ चट्टानों में दरारें पड़ती थीं ३ निशानी।

ऋष्यमूक गिरि शृंग उतंगा[1] * तहँ सुग्रीव बसत प्रिय संगा
जामवन्त भल्लुक बलशीला * हनुमत् पुनि गवाक्ष, नल, नीला
खग-सम ते सोहत गिरि माहीं * कपिगन मम सँदेस तुम पाहीं
वनिता-राम, नाम सिय अहही * भूषन-वसन चीन्ह तजि कहही
दरसन मिलैं राम मनभावन * कहेउ हरन-सिय किय खल रावन
सुनि हनुमान सुकण्ठहिं[2] टेरी * धरि लंकेश मुक्ति सिय केरी
सो मति परी दशानन काना * राम त्रास ! शठ वेगि पयाना

दो० लिये मैथिली गमन किय, दच्छिन दिसि दसकन्ध ।
मारग भेंट सुपार्श्व सों भई-दैव-दुर्बन्ध[3] ।। ३९ ।।

सुत-सम्पाति भतीज-जटाई * भट सुपार्श्व तहँ परेउ लखाई
बृद्ध पिता हित जतन अहारा * करत, निवसि सो विन्ध्य पहारा
विदित सुपार्श्व न रावन-करनी * मारि जटायु गिरायेसि धरनी
जो जानत जटायु जग नाहीं * खग रावनहिं हनत छन माहीं
शूकर महिष हस्ति वन पावै * महसन[4] दाबि चोंच महँ लावै
कहुँ जल जन्तु सिन्धु महँ चापै * सागर तीनि भाग जल छापै
रिक्त[5] भाग इक सिंधु-तरंगा * दुर्जय बिकटाकार विहंगा
बन्धु-जटायु जेठ सम्पाती * नन्दन तासु, गरुड़ कर नाती[6]

ऋष्यमूक नाम गिरि अति उच्चतर * पञ्चपात्र सहित सुग्रीव तदुपर
नल नील गवाक्ष ओ पवननन्दन * जाम्बवान सुग्रीव बसेछे छयजन
पक्षी येन बसियाछे पर्व्वतेर माझ * डाकिया बलेन सीता शुन कपिराज
श्रीरामेर नारी आमि सीता नाम धरि * अंगेर भूषण फेलि गात्रेर उत्तरी
रामेर सहित यदि हय दरशन * ताँहाके कहिउ, सीता हरिल रावण
हेनकाले सुग्रीवेरे बले हनुमान * सीता राखि रावणेर करि अपमान
एइ युक्ति दशानन शुनिल आकाशे * सीता ल'ये पलाइल श्रीरामेर त्रासे
सीता ल'ये दक्षिणेते चलिल रावण * दैवे पथे सुपार्श्वेर सह दरशन
सम्पातिर नन्दन, सुपार्श्वे नाम तार * विन्ध्याचले थाकि भक्ष्य योगाय पितार
जटायुर भ्रातपुत्र सम्पातिनन्दन * से ना जाने जटायुरे मारिले रावण
जटायुर मरण सुपार्श्व यदि जाने * रावणेरे मारित से दिन सेइ क्षणे
शूकर महिष हस्ती यत पाय वने * सहस्र-सहस्र जन्तु ठोंटे करि आने
सागरेर जल-जन्तु यखन से धरे * तिन भाग जल पक्षे आच्छादन करे
सागरेर एक भाग जलमात्र रय * एमन वृहत्काय विहंग दुर्ज्जय
जटायुर भ्रातुष्पुत्र गरुड़ेर नाति * अन्तरीक्षे उड़िया आइसे शीघ्रगति

१ ऊँचे २ सुग्रीव से ३ दैवी बाधा ४ हजारों ५ खाली ६ पौत्र।

उड़ि सवेग नभमण्डल धावा * पंखन हलत बवण्डर छावा
लखि ससंक कौतुक दसमाथा * उत सिय रुदन 'राम-रघुनाथा !'
सुनि खग गर्जि-तर्जि ललकारा * रावन - पथ युग[1] पंख पसारा
तब लौं भई गगन सुरबानी * दसमुख हरन कीन सियरानी
कोपानल सुनि भयेउ बिहंगा * लीलन चलेउ रथहिं इकसंगा
स्यन्दन मध्य सियहिं तहँ पेखी * नारी - वध - भय पाप बिसेषी
पंखन करि स्यन्दन अवरोधू * करत विनय लखि, दनुज, विरोधू
रावन नाम, लंक मम धामा * तव प्रति मम न आचरन वामा

दो० खर-दूषन-रिपु, भगिनि किय नासा-श्रवन विहीन।
राम किये अपमान - वश, तासु तिया हरि लीन ॥ ४० ॥

दुर्जय ! तव विक्रम जग ख्याती * खगपति ! तुम पहँ मैं प्रणिपाती[2]
छमा सुपार्श्व कीन रथ त्यागी * भजेउ लंकपति देर न लागी
जानि न सकी कथा यह सीता * निरखि अचेत सिन्धु भयभीता
लखि पयोधि[3] दसकंध हुलासू * उदधि[3] - उलंघन कीन प्रयासू
सिय सोचत लखि सिंधु अपारा * राम कृपालु होहिं किमि पारा
संकित सिय नतमुखी बेहाला[4] * उतरेउ लंक तबहिं दसभाला

पाखसाट मारे पाखी, झड़ येन बहे * त्रासेते रावण माथ तुलि ऊर्द्धे चाहे
'श्रीराम' बलिया सीता करेन क्रन्दन * शुनिल से पक्षिराज उपर गगन
पाखसाट मारे पाखी तर्ज्जे गर्ज्जे डाके * दुइ पक्ष दिया रावणेर रथ टाके
तार प्रति डाक दिया बले देवगण * सीतारे हरिया ल'ये जाय दशानन
देवतार वाक्य शुनि पक्षी कोपे ज्वले * रथ शुद्ध गिलवारे दुइ ठोंट मेले
रथ मध्ये देखे पक्षी आछेन जानकी * भावे नारी हत्या करि हब कि नारकी
रथखान बद्ध करि राखे पाखा दिया * रावण बलिल तारे विनय करिया
रावण आमार नाम बसति लंकाय * तव सह शत्रुता ना आछये आमाय
करियाछे राघव आमार अपमान * सहोदरा भगिनीर काटे नाक - कान
भाइ खर-दूषणेर राम महा-अरि * सेइ क्रोधे हरिलाम रामेर सुन्दरी
त्रिभुवने ख्यात तुमि, विक्रमे दुर्ज्जय * तव ठाँइ पक्षिराज, मानि पराजय
सुपार्श्व करिया क्षमा छाड़िल तखन * सेइ क्षणे रथ ल'ये चलिल रावण
एइ सब कथा किछु न जानेन सीता * समुद्र देखिया सहा भयेते मुर्च्छिता
देखिया समुद्रतीर रावण उल्लास * जलनिधि उत्तरिया करिया प्रयास
भावेन जानकी देवी, सागर अपार * कृपार आधार राम किसे हवे पार
अधोमुखे जानकी कान्देन आशंकाय * उत्तरिल दशानन तखन लंकाय

१ दोनो २ चरणों की शरण में हूँ ३ समुद्र ४ व्याकुल।

सीता-सहित रावण का लंका-गमन

'रथ तजि कित राखउँ बैदेही' * लंकेश्वर विचार मन एही
लखन शत्रु पुनि रिपु रघुराई * निसि न नींद बिन युगुल नसाई
नींद न भूख, सदा उर संका * कहँ केहि विधि राखहिं सिय लंका
सियहिं बुझावत, सुनु अतिरूपा * मुख उठाय लखु लंक अनूपा
रवि - शशि सदा रहत सेवकाई * आयसु बिना न कोउ नियराई
सागर अगम मध्य गढ़ लंका * आवत निकट सुरासुर संका
देव - दनुज दुहिता गृह मोरे * सेवइँ, सुमुखि ! सदा पग तोरे
मम भण्डार विपुल, नाना धन * तव आयसु सिय ! सकल समर्पन
धरि सिय-चरन, विकल मुख बानी * चन्द्रमुखी ! करु कोप न रानी
तुम स्वामिनि, सेवक दसमाथा * अन्तःपुर चलि करहु सनाथा

सो० सुनि रावन के बैन, उर उपजेउ सिय क्रोध अति ।
मुख घुमाय, तर नैन, कहत सिथिल-स्वर जानकी ।। ४१ ।।

आन न ज्ञान, ध्यान मम प्राना * मम आराध्य राम भगवाना
सुनि सिय-वचन सिथिल दसकंधर * चेरिन कीन नियुक्त सीय तर
वन अशोक राखेउ तहँ सीता * दासिन घिरी अतिव भयभीता
सूर्पनखा कटु वचन उचारी * बधहुँ कण्ठ धरि नखन विदारी
तव देवर भंगेउ मम अंगा * तेहि प्रकोप तव मृत्यु प्रसंगा

सीताके लइया रावणेर लंकाय गमन

रथ हेते सीता के नामाय लंकेश्वर * 'कोथाय राखिब' बलि चिन्तित अन्तर
शत्रुता हइल राम-लक्ष्मणेर सने * निद्रा नाहि यावत ना मारि दुई जने
रावणेर नाहि निद्रा नाहिक भोजन * सीतारे राखिब कोथा भावे सर्व्वक्षन
सीतारे प्रबोध वाक्ये कहे दशानन * लंकापुरी देखि सीता, तुलिया वदन
चन्द्र-सूर्य्य दुयारे आसिया सदा खाटे * मोर आज्ञा-बिना केह ना आसे निकटे
चारभिते सागर मध्येते लंकागड़ * देव दैत्य न आइसे लंकार नियड़
देव-दानवेर कन्या आछे मोर घरे * दासी करि राखिब तोमार से सवारे
नाना धनेपूर्ण देख आमार भाण्डार * आज्ञा करि सीता देवि, सकलि तोमार
सीतार चरणे पड़े करिया व्यग्रता * कोप ना करिह मोरे चन्द्रमुखि सीता
तोमार सेवक आमि तुमि तो ईश्वरी * आज्ञा करि सीता ल'ये जाइ अन्तःपुरी
रावणेर वाक्ये सीता कुपित अन्तरे * विमुखी हइया बलिलेन धीरे धीरे
राम ध्यान राम प्राण राम से देवता * रामविना अन्यजने नाहि जाने सीता
शुनिया सीतार वाक्य निरत रावण * ताँर काछे नियुक्त करिल चेड़ीगण
सीतारे राखिल ल'ये अशोक कानने * सीतारे बेड़िले गिया यत चेड़ीगने
शूर्पनखा आसि बले निष्ठुर वचन * गले नख दिया तोर बधिब जीवन
काटिल देवर तोर मोर नाक कान * सेइ कोपे आज तोर बधिब परान

गर्जत मुख विरूप यहि अन्तर * सकत न करि कछु भय-दसकंधर
वन अशोक दृग सजल सशोका * उर सिय राम सदा अवलोका

देवताओं द्वारा सीता की आहार-व्यवस्था

सुरगन विकल विपति सिय केरी * कहत विरञ्चि सुरपतिहिं टेरी
लंका सिय दस मास निवासू * करैं कवन विधि करि उपवासू[1]
सीय-मरन सुर-काज न सीझै[2] * लै परमान्न जाय सिय दीजै
गमने इन्द्र सुनत विधि - वानी * जहँ अशोक - कानन सियरानी
मैं इत इन्द्र, सती ! धरु धीरा * वेगि आय प्रभु मेटइँ पीरा
मृग आखेट लखन - श्रीरामा * छल दसकंध, शून्य तव धामा
सेतु ससैन बाँधि करि पारा * हनहिं दनुज पुनि तव निस्तारा
रहहु शोक तजि धैर्य समेतू * यहु परमान्न सिया तव हेतू
लंक दनुज - मय ! प्रभवति सीता * प्रभु सुरपति ! किमि होय प्रतीता[3]

दो० सिय - संका समुचित समुझि, सहसविलोचन रूप ।
धरेउ इन्द्र, लखि सीय कहँ, भइ प्रतीत अनुरूप ॥ ४२ ॥

सुधा सरिस परमान्न प्रकासा * सेवत जासु न क्षुधा - पिपासा
रामहिं सिय नैवेद्य लगाई * लीन प्रसाद, तृप्ति तिन आई

खान्दा मुखे गर्ज्जे खांदी समय अन्तरे * रावणेर डरे किछु बलिते न पारे
सशोक थाकेन सीता अशोक कानने * हृदये सर्व्वदा राम सलिल नयने

देवगण कर्त्तृक सीतार आहारेर व्यवस्था

जानकीर दुखे दुखी सदा देव गण * इन्द्रेरे डाकिया ब्रह्मा बलेन वचन
लंकामध्ये थाकिबेन सीता दशमास * एहादिने केमने करेन उपवास
जानकी मरिले सिद्ध ना हइबे काज * एइ परमान्न ल'ये जाउ देवराज
ब्रह्मार बचने इन्द्र गेलेन तखन * जानकी आछेन यथा अशोक कानन
बासव बलेन सीता ना भाविह चिते * आमि इन्द्र आसियाछि तोमा संभाषिते
श्रीराम-लक्ष्मण गेल मृग मारिवारे * हरिल तोमाके से रावण शून्य घरे
सागर बाँधिया रामसैन्य करि पार * रावणे मारिया तोमा करिबे उद्धार
शोक परिहर सीते, स्थिर कर मन * परमान्न आनियाछि तोमार कारण
जानकी बलेन लंका निशाचरमय * इन्द्र यदि हउ, तबे देह परिचय
सीतार वचने इन्द्र भाविलेन मने * सहस्रलोचन हइलेन तत क्षणे
इन्द्रके देखेन सीता सहस्रलोचन * जन्मिल ताहार मने प्रतीति तखन
दिलेन सीताके इन्द्र परमान्न सुधा * याहार भक्षणे हरे तृष्णा आर क्षुधा
आगे परमान्न देन रामेर उद्देशे * आपनि भक्षण सीता करिलेन शेषे

---

१ लंघन २ काम नहीं बनेगा ३ विश्वास हो कि तुम इन्द्र हो ।

अमिय - पान सों सिय सन्तापा * दूरि न प्रभु - बिरहानल - तापा
सुरपति कहेउ सुधा नित लाई * देहुँ, धीर धरु हे सिय माई
विदा महेन्द्र[1] लीन कहि एही * इत दुख दुसह नित्य वैदेही
इत अशोक वन सीय विरामा * सुमिरत सदा राम अभिरामा
शोक अरण्य राम जेहि भाँती * कवि विषण्ण बरनत बहुभाँती
प्रमुख ग्राम फूलिया निवासू * राम - कथा कृतिवास हुलासू

श्रीराम द्वारा विलाप और सीता की खोज

कर सर - चाप राम गृह ओरा * मग तहँ मिलत अपशकुन घोरा
दहिने जम्बुक[2] बाम भुजंगा[3] * धरकत हीय, कम्प प्रभु - अंगा
मम अनुरूप दनुज स्वर पाये * तजि घर सून[4] लखन मनु धाये
छल - मारीच लखन भरमाये * सिय अकेलि तजि अन्त सिधाये ?
दुख पर दुख विरञ्चि सिर डारा * दिय विमातु ! जस लिखेउ ललारा
हे सुरगन ! विनती मम एही * करहु आज रखा - वैदेही
आकुल राम, शोच उर भारी * आवत लखन प्रतच्छ निहारी
विस्मित व्यस्त उपज हिय कंपन * लखनहिं पुनि बूझत रघुनन्दन

दो० कस अकेल तजि सीय वन, तव आगम हे तात ! ।
लखत, हरन-सिय सफल भइ, असुर अपावन घात ।। ४३ ।।

पायस-भक्षणे तृप्ति हबे कि ताँहार * रामेर विरहानल ज्वले अनिवार
महेन्द्र बलेन, सीता, न हउ विकल * प्रतिदिन जोगाइब आमि सुधाफल
सीतारे आश्वास दिया जान पुरन्दर * अन्तरे जानकी दुःख पान निरन्तर
लंकाते रहेन सीता अशोक कानने * हृदये श्रीराम मूर्त्ति सलिल नयने
कृत्तिवास पण्डितेर फाटिछे परान * अरण्येते गान राम-शोकेर निदान
स्थानेर प्रधान से फुलियार निवास * रामायण गान द्विज, मने अभिलाष

श्रीरामचन्द्रेर विलाप ओ सीतार अन्वेषण

हाते धनुर्व्वाण राम आइसेन घरे * पथे अमंगल यत देखेन गोचरे
बामे सर्प देखिलेन शृगाल दक्षिणे * तोल पाड़ा करेन श्रीराम कत मने
विपरीत ध्वनि करिलेक निशाचर * लक्ष्मण आसये पाछे शून्य राखि घर
मारीचेर आह्वाने कि लक्ष्मण भुलिवे * सीतारे राखिया एका अन्यत्र जाइबे
दुःखेर उपरे दुःख दिबे कि विधाता * या'छिल कपाले ताहा दिलेन विमाता
बलेन श्रीराम शुन सकल देवता * आजिकार दिने मोर रक्षा कर सीता
येमन चिन्तेन राम घटिल तेमन * आसिते देखेन पथे सम्मुखे लक्ष्मण
लक्ष्मणेरे देखिया विस्मय मने मानि * व्यस्त ह'ये जिज्ञासा करेन रघुमणि
केन भाइ, आसितेछ तुमि ये एकाकी * शून्यघरे जानकीरे एकाकिनी राखि
प्रमाद पाड़िल बुझि राक्षस पातकी * ज्ञान हय भाइ हाराइलाम जानकी

---

१ इन्द्र २ सियार ३ सर्प ४ अकेला ।

आयेउँ सौंपि तुमहिं प्रिय थाती[1] * तात कीन्ह इच्छा केहि भाँती
कस अन्यथा कीन मम बानी * अब धौं मिलन कठिन सियरानी
का गति अहा लखन मम होई * केहि सन किमि बरनउँ दुख रोई
कनक - पूतरी मम अतिरूपा * परी बन्धु ! केहि फन्द अनूपा
दुर्जेय दण्डक बन भय घोरा * असुर, हिंस पशु बहु चहुं ओरा
केहि खन कीन्ह उपस्थित बाधा * दनुज दुष्ट मम केहि अपराधा
बरजेउ मुनिन सदा यहि कानन * दानव दुष्ट विपुल भय कारन
तात ! पूर्वापर[2] पर भल ज्ञाना * तबहुं विवेक न सुधि नहिं ध्याना
तव न दोष, भावी प्रतिकूला * विधि अच्छर जनि मम अनुकूला
मो मन सूझ बूझ अधिकाई * दैव - योग सो आजु नसाई
मायामृग छलि बन लै गयऊ * मम सर लगत असुर सो भयऊ
मूषल विकट दहिन कर भारी * लखहु मरीच धरनि भयकारी
यहि विधि कहत बन्धु दोउ जाहीं * अतिशय वेग, अन्त मन नाहीं[3]
तब लौं कुटी - द्वार नगिचाये * सिय, पुनि सिय, पुनि-पुनि गोहराये
कतहुँ न सीय, सून लखि धामा * भये अचेत धनुर्धर रामा
कौतुक लखि न तात मोहिं धीरा * बिन सिय इत मैं तजहुँ सरीरा

आइलाम तोमाय करिया समर्पन * राखिया आइले कोथा मम स्थाप्य धन
मम वाक्य अन्यथा करिले केन भाइ * आर बुझि, सीतार साक्षात् नाहिं पाइ
कि हइल, लक्ष्मण ! कि हइल आमारे * ये दुःखे दुःखित आमि कहिब काहारे
शुनरे लक्ष्मण, सेइ सोनार पुतलि * शून्यघरे राखिया काहारे दिलि डालि
दुरन्त दण्डकारण्य महा भयंकर * जन्तु हिंस्र कत-शत कत निशाचर
कोन दण्डे कोन दुष्ट पाड़िबे प्रमाद * कि जानि राक्षसगणे साधिवेक वाद
एइ बने यत दुष्ट राक्षसेर थाना * मुनिगण सकले करेन सदा माना
तोमार लक्ष्मण पूर्व्वापर आछे जाना * तथापि लक्ष्मण ना करिले विवेचना
तोमार कि दिव दोष मम कर्म्म-फल * येमन विधिर लिपि घटिबे सकल
आमार अधिक भाइ, तव बुद्धिबल * कर्म्मदोष हेन बुद्धि गेल रसातल
माया मृग छले मोरे लइल कानने * हेर, सेइ राक्षस पड़ेछे मोर बाणे
भयंकर विकट मुषल डानि हाते * देख भाइ, मारीच पड़िया आछे पथे
एइमत कहिते कहिते दुइ भाइ * वायुवेगे चलिलेन अन्य ज्ञान नाइ
उपनीत हइलेन कुटीरेर द्वारे * सीता-सीता बलिया डाकेन बारे-बारे
शून्य घरे देखेन, न देखेन जानकी * मूर्च्छापन्न अवसन्न श्रीराम धानुकी
श्रीराम बलेन भाइ, एकि चमत्कार * ना देखिले सीता प्राण ना राखिब आर

१ धरोहर २ कब क्या अधिक आवश्यक है इसका विवेक ३ किसी दूसरी ओर ध्यान नहीं।

हो० हाय ! लखन ! घटना घटित जो मोरे-उर संक ।
चोर दनुज सिय हरन किय, पाय अकेलि, निसंक ॥ ४४ ॥

वन-उपवन इत-उत तरु-मूला * हेरत[1] सिय प्रभु, दारुन सूला
कबहुँ लखन बहोरि रघुबीरा * पुनि पुनि लखत गौतमी[2] तीरा
गिरि कन्दरा मुनिन - वन माहीं * ठौर - ठौर सिय खोजत जाहीं
शत - शत बार जात चहुँ धाई * तबहुँ न सिय-दरसन कहुँ पाई
नयन वारि[3] रघुनाथ विलापा * रोवत वन - खग - पशु संतापा
राम - कुटी मुनिगन जे आवहिं * धीरज दै बहु विधि समुझावहिं
मुनिन सीख प्रभु मनहिं न माना * गुनत सदा उर सिय - गुनगाना
धरनि पलोटत सिय गोहराई * अंकहिं लखन लेत रघुराई
रामहिं धीर न, पुनि-पुनि शोकू * प्रभुहिं विलोकि विकल सुरलोकू
विलपत कहत लखन सन एही * तात ! न छन बिसरत वैदेही
कवन उपाय लखन ! कहँ जाई * केहि विधि सोध, सीय कहँ पाई ?
सिय लुकान[4], आवत मन एही * बूझहिं लखन कितै वैदेही
कै विन कहे संघ मुनि - नारी * गई कतहुँ मनु जनकदुलारी
कमलकुञ्ज भरमत धौं सीता * गोदावरि - तट जहाँ पुनीता

तखनि बलिनु भाइ सीता नाइ घरे * शून्य घरे पाइया हरिल निशाचरे
प्रतिवन प्रतिस्थान प्रति - तरुमूल * सर्व्वत्र देखेन राम हइया व्याकुल
पाति पाति करिया खोजेन दुइवीर * उलटि पालटि यत गोदावरी तीर
गिरि गुहा देखेन, मुनिर तपोवन * नाना स्थाने करेन सीतार अन्वेषण
एक बार येखाने करेन अन्वेषण * पुनर्व्वार यान तथा सीतार कारण
एइ रूपे एक स्थाने जान शतबार * तथापि श्रीराम देखा ना पान सीतार
कान्दिया विकल राम जले भासे आँखि * रामेर क्रन्दने कान्दे वन्य-पशु-पाखि
रामेर आश्रमे आसि यत मुनिगण * रामेरे कहेन कत प्रबोध-वचन
उपदेश वाक्य नाहि मानेन श्रीराम * सदा मने पड़े से सीतार गुणग्राम
'सीता सीता' बलिया पड़ेन भूमितले * करेन लक्ष्मण वीर श्रीरामेर कोले
रघुवीर नहे स्थिर जानकीर शोके * हाहाकार बार बार करे देव लोके
विलाप करेन राम लक्ष्मणेर आगे * ना भुलिते पारि सीता, सदा मने जागे
कि करिब, कोथा जाब अनुज लक्ष्मण * कोथा गेले पाब सीता कर निरूपण
मन बुझिवारे बुझि आमार जानकी * लुकाइया आछेन लक्ष्मण, देख देखि
बुझि, कोन मुनिपत्नी-सहित कोथाय * गेलेन जानकी नाहि जानये आमाय
गोदावरी तीरे आछे कमल-कानन * तथा कि कमलमुखी करेन भ्रमन

१ खोजते फिरते थे २ गोदावरी नदी ३ आँसू ४ छिप गई है ।

कमला मनौ कमलमुखि पाई * कमलकुञ्ज तेहि लीन लुकाई[1]
शशि-छबि-भरम राहु कृत ग्रासा * कीन्ह शांत चिरकाल - पिपासा
दो० राज-हीन लखि धरनि मोहिं, कीन चहेउ श्री-हीन।
मम लक्ष्मी सीता, धरनि, निज-दुहिता[2] हरि लीन ॥ ४५ ॥
मैं श्री-हीन, दुसह दुख शूला * आजु विमातु - मनोरथ फूला
सौदामिनि[3] समात घन माहीं * तिमि अदरस सिय कानन माहीं
कनकलता छबि वन वैदेही * रुचिकर केहिं न ? उजारेसि[4] तेही
दिवस दिवाकर निसि शशि-तारा * हरि तम[5] करत जगत उजियारा
मम उर तिमिर[5] न सकहिं निवारी * विन सिय दिनहुं सकल अँधियारी
दसौ दिसा सूनी विन सीता * मम मन धरत कतहुं जनि प्रीता
सब सुख मूरि[6] ज्ञान मम ध्याना * मणि विन फनि[7], विन सिय निष्प्राना
खोजहु लखन कतहुं वन माहीं * विन सिय प्रान कुशल मम नाहीं
पञ्चवटी ! तैं पावन धामा * यहि कारन इत लीन विरामा
सुफल तासु भल मोहिं दिखावा * तेहि तपवन सिय आजु गवाँवा
लता विटप खग मृग पशु, कानन * सिय शशिमुखी - हरन को कारन
विलपत वन भरमत रघुराई * सिय भूषन पथ परेउ लखाई

पद्मालया पद्ममुखी सीतारे पाइया * राखिलेन बुझि पद्मवने लुकाइया
चिर दिन पिपासित करिया प्रयास * चन्द्रकला भ्रमे राहु करिल कि ग्रास
राज्यच्युत आमाके देखिया चिन्तान्विता * हरिलेन पृथिवी कि आपन दुहिता
राज्यहीन यद्यपि हयेछि आमि वटे * राजलक्ष्मी तथापि छिलेन सन्निकटे
आमार से राजलक्ष्मी हाराइल वने * कैकेयीर मनोभीष्ट सिद्ध एत दिने
सौदामिनी येमन लुकाय जलधरे * लुकाइले तेमन जानकी वनान्तरे
कनक-लतार प्राय जनक दुहिता * वने छिल, के करिल तारे उत्पाटिता
दिवाकर निशाकर दीप्त तारागण * दिवानिशि करितेछे तमो निवारण
तारा न हरिते पारे तिमिर आमार * एक सीता विहने सकलि अन्धकार
दशदिक् शून्य देखि सीता अदर्शन * सीता विना किछु नाहि लय मम मन
सीताध्यान, सीताज्ञान, सीताचिन्तामणि * सीता विना आमि येन मणिहारा फणी
देखरे लक्ष्मण भाइ, कर अन्वेषण * सीतारे आनिया दिया बाँचाउ जीवन
आमि जानि पञ्चवटी तुमि पुण्यस्थान * तेइ से एखाने करिलाम अवस्थान
ताहार उचित फल दिले हे आमारे * शून्य देखि तपोवन, सीता नाहि घरे
शुन पशु-मृग-पक्षि, शुन वृक्ष-लता * के हरिल आमार से चन्द्रमुखी-सीता
कान्दिया कान्दिया राम भ्रमेन कानन * देखिलेन पथ मध्ये सीतार भूषण

१ छिपा लिया २ पृथ्वी ने अपनी कन्या को ३ बिजली ४ उजाड़ दिया ५ अँधेरा
६ सञ्जीवनी, अमृत ७ सर्प।

लखि रथ-शिखर भंग रथ चाका * विविध खण्ड रथ कनक पताका
मनि मुक्ता पुनि कञ्चनहारा * बिखरे चहुं रघुनाथ निहारा
लखन लखहु लच्छन कछु एही * खोजइँ इत निश्चय वैदेही
सम्मुख अति उतंग[1] गिरिराई * मनहुं धरेसि ससिबदनि[2] लुकाई

दो० तात ! निरखु यमदण्ड सम, मम सायक - कोदण्ड ।
लखत समुख तव महारन, करहुं विपुल गिरि खंड ॥ ४६ ॥

बोले लखन न हियँ केहु रूपा * सिय-निवास गिरि घोर विरूपा
अनुचित कोप वृथा गिरि-भंगा * नभ-पथ कोउ गमनेउ सिय-संगा
बहुविधि लखन-प्रबोध अकामा[3] * विकल अधीर कहेउ पुनि रामा
विषधर स्वर धनु धरत प्रतञ्चा * दहन विश्व, यहु वृथा प्रपञ्चा
प्रभु-सर जारि करै जग-नासा * दच्छ यज्ञ जिमि शंभु विनासा
कहेउ लखन प्रभु चरनन धाई * कछु मम विनय सुनहु रघुराई
रची सृष्टि जग सिरजनहारे * उचित न नाथ तासु संहारे
सकुल पातकिहिं समुचित नासू * तासु पाप किमि अन्य-विनासू
प्रभु सर तजत न जग-निस्तारा * होई भसम विश्व जरि छारा
सीता कहँ[4] ? दोउ मिलि मन देहीं * धरि उर धीर शोध-सिय लेहीं

देखिलेन, प'ड़े आछे भग्न रथ चाका * कनक रचित आछे पतित पताका
रथ चूड़ा पड़ियाछे आर तार जाठि * मणि-मुक्ता पड़ियाछे सुवर्णेर काँठि
श्रीराम बलेन देख भाइ रे लक्ष्मण * एइ खाने करह सीतार अन्वेषण
सम्मुखे पर्व्वत बड़ अति उच्चकोटि * लुकाइया पर्व्वत राखिल चन्द्रमुखि
यमदण्ड सम आमि धरि धनुर्व्वाण * पर्व्वत काटिया आजि करि खान खान
महायुद्ध हइयाछे करि अनुमान * लक्ष्मण लक्ष्मण तार देख विद्यमान
लक्ष्मण बलेन, इहा नहे कोन मते * सीता केन रहिबेन ए घोरे पर्व्वते
पर्व्वत काटिते प्रभु चाह अकारण * सीता ल'ये अन्तरिक्ष गेल कोनजन
नानामते श्रीरामे बुझान लक्ष्मण * शोकाकुल श्रीराम ना मानेन वचन
धनुके दिलेन गुण सर्प येन गर्ज्जे * बलेन, दहिब विश्व आछे कोन कार्य्ये
विश्व पुड़ाइते राम पूरेन सन्धान * दक्ष-यज्ञ-विनाशे येमन महेशान
लक्ष्मण चरणे धरि करेन मिनति * एक कथा अवधान कर रघुपति
सृष्टिकर्ता सृष्टि करिलेन चराचर * केन सृष्टि नष्ट कर देव रघुवर
सबंशे मरिबे, ये हइबे अपराधी * अपराधे एकेर अन्येर नाहि बधि
तोमार वाणेते कारो नाहक निस्तार * अकारणे केन प्रभु पोड़ाउ संसार
कोथाय आछेन सीता करह विचार * दुइ भाइ अन्वेषण करिब सीतार

---

१ ऊँचा २ चन्द्रमुखी सीता ३ व्यर्थ ४ कहाँ है !

लखि गिरिशृंग तपोवन ग्रामा * चहुँ नद नदी सरोवर धामा
दरस न जो सीता कर पाई * मन भावै कीजिय रघुराई
सुनि निषंग[1] सर लिय रघुनाथा * हेरत सीय चले दोउ साथा
थम-थम चलत करत विश्रामा * मत्त प्रलाप करत बहु रामा
जल थल नभ सिय कर उद्देसू[2] * वन-वन फिरत सहत बहु क्लेसू
मिलत पन्थ कोउ पूछत एही * तुम कहुं लखी जाति वैदेही

दो० धन्य धन्य गिरि विटप वन ! मो पर होहु सहाय ।
सिय-संवाद सुनाय मोहिं, लीजिय प्रान बचाय ॥ ४७ ॥

चक्रवाक और चक्रवाकी को श्रीराम का अभिशाप

चले दूरि कछु राजिवनयना[3] * चक्रवाक लखि पूछत वयना
केहुँ लै जात लखी वैदेही * सुनि बिहंग बोलत विधि एही
वैदेही सों निपट अजाना * सुनहिं, मर्म खुलि करहु बखाना
सुनि खग - वचन कही मृदुवानी * जनकलली तिय मम सियरानी
उपवन तजि, गमनेउँ मृग हेतू * लौटि न पुनि सिय लखेउँ निकेतू[4]
कथा-राम सुनि किय उपहासू * जासु कुफल तिन भयेउ विनासू
राम-कलेस बिहंग न व्यापा * करत अनर्गल[5] व्यंग प्रलापा

ग्राम आर तपोवन पर्व्वत शिखर * नद-नदी देखि आर गिरि सरोवर
तबे यदि सीतार ना पाइ दरशन * पश्चात् करिउ चेष्टा, येवा लय मन
शुनि अस्त्र संवरिया राखिलेन तूणे * सीतार उद्देशे चलिलेन दुइ जने
क्षणेक उठेन राम वसेन क्षणेक * उन्मत्तेर प्राय राम बलेन अनेक
जले - स्थले - अन्तरीक्षे करेन उद्देश * बने बने भ्रमिया अनेक पान क्लेश
जाइते देखेन जाके, जिज्ञासेन ताके * देखियाछ तोमारा कि ए पथे सीताके
ओहे गिरि ए समये करि उपकार * बाँचाउ कहिया जानकीर समाचार
हे अरण्य, तुमि धन्य, वन्य वृक्षगण * कहिया सीतार कथा राखह जीवन

चक्रवाक ओ चक्रवाकीर प्रति श्रीरामेर अभिशाप

आरो बहुदूर गिया कमललोचन * चक्रवाके देखि राम जिज्ञासे तखन
तुमि कि देखेछ निते जनकनन्दिनी * राम वाक्य शुनि पक्षी बलिलेक वाणी
जनकनन्दिनी केवा, तारे नाहि जानि * मर्म्मकथा खुलि बल मोर दोंहे शुनि
पक्षीर वचन शुनि बले चक्रपाणि * जनकनन्दिनी सीता आमार घरनी
गृहे राखि जाइलाम मृग मारिवारे * गृहे फिरि आसि देखि सीता नाहि घरे
रामेर कथाय पक्षी करे उपहास * एइ उपहासे तार हैल सर्व्वनाश
देखिया रामेर दुःख, दुःख ना हइल * उपहास करि पक्षी बलिते लागिल

---

१ तरकश २ खोज ३ कमलनयन राम ४ आश्रम में ५ अनुचित ।

दुइ जन रखि न सके इक नारी * तिय बिन भ्रमत इतै बनचारी
तरु निवास मैं हीन विहंगा * रमत विहंगिन दुइ[1] नित संगा
तिया-हरन पूछत जनि लाजा * मुख न वैन जहँ क्षत्रि-समाजा
चक्रवाक सुनि वचन कठोरा * कहेउ कोपि रघुवंशकिशोरा
मैं विपन्न[2], परि नारि-बिछोहू * शोध लेत भरमत तिय - मोहू
नारि-संग-मद ! मम उपहासू * सुलभ न अब तोहिं नारि-विलासू
करहु अहार संग निसि दोऊ * तदपि न चीन्हि सकहु कोउ कोऊ
चकवा - चकई रैन बिछोहा * राम - शाप दोउ विलग विमोहा
अन्तरिख रहि रंग - विलासू * धरनि किये रति निश्चय नासू

दो० दण्ड पाय समुचित विहग, चिन्ता शाप दुरंत[3]।
बोलि 'राम कम् ! राम कम्'[4] गिरेउ चरन-भगवन्त ॥ ४८ ॥

चीन्हेउँ नाथ न पातक एता * सुनी स्वस्ति तुम क्षमानिकेता
भगतन प्रीति, पातकिन करुना * हरहु पाप, मैं भगवत् - चरना
जो अजान निकसी मुख बानी * करनी, लहि प्रभु-दरस, नसानी
वानी सुनि आरत खग केरी * कहेउ दयामय तेहि पुनि हेरी
अमिट प्रभाव, पच्छि ! मम शापा * तदपि निवारब तव संतापा

एक नारी दुइ जने राखिते न पार * नारीर उद्देशे ताइ हैला देशान्तर
पक्षिरूप जन्म मोर वृक्षशाखे थाकि * एकेश्वर पक्षी आमि, दुइ नारी राखि
कि बलिबे जिज्ञासिले क्षत्रिय समाज * स्त्री के हाराइया पुछ, नाहि बास लाज
पक्षीर वचन शुनि कमल-लोचन * अग्नि सम नेत्र करि कहिला वचन
स्त्री के हाराइया आमि पुछिनु तोमाय * तँइ कि करिले तुमि विद्रूप आमाय
स्त्रीर संगे बसि मोरे कैला उपहास * स्त्रीर गर्व्व रति-रस आजि होक् नाश
रजनीते आहार करिबे दुइ जने * केह कारे ना चिनिबे आमार वचने
उद्देश ना पावे केह रात्रिर भितरे * रात्रिते विच्छेद ह'ये थाकिबे अन्तरे
रतिक्रिया करि पक्षी उड़िया आकाश * भूमिते पड़िले हैउ रति संगे नाश
शापेते पक्षीर हैल दण्ड समुचित * 'राम कम् राम कम्' बलिल त्वरित
शाप पेये पक्षिवर चिन्तित हइया * श्रीरामेर स्तव करे भूमिते पड़िया
ना जानिया प्रभु दोष हइल आमार * ये कथा बलेछि प्रभु शास्ति हैल तार
भकतवत्सल प्रभु तुमि नारायण * पतिते तराव, ताइ पतित-पावन
ना बुझिया याहा किछु बलेछि बदने * सेइ पाप नाश हैल तव दरशने
रामेर हइल दया पक्षीर स्तवने * पुनरपि बले प्रभु पक्षिवर - स्थाने
जे कथा बलेछि, तार ना हबे खण्डन * द्वापर युगेते हबे ताहार मोचन

१ दो पक्षिणियों के साथ २ विपत्ति का मारा ३ विकट ४ चकई-चकवों की बोली।

द्वापर फन्द व्याध के जाला * फँसत नसै यहु शाप कराला
चक्रवाक कै दण्ड - कहानी * सुधा सरिस कृतिबास बखानी

राम-जटायु मिलन—सीता का समाचार प्राप्त

भरमत चहुँ इमि प्रभु पग डारा * रंजित - रक्त जटायु निहारा
सिय भच्छेसि खग ! मम अनुमाना * रे शठ ! अबहिं करौं बिन प्राना
तैं निशिचर खगरूप बिलोका * बिसिख[1] एक गमनै यमलोका
सर सन्धान, उतै खगराई * रक्त सने मृदु गिरा सुनाई
सिया - खोज पायेउ बहु क्लेशू * तात ! न लेस - सीय यहि देशू
लै सिय लंक गयेउ खल रावन * सिया - हेतु मम प्रान नसावन
युगुल बन्धु बिन उपवन पाई * दशमुख हरन कीन सियमाई
जरठ[2] गात, रन करि पथ रोका * आसा करि बहु पन्थ बिलोका
दनुज कीन पुनि पंख - बिहीना * स्रवत रक्त, अब जीवन हीना

दो० भरमि न इत-उत, कीजिये जिमि दसमुख विध्वंस ।
तात ! जनक[3] तव मित्र मम, धन्य दरस तेहि अंस ॥ ४९ ॥

तव हित नश्वर गात गवाँवा * प्रान रहत प्रभु दरशन पावा
सम्मुख दरस देहु छबिखानी * सानुज राम सुनत मन ग्लानी
रोवत युगुल, नयन जलधारा * कह खग अच्छर अमिट ललारा

जाल दिया व्याधे तोमा करिबे बन्धन * तखन हइबे तव शाप-विमोचन
कृत्तिवास पण्डितेर वाक्य सुधा-खण्ड * गाइल अरण्यकाण्ड चक्रवाके - दण्ड

जटायुर मुखे श्रीरामेर सीता-वार्त्ता श्रवण ओ जटायुर स्वर्गलाभ

एइ रूपे श्रीराम भ्रमेण चारिदिके * रक्ते रांगा जटायुके देखेन सम्मुखे
पक्षीर कहेन राम करि अनुमान * खाइलि सीतारे तुइ बधि तार प्राण
पक्षिरूपे आछिस् रे तुइ निशाचर * पाठाइब एक बाणे तोरे यमघर
सन्धान पूरेन राम तारे मारिबारे * मुखे रक्त उठे वीर बले धीरे धीरे
अन्वेषिया सीतारे पाइल बहु क्लेश * एइ देशे ना पाइबे सीतार उद्देश
सीतार लागिया राम, आमार मरण * सीताके लइया गेल लंकार रावण
तोमार दु भाइ जबे नाहि छिला घर * शून्य घर पाइया हरिल लंकेश्वर
आमि वृद्ध, युद्ध करि रुद्ध करि ताय * राखिया छिलाम राम तोमार आशाय
दुइ पाखा काटिलेक पापिष्ठ रावण * मुखे रक्त उठे राम जाय ए-जीवन
इतस्ततः भ्रमणे नाहिक प्रयोजन * चिन्ता कर राम, जाते मरिबे रावण
तोमार पितार मित्र, तोमा लागि मरि * आपनि मारिले राम, कि करिते पारि
प्राण आछे तोमारे करिते दरशन * सम्मुखे दाँड़ाउ राम, देखि एक क्षण
आपना निन्देन राम जानि परिचय * दुइ भाइ रोदन करेन सातिशय
जटायु बलेन यत लिखिब ता' कत * रामेर नयने बहे वारि अविरत

---

१ बाण २ वृद्ध ३ पिता ४ पुत्र, अंश ।

पितु सम, तात! कहेउ रघुबीरा * कहि सिय-कुसल हरहु मम पीरा
दशमुख - सन मम - हेतु न रोषू * मम तिय हरन तासु केहि दोषू
कहँ निवास कहु केहि कुल - केतू * सीता सुमुखि हरी केहि हेतू
पौरुष जोरि उठायेउ माथा * रामहिं सकल कहेउ खगनाथा
सहस चतुर्दश दानव मारे * कुत्सित शूर्पनखा करि डारे
रावन कोपि हरन सिय कीन्हा * उतरि सिन्धु लंका पग दीन्हा
विश्वस्रवा - सुवन नृप - नाथा * विधि - वर तेजपुञ्ज दसमाथा
चिन्ता तजि विलाप, धरि धीरा * खल हनि आनहु सिय, रघुबीरा
चरनोदक पावौं मुख माहीं * लहौं सुगति सब पाप नसाहीं
प्रभुहि कथा सिय केरि सुनावा * श्रम सों रक्त फूटि मुख आवा
अन्त बन्दि खग पद - श्रीरामा * चढ़ि रथ दिव्य गयेउ सुरधामा
कथा जटायु बरनि कृतिवासा * धर्म - ज्ञान कर मर्म प्रकासा

जटायु की अन्त्येष्ठि

सिय हित प्रान दीन खगनाथा * पितु सम, अहह! कहेउ रघुनाथा
दो० अयश, अधर्म! जटायु - शव वन्यजन्तु जो खाहिं।
दाह - कर्म आदेश प्रभु कीन्हेउ लक्ष्मण पाहिं ॥ ५० ॥
लखन दिव्य तहँ चिता सजाई * विधिवत सो प्रज्वलित कराई
शव - विहंगपति पुण्यस्वरूपा * अग्नि दीन दोउ बन्धु अनूपा

श्रीरामेर बलेन, पक्षि तुमि मोर बाप * कहिया सीतार वार्त्ता दूर कर ताप
रावणेर संगे मोर नाहिक वैरिता * विना दोषे हरिलेके आमार वनिता
कोन वंशे जन्म तार थाके कोन् पुरे * कोन् दोषे हरिलेके मोरे जानकीरे
अनेक शक्तिते पक्षी तुलिलेक माथा * कहिते लागिल श्रीरामेरे सर्व्वकथा
सँहारिले चतुर्द्दश - सहस्र राक्षस * लक्ष्मण करेन शूर्पनखार अयश
एइ कोपे रावण हरिल जानकीरे * राखिल लंकाय ल'ये समुद्रेर पारे
पुत्र विश्वश्रवार रावण बड़ राजा * विधातार वरेते हइल महातेजा
कोन चिन्ता ना करिह संवर क्रन्दन * जानकीरे उद्धारिबे मारिया रावण
तव पादोदक राम, देह मोर मुखे * सकल कलुष नाशि जाइ स्वर्गलोके
कहिल सीतार वार्त्ता श्रीरामेर आगे * एत बलि पक्षीर मुखेते रक्त भागे
मृत्युकाले वन्दे पक्षी श्रीरामचरण * दिव्यरथे चापि स्वर्गे करिल गमन
जटायुर मरण-श्रवणे धर्म्म ज्ञान * कृत्तिवास रचे इहा शुनिया पुराण

श्रीराम-कर्तृक जटायुर सत्कार ओ उद्धार

श्रीराम बलेन, पक्षी पितार समान * सीतार कारणे पक्षी हाराइल प्राण
वन्य जन्तु खाइले अधर्म-अपयश * अग्निकार्य्य करि राख, लक्ष्मण पौरुष
तबेत लक्ष्मण दिव्य-अग्नि कुण्ड काटि * ज्वालिलेन कुण्ड वीर करि परिपाटी
तुलिलेन चिताय जटायु पक्षिराज * दुइ भाइ ताहार करेन अग्निकाज

प्रेत - कर्म विधिवत सम्पादन * गोदावरी सलिल किय तर्पन
अन्त समय लहि दरसन - रामा * गमन जटायु कीन सुरधामा

राम द्वारा कबन्ध दानव का उद्धार

कित विराम ? रजनी[1] चहुँ छाई * शून्य कुटी गमने दोउ भाई
कानन कछुक चैन रघुराई * निर्जन धाम अधिक दुखदाई
लखन तात ! मोहिं सहन न पीरा * लेहुँ समाधि गौतमी - नीरा[2]
अनुज अंक भरि नयनन - वारी * बहि - बहि मुक्तन हार सवाँरी
नींद निसा जनि भरत उसासू * तहँ दिन तीन राम उपवासू
सिया - बिछोह दुसह दुख - तापू * अकथ अचिन्त्य राम - संतापू
गत निसि, निरखि अरुन[3] रघुकेतू * दच्छिन दिसि गमने सिय - हेतू
तजि उपवन, गमने दुइ कोसू * कुश-वन दुर्गम कीन प्रवेसू
सिंह व्याघ्र महिषादि चरन्ता * तरु - तर तहँ सानुज भगवन्ता
विक्रम - बुद्धि लखन अति आगर * बोले सुनहु नाथ ! करुनाकर
फरकत भुज-लोचन शुभ नाहीं * खंजन निकसि बाम पथ जाहीं
कुश-वन विषम अतिव भयकारी * लच्छन लखत अमंगलकारी

दो० पुनि पथ गहेउ, कबन्ध दनु, विकट दरस तहँ दीन ।
नाक कान मुख नैन सब, आसु उदर आसीन ।। ५१ ।।

सत्कार करेन तार व्यवस्था येमन * गोदावरी जले तार करेन तर्पण
राम दरशने पक्षी गेल स्वर्गवास * गाइल अरण्यकाण्ड कवि कृत्तिवास

श्रीराम कर्तृक कबन्धेर मुक्ति विधान

रजनी आइल, स्थान थाकिवार नाइ * शून्य घरे आइलेन पुनः दुइ भाइ
बाहिरे छिलेन राम वरच आश्वस्त * शून्य घर देखि हइलेन आ'रा व्यस्त
श्रीराम बलेन, शुन भाइ रे लक्ष्मण * गोदावरी जीवनेते त्यजिब जीवन
एतेक बलिया लक्ष्मणेरे करि कोले * गाँथिल मुक्तार हार नयनेर जले
रजनीते निद्रा नाहि घन बहे श्वास * से घरे करेन राम तिन उपवास
सीतार विच्छेद राम पाइल जे क्लेश * विशेष लिखिते गेले हय से अशेष
रजनी प्रभाता हय अरुण विकाशे * चलेन दक्षिणे राम सीतार उद्देशे
घर छाड़ जान राम क्रोश दुइ पथे * प्रवेशेन दुइ भाइ कुशेर वनेते
सिंह-व्याघ्र-महिषादि चरे पालेपाले * दुइ भाइ बसिलेन एक वृक्ष तले
बुद्धिते विक्रमे बड़ चतुर लक्ष्मण * रामेरे बलेन किछु प्रबोध वचन
केन प्रभु, हय हस्त-लोचन स्पन्दन * वामदिके करितेछे खण्डन गमन
विषम कुशेर वन देखि करे भय * नाना अमंगल देखि, ना जानि कि हय
दुइ भाइ चलिते करेन अनुबन्ध * पथ आगुलिया राखे राक्षस कबंध
पेटेर भितर नाक-कान-चक्षु-माथा * शतेक योजन हस्त अपूर्व्व से कथा

---

१ रात्रि २ गोदावरी के जल में ३ अरुणोदय प्रभात ।

अकथ ! प्रलंब बाहु शत योजन * राम लखन लखि किय घन गर्जन
बाहु पसारि युगुल धरि कहही * करगत[1] मम अहार जनि बचही
कहु परिचय, मानव ! केहि कारन * आगम इतै विषम वन दारुन
बोले राम, देहु तेहिं परिचय * नतरु तात ![2] प्रानन कर संसय
दुर्बल मन कीजिय कम नाथा * हनि दनु-भुज दोउ करहिं सनाथा[3]
सुनि दच्छिन कर[4] राम निपाता * लछिमन-खड्ग, वाम भुइँ पाता
छेदेउ भुज, दोउ बन्धु, विशाला * फटकति अवनि कबन्ध कराला
पुनि रघुपतिहिं निवेदन करई * को तुम, कहँ निवास शुभ अहई
दसरथ - सुत जगपति, जगबन्दन * लखन कहेउ, सोई रघुनन्दन
लछिमन अनुज तासु, इत कानन * भरमत पिता - वचन पालन
यहि वन विकटाकार विरूपा * कवन जाति, तुम दानव रूपा
सुनत कबन्धहिं लछिमन बानी * परी याद पुनि कथा पुरानी
दैत्य कुबेर अन्त छवि नाहीं * मम छवि चन्द्र मनोज लजाहीं
तेहि मद सुरन - रूप उपहासा * रुष्ट एक मुनि शाप प्रकासा
रूप - गर्व ! निन्देसि पर - रूपा * शाप विवश खल ! होय विरूपा[5]
त्रेता विष्णु लेहिं अवतारा * परसि राम - सर तव निस्तारा

राम लक्ष्मणेरे देखि करिया तर्ज्जन * दुइ हात प्रसारिया राखे दुइ जन
कबन्ध बलिल तोरा आमार आहार * मोर हाते पड़िल, कि पाइ निस्तार
ए विषम वने तोरा आइल कि कारण * परिचय देह शुनि तोरा कोन् जन
श्रीराम बलेन भाइ हइल संशय * प्राण रक्षा कर भाइ देह परिचय
लक्ष्मण बलेन, प्रभु बुद्धि कन घाटि * राक्षसेर दुइ हात दुइ भाइ काटि
कबन्धेर डान हात काटेन श्रीराम * खड्गाघाते लक्ष्मण काटेन हस्त वाम
दुइ भाइ काटिलेन तार हस्त दुटि * पड़िया कबन्ध बीर करे छटफटि
डाक दिया श्रीरामे से करे सम्भाषण * कोन देशे थाक तुमि हउ कोन जन
लक्ष्मण बलेन, राम जगतेर राजा * दशरथ ! राजपुत्र सबे करे पूजा
श्रीरामेर भाइ आमि नामते लक्ष्मण * पितृसत्य पालिते बेड़ाइ वने वन
तुमि कोन निशाचर विकृत आकृति * वनेर भितरे थाक, हउ कोन् जाति
एत यदि लक्ष्मण करेन सम्भाषण * पूर्व्वकथा कबन्धेर हइल स्मरण
कुबेर नामेते दैत्य छिलाम सुन्दर * कन्दर्प जिनिया रूप येन निशाकर
सकल देवता निन्दा करि निजरूपे * एक मुनिवर मोरे शाप दिल कोपे
येमन रूपेर तेजे कर उपहास * विरूप हउक सब, रूप याक नाश
यखन हवेन विष्णु राम अवतार * ताँर वाण स्पर्श तोर हइबे निस्तार

१ हाथ में आया २ हे लक्ष्मण ! ३ मुक्ति प्रदान करे ४ हाथ ५ अत्यंत कुरूप ।

दो० इन्द्र कोपि, हनि बज्र मम मुण्ड उदर-गत कीन ।
चच्छु, कर्ण, नासा, चरन, सीस, उदर - आसीन ॥ ५२ ॥

गति विहीन, जनि जतन-अहारा * भुज प्रलम्ब बल मम आधारा
बाहू युगुल पर्वताकारा * करगत मम बहु पन्थ-प्रसारा
चलत प्रहर दुइ समय प्रमाना * पथ-विस्तार जीव जे नाना
भुज पसारि भच्छहुँ नित सारे * नित समात ते उदर हमारे
घृणित अहार घृणित आकारू * लहि तव दरस शाप-उद्धारू
प्रभु वन-रैन, आनि अभिलाषा * करि उपकार चहौं सुरवासा
कहेउ रघुवन, हरी सिय रावन * मिलै दरस किमि तासु सुहावन
जेहि विधि सुलभ होय वैदेही * प्रभुहिं कबन्ध बतावत तेही
बिन अन्त्येष्टि[1] न मम निस्तारू * निपट अन्ध मोहिं जग अँधियारू
अधम दनुज-तन जब लौं शेषू * कबहुँ न सम्भव प्रभु! निरदेषू[2]
अनल-चिता, मुनि लखन सवाँरी * दाह दीन पुनि विधि अनुसारी
दहकेउ तन - कबन्ध बलसींवा * उठेउ अनल सों अद्भुत जीवा
अवर भानु[3] मनु गगन प्रकासा * दिव्य पुरुष रामहिं सम्भासा
चित दै सुनहु लखन, रघुराई ! * ऋष्यमूक गिरि जहाँ सुहाई

आमार उपरे क्रुद्ध देव शचीनाथ * करिले आमार शरीर बज्राघात
बज्राघाते मुण्ड मोर प्रवेशे उदरे * चक्षु-कर्ण-घ्राण-पदे ना रहे बाहिरे
गतिशक्ति नाइ, किसे मिलिवेक भक्ष्य * तेंइ मम दुइ-हस्त दीर्घ दुइ लक्ष
दुइ हस्त मोर येन दुइटा पर्य्यंन्त * दुइ हस्ते जुड़ि आमि बहुदूर - पंथ
दुइ प्रहरेर पथ यत वनचर * दुइ हाते सापटिया भरि हे उदर
कुत्सित आकार मोर कुत्सित भोजन * तामा दरशने मोर शाप-विमोचन
तव किछु हित करि जाइ इन्द्रवाम * केन राम वने भ्रम, कोन् अभिलाष
श्रीराम बलेन, सीता हरिल रावण * युक्ति बल केमने पाइब दरशन
कबन्ध बलिल, राम, कहि उपदेश * याहा हैते पावे तुमि सीतार उद्देश
यावत् तनुर मोर ना हय संहार * तावत् ना देखि किछु, सब अन्धकार
राक्षसे शरीर गेले पाव अव्याहति * तबेत बलिते पारि इहार युकति
तखन लक्ष्मण वीर अग्निकुण्ड काटि * कबन्धेर दहिलेन करि परिपाटी
शरीर पुड़िया नार हइल अंगार * अग्नि हैते उठे वीर अद्भुत आकार
आकाशे उठिया करे रामे सम्भाषण * देवमूर्ति से पुरुष द्वितीय तपन
पुरुष बलेन, शुन श्रीराम-लक्ष्मण * सावधान ह'ये शुन आमार वचन

१ अन्तःकर्म, दाहक्रिया आदि २ निर्देश करना, राह सुझाना ३ दूसरा सूर्य ।

मिलि सुग्रीव सरै[1] सब कामा * आयसु होय लहौं सुरधामा
राम दरस, दानव सुरधामा * कुश-कानन प्रभु कीन विरामा

श्रीराम-दर्शन पाकर शबरी का स्वर्गलाभ

दो० विगत रैन, रवि उदित छबि, सहित लखन रघुवीर।
पहुँचे सरित सुहावनी सलिला पम्पा तीर ॥ ५३ ॥

सहित विहंगिनि[2] केलि विहंगा[3] * चिर बिहार जहँ मृगी-कुरंगा[4]
राजहंस - हंसिन जल - क्रीड़ा * निरखि राम अतिशय मन पीड़ा
खग मृग टेरि कहत विधि एही * शशिमुखि कतहुँ लखी वैदेही
मज्जन - तर्पन पम्पा तीरा * शोध - सुकण्ठ[5] चले रघुवीरा
चलि मतंगमुनि - आश्रम आये * दरस तहाँ शबरी[6] के पाये
नयन नेह - जल भरत अमेसू * रामहिं कहेउ यथा आदेसू
बहु दिन मुनि मतंग-पद सेवा * अन्त गये सुरपुर मुनिदेवा
मुनि के बचन—आश्रम बासू * दिवस एक जहँ राम निवासू
दरस मिलैं जब नलिनि-विलोचन[7] * शबरी ! तब तव पाप-विमोचन
राम - राम रघुपति श्रीरामा * दासिहिं सदय लेहु निज धामा
शुद्ध काठ बहु, चिता सजाई * शबरी पुनि तहँ अनल जराई
कीन प्रवेश राम, मन धारी * तेहि साहस प्रभु विस्मय भारी

सुग्रीवेर उद्देश करिउ ऋष्यमूके * आज्ञाकर रामचन्द्र जाइ स्वर्गलोके
राम दरशने कबन्धेर स्वर्गवास * कुशेर वनेते राम करेन प्रवास

श्रीराम दर्शने शबरीर स्वर्गलाभ

प्रभात हइल निशा, उदित मिहिर * चलिलेन दुइ भाइ पम्पा नदी तीर
केलि करे नाना पक्षी पक्षिणी सहित * देखिलेन मृग मृगी विच्छेद वञ्चित
राजहंस-राजहंसी क्रीड़ा करे जले * देखिया रामेर शोकसागर उथले
जिज्ञासा करेन राम ओहे मृग पक्षि * देखियाछ तोमारा कि सीता चन्द्रमुखी
पम्पाते करिया स्नान, करिया तर्पण * सुग्रीव-उद्देशे राम करेन गमन
प्रवेश करेन राम मतंग-आश्रमे * तथाय शबरी छिल देखिल श्रीरामे
शबरी आनन्द वारि वारिते न पारे * श्रीरामेर प्रति बले आज्ञा अनुसारे
मतंग मुनिर सेवा करि बहुकाल * बैकुण्ठ गेलेन मुनि ह'ये प्राप्तकाल
कहिलेन आमार आश्रमे कर स्थित * आसिवेन एखाने अवश्य रघुपति
शबरी यखन पाव राम-दर्शन * तखन हइबे तव पाप - विमोचन
राम-राम श्रीराम राघव रघुपति * हइया प्रसन्न ए दासीरे देह गति
शबरी रामेर आगे अग्निकुण्ड काटे * आनिया ज्वलिल अग्नि नाना शुद्ध काठे
अग्निते प्रवेश करे स्मरि नारायण * ताहार साहसे राम चमकित - मन

---

१ काम बनेगा २ पक्षिणी ३ पक्षी ४ हरिन-हरिनी ५ सुग्रीव की खोज मे
६ देखिये पृष्ठ ३६२ ७ कमलनयन राम।

दहकि शरीर भयेउ जरि आगी * अहह ! धन्य शवरी बड़भागी !
जासु अस्मरन मंगल नामा * मुक्ति दैन पावन हरिधामा
सो प्रतच्छ पुनि दरसन पाई * शवरी-गति§ प्रभु स्वयं बनाई
राम प्रसाद पाप तेहि नासू * अनायास बैकुण्ठ निवासू

दो० राम-चरित-घट-सुधा सों, लहि अरण्य सुख-खानि ।
किष्किन्धा गाथा कहत, कवि कृत्तिवास बखानि ॥ ५४ ॥

अग्निते पुड़िया तनु हइल अंगार * ताहार भाग्येर कथा कि कहिब आर
याँहार स्मरण मात्र मुक्ति संवे धाय * ताँहाके सम्मुखि देखि त्यजिले से काय
श्रीराम प्रसादे तार हय पाप नाश * अनायासे शवरी चलिल स्वर्गवास
श्रीराम-चरित-कथा अमृतेर भाण्ड * एत दूरे समाप्त हइल वन-काण्ड

॥ इति अरण्य काण्ड

§ शवरी—एक अस्पृश्य कन्या के विवाह-आयोजन हेतु, उसके माता-पिता ने अनेक पशु-पक्षी प्रीतिभोज के निमित्त एकत्र कर रखे थे। शवरी को जब यह पता लगा, तो वह इस जीव-हत्या की आशंका से व्याकुल हो, बिना कहे सुने वन में भागकर अकेली फल-फूल-पत्तों पर गुजर करने लगी। संयोगवश मतंग मुनि को इस छिपी हुई भक्तिनी का आभास मिला और उन्होंने उसे अपने आश्रम में आश्रय दिया। बहुत दिनों बाद, मतंग मुनि ने अपने शरीर-त्याग के समय शवरी से कहा कि वह उसी आश्रम में रहकर भगवान् के वहाँ आगमन तक प्रतीक्षा करे और भगवान् रामचन्द्र का दर्शन पाकर तब स्वर्गलाभ करे। सुतराम् शवरी वहाँ अकेली रहती, नित्य फल बटोर कर सायंकाल तक भगवान् की प्रतीक्षा करती और तब नैवेद्य लगाकर उसे स्वयं ग्रहण करती। वह शुभ अवसर राम के वन-आगमन के समय उपस्थित होने पर, शवरी ने उनका जंगली बेरों से सत्कार किया और भगवान् का दर्शन प्राप्त होने पर, सदेह चितारोहण कर वैकुण्ठ को प्रस्थान किया।

श्री गणेशाय नमः

कृत्तिवास रामायण

किष्किन्धा काण्ड

(हिन्दी पद्यानुवाद, बँगला मूल सहित)

मंगलाचरण

श्लोक—कुन्देन्दीवरसुन्दरौ धृतिवलौ विज्ञानगेहावुभौ
लीलाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ।
मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सत्यव्रतावस्थितौ
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्त्या भजामोवयम् ॥ १ ॥
ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं-
श्रीशम्भो रसनासुतृप्तिजनकं देवैः परं दुर्लभम्।
संसारामयभेषजं सुमधुरं श्रीजानकीजीवनं-
धन्यास्ते कृतिनः पिवन्ति नियतं श्रीरामनामामृतम् ॥ २ ॥

दो० राम-लखन दण्डक भ्रमन, कपिगन लही सहाय।
सीय-खोज मन्जुल कथा कहेउ सन्त कवि गाय ॥

ऋष्यमूक गिरि शिखर सुहावन * युगुल बन्धु चलि सो किय पावन
तहँ मारुति,[1] गवाक्ष, नल, नीला * सहित, सुकण्ठ[2] बसत बलशीला
उर ससंक कपिगन भय छावा * बालि मनहुँ चर युगुल पठावा

श्रीराम लक्ष्मण दोंहे भ्रमेन दण्डके * सहाय करिते जान वानर कटके
दुइ भाइ उठिलेन पर्व्वत शिखरे * देखिया वानर पञ्च शंकित अन्तरे
सुग्रीव बलिल देख आसे दुइ नर * मने करि बालि राजा पाठाइलेन चर

---

१ हनुमान २ सुग्रीव।

बालि अथाह बुद्धि - चतुराई * सो विन जुगुति बूझि किमि पाई
सुनि सुग्रीव - बचन, तरु - डारी * फाँदि चढ़े बहु शाखाचारी[1]
घुड़कत खोंखियात बहु भाँती * तरु विशाल फल-फूल निपाती
व्याघ्र, मृगेन्द्र[2], महिष भय पाई * आर्त्त कण्ठ गिरि चले बराई
हनुमत कहेउ, सुनहु कपिकेतू * कतहुँ न बालि, बालि-भय हेतू
जग जानत कपि - चञ्चल - रीती * तिन नृप चपल, अधिक अनरीती
चलि देखहुँ, के धनुधर वीरा * बिन जाने, प्रभु ! व्यर्थ अधीरा
तापस वेस यदपि, हनुमाना ! * तदपि हेतु-भय ! कर धनु-बाना !
कोउ नृप सुवन, भभूति रमाई * आनहु मर्म बेगि तुम जाई
धरि मुनि - रूप चले हनुमाना * उभय मिलन अति मोद समाना[3]
राम - नाम यम त्रास नसावन * सहज मुक्ति, हरि - नाम दिवावन
प्रथम कड़ी किष्किन्धा गाना * मञ्जु, विज्ञ कृतिवास बखाना

राम-सुग्रीव मित्रता और सीता - आभूषण प्राप्ति

निरखि, पवनसुत, दोउ तपरूपा * कहेउ बचन, धरि निज मुनि-रूपा
छं० बनबासिन छम्य सरूप धरे निहचय तुम राजदुलार कोऊ।
ससि-भानु समान धरा बिचरौ तजि व्योम[4] अरण्य रमन्त दोऊ ।।

बुद्धिर सागर बालि बुद्धि धरे नाना * तत्त्व धर सत्य मिथ्या सब जावे जाना
सुग्रीवेर वचने वानर पाले पाले * लाफे लाफे उठे सब बड़-बड़ डाले
से गाछ सहिते नारे सवार आस्फाल * फल फूल भांगे कत शाल ताल डाल
बनजन्तु यत छिल पर्व्वत शिखरे * सिंह व्याघ्र महिष पलाय उच्चैःस्वरे
हनुमान ब'ले राजा ना हउ चिन्तित * ना देखिया बालिरे केन हइले भीत
वानर चञ्चल जाति लोके उपहासे * चञ्चल हइले राजा लोके अनेक दोषे
आमि गिया जेने आसि कोथाकार वीर * तथ्य ना जानिया केन हइले अस्थिर
सुग्रीव बलिल देखि तपस्वी उभय * किन्तु धनुर्व्वाण धरे मने लागे भय
हइबे तपस्वी वेश राजार कुमार * शीघ्र जाह हनुमान आन समाचार
जान हनुमान वीर तपस्वीर वेशे * परम गौरव भावे उभय सम्भाषे
राम नाम श्रवणे यमेर दाय तरि * अनायासे मुक्त हबे मुखे ब'ल हरि
कृत्तिवास पण्डितेर मधुर पाँचाली * रचेन किष्किन्धाकाण्ड प्रथम शिकलि

सुग्रीवेर सहित श्रीरामेर मित्रता-बन्धन ओ सीतार आभूषण प्राप्ति

हनुमान मुनि वेशे देखे दुइ जन * तपस्वीर वेश धरि कर सम्भाषन
हनुमान कहे प्रभु देखि ये आकार * अवश्य हइबे कोन राजार कुमार
चन्द्र सूर्य जिनि रूप भ्रम भूमण्डले * गगन मण्डल छाड़ि केन वनस्थले

१ बन्दर २ सिंह ३ आनन्द से भर गये ४ आकाश ।

केहि हेतु, कवन कुल-केतु, सदन कहँ? नाथ! सकल बिवरन कहऊ।
जग-जाहिर वानरराज सुकण्ठ-सचीव[1] की संक प्रभो! हरऊ॥

दो० लहैं मित्रता नाथ की, सुग्रीवहिं अभिलाष।
तिन बसीठ[2] हनुमान मैं, इत आयेउँ प्रभु पास॥
सुनि लखनहिं आयसु दियेउ रघुपति राजिवनैन।
सचिव-सुकण्ठहिं लखन निज दीन्हेउ परिचय बैन॥ १॥

छिति - भूषन दशरथ नृप - नन्दन * हम तिन सुवन लखन-रघुनन्दन
कानन इतै सत्य-पितु पालन * सूने हरी सीय तहँ गवन
एक सिद्ध जन[3] किय निर्देसू * मिलन-सुकण्ठ हरन सब क्लेसू
कहँ सुग्रीव? भ्रमन तेहि हेतू * लै कपि! चलौ जहाँ कपिकेतू
कह कपि, दरस परस्पर पाई * निवरैं कलेस, उभय[4] सुखदाई
नारि-हरन अरु राजु विनासी * बालिराज किय अनुज प्रवासी
तव - सहाय तिन राज - उबारू * तिन - कर[5] पुनि सीता - उद्धारू
राज-रहित वन भ्रमत कपीसा * लहे राज-सुख मिलि जगदीसा
बोले राम, करउ कपि! सोई * मम - सुग्रीव - मिलन जिमि होई
सुनि प्रभु-बचन बेगि हनुमाना * चलि सुकण्ठ प्रति सकल बखाना
ऋष्यमूक सुग्रीव सुहाये * मारुति - वचन सुनत मन लाये

कोथा घर कि कारने हेथा आगमन * विशेषिया कह प्रभु सब विवरन
सुग्रीव वानर राजा लोके ख्यातिमान * ताँहार सचिव आमि नाम हनुमान
तोमा सह मित्रता करिते अभिलाष * पाठाइल सुग्रीव आमारे तव पास
श्रीराम बलेन शुन लक्ष्मण वचन * सुग्रीवेर पात्र सह कर सम्भाषन
एतेक कहेन यदि कमललोचन * निज परिचय देन ताहारे लक्ष्मण
महाराज दशरथ पृथिवी - भूषण * आमरा ताहार पुत्र श्रीराम लक्ष्मण
आइलाम पितृ सत्य पालिते कानन * शून्य घर पेये सीता हरिल रावण
कोन सिद्ध पुरुषे कहिले उपदेश * सुग्रीव हइते सब खण्डिवेक क्लेश
भ्रमितेछि आमरा सुग्रीवेर उद्देशे * दोहारे लइया चल सुग्रीवेर पाशे
हनुमान बलेन उभय दरशने * परस्पर तुष्ट हबे उभयेर मने
सुग्रीवेर राज्य नाइ नाइ तार नारी * बालि राजा हरिया करिल देशान्तरी
सुग्रीव पाइबे राज्य साहाय्ये तोमार * सुग्रीव करिले तव सीतार उद्धार
हाराइया राज्य भ्रमे सुग्रीव कानने * राज्य सुख पाइब से तव दरशने
श्रीराम ब'लेन कपि करह गमन * सुग्रीवेर सने मोर कराउ मिलन
शुनिया रामेर वाक्य जान हनुमान * कहेन सकल सुग्रीवेर विद्यमान
ऋष्यमुख पर्वते उठिया सेइ क्षणे * हनुमान कहेन सुग्रीव राजा शुने

१ सुग्रीव के मंत्री मुख्य हनुमान की २ दूत ३ देवयोनि प्राप्त कबन्ध दैत्य ४ दोनों को ५ सुग्रीव के हाथों।

छं० हे कपि - मुकुट ! कुरूप कीस तजि मानव - तन छबि धारी ।
पाद्य - अर्घ्य - सत्कार करहु चलि आई राम सवारी ॥
दसरथ - नन्दन जगवन्दन के प्रभु ! अब काज सवाँरी ।
लहि सहाय निज विपदा निवरौ[1] पात्र कुपात्र विचारी ॥
अनुज सुलच्छन लखन जासु तिन तिया हरी दसभाला ।
बिधि अनुगत ! सुग्रीव - द्वार सो प्रस्तुत आजु कृपाला ॥
वेद न जानत भेद, योगि जन ध्यावत, जाहि त्रिकाला ।
शिव - विरञ्चि तरसत जिन दरसन श्रीपति राम - भुवाला ॥

सुनि सुग्रीव अनन्द विभोरा * लै फल - पुहुप चलेउ प्रभु ओरा
मंगल घरी धन्य ! कपिकेतू * सुभ छन लहेउ दरस - रघुकेतू
पाद्य अर्घ्य पूजेउ रघुबीरा * पुलकित कपि दृग सरसति नीरा
कर जोरे प्रणवति कपिराजू * अवगत नाथ ! मोहिं तव काजू
गाथा सकल कही हनुमाना * सिय - उद्धार हेतु भगवाना

दो० मारुति-वचन प्रतीत जनि, पसुहिं बनावौ मीत ।
प्रियजन कहि, कर गहहु[2] प्रभु ! जो मो पै कछु प्रीत ॥ २ ॥

कहँ कपि हीन कहाँ तव चरना * कृपासिन्धु कीजिय कछु करुना

छाड़ह वानर मूर्ति कुत्सित आकार * धरह मनुष्य रूप देखिते सुसार
पाद्य अर्घ्य लइया करह शिष्टाचार * आइलेन राम दशरथेर कुमार
ताँहारे साहाय्य यदि कर महाराज * सेइ परकाले तव सिद्ध हबे काज
रामेर अनुज से लक्ष्मण सुलक्षण * सुवर्ण कुवर्ण मानि करि निरीक्षण
रामेर रमणी सीता हरिल रावण * सेइ हेतु तोमाते ताँहार प्रयोजन
सुग्रीव तोमारे आजि अनुकूल विधि * कोथा हैते मिलाइल राम गुणनिधि
एत दिन तोमार दुःखेर अवसान * तोमारे सदय रामरूपी भगवान
याँर तत्व चारि वेदे ना पाय किञ्चित * विरिञ्चि वाञ्छित आर शंकर इप्सित
योगे योगे योगिगन ना पाय याँहारे * सेइ राम रमानाथ उपस्थित द्वारे
शुनिया सुग्रीव राजा आपना पासरे * फल पुष्प लये गेल श्रीराम गोचरे
बड़ भाग्य सुग्रीवेर विधिर लिखन * शुभक्षणे करिल श्रीराम दर्शन
पाद्य अर्घ्य दिया श्रीरामेरे पूजा करे * प्रेमानन्दे सुग्रीवेर नेत्रे नीर झरे
कृताञ्जलि हइया कहिल कपिराज * हइयाछि ज्ञात राम तोमार ये काज
कहिलेन सकल आमारे हनुमान * सीतार उद्धार हेतु आइले ए स्थान
मित्रता करिबे राम पशुर सहित * ए हनुमानेर वाक्य ना हय प्रतीत
पशु प्रति यदि राम हय अनुग्रह * मित्र बले रघुवीर हस्ते हस्त देह
दास योग्य नहि आमि जातिते वानर * करुणा प्रकाश कर करुणासागर

---

१ छुटकारा पाओ २ हाथ पकड़ो ।

प्रभु - पद परसत शिला - स्वरूपा * अहह ! भई सुन्दरी अनूपा
केवट धन्य ! सुहृद पद पाई * हीनहिं सुगति राम - प्रभुताई
राजिवनयन राम रघुनाथा * गहि कपीस - कर कीन सनाथा
पूरुब पुन्य अनन्त कपीसा * विधि वाञ्छित पद लहि जगदीसा
गुननिधि राम दया के सागर * जासु कृपा बन्धन वन - वानर

छं० अति पामर, वानर प्रति कातर प्रभु कर[1] दहिन बढ़ावा ।
तजि मुनिवेस पवनसुत अरनी[2] मंथि अनल सुलगावा ॥
साखी अगिनि, परस्पर प्रमुदित, मित्र ! मित्र ! गुहरावा ।
हनि रिपु, तिय-उद्धार, दुहुन दोउ करि सहाय, मन भावा ॥

अमिट ललार-लिखी विधि-गाथा * जगपति[3] बचन बँधे कपि साथा
धन्य धन्य सुग्रीव कपाला[4] * सुहृद राम जिन परम दयाला
कथन परस्पर दोउ जन कहहीं * अतिशय मोद निरखि दोउ लहहीं
कथन - श्रवन दोउ मित्रन - गाना * दिन बहुरत[5] सुग्रीव समाना
कहेउ सुकण्ठ यथा मोहिं ज्ञाना * सिय बृतांत प्रभु ! करहुं बखाना
कपि हम पाँच हते गिरि ऊपर * स्यन्दन गगन लखा दसकंधर
बाला बिलपत रथ, कंकण-ध्वनि * गरुड़मुखे जिमि ग्रस्त भुजंगिनि

पाषाण उपर समर्पिया निज पद * अनायासे दिले तारे मनुष्येर पद
चण्डालेरे दस्यु भावे करिले उद्धार * नीचेर निस्तार हेतु तव अवतार
दयाल श्रीरामचन्द्र कमललोचन * वानरेर हाते हस्त देन नारायन
पुञ्ज पुञ्ज पूर्व्व पुण्य सुग्रीवेर छिल * विरिञ्चि वांछित पद प्रत्यक्ष पाइल
परम दयालु राम गुणेर नाइ सन्धि * जाँर गुणे वनेर वानर हय बन्दी
वानरेर हस्त दिते नहेन विमर्ष * दिलेन दक्षिण हात श्री राम सहर्ष
मुनि वेश छाड़ि कपि ह'ये हनुमान * काष्ठ आने बाछिया अगर दुइ खान
दुइ काष्ठ घर्षण करिते अग्नि ज्वले * अग्नि साक्षी करि दोहे मित्र-मित्र बले
परस्पर वैरी मारि उद्धारिब नारी * अग्नि साक्षी करि एइ हइल दोहारि
विधिर निर्व्वंध केबा करिब खण्डन * वानरेर सगे सत्ये बद्ध नारायन
सबा हैते सुग्रीवेर अधिक कपाल * मितालि करेन राम परम दयाल
उभये कहेन कथा शुनेन उभय * उभये उभय प्रति प्रीति अतिशय
उभयेर मित्रता जे शुने किम्बा कय * सुग्रीवेर मत तार हय भाग्योदय
सुग्रीव कहेन राम कहि अवशेष * पाइया छिलाम बूझि सीतार उद्देश
आमरा वानर पञ्च छिलाम पर्व्वते * देखिलाम एक कन्या रावणेर रथे
हात पा आछाड़े करे कंकणेर ध्वनि * गरुड़ेर मुखे येन बद्धा भुजंगिनि

१ हाथ २ अरणी; घिसकर अग्नि प्रकट करने के लिए दो काष्ठ ३ जगत् के स्वामी ४ भाग्य ५ भाग्योदय होना, दिन फिरना ।

आँचर आभूषन, गरहारा * रथ सों भरत मनहुँ नभ-तारा
धरेउ सँजूति नाथ मैं तेही * संसय मोहिं सोई वैदेही
लाय धरउँ प्रभु आयसु पाई * लखौ चीन्ह - सिय ते रघुराई

दो० चीन्ह - मैथिली आनि मोहिं दरस करावहु मीत ।
राखि प्रान, मेटहु व्यथा, बोले करुनातीत ॥ ३ ॥

आनेउ सोइ सुकण्ठ अविरामा * शोक-सिन्धु उमड़ेउ लखि रामा
सोक-विवस प्रभु धरनि निपाता * बरसि नयन-जल भिजवति गाता
आँचर अभरन रूपमि तोरा * कहँ सुमुखी ? विलाप अति घोरा !
तिन मग तजि मोहिं किय निर्देसू[1] * जानहिं किमि, कहँ प्रिय, केहि देसू
कहहु अहा ! सुग्रीव सनेही * संभव मिलन पुनः वैदेही
सिय मन सुमिरि व्यथा उर माहीं * जग अँधियार ज्ञान थिर नाहीं
जनि दिन - रैन चैन, कहँ जाई * चन्द्रबदनि - दरसन कहँ पाई
स्वर्ग - मर्त्य तिहुँलोक पताला * हेरि दनुज जहँ जाति कराला
हनहिं, न तिन कोउ राखनहारा * मम धनु - तेज विदित संसारा
आनहु चाप, लखन ! रिपु मारी * शोक - अनल - उर होय निवारी[2]
वानरपति[3] बहुबिधि समुझावा * कृत्तिवास मंजुल - पद गावा

गलार उत्तरीय गायर आभरण * रथ हैते पड़िल जेमन तारागण
अनुमाने बुझि तिनि तोमार सुन्दरी * यत्न करि राखियाछि भूषण उत्तरी
यदि आज्ञा हय तब आनि ता एखन * हय नय चिन मित्र सीतार भूषण
श्रीराम बलेन मित्र कर से विधान * देखाये सीतार चिन्ह राख मम प्रान
आभरण आनेन सुग्रीव सेइ स्थले * देखिया रामेर शोकसागर उथले
अवश हइया राम पड़ेन भूतले * शरीर भासिल ताँर नयनेर जले
विलाप करेन कोथा रहिले सुन्दरी * तोमाय भूषण एइ तोमाय उत्तरी
जानाइने आमारे फेलिया छिले पथे * कोन दिके गेले प्रिये जानिब कि मते
कह कह सुग्रीव आमार तुमि सखा * पुनः कि पाइब आमि जानकीर देखा
जानकीर रूप मने हइले उदय * ज्ञान हत एइ देखि विश्व तमोमय
स्थिर नहे मम देह दिवस रजनी * कोथा गेले पाइ सेइ सुधांशुबदनी
स्वर्ग मर्त्य पाताल रावण वैसे यथा * घुचाइब सर्व्वत्र राक्षस जाति कथा
त्रिभुवने जाने मम धनुकेर छटा * मारिब राक्षसगणे रक्षा करे केटा
लक्ष्मण उद्योग करे आन धनुर्व्वाण * अरि बधि करि आमि शोकाग्नि निर्व्वाण
सुग्रीव विविध रूपे रामे के बुझान * कृत्तिवास रचे गीत मधुर आख्यान

१ संकेत २ निवारण ३ सुग्रीव ।

राम-नाम-महिमा

छं० यम कर दमन कीन रावन, तिन-दलन कियेउ प्रभु रामा।
पुण्य-नाम जिन लिये फन्द कटि, दरस न पुनि यम-धामा॥
पातक हरनि पुण्य कै जननी वेद-ऋचा रामायन।
श्रवन, ध्यान, पारायन कीन्हे तुष्ट होत नारायन॥

सर्वप्रधान कर्म जप रामा * कर्म न धर्म, वृथा सब कामा
अन्तकाल जेहि मुख प्रभु-रामा * चढ़ि विमान गमनत सुरधामा
सुयश अहिल्या जग विस्तारा * रघुपति महिमा अकथ अपारा
अश्वमेध-फल सुनि रामायन * खल रत्नाकर सम तारायन
सिथिल न कबहुँ, सदा हिय धारन * राम-सेतु भव-सिन्धु उबारन

दो० वन-वानर के नेह बँधि, दीनन कीन सनाथ।
जल-तैरत पाहन[1], अहो! लीला-लीलानाथ॥
राम-जन्म सों प्रथम ही वत्सर साठि हजार।
राम-भविष्यपुरान किय वाल्मीकि विस्तार॥
वाल्मीकि मुनि वन्दि, किय बंग-काव्य कृतिवास।
देवनागरी माहिं सो यहि विधि भएउ प्रकाश॥ ४॥

सुग्रीव द्वारा सीता-उद्धार की स्वीकृति

कह सुग्रीव, न ज्ञान बिसेसू * केहि विधि वीर गयेउ केहि देसू

राम नाम महिमा

शमन-दमन रावण राजा, रावण-दमन राम।
शमन-भवन ना हय गमन, ये लये रामेर नाम॥
सुकृत जनन, दुष्कृति दमन, श्रुति-सुख रामायण।
श्रवण-मनन, करे जेइ जन, तारे तुष्ट नारायण॥

राम-नाम जप भाइ अन्य कर्म्म पिछे * सर्व्व धर्म्म-कर्म्म राम-नाम विना मिछे
मृत्युकाले यदि नर राम बलि डाके * विमाने चड़िया सेइ जाय देवलोके
श्रीरामेर महिमार कि दिब तुलना * ताहार प्रमान देख गौतम-ललना
पापी जन हय मुक्त बालमीकिर गुने * अश्वमेध फल पाय रामायण शुने
राम नाम लइते भाइ ना करिउ हेला * भव सिन्धु तरिवारे राम नाम भेला
अनाथेर नाथ राम प्रकाशिते लीला * बनेर बानर बन्दी जले भासे शिला
राम जन्म पूर्व्वे षाटि सहस्र वत्सर * अनागत पुराण रचिल मुनिवर
बाल्मीकि बन्दिया कृत्तिवास विचक्षण * शुभक्षणे प्रकाशिला भाषा रामायण

सुग्रीवेर-सीता उद्धारेर अंगीकार

सुग्रीव बलेन सखे ना जानि विशेष * कि जानि केमन वीर गेल कोन देश

१ पत्थर।

तदपि, तात ! कहुँ तासु न त्राना * लै कपि - कटक हरहुँ तेहि प्राना
धैर्य, सखा ! करु धीरज धारन * तव प्रिय शोध, अबेर[1] न कारन
जहँ कहुँ खल रावन कर वासू * जाति गोत कुल सहित विनासू
रुदन तजहु, न शोक बुध[2] करहीं * कातर - शोक, शोक अनुसरहीं
शासन रहित, हरित मम नारी * मैं पसु तबहुँ न बहु मन धारी
त्रिभुवन पूज्य अहो ! तुम रामा * अनुचित तव विषाद हित - वामा[3]
तव प्रिय-मुक्ति, असत[4] जनि भाषी * निश्चय करहुं अनल करि साखी
बहु विधि दिय प्रबोध कपिकेतू * शमन न राम दुसह दुख हेतू
बहु विधि विनय सुकण्ठ सुहाई * सो सुनि उतर दीन रघुराई
दुख कुल, जाति, सखा, सुत, लोका * सर्वोपरि सहभामिनि - शोका
घरनी[5] सों घर - जग - उजियारा * नारी हेतु पुत्र - परिवारा
पितरन श्राद्ध - पिण्ड - अधिकारी * वंश - प्रदीप - दयनि यह नारी
अतिशय सीख सुहृद ! तव पाई * बिसरत सोक न सिय दुखदाई
कहा कहौं प्रभु, कहेउ कपीसा * मैं अनुचर, तव आयसु सीसा
यथा बुद्धि तव काज सवाँरहि * सुधा - गान कृतिवास बखानहिं

राम द्वारा बालि को मार कर सुग्रीव को राज्य दिलाने का वचन

दो० भला प्रयोजन विन कबहुँ को यहि विधि बतरात ।
कहेउ राम, मम दुसह दुख, सुविदित तुम कहँ तात ! ॥ ५ ॥

जथाय जाउक तार नाहिक एड़ान * वानर लइया तार बधिब परान
सम्बर सम्बर मित्र मने देह क्षमा * अविलम्बे उद्धारिब तव प्रियतमा
जथा तथा जाउक से पापिष्ठ रावण * सवंशे मारिब तार ज्ञाति बन्धुजन
विलाप सम्बर राम शोके बाड़े शोक * शोकेते कातर नाहि हय विज्ञलोक
राज्य हारालाम आमि हारालाम नारी * पशु आमि तथापि ता मने नाहि करि
तुमि राम हइयाछ भुवन पूजित * भार्य्या लागि कर खेद अति अनुचित
मिथ्या ना बलिब मित्र अग्नि साक्षीकरि * उद्धार करिब आमि तोमार सुन्दरी
अशेष प्रकारे राजा जन्माय प्रबोध * तथापि बिषम शोक नाहि हय बोध
एतेक बलिल यदि सुग्रीव भूपति * प्रत्युत्तर करेन आपनि रघुपति
ज्ञाति गोत्र पुत्र मित्र शोक पाय लोक * से सबार हइते अधिक भार्य्या-शोक
कलत्र गृहीर हय कलत्र संसार * कलत्र हइते हय पुत्र परिवार
गया श्राद्धे करे पुत्र वंशेर उद्धार * पुत्र दारा पारत्रिक ऐहिक निस्तार
अशेष प्रकारे मित्र बुझाउ आमाय * तथापि कलत्र शोक पासरा ना जाय
सुग्रीव कहेन राम कि कहिते पारि * पालिब तोमार आज्ञा आमि आज्ञाकारि
करिब तोमार कार्य्य आमि यथाज्ञान * कृत्तिवास रचे गीत अमृत समान

राम बालिके मारिया सुग्रीव के राज्य दिवार अंगीकार

श्रीराम ब'लेन मित्र बिना प्रयोजन * हेनकाले हेनकथा कहे कोनजन

---

१ विलंब २ समझदार ३ पत्नी के लिए ४ मिथ्या ५ पत्नी ।

सिय खोजहु, उर संशय नाहीं * कहउ प्रयोजन निज मम पाहीं
कतहुं दुराव[1] न, साधहिं काजू * सुनि विनीत बोलेउ कपिराजू
धरि मन धीर सुनहु रघुवीरा * करहुं निवेदन कछु मम पीरा
हेरि, शाल-तरु आसन लाई * सोहत सखा युगुल सुख पाई
चन्दन-डारि लखन आसीना * पुनि सुग्रीव निवेदन कीना
दुर्जय बालि विपुल दुख दीना * अपमानित तिय-राजु-विहीना !
यहि गिरि गुजर, न आन उपावा * विधि अनुगत प्रभु-दरस दिखावा
दीन भरोस कपिहिं रघुनन्दन * बालिहिं मारि निवारहुँ बन्धन
तुमहिं राज-दुख मोहिं तिय-सोकू * दुहुन बेगि पठवहुँ यमलोकू
बरनहु युगुल बन्धु किमि रारी[2] * सुनहिं कवन केहि विधि अपकारी[3]
रुचिर न रारि[4] मोहिं रघुनाथा * बरनौं सकल सुनौ मम गाथा
भूप महामति 'अक्षय' नामा * हम दोउ तासु सुवन सरनामा[5]
समय पाय पितु स्वर्ग सिधारे * केहि नृप-पद ? परिजनन[6] विचारे
अग्रज बालि अतुल बलवाना * धर्म कर्म रत, समर-प्रधाना
मंत्रिन-मत, सो राजु सम्हारी * बालि कीन पुनि मोहिं अधिकारी
सदा सनेह हास परिहासू * रारि न कहुँ, दोउ सुखद निवासू

आपनि देखिले मित्र आमार ये क्लेश * अवश्य करिबे तुमि सीतार उद्देश
आमाके तोमार ये हइबे प्रयोजन * अकपटे सेइ कार्य्य करिब साधन
सुग्रीव ब'लेन स्थिर कर तुमि मन * सम्प्रति करिब किछू आत्मनिवेदन
बसिते आसन राजा देखे चारिभिते * आनिलेन शालबृक्ष फलेर सहिते
बसेन आनन्दे तदुपरि दुइ जन * चन्दनेर डाल भागि बसेन लक्ष्मण
सुग्रीव बलेन बालि विक्रमे प्रधान * राज्य जाया हरिया करिल अपमान
ए पर्व्वते थाकि राम ना देखि उपाय * हये अनुकूल विधि तोमारे मिलाय
आश्वास करेन सुग्रीवेर रघुवर * बालिके मारिया तव घुचाइबे डर
मम भार्य्या तव राज्य जेइ जन हरे * अविलम्ब ताहारे पाठाव यमघरे
उभय भ्रातार केन हइल विवाद * विशेष शुनिले चाह कार अपराध
सुग्रीव बलेन आमि विवाद ना जानि * विशेष करिया कह शुन रघुमणि
अक्षय छिलेन नामे राज्य महापति * आमार उभय भ्राता ताँहार सन्तति
किछु काल परे पिता पाइलेन स्वर्ग * राज्य दिते उभयेर आसे पात्रवर्ग
ज्येष्ठ भाइ बालि राजा विक्रमे सागर * धर्म्म कर्म्म सदा रत समरे तत्पर
मंत्रीगण ताँहारे दिलेन राज्यभार * परे बालि दिल मोरे राज्य अधिकार
परस्पर परम सौहार्द्य करि वास * ना जानि विरोध सदा हास्य परिहास

१ अलगाव, कपट २ झगड़ा, विरोध ३ बुराई करनेवाला, अपराधी ४ झगड़ा ५ प्रसिद्ध ६ आत्मीयों ने ।

दो० बिलसत राज सप्रीत दोउ, बिधि होनी दुख - दैन ।
दारुन घटित विवाद ज्यों, सुनहु सरोरुहनैन[१] ॥ ६ ॥

मायावी, दुन्दुभि—दुइ भ्राता * दनु[२] दुर्जय, वर दीन विधाता
माया महिष रूप निशिचारी * मायावी निसि बालि हँकारी[३]
सुनेउ निषेध न बाहेर जाई * मैं अनुसरेउँ द्वार जहँ भाई
युगुल बन्धु लखि निसिचर भागा * तेहि खोजत हम दोउ गृह त्यागा
लखेउँ चन्द्रछवि - धवलित देसू * दनु पातकी सुरंग प्रवेसू
कहेउ बालि आवहुँ खल मारी * तब लौं द्वार करहु रखवारी
हटकेउँ[४], दानव - त्रास न शेषू * उचित प्रवेस न संसय - देसू[५]
पद - बिनती मम ताहि न भाई * धाय सुरंग दनुज पहँ जाई
बर्जेउँ[६] पुनि पुनि, देत न काना * पैठि पताल कपीस पयाना
खोजत बालि भ्रमत इक वत्सर * मिलत बधेउ दनु समर अनन्तर
बालि सुभट कृत दानव - घातू * मोहिं प्रतीत नृप बालि - निपातू
नृप हनि पुनि मम हनन प्रसंगा * शिला - रुद्ध किय द्वार सुरंगा
बीतेउ वर्ष बालि नहिं आवा * सब के मन, नृप प्रान गवाँवा
बिलपहुँ अति परि बन्धु - बिछोहा * अहह तात कहँ ? उपजेउ मोहा
अन्तःकर्म शास्त्र - मत कीन्हा * मंत्रिन मोहिं राजपद दीन्हा

विधिर निर्व्वन्ध कभू ना हय खण्डन * विवादेर कथा शुन कमललोचन
प्रीतिरूपे दोंहे करिताम राज्यभोग * हेन काले करिलेन विधाता दुर्य्योग
मायावी दुन्दुभि नामे दुइ सहोदर * पाइया ब्रह्मार वर दानव दुर्द्धर
दुइ भाइ मायाय महिषरूप धरे * मायावी निशीथ भासे जिनिते बालिरे
जुझिवारे जाय बालि सबार निषेधे * पश्चाते गेलाम आमि भाइ अनुरोधे
पलाइल दानव देखिया दुइ जने * आमरा भ्रमन करि तार अन्वेषने
चन्द्र आलोकेते मोरा जाइ देखादेखि * सुड़ंगे प्रवेशे करे दानव पातकी
बालि बले थाकि भाइ सुड़ंगेर द्वारे * यावत् दानव मारि नाहि आस फिरे
आमि कहिलाम दैत्य हैल निरुद्देश * संशय स्थानेते तुमि ना कर प्रवेश
पाये पड़ि बलिलाम तबू नाहि माने * सुड़ंग प्रवेश करे दानव जे खाने
बारे बारे निषेधिनु ना शुने उत्तर * प्रवेश करिल गिया पाताल भितर
दैत्य अन्वेषणे भ्रमे से एक वत्सर * साक्षात् हइले परे बाधिल समर
महावीर दानवेरे करिल आघात * आमि भावि बालि राजा हइल निपात
बालिके मारिया दैत्य पाछे मोर मारे * दिलाम पाथर एक सुड़ंगेर द्वारे
सम्वत्सर ना देखिया हइल संशय * सबे बले बालिर ये मरन निश्चय
कान्दिलाम भ्रात्र शोके आपनि विस्तर * कोथा गेल बालिराजा ज्येष्ठ सहोदर
अन्त:क्रिया करिलाम ताहार विधाने * आमारे करिल राजा सब पात्रगने

१ कमलनयन २ दनुज ३ ललकारा ४ रोका ५ खतरे के स्थान मे ६ मना किया ।

पुनि दलि दनुज नृपति गृह आये * मोहिं नृप लखि, दुर्वचन सुनाये
दो० सुहृद् सचिव परिजन सबन गर्जि तर्जि ललकारि।
सब के सम्मुख डपटि मोहिं कुवचन रहेउ उचारि ॥ ७ ॥
द्वार सुकण्ठ राखि चण्डाला[1] * गमनेउँ दनु - वध हेत पताला
शिला रोपि गमनेउ अविचारी * हिय वासना, हरेसि मम नारी
करगत[2] रानि, राज - अधिकारू * धरा धरति तेहि पातक - भारू
विगत वर्ष, बधि निसिचर आयेउँ * पुनि पुनि द्वार अनुज गोहरायेउँ[3]
विफल गोहार, उतर जनि पाई * पदाघात हनि शिला हटाई
असह सहोदर दुसह अनीती * काटि शीश पावहुँ उर प्रीती
धर्म - अचार - हीन ! तजु देसू ! * खल - मुख - दरस न जीवन लेसू
सुनि बहु विधि बन्दउँ मैं चरना * छमहु तात ! सेवक तव सरना[4]
बन्धु ! न राज - लोभ उर व्यापा * प्रजा हेतु सचिवन मोहिं थापा[5]
सुहृद-सचिव मम हित बहु कहहीं * मम बहु विनय न नृप मन धरहीं
निष्फल विनय - बन्दना सारी * खेदि सरोष देत बहु गारी
पुनि पुनि डपट, न शठ ! तैं सुनही * मुष्टिक एक शीस तव हनहीं
बालि - क्रोध लखि उर भय पाई * अपमानित मैं चलेउँ बराई
यहि अपराध, आजु लौं नाथा ! * भरमत वन - वन दुखित अनाथा
बीती व्यथा सुकण्ठ बखाना * सानुज सुनत राम धरि ध्याना

तार पर दैत्य मारि घरे एल बालि * मोरे राजा देखिया करिल गालागालि
पात्र मित्र बन्धुगणे डाके सवाकारे * सवार सम्मुखे गालि दिलेन आमारे
दानव मारिते आमि गेलाम पाताले * राखिया सुड़ग द्वारे सुग्रीव चाण्डाले
सुग्रीव पाथर दिया तार द्वार रोधे * राज्य महादेवी हरे शृंगारेर साधे
छत्रदण्ड निल मोर निल महादेवी * हेन पातकीर भार धरिल पृथिवी
बत्सरेके दैत्य मारि देशे आसिवारे * सुग्रीव ब'लिया डाकि सुड़ंगेर द्वारे
बहु डाकिलाम तबू ना पाइ उत्तर * पदाघाते घुचाइनु सुड़ंग पाथर
सहोदर भाइ ह'ये करिल अन्याय * माथा काटि इहार तबेते दुःख जाय
दूर ह'रे अधर्म्मिष्ठ दुष्ट दुराचार * ए जीवने तोर मुख ना देखिब आर
पाये पड़ि करिलाम बहु स्तुतिवाद * सेवक हइया थाकि क्षम अपराध
आमार इच्छाय नाहि इह आमि राजा * मंत्रिगण वारिलेक पालिवारे प्रजा
बहु स्तव करिलाम ना शुने बचन * ब'लित आमार लागि बहु पात्र गण
यत बलि पाये पड़ि बालि नाहि शुने * क्रोधे बले यार दुष्ट येखाने सेखाने
बारे बारे ब'लि तबू ना शुनिस कथा * एकटा चापड़ मांगि आय तोर माथा
देखिया बालिर क्रोध भीत ह'ये मने * पलाइया आइलाम एइ अपमाने
एइ अपराधे राम आमि अपराधी * वने वने फिरि दुःखे आमि तदवधि
ब'लिल सुग्रीव पूर्व्व विषाद कथन * एक चित्त शुनिलेन श्रीराम लक्ष्मण

१ अन्यायी २ हाथ मे सुलभ ३ पुकारा ४ शरण ५ स्थापित किया।

बालि द्वारा दुन्दुभि-बध

जहँ संकठ समीप तहँ वासू ? * केहि साहस, कपिनाथ निवासू ?

छं० सुनि सुग्रीव कहत रघुवर सों ऋष्यमूक गिरि-गाथा।
मायावी दानव दुरंत बध कीन जबै कपिनाथा[1] ।।
अनुज दुंदुभी क्रोध रैन-दिन महिष रूप फुफकारत।
विक्रम अतुल गनत जनि काहू, रनहिं सिंधु[2] ललकारत ।।
दीन सिन्धु कहि पाहि पाहि सोचत किमि दनुज नसाई।
शंकर-श्वसुर हिमञ्चल पहँ महिषासुर दीन पठाई ।।
जिमि प्रतञ्च सर तजे, दुन्दुभी निमिष जहाँ गिरिनाथा।
अभिरि सींग पर सींग हनत भूधरपति ठनकेउ माथा ।।
को जग सुभट महिष संहारै सोचि दनुज-गुन गावा।
किष्किन्धापति बालि-बुद्धिबल कहि कहि तैस[3] देवावा ।।
बल-आगर बानर निपाति मधुवन जहँ रम्य प्रदेसू।
तेहि विनामि अधिकार राजु, सुख बिलमहु, दनुज ! असेसू ।।
दो० मायावी तव अग्रजहिं[4] कीन्ह कपीस विनास।
ताहि ताल दै रन किये, तव रन मिटै पियास ।। ८ ।।
मायावी - दुर्गति सुनि काना * बालिभूप - गृह कुपित पयाना

बालिर विक्रम ओ दुन्दुभि-बध

श्रीराम ब'लेन मित्र पड़ेछे सकटे * केमने साहसे थाक देशेर निकटे
सुग्रीव कहेन कथा श्रीरामेर पाश * ऋष्यमुख पर्व्वतेर शुन इतिहास
मायावीर कनिष्ठ से दुन्दुभि महिष * अग्रजेर वार्त्ता शुनि क्रुद्ध अहर्निशि
विक्रमे महिषासुर कारे नाहि गने * समुद्र हाँकारे गिया जूझिवारे मने
समुद्र ब'लेन मम युद्ध ना आइसे * जाह हिमालये चले रणेर उद्देशे
हिमालय पर्व्वत शंकरेर श्वशुर * तार टाँइ गेले तव दर्प हबे चूर
धनुकेर गुणेते येमन बाण छुटे * चक्षुर निमिषे गेल पर्व्वत निकटे
शृंगाघाते पर्व्वतेरे करे खान खान * चिन्तित हइया गिरि करे अनुमान
पर्व्वत जानिल तबे चिन्तिया संसार * याहाते महिषासुर हइबे संहार
ब'लिल, महिषासुर तुमि महाबली * किष्किन्धाय जाह तुमि यथा आछे बालि
बलबुद्धि चूर्ण हबे शुन उपदेश * बालिर मधुर वने करह प्रवेश
राज्यभोग मधुवन राजार भाण्डार * वन भांगि मधु खेये करह छारखार
बालिराज ना सहिबे हेन अपचय * प्राणेते मारिबे तोरे बालि महाशय
तोर ज्येष्ठ मायावी ये छिल महाबली * ताहार मारिल से वनेर राजा बालि
शुनिया ज्येष्ठेर कथा कुपित अन्तरे * तखन चलिल बालि भूपतिर घरे

१ राजा बालि २ समुद्र को ३ ताव, उत्तेजना ४ बड़े भाई 'मायावी' को ।

क्षत - विक्षत बन, शृंग - प्रहारा ❋ रनहिं क्रुद्ध बालिहिं ललकारा
सुनि, प्रचण्ड तत्पर रनहेतू ❋ सहवनितन निर्भय कपिकेतू
रानिन बिच इमि बालि सुहावा ❋ नखतन बिच मनु शशि छबि पावा
महिष सरोष रक्तमय लोचन ❋ वनितन समुख गर्जे पुनि तर्जन
नयन चढ़े, मधुमद घनघोरा ❋ मद्यप - वध न प्रयोजन मोरा
बधहुं न प्रान, अभय तैं आजू ❋ बिलमु रैन कपि! रानि - समाजू
निसि सुख - साज, बहोरि बिहानू[1] ❋ दलि बल - बुद्धि, हरहुँ तव प्रानू
बनितन अन्तःपुरी पठावा ❋ बालि सदर्प असुर गोहरावा
मम बल - बुद्धि - स्वाद रन चाखै ❋ मम कर तोर प्रान को राखै!
यम की दया न मंमय प्राना ❋ बालि - समर परि तासु न त्राना
स्वर्ग - पताल - मर्त्य जे बीरा ❋ मम रन निश्चय तजत शरीरा
करि छल, बचन चहत तैं आजू ❋ काल्हि मरन तव निश्चय साजू
मम रन विपति, कुमति तोहि दीना ❋ विधि - अच्छरन बिबस तोहिं कीन्हा
भाजु भाजु लै भाजु पराना ❋ देहुं आजु शठ! जीवन दाना
महिष कम्प, अति क्रोधित गाता ❋ बालि बहोरि बचन संघाता[2]

दो० प्रथम चोट करु अमित बल बिक्रम जोरि बटोरि।
सहि, बल निरखि, परान तव यहि छन लेहुँ बहोरि ॥ ६ ॥

शृंगाघाते करिल कानन खण्ड-खण्ड ❋ कुपित हइल बालि संग्रामे प्रचण्ड
स्त्रीगण वेष्टित बालि आइल निर्भय ❋ तारागण मध्ये येन चन्द्रेर उदय
रुषिल महिषासुर आरक्तलोचन ❋ स्त्रीगण सम्मुखे करे तर्ज्जन गर्ज्जन
मधुपाने मत्त तुमि घूर्णितलोचन ❋ मत्त जने मारि नाहि मोर प्रयोजन
प्राणदान दिनु तोरे आजिकार तरे ❋ आजि रात्रि वञ्च गिया कौतुक शृंगारे
सुखे रात्रि वञ्च गिया प्रत्युषे विहाने ❋ बल बुद्धि चूर्ण करि बधिब पराने
स्त्रीगणेरे बालि पाठाइल अन्तःपुर ❋ वीर दाप करि बले शुनरे असुर
रणे प्रवेशिले बुझि शक्तिर परीक्षा ❋ पड़िले बालिर हाते नाहि तोर रक्षा
यमराज यदि धरे आछे प्रतिकार ❋ बालिर स्थानेते कार' नाहिक निस्तार
स्वर्ग मर्त्य पाताले यते वीरगन ❋ आइले आमार युद्धे अवश्य मरन
कपटे वाँचिते चाह आजिकार तरे ❋ से कथा थाकुक आजि जाह यमघरे
कुबुद्धि पाइल तोरे मोर सने रन ❋ तोर दोष नाहि तोर ललाटे लिखन
पलाइया जाबे तुइ लइया पराम ❋ आजिकार दिवस दिलाम प्राणदान
कोपेते महिषासुर काँपे थर-थर ❋ पुनश्च ब'लिछे तारे बालि कपीश्वर
आगे मोरे हान तोर बुझिब विक्रम ❋ तार घा सहिया तोरे देखाइबे यम
यत शक्ति थाके तोर तत शक्ति हान ❋ एइ दण्डे आमि तोर बधिब पराम

१ भोर (तड़के) २ वचन प्रहार किया।

बालि द्वारा महिषासुर बध

दुंदुभि कुपित हने दोउ श्रृंगा ※ बालि विदीर्ण अंग - प्रत्यंगा
टरत न भट चत अंग विलोका ※ फूलेउ पाय बसन्त अशोका
बालि - महिष रन कौतुक लरहीं ※ लै तरु - शिला मारु दोउ करहीं
कपि तरु-उपल[1] रहेउ बहु मारी ※ अभिरत दनुज न मानत हारी
सहसा बालि विदीर्ण प्रसंगा ※ दुंदुभि लच्य किये युग[2] श्रृंगा
साधि श्रृंग दोउ बालि सकोपा ※ कर धरि महिष गगन पुनि रोपा
पकरि सींग नभ ताहि उठावा ※ चाक कुम्हार समान चलावा
पुनि कपीस तकि शिला पछारा ※ चूरन अस्थि सीस करि डारा
गिरेउ धरनि दुंदुभी अचेतन ※ पद हनि कपि फेंकेउ इक जोजन
स्रवत फुहार रक्त चहुँ छावा ※ मुनि मतंग तन लाल बनावा
केहि पापी मम तन रँगि दीन्हा ※ मुनि लखि रक्त खेद अति कीन्हा
धोयेउ गात आचमन करहीं ※ तन शुचि करि मन हरि-पद धरहीं
कोप कराल लीन पुनि नीरा ※ शाप दीन मुनि क्रोध अधीरा
खल दुष्कर्म कीन तेहि चरना ※ यहि गिरि[3] देत न संसय—मरना
सुनि मुनि-शाप बालि रहि दूरी ※ पुनि पुनि बन्दति मुनि पद-धूरी
हे मुनि, संकट-सिंधु उबारन ※ अहह कहउ किमि शाप - निवारन

बालि कर्त्तृक महिषासुर-बध

रुषिया महिषासुर दुइ श्रृग मारे ※ खानखान करिया बालिर अंग चिरे
सर्व्वांग विदीर्ण बालि तबु नाहि हटे ※ अशोक किंशुक येन बसन्तेते फुटे
महिष बालिर सहित जूझे चमत्कार ※ पादप पाथरे दोउ करे महामार
मारे गाछ पाथर बालि महिष उपर ※ पराभव नहे दैत्य जूझे निरन्तर
दुइ श्रृंग नत करि बालिरे बधिते ※ बालिर सम्मुखे दैत्य गेल आचम्बिते
दुइ श्रृग बालि तार धरिलेक रोषे ※ श्रृंग धरि महिषेर तुलिल आकाशे
दुइ श्रृग धरि तारे घन देय पाक ※ घन पाके फेरे येन कुमारेर चाक
पाथर उपरे तारे मारिल आछाड़ ※ भागिल माथार खुलि चूर्ण हैल हाड़
पड़िल महिषासुर ह'ये अचेतन ※ पदाघाते फेले तारे एकटि योजन
चतुर्द्दिके छड़ाइल रक्त पड़े स्रोते ※ मातग मुनिर गात्र तितिल रक्तेते
मुनि ब'ले कोन बेटा करिल एमन ※ गाये रक्त देय ये स पापिष्ठ केमन
रक्त प्रक्षालिया करिलेन आचमन ※ पवित्र हइल मुनि स्मरि नारायण
महाक्रोध करि मुनि जल निल हाते ※ अभिशाप दिल तारे कुपिया रागेते
मुनि ब'ले हेन कर्म करिल ये जन ※ ए पर्व्वते एले तार अवश्य मरन
परस्पर शुनि बालि शाप वाक्य तार ※ दूर हैते मुनि पदे करे नमस्कार
दूरे थाकि मुनि-स्थाने याचे परिहार ※ सकटसागरे प्रभु करह निस्तार

१ वृक्ष-पत्थर २ दोनों ३ इस पर्वत पर।

दो० बालि-बचन कातर सुनत, यहि विधि कहेउ मतंग।
अमिट गिरा मम, कबहुँ पद, देहु न यहि गिरि-शृंग ॥ १० ॥

ऋष्यमूक जनि बालि प्रवेसू * शाप - कथा चर्चित दिग्देसू
गिरि पग देत बालि निष्प्राना * बालिहिं शाप मोहिं बरदाना
सुनि सुग्रीव कहेउ रघुराई * देहि बालि हनि तुमहिं रजाई[1]
बालि अगाध बली रघुनाथा * विक्रम तासु सुनहु प्रभु! गाथा
निसि गत जबहिं अरुन अनुसरही * चारि सिन्धु जल सन्ध्या करही
नभ गिरि शृंग फेंकि, पुनि, हाथा * रोकत अति समर्थ कपिनाथा
गिरि उपारि नभ-मण्डल फेंकी * चहुं अस सुनी नयन निज देखी
सप्तद्वीप छिति[2] निमिष[3] भ्रमन्ता * पावत पवन न डग[4]- बलवन्ता
सायक[5] प्रथम बालि - बध टरई * तौ मम प्रान वीरवर हरई
त्रिभुवन तासु सरिस भट नाहीं * सकल वीर अवनत[6] तेहि पाहीं

बालि-बध और सुग्रीव को राज्य देने की राम-प्रतिज्ञा

लछिमन सुनि कपि-कथा अतीता * कहेउ होय किमि तुमहिं प्रतीता
जेते देव दनुज गन्धर्वा * प्रभु - सर एक न समरथ सर्वा
तबहुँ राम प्रति नाहिं भरोसू * किमि कपि होय कहहु सन्तोषू
लखहु दुंदुभी - शव रघुनाथा * पदाघात फेकेउ कपिनाथा

मातंग बलेन मम शाप अखण्डन * ए पर्व्वते कभु तुमि ना कर गमन
सेइ शापे बालि ना आइसे ऋष्यमुखे * देशे देशान्तरे थाकि शुनि लोके मुखे
ऋष्यमुखे आइले से हाराबे परान * बालिके मुनिर शाप तेइ मोर त्रान
श्रीराम कहेन मित्र कहिले सकल * बालिके मारिया करि तोमाके प्रबल
सुग्रीव ब'लेन बालि विक्रम सागर * बालिर विक्रम कथा शुन रघुवर
रजनी जेखन जाय अरुण उदय * चारि सागरेते सन्ध्या करे महाशय
आकाशे तुलिया फेले पर्व्वत शिखर * दुइ हाथे लोफे ताहा बालि कपीश्वर
उपाड़िया पर्व्वत आकाशोपरि फेले * आपनारे परीक्षिते नित्य लोके बले
सप्तद्वीप पृथिवी से निमिषे बेड़ाय * कि क'ब पवन तार संगे ना गोड़ाय
बालिके मारिते यदि ना पार एक वाणे * तबे बालिराजा मोरे बधिबे पराने
महावीर बालिराज ए तिन भुवने * पराभव पाय सर्व्व वीर तार रणे

बालि के मारिबा सुग्रीव के राज्य दिते श्रीरामेर प्रतिज्ञा

सुग्रीवेर कथा शुनि बलेन लक्ष्मण * कोन कर्म्मे तोमार प्रतीत हय मन
देव दैत्य गन्धर्व्व कोथाय हेन वीर * श्रीरामेर एक वाणे के रहिबे स्थिर
हेन राम प्रति तव न हय प्रतीत * कि कर्म करिले तुमि हउ हरषित
सुग्रीव कहेन देख दुन्दुभि पांजर * पाये करि फेलाइल बालि कपीश्वर

---

१ राज्य अधिकार २ पृथ्वी ३ पलमात्र में ४ कदम (चाल) ५ बाण ६ झुकते हैं।

द्रवित - सुकंठ बहत दृग नीरा ❋ दीन भरोस लखन रघुबीरा
दो० बालि एक योजन कहाँ! शत योजन रघुनाथ।
दनु - पञ्जर फेंकेउ, लहैं जिमि भरोस कपिनाथ ॥ ११ ॥
रक्त-चर्म मांसल[1] शव-भारा ❋ जबहिं बालि किय पाद प्रहारा
ठाँठर[2] दनु पाँजर यहि काला ❋ बालि सरिस किमि दीनदयाला
संसय मोहिं, कहेउ सुग्रीवा ❋ तुम कि बालि? को अति बलसींवा
बरनहुँ बालि अतुल बल नाथा ❋ मन दै सुनहु सकल रघुनाथा
चलेउ दिग्विजय हित दसकन्धर ❋ भयो कपीस सहित तहँ संगर[3]
बालि सिन्धु तट सन्ध्या - मग्ना ❋ मूँदि नैन तप - ध्यान निमग्ना
हेरत तहँ आयो सोइ काला ❋ चापेउ[4] पृष्ठ घूमि दसभाला
तजेउ न तप, नहिं कीन लराई ❋ बाँधेउ दसमुख पूँछ घुमाई
पूँछ बाँधि सागर तेहि डारी ❋ छिन बोरत छिन लेत निकारी
ऊछू[5] जात विकल जेहि काला ❋ सागर तप - रत कीस - भुवाला[6]
सन्ध्या कीन्ह सिन्धु - तट चारी ❋ उठेउ, लंकपति बाँधि पुँछारी
रैन निरखि गृह चलेउ कपीसा ❋ छमहु कहत कातर दससीसा
अभय दीन लखि परम विनीती ❋ अति रावनहिं मुक्ति लहि प्रीती
अलबत[7] एक युक्ति प्रभु! भाई ❋ बालि संग मम साधि मिताई

नेत्र नीरे सुग्रीवेर तितिल बदन ❋ आश्वासिय तुषिलेन श्रीराम लक्ष्मण
सुग्रीवेर प्रत्यय निमित्त रघुवर ❋ पदाघाते फेलिलेन दुंदुभि पांजर
फेलिया छिलेन बालि एकटि योजन ❋ फेलेन योजन शत कमललोचन
सुग्रीव ब'लेन शुन राम रघुवर ❋ यखन फेलियाछिल बालि से पांजर
रक्त चर्म्म छिल भारि तुलिते दुष्कर ❋ एखन हयेछे शुष्क नहे तत भार
इहाते केमने राम करि अनुमान ❋ बालिराज हइते ये तुमि बलवान
नाथ रघुनाथ शुन आमार वचन ❋ बालिर विक्रम शुन करि निवेदन
दिग्विजय करिते चलिल दशानन ❋ बालिर सहित युद्ध हइल घटन
सन्ध्या करे बालिराज मुद्रित नयन ❋ पश्चाते धरिते जाय राजा दशानन
युद्ध नाहि करे बालि तप नाहि त्यजे ❋ पृष्ठदिके रावनेरे जड़ाइल लेजे
लांगूले बांधिया फेले सागरेर जले ❋ एक बार डुबाइया आर बार तोले
एइ रूपे तप करे चारि पारावारे ❋ रावन खाइल जल बाँचिते ना पारे
चारि सागरेते सन्ध्या करि समापन ❋ उठिलेन बालि लेजे बाँधि दशानन
रजनी हइल बालि चलि गेल घर ❋ कातरे रावन ब'लि क्षम कपीश्वर
बहु स्तव क्षमे बालि तार अपराध ❋ रावन हइल मुक्त परम आह्लाद
एक युक्ति शुन प्रभु कमललोचन ❋ बालि संगे मिलन कराउ एइ क्षण

---

१ मांस सहित २ सूखी ठठरी ३ युद्ध ४ धर दबाया ५ नाक मुँह मे पानी चला जाना ६ बालि ७ बेशक।

जो प्रभु मिलन होय दोउ भ्राता * दोउ-कर छिन दसकंध - निपाता
दोउ भट बन्धु परस्पर मिलहीं * रावन कुगति सहज पुनि करहीं

दो० धरा समर्थ न बालि सम, दनु[1] आनै धरि केस।
वचन सुनत सुग्रीव के, बोले प्रभु अवधेस ॥ १२ ॥

अगिन समुख मम प्रन यहि देसू[2] * तुमहिं, बालि बधि करहुँ नरेसू
पिता वचन पालन वन आये * कथन अटल मम, सदा निभाये
इतै वचन मृदु रघुपति केरा * लखन बहोरि सुकण्ठहिं टेरा
सप्त ताल तरु एक समाना * करु प्रतीत, बिन्धहिं भगवाना
कहत कपीस कुतूहल नाहीं * नखन बालि नृप बिन्धति ताहीं
बालि-समर समरथ रघुनायक * तौ बेधहिं सातौ इक सायक
बिहँसे प्रभु दस दिसा प्रकासी * कठिन कहा! बोले अविनासी
सुबरन सर[3] अनूप छबि छाई * तरकस काढ़ि लीन रघुराई
दच्छिन कर दृढ़ मुष्टि कराला * सायक[3] चलेउ जितै तरु - ताला
बेधि सप्त तरु आरम्पारा * ऋष्यमूक पुनि बिंधि पहारा
पर्वत बिंधि, बिंधि तरु - ताला * बज्र शब्द सो बेधि पताला
पुनि धरि राजहंस कर रूपा * आयेउ प्रभु ढिग बान अनूपा

मिलन हइले राम दुइ सहोदरे * दोंहे मिलि मारि गिया राजा लंकेश्वरे
भ्राता दुइ जने यदि कराउ मिलन * कोन छार गणि तबे राजा दशानन
पृथिवीर मध्ये केवा बालि राज आँटे * रावणे आनिबे बालि धरि तार जटे
एतेक ब'लिल यदि सुग्रीव वचन * शुनिया श्रीरामचन्द्र कहेन तखन
करियाछि प्रतिज्ञा ये अग्नि साक्षी करि * बालि बधि तोमारे करिब अधिकारी
आमार वचन कभूं ना हय खण्डन * पितृ वाक्य क्रमे आमि आइलाम वन
एतेक ब'लिल यदि कमललोचन * सुग्रीवेरे डाक दिया ब'लेन लक्ष्मण
सात ताल गाछ आछे एकइ सोसर * प्रत्येते तोमारे बिन्धिबे रघुवर
सुग्रीव ब'लेन तबे शुन नरवर * नखेर चापने विन्धे ताहा कपीश्वर
सात ताल गाछ यदि बिन्ध एक शरे * तबे से बालि के तुमि जिनिबे समरे
हासेन श्रीरघुनाथ दीप्त दशदिक * ताल गाछ बिन्धिब, ए कोन अधिक
सुचित्र विचित्र वाण कनक रचित * तून हैते तुलिलेन श्रीराम त्वरित
दृढ़ मुष्टि करि निल दक्षिण हस्तेते * छुटिल रामेर बाण से सात तालेते
सप्त ताल भेद करि वाण हैल पार * ऋष्यमुख पर्व्वत बिन्धिया आगुसार
एक वाणे शैल बिन्धे सप्त गाछ ताल * बज्राघात शब्दे वाण सान्धाय पाताल
राजहंस मूर्तिमान आसिवार काले * पुनर्व्वार वाण एल श्रीरामेर कोले

१ दनुज (रावण) २ स्थान पर ३ बाण।

तरकस पुनि समान[1] बनि सायक * चकित सकल लखि बल-रघुनायक
कपिगन कहत चरन प्रनिपाती * सकहु बालि शत नाथ! निपाती
विक्रम सुविदित, कहेउ कपीसा * तजि बैकुण्ठ प्रकट जगदीसा
तुम सम सखा विरञ्चि मिलाई * तव प्रताप मोहिं मिलै रजाई[2]

बालि - सुग्रीव युद्ध, सुग्रीव पराजय

दो० बोले करुनानाथ, कपि! अब बिलम्ब केहि काज।
बेगि दरस चलि कीजिये, मिलैं जहाँ कपिराज॥ १३॥

रिपु हनि संकट करउँ निवारन * सौंपहुँ सुहृद! तुमहिं सुख सासन
सब बिधि पाय राम - आश्वासन * किष्किन्धा गमने सातौ जन
राज - द्वार रघुपति नियराने * बिटप ओट दोउ बीर लुकाने
द्वारे सिंहनाद - सुग्रीवा * आवै सुनत बालि बलसींवा
होय समर तुम - सन आरूढ़ा * तबहिं हनौं सर एक विमूढ़ा
द्वार सिंह सम गर्जत कीसा[3] * निरखेउ निकसि प्रमाद कपीसा[4]
वीर सदर्प बालि रव[5] घोरा * झपटेउ सबल सहोदर ओरा
अभिरे[6] युगुल अंग प्रत्यंगा * मल्लयुद्ध रत बहु रबरंगा
छन सुग्रीव प्रबल छण बाली * युगुल भार लहि धरती हाली
सिंहनाद गर्जत रन माहीं * दोउ रन करत मलिन कोउ नाहीं

निज मूर्ति धरि बाण तून मध्ये ढोके * रामेर विक्रमे सबे हात दिल नाके
सकल वानर निल राम पद धूल * तुमि पार मारिवारे शत शत बालि
ब'लेन सुग्रीव तव विक्रमेते गनि * बैकुण्ठ छाड़िया प्रभु एसेछ आपनि
मित्र तोमा हेन मोरे दिलेन विधाता * तोमार प्रतापे पाव राजदण्ड छाता

बालिर सहित सुग्रीवेर युद्ध ओ सुग्रीवेर पराजय

श्रीराम ब'लेन विलम्बे कि प्रयोजन * बालिर सहित झाट कराह दर्शन
देखिले शत्रु के मारि घुचाइब डर * सुखे राज्य कराइब तोमा मित्रवर
सुग्रीवेरे देन राम आश्वास वचन * सात जन किष्किन्धाय करेन गमन
राजद्वार निकटे चलेन राम धीरे * वृक्ष आड़े लुकाइया थाकि दुइ वीरे
बालि द्वारे सुग्रीव छाड़िबे सिहनाद * ताहाते अवश्य बालि शुनिबे संवाद
करिबे तोमार संगे समर आरद्ध * एक बाणे बालि के करिब आमि स्तब्ध
बालि द्वारे सुग्रीव छाड़िल सिंहनाद * बाहिर हइल बालि देखिते प्रमाद
वीर दर्प करे बालि अति भयंकर * विक्रमे पड़िल आसि सुग्रीव उपर
हाते हाते माथे माथे बाधिल समर * दुइ भाइ मल्ल युद्ध करे बहुतर
क्षणे हेटे पड़े बालि क्षणेक उपरे * क्षिति टलमल करे उभयेर भरे
दुइ सिंह युद्धे छाड़े येन सिंहनाद * दुइ भाइ युद्ध करे नाहि अवसाद

---

१ प्रवेश कर गया २ राज्य ३ कपि (सुग्रीव) ४ बालि ५ शब्द ६ भिड़ गये।

बसन, बयस लखि रूप समाना * केहि सर हनहिं चकित भगवाना
सुहृद न चीन्हत, जो सर मारैं * भ्रमवस राम मित्र हनि डारैं
बालि बज्र सम मुष्टि प्रहारी * दुसह, सुकण्ठ भजेउ मन हारी
बालि महाबल अतुल प्रतापा * केहि पितु सहन तासु रन-तापा
सुभट महाभट जिन संहारा * किमि समर्थ सुग्रीव बिचारा
ततछन लेत सुकण्ठ - पराना * जानि अनुज दिय जीवन दाना

दो० अंग अंग शोणित रँगे शिथिल प्राय निर्जीव ।
डगमगात इत - उत गिरत - परत भजेउ सुग्रीव ॥ १४ ॥

ऋष्यमूक लीन्ही पुनि सरना * जहँ पग देत बालि कर मरना
मुनि शापित न अनुज सक मारी * चलेउ धाम रिसि - गर्जन भारी
भल लै प्रान पलायन कीन्हा * केहि बल मो सन रन मन दीन्हा
बन्धु मोर, भल गयेउ बराई * मिलत पुनः शठ प्रान गवाँई
उत विषन्न[1] बाली सिंहासन * जर्जर अनुज मूक[2] गिरि पावन
अपमानित सुकण्ठ मन मारे * रामादिक चलि तहाँ पधारे
नत-मस्तक न दीठि प्रभु ओरा * किय अनुयोग[3] सबन प्रति घोरा
बालि - समर यदि जूझत आजू * केहिकर राज, राम केहि काजू
मारत सबल न साहस काहू * को भिरि सकत बालि नरनाहू

देखेन श्रीराम वाण करिया सन्धान * उभयेर वेश भूषा वयस समान
चिनिते नारेन राम सुग्रीव वानरे * बालिके मारिते पाछे निज मित्र मरे
सुग्रीवेरे मारे बालि बज्र सम चड़ * सहिते न पारि ताहा उठे दिल रड़
महाबल बालि राजा अतुल प्रताप * ताहार सहित युद्ध सहे कार बाप
बड़ बड़ वीर गणे करे ये संहार * युद्धारम्भे सुग्रीव वानर कोन छार
तखनि से सुग्रीवेर बधित परान * सहोदर भाइ ब'लि दिल प्रानदान
रक्त रांगा अंग भांगा पलाय सुग्रीव * आगे जाय फिरे चाय प्राय से निर्जीव
ऋष्यमुखे तिष्ठिते सुग्रीव पलाइल * मुनिशाप बालि मने करिया फिरिल
ना पारिया सुग्रीवेर प्रान विनाशिते * घरे जाय बालि राजा गर्ज्जिते गर्ज्जिते
भाल पलाइया गेल लइया जीवन * कि जोरे करिसरे आमार संगे रन
भाल हैल पलाइल हय मोर भाइ * प्रानेते मारिब यदि पुनः देखा पाइ
सिंहासने बसि बालि भावे मनोदुःखे * सुग्रीव जर्ज्जर घाये रहे ऋष्यमुखे
चलिलेन श्रीराम प्रभृति सेइखाने * आछे हेंट मुण्डते सुग्रीव अपमाने
माथा तूलि सुग्रीव रामेरे नाहि देखे * बहु अनुयोग करे सवार सम्मुखे
आजि यदि मरिताम बालिर संग्रामे * के करिते राज्यभोग कि करिते रामे
मारिते नारिबे आगे न ब'लिले केने * बालि संगे तबे केन प्रवेशिब रने

१ विषादयुक्त २ ऋष्यमूक ३ गिला ।

प्रथम कहेउँ दुर्जय प्रख्याता * सहज न कौतुक बालि - निपाता
धरनी सुभट महाभट वीरा * मारहि बालि न अस रणधीरा
रन तो कहा! दरस भयकारी * को तेहि सन रन परै अगारी
जेहि विधि गयेउँ लहेउँ अपमाना * तेहि कर बचत न अबलौं प्राना
ऋष्यमूक गिरि निकट सुहाई * जहाँ विपन्न[1] अभय मैं पाई
दिय भरोस मनु बालि सँहारा * रन ढकेलि[2], निज कीन किनारा
मन आसरा हनत अब बाना * सर न राम कहुं, बचे पराना

दो० शमन मित्र. रघुपति कहेउ, तुम दोउ एक समान।
तुल्य वेष विक्रम वयस, अमित हनेउँ नहिं बान ॥ १५ ॥

चिह्न दिये चीन्हउँ निज ताता * नृप पद लहौ बालि - संघाता
पुनि ललकारि बालि रन लावौ * मनस्ताप निज, मित्र! मिटावौ
प्रभु भरोस लहि रैन विरामा * कृत्तिवास गुण गावत रामा

श्री राम द्वारा बालि-बध

जेहि विधि सकहिं सुकण्ठहिं देखी * लखन देहु कछु चिह्न विशेषी
निसि गत भोर सुमन बहु रूपा * आनि लखन रचि माल अनूपा
कण्ठ सुकण्ठ दीन सो माला * सात सुभट गमने शुभकाला
बन्धु विनासि राजु परिहरही * आगे सबन बेगि डग धरही

तखनि ब'लेछि बालि विषम दुर्ज्जय * ताहारे संहार करा क्षुद्र कर्म्म नय
बड़ बड़ वीर यत मध्ये पृथिवीर * बालिके मारिते पारे नाहि हेन वीर
आछुक युद्धेर काज दरशने भागे * कोन जन युद्ध करे से बालिर आगे
केन वा गेलाम पाइलाम अपमान * एतक्षणे थाकिले बधित मोर प्रान
ऋष्यमुख पर्व्वत निकटे छिल जेइ * ए संकटे रक्षा आमि पाइलाम तेंइ
बालिके मारिब ब'लि करिले आश्वास * आमारे फेलिया रणे हैल एक पास
एखनि मारिबे बाण हेन लय मने * कोथा वाण कोथा राम भाग्ये आछि प्राने
श्रीराम ब'लेन मित्र ना ब'ल बिस्तर * उभयेरे देखिलाम एकइ सोसर
वयसे साहसे वेशे एकइ समान * मित्रवध भये नाहि एड़िलाम वाण
चिह्न दिया मात्र तुमि रणे गेले चिनि * बालिके मारिब राजा हइबे आपनि
पुनः गेले यखन आसिबे रणे बालि * घुचाइब तखन मनेर यत कालो
वञ्चिल सुग्रीव रात्रि रामेर आश्वासे * रचिल किष्किन्धाकाण्ड कवि कृत्तिवासे

श्री राम कर्त्तृक बालि-बध

चिह्न विना नाहि चेना जाय सुग्रीवेरे * चिह्न दिते श्रीराम कहेन लक्ष्मणेरे
रजनी प्रभाते फूल आने नानाजाति * सेइ फले माला गाँथे लक्ष्मण सुमति
लक्ष्मण दिलेन पुष्पमाला तार गले * करिलेन सात वीर यात्रा शुभकाले
राज्य लोभे सुग्रीव मारिते सहोदरे * आगे-आगे चलिल विलम्ब नाहि करे

---

१ मुसीबत का मारा २ युद्ध में झोंक कर।

सधनु लखन धनुधर रघुनाथा * पुनि अनुसरत इतर[1] कपि साथा
देखत चहुँ खग मृग वनचारी * लख लख गज पर्वत अनुहारी[2]
ज्ञानी मुनिन तपोवन माहीं * कदली-वन चहुँ निरखत जाहीं
कहेउ राम कदली - वन हेरी * यहु तपवन रचना केहि केरी
इतै सप्तऋषि किय तप घोरा * जनश्रुति[3] कपि वरनत प्रभु ओरा
बर्ष सहस दस बिन आहारा * करि तप, सरग सतन[4] पग धारा
सबन सप्तऋषि - मण्डल बन्दे * जेहि फल सब विधि कुशल अनन्दे
कपि सचेत किय रघुपति - ध्याना * कान्हि सरिस जनि होय विधाना
निज प्रन पूर्ति करौ रघुनाथा * सिय उद्धार - भार मम नाथा

दो० संसय उर जनि राखिये, करहुँ बचन अनुसार।
मारि लंकपति लंक चलि करौं सिया उद्धार ॥ १६ ॥

बोले राम निरखि तव माला * आजु बधहुँ मैं बालि भुवाला
बालि दरस मम सर सन्धाना * आजु न तेहि पुरगमन विधाना
सप्तताल बेधे सर जेही * सोइ सर सुमिरि शंक तजि देही
अचल सत्य जो वचन प्रकासा * आजु न संसय बालि - विनासा
कपि किय सिंहनाद जहँ बाली * गगन गिरेउ गिरि, धरती हाली
प्रभु बल पाय सुकण्ठ कराला * गर्जत, कम्पित धरा - पताला

श्रीराम लक्ष्मण जान हाते धनुःशर * ताहार पश्चाते चले इतर वानर
मृग पक्षी वनचर देखे स्थाने स्थाने * लक्ष-लक्ष हस्ती देखे पर्व्वत प्रमाने
वनेर भितर देखे अति विलक्षण * मुनिर आश्रमे माझे कदलीर वन
श्रीराम ब'लेन मित्र अद्भुत कदली * काहार सृजन एइ आश्रम मण्डली
सुग्रीव ब'लेन हेथा छिल सप्तमुनि * करित कठोर तप लोकमुखे शुनि
तारा दश हाजार वत्सर अनाहारे * करि तप स्वशरीरे गेल स्वर्गपुरे
सकले बन्देन गिया आश्रम मण्डल * याहारे बन्दिले हय सर्व्वत्र मंगल
सुग्रीव बलेन राम हउ सावधान * कालिकार मत येन ना हय विधान
आपन शपथे मित्र आजि हउ पार * अवश्य करिब आमि सीतार उद्धार
आमार वचन मिथ्या ना भाविह मने * सीता उद्धारिब आमि मारिया रावने
श्रीराम ब'लेन तुमि भूषित मालाय * बालिके बधिब आजि बाँचब तोमाय
बालिके देखिया मात्र चालाइब शर * पुनराय बालि आजि ना जाइबे घर
सप्त ताल विन्धिलाम आमि जेइ वाणे * सेइ बाण स्मरिया निश्चिन्त हउ मने
मिथ्या ना बलिब सत्य ना करिब आन * बालिराज नितान्त हाराबे आजि प्रान
सिंहनाद छाड़िल सुग्रीव बालि द्वारे * आकाश भाँगिया पड़े येन महीधरे
पाइया रामेर बल सुग्रीव प्रबल * सिंहनादे काँपाइल धरा रसातल

१ दूसरे २ के समान ३ लोकचर्चा ४ शरीर सहित।

बालि कुपित सुनि नाद अपारा * कहत दुर्वचन जाहि[1] निहारा
मुख ज्वलंत जिमि अनल - अँगारा * रवि शशि सम चमकत दृग-तारा
दीर्घ तीनि शत योजन वीरा * सत्तर योजन बेंड़[2] सरीरा
कहुँ लघु रूप नकुल[3] सम धरई * करि विस्तार गगन कहुँ छुवई
योजन पूँछ पसारि पचासा * दुगुन किये परसत[4] आकासा
आगरि - बुद्धि[5] बालि कै दारा * पतिहिं समर हित हटकति[6] तारा
शमन, नाथ ! जनि समर पयाना * प्रानन हेत सीख धरि ध्याना
वत्सर शयन समर दिन एका * रन आतुर, साहस अतिरेका[7]
पराभूत - रन पुनि ललकारै * निसचय नीति सुविज्ञ विचारै
क्रोध विबस निज हित बिसराना * लखि तव कर्म, कम्प मम प्राना

दो० नाथ ! तजहु संकल्प - रन, आजु अमंगल जानि ।
मम बानी मन धारिये, पुनि पुनि हटकत रानि ॥ १७ ॥

केहु बल प्रबल अनुज इत आजू * निसचय मोर सरै[8] तव काजू
आयेउ अवसि काहु बल पाई * नतरु निपट दुर्बल किमि आई
रहि रनिवास रैन, रन तजहू * द्वार विफल रिपु - गर्जन करहू
सूर्यवंश दशरथ नृप - नन्दन * तिन सुत युगुल लखन-रघुनन्दन

सिंहनादे कुपिल वानरराज बालि * सम्मुखे याहारे देखे तारे देय गालि
मुखखाना मेले येन ज्वलन्त आगारा * चन्द्र सूर्य्य जिनिया चक्षुर दुइ तारा
सत्तरि योजन तनु आडे परिसर * तिन शत योजन दीघल कलेवर
यदि वाञ्छा करे हय नकुल प्रमान * कखन आकाश जोड़ा हय परिमाण
लागूल करिते पारे योजन पञ्चाश * उभ यदि करे तबे परशे आकाश
तारा महादेवी तार अति बुद्धि धरे * बालिके वारन करे जाइते समरे
कोप सम्वरह रणे न कर गमन * आमार वचन शुन जीवन कारण
एक दिन युद्धे यार वत्सर विश्राम * कि साहसे आसे पुन करिते संग्राम
युद्ध दिया पुनः जूझते हाँकारे * हइले पण्डित लोक अवश्य विचारे
आपना पासर तुमि मत्त हउ कोपे * भाविते तोमार कर्म्म, भये प्रान काँपे
युद्धे ना जाइउ प्रभु शुन मोर वाणी * आजिकार युद्धे आमि अमंगल गणि
कालि गेल तव स्थाने सुग्रीव हारिया * कि बले आइल आजि प्रबल हइया
अवश्य काहार ठाँइ पाइयाछे बल * नतुवा आसिबे केन निजे से दुर्बल
युद्धे ना जाइउ तुमि थाक अन्तःपुरे * डाकिछे सुग्रीव डाके डाकुक बाहिरे
सूर्य्यवंश राजा छिल दशरथ नाम * तार पुत्र दुइ भाइ लक्ष्मण श्रीराम

१ जिसको भी २ चौड़ाई (बेंड़ा) ३ नेवला ४ छूती थी ५ बुद्धि की खान
६ रोकती है ७ सीमा के बाहर ८ बनेगा ।

धरि पितु - बचन भये वनवासी * बल्कल, जटा सीस, संन्यासी
बन - बन भरमत राज - विहीना * तिन - सुग्रीव सुमति मिलि कीना
राजविहीन विविध छल करई * राम - सुकण्ठ संधि लखि परई
यहि अभिसन्धि[1] अतिव उर चिन्ता * आजु न रन तव मंगल कन्ता[2] !
भला - बुरा पुनि अनुज तिहारा * उचित न तेहि सन रारि[3] प्रसारा
धीरज धरहु, कोप जनि योगू * बिलसहु सानुज सासन भोगू
सकल समेटि बन्धु करि हीना * होय विरुद्ध दुखी पुनि दीना
उचित न, प्रभु ! मम सीख उलंघा * अहं[4] विवस अनुचित रबरंगा
सुनहु निवेदन पुनि हिय धारी * धरि पितु वचन राम वनचारी
सत्य - भार तिन दीन विमाता * अर्पेउ राजु राम, लघुभ्राता
वन कर हेतु शत्रु अपकारी * किमि किय तिनहिं राज - अधिकारी
तव पितु सुवन, अनुज सुग्रीवा * दोउ मिलि राजु करहु बलसीवा

दो० कहेउ बालि मोहिं रुचिर जनि, चन्द्रबदनि सुनि लेय ।
शठ सुकण्ठ हित कहत जस, तस तम हिय दुख देय ।। १८ ।।

दुंदुभि दलन सुरंग पताला * गमनेउँ द्वार राखि चण्डाला
रोपि विटप - प्रस्तर अपकारी * धर्म न राखि हरन किय नारी
लेहुँ न जीवन, बाँधि सरीरा * तव आदर, आनहुं तव तीरा

पितृ सत्य पालिते हइल वनवासी * बल्कल परेन शिरे जटा से संन्यासी
राज्य हाराइया तारा भ्रमे वने-वने * मिलियाछे तारा बुद्धि सुग्रीवेर सने
राज्यभ्रष्ट सुग्रीव विविध बुद्धि धरे * सहाय करिया बुझि आइल रामेरे
यद्यपि एमत-हय तबे बड़ भार * नाहि देखि अद्य युद्धे मंगल तोमार
भालमन्द हउक के तबू सहोदर * सहोदर सने जूझ अयोग्य विस्तर
क्षान्त हउ महाराज काज नाहि रागे * सुग्रीव सहित राज्य कर एके योगे
सकले राजत्व करे सुग्रीव वञ्चित * सहिते ना पारे दुःख भावे विपरीत
आमार वचन तुमि ना करिउ हेला * अहंकार ना करिउ संग्रामेर खेला
आर एक कथा प्रभु करि निवेदन * पितृ सत्य हेतु राम आइलेन वन
कैकेयी विमाता तारे दिल्य मत्यभार * कनिष्ठेरे राज्य राम देन अधिकार
शत्रु हैया जेइ जन पाठाइल वने * ताहारे करेन राजा किसेर कारणे
तोमार बापरे बेटा कनिष्ठ सोदर * दुइ भाइ राज्य कर हैया एकत्तर
बालि ब'ले ना भाविह तारा चन्द्रमुखी * सुग्रीव लागिया ब'ल यत हय दुःखी
दानव मारिते आमि गेलाम पाताले * राखिलाम सुड़गेर द्वारे से चण्डाले
वृक्ष प्रस्तरेते से सुड़ग द्वार ढाके * आमार महिला हरे जाति नाहि राखे
तोमार कथाय तारे ना मारिब साने * हाते गले बान्धि दिब तोमा विद्यमाने

१ षड्यंत्र २ हे स्वामी ! ३ झगड़ा ४ अहंकार।

नृपमणि ! सुनहु, कहत पुनि तारा * दोषी सचिव, न बन्धु बिचारा
परिजन सचिव सुमति सब साधा * दीन राज्य, जनि तेहि अपराधा
धरि मम वचन भीख मोहिं दीजै * कतहुं न तात ! आजु रन कीजै
खण्ड खण्ड छिति, भूधर टरहीं * रवि-ससि रघुपति - सर परि जरहीं
राम आगमन जासु सहाई * हे प्रभु ! तबहिं त्रान कहँ पाई
असत बचन कस ? कह कपिकेतू * मारहिं राम मोहिं केहि हेतू ?
पर हित राम न करहिं अधर्मा * संशय राम न, सुनु, प्रिय ! मर्मा[1]
सत्य - धर्म रघुपति गुनरासी * कारन सत्य भये बनवासी
कबहुँ न तिन सन मोर विवादू * लरहिं न मिथ्या सुनि अपवादू[2]
बिन अपराध रोष केहि कारन * पुनि पुनि कहत राम किमि आवन
तदपि सहाय होयँ जो रामा * अडिग करउँ अविचल संग्रामा
रानि - वचन कछु बालि न माना * कुपित सिंह सम गर्जि पयाना
नारि नयन जल छल-छल करई * रन पयान पति मंगल धरई

दो० जानि पुनः दुस्तर समर, निरखि न पति - निस्तार ।
किष्किन्धापति - भामिनी बिलपत विकल अपार ॥ १६ ॥

आय बालि चहुँ दीठि पसारी * तहँ सुग्रीव, न इतर[3] निहारी

तारा ब'ले शुन राजा करि निवेदन * सुग्रीवेर दोष नाइ दोषी पात्रगण
पात्रगणे राज्य दिल करिया सन्तोष * सुग्रीव हइल राजा तार नाहि दोष
करह आमारे रक्षा राखह वचन * आजिकार दिन तुमि ना करिह रन
क्षिति खान खान हय पर्व्वत उपाड़े * चन्द्र सूर्य आदि श्रीरामेर वाणे पोड़े
रामेर सहाय करि यदि से आइसे * तबे ब'ल प्राणनाथ रक्षा पावे किसे
बालि ब'ले ब'ल केन असत्य वचन * मारिवेन श्रीराम आमारे कि कारण
परेर कथाय कि करिवेन अधर्म्म * रामके ना भय करि शुन तार मर्म्म
सत्यवादी राम बड़ सत्ये धर्म्मे मन * सत्येर कारण तिनि आइलेन वन
कखन रामेर संगे मोर नाहि वाद * तिनि केन मारिवेन मिथ्या बिसम्बाद
आमि दोषी नइ राम रुषिवेन किसे * पुनः पुनः कह केन राम बुझि आसे
तबे यदि सुग्रीव साहाय्ये आसे राम * तबू नाहि भंग दिव करिब संग्राम
रुषिया चलिल बालि सिंहेर गर्ज्जने * ना रहित तारा महादेवीर वचने
यात्राकाले महादेवी करिल मंगल * किन्तु तार नेत्रे जल करे छलछल
अन्तरे जानिया तारा कान्दिल विस्तर * एवार निस्तार नाहि समर दुस्तर
बाहिर हइया बालि चतुर्द्दिक चाय * एका सुग्रीवेरे मात्र देखिवारे पाय

१ रहस्य २ निन्दा ३ कोई दूसरा ।

दोउ भट अभिरि परस्पर लरईं * ठेलि, घेरि, कमि रिपु बस करईं
लपिटि दाँव पर दाँव चलावैं * मारामार प्रहार मचावैं
मानत हार न वीर ममाना * दंगल प्रहर[1] मल्ल दोउ ठाना
विक्रम दुगुन बालि बलसींवा * लहि चपेट कातर सुग्रीवा
बज्र मुष्टि हनि उर तेहि मारा * मुख अचेत स्रव[2] शोणित धारा
लखि सम्मुख सुग्रीव अचेता * लीन दिव्य सर कृपानिकेता
भीत सुकण्ठ भजत[3] अनुमाना * ओट राम रहि सर संधाना
जगमग दस दिसि छूटत बाना * भिदेउ बालि - हिय बज्र समाना
हाहाकार पकरि हिय बाली * दारुण सर केहि हनेउ कुचाली
शूल पीठ - उर हलब मुहाला[4] * प्रबल श्वास, सर चोट बेहाला[5]
धरनि विलोटति सुरपति-सुवना[6] * अस्त - व्यस्त तन भूषन बसना
कृत्तिवास मन अतिव विषादा * धर्मरूप किमि कीन प्रमादा

बालि द्वारा राम की भर्त्सना

छटपटाति छिति बालि भुवाला * धाये तहँ रघुवीर कृपाला
हनि मृग, व्याध जात मृग पाहीं * बालि समीप राम तिमि जाहीं
शोणित नयन राम प्रति लखही * कड़कड़ दन्त दुर्वचन कहही

बालि सुग्रीवेरे युद्ध लागे हुड़ाहुड़ि * हुड़ाहुड़ि दुइ जने करे बेड़ाबेड़ि
बेडाबेडि दुइ जने करे जड़ाजड़ि * जड़ाजड़ि दुइ जने करे मारामारि
कह कारे नाहि पारे उभये सोसर * दुइ जने मल्ल युद्ध एकटि प्रहर
सुग्रीव हइते बालि द्विगुण प्रखर * एकटि चापड़े तारे करिल कातर
बाले बज्रमुष्टि जे मारिल तार बुके * अचेतन सुग्रीव शोणित उठे मुखे
सुग्रीवेर अचतन देखिया सम्मुखे * श्रीराम ऐषिक वाण जुड़िया धनुके
सशक सुग्रीव प्राय करे पलायन * आड़े थाकि राम वाण करेन क्षेपण
दशदिक् आलो करि सेइ वाण छुटे * बज्राघात सम वाण बालि बुके फुटे
बुक धरि बालिराजा करे हाहाकार * कोन जन करिलए दारुण प्रहार
बुक पृष्ठे भार जे नाड़िते नारे पाश * एक वाणे पडे बालि घन बहे श्वास
पाड़लेक बालिराजा इन्द्रेर नन्दन * गायेर भूषण खसे अगेर वसन
कृत्तिवास पण्डितेर थाकिल विषाद * धार्म्मिक रामेर केन घटिल प्रमाद

बालि कर्त्तृक श्रीरामके भर्त्सना

भूमे पड़ि बालिराजा करे छट्पट् * धाइया गेलेन राम ताहार निकट
मृग मारि व्याध येन धाइल उद्देशे * धाइया गेलेन राम से बालिर पाशे
रक्त नेत्रे श्रीरामेर पाने चाहे बालि * दन्त कड़मड़ करि देय गालागालि

---

१ एक प्रहर तक २ रक्त-धार बहती थी ३ भागता ४ हिलना कठिन ५ व्याकुल ६ बालि ।

दो० तारा कीन निषेध मोहिं, अमिट विरञ्चि - विधान ।
अहह ! कीन विश्वास मैं, पतित समुझि सद्ज्ञान ॥ २० ॥

जनमि राजकुल - धर्म न ज्ञाना * केहि विधान मम लीन्हेसि प्राना
गैंड़ा, कूर्म, शशक अरु साही * गोह पञ्चनख, भक्षत जाही[1]
नहिं तिन मध्य सुनहु रघुबीरा * रक्त मांस जनि भक्ष्य शरीरा
मृग नहिं शाखामृग[2] तरुचारी * चर्म न मम आसन अधिकारी
निर्दोषी कपि - बध केहि काजू * नीति न धर्म, रहित तैं राजू
देश - हरन केहिं दीन्हेउँ क्लेशा * बिन अपराध आयु मम शेषा
कुल न हीन रघुवंश - कुमारा * जग तव धर्म प्रशंसति सारा
केहि विधि धर्म - कर्म विस्तारा * छलि बिन दोष महाभट मारा
कहत लोग तुम दया - निवासू * दया - पुञ्ज तव आजु प्रकासू
धरि मुनि रूप भ्रमत बन जाहीं * केहि वध करैं, सदा मन माहीं
जनश्रुति राम धर्म - अवतारा * प्रकट आजु तव धर्म - अचारा
कौतुक लखत लरत दुइ भाई * मारेहु बालि कवन सुख पाई
कबहुँ न दीख सुनी नहिं बाता * केहु रन इतर करै अपघाता
सम्मुख समर न मर सन्धाना * नतरु चपेटि हरत तव प्राना
मम सन संगर प्रकट कठोरा * ह्वै तरु ओट हनेउ जिमि चोरा

निषेधिल तारा मोरे विविध विधाने * करिलाम विश्वास चण्डाले साधुज्ञाने
राजकुले जन्मियाछ नाहि धर्म्मज्ञान * आमिरे मारिले राम ए कोन विधान
शशक गण्डार कूर्म्म गोधिका शल्लकी * भक्षणीय जन्तु हय एइ पचनखी
तार मध्ये केह नहि शुन रघुवीर * आमार शोणित मांस भक्षेर बाहिर
आमार चर्म्मेते नाहि हइबे आसन * मृग नहि शाखामृगे कोन प्रयोजन
निर्दोषी वानर आमि मार कोन कार्य्ये * एइ हेतु अधिकार ना पाइले राज्ये
कोन देश लुटिया कारे दिलाम क्लेश * कोन दोषे करिला आमार आयु शेष
हीन वंशे जन्म नहे जन्म रघुवंशे * धार्म्मिक ब'लिया सब तोमारे प्रशंसे
ए कोन धर्म्मेर कर्म्म करिले ना जानि * विना अपराधे विनाशिले महाप्रानी
सबे ब'ले रामचन्द्र दयार निवास * यत दया तोमार ता आमाते प्रकाश
तपस्वीर वेशे राम भ्रम एइ वने * काहार बधिब प्रान सदा भावे मने
सर्व्वलोक ब'ले राम धर्म्म अवतार * भाल राम देखाइले सेइ व्यवहार
भाइ भाइ द्वन्द्व करि देखह कौतुक * आमारे मारिया तुमि कि पाइले सुख
कोथाउ न देखि हेन कखन ना शुनि * एक सहित युद्धे अन्ये जन हय खूनी
सम्मुख संग्रामे यदि मारितेहे वाण * एकटा चपेटा घाते बधिलाम प्राण
सम्मुख संग्राम मने बुझिया कठोर * तेंइ राम आमारे बधिल'हे चोर

१ गैंडा, कछुआ, खरगोश, साही, गोह—ये पाँच नखवाले जीव भक्ष्य कहे गये हैं
२ बन्दर ।

तुमहिं प्रकट मैं अतुलित वीरा * मम रन नहिं समर्थ रणधीरा
दो० बैरी मम सुग्रीव तेहि कारन किय अपघात[1]।
बिन विवाद दुर्नीति तुम राम कीन उत्पात ॥ २१ ॥
बिन अपराध मारि कपिराजा * केहि मुख जइहौ साधु - समाजा
दशरथ धर्मधुरीन कहाये * कुल-द्रुम राम वंश तिन जाये
सदा धर्म दशरथ मन माहीं * तुम कदापि दशरथ - सुत नाहीं
पितु गौरव, तजि धर्म विहीना * संग - सुकण्ठ नीच मन दीना
सिद्धक-साधक पापिन जोगू * नतरु होत मोहिं किमि दुखभोगू
बिन कपि-कृपा न तव निस्तारा * तौ मोहिं किमि न दीन यहु भारा
एक छलांग सिन्धु के पारा * एक दिवस महँ सिय - उद्धारा
क्षत्रिय - सुवन विवेक न कीन्हा * अधम सचिव केहि सम्मति दीन्हा
शत शत वीरन बालि सँहारा * कहा छुद्र दसकन्ध बिचारा
बाँधि पूँछ, जब रन हित आवा * सिंधु बोरि पुनि पुनि उतरावा
बंधन ढील भएउ, गृह आई * गहि पद क्षमा पाय नभ जाई
त्रिपुर[2] जयी शिवप्रिय दशग्रीवा * तेहि समता कहँ खल सुग्रीवा
अधिकाधिक बिलम्ब यदि हेतू * सिन्धुमात्र बाधा रघुकेतू
जो मोहिं राम मिलत यहु भारा * दिवस एक महँ सिय - उद्धारा

ज्ञात आछ आमार जेमन आमि वीर * आमार सहित युद्धे केह नहे स्थिर
सुग्रीव आमार वादी साधि तार वाद * अविवादे तुमि केन करिले प्रमाद
केमने देखाव मुख साधुर समाजे * विना दोषे कपटे बधिया बालि राजे
दशरथ राजा तिनि धर्म्म अवतार * ताँर वंशे हइयाछ कुलेर अंगार
महाराज दशरथ धर्म्मे रत मन * तार पुत्र तुमि ना हइबे कदाचन
धर्म्महीन मान्य छिले बापेर गौरवे * मिलिले साधिते इष्ट पापीष्ठ सुग्रीवे
पापी पापी मिलनेते पापेर मन्त्रणा * नतुवा आमार केन हइबे यन्त्रणा
वानर हइते कार्य्य करिबे उद्धार * तबे केन आमारे ना दिले एइ भार
एक लाफे पारावार हइताम पार * एक दिने करिताम सीतार उद्धार
राजपुत्र तुमि राम नाहि विवेचना * कोन छार मन्त्री सह करिले मन्त्रणा
करिताम कत शत वीरेर संहार * आमार सम्मुखेते रावण कोन छार
रावण आसियाछिल रण करिवारे * लेजे बाँधि डुबाइनु चारि पारावारे
लेजेर बन्धन तार किष्किन्धाय खसे * पाये पड़ि आमार से उठिल आकाशे
त्रिलोक विजयी शिवभक्त दशग्रीव * कि करिबे ताहार निकटे ए सुग्रीव
यदि हय हइबे विलम्ब बहुतर * मध्ये एक व्यवधान प्रबल सागर
यद्यपि आमारे राम दिते एइभार * एक दिने करिताम सीतार उद्धार

१ विश्वासघात २ तीनो लोक ।

धरि दशकन्ध कण्ठ सो लावत * सदा तुमहिं सेवक सम ध्यावत
मैं उपयुक्त भार कपिराजा * चीन्हति मोहिं सब वीर समाजा

दो० बालिराज इमि राम प्रति विविध भर्त्सना कीन।
कृत्तिवास कृत लेखनी मन विषाद अति लीन ॥ २२ ॥

श्रीराम के प्रति बालि-विनय

बोले राम, बालि! धरु धीरा * सुनु कपिकुल तैं अद्भुत वीरा
बहु भर्त्सन[1] किय बालि नरेसू * कहु दुर्वचन अबहिं यदि शेषू
युग-युग भूमण्डल नरराया * केहि आखेट[2] तजेउ करि दाया
वन तृन गुजर न कछु अपराधा * पुनि मृग हेत बनत नृप व्याधा[3]
जनि कछु दोष बसत जल मीना * भक्ष्य भद्र जन तिन कहँ कीना
खग-मृग बसत विपुल वन माहीं * व्याध फन्द सों तिन गति नाहीं
मम सासन[4] बिलसत पर दारा * चहुँ दिसि पाप पाप-सञ्चारा
पातक मुक्त कीन मम सायक * हेतु न ताप, स्वर्ग फलदायक
करि सुग्रीव भक्त प्रतिपालन * बधहिं सदा तेहि शत्रु अपावन
कीन मित्रता पावक साखी * सकहुँ न रिपु-सुकण्ठ मैं राखी
अग्रज[5] तुम सुकण्ठ - सन्माने[6] * अधिक कथन जनि उचित लखाने
तुम सन उचित न मम रन-साजा * छमहु कपीस देहु जनि लाजा

आनिताम रावणेरे धरिया गलाय * सेवक हइया राम सेवित तोमाय
ए हेन विचित्र भार आमि बालिराज * आमारे ना जाने कोन वीरेर समाज
विस्तर भर्त्सिल रामे रण-स्थले बालि * कृत्तिवास ब'ले केन रामे देह गालि

श्रीरामेर प्रति बालिर विनय

श्रीराम ब'लेन बालि शुन ह'ये स्थिर * वानर जातीर मध्ये तुमि बड़ वीर
आमिके करिले तुमि अनेक भर्त्सन * आर यदि थाके किछु कह कुवचन
पृथिवीते यत राजा आछे युगे युगे * दया करि कोन राजा छाड़ियाछे मृगे
घास खाय वने चरे नाहि अपराध * तबु मृग मारिते राजार ह'य व्याध
मत्स्यगण जले थाके हिंसे ब'ल काके * तारे वध करे केन बड़ बड़ लोके
पशुपक्षी सर्व्वस्थाने थाके सर्व्व वने * व्याधगण अविरत तारे केन हने
आमार राज्येते थाकि कर परदार * सेइ पापे मम राज्ये पापेर सञ्चार
मम वाणे तोमारे हइल मुक्त पाप * स्वर्गे जाह बालि केन करह सन्ताप
भक्त हेन सुग्रीवेरे करिब पालन * ताहार ये शत्रु तार बधिब जीवन
करियाछि मित्रता पावक साक्षी करि * कोथाउ ना राखि आमि सुग्रीवेर अरि
सुग्रीवेर ज्येष्ठ तुमि परम गर्व्वित * तोमार अधिक ब'ला नहेत उचित
तोमार सहित युद्धे मोर नाहि साजे * क्षमा कर कपिराज केन फेल लाजे

---

१ तिरस्कार, झिड़की २ शिकार ३ बहेलिया ४ राज्य में ५ बड़े भाई ६ सुग्रीव के पूज्य।

छमहु वीर, विधि-लेख विचारौ * मम प्रसाद सुरपुरी सिधारौ
सुरपति-सुत ! धरि सुरपति-वेसू * गमन करहु सुरपुर निज देसू
त्रिभुवनपति पूजित मैं जानी * मन विषन्न ! अनुचित मम बानी
छमहु राम बन्दौं तव चरना * दोउ अंगद-सुकण्ठ तव सरना

दो० राजु समर्पन अनुज कहँ, करहु नाथ स्वीकार।
अंगद सुवन सनाथ करि देव यथा अधिकार ॥
दाता, कर्त्ता नाथ तुम सबके सिरजनहार।
अंगद पुनि सुग्रीव दोउ, तव अब धर्मकुमार ॥ २३ ॥

सुता-सुषेन रानि गृह तारा * दुख जनि लहै, सुकण्ठहिं भारा
पावन पद अति पायेउ कीसा * तजौ व्यथा बोले जगदीसा
राम-राम प्रभवति कपिनाथा * मम दुर्वचन छमहु रघुनाथा
बालि-बचन सुनि राम हुलासा * किष्किन्धा कृतिवास प्रकासा

तारा-विलाप एवं राम को अभिशाप

प्रभु-सर रन परि बालि विनासू * तारहिं खबरि मिली रनिवासू
सम्हरति केस वसन जनि आली * अंगद सहित चली जहँ बाली
सचिवन[1] त्रसित भजत मग माहीं * अश्रुमुखी पूछत तिन पाहीं
सब विधि योग्य सखा नृप केरे * तिन तजि कहँ अपकीर्ति[2] बटोरे

क्षमा कर वीर तव दैवेर लिखन * आमार प्रसादे जाउ महेन्द्र भुवन
इन्द्र-पुत्र तुमि धर महेन्द्रेर वेश * अमरावतीते जाह आपनार देश
बालि ब'ले त्रिभुवने तुमित पूजित * व्यथित हइया ब'लिलाम अनुचित
क्षमा कर धारि राम तोमार चरण * सुग्रीव अंगदे तुमि करह पालन
सुग्रीवेरे राज्य दिते करिले स्वीकार * अंगदेरे दिले तुमि कोन अधिकार
तुमि दाता तुमि कर्त्ता तुमि त विधाता * सुग्रीव अंगदेर धर्म्मतः हउ पिता
सुषेण दुहिता तारा आछे गृहमाझे * सुग्रीव ना दुःख देय तार कोन काजे
श्रीराम ब'लेन चिन्ता-गत कपिराज * पवित्र हइले तुमि कथाय कि काज
श्रीरामे विनये कहे बालि जोड़ हाथ * विरूप वचन क्षमा कर रघुनाथ
बालिर वचन शुनि रामेर उल्लास * रचिल किष्किधाकाण्ड कवि कृत्तिवास

बालिर मृत्युते तारार विलाप ओ श्रीरामेर प्रति अभिशाप

रणे पड़े बालिराज श्रीरामेर वाणे * अन्तःपुरे थाकि ताहा तारादेवी शुने
वस्त्र ना सम्वरे रानी आलुयित केशे * अंगदेरे ल'ये जाय बालिर उद्देशे
पथे देखे मंत्रिगण पलाइछे त्रासे * अश्रुमुखे तारादेवी सबारे जिज्ञासे
तोमरा राजार पात्र छिले तार साथी * तारे छाड़ि जाउ केन राखिया अख्याति

१ मंत्रियों से २ भाग कर अपयश ले रहे हो !

कपिगन कहत सुनहु ठकुरानी * कलह बन्धु युग[1], किय अति हानी
रानि ! कथन तव आगे आवा * रघुपति-सर नृप प्रान गवाँवा
रहु रनिवास सैन चहुँ ओरा * दुख तजि नृप करि बालिकिशोरा[2]
राज्य भार अंगद सुत हेतू * संग जाहुँ, मम धन कपिकेतू
कर सिर धुनत न वस्त्र सम्हारा * रनस्थली चहुँ रानि निहारा
तजि सर चाप थपे रघुनाथा * समुख लखन दोउ जोरे हाथा
मौन, सबन मुख चुप्पी छाई * सकल रहे तहँ माथ लचाई
वेगि बालि जहँ, प्रस्तुत तारा * पति - दुर्गति लखि हाहाकारा

दो० विपुल सुभट तुम सन कबहुँ, लरि न सके, घननाद[3] ! ।
छिति लोटत सर एक यह, अघटन[4] दैव-विषाद[5] ॥ २४ ॥

कथन न मम सुनि, साहस कीन्हा * तव न दोष, विधि विपदा दीन्हा
नयन मूँदि मोहिं त्यागेउ नाथा * तुम विन अंगद निपट अनाथा
अथये[6] चन्द्र अस्त नभ-तारा * नाथ अस्त तारहिं अँधियारा
शासन हित सुकण्ठ अपकाजू * कीन दुखित कपि अखिल समाजू
रुदन बिसूरि[7] कृशोदरि तारा * सुनि किष्किन्धा रुदन अपारा
छिति लोटत अंगद सन्तापा * बालि-मरन मृग-विहग[8] विलापा

कपिगन ब'ले शुन तारा ठाकुरानी * दुइ भाइ विस्तर करिल हानाहानि
तुमि यत ब'लिले इहार विद्यमान * श्रीरामेर वाण बालि हाराइल प्राण
चारि भिते सैन्य दिया राज अन्तःपुरी * अंगदेर राजा कर शोक परिहरि
तारा ब'ले राज्य निये थाकुक अंगद * स्वामी संगे जाब आमि एइ ए सम्पद
शिरे करे कराघात वस्त्र न सम्बरे * रणस्थले रानी चतुर्दिके दृष्टि करे
धनुर्व्वाण छाड़िया बसिया रघुनाथ * लक्ष्मण सम्मुखे तार करि जोड़ हाथ
कारो मुखे नाहि शोना जाय कोन कथा * सकले बसिया आछे हेंट करि माथा
बालिर निकटे तारा चलिल सत्वरे * स्वामीर दुर्गति देखि हाहाकार करे
मेघेर गर्ज्जन तुल्य तोमार गर्ज्जन * बड़ बड़ वीर सहे के तोमार रण
श्रीरामेर एक वाणे लोटाउ भूतले * एके असम्भव कर्म्म विधि देखाइले
मम वाक्य ना शुनिले करिले साहस * तोमार नाहिक दोष विधाता विरस
मूदिले नयन नाथ त्यजिया आमाय * तोमा विन अंगदेर ना देखि उपाय
चन्द्र जान अस्त तार सगे जाय तारा * तोमार हइल अस्त केन रहे तारा
राज्य लोभे सुग्रीव करिल एइ काज * कान्दाइल किष्किधार विशिष्ठ समाज
एतेक ब'लिया कान्दे तारा कृषोदरी * ताहार क्रन्दने कान्दे किष्किधानगरी
बालक अंगद कान्दे मृत्तिका शयने * पशु पक्षी आदि कान्दे बालिर मरने

---

१ दोनों भाई २ अंगद ३ मेघ के समान गर्जन करने वाले वीर ४ अनहोनी
५ भाग्य का कोप ६ अस्त होने पर ७ याद करके रोदन ८ पशु-पक्षी ।

रोवत लखन बिकल सब जीवा * मुख मलीन रघुपति सुग्रीवा
रघुकुल जनमि, कहेउ पुनि तारा * छल करि पति मम किमि संहारा
रन प्रतच्छ[1] करि लखत प्रतापू * हनेउ बिटप लुकि, दारुन तापू
जनश्रुति दयासिन्धु भगवाना * भल दीन्हेउ तुम तासु प्रमाना
मम सब बिधि तुम निपट बिनासी * सुग्रीवहिं प्रति दया प्रकासी
सिय-बिछोह परिचित रघुबीरा * सो मम हित किमि दारुन पीरा
दीन न शाप! सदय मम नाथा * लहि मम शाप भरहु रघुनाथा
निज बल बिक्रम सिय उद्धारी * बहु श्रम करि आनहु गृह नारी
बेगि बियोग, सिया कर शोकू * कछु दिन निबसि लहै सुरलोकू
किष्किधा निमग्न जिमि शोका * अवध[2] सशोक लहै सुरलोका

दो० सती, सती, जो मैं सती, भारत-भूतल माहिं।
सीय बिना कलपत कटैं सदा दिवस तव पाहिं॥ २५॥

अमिट, राम! यहु मम अभिशापू * सिय कारन तव तन संतापू
बिगलित होयँ सिया हित प्राना * जीवन कटै सदा दुख-साना[3]
कहँ रघुपति कहँ बानरि हीना * गर्जति, 'किय मोहिं सकल बिहीना'
करहु न दर्प, 'अहौं जगनाथा' * कर्मभोग-बन्धन सब साथा
बिन अपराध बधेउ कपिनाथा * अन्य जन्म तव बध तिन[4]-हाथा

थाकुक अन्येर कथा कान्देन लक्ष्मण * श्रीराम सुग्रीव दोहे विरस वदन
तारा ब'ले राम तव जन्म रघुकुले * आमार स्वामी के केन विनाशिले छले
सम्मुखे मारिते यदि देखिते प्रताप * लुकाय मारिले पाइलाम बड़ ताप
श्रीराम तोमारे सबे ब'ले दयावान * भाल देखाइले आजि ताहार प्रमान
एक बारे आमार करिते सर्व्वनाश * सुग्रीवेर प्रति दया करिले प्रकाश
विच्छेद यातना यत जानत आपनि * तबे केन आमारे हे दिले रघुमनि
प्रभु शाप नाहि दिले सदय हृदय * आमि शाप दिब तोमा फलिब निश्चय
सीता उद्धारिबे राम आपन विक्रमे * सीतार आनिबे घरे बहु परिश्रमे
किन्तु सीता ना थाकिबे सदा तव पाश * किछु दिन थाकिया करिबे स्वर्गवास
कान्दाइले जेइ रूप किष्किन्धानगरी * कान्दाइया अयोध्या जाइबे स्वर्गपुरी
आमि यदि सती हइ भारत भितरे * कान्दिबे सीतार हेतु चिर दिन घरे
आमि दिलाम शाप ना हबे खण्डन * सीतार कारणे राम हबे ज्वालातन
सीतार कारणे तुमि प्राण हाराइबे * ए जन्मेर मत दुःखे काल काटाइबे
वानरी हइया तारा रामेरे गरजे * एतेक सम्पद मोर तोमा हेतु मजे
इहा मने न करिह आमि नारायन * कर्म्ममत फलभोग करे सर्व्वजन
विना दोषे जेमने मारिले कपीश्वरे * मारिबे तोमारे पुनः पर जन्मान्तरे

१ सम्मुख युद्ध करके २ सारी अयोध्या ३ दुखभरा ४ बालि रूपी व्याध।

सदा सती-बाचा फुर[1] होई * तेहि परि मुक्ति-उपाय न कोई
लै पति अंक सखेद विलापू * बालि छीन बोलत लखि तापू
सुनु प्रेयसी, वचन मम तारा * रामहिं बहु दुर्वचन उचारा
मम कुवचन रामहिं अति लाजा * पुनि तव रोष सरै कस काजा
हरन लंकपति किय वैदेही * रावन-दोष मरन मम एही
राम निदोष[2] अमिट विधि-रीती * तव कुवचन तिन वृथा अप्रीती
तारहिं बालि प्रबोध प्रकासा * मरन काल अनुजहिं सम्भाषा
तैं सुग्रीव सहोदर मोरा * चलेउ विवाद दुहुन अति घोरा
तव विषाद पायेउँ फल आजू * निश्चय मोर मरन तव राजू
भावी[3] तुमहिं न दोष प्रसंगा * राज-भोग दोउ लिखा न संगा
अंगद पलेउ राज सुख भोगू * तेहि पद धूरि धूसरित जोगू

दो० मम सूने तुम जनक सम, प्रतिपालहु निज जानि।
कबहुँ मिलैं संताप जनि, अभय करहु सुत मानि ॥ २६ ॥

जो मैं होत, न होत अनाथा * सौंपहुँ कुअँर आजु तव हाथा
अइह राम सर दारुन पीरा * छनहिं प्रान अब तजत सरीरा
दीन सुवन हित सुरपति माला * अर्पन तुमहिं अनुज यहि काला

सतीर वचन कभु ना हबे खण्डन * जाहा ब'लि ताहा नाहि हबे विमोचन
खेदे तारा कान्दे कोले लइया बालिरे * ताँहार क्रन्दने बालि ब'ले धीरे धीरे
शुन तारा प्रेयसी तोमारे आमि ब'लि * आमि बहु रामेरे दियाछि गालागालि
आमार वचने बड़ पाइलेन लाज * तुमि मन्द ब'लिया साधिबे कोन काज
सीतारे हरिया निल लंकार रावन * रावनेर अपराधे आमार मरन
विधिर निर्ब्बंध दिल रामेर कि दोष * गालि दिले श्रीराम हबेन असन्तोष
तारा प्रति दिल बालि प्रबोध बचन * मृत्युकाले सुग्रीवेरे करे सम्भाषण
बालि ब'ले सुग्रीव तुमि ये सहोदरे * तव संगे विसम्वाद हइल विस्तरे
तोमार विषादे मोर एइ फल हय * तुमि राज्य कर आमि मरिहे निश्चय
तव दोष नाहि मोरे विधाता विमुख * एकत्र ना हइल दोहार राज्य सुख
राजभोगे बाड़ालाम अंगद सुन्दर * पदतले लोटे पुत्र धूलाय धूसर
अंगदेरे भाइ तुमि नाहि दिउ ताप * आमार विहने तुमि अंगदेर बाप
अंगदेरे भयेते अभय दिउ दान * पालन करिउ एरे पुत्रेर समान
आमि यदि थाकिताम हइत पालने * एइ लह अंगदेरे कपि समर्पने
दारुण रामेर वाण पुड़े ए शरीर * क्षणेक थाकिया प्रान हइबे बाहिर
इन्द्रमाल दियाछेन पुत्रेर सन्देश * सुग्रीवेरे दिह से देखुक एइ वेश

१ सच्ची २ बेकसूर ३ होनहार।

अनुमति लीन बालि प्रभु पासा * दिव्य अनुज गर माल प्रकासा
अनुज माल, पुनि सुवन निहारी * अन्तकाल कछु गिरा उचारी
मम गौरव जिमि दीन बड़ाई * प्रति - सुग्रीव करहु मन लाई
मन मम दर्प कबहुँ जनि आनौ * पितु सम पितु - भाई सन्मानौ
जहँ सुग्रीव - प्रीति तहँ प्रीती * तेहि विपरीत तोर विपरीती
सेवा तासु धर्म शुभकर्मा * दोउ जीवन करु सफल सधर्मा
यहि विधि कहत तजे कपि प्राना * प्रस्तुत सुरपति कीन विमाना
काल कराल न गति कोउ जाना * रन - थल महासुभट अवसाना[1]
चढ़ि विमान सुरपुरी सिधारा * इत विषादमय विलपत दारा
सिर धुनि तजत आभरन तारा * छन अचेत छन हाहाकारा
बेनी खसि, गर मुक्ताहारा * छिन्न - भिन्न सहचरिन सम्हारा
पति बिछोह दृग सरसत नीरा * प्रभु ! तव विन मम दहति सरीरा
अहह ! कहाँ तव गज - पाट - धन * कहँ तव दिव्य रत्न सिंहासन

दो० प्रान हरेउ सुग्रीव तव, तुम विन सब अँधियार ।
कहँ अंगद तव प्रान सम, कहाँ राज - संसार ॥ २७ ॥

जिन विक्रम काँपत त्रयलोका * विधिगति तव यह दशा बिलोका
रघुपति - सर दारुण हिय माहीं * पाप - सुकण्ठ[2] फले हम पाहीं

श्रीरामेर ठाँइ बाले लय अनुमति * सुग्रीवेरे गले दिल धरे नाना ज्योति
सुग्रीवेरे माला दिया पुत्र पाने चाहे * मृत्युकाले अगदेरे परिमित कहे
बाड़िले येमत पुत्र आमार गौरवे * सेइमत बाड़ाइबे तोमाय सुग्रीवे
अहंकार ना करिह आमार कखने * खुड़ार करिउ सेवा आमार विधाने
सुग्रीवेर विपक्ष से जानिउ विपक्ष * सुग्रीवेर जेइ पक्ष सेइ तव पक्ष
अधर्म न करिह करिह सेवा कर्म * खुड़ार करिउ सेवा परापर धर्म
एत ब'लि बालि राजा त्यजिल परान * प्रेरण करेन इन्द्र ताखनि विमान
कालेर कुटिल गति के बुझिबे स्थिर * रणस्थले शयन करिल महावीर
विमाने चड़िया गेल अमरावतीते * हाहाकार करि तारा लागिल कान्दिते
शिरे करि कराघात त्यजे आभरन * क्षणे हाहाकार करे क्षणे अचेतन
छिड़िर मुक्तार माला खसिल कवरी * धरिया राखिते तारे नारे सहचरी
पति हाराइया तारा नेत्रे धारा बहे * ब'ले प्रभु तोमार विहने प्रान दहे
कोथाय रहिल तव राज्य पाट धन * कोथाय तोमार दिव्य रत्न सिंहासन
सुग्रीव हइल तव प्राणेर आपद * कोथाय रहिल तव प्राणेर अंगद
कोथाय रहिल तव ए राज्य ससार * तोमार विहने देखि सब अन्धकार
त्रिभुवन कम्पमान तोमार विक्रमे * तोमार एमन दशा मम भाग्यक्रमे
रामेर दारुण वाण विद्ध वक्षस्थले * सुग्रीवेर यत पाप आमार ता फले

---

१ मुरझा गया २ सुग्रीव ।

बालि - तनहिं सर अनुज निकारा * बही तीव्र तहँ शोणित धारा
कातर भामिनि करत बिलापा * परिजन - बचन बुझावत तापा
कलपत रानि धरति जनि धीरा * करि अनुरोध कहेउ हनु[1] बीरा
धैर्य सती करु धीरज धारन * काल - धर्म जनि होय निवारन
बालि इन्द्र - सुत पुण्यश्लोकू * हरि - प्रसाद गमनेउ पितुलोकू[2]
अंगद, सकल समाज तिहारा * करहु, रानि ! प्रतिपाल हमारा
नैनन अंगद लखहिं नरेसू * रानि ! धीर धरि तजहु कलेसू
सावन झरी झरै दृग धारा * अकथ कथा, बोलति इमि तारा
जो अंगद नृप ? तौ कस बीती * राम - सहाय सुकण्ठ न प्रीती
भल अनभल सुत, मोर न भारा * करि सहमरन[3] तरौं सब भारा
गौरव - नारि स्वामि के साथा * वृथा सुवन, जब मातु अनाथा[4]
लखि तिय रोष मोद पति लेहीं * सहति न सुवन बैन, तजि देहीं
धर्म कर्म पति सर्व विधाता * पति तिय-मोद-मुक्ति कर दाता
स्वामि सती - सेवा अधिकारी * पति बिन लहति न गति कहुँ नारी

दो० बुध जन कहत अनन्य गुरु सम्पति स्वामि अनन्य ।
तिय-कर्त्ता दाता सकल स्वामि विधाता धन्य ।। २८ ।।

शतपुत्री बिन स्वामि विचारी * कहत अभागिनि जग तेहि नारी

बुक हैते सुग्रीव काड़िया निल बाण * बालिर रक्तेते नदी बहे खरसान
कान्दिते कान्दिते तारा हइल कातर * पात्र मित्र मिलि देय प्रबोध उत्तर
कान्दे महादेवी तारा ना माने प्रबोध * हनुमान ब'ले कत करि अनुरोध
शोक परिहर रानी सम्बर क्रन्दन * एमन कालेर धर्म के करे खण्डन
परम धार्म्मिक बालि इन्द्रेर नन्दन * रामेर प्रसादे जान पितार भुवन
अंगदेरे पालह पालह सबाकारे * सकलि तोमार रानी आछे ए संसारे
अंगद हइबे राजा देखिबे नयने * परित्याग कर शोक धैर्य्य धर मने
नेत्र नीर झरे येन श्रावनेर धारा * ना कहिले नहे तेइ कहे रानी तारा
शुन वीर राजा यदि अंगद हइबे * श्रीरामेर कि साहाय्य सुग्रीव करिबे
भाल मन्द पुत्रेर जे नाहि मने करि * स्वामी सह मरिले सकल दाय तरि
नारीर गौरव यत स्वामी सब जाने * कि करिते पारे पुत्र स्वामीर विहने
पुत्रेर ब'लिले मन्द अवश्य से रोषे * स्वामीर ब'लिले मन्द मने मने हासे
सर्व्व धर्म्म कर्म्म स्वामी नारीर विधाता * कामिनीर स्वामी हय सुख मोक्षदाता
स्वामी सेवा करिवेक यदि हय सती * स्वामी विना स्त्री लोकेर आर नाहि गति
स्वामी दाता स्वामी कर्त्ता स्वामी मात्र धन * स्वामी बिना गुरु नाइ ब'ले ज्ञानी जन
शतपुत्रवती नारी यदि स्वामी-हीना हय * तथापि सकले तारे अभागिनी कय

---

१ हनुमान २ इन्द्रलोक ३ पति के साथ सती होकर ४ बिना पति की ।

विकल रानि इमि करत विलापा * लखि संताप सुकण्ठहिं व्यापा

बालि-संस्कार

बोले हरि, प्रिय! तजहु विषादू * दोष न काहु, विरञ्चि प्रमादू
हे कपिराज! शोक परिहरहू * अन्तःकर्म - बालि द्रुत करहू
चन्दन अगुरु सुकाष्ठ मँगाई * राजबसन अरु अभरन लाई
गात विशाल वहन करि पावैं[1] * बाहक बाछि[2] कटक सों आवैं
कहेउ लखन हनुमत! धरि-धीरा * यथा प्रयोजन आनहु वीरा!
गृहभण्डार प्रविसि हनुमाना * आनेउ रत्न आभरन नाना
चतुर्दोल नृप अद्भुत वसना * देस - विदेस विविध धन रतना
शिविका[3] लिए बालि शव वीरा * गये गरिन् जहँ पम्पा तीरा
चन्दन काष्ठ चिता सजवाई * बालिराज शव शयन कराई
राज-साज किंशुक[4] बहु भाँती * तारा पुनि पावक[5] प्रणिपाती
बालि - बन्धुगन धरेउ अँगारा * अकथ कथा तिन रुदन अपारा
राम सरन लहि पाप विनासा * किष्किंधा गायेउ कृतिवासा

सुग्रीव द्वारा राज्य प्राप्ति

कपिगन चलि जहँ राम सुहाये * प्रभुहिं पवनसुत वचन सुनाये
नृप सुग्रीव, नाथ! तव कारन * पद तव चहत कपीस पखारन

कान्दिते कान्दिते तारा हइते विह्वल * तारार क्रन्दने हय सुग्रीव विकल

बालिर संस्कार

श्रीराम ब'लेन मित्र ना कर विषाद * कार दोष नाइ दैव पड़िल प्रमाद
सम्बर शोक तुमि वानरेर राज * त्वरा करि करह बालिर अग्निकाज
शुष्क काष्ठ आन मित्र अगुरु चन्दन * राज आभरन आन बसन भूषण
वृहत शरीर तार करिते वहन * बाछिया कटक आन बालिर वाहन
लक्ष्मण ब'लेन हनुमान हउ स्थिर * सर्व्व प्रयोजन तुमि आनह बाहिर
हनुमान सान्धाइल बाहिर भीतरे * नाना रत्न आभरन आनिल बाहिरे
राज चतुर्दोल आने विचित्र वसन * बिलाइते आने आरो बहुमूल्य धन
राज चतुर्दोल निया तुलिले बालिरे * सकले लइयागेल पम्पा नदी तीरे
चन्दन काष्ठेर चिता करिल से तीरे * बालि राजे शोयाइल ताहार उपरे
राज योग्य चिता करे नाना पुष्पजाति * तारा महादेवी करे वैश्वानरे स्तुति
अग्निकार्य्य बालिर करिल बन्धुगण * ताहार क्रन्दन कत करिब वर्णन
राम नाम शरणेते शापेर विनाश * रचिल किष्किन्धा काण्ड कवि कृत्तिवास

सुग्रीवेर राज्य प्राप्ति

सकल वानर गेल राम विद्यमान * सुग्रीवेर इंगिते ब'लेन हनूमान
तोमार प्रसादेते सुग्रीव हैल राजा * वाञ्छा करे सुग्रीव तोमार करे पूजा

---

१ ले चल सकें २ छाँट कर ३ पालकी ४ फूल ५ वैश्वानर अग्नि।

दो० तव आयसु अन्तर्सदन[1] चलि निवसैं कपिनाथ।
किन्तु प्रवेश न देत मन बिना संग रघुनाथ ॥ २६ ॥

कहेउ राम जनि नगर प्रवेसू * पितु के बचन वास वनदेसू
चौदह वर्ष फिरहिं वन - कानन * केहि विधि समुचित नगर मँझावन
अतः सम्हारहु शासन - भारू * ह्वै नृप राज्य करौ अधिकारू
बालि निपाति सहेउँ अति लाजा * अंगद सुवन करहु युवराजा
सम्मति लै तारा महरानी * शासन करहु ताहि सन्मानी
सावन पावस कीन प्रवेसू * चलै कटक-कपि निज-निज देसू
वन-वन भरमि सहेउ बहु क्लेसू * बर्षा बिलसहु राजु नरेसू
वर्षा विगत रुकै दिन चारी * समुचित, तात ! दण्ड अधिकारी
आयसु राम भयेउ कपि, सदना * दान वसन बहु दीन्हे रतना
सिंहासन सुग्रीव असीना * छत्र दण्ड युत सासन कीना
सिंहासन सुघरी[2] पग दीना * चवँरादिक चहुँ कपिगन लीना
आयसु - राम शिला कै रेखा * लै जलसिंधु कीन अभिषेका
कीन तिलक, किष्किन्धा - भारा * अर्पित कीन मञ्जुकटि - तारा
लहि सुकण्ठ तारहिं[3] अति तोषू * नृप-तिय रानि होय जनि दोषू
बादि सुकण्ठ अंगदहिं राजू * राम - बचन किमि होय अकाजू

पाइले तोमार आज्ञा जाय अन्तःपुरे * अन्तःपुरे श्रीराम जाइबे एकत्तरे
श्रीराम ब'ले पुरे ना करि प्रवेश * वने वास करिवारे पितार आदेश
चतुर्द्दश वत्सर भ्रमिब वने वने * नगरे केमने आमि करिब गमने
सुग्रीवेर श्रीराम बलेन लउ भार * राजा हइया तुमि राज्य कर अधिकार
वालि के मारिया बड़ पाइलाम लाज * एइ हेतु अंगदेरे कर युवराज
महादेवी तारार करह पुरस्कार * ताहार मन्त्रणाय करिह व्यवहार
आइस श्रावण मास वरिषा प्रवेश * शाखामृग कटक थाकुक निज देश
वने वने भ्रमिया पाइले बड़ दुःख * वरिषार किछु दिन कर राज्य सुख
वर्षा गेले घरे जे थाकिबे एक दण्ड * ताहार करिब मित्र समुचित दण्ड
श्रीरामेर आज्ञाते से गेल अन्तःपुर * नाना वस्त्र रत्न दान करिल प्रचुर
सुग्रीवे करिते राजा एल राज्यखण्ड * सिंहासन बाहिर करिल छत्रदण्ड
शुभक्षणे सुग्रीव बसिल सिंहासने * चारिदिके चामर ढुलाय कपिगने
श्रीरामेर आज्ञा येन पाषाणेर रेख * सागरेर जले तारे करे अभिषेक
छत्रदण्ड दिल आर किष्किन्धा नगरी * अभिषेक करि दिल तारा कृशोदरी
राजा-स्त्री राणी इहाते कि दोषे * तारा पाइया सुग्रीवेर बड़ह सन्तोषे
श्रीरामेर अलंघित वचन प्रमाणे * अंगदेर अभिषेक करे अवसाने

१ महल मे २ शुभ घड़ी मे ३ तारा को।

अंगद सचिवन किय युवराजू * 'राम-बाण' किय कपिन समाजू
दो० माल्यवान एकान्त गिरि बहति सुवास समीर।
आकुल सिय हित, कोस दुइ, रहे जाय रघुवीर ॥ ३० ॥
दिव्य सरोवर चहुँ गिरि सोहा * गिरि निवास रघुपति मन मोहा
धवल सीत निसि पूनम चन्दा * तरु फल फूल विविध सुखकंदा
तबहुँ न रामहिं कहुँ सुख-छाहीं * सिय विन वृथा सकल सुख आहीं
असन-सयन कछु मनहिं न भावा * दिवस रुदन निसि जागि बितावा
नित कपिपति विलास मन दीना * निसि-दिन राम सीय-सुधि छीना
कनक पर्यंक[1] शयन कपिनाथा * तरुतर इत सोवत रघुनाथा
चतुर्मास सिय हेत विलापू * कपि उत सुमुखिन मगन प्रलापू
रुदन निरन्तर राम अधीरा * लखन प्रबोधि[2] देत बहु धीरा
वीर! धीर धरि तजहु प्रमादू * महापुरुष जनि उचित विषादू
अतिव शोक चहुं लोक प्रवादा * हरत बुद्धि व्यापत उन्मादा
शोक सदा अज्ञान सतावै * ज्ञानसिंधु प्रभुपहँ किमि आवै
काम क्रोध जीतेउ तुम वीरा * शोक पाय किमि नाथ अधीरा
शमन, तात उर त्यागहु शंका * लावहुँ सहित लंकपति लंका

करिल अंगदेरे युवराज पात्रगण * रामजय ब'लि डाके सब कपिगण
सीतार लागिया राम सदा क्षुण्ण मन * वरिषा वञ्चिते जान गिरि माल्यवान
दुइ क्रोश अन्तरेते थाकेन रघुवीर * तथा बहे पर्व्वतेते सुगन्धि समीर
वासा करि थाकिलेन पर्व्वत शिखर * स्थाने स्थाने पर्व्वतेते दिव्य सरोवर
नानाविध वृक्षेते विचित्र फूल फल * धवल रजनीपूर्ण चन्द्र सुशीतल
रामेर सुखेर हेतु ना हय किञ्चित् * सीता विना सर्व्व सुखे श्रीराम वञ्चित
शयन भोजन ताँर किछु नाहि मने * दिन जाय रोदनेते रात्रि जागरणे
राज्य भोग सुग्रीवेर बाडे दिन दिन * रात्रि दिन श्रीराम सीतार शोके क्षीण
सुवर्ण पालंके शोय सुग्रीव भूपति * तरुतले श्रीराम करेन निवसति
दिव्य सुन्दरीते सुग्रीवेर अभिलाष * सीता लागि श्रीराम कान्देन चारि मास
कान्दिते कान्दिते राम हइल कातर * ताँहारे लक्ष्मण देन सुबोध उत्तर
तुमि वीर हउ स्थिर त्यजह प्रमाद * महापुरुषेरा हने ना करे विषाद
कातर हइले शोके निन्दा करे लोके * शोके बुद्धि नाश हय क्षिप्त हय शोके
शोकेते आच्छन्न होय ये जन अज्ञान * शोक कर केन राम ह'ये ज्ञानवान
तुमि वीर काम क्रोध कर पराजय * शोकस्थाने पराभव केन तव हय
क्षान्त हउ रघुवीर चिन्ता कर दूर * लंकेश्वर सहित आनिब लंकापुर

१ पलँग २ समझा बुझाकर।

प्रभु - आयसु सेवक जो पावै * आनि सिया, दसकन्ध नसावै
कहा बिसात[1] लंकपति, लंका * करहुँ विनास अकेल निसंका
बीतेउ बिलपत स्रावन मासू * राम - रुदन बरनत कृतिवासू

सीता-शोक में राम-अनुताप

दो० आठ मास हित संचयति चारि सिंधु जल पूरि।
अवनि-ताप पावस हरति, सिय-संताप न दूरि ॥ ३१ ॥

लखन! कथन मम धरहु न काना * वर्षा कुटिल हरेउ मम ज्ञाना
रवि ससि ढकत मेघ जिमि घोरा * लेय सीय - दुख जीवन मोरा
जलद माझ दामिनि जिमि सोहा * मम मन अंक मैथिली मोहा
जल थल एकमयी चहुँ अहई * किमि कपि कटक कितहु पग धरई
नभ सों झरत सतत[2] जलधारा * जलमय धरनि भूधराकारा
कहुँ न पन्थ, दुर्गम सब देसू * सब विधि दुर्लभ सिय - उदेसू[3]
किमि सुकण्ठ टेरहिं यहि काला * 'चलि खोजहु सिय कीसभुवाला'[4]
मग जल तजि, नद-नदी सुखाहीं * बिन तेहि सुफल मनोरथ नाहीं
तब लौं अस्थि-चर्म अवसेसू * मम बिछोह-सिय प्रान न सेसू
रिपु - बिच सीय अनाथिनि एका * पार करै किमि मास अनेका
मम तजि आन न उर वैदेही * बधै दनुज लखि, संसय एही

आज्ञा कर विज्ञवर सेवक लक्ष्मणे * जानकीर उद्धार करि नाशिया रावणे
कोन छार लंका से रावन कोन छार * एका आमि करि प्रभु सबार संहार
कान्दिते कान्दिते गेल से श्रावण मास * रामेर क्रन्दन गीत रचे कृत्तिवास

सीतार शोके श्रीरामेर अनुताप

नीर अष्टमासेर बरिषाकाले पोषे * मेघ सञ्चारिया चार सागरे वरिषे
वरिषार धाराते पृथिवी छाड़े ताप * सीतारे स्मरिया राम करेन सन्ताप
आमार वचने कर लक्ष्मण आरति * दुरन्त वरिषा ऋतु स्थिर नहे मति
सूर्य्य चन्द्र दोंहे बरिषार मेघ ढाके * आमिन मरिब भाइ जानकीर शोके
सजल जलद शोभे विद्युत जेमन * जानकी आमार कोले छिलेन सेमन
चतुर्द्दिक जल स्थल सब एकाकार * केमने हइबे कपि सैन्य आगुसार
जलधर निरंतर वरिषे आकाशे * जलमग्ना धरणी धरणीधर भासे
ए समये सुग्रीवेरे कहिब किमते * कटक लइया चल सीता उद्धारिते
नद नदी शुकाइबे शुष्क हबे पथ * तबे से हइबे मम सिद्ध मनोरथ
तत दिन सीता हबे अस्थि चर्म्म सार * कि जानि त्यजे वा प्रान विरहे आमार
एकाकिनी अनाथिनी शत्रु मध्ये वास * केमने बाँचिबे सीता एइ कय मास
आमा विना जानकीर आर नाहि मन * एइ क्रोधे पाछे तारे बधे दशानन

१ कीमत, हस्ती २ निरन्तर ३ सीता की खोज ४ कपिराज सुग्रीव।

कड़्यत सीय सुनिश्चित मरना * तव बस [illegible] मित्र के बस ना
खग न ! सिंधु उड़ि निरखहिं पारा * हतभागिनि सिय-शयन-अहारा
सदा विलाप राम जनि आसा * शोक कथा करनत कृतिवासा

सीता-उद्धार हेतु सुग्रीव को ताड़ना

पावस बीती, शरद प्रवेसू * तबहुँ न चेत, न सिय-उदेसू[2]
दादुर[3] लोप न घन घहराहीं * विमल नखत ससि छवि नभ माहीं

दो० दिन बीते, मनु सिय मरन, थिर न मोर मन प्रान।
चहुँ तम, तात! कपीस-तुम[4] काहु न बस कल्यान ॥ ३२ ॥

युगुल पुरुष - तिय धृत[5] संसारा * नारि स्रोत सन्तति परिवारा
तिय सों सुवन सार - संसारू * विन सुत तरत न पारावारू[6]
गया पिण्ड तर्पन अधिकारी * बन्धु! जगत सुत-सम्पति भारी
तिय-सुत-परिजन[7] काहु न त्यागा * विन सुत कहत निपूत अभागा
करत श्राद्ध तेहि मुख जे देखी * वृथा श्राद्ध, मत शास्त्र विशेषी
रतन अमोल बन्धु इमि दारा * सुत कर स्रोत, पलत परिवारा
जेते गोत बन्धु कुल लोका * सर्वोपरि सहभामिनि शोका
निर्दय मोहिं सुग्रीव न भावत * मतिय केलि निज धाम मनावत

कान्दिते कान्दिते सीता मरिबे निश्चित * कि करिबे भाइ तुमि कि करिबे मित
पक्षी हैया उड़े जाइ सागरेर पार * अभागी सीतार देखि शयन आहार
कान्देन सर्व्वदा राम करिया हताश * रामेर क्रन्दन रचे कवि कृत्तिवास

सीता उद्धारेर जन्य सुग्रीवेर प्रति ताड़न

वरिषा हइल गत शरत् प्रवेश * तथापिउ ना हइल जानकी उद्देश
भेकेर निनाद गेल मेघेर गर्ज्जन * निर्म्मल चन्द्रमा तारा प्रकाशे गगन
मन प्राण स्थिर नहे सीतार लागिये * मरिवेक सीता बुझि गेल दिन वये
कि करिबे भाइ तुमि कि करिबे मिते * सब अन्धकार मोर सीतार मृत्युते
स्त्री पुरुष दुइ जने धरे छे संसार * भार्य्याति सन्तति हय बाड़े परिवार
स्त्री थाकिले पुत्र हय संसारेर सार * पुत्र ना थाकिले तार गति नाहि आर
पिण्ड देय गयाय से करये तर्पण * संसारेर मध्ये भाइ पुत्र बड़ धन
स्त्री पुत्र परिवार केह नहे छाड़ा * पुत्र ना थाकिले लोके बले आट कुड़ा
तार मुख देखि श्राद्ध करये ये जन * श्राद्ध क्रिया वृथा तार शास्त्रे कय हेन
अतएव शुन भाइ भार्य्या बड़ धन * ताहाते सन्तति हय संसार पालन
ज्ञाति बन्धु सहोदर मरे यत लोक * सबार अधिक भाइ स्त्रीर बड़ शोक
सुग्रीव आमाके नाहि भावे से निर्दय * स्त्री पाइया केलि करे आपन आलय

---

१ अथवा २ सीता की खोज ३ मेंढक ४ सुग्रीव और तुम लक्ष्मण ५ धारण
६ संसार-सागर ७ कुटुम्ब।

हनेउ बालि मैं कपिपति-काजू * परि सुख-भोग न मम सुधि आजू
तेहि हित कीन विवेक न धर्मा * लहेउँ लाज बध-बालि अधर्मा
मम बल किष्किन्धा अधिकारा * यहि छन कपि मम अर्थ[1] बिसारा
बन्धु ! गमन किष्किंधा करहू * गाथा उचित तासु ढिग धरहू
बोले लखन, जाय कपिधामा * देखहुँ कस सुकण्ठ बलधामा
जाति कुटुम्ब गोत यत - लोकू * सबन अबहिं पठवहुँ यमलोकू
अति निश्चिन्त सकल बिसराई * हनहुँ एक सर सकल नसाई
बिलपत इत भरमत रघुनाथा * उत पर्यंक रमत कपिनाथा

दो० अनुज ! मित्र-वध उचित जनि लेहु काज डरपाय ।
बाम चाप कर दहिन सर, चले लखन तहँ धाय ॥ ३३ ॥

दृग सरोष अति कोप कराला * डगमग धरती सरग पताला
द्वार कपि-सदन लखन सुहाये * तहँ ससैन अंगद लखि पाये
लखन कोप लखि कपि भयभीता * प्रणवति वानर सकल विनीता
छुद्र बहुल कीसन तजि धीरा * फाँदि बराय चले प्राचीरा[2]
कहेउ लखन सुनु बालिकुमारा * कहु सुकण्ठ आगमन हमारा
भ्रमत विकल हम नित बनदेसा * उत पर्यंक[3] सुखसैन कपीसा
बन दोउ भाइ फिरहिं सिय हेतू * रत्नासन सुचित्त कपिकेतू

ताहार लागिया आमि मारिलाम बालि * आमाके ना स्मरि कपि राजभोगे भुलि
बालि के बधिया आमि पाइलाम लाज * धर्माधर्म ना भाविया साधि तार काज
किष्किन्धा पाइल कपि आमार कारणे * एखन आमार कर्म्म नाहि करे मने
एइ क्षणे जाउ भाइ किष्किन्धा नगर * समक्षे ब'लिबे तारे उचित उत्तर
लक्ष्मण ब'लेन जाइ किष्किन्धा नगरे * देखिब केमन आजि सुग्रीव वानरे
ज्ञाति बन्धु ताहार कुटुम्ब यत आर * पाठाइब सबाकारे शमनेर द्वार
निश्चिन्ते बसिया आछे आपना ना चिने * सुग्रीवे मारिया आजि पाणि एक बाणे
तुमि प्रभु रघुनाथ बेड़ाउ कान्दिया * कौतुके सुग्रीव थाके पालंके शुइया
बुझाइया लक्ष्मणेरे कहे रघुवर * मित्रबध ना करिउ देखाइउ डर
लक्ष्मण बिदाय हन श्रीरामेर स्थान * बाम हस्ते धनुक दक्षिणे हस्ते बाण
महाकोपे चलिल घूर्णितलोचन * स्वर्ग्ग मर्त्य पाताल काँपिल त्रिभुवन
किष्किन्धा नगरे वीर ह'ये उपनीत * द्वारे देखे अंगदेरे कटक वेष्टित
लक्ष्मणेर कोप देखि हइया कातर * प्रणति करिल तारे सकल वानर
हइलेक क्षुद्र क्षुद्र वानर अस्थिर * लाफे लाफे हल तारा प्राचीर बाहिर
लक्ष्मण ब'लेन शुन बालिर नन्दन * सुग्रीवेरे जनाउ आमार आगमन
वने वने भ्रमितेछि आमरा कान्दिया * सुग्रीव थाकेन नित्य पालंके शुइया
सीता लागि दुइ भाइ भ्रमि वने वने * निश्चिन्त आछेन तिनि रत्न सिंहासने

१ मेरा प्रयोजन २ चहार दीवारी ३ पलँग ।

दीन्हेउ राजु बालि हनि रामा * लहि, प्रमत्त कपि लीन विरामा
मञ्जु-बैन कपि कुटिल न लाजा * दै भरोस सोमटेउ कपिराजा
चीटिहिं जमत पंख अवसानू[1] * इक सर सपुर[2] न तेहि कल्यानू
करन सहाय दीन जिन बाचा * करत न आजु बचन निज साचा
फिरत बालि-भय बन-बन रहई * सो सुधि आजु कपीस न अहई
समाचार चलि देहु कपीसा * प्रस्तुत द्वार अनुज - जगदीसा
बालि राम-सर सहजहिं मरई * केहि बल कपि दुःसाहस करई
वनचर बानर दुष्ट स्वभावा * तेहि कहि सखा राम अपनावा
दयासिन्धु कहँ श्रीरघुनाथा * कहँ बानर प्रभु कीन सनाथा

दो० मुनि जितेन्द्रिय योगिजन, अरु ब्रह्मर्षि अनन्त।
अनाहार जिन तप करत, अहिनिसि ध्यावत संत॥ ३४॥

सोइ प्रभु कीन लगायेउ कण्ठा * जन्म-जन्म कृत पुण्य सुकण्ठा[3]
अंगद बचन विनीत सुनाई * लखन - कोप कछु शमन कराई
पाद्य अर्घ्य पुनि आसन दीना * दोउ कर जोरि स्तुती कीना
लखन कोप लखि अति भय लेही * अन्तःपुर विनीत पग देही
बन्दि कपीसहिं मातु बहोरी * लखन द्वार, बरनत कर जोरी
रस - प्रमत्त लोचन मद - मोहा * नृप-तन कुंकुम[4] मृगमद[5] सोहा

बालिरे मारिया राम दिलेन राजत्व * सुग्रीव पाइया राज हइयाछे मत्त
असि दुष्ट मिष्ट वाक्ये आछे आश्वासिया * कोन लाजे थाके घरे निश्चिन्ते बसिया
पिपीलिका पाखा उठे मरिवार तरे * राज्य सह पोड़ाइब आजि एक शरे
साहाय्य करिते आगे करिया स्वीकार * एखन ना मने करे ताहा एक बार
बालि भये अति भीत बेड़ाइत बने * से सकल सुग्रीवेर किछू नाहि मने
सुग्रीवेरे कह गिया एइ समाचार * रामेर अनुज भाइ आसियाछे द्वार
मारिलेन जे राम बालि के अनायासे * सुग्रीव ताहारे तुच्छ कि करे साहसे
पशु जाति बानर सुग्रीव दुराचारी * याहाके ब'लेन मित्र आपनि मुरारि
आपनि श्रीरघुनाथ दयार सागर * तांर योग्य मित्र कि ए सुग्रीव बानर
कत योगी जितेन्द्रिय मुनि ब्रह्मऋषि * अनाहारे कत तप करे दिवानिशि
हेन राम कोले देय सुग्रीव बानरे * सुग्रीवेर कत पुण्य छिल जन्मान्तरे
अंगद ब'लेन शुन ठाकुर लक्ष्मण * स्थिर हउ महाशय करि निवेदन
पाद्य अर्घ्य दिल तांरे बसिते आसन * जोड़ हाते स्तुति करे बालिर नन्दन
लक्ष्मणेर कोप देखि बड़ भय मने * अन्तःपुर मध्ये जाय परम सम्भ्रमे
सुग्रीव प्रणमि बन्दे मायेर चरण * जोड़ हाते ब'लेन प्रभु द्वारेते लक्ष्मण
घूर्णित लोचन राजा शृंगारेर मदे * शोभा पाय शरीर कुंकुम मृगमदे

१ मरण २ किष्किन्धा सहित ३ सुग्रीव ४ केसर ५ कस्तूरी।

मदन प्रभाव, न मन नृप पाहीं * अंगद - कथन सुनेउ कछु नाहीं
खौखियाय करि चिल्ल पुकारा * बँदरन नृप सन कीन गुहारा
कपिन कुलाहल द्वार सुनाना * केहि कारन चहुँदिसि रव[1] नाना
सुनि सुग्रीव शयन पुनि त्यागा * सचिव सखन प्रति कहत सरागा[2]
अन्तर्सदन सोर[1] किमि घोरा * सम्मुख प्रणवति बालिकिशोरा[3]
पठयेउ राम अनुज तव तीरा * द्वार उपस्थित लछिमन बीरा
महाकोप निन्दा फिटकारू * बहु कुवचन जनि जाय प्रचारू
साधि मित्रता निज हित[4] साधा * खल! अब प्रभु-कारज किमि बाधा
कह सुकण्ठ, भल राम मिताई * पठय लखन दुर्वचन सुनाई
भय नहिं, कीन न मैं कछु दोषू * धनुधर लखन करत किमि रोषू

दो० कीन मित्रता राम सन, निश्चय यथा प्रमान।
तेहि कारन लंकेस पहँ, करहुँ न जीवनदान ॥ ३५ ॥

जयी त्रिलोक लंकपति वीरा * तेहि भय सुरगन सदा अधीरा
नर-वानर तिन सन रन करई * केहि विधि जियत भला गृह फिरई
अबहिं लखन निज उपवन जाहीं * अवसर पाय कहउँ तिन पाहीं
अति मतिमान सचिव हनुमाना * बहु सुकण्ठ प्रति सीख बखाना
स्वयं विष्णु प्रभु पद्मविलोचन * तिन प्रति किमि कुशब्द इमि मोचन

काम रसे विह्वल सुग्रीव अन्य मन * किछु नाहि शुनिल अंगदेर वचन
जागाते राजारे करिल चेचामेचि * अनेक बानर मेलि करे किचिमिचि
बानरेर कोलाहल हइलेक द्वारे * कार मध्ये स्थिर थाके ए घोर चीत्कारे
शब्द शुनि सुग्रीव शय्या छाड़ि उठय * पात्र मित्र देखि राजा क्रोध भरे कय
अन्तःपुरे गोल[1] केन कर घोरतर * अंगद सम्मुखे गिया कहिछे उत्तर
पाठाइयाछेन राम आपन भ्रातारे * सुमित्रानन्दन वीर उपस्थित द्वारे
महाकोपान्वित देखि ठाकुर लक्ष्मन * ब'लिब कतेक मत करिल भर्त्सन
साधिले आपन कर्म्म करिया मित्रता * रामेर कर्म्मेर काले करिले खलता
सुग्रीव ब'लेन राम करिया मितालि * पाठाइया लक्ष्मनेरे देन गालागालि
अपराध नाहि करि कारे मोर डर * केन कोप करेन लक्ष्मन धनुर्द्धर
करियाछि मित्रता नहे से अप्रमाण * राखिवारे मित्रता कि हाराइब प्राण
त्रिलोक विजयी से रावण महावीर * याहार भयेते सब देवता स्थिर
ताहार सहित युद्ध नर कि वानर * आसिवेक पुनः प्राण लइया किंकर
एखन फिरया जान स्वस्थाने लक्ष्मन * आगु पाछु जाहा हय ब'लिब तखन
महामंत्री हनुमान अति तीक्ष्णमति * कहेन हितोपदेश सुग्रीवेरे प्रति
स्वयं विष्णु रघुनाथ कमललोचन * हेन वाक्य ब'ल केन ना बुझि कारण

१ शोर २ क्रोध सहित ३ अंगद ४ प्रयोजन।

लहेउ राजु नृप ! जासु प्रसादा * तिन प्रति किमि दुर्बचन प्रमादा
निसि दिन रत शृंगार विलासा * सुधि न राम-दुख, जात न पासा
लछिमन कुपित द्वार तव आहीं * चलि प्रसन्न कीजिय तिन पाहीं
जिन सर त्रिभुवन कोउ न समर्था * तिनहिं उलंघि परहु दुख व्यर्था
मैं तव मंत्री सुनहु नरेसू * तव हित मम निर्भय उपदेसू
जेहि सर बालि वीर अवसाना * विन्न तेहि सरन, न तव कल्याना
राम दुर्दसा हीय विद्रारन * कातर शोक न धीरज धारन
रत रनिवास रूपसी संगा * लाज न मत्त राज सुख रंगा
भय - लंकेस तजहु रघुनाथा * बचैं प्रान किमि लछिमन हाथा
इतै लखन, तरि सिंधु दमानन * अबहिं लखन-सर किमि निस्तारन
सर - सौमित्र चलै छन माहीं * कपिगन प्रान निवारन नाहीं

दो० धारि वचन मम, प्रभु चरन गहे नृपति कल्यान।
अगिन साच्छी लीन, द्रुति पुरहु काज भगवान ॥ ३६ ॥

पालत सत्य सत्य - अनुयाई[1] * सत हित बन आये रघुराई
जिन रघुनाथ सत्य प्रतिपाला * हनेउ बालि सोइ राम भुवाला
राज प्रजा सुख जिनके काजा[2] * जिन बल छत्र - दण्ड सुखसाजा

याँहार प्रसादे तुमि पाइले राजत्व * ताँहाके एमत ब'ल हयेछे कि मत्त
रात्रि दिन कर तुमि शृंगार विलास * ना देख रामेर दुःख नाहि जाउ पाश
कुपिल लक्ष्मण वीर आइलेन द्वारे * अविलम्बे जाउ राज साध गिया ताँरे
याँर वाणे त्रिभुवने केह नाहि आँटे * ताँर आज्ञा ना मानिले पड़िबे संकटे
आमि तव मंत्री जेइ शुन महाशय * हित उपदेश ब'लि हइया निर्भय
बालि हेन महावीर पड़े यार वाणे * ताँहार शरण लउ बाँचिबे पराणे
रामेर दुर्दशा शुनि बुक हय चिर * शोकेते कातर गति नहेत सुस्थिर
परम सुन्दरी लैया घरे कर क्रीड़ा * राजभोगे मत्त थाक नाहि हय व्रीणा
रावणेर भये यदि रामेरे छाड़िबे * लक्ष्मनेर हाते तुमि केमन बाँचिबे
रावण सागर पारे द्वारेते लक्ष्मन * लक्ष्मणेर वाणाग्निते मरिबे एखन
लक्ष्मणेर वाणे कारो नाहिक निस्तार * बधिते वानरगणे कि भय ताँहार
आमार बचन राख हबे तव हित * रामेर शरण लह नहे विपरीत
सत्य करियाछे तुमि अग्नि साक्षी करि * श्रीरामेर कार्य्य कर चल त्वरा करि
सत्यवादी लोके करे सत्येर पालन * सत्येर कारणे राम आइलेन वन
जेइ राम आइलेन सत्य पालिवारे * तेंइ से रामेर वाणे बालि राजा मरे
तेंइ से पाइले तुमि छत्र नवदण्ड * तेंइ प्रजागन लैया कर राज्यखण्ड

१ सत्य पर चलने वाले २ कारण, बदौलत।

सहस चतुर्दस दनुज सँहारे * तिन सायक तुम सहज बिसारे
लहु गति, भजि रामहिं तजि भोगू * बिन रघुनाथ न सद्गति जोगू
नृप सुनि पवनतनय - खरबानी[1] * कहेउ वचन तिनि मधुरस-सानी
आनहु लखन दीन आदेसू * नगर कीन सौमित्र प्रवेसू
दिव्यपुरी सुरपुरी समाना * लखि कपि-साज लाज[2] सुर माना
मञ्जु अटारिन कान्ति विशेखा * लखन प्रविसि अन्तःपुर देखा
कपि निवास लछमन पग धारा * त्रसित निरखि कपि क्रोध अपारा
लखि सुग्रीव कीन सत्कारा * उमा[3] बाम दहिने उठि तारा
स्तुति - लखन जोरि कर कीना * पाद्य अर्घ्य आसन पुनि दीना
कुपित लखन आसन जनि लयऊ * रक्त - नयन कपिपति सन कहेऊ
अगिनि सपथ[4] लै निजहित साधा * करि चातुरी मित्र हित बाधा
निसिदिन कलेस सहत दोउ भाई * मत्त सदा सुधि तुमहिं न आई
केहि बल किष्किन्धा तुम पावा ? * केहि बल तारहिं रानि बनावा ?

दो० केहि बल बिछुरी नारि पुनि, उमा कीन अधिकार ।
केहि प्रसाद कपिनाथ तुम, पायेउ सासन-भार ? ।। ३७ ।।

राम सरल, निर्दय कपिराजू * विमुख सत्य, साधेउ निज काजू
जग दुर्लभ जस तोर मिताई * तुम सम सुहृद न जग कोउ पाई

चतुर्द्दश सहस्र राक्षस पड़े वाणे * याँर वाणे तारे कि सामान्य बुझ मने
भोग छाड़ राम भज पाइबे निष्कृति * रघुनाथ विना राजा आर नाहि गति
हनुमान निरपेक्ष सुग्रीव सम्भाषे * मधुर बचने राजा हनूमाने तोषे
लक्ष्मणेरे आनाइते करेन आदेश * लक्ष्मन भितर गड़े करेन प्रवेश
इन्द्रपुरी समान देखेन दिव्य पुरी * देखिया वानर लज्जा सज्जा पाय सुरी
चतुर्द्दिके अट्टालिका शोभित प्रचुर * चलिलेन लक्ष्मन देखिया अन्तःपुर
गेलेन लक्ष्मन वीर भीतर आवासे * लक्ष्मनेर कोपे देखि वानर तरासे
देखिया सुग्रीव राजा उठिल सम्भ्रमे * डाइने उठिल तारा उमा उठि बामे
जोड़ हाते लक्ष्मणेर करिल स्तवन * पाद्य अर्घ्य दिल राजा बसित आसन
कुपिल लक्ष्मण वीर ना लय आसन * सुग्रीवेर कहिलेन आरक्त नयन
तुमि जे करिले सत्य अग्नि साक्षी करि * उद्धारिते निज कार्य्य करिले चातुरी
रात्रि दिन क्लेश पाइ दुइ भाइ वने * वारेक ना कर तत्त्व मत्त रात्रि दिने
पाइले काहार गुणे किष्किन्धा नगरी * पाइले काहार गुणे तारा कृषोदरी
पाइले काहार गुणे उमा निज नारी * काहार प्रसादे तुमि राज्य अधिकारी
सरल हृदय राम तुमि हे निष्ठुर * साधिले आपन कार्य्य सत्य करि दूर
तोमार मित्रता येन त्रिभुवने थाके * आर येन हेन कर्म्म नाहि करे लोके

१ खरी बात २ देवता लजाते थे ३ उमा—सुग्रीव की स्त्री ४ सौगन्ध, कसम ।

तुमहिं निपाति अंगदहिं राजू * तबहिं बनै सीता कर काजू
धर्महीन कपि सत्य न राखा * यहि सर-धनु पुरवहुँ अभिलाषा
किष्किन्धा करि खण्ड-त्रिखण्डा * कतहुँ न त्रान निरखु कोदण्डा[1]
छत्र दण्ड दै बालिकुमारा * मम सर होय सबन निस्तारा
सुनेउ बालि-बध धनु टंकारा * सोइ सर चाप करौं संहारा
बालि समय बीती[2] जन एका * तव कारन कपि मरहिं अनेका
जेहि पथ गयेउ बालि कपिराई * तेहि चलि मिलौ बन्धु उर लाई
धर्महीन-बध कतहुँ न पापा * लखु शठ! इत मम चाप प्रतापा
मम सर बज्र करै तव नासू * संग बालि सुग्रीव निवासू
दुष्ट दुराचारी कपि जेते * लहैं यमपुरी यहि छन तेते
धरा न कोउ कहुँ अस नर-नारी * दै भरोस पुनि पाँव पखारी
जन्म-जन्म तव पुण्य कपीसा * तोहिं भरि अंक लीन जगदीसा
स्वयं विष्णु रघुपति के चरना * दयानाथ तोहिं दीन्हेउ सरना
तुम नृप बालि-मरन, मत हेनू * दया अमीम राम गुनकेतू

दो० लखन कोप लखि बढ़त अति, उर कपीस भयभीत।
विकल वेगि पद लीन गहि, तारा कहेउ विनीत ॥ ३८ ॥

अग्रज-मित्र[3] उचित कछु माना[4] * जेठ समुझि समुचित सन्माना

तोरे मारि अंगदेरे दिबे राज्यभार * अगद हइते हबे सीतार उद्धार
अधर्म्म वानर रे लंघिलि सत्य पथ * देख धनुर्व्वाणे करि पूर्ण मनोरथ
एक वाणे मारि तोरे राखे कोन जने * खण्ड-खण्ड किष्किन्धा करिब आजि रने
वाणे काटि सबारे करिब खण्ड-खण्ड * अगदेरे उपरे धराब छत्रदण्ड
बालिबधे शुनियाछ धनुक टकार * सेइ धनु सेइ वाण करिब संहार
बालि राजा केवल मारिल एक जन * तोर दोषे मरिबेक यत कपिगन
देखियाछ बालि राज गेल जेइ बाटे * सेइ बाटे थाक गिया भायेर निकटे
मारिब अधर्म्मि तोरे नाहि ताहे पाप * हेर वाण एडि एइ देखह प्रताप
प्राण लब आजि तोर बज्र सम वाने * एकत्र हइया थाक भाइ दुइ जने
आरे दुष्ट वानर पापिष्ट दुराचार * एखनि पाठाइ तोरे देख यमद्वार
पृथिवीते हेन कार्य्य के काथाय करे * आगे दिय भर'सा पश्चाते थाके दूरे
राम मित ब'लिया दिलेन कोल तोरे * कत पुण्य करे छिलि जन्म-जन्मान्तरे
स्वयं विष्णु रघुनाथ करिलेन दया * तेइ तोरे श्रीराम दिलेन पद छाया
गुणेर सागर राम दयार नाहि सन्धि * बालि मारि राज्य दिल सत्य हये बन्दी
लक्ष्मणेर महाक्रोध बाड़िते लागिल * त्रासेते सुग्रीव राजा चिन्तित हइल
त्वरा करि कातरा उठिया तारा रानी * लक्ष्मणेर पाये धरि ब'लिया मृदुवाणी
ज्येष्ठेर हइले मित्र हय से गर्व्वित * ज्येष्ठेर समान तार मानिते उचित

---

१ धनुष २ बीत गई ३ बड़े भाई राम का मित्र ४ आदर।

राम सुकण्ठ सखा जग जाना * उचित न इमि तिन कर अपमाना
छमहु राजसुत ! होहु सधीरा * राम-काज तत्पर कपि वीरा
दूर देश गिरि सागर पारा * वानर जहँ निवसत संसारा
धावहिं सकल पाय सम्वादू * शमन लखन प्रभु ! तजिय प्रमादू
तबहुँ न थिर जनि क्रोध विहीना * केहु विधि स्वर्ण पलँग आसीना
रानि विनय सुस्थिर सौमित्रा[1] * कृत्तिवास किय गान पवित्रा

सुग्रीव-लक्ष्मण कथोपकथन

कण्ठ सुकण्ठहिं सुरभित हारा * तजि कपीस सो भूतल डारा
सिंहासन तत्छण तजि धावा * बहुकर जोरि लखन-गुन गावा
छिना-राजु लहि राम-प्रसादा * दिन-दिन सम्पति बढ़ति अगाधा
स्वयं विष्णु रघुपति अवतारू * शोध[2] न सम्भव तिन उपकारू
सिय-उद्धार शक्ति-रघुनाथा * केवल मैं निमित्त तिन साथा
तजि प्रभु-काजु, रहेउँ यहि भाँती * छमहु सदोष जानि कपि जाती
मैं पशु अधम करहुँ बहु दोषू * राम-दास प्रिय-प्रति जनि रोषू
बोले लखन सुनहु कपिराई * राम-काज करि सुकृति[3] कमाई
चहुँ जय, किये राम हित कर्मा * धर्म लोप नतु बढ़इ अधर्मा

सुग्रीव रामेर मित्र जगते विदित * एत तिरस्कार प्रभु ना हय उचित
क्षमा कर राजपुत्र हउ तुमि स्थिर * राम कार्य्य करिबेक सकल कपि वीर
दूर देशे पर्व्वतेते समुद्रेर पारे * जेखाने वानर यत आछे ए संसारे
सम्वाद करिया शीघ्र आनि से सबारे * सम्बर सम्बर क्रोध लक्ष्मण आमारे
तथापि श्री लक्ष्मणेर कोप नाहि टुटे * बसाइल यत्न करि तारा स्वर्णखाटे
ताहार विनय वाक्य सुस्थिर वचन * कृत्तिवास विरचित गीत रामायण

सुग्रीवेर सहित लक्ष्मणेर कथोपकथन

सुगन्धि पुष्पेर माला सुग्रीवेर गले * सेइ माला सुग्रीव फेलिल भूमि तले
सिंहासन छाड़िया उठिल तत क्षण * जोड़ हाते लक्ष्मणेरे करिछे स्तवन
हाराइय राज्य पाइ रामेर प्रसादे * तोमार प्रसादे बाड़िलाम सम्पदे
हेन रघुनाथ स्वयं विष्णु अवतार * कार शक्ति साधिबेक श्रीरामेर धार
सीता उद्धारिबे राम आपन शक्तिते * जाइबे केवल आमि ताहार सहिते
ना करिया राम कार्य्य बसे आछि घरे * वानर जातिर दोष लागे क्षमिबारे
पशुजाति कपि आमि कत करि दोष * सेवक-वत्सल राम नाहि करे रोष
लक्ष्मण ब'लेन शुन सुग्रीव राजन * राम कार्य्य करि कर पुण्य उपार्ज्जन
राम-कार्य्य करिले सर्व्वत्र हय जय * ना करिले धर्म्म लोप अधर्म्म सञ्चय

१ लक्ष्मण २ बदला, उद्धार ३ पुण्य।

दो० सतवादी ह्वै सत्य धरु, सत्य बँधे दोउ मीत।
राम निबाहेउ सत्य निज, तुम कस करत अनीत॥ ३६॥

राम बिषन्न[1] निरखि, कटुबानी * कहेउँ तुमहिं बहु अपयश-खानी
छमहु कपीस करहु परिहारा[2] * कुबचन तुमहि न शिष्टाचारा
सम्मानित - सन धर्म - अलापू * उचित न तिन सन मन्द प्रलापू
समुचित कर्म करहु धरि धर्मा * राम-काज करि फलहिं सुकर्मा
लखन दीन बहु हित - उपदेसू * कृत्तिबास कृत गान बिसेसू

सुग्रीव द्वारा कटक सञ्चय

कह सुग्रीव बेगि हनुमाना * आनहु कटक जितै कपि नाना
हिम, सुमेरु, मन्दर, बिन्ध्याचल * रैवत, उदयाचल, अस्ताचल
करहु घोष चहुँ मम आदेसू * जुरैं बेगि कपि जो जेहि देसू
देस-बिदेस दूत चहुँ धावैं * दस दिन मध्य सकल जुरि आवैं
जो तजि अवधि[3] बिलंब लगावैं * मारत तिनहिं केस धरि लावैं
अन्य उपाय यदा अनुसरहीं * बाँधि जँजीरन प्रस्तुत करहीं
मम अधीन छिति स्वर्ग पताला * समिटहिं अखिल कीस यहि काला
कोप कपीस प्रकम्पित वानर * आनन[4] कपिन चले बल - आगर

सत्यवादी हैले करे सत्येर पालन * मने कर करियाछ सत्य दुइ जन
श्रीराम आपन सत्य हइयाछेन पार * तुमि सत्ये बद्ध आछ अधर्म्म अपार
रामेर कातर देखि ब'लेछि कर्कश * तोमार विरूप ब'ला आमार अयश
क्षमा कर कपीश्वर करि परिहार * तोमाके दुर्व्वाक्य ब'ला नहे शिष्टाचार
मान्य लोके मन्द कथा नहे उपयुक्त * मान्य सह आलाप करिबे धर्म्मयुक्त
धर्म्म राख कर्म्म कर ये हय विहित * राम कार्य्य करिले हइबे तव हित
हित उपदेश बहु बुझान लक्ष्मण * किष्किन्धा काण्डेते गीत कृत्तिवास गान

सुग्रीवेर कटक-सञ्चय

ब'लिलि सुग्रीव राजा करिया आह्वान * वानर कटक झट आन हनूमान
हिमालय सुमेरु मन्दर आदि करि * विन्ध्याचल रैवत उदय अस्त गिरि
सर्व्वत्र घोषणा देह आमार आज्ञाय * यथा जे वानर थाके आइसे त्वराय
पाठाउ हे दूतगणे देश देशान्तरे * दश दिन मध्ये येन आइसे सत्वरे
इहाते बिलम्ब जेइ करिबे वानरे * प्रहारिये आनिबे ताहार चूले धरे
अन्यमत करिबे इहाते जेइ जन * आनिबे ताहारे करि निगड़ बन्धन
स्वर्ग मर्त्य पाताले आमार अधिकार * कोथाउ ना थाके हेन वानर सञ्चार
सुग्रीवेर कोपेते वानर सब काँपे * कटक आनिते चले अतुल प्रतापे

१ दुःखी २ भूल जाओ ३ मियाद ४ लाने के लिए।

अनुशासन लहि मारुति[1] टेरे * तीस कोटि वानर चहुँ प्रेरे
कीस-कटक छाये छिति-गगना * टीड़ी - दल सम जासु न गणना
पच्छिम नल पूरुब भट नीला * पुनि सम्पाति दखिन बलशीला

दो० महावीर[1] विक्रम अतुल, उत्तर दिसि पग दीन।
सुभट चारि दिसि संग कपि लख-लख लौं लीन ॥ ४० ॥

खौखियाहिं गर्जहिं डग भरहीं * उछलहिं फाँदि उधुम बहु करहीं
डगमग कूर्म, शेष शिर हाला * चहुँ प्रकम्प भुइँडोल पताला
पुनि निनाद किय बालिकुमारा * कपिगन गमन हुकुम अनुसारा
दसदिसि मध्य समिटि सब आवैं * करि विलंब निज प्रान गवावैं
प्रानन मोह साध मन माहीं * आनहिं कपिन वेगि मम पाहीं
कपिगन अंगद सकल पठाये * राजपुरी हित निजहिं बचाये
कीस कोटि दस चहुँ दिसि छाये * सील[2] न, पकरि जहाँ जेहि पाये
लख-लख कीम दिवस दस माहीं * धरा गगन चहुँ ओर लखाहीं
किष्किन्धा कोलाहल नाना * नृप फल फूल नजर सन्माना
कटक देखि कपिपति उर आना * कार्य - सिद्धि लच्छन अनुमाना
अखिल सैन - कपि नगर पधारी * अगणित कटक अतिव भयकारी

हनु जान बाहिरे हइया उपस्थित * त्रिश कोटि वानर पाठाय चारि भित
मेदिनी आकाश जुड़ि चले कपि सेना * जेन पंगपाल जाय ना हय गणना
चलिल वानर गण देश देशान्तरे * पूर्व्वदिके चलि गेल नील नाम धरे
पश्चिमे चलिया गेल नल महामति * दक्षिण दिकेते गेल आपनि सम्पाति
हनूमान महावीर महा पराक्रम * उत्तर दिकेते जान करिया विक्रम
एकैक जनार संगे चले दश लाख * महा शब्दे चले सबे करे हाँक डाक
हुप हाप लम्फे झम्फे कम्पे बसुमती * अति कष्टे धरे धरा कूर्म्म नागपति
तर्ज्जिया गर्ज्जिया ब'ले बालिरकुमार * यात्रा कर कपिगन आज्ञा अनुसार
दश दिवसेर मध्ये आनिबे सकले * प्राणदण्ड धरिब हे विलम्ब हइले
बाँचिबे बलिया यदि साध थाके मने * त्वरा धरि आनिबे सकल कपिगणे
पाठाइल सकलेरे बालिर नन्दन * एकेला रहिल राज बाटीर रक्षण
हइल से दशकोटि कपि आगुसार * यारे पाय तारे आने नाहिक विचार
जुड़िया आकाश भुमि कपि झांके झांके * दशदिने आइसे सकल लाखे लाखे
किष्किन्धा मध्येते लागिल कोलाहल * सुग्रीवेर भेट आनि दिल फुल फल
सैन्य देखि सुग्रीव भावे मने मने * कार्य्य सिद्धि हइवेक बुझि अनुमाने
आइल कटक सब किष्किन्धा भितर * असंख्य वानर सेना अति भयंकर

१ हनुमान २ मुरौवत।

किष्किन्धा कपि-कटक बिरामा * चले सुकण्ठ जहाँ प्रिय रामा
कहें सैन सों इमि कपिकेतू * चलहिं सुहृद जहँ मम रघुकेतू
राम-दरस उपजी मोहिं प्रीती * कहेउ लखन प्रति बचन बिनीती
राम विष्णु तिन तुम सहचारी * चतुर्दोल प्रभु! करहु सवारी
चतुर्दोल करि तुमहिं असीना * बेगि सुहृद-दरसन मन कीना।

दो० लखनलाल तब चरन गहि, विनवहुँ साध[1] ललाम।
सदा रहे मन प्रीति, उर बसें लखन-श्रीराम॥ ४१॥

दुइ जन चढ़ि चन्दोल सुहाये * चौदिस दासन चवँर डुलाये
पञ्च प्रकार बाजने बाजे * शंखनाद चहुँ घन रव[2] गाजे
अति रव सुनि रघुबीर विचारे * मनहुँ मित्र सुग्रीव पधारे
जस-जस राम-निकट नियराने * मित्र-दरस उर प्रभु हरषाने
तजि चन्दोल धरनि कपिनाथा * माल्यवान गिरि जहँ रघुनाथा
बन्देउ राम-चरन अनुरागी * कीन दण्डवत कपि बड़भागी
आसन दिव्य समादर दीन्हा * कुशल प्रश्न तिन रघुपति लीन्हा
कह सुग्रीव कुशल सब भाँती * नाथ-कृपा सब विपति निपाती
बालि निवारि दीन मोहिं राजू * मम सिर सत्य-भार प्रभु आजू
प्रभु-प्रसाद शासन अधिकारा * दण्ड-छत्र चहुं कपिगन धारा

किष्किन्धाय प्रवेश करिल कपिगणे * चलिल सुग्रीव राजा मित्र सम्भाषणे
सुग्रीव आपन ठाटे बालल वचन * मित्र सम्भाषणे आजि करिब गमन
सुग्रीव करिते जाय श्रीराम दर्शन * लक्ष्मणेर प्रति ब'ले विनय वचन
विष्णु अवतार तुमि रामेर दोसर * आपनि चड़ह प्रभुर चतुर्द्दोलोपर
तबे चतुर्द्दोले आमि चारि बारे पारि * मित्र दरशने चल जाह त्वरा करि
तोमार चरणे मोर एइ निवेदन * श्रीराम लक्ष्मणे जेन सदा थाके मन
चतुर्द्दोले लखन चड़ेन दुइजन * चारिभिते चामर दुलाय दास गण
पञ्च शब्द बाद्य बाजे करे शंखध्वनि * कोलाहल करे सबे महाशब्द गणि
कलरव शुनिया चिन्तेन रघुमणि * आमा सम्भाषिते आसे सुग्रीव आपनि
निकट हइल आसि सुग्रीव राजन * मने मने भावे वीर मित्र दरशन
चतुर्द्दोल हैते नामे राम विद्यमान * चलि जान सुग्रीव पर्व्वत माल्यवान
रामेर चरण बन्दे करिया प्रणति * जोड़ हाते दाण्डाइल सुग्रीव भूपति
आदरे श्रीराम तारे करि सम्भाषण * निकट बसिते दिव्य दिलेन आसन
करिलेन मंगल जिज्ञासा रघुवर * सुग्रीव विनये तार करिछे उत्तर
हरियाछ राम मम विपद सकल * तोमार प्रसादे मिता सकल मंगल
बालि के मारिया मोरे दिले राज्यभार * सत्ये बद्ध हइयाछि छाड़ि तव धार
तोमार प्रसादे पाइलाम राज्यखण्ड * सकल बानरगण धरे छत्र दण्ड

१ अभिलाष २ शब्द।

तुम समर्थ काटहु सिय - बन्धन * मैं निमित्त अनुचर, रघुनन्दन !
भूमण्डल जेते कपि यूथा * बसति शृंगगिरि कीस - वरूथा
आयसु पाय सकल ते आये * कोटि, वृन्द, अर्बुद चहुँ छाये
सेन दुर्दमन कीस अपारा * जो मन धरहिं न रोकनहारा
तीन कोटि योजन त्रयलोका * प्रविसि लखैं दुर्जय कपिलोका
सिर्जेउ बिधि छिति स्वर्ग पताला * खोजहि सिय कपि - कटक विशाला

दो० सीतापति के चरन महँ जाकी भक्ति अपार ।
तेहि समीप का बापुरो काज सिया - उद्धार ॥ ४२ ॥

प्रभु - कर स्वयं सिया निस्तारा * कहा कहौं, मैं दास तिहारा
भर्जति इन्द्र, सुरः सृष्टि सवाँरी * तव संकेत भानु नभचारी
तुम सोवत, जग सोवत सारा * तव चेतन सचेत संसारा
जन्म-जन्म तप विधि मन लावा * तबहुँ न नाथ-दरस तिन पावा
सोइ पद - पद्म नयन निज देखी * धन्य - धन्य मम जन्म विशेषी
वानर जाति कहाँ अति हीना * प्रभु करि दया मित्रपद दीना
सिया शोधि लावहिं प्रभु पाहीं * तबलौं असन[1] शयन रुचि नाहीं
किष्किंधा न राज, रघुनाथा * प्रभु प्रसन्न, उर लिय कपिनाथा

सीता उद्धारिबे तुमि आपनार गुणे * उपलक्ष केवल थाकिब तव सने
यनेक वानर थाके पृथिवी उपरे * यतेक बसति करे पर्वत शिखरे
से सकल आसितेछे आमार सम्वादे * कोटि-कोटि बृन्द-वृन्द अर्ब्बुद अर्ब्बुदे
दुरन्त वानर सैन ना हय गनन * इहारा यामने करे के करे लघन
तिन कोटि योजनेर पथ त्रिभुवन * प्रवेशिब सर्व्वत्रे दुर्ज्जय कपिगन
स्वर्ग मर्त्य पाताल सृजन विधातार * जेखाने थाकुक सीता करिब उद्धार
तोमार चरणे भक्ति थाकिले आमार * कोन कार्य्य गनि आमि सीतार उद्धार
आमि कि बलिब प्रभु तोमार चरणे * उद्धार आपनि सीता आपनार गुणे
इन्द्र आदि देवगण तोमार धेयाय * गगने उदय रवि तोमार आज्ञाय
तोमार सृजने सृष्टि ए तिन भुवन * तोमार निद्राय निद्रा चेतने चेतन
कत शत जन्म ब्रह्मा तपस्या करिल * तबु तव पाद पद्म देखा न पाइल
हेन पाद पद्म देखि प्रत्यक्ष नयने * आपनारे धन्य करि मानि एत दिने
आमि वानर जाति कि ब'लिते पारि * मित्र ब'ल आमारे से दया आपनारि
यावत् ना हय प्रभु सीता उद्धारन * तावत् आमार नाहि शयन भोजन
सीतारे आनिया दिले तोमार गोचरे * तबेत करिब राज्य किष्किन्धानगरे
सन्तुष्ट हइल राम कमललोचन * सुग्रीवेरे उठिया दिलेन आलिंगन

[1] भोजन ।

अकथ भाग्य सुग्रीव सुहावा * वन - वानर प्रभु हृदय लगावा
अतुल पुण्यभागी कपिराया * जिन प्रति दयासिंधु किय दाया
पुनि रघुवीर - बैन सुखकारी * तुम समान मम को हितकारी
अचरज, हरत न रवि अँधियारा * अचरज मोहि न सिय - उद्धारा
जनि अपूर्व, घन बरसहिं वारी[1] * तुम अपूर्व मोहिं मित्र! सुखारी
गिरि दोउ सुहृद करहिं सम्भासा[2] * कपि छाये चहुँ धरनि - अकासा
स - सहसकोटि शतावलि आये * सविता[3] गगन धुँधि[4] महँ छाये

दो० गन्धमादनाधिप शरभ, पुनि गवाक्ष तहँ आय।
वानर कोटि पचास लैं, रहे गगन छिति छाय ॥ ४३ ॥

कज्जल धूम्र सरिस धूम्राक्षा * तीस कोटि कपि सह नीलाक्षा
सहस कोटि वानर लै साथी * घिरी धरनि चहुँ सैन - प्रमाथी
पथ दस प्रहर सैन विस्तारा * सत्तर योजन अंग प्रसारा
बसति हिंगु गिरि हिंगुल रंगा * मरकट[5] कोटि पचास 'विहंगा'
मलयाचल केसरी निवासू * सत्तर कोटि संग कपि जासू
पूर्व्व सैनपति सुभट विनोदा * सहस कोटि लै चलति समोदा
आयेउ धूम्र सुकण्ठहिं शाला[6] * कटक गगन लौं जिमि घनमाला

सुग्रीवेर भाग्य कथा के कहिते पारे * श्रीराम दिलेन कोले बनेर बानरे
सब हैते सुग्रीवेर अधिक कपाल * यार प्रति सदय राम परम दयाल
श्रीराम ब'लेन शुन सुग्रीव सुहृद * तुमि विना आमार के करिबेक हित
अपूर्व्व ना गणि सूर्य्य हरे अन्धकार * अपूर्व्व ना मानि आनि सीतार उद्धार
अपूर्व्व ना गणि मेघ बरिषये जल * तोमार अपूर्व्व मित्र जानि हे केवल
दुइ मित्र पर्व्वते करेन सम्भाषण * आकाश मेदिनी जुड़ि आसे कपिगण
सहस्र कोटि वानरे एलो शतावलि * यार सैन्य चलिले गगने लागे धूलि
गवाक्ष शरभ गय से गन्धमादन * वानर पञ्चाश कोटि सगे आगमन
अंजनिया बड़ धूम्र आइल धूम्राक्ष * त्रिश कोटि कपि लैया आसे से नीलाक्ष
वानर सहस्रकोटि सहित प्रमाथी * आइल आपन सैन्य आच्छादिया क्षिति
प्रमाथी वानर बले क्षणे यदि नड़े * दश प्रहरेर पथ सैन्ये आड़े जोड़े
सत्तरि योजन वीर आड़े परिमान * सकले करये यार शरीर बाखान
हिंगुलिया पर्व्वते जे हिंगुलिया अंग * वानर पंचाश कोटि सहित विहंग
वानर सत्तरि कोटि लइया केशरी * जाहार बसति स्थान से मलयगिरि
पूर्व्व हैते आइल विनोद सेनापति * वानर सहस्र कोटि ताहार संहति
धूम्राक्ष आइल धूम्र सुग्रीवेर शाला * गगन जुड़िया ठाट येन मेघमाला

१ जल २ बातचीत ३ सूर्य ४ गर्द ५ बन्दर ६ साला।

गौर वर्ण छवि जिन, सम्पाती ❋ भाजत लखि रिपु, अस तहि ख्याती
वैद्य सुषेन श्वसुर नृप केरे ❋ तीन करोर वृन्द कपि प्रेरे
जाम्बवान लै भल्लुक नाना ❋ दुर्जय महा सुभट हनुमाना
पुनि युवराज सुबालिकुमारा ❋ सहस कोटि जिन कीस अपारा
कपि शत लच्छ कोटि इक जाना ❋ शतक कोटि कपि वृन्द समाना
शतक करोर वृन्द सम अर्बा ❋ शतक कोटि अर्बुद पुनि खर्बा
महाखर्व, शत कोटिन खर्बा ❋ तिन शत कोटि शंख कह सर्बा
शंखन महाशंख बुध गनहीं ❋ पद्म महाशंखहिं अनुसरहीं
महापद्म पुनि, सिन्धु बहोरी ❋ तिन मिलि महासिन्धु मक जोरी

दो० महासिंधु अक्षोहिणी, अक्षोहिणी अपार ।
क्रम सों सब शत कोटि मम, अगणित पार-अपार[1] ॥
एक मास विस्तार पथ, गिरि नद नदी सुघेरि ।
सैन विशाल अनन्त प्रभु, रहे उल्लसित हेरि ॥ ४४ ॥

सीताखोज-हित वानर-सेना का पूर्वदिशा-प्रस्थान

बोले राम, तात ! चहुँ देसू ❋ पठवहु सैन सीय उद्देसू[2]
जेहि छन होय सिया - उद्धारा ❋ तबहिं भार - तव मम निस्तारा

सम्पाति वानर एल गौरवर्ण धरे ❋ देखिले विपक्ष जाय पलाइया डरे
आइल सुषेण वैद्य राजार श्वशुर ❋ तिन कोटि वृन्द ठाट आइल प्रचुर
भल्लगण सहित आइल जाम्बुवान ❋ दुर्ज्जय आइल महावीर हनुमान
युवराज आइल से बालिर कुमार ❋ वानर सहस्र कोटि यार परिवार
शत लक्ष वानरेते एक कोटि जानि ❋ शत कोटि वानरेते एक वृन्द गनि
शत कोटि वृन्दे हय अर्ब्बुद गनन ❋ शत कोटि अर्ब्बुदेते खर्ब्ब निरूपन
शत कोटि खर्ब्बे एक महाखर्ब्ब गनि ❋ शत कोटि महाखर्ब्बे एक शंख जानि
शत कोटि शंख महाशंखर गनन ❋ शत कोटि महाशंख पद्म निरूपन
शत कोटि पद्मे एक महापद्म गनि ❋ शत कोटि महापद्मे सागर बाखानि
शत कोटि सागरे महासागर जानि ❋ शत कोटि महासागरे एक अक्षौहिनी
शत कोटि अक्षौहिणीते एक अपार ❋ अपारेर अधिक गणना नाहि आर
नद नदी व्यापी ठाट भागिल पर्व्वत ❋ सर्व्व ठाट जुड़े गेल मासेकेर पथ
पृथिवी जुड़िल सैन्य नाहि दिक्‌पाश ❋ कटकेर चाप देखि रामेर उल्लास

सीतान्वेषणार्थ सुग्रीव कर्तृक पूर्व्वदिके वानर सैन्य प्रेरण

श्रीराम ब'लेन मिता सैन्य नाना देशे ❋ पाठाइया देह शीघ्र सीतार उद्देशे
तुमि यदि जानकीर करह उद्धार ❋ तबेत आमार ठाँइ सत्ये हउ पार

१ 'अपार' के आगे संख्या गिनी नहीं जा सकती २ खोज में ।

कपिपति राम - अनुज्ञा पाई * नाना दिसि चहुँ सैन पठाई
अर्ब खर्ब कपि मीमा नाहीं * केहु बिधि गिरि ऊपर न समाहीं
नृप, सेनिप[1] विनोद दिय भारा * पूरब दिसि कर्तव्य तुम्हारा
सहस कोटि बानरन लेवाई * सीता खोज करहु तुम जाई
जे नद नदी मिलहिं यत देसू * खोजहु करि सर्वत्र प्रवेसू
पावन धाम पुण्य थल जेते * सहित कटक चलि हेरहु तेते
स्वर्गहिं जाय भगीरथ आनी * उतरहु पार गंग महरानी
तरि सरयू तप - पुण्य विसेषी * कौशिक - भगिनि कौशिकी देखी
सुरभी[2] चरहिं गोमती तीरा * सो तरि दरस सरस्वति - नीरा
मलय कोकनद कश्यप देसू * मगध जनकपुर करहु प्रवेसू
ब्रह्मपुत्र मन्द्राचल जाई * कर्नाटक शकद्वीप सुहाई
भूमि किरात कुतूहल ख्याती * अद्भुत निवसहिं नाना जाती
उठे लम्ब दुइ कर्ण विरूपा * कनक चम्प सम वर्ण[3] अनूपा
ताम्र केश मुख गोल लखाहीं * चलत एक पद बहु बतराहीं
दो० बसति नीर, मुख मीन सम, मिलत मनुज धरि खाहिं ।
कहत व्याघ्र-नर, ताप पुनि सहन किरातन नाहिं ॥ ४५ ॥

श्रीरामेरे ठाँइ राजा ल'ये अनुमति * नाना दिके पाठाइल सैन्य सेनापति
अर्ब्बुद अर्ब्बुद कपि सीमा नाहि पाइ * पर्व्वते उपरे बसिते नाहि ठाँइ
सुग्रीव विनोद सेनापति प्रति भने * पूर्व्व दिके जाउ तुमि सीता अन्वेषने
वानर सहस्र कोटि तोमार भिड़न * सीता अन्वेषणे तुमि करह गमन
नद नदी मिलिबे मिलिबे यत देश * सेइ सेइ स्थाने गिया करिबे प्रवेश
यत यत पुण्य देश देख पुण्य स्थान * सकल वानर लैया करिबे पयान
स्वर्ग हैते गंगा के आनिल भगीरथे * गंगादेवी पार हबे कटक सहिते
तरिउ सरयू नदी पुण्य तरंगिनी * कौशिकी तरिउ विश्वामित्रेर भगिनी
दुइ कूले गरू चरे मध्येते गोमती * गोमती हइया पार पावे सरस्वती
अपूर्व्व मलय देश देश कोकनद * कश्यपेर देश जाउ जनक मगध
ब्रह्मपुत्र तार संगे करिह प्रवेश * मन्दर पर्व्वते जेउ किरातेर देश
जाइबे कर्णाट देश आर शाक द्वीपे * किरात जातिरा आछे कि अद्भुते रूपे
कनक चाँपार मत शरीरेर वर्ण * उठान खानार मत धरे दुइ कर्ण
थाला हेन मुखखाना ताम्रवर्ण केश * एक पदे चले पथ ब'लेत विशेष
जलेर भितरे बैसे मत्स्यवत् मुख * मानुष धरिया खाय आइले सम्मुख
मनुष्य व्याघ्र ब'लिया ताहादेर ख्याति * आतप सहिते नारे किरातेर जाति

१ सेनापति २ गाएँ ३ रंग ।

जदि सिय कतहुँ किरातन - डेरा * हेरेउ शोध लंकपति केरा
पार किरात ऋषभ गिरि परहीं * सुरगन आय केलि नित करहीं
सदा पधारत तहँ सुरनाथा * तहँ सिय सहित लखेउ दशमाथा
छीर सिंधु पूरुब चलि मिलही * पुनि तेहि पार श्वेत गिरि अहही
श्वेत नाग[1] तहँ सहस फनीसा * धारे सहस फनीस गिरीसा[2]
फन महस्र मणि महस अनूपा * मणि अलोक निसि दिवस सरूपा
छीर सिन्धु मों धवलित भूतल * श्वेत श्वेतगिरि किय नभमण्डल
मणिधर श्वेत सहस फनधारी * पूरुब धन्य तीनि उजियारी
दरस अनन्त[3] करहिं सब लोगू * बन्दि गिरीश सधै सब जोगू
पूरुब तासु उभयगिरि - शृंगा * ताल विटप चहुँ सुबरन रंगा
मनि मानिक गुच्छन तर झूमी * डार कनक छबि परसत[4] भूमी
शिखर - शिखर चहुँ हेरहु जाई * कहाँ दनुजपति कहँ सियमाई
उभयाचल न मिलै उदेसू * कालोदक गिरि करिय प्रवेसू
कज्जल सलिल कालसर तीरा * कोटि सर्प - सर्पिन तेहि नीरा
सकल विनास जदा फुफकरहीं * भयबस दूरि सुरासुर रहहीं
गुहा नदी नद पर्वत जाई * देखहु कितै दुष्ट दनुराई

सीता लये थाके यदि किरातेर घरे * यत्न करि चाहिउ तथा लंकेश्वरे
ऋषभ पर्व्वत जाबे किरातेर पार * देवगण करे केलि नित्य अवतार
सर्व्वकाले आइसे तथाय पुरन्दरे * यतने चाहिउ तथा सीता लंकेश्वरे
तारपूर्व्वदिके जाबे क्षीरोद सागर * श्वेतगिरि देखिबेसे क्षीरोद उपर
श्वेत नाग धरे तथा सहस्र शेखर * सहस्र फणाय आछे देव महेश्वर
सहस्र फणाय आछे सहस्रेक मणि * मणिर आलोक तुल्य दिवस रजनी
क्षीरोद सागर करे पृथिवी धवल * शत गिरि श्वेत कर गगनमण्डल
श्वेत नाग धरे शिरे सहस्रेक फना * पूर्व्वदिके धन्य करे सेइ तिन जना
सकले वन्दिबे से अनन्त महाराज * महेश्वर बन्दि गेले सिद्ध हबे काज
उभय पर्व्वते जाबे तार पूर्व्व दिके * स्वर्ण ताल वृक्ष तथा आछे चारियुगे
मणि माणिक्येते तार बाँधियाछे गुँड़ि * कनक रचित तार शोभित बागुड़ि
देखिउ वानरगण शिखरे शिखर * अन्वेषण कर तथा सीता लंकेश्वर
तदा यदि उभयेर ना पाउ उद्देश * कालोदक पर्व्वते करिउ प्रवेश
से पर्व्वते आछे सरोवरे काल जल * तिन कोटि सर्पी सर्प थाके सेइ स्थल
सर्पी यदि हाइ छाड़े सर्व्वलोक मरे * तार काछे देव दैत्य नाहि जाय डरे
नद नदी गिरि गुहा खुजिउ विस्तर * सेखाने मिलिते पारे दुष्ट लंकेश्वर

१ श्वेत पर्वत २ महादेव ३ नाग देवता के ४ छूती थीं ५ पता।

दो० मिलै न तहँ, पुनि अनुसरहु, लोहित गिरि अवलोकि ।
कौतुक ! योजन तीनि नद, रहेउ विषम पथ रोकि ॥ ४६ ॥

तेहि पूरुब जहँ लोहित सागर ※ बसत दनुज दुर्जेय बल-आगर
लोहित वर्ण अगम तहँ नीरा ※ सेमर विटप पुरातन तीरा
सुबरन गाछ गात चहुँ सूला[1] ※ गुच्छन लदे कतक फल-फूला
जल सों दनुज विटप चढ़ि आवैं ※ सुर सभीत, कोउ निकट न आवैं
समाचार तहँ सीय न पाई ※ प्राची-सिन्धु[2] लखहु पुनि जाई
द्वादश योजन तासु उतारा ※ सावधान कपि उतरहिं पारा
कनक उदयगिरि छबि किमि बरनी ※ भानु उदय धवलित किय धरनी
योजन दुइ शत लख चलाई ※ तहँ रवि-किरन निमिष महँ छाई
मुनिगन तप रत यथा विधाना ※ बालखिल्य[3] अंगुष्ठ प्रमाना
उदय न रवि उदयाचल पारा ※ निश्चय तासु परे[4] अँधियारा
तेहि न दीख, नहिं ज्ञान विशेषी ※ लौटहिं कपि उदयाचल देखी
एते देश अवधि इक मासा ※ अधिक रुकहिं तिन होय विनासा
मास मध्य लौटहिं नहिं देसू ※ परिजन सहित मरहिं निज दोसू
आयसु सीस सैन-कपि धारी ※ सिय हित पूरुब दिसा सिधारी

तथा यदि नाहि पाउ ताहार उद्देश ※ लोहित पर्व्वत गिया करिह प्रवेश
से पर्व्वते आछे एक बड़ चमत्कार ※ त्रियोजन नदी ताहे विषम पाथार
तार पूर्व्वदिके आछे लोहित सागर ※ दुरन्त राक्षस आछे जलेर भितर
अगाध सलिल तार रक्त वर्ण धरे ※ चारियुगे एक वृक्ष आछे तार तीरे
सोनार शिमूल गाछ सर्व्व गाय काँटा ※ सुवर्णेर फल फूल धरे गोटा गोटा
जल हैते राक्षसेरा चड़े तदुपरे ※ तार काछे देवगण नाहि जाय डरे
तथा यदि जानकीर ना पाउ उद्देश ※ पूर्व्व सागरेर तीरे करह प्रवेश
आड़े दीर्घे से सागर द्वादश योजन ※ सावधाने पार हबे सब कपिगन
उदयगिरिर सर्व्व अंग स्वर्णमय ※ पृथिवी उज्ज्वल करे सूर्य्येर उदय
तिन लक्ष दुइ शत योजनेर पथ ※ चक्षुर निमिषे सूर्य्य करे गतायत
मुनिगण तप करे येमन विधान ※ बालखिल्य नामे मुनि विघत प्रमान
उदयगिरिर पूर्व्वे नाहि सूर्य्योदय ※ अन्धकारमय देश जानिह निश्चय
से देश कखन नहे आमार गोचर ※ देखिय उदयगिरि फिरिबे वानर
जाइते उदयगिरि लागे एक मास ※ मासेकेर बाड़ा हइले सबार बिनाश
मासेकेर मध्ये ये वानर ना आइसे ※ सवंश मरिबे से आपनार दोषे
वानर कटक सुग्रीवेर आज्ञा पाय ※ सीतार उद्देशे तारा पूर्व्व दिके जाय

१ काँटे २ पूर्वसागर ३ अंगूठे के बराबर आकार वाले बालखिल्य मुनि ४ उसके आगे ।

कृत्तिवास कविमयी सुरसना * सैनगमन - पूरुब छवि - रचना
तिन ओझा मुरारि कर नाती * गिरा गान - प्रभुगुन प्रनिपाती

सीता-खोज हित वानर सेना का दक्षिण दिशा को प्रस्थान

दो० दच्छिन दिसि रावन बसत, सुग्रीवहिं भल ज्ञान।
महावीर बलवीर बहु तहाँ कीन सन्धान ॥ ४७ ॥

अंगद जाम्बवान मतिमाना * पवनतनय हनुमत बलवाना
रम्भा ऋषभ कुमुद बलशीला * पाँच प्रमुख सेनप नल - नीला
रहेउ सचेत, कहेउ कपिकेतू * दच्छिन गमन करहु सिय हेतू
मारग देस नदी नद जेते * गिरि कन्दर छानहु सब तेते
उत्तम अधम सकल चलि हेरी * हयगिरि[1] जाय लखहु कावेरी
जहँ गौतमी नर्मदा कृष्णा * लै सिय शोध निवारहु तृष्णा
सहस शिखर गिरि विन्ध्य विलोकी * दिव्य फूल फल सर अवलोकी
लखि कलिंग उत्कल अनुसारी * मलयागिरि विधि भली निहारी
शृंग महेन्द्र गिरीश विशाला * जह सुरनाथ रमत सब काला
दच्छिन तासु सिन्धु के तीरा * चन्दनबन सुख - गन्ध समीरा
चन्दन सुरभि पाँति बहुतेरी * सिन्धु पार छवि लंका केरी
उदधि - मध्य मैनाक सुहाये * जल सों सहस शिखर उठि आये

कृत्तिवास करिब कवित्वमय वाणी * अद्भुत रचिल पूर्व्वदिकेर पाँचनी
कृत्तिवास पण्डित मुरारि उझार नाति * यार कण्ठे विराज करेन सरस्वति

सीतान्वेषणे सुग्रीव कर्तृक दक्षिण दिके सैन्य-प्रेरण

दक्षिणे रावण बैसे सुग्रीव ता जाने * बड़-बड़ वीर पाँचे सेइ त दक्षिणे
बालिर कुमार पाछे मंत्री जाम्बुवान * पवननन्दन पाछे वीर हनूमान
ऋषभ कुमुद पाछे रम्भा योद्धापति * नल नील पाँच जने मुख्य सेनपति
सुग्रीव ब'लेन सैन्य शुन सावधाने * सीतार उद्देशे जाह तोमरा दक्षिने
यत नद नदी देख यत देख देश * यत यत गिरि आछे करिबे प्रवेश
उत्तम अधम स्थाने करिह प्रवेश * जे रूपे पाइते पार सीतार उद्देश
कृष्ण रेणी नदी जे नर्म्मदा गोदावरी * जावे अश्वमुख गिरि नदी जे कावेरी
पाइया पर्व्वत विन्ध्य सहस्र शिखर * नाना फल फूल तथा दिव्य सरोवर
परेते कलिंग देशे जाइबे उत्कल * मलय पर्व्वत गिया देखिबे सकल
महेन्द्र पर्व्वते जाबे अत्युच्च शिखर * सर्व्वक्षण थाकेन तथाय पुरन्दर
ताहार दक्षिणे जेउ सागरेर तीर * चन्दनेर बन तथा सुगन्ध समीर
सुगन्धि चन्दन निरखिबे सारि सारि * सागरेर पार जाइउ लंका पुरि
मैनाक पर्व्वत आछे सागर भितर * सलिल हइते उठे सहस्र शिखर

१ अश्वमुख पर्वत।

सहस शिखर चुम्बति आकासू * कञ्चन गिरि दस दिसा प्रकासू
सो दनुजी सिंहिका कराला * वरनत लोक विषम विकराला
दनुजी तहँ सिंहिका बखानी * सागर बीच बसति भयखानी
निसिचरि विकट धरित लखि छाया * ग्रसति संग शत जीव निकाया[1]

दो० सत्तर योजन बेंड़ पुनि दुइ शत लम्ब शरीर।
अर्ध गात नभ, अर्ध जल, होयँ त्रसित जनि वीर[2] ॥ ४८ ॥

एक छलाँग सिंधु के पारा * रहँ सचेत तबहिं निस्तारा
शत योजन तरि सागर पारा * रावन - लंकापुरी प्रसारा
सागर मध्य घिरी सो लंका * सुरन समीप जात अति शंका
सकल कीस करि सकल उपाई * हेरैं दसमुख कित सियमाई
जो तिन मिलैं न तहँ उद्देसू * लौटि करैं पुनि विन्ध्य प्रवेसू
विश्वकर्म - कृत निर्मित देखी * सुबरनमय तहँ पुरी विशेषी
विश्कर्मा कृत कुम्भज[3] - धामा * रत्न धातु गिरि विविध ललामा
शिखर - शिखर खोजहिं बलधारी * कहँ दसमुख कहँ सिया विचारी ?
तहँ पुनि दरस न तिनकर पाई * गवनहिं सुभट ऋषभ गिरिराई
ऋषभ महीधर[4] दच्छिन जासू * कनक किरन दश दिशा प्रकासू
दुर्ग पञ्च सुवरनमय सर्वा * भयकारी निवसत्त गन्धर्वा

सोनार पर्व्वत दशदिकेर प्रकाश * सहस्र शिखर उठे जुड़िया आकाश
सागरेर मध्ये आछे सिंहिका राक्षसी * विषम राक्षसी सेइ सर्व्वलोके घुषि
विषम राक्षसी से छाया पाइले धरे * वार शत जीव जन्तु गिले एके वारे
सत्तर योजन तनु आड़े परिसर * दुइ शत योजन दीर्घे उभे कलेवर
अर्द्ध तनु जले थाके अर्द्धेक आकाश * ताहा देखे वीरगण ना पाइउ त्रास
सकल वानर तथा हइउ सावधान * एक लाफे सागर लंघिले हबे त्राण
सागर तरिबे सबे शतेक योजन * सागरेर पारे लंका तथाय रावन
चारिदिके सागर मध्येते लंकागड़ * देवगणेर गति नाइ लंकार निगड़
खूंजिबे लंकार मध्ये सीता लंकेश्वर * यत्न पुरःसरे तथा सकल वानर
तथा यदि उभयेर ना पाउ उद्देश * विन्ध्य गिरि मध्ये गिया करिबे प्रवेश
अन्वेषन करिह तथाय कपिगन * विश्वकर्म्मा कृत पुरी सोनार गठन
अगस्त्येर बाड़ी विश्वकर्म्मार निर्म्मित * नाना रत्न नाना धातु पर्व्वत भूषित
वीर बण अन्वेषिउ शिखर शिखर * यत्न करि देख तथा सीता लंकेश्वर
तथा यदि ताहादेर ना पाउ दर्शन * ऋषभ पर्व्वते जाव सब वीर मन
ऋषभ पर्व्वत कर देखिबे दक्षिणे * दशदिक आलो करे सोनार किरणे
गन्धर्व आछये तथा स्वर्ण पञ्च गड़ * अन्य के जाइते पारे ताहार निगड़

१ समूह २ वानर वीर उससे भय न खायें ३ अगस्त्य मुनि का आश्रम ४ पर्वत।

भय गन्धर्व न जे उर करहीं * 'आनहिं रतन' तबहिं मन धरहीं
रतन लोभ परि धन के अर्था * करैं न कपिगन कबहुँ अनर्था
दुर्जय विकट हनैं छिन माहीं * रारि[1] उचित यहि अवसर नाहीं
रहि सचेत लखि शिखर अनन्ता * लेहु सीय - दसमुख कर अन्ता[2]
मिलै न तहँ केहु विधि सियमाई * तौ दक्षिण - पुनि[3] खोजहु जाई

दो० जियत न गति यमलोक जनि रवि-ससि करत उजेर।
निसि - दिन एक समान जहँ, एकाकार अँधेर ॥ ४६ ॥

यमपुर परे[4] ज्ञान मोहिं नाहीं * लौटहु निरखि मास इक माहीं
मास दिवस ते अधिक प्रवासू * सकुल तासु निज दोष विनासू
सिय कर शोध वेगि जो लावै * सम्मानित मम बन्धु कहावै
मास मध्य आवहि सिय देखी * लहै सदा मम प्रीति विशेषी
पवनसुतहिं बोले कपिराजू * तव कर लखत पूर्ति मम काजू
पवन वेग, जल अगिन न मानत * लइहौ सीय - खबरि, मन आवत
तव प्रसाद मम भार उतारा * तव यश होय भुवन विस्तारा
कोउ भट आन न मोहिं प्रतीती[5] * हेरहु सिय, पावौं उर प्रीती
रामहिं विनय कीन कपिकेतू * प्रभु कछु चिह्न देहु सिय हेतू

आनिते तथाय रत्न यदि यत्न हय * विषम गन्धर्व्व तथा न करिह भय
धन लोभ कारणेते हइबे अनर्थ * ताहा ना लइबे केह शुनह यथार्थ
बिषम दुरन्त तारा सेइक्षणे मारे * से कारणे द्वन्द्व येन केह नाहि करे
सावधाने उठि तथा शिखरे शिखरे * यत्न करि अन्वेषिउ दुष्ट लंकेश्वरे
तथा यदि नाहि पाउ सीतार उद्देश * यमेर दक्षिण बाड़ी करिउ प्रवेश
जीयन्ते यमेर बाड़ी कारो नाहि गति * यमेर दक्षिणे नाह चन्द्र सूर्य्य द्युति
यमेर दक्षिण दिके महा अन्धकार * रात्रि दिन नाहि चिनि सब एकाकार
यमेर दक्षिणे नाहि आमार गोचर * यमपुरी हइते फिरिउ वारवार
यमपुरी जाइते आसिते एक मास * मासेर अधिक हइले सवार विनाश
मासेकेर मध्ये जेइ वीर ना आइसे * सवंशे मरिबे से आपनार दोषे
आनिबे सीतार वार्त्ता शीघ्र जेइ जन * बाड़ाब ताहारे आमि सह बन्धुगन
सीतारे देखिया जे आसिबे एक मासे * सदा बन्धु हइया थाकिब तार पाशे
सुग्रीव बलेन शुन पवननन्दन * तुमि से साधिबे कार्य्य हेन लय मन
अग्नि जल नाहि मान पवनेर गति * तुमि हे देखिबे सीता लय मोर मति
तोमार प्रसादे आमि सत्ये हब पार * तव यश घुषिवेक सकल संसार
तुमि यदि सीता देख तबे आमि सुखी * आर के देखिबे सीता इहा नाहि देखि
सुग्रीव रामेर प्रति बलिल बचन * जानाइते जानकीरे देह निदर्शन

१ झमेला २ खोज ३ और भी दक्षिण ४ के पार ५ भरोसा।

पवनसुतहिं जनि चीन्हति सीता * वानर लखि न होय भयभीता
सुनि कपि-वचन, मुदित भगवाना * सिय प्रतीति[1] हित चिह्न प्रदाना
दीन मुद्रिका[2] निज रघुनाथा * हनुमत लीन जोरि जुग हाथा
कटक सहित गमने हनुमाना * टीड़ी दल जिमि गगन पयाना
नृप सुग्रीव - वचन सिर धारी * दच्छिन दिसि कपि - सैन सिधारी

कपिसेना का पश्चिम दिशा को प्रस्थान

पच्छिम जे नद - नदी प्रदेसू * हे सुषेन ! तहँ करहु प्रवेसू
ठौर - कुठौर न मन कछु लाई * खोजहु सिय चहुँ, बुद्धि लगाई

दो० सिन्धु हेरि पुनि मलय चलि कावेरी के तीर ।
कृमिजीवी जहँ देश अति गहन लखहु चलि वीर ॥ ५० ॥

निकट केतकी - कानन घोरा * जोजन बिस्तर, ओर न छोरा
दोउ दिसि वन केतकी अपारा * कण्टक धार विकट जिमि आरा
केहु विधि बेगि ताहि करि पारा * कपिगन लेयँ प्रान निस्तारा
तजि कानन केतकी विषादा * लहँ ताल - वन ताल - प्रसादा[3]
पच्छिम दिसि पुर-नगर मँझाई * हिंगुल गिरि छवि कौतुक छाई
पूर्व सिन्धु नद पच्छिम सागर * मध्य हिंगु अति उच्च धराधर[4]
निरखहु भल खोजहु सब पाहीं * तात ! असाध्य तुमहिं कछु नाहीं

हनुमान सह तार नाहि परिचय * कि जानि वानर देखि यदि पान भय
श्रीराम ब'लेन शुन सुग्रीव सुहृत् * अगुरी दिलाम आमि सीतार प्रतीत
दिलेन अंगुरी राम निज निदर्शन * हात पाति निल ताहा पवननन्दन
कपि सैन्य सह वीर हनुमान नड़े * पतग सकल येन झांके-झांके उड़े
चलिल सकल ठाट सुग्रीव आदेशे * दक्षिणेर पाँचलि रचिल कृत्तिवासे

सीता अन्वेषणे पश्चिम दिके वानर सैन्य-प्रेषण

पश्चिमे देखिबे यत नद नदी देश * सुषेण से पर्व्वते करिबे प्रवेश
सुस्थान कुस्थान ना करिउ विवेचना * अन्वेषिबे जानकीरे करिया मंत्रना
सिन्धुदेश मलय देश कावेरीर तीर * कृमिजीव देशे जाबे अति से गभीर
ताहार निकटे आछे केतकी कानन * दिशपाश नाहि तार अनेक योजन
दुइ पार्श्वे केयावन देखिते अपार * केयाबने काँटा येन करातेर धार
सकल वानर तथा हबे सावधान * शीघ्रशीघ्र गेले तथा पाइबे हे त्रान
केयावन एड़िया से जाइबे तालवने * दुःख पासरिबे सबे से ताल भक्षने
ताहार पश्चिमे जाबे पाटने पाटन * हिंगुलिया गिरि तथा अद्भुत गठन
तार पूर्व्वे सिन्धु नदी पश्चिमे सागर * तार मध्ये हिंगुलिया अत्युच्च शिखर
अन्वेषण करिबे से खाने सर्व्व ठाँइ * तोमार करिले कर्म्म असाध्य कि भाइ

१ विश्वास २ अँगूठी ३ ताल फल (खजूर) ४ पर्वत ।

जो तहँ मिलै न सिय उद्देसू * चक्रवान गिरि करहु प्रवेसू
पच्छिम सागर जोजन एका * लखहु यत्न करि भाँति अनेका
चक्रवान दस दिसा प्रकासा * रहि सचेत हेरहु तिन पासा
अद्भुत धार विपुल आकारा * कौतुक विष्णु - चक्र विस्तारा
विष्णु दनुज हयग्रीव निपाता * विष्णु-चक्र शोभित दनुगाता
भेदि चक्र दानव तन मारी * शंख-चक्र धर विष्णु कहाहीं
कपिगन हेरहिं गिरि आरोही * कहँ सीता कहँ दसमुख द्रोही
शोध-सिया कछु तहाँ न पाई * जोजन पुनि पचास चलि जाई
चक्रवान तजि, कञ्चन देसू * गिरि बराह पुनि करहु प्रवेसू

दो० विश्वकर्मा विरचित जहाँ विमल वरुण का धाम।
हीरक मणि माणिक्य युत मनहर मञ्जु ललाम ॥ ५१ ॥

पुरी अलोक हरति अँधियारा * नरकासुर जहँ सुभट जुझारा[2]
वरुण सहित निवास तहँ कीन्हा * यहि बिधि वरुण अभय तेहिं दीन्हा
रहेउ सचेत सदा तेहि देसू * तेहि कर[3] गये प्रान जनि सेसू
सुस्थिर, जतन करहु धरि धीरा * मोहिं प्रन-उरिन करावहु वीरा
तहाँ न लखि सीता संकेतू * गवनहु पुनि सुमेरु गिरिकेतू
घेरे साठि सहस्र जेहि श्रृंगा * छबिमय अतुल सोवरन रंगा

तथा यदि नाहि पाउ सीतार उद्देश * चक्रवान पर्व्वते ते करिबे प्रवेश
पश्चिम सागर तीर एकइ योजन * यत्न करि से खाने करिउ अन्वेषण
चक्रवान गिरि करे आलो दशदिगे * सावधाने सकले खुंजिउ एक योगे
विष्णुचक्र से खाने अद्भुत तार धार * असुरेर हाड़े चक्र अद्भुत आकार
हयग्रीव असुर मारेन गदाधर * असुरेर हाड़े चक्र देखिते सुन्दर
सेइ दैत्य हाड़े चक्र अति सृष्टि करि * से पर्व्वते आरोहिबे सकल वानर
आपनि हइल हरि शङ्ख चक्र धारी * अन्वेषिउ सीता लंकेश्वरे यतन करि
तथा यदि उभयेर ना पाउ उद्देश * बराह पर्व्वते गिया करिबे प्रवेश
चक्रवान छाड़ाइया पञ्चाश योजन * बराह पर्व्वते जाबे निर्म्मल काञ्चन
विश्वकर्म्मा सृजिलेन वरुणेर घर * हीरक माणिक्यमय तथा मनोहर
पुरी आलो करे ज्योति अन्धकार दूर * असुर नरक नाम विक्रमे प्रचुर
वरुणेर सहित से वैसे सेइ देशे * ते कारणे वरुण ताहारे नाहि नाशे
सेखाने हइउ सबे अति सावधान * तार हाते पड़िले नाहिक परित्रान
अप्रमत्त रूप तनु करिबे तथाय * आमारे कर मुक्त एइ प्रतिज्ञाय
तथा यदि जानकीर ना पाउ उद्देश * सुमेरु पर्व्वते गिया करिउ प्रवेश
देखिबे पर्व्वत सेइ कनक रचित * सदा षाटि सहस्र पर्व्वत से वेष्टित

---

१ चढ़कर २ योद्धा ३ नरकासुर के हाथों।

तिन समूह जे माठि हजारा * सुवरन मण्डित सकल पहारा
कनक - ताल - तरु मेरु सुहाये * तिन दुति[1] दसौ दिसा दमकाये
दिन गत, रैन नित्य अवतरहीं * उमा - महेश केलि तहँ करहीं
धरा न अस कहुँ मंजुल - मूला * बहु विधि बहु भूमत फल - फूला
कौतुक गीत वाद्य अरु नर्तन * नृत्य अप्सरन मोहति सुरगन
जोजन दु-शत तीनि लख देखू * परिक्रमति[2] जेहि भानु निमेषू
गिरि अपूर्व जहँ देव निवासू * सकल सुरम्य सुठाँव[3] प्रकासू
निमिष मात्र आलोक न देरी * देत सुमेरु दिवाकर[4] फेरी[5]
गिरि सों सहज लखत त्रयलोका * सदा सुमेरु रमत सुरलोका
नित्य भानु[4] परिभ्रमत सुमेरू * जेहि दिसि निसि, विपरीत[6] उजेरू

दो० अवनि स्वर्ग पाताल यत, सबन सुमेरु अधार ।
पच्छिम जासु न भानु गति निर्जन नित[7] अँधियार ॥ ५२ ॥

पच्छिम - मेरु, ज्ञान मोहिं नाहीं * तहँ लग लखि आवहु मम पाहीं
पन्थ सुमेरु अवधि इक मासा * जनि अबेर[8] नतु होय विनासा
जो न मास बिच आवै वीरा * सकुल[9] दोष निज तजै सरीरा
नृप आयसु पच्छिम अभियाना[10] * कटक सैन कृत्तिवास बखाना

तथा षाटि सहस्र पर्व्वतेर उदय * सेइ षाट सहस्र पर्व्वत स्वर्णमय
सोनार खर्ज्जूर वृक्ष सुमेरु शिखरे * दशदिक आलो करे दशमाथा धरे
तथा आसि केलि करे शंकर शंकरी * दिवा अस्त जाय तथा आइसे शर्व्वरी
एमन उत्तम स्थान नाहि पृथिवीते * नाना मत फल फूल आछे यूथे यूथे
गीत वाद्य नृत्य करे परम कौतुके * नर्त्तकी करये नृत्य देखे देवलोके
परिसर तिन लक्ष दु'शत योजन * चक्षुर निमिषे सूर्य्य करये गमन
अपूर्व्व पर्व्वत सेइ देव अधिष्ठान * सुमेरुर उपर सकल रम्य स्थान
निमिषेते सूर्य्य देव करये गमन * सुमेरु बेड़िया सूर्य्य करेन भ्रमन
स्वर्ग मर्त्य रसातल सुमेरु गोचर * देवगण करे तथा केलि निरंतर
सुमेरु फिरिया करे नित्य नित्य गति * एक दिक दिन हय आर दिक राति
स्वर्ग मर्त्य पाताल व्यतीत नाहि स्थान * सुमेरुर उपरे सकल अधिष्ठान
सुमेरुर पश्चिमे सूर्य्येर नाहि गति * अन्धकारमय तथा नाहिक बसति
ताहार पश्चिमे नाहि गमन आमार * सुमेरु पर्य्यन्त देखि आसिबेहे घर
सुमेरुते जाइते आसिते एक मास * मासेर अधिक हैले सबार विनाश
जेइ वीर मासेकेर मध्ये ना आइसे * सवंश मरिबे से आपनार दोषे
चलिल सकल ठाट सुग्रीव आदेशे * पश्चिम दिकेर यात्रा रचे कृत्तिवासे

१ प्रकाश २ परिक्रमा करता है ३ सुन्दर स्थान ४ सूर्य ५ परिक्रमा ६ उलटी (दूसरी) तरफ ७ सदैव ८ विलम्ब ९ कुल सहित १० कूच ।

सीता की खोज में कपि सेना का उत्तर दिशा को प्रस्थान

सुनहु शतावलि सैन तुम्हारी * छुवत धूरि नभ, जबहिं सिधारी
सेनिप[1] तुम बानरन प्रधाना * उत्तर दिसि, प्रिय ! करहु पयाना
कुमुद द्विविध दधि—गिरि-आकारा * अन्य प्रमुख बानरन हँकारा
कहेउ, शतावलि ! मम आदेसू * करहु शुभगमन उत्तर देसू
बरनौं यथा ज्ञान सब देसा * सिय खोजहु रहि मजग विसेमा
प्रथम दरस लहि बर्बर देसू * निरखहु पुनि हिमवान प्रदेसू
बसत जन्तु रवि किरन ममाना * तहँ सों गंग भगीरथ आना
अति पावन विरञ्चि[2] कर धामा * उद्गम भागीरथी ललामा
त्रिभुवन कहुँ न पुण्य अस ठावा * दरस भगीरथ सुरसरि[3] पावा
धरा धाम सुरधुनी[3] पधारी * दरस जासु सब पातक हारी
महिमा अमित गंग महरानी * बरनि सकत जनि बेदन - बानी
शाप विवस दनु[4] द्विज सौदासा * परसि गंग बैकुण्ठ निवासा

दो० जेहि विधि गंग पुनीत के दरस होयँ भुविलोक ।
तप अनन्त किय भगीरथ रविकुल - पुण्यश्लोक ॥ ५३ ॥

तप विधि हेतु, विष्णु पुनि ध्याई * अनाहार तप किय नृपराई
यदपि भगीरथ बहु तप कीन्हा * गंग - जनम कोउ मर्म न दीन्हा

सीता अन्वेषणे उत्तर दिके बानर सैन्य-प्रेरण

सुग्रीव ब'लन शुन वीर शतावली * तव सैन्य चलिते गगने लागे धूलि
वानरेर मध्ये तुमि मुख्य सेनापति * चलिबे उत्तरदिके आमार आरति
कुमुद द्विविध दधि वदन भूधर * आर आर आछे यत प्रधान वानर
शतावली ब'ले जे उत्तर तव देश * यात्रा कर शुभ क्षणे आमार आदेश
यत देश जानि आमि कहि तव स्थान * तथा सीता अन्वेषिउ ह'ये सावधान
इहार उत्तरे पाबे देश ये बर्ब्बर * हिमालय गिरि तथा यथा हिमघर
सूर्य्येर किरण ह'न जन्तु सब वैसे * भागीरथी गगादेवी तथा हैते आसे
ताहार उत्तर अंशे ब्रह्मार बसति * तथा हैते भगीरथ आने भागीरथी
एमन पुण्येर स्थान नाहि त्रिभुवने * भगीरथ गंगारे पाइल सेइ खाने
नारायणी गंगादेवी आसिय भुवने * पापीर करेन मुक्त निज दरशने
कि ब'लिते पारे लोक गंगार महिमा * चारि वेदे विचारिया दिते नारि सीमा
आछिल सौदास द्विज राक्षस हइया * गेल से बैकुण्ठपुरी गंगाजल पाइया
सूर्य्यवंशे भगीरथ नामे महीपाल * गंगा हेतु तपस्या करिल बहुकाल
आराधना ब्रह्मार करिल बारे बारे * तार पर विष्णुर तपस्या अनाहारे
भगीरथ नानाविध तपस्या करिल * गंगार जन्मेर तत्व केह ना ब'लिल

१ हे सेनापति २ ब्रह्मा ३ गंगा ४ दानव ।

बरष सहस दस शिवहिं मनावा * बरंब्रूहि[1] इमि शंभु सुनावा
भोलानाथ निरखि नृप बन्दे * सुरसरि दै मोहिं करहु अनन्दे
पितर पताल भसम अवसेसू * परसि गंग गवनहिं सुरदेसू
भागीरथहिं कहेउ पञ्चानन * कवन गंग, कित ? सुनेउँ न कानन
रविकुलनन्दन अतिव उदासा * कहौं कहा, प्रभु-चरनन-दासा
अष्टावक्र मुनीस बखाना * लहहु शम्भु ढिग गंग - विधाना
नयन मूँदि शंकर किय ध्याना * गंगा - जनम - मर्म उर आना
भक्त नेह बस शिव वर दीन्हा * सुरसरि सहित विदा नृप कीन्हा
करत शंखध्वनि नृप पग धरहीं * हिमगिरि तजि भगवति अनुसरहीं
साधु, साधु ! सब कहत भगीरथ * मुक्ति प्रशस्त कीन सुरसरि - पथ
भुवन भगीरथ पुण्य सरूपा * जगती भूप न तिन अनुरूपा
स्वर्ग पताल मर्त्य उद्धारा * परसि गंग पावन संसारा
भागीरथी भगीरथ लाये * परसि पातकी स्वर्ग सिधाये
रसना राम, विनामत पापा * कवि गावत भल गंग - प्रतापा

दो० हिम प्रदेस विस्तर[2] निरखि, दरस न सिय - लंकेस ।
पार हिमञ्चल उतर दिसि, पुनि कपि करहु प्रवेस ॥ ५४ ॥

शिव सेवा करि दश हाजार बत्सर * तबे शिव आइलेन तारे दिते वर
भगीरथ ब'ले शुन देव पञ्चानन * गंगा दिया रक्षा कर एइ निवेदन
मम पितृलोक भस्म ह'येछे पाताले * गंगा दरशन है'ल स्वर्ग वासे चले
गंगाधर ब'लेन ना जानि से गंगाय * कि जाति धरेन गंगा थाकेन कोथाय
भगीरथ शुनिया भावेन दुःख मने * आमि कि बलिब प्रभु तोमार चरने
अष्टावक्र मुनि कहिलेन मोर स्थान * आपनि कहिबे प्रभु गंगार विधान
वसिलेन ध्याने शिव मुदित नयने * गंगार जनम तत्व जानिलेन मने
भक्त ज्ञाने महादेव तुष्ट ह'य ताय * गंगा दिया भगीरथे करेन विदाय
आगे जान भगीरथ करि शंख ध्वनि * हिमालये उठिलेन देवी तरंगिनी
सबे ब'ले साधु साधु भाल भगीरथ * गंगा आनि करिलेन तरिवारे पथ
भुवनेर मध्ये भगीरथ पुण्यवान * त्रिभुवने केवा भगीरथेर समान
संसार पवित्र कैल परशे गंगार * स्वर्ग मर्त्य पाताल त्रिलोकेर उद्धार
आइलेन गंगा भगीरथेर कारणे * महापापी स्वर्ग जाय गंगा परसने
राम नाम स्मरणेते पापेर विनाश * गंगार माहात्म्य गीत रचे कृत्तिवास
हेन हिमालय गिरि बहु आयतन * यत्न अन्वेषउ तथा जानकी रावण
तथा यदि जानकीर ना पाउ उद्देश * ताहार उत्तर देशे करिउ प्रवेश

१ वर माँगो २ विस्तार ।

दुर्गम विषम अतिव भयकारी * गिरि तरु-दरस न मरसति वारी[1]
दुइशत योजन पन्थ न अन्ता * तहँ प्रवेस भय - दुःख अनन्ता
तजहिं बेगि कपि दुर्गम देसू * तब निवरै[2] रहि सजग कलेसू
उत्तर चलि गिरिवर कैलासू * जगमग सिखर सहस्र प्रकासू
जोजन सहस आयतन[3] भारी * ऊपर लख जोजन बिस्तारी
जहँ कैलाशपुरी छबि - रूपा * सदा उमा - शिव रमत अनूपा
तहँ पुनि अलकापुरी ललामा * कौतुकमय कुबेर कर धामा
विमला तहँ सरिता छवि देही * विद्रुम[4] सरिस लाल जल जेही
धनपति पियत नित्य सो नीरा * तरु सुगंध चन्दन छवि तीरा
चहुँ दिसि हेरि तहाँ सियमाई * कहँ लंकेस दसाननराई
जो श्रम होय न तहँ अनुकूला * पुनि पग देहु पहार त्रिशूला
तीनि शृंग गिरि तीनि सरूपा * गिरिवर कपिगन लखहिं अनूपा
प्रथम धवल चन्द्रिका समाना * दूजे मनहुँ जोति मणि नाना
लोहित[5] शृंग तृतीय प्रकासा * तीनि शिखर उठि छुवत अकासा
शिखर - शिखर भल खोजहिं कीसा * हेरहिं यथा मिलै भुजबीसा[6]
मिलै न शोध तहाँ बैदेही * उत्तर अवर[7] कटक पग देही

विषम दुर्गम अति भयानक स्थल * वृक्ष नाहि गिरि नाहि नाहि हाते जल
दुइ शत योजनेर पथ सेइ देश * पाइबे अत्यन्त भय करेने प्रवेश
सकल वानर तथा ह'य सावधान * झट जाबे आसिबे तबे से परित्राण
कैलास पर्व्वत जाबे ताहार उत्तर * सेइ दिक आलो करे सहस्र शिखर
योजन सहस्र एथ तार आयतन * उभेते पर्व्वते लक्ष गणिन योजन
तथाय अपूर्व्व पुरी कहने ना जाय * सतत करेन लीला पार्व्वती तथाय
आर एक अद्भुत अलका नाम पुरी * धनेश्वर कुबेर ताहार अधिकारी
ताहार उपरे नदी नामेते विमला * तार जल रांगा वर्ण येन रक्तपला
धनेश्वर कुबेर करेन पान ताय * सुगन्धि चन्दन वृक्ष तीरे शोभा पाय
सीता लैया थाके यदि तथा दशानन * चतुर्द्दिके ताहार करिउ अन्वेषण
तथा यदि जानकीर ना पाउ उद्देश * त्रिशृंग पर्व्वत गिया करिबे प्रवेश
त्रिशृंग पर्व्वत सेइ तिन मूर्ति धरे * चमत्कार हबे तथा सकल वानरे
एक शृंग रूप तार येन चन्द्रकला * द्वितीय शृंगेर रूप येन मणि पला
अन्य शृंग रांगा वर्ण सर्व्वत्र प्रकाश * त्रिशृंग पर्व्वत गिया जुड़ये आकाश
सेखाने करिउ तत्त्व शिखरे शिखरे * यत्न करि अन्वेषिउ सकल वानरे
तथा यदि नाहि पाउ सीता लंकेश्वरे * ताहार उद्देशे जाव ताहार उत्तरे

१ जल नहीं बरसता २ निवटै, बच सके ३ घेरा ४ मूँगा ५ लाल ६ रावण ७ और उत्तर की ओर।

दो० सुबरन जम्बूवृच्छ तहँ, कनक विपुल आकार।
तेहि कौतुक-तरु नाम लहि, जम्बु द्वीप प्रचार ॥ ५५ ॥

सब द्वीपन सो प्रमुख प्रधाना * द्वीप न जम्बू द्वीप समाना
सुरगन केलि करत दिन राती * जम्बूद्वीप नाम यहि भाँती
जिमि गिरि शिखर चली तरु डारी[1] * लख योजन प्रकाण्ड[2] बिस्तारी
चहुँ लखि मिलैं न सिय-लंकेसू * अधि-उत्तर पुनि करहु प्रवेसू
जम्बुद्वीप उत्तर गिरि मन्दर * तहँ विशाल सरवर अति सुन्दर
सर्वस्थली कहत सब नामा * तहँ विरञ्चि सुख लहति ललामा
मन्दाकिनि जहँ सरसति नीरा * उद्गम सरित् कौशिकी, तीरा
कपिगन विफल होउ तहँ हेरी * लेहु डगर[3] बढ़ि उत्तर केरी
तहँ महेश सागर शत योजन * आकर[4] मणि बहुमूल्य रत्न धन
अस्ताचल गिरि सागर माहीं * सहस शृंग उठि नभ तन जाहीं
लखि महेश सागर भयखानी * सावधान खोजहु सियरानी
कञ्चन गिरि दस दिसा प्रकासा * परसहिं सिखर सहस्र अकासा
गिरिवर मूल सुवर्ण ललामा * तहँ शिवलिंग तहाँ शिवधामा
रावण पूजत सदा महेसा * तेहि मिस[5] जाय तहाँ लंकेसा

ताहार उत्तर एक अद्भुत आकार * जम्बु वृक्ष देखिबे से अति चमत्कार
स्वर्ण-जम्बु वृक्ष सेइ सोनार आकार * तार नामे जम्बुद्वीप हइल प्रचार
सकलेर मुख्य सेइ जम्बूद्वीप हय * अन्य यत जम्बू द्वीप तार तुल्य नय
तार तले देवगण नित्य करे केलि * ताहार कारण एइ जम्बू द्वीप बलि
डाल-डाल धरे येन पर्व्वतेर चूड़ा * लक्ष योजनेर बेड़ा से गाछेर गोड़ा
सीता ल'ये यदि थाके तथाय रावण * चारिदिके सेखाने करिबे अन्वेषण
तथा यदि नाहि पाउ सीता लंकेश्वर * करिबे गमन आरो ताहार उत्तर
मन्दर पर्व्वत जम्बूद्वीपेर उत्तर * एक ह्रद आछे तथा परम सुन्दर
सर्व्वस्थली ब'लिया से ह्रदेर ख्याति * आइसेन देखिते से ह्रद प्रजापति
स्वर्ग हैते सेइ ह्रदे पड़े गंगनीर * कौशिकी नामेते नदी बहे सेइ तीर
आमार बचन शुन सर्व्व कपिगन * सावधाने अन्वेषिबे सीता दशानन
तथा यदि नाहि पाउ सीता लंकेश्वर * ताहार उत्तरे जावे महेश सागर
महेश सागरे जन्मे बहुमूल्य धन * आड़े दीर्घ सागर से शतेक योजन
अस्ताचल पर्व्वत सागरेर भितर * जल हैते उठे गिरि सहस्र शिखर
देखिया हइबे सबे सभय अन्तर * अन्वेषिबे सावधाने महेश सागर
सोनार पर्व्वत दशदिक सुप्रकाश * शिखर सहस्र उठे जुड़िया आकाश
सोनार गठित गोड़ा देखिते सुठाम * शिवलिंग आछे ताहे येन शिवधाम
रावण से महेश्वरे पूजे सर्व्वक्षण * महेशेर काछे गिया थाकेन रावण

---

१ वृक्ष की शाखा २ वृक्ष का तना ३ रास्ता ४ खान ५ निमित्त।

हेरहु तहँ बहु आस लगाई * सम्भव, ते कहुँ परैं लखाई
किन्तु लंकपति माया रूपा * विजय कीन त्रयलोक अनूपा

दो० तीनिलोक जय, दिग्विजय, किय लहि शंभु-प्रसाद।
सुरन-त्रास, सो बालि पहँ, लहेउ मात्र अवसाद[1] ॥ ५६ ॥

जो निष्फल, गिरि क्रौञ्च अगारी[2] * विषम अँधेर लखहु भयकारी
केवल दरस निकट जनि गमना * गये समीप सुनिश्चित मरना
दिसि नैरित[3] गिरि क्रौञ्च बराई[4] * द्रोणाचल उत्तर दरसाई
दरस द्रोण सुख-खानि बखानी * सुर, गन्धर्व, अप्सरन-खानी
बालखिल्य आदिक मुनि जेते * बसत द्रोणगिरि तप-रत तेते
चन्द्रप्रभा, रवि-रश्मि-प्रकासू * सुलभ न नखतन जोति अकासू
रूप-रूपसिन गिरि आलोका * सरित पुण्यदा तहाँ विलोका
दोउ तट अगणित बाँस सुहाये * जुरि दोउ तोरण[5] गगन बनाये
बसत भयंकर म्लेच्छ अपारा * बाँस-सेतु[6] धरि करहु उतारा
उत्तर पुनि आगे शुभ-देसू * प्रमुदित जन तहँ मिलैं असेसू
मन-वाञ्छित सुमधुर फल मूला * रतन द्रव्य सुबरन अनुकूला
विविध रतन मानिक जल माहीं * रक्तिम जल लहि मानिक-छाहीं

अन्वेषण करिउ से शिखरे शिखर * पाइते पारिबे तथा सीता लंकेश्वर
किन्तु माया जाने से पापिष्ठ दशानन * स्वर्ग मर्त्त पाताल जिनिल त्रिभुवन
सेविया शिवेर पद दिग्विजय करे * त्रिभुवन जिने बेटा शंकरेर करे
देवगण जार डरे एक पाश हय * सबे मात्र बालि स्थाने तार पराजय
तथा यदि नाहि पाउ सीतार उद्देश * महीधर क्रौञ्च गिया करिउ प्रवेश
क्रौञ्च पर्व्वत देखिया लागिबेक भय * विषम पर्व्वत सेइ अन्धकारमय
दूर हैते पर्व्वत करिबे दरशन * ताहार मध्येते गेले अवश्य मरन
ये पर्व्वत राखिया दक्षिणे किंवा बामे * ताहार उत्तरे जाबे गिरि द्रोण नामे
द्रोण गिरि देखिले हइबे बड़ सुखी * देव गन्धर्व्वेर आछे यत चन्द्रमुखी
बालखिल्य आदि करि यत मुनिवर * बास करे सकले से पर्व्वत उपर
चन्द्रतेज नाहि तथा सूर्य्येर प्रकाश * नक्षत्र नाहि देखि ना देखि आकाश
कामिनीगनेर तेजे तथा आलो करे * पुण्यदा नामेते नदी ताहार उपरे
दुइ कूले आछे तार बंश अगनन * उत्तर तीरेर बंश दक्षिणे मिलन
म्लेच्छ जाति आछे तथा जाति भयंकर * नदी पार हय तारा बाँशे करि भर
ताहार उत्तरे जाबे सीतार उद्देश * सेइ देशे बहु लोक हरिषेते वैसे
जाहा चाबे ताहा पाबे मिष्ट वृक्ष फल * स्वर्ण जन्ये द्रव्य तथा सोनार उत्पल
रतन माणिक नाना जलेते उपजे * रक्तवर्ण नदी जल माणिकेर तेजे

१ हार, पराभव २ आगे ३ दक्षिण-पश्चिम कोण ४ बचाते हुये ५ जुड़ कर महराब के समान फाटक ६ बाँस का पुल।

अभरन[1] रतन पुरुष जहँ सोहा * अकथ नारि - अभरन मन मोहा
मदमातिन - मद इन्द्र रिसाई * बनितन[2] शाप दीन सुरराई
कीन अवज्ञा जिमि मदमाती * जीवन दिवस, मरन नित राती
यहि विधि रैन नित्य अवसानू[3] * भोर होत पुनि जीवन - दानू

दो० शाप-विवस, नित रूपसी, रजनी रहि निष्प्रान।
निरखि अरुन छवि मगन ते नृत्य रंग रस गान ॥ ५७ ॥

अद्भुत सृष्टि कहाँ केहि भाँती * धरनि रत्नगर्भा चहुँ ख्याती
सावधान कपिगन तहँ जाई * भल हेरहिं रावन - सियमाई
उत्तर चलि पुनि सिंधु अपारा * गिरिवर हेमकूट विस्तारा
गिरि न हेमगिरि अद्भुत रंगा * अगिनित शृंग तेहि शृंग उतंगा[4]
शिखर समूह गगन बतराहीं * जग गिरि-हेम सरिस गिरि नाहीं
तेहि उत्तर न भानु - पैठारी[5] * जीव न तहँ चहुँ दिसि अँधियारी
आगे तासु गयेउँ मैं नाहीं * तहँ लौं लखि आवौ मम पाहीं
यहि विधि जम्बूद्वीप बखानी * सीमा, बसत जहाँ लौं प्रानी
मारग दिवस तीस गिरि हेमा * बीते अवधि सकुल जनि खेमा[6]
मास अधिक जेहिं समय लगावा * निज करनी निज प्रान गवाँवा
बरनेउँ सबन कथा सब देसू * जहँ सिय चलि आनहु उदेसू[7]

नाना रत्न अलंकार पुरुषेते परे * कि वर्णिब अलंकार स्त्रीलोके या धरे
अहंकारे नारीगण इन्द्रे ना मानिल * क्रोध करि इन्द्रदेव अभिशाप दिल
अहंकार येमन ना मानिलि आमाय * जीवित हइबे दिने राते मृत प्राय
सेइ शापे मृत थाके सकल रजनी * प्रभात हइले बाँचे सकल रमणी
रजनीते थाके तारा हये अचेतन * प्रभाते उठिया करे सगीत नर्त्तन
बहुरत्ना पृथिवी ब'लेन सर्व्वजन * कत ठाँइ कत सृष्टि न हय गनन
सावधान हइया जाबे यत कपिगन * यत्नेते खुँजिबे तथा जानकी रावण
ताहार उत्तरे जाबे अनन्त सागर * तथा हैते हेमगिरि नाम गिरिवर
सकल पर्व्वत मध्ये हेमगिरि सार * सकल पर्व्वत जिनि शिखर ताहार
आकाशेते जार शृंग लागे सारि सारि * हेमगिरि सम गिरि जगते ना हेरि
ताहार उत्तरे नाइ भास्करेर गति * अन्धकारमय तथा नाहिक बसति
ताहार उत्तरे नाइ आमार गमन * से पर्य्यन्त खुजिया फिरिबे सर्व्वजन
एइ कहिलाम जम्बू द्वीपेर उत्पत्ति * ए अवधि आछे जीव जन्तुर बसति
हेमगिरि जाइते आसिते एक मास * मासेर अधिक हैले सवार विनाश
मासेकेर मध्ये जेवा फिरे ना आइसे * सवंश मरिबे से ये आपनार दोषे
सकल देशेर कथा कहिनु सबाके * ये देशे थाकेन सीता उद्धारिबे ताँके

१ आभूषण २ बनिताओं (स्त्रियों) को ३ मृत्यु ४ ऊँचा ५ प्रवेश ६ कल्याण
७ पता।

स्वर्ग पताल मर्त्य त्रयलोका * शासन इतर न सृष्टि विलोका
पौरुष करि दिग्देसन जाई * रामहिं सीय समर्पहु लाई
निफल, न आनि सकौं वैदेही * तासु विनास, न संसय येही
मास अवधि, जनि करौं अबेरी * नतरु कुसल जनि प्रानन केरी
साखी अग्नि, वचन मैं हारा * करहुँ प्रानपन सिय उद्धारा

दो० कहेउ, शतावलि! प्रथम लगि अखिल उत्तरखण्ड।
सुबरन लंक प्रवेश पुनि जहँ लंकेस प्रचण्ड ॥ ५८ ॥

करतल मारि ताल बहु दीन्हा * सुभट मेघ सम गर्जन कीन्हा
मैं अकेल, कपि-सेन न काजू * हनि रावन आनहुँ सिय, राजू!
सिय पताल, पाताल प्रवेसू * जो सिय सिन्धु, करौं जल सेसू[1]
वृथा मलीन लखन - रघुराई * निज पौरुष आनहुँ सिय माई
वृथा शोच उर राम भुवाला * मम रन, किमि सम्मुखै[2] दसभाला
आनन - जान, न बच अधिकाई * लावहुँ मैं प्रभु काज बनाई
सुनत शतावलि विक्रम बानी * उर प्रतीति कपिपति बहु मानी
सकल सैन उत्तर दिसि धाई * कृत्तिवास करि गान सुनाई

उत्तर-पूर्व-पश्चिम से निराश कपि-सेना वापस

विपुल नदी-नद गिरि बहु नामा * पूँछत सुनि कपीस सन रामा

स्वर्ग मर्त्य ओ पाताल एइ तिन स्थान * इहा विना सृष्टि नाहि शास्त्रे विधान
यत देश कहिलाम जाइबे साहसे * सीतादेवी आनि दिबे श्रीरामेर पाशे
आनिते ना पार यदि सीता ठाकुरानी * आमि गिया ताहारे करिब हानाहानि
मासेकेर मध्येते आसिबे वीरगण * अधिक हइले तार अवश्य मरण
अग्नि साक्षी करे करियाछि अंगीकार * प्राणपणे आमि सीता करिब उद्धार
सर्व्वस्थाने जाब आमि यत दूर लङ्का * तार पर प्रवेशिब स्वर्णपुरी लंका
मालसाट मारे बहु देय कर तालि * मेघेरे गर्ज्जने गर्ज्जे वीर शतावलि
कि कर्य्ये पाठाउ राजा एत सेनागण * आमि आनि दिब सीता मारिया रावण
पाताले थाकेन सीता पाताले प्रवेशि * सागरे थाकेन यदि ताहा आमि शुषि
श्रीराम लक्ष्मण केन हउ म्रियमाण * सीता उद्धारिब आमि हये यत्नवान
कि हेतु श्रीराम तुमि मने भाव आन * एकेला रावण मोर ना धरिबे टान
आसिते जाइते मोर जे होक ब्याज * अविलम्ब देखा दिब सिद्ध करि काज
शुनि शतावलीर से विक्रम वचन * भरोसा पाइल मने सुग्रीव राजन
चलिल सकल ठाट सुग्रीव आदेशे * उत्तर दिकेर यात्रा रचे कृत्तिवासे

उत्तर पूर्व्व-पश्चिम दिके सीतार उद्देश ना पाइया वानरगणेर प्रत्यावर्त्तन

नद नदी पर्व्वतेर शुनिया त नाम * सुग्रीवेरे जिज्ञासेन तखन श्रीराम

---

१ समाप्त २ सामना करे।

सागर द्वीप महीधर धरनी * सुहृद ! कथा किमि विस्तर बरनी ?
बालि-त्रास भरमेउँ, रघुनाथा * त्रिभुवन लखेउँ, कहेउ कपिनाथा
निमिषमात्र पथ बालि महीपा * आन न कतहुँ सप्त प्रभु द्वीपा
जहँ जहँ जावँ, बालि अनुसरही * लहि छन दरस प्रान मम हरही
त्रिभुवन बालि सरिस नहिं वीरा * तीनि लोक भरमेउँ तेहि पीरा
कतहुँ विराम न रैन बसेरा * संकित सदा बालि-भटभेरा[1]
निर्दय, मिलत न प्रान-निवारन * दूरि दूरि भरमेउँ यहि कारन

दो० सिन्धु नदी गिरि निरंतर भरमेउँ देस दिगन्त।
जड़ जंगम त्रयलोक चहुँ घूमेउँ बार अनन्त ॥ ५६ ॥

चहुँ दिसि धरनि अन्त जहँ पाये * दुर्दिन तहँ लौं दरस कराये
बरनेउँ प्रथम बालि-भय-हेतू * इमि मैं विश्व लखेउँ रघुकेतू !
मारुति[2] कही मूकगिरि[3]-गाथा * लही सरन इत जिमि, रघुनाथा !
चारि सखा युत भ्रमन विषादा * लहेउँ नृपति-पद नाथ-प्रसादा
इमि नित सुहृद युगुल बतराहीं * मास व्यतीत दिवस नगिचाहीं
पूरुब देखि प्रगट तेहि काला * कपि विनोद जहँ कीस भुवाला
पश्चिम सों सुषेन बलवीरा * सीय न शोध विकल रघुवीरा
उत्तर पूरुब पच्छिम हेरी * आय सुनत कहि सब, सब केरी

সাগর পর্ব্বত দ্বীপ পৃথিবীর অন্ত * কেমনে জানিলে মিত্র কহ সে বৃত্তান্ত
কহেন সুগ্রীব শুন রাম গুণাধার * বালি ভয়ে ভ্রমিলাম এ তিন সংসার
সপ্তদ্বীপা মহী বালি নিমিষেতে যায় * কোন দেশে যাব আমি না দেখি উপায়
যে দেশে যাইব আমি তথা বালি যাবে * মুহূর্ত্তেক দেখা পেলে তখনি মারিবে
বালি সম বীর নাই এ তিন ভুবনে * স্বর্গ মর্ত্ত্য পাতালেতে ফিরি সে কারণে
এক দিন এক স্থানে না থাকি কোথায় * বড় ভয় বালি রাজা যদি দেখা পায়
দেখা পেলে প্রাণে মারে বড়ই নিষ্ঠুর * সে কারণে পলাইয়া ভ্রমি বহু দূর
সাগর পর্ব্বত নদী দেশ দেশান্তর * সর্ব্বত্র ভ্রমণ করি আমি নিরন্তর
স্থাবর জঙ্গম আদি এ তিন সংসার * প্রতি স্থানে ভ্রমণ করিহে শতবার
যেখানে যেখানে আছে পৃথিবীর অন্ত * সে কারণে জানি মিত্র সকল বৃত্তান্ত
পূর্ব্বকথা কহিলাম তোমার গোচরে * সর্ব্ব তত্ত্ব জানিলাম সে বালির ডরে
ঋষ্যমূকের কথা যেই কহিলে হনুমান * সে কারণে করিলাম সেথা অবস্থান
চারি পাত্র ভ্রমিতাম হ'য়ে সঙ্কুচিত * তোমার প্রসাদে এবে রাজ্যেতে পূজিত
এই রূপে দুই মিত্রে প্রত্যহ সম্ভাষ * দেখিতে দেখিতে প্রায় পূর্ণ একমাস
এক দিন পূর্ব্ব দিক হইতে সুমতি * উপস্থিত হইল বিনোদ সেনাপতি
না শুনি সীতার বার্ত্তা আর্ত্ত রঘুবীর * আইল পশ্চিম দেখি সুষেণ সুধীর
পশ্চিম উত্তর পূর্ব্ব তিন দিক দেখে * আসিয়া সকলে কহে সবার সম্মুখে

१ बालि का सामना पड़ जाने की शंका २ हनुमान ३ ऋष्यमूक पर्वत।

खोजे गिरि बहु नाना देसा * खबरि न सीय कतहुँ लवलेसा
रघुपति व्यथित मूर्च्छा आई * समुझावत बहु बिधि कपिराई
दच्छिन जहँ निवास लंकेसू * प्रभु ! कपि प्रमुख गये तेहि देसू
जाम्बवान पुनि बालिकुमारा * हनुमत् काज सवाँरनहारा
बीर पवनसुत बुद्धि अपारा * निसचय तिन-कर[1] काज उबारा
तव कारज मारुति अति प्रीती * खोजहिं सिय, भल मोहिं प्रतीती
प्रखर बुद्धि अतिशय मतिमाना * संक न, काजु करैं हनुमाना
बचन कपीस धीर प्रभु आवा * कृत्तिवास किष्किन्धा गावा

राम-नाम-महिमा

छं० सुमिरि राम उर धाम निरंतर अगतिन-गति रामायन ।
श्रवन, अतुलगुन गान रामके अश्वमेध - फल दायन ॥
पद-रज परसि शिला भइ तरुनी, तरनी[2] कञ्चन काया ।
निरालंब लखि नाव हटायो, अहह करो प्रभु ! दाया ॥
मंत्र तंत्र जप जोग ध्यान - रत स्वतः सिन्धु-भव पारा ।
करुनसिन्धु तो दीन - हीन - गुन मनुजन करो उतारा ॥
बिना छिदाम, किनारे हेरौं, बोरौ भले उबारौ ।
माँझी सहज सुभाव, माँझ लखि बिना छिदाम उतारौ ॥

नाना गिरे खूँजिनु देखिनु बहुदेश * कोन देशे ना पाइनु सीतार उद्देश
रघुनाथ हइलेन शुनिया मूर्च्छित * ताँहारे प्रबोध देय सुग्रीव सुहृत्
दक्षिण दिकेते प्रभु रावणेर घर * से दिके गियाछे यत प्रधान वानर
अगद गियाछे आर मंत्री जाम्बुवान * कार्य्य सम्पादक संगे वीर हनूमान
बुद्धिर सागर बड वीर हनूमान * अवश्य साधिबे कर्म्म किछु नहे आन
तव कार्य्ये हनूमान वडइ तत्पर * अवश्य हइब सीता ताहार गोचर
बुद्धिते पण्डित हनूमान महाशय * हनूमान पावे सीता ना करिह भय
स्थिर हइलेन राम राजार आश्वासे * रचिल किष्किधाकाण्ड कवि कृत्तिवासे

राम-नाम महिमा

'राम' नाम ब'ल भाइ, मुखे बार बार * भेवे देख राम विना गति नाइ आर
करिलेन अश्वमेध श्रीराम यतने * अश्वमेध-फल पाय रामायण शुने
एमत रामेर गुण कि दिबे तुलना * पाद स्पर्श शिला तर, नौका हय सोना
पार कर रामचन्द्र, पार कर मोरे * दीन देखि नौका राम, ल'ये गेले दूरे
योग योग तंत्र मंत्र, जेइ जन जाने * तारे कि ताराबे राम तबे निजगुणे
ध्यान पूजा मंत्र तंत्रे जार नाहि ज्ञान * तारे यदि पार कर तबे भगवान
मोर सगे कड़ि नाइ, पार हब किसे * कर वा ना कर पार कूले अछि ब'से
नेयेर स्वभाव आमि जानि भाले भाले * कड़ि ना पाइले पार करे सन्ध्याकाले

---

१ उनके हाथों २ नाव ।

स्वामी पालन - प्रलय, सर्प - विष तुम विष झारनहारे।
लीलानाथ सकल के मालिक, प्यादा सकल तिहारे ॥
नाम पतितपावन किमि कहिये, बिना पतित पर दाया।
साधुन सद्गति सदा, असाधुन तारिय तौ प्रभु-माया ॥
तव पद-रेनु अहिल्या तारी, क्षमहु नाथ! मम करनी।
भवसागर के पार हेतु तव युगुल चरन मम तरनी[1] ॥
लाख तजौ, तव पद-नूपुर ह्वै बाजि राम धुनि गावौं।
राम सरित लखि, कहँ विराम, अस्नान करौं, सुख पावौं ॥
मकर, भवँर, पुनि प्रलय रहित शुचि शान्त राम-निर्झरनी,।
विमल मन्जु मधुमय सलिला तजि अन्य किते मलहरनी ॥
तृप्ति न, पावन नीर पान करि पुनि पुनि बढ़त पिपासा।
राम-सरित करि पार, न पुनि यहि दिसि की होय दुरासा ॥
दो० राम गंग सों पार ह्वै जनि लौटन मन दीन।
नाम-अमिय करि पान, बहि, पतित होय जल-लीन ॥
पार उतारत, अमित गुन, अन्त जासु मुख राम।
सो प्रानी सुरपुर लहै, यमपुर तासु न काम ॥ ६० ॥

आपनि से भांग प्रभु, आपनि से गड़ * सर्प ह'ये दंश तुमि, उझा ह'ये झाड़
सकलि तोमार लीला, सब तुमि पार * हाकिम ह'ये हुकुम दाउ, पेयादा ह'ये मार
अधम देखिया यदि दया ना करिबे * 'पतितपावन' नाम कि गुणे धरिबे
साधुजने तराइते सर्व्व देव पारे * असाधु तरानु जिनि, ठाकुर ब'लि तांरे
अहल्या पाषाण ह'ये छिल दैववशे * मुक्ति पद पाइल तव चरण परशे
पार कर रामचन्द्र रघुकुलमणि * तरावारे दुटि पद क'रेछ तरणी
तुमि यदि छाड़ मोरे, आमि ना छाड़िब * बाजन नुपुर ह'ये चरने बाजिब
राम नदी व'ये जाय देखह नयने * ताहे गिया स्नान कर कूले बस केने
से नदीर मध्ये नाइ कुम्भीर हागर * झड़ वृष्टि ना पाइबे ताहार उपर
पिउ स्वच्छ सुशीतल सुमधुर जल * कोथाय चलिया जावे अन्तरेर मल
यतइ करिबे पान, ना मिटि'ब आशा * जल पिते पिते पुनः बाड़िबे पिपासा
वारेक जाइले राम नदीर उपार * एबारे आसिते नाहि हय, पुनर्व्वार
हेदे रे पामर लोक पार हबि यदि * पिउ राम नामामृत व'ये जाय नदी
मृत्युकाले वारेक जे 'राम' बलि डाके * स्वर्ग जाय सेइ, यम दाँड़ाइया देखे
एमन रामेर गुण वर्णिते ना पारि * हेलाय तरिया जावे मुखे बल हरि

---

१ नाव।

दक्षिण पाताल में सीतान्वेषण में विफलता

विफल तीनि-दिसि सकल प्रयासू * दच्छिन दिसि पुनि-कथा प्रकासू
बिन्ध्य-मात्र कपि-सैन प्रयामा[1] * बीतेउ सहज तहाँ इक मासा
मास अवधि बीती भय छावा * कपिगन जीवन - आस गवाँवा
दण्डक कानन ओर न छोरा * कपिन प्रवेश कीन बन घोरा
बीती कथा, विप्र सुत एका * वयस वर्ष दस छबि - अतिरेका[2]
वन्य - जन्तु द्विज - सुवन विनासा * विकल वनहिं द्विज शाप प्रकासा
जल फल फूल न इत संचारा * यहि बन, जीव न जन्तु गुजारा
कपिन विषम वन कीन प्रवेसू * तदपि सुलभ जनि सिय - उद्देसू
सम्मुख अन्य एक वन देखी * तहँ प्रवेश मन कीन विशेषी
कानन ज्यों कपिगन पग दीन्हा * दानव विकट नयनतर लीन्हा
भच्छहि कीस, विकट दनु धावा * अंगद हाँक प्रकोपि लगावा
अहह लंकपति तैं दसमीसा * तव तलास[3] भरमत भट कीसा
अभिरि बालिसुत निसिचर मंगा * दोउ भट मत्त लपिटि रनरंगा
मानत हार न वीर समाना * जर्जर गात समर विधि नाना
अंगद प्रबल कबहुँ निमिचारी * छिति डगमग तिन भार बिचारी
दनु - उर अंगद मुष्टि प्रहारा * दनु अचेत मुख शोनित - धारा

दक्षिण-पाताले सीतार अन्वेषणे वानरगणेर वैफल्य

तिन दिक विफल हइल अन्वेषन * दक्षिणदिकेर कथा शुनह एखन
दक्षिणेते यत ठाट करिल प्रयास * विन्ध्यगिरि अन्वेषिते गेल एकमास
मासेकेर अधिक हइले लागे डर * जीवनेर आशा छाड़े सकल वानर
विषम दण्डक वन नाहिक उद्देश * ताहाते वानर सैन्य करिल प्रवेश
पूर्व्वे तथा छिल एक ब्राह्मण तनय * दश वर्ष वयस्क सुन्दर अतिशय
ए वनेर वन्य जन्तु ताहारे मारिल * पुत्र शोके ब्राह्मण वनेर शाप दिल
तदवधि फल जल नाहिक सञ्चार * कोन जीव जन्तु तथा नाहि थाके आर
हेन वने वानरेरा करिल प्रवेश * तथा ना पाइल तारा सीतार उद्देश
अन्य वन ताहारा देखिलेक सम्मुखे * जानकीर अन्वेषणे सेइ वने ढुके
सकल वानर गेल वनेर भितर * देखे एक राक्षस देखिते भयकर
धाइया आइल से वानर खाइबारे * रुषिल अंगद वीर जुझिते हाँकारे
आय वेटा बुझि तुइ लंकार रावण * आमरा भ्रमिया करि तार अन्वेषण
अंगद राक्षसे लागिल हुड़ा-हुड़ि * हुड़ा-हुड़ि एड़िया उभये जड़ाजड़ि
कहे कारे नाहि जिने दुजने सोसर * आँचड़ कामड़े दोंहे हइल जर्ज्जर
क्षणे हेटे अंगद से क्षणेक उपरे * टलमल करे क्षिति उभयेर भारे
अंगद चापड़ मारे राक्षसेर बुके * अचेतन हइल से रक्त उठे मुखे

१ सीता की खोज करते २ अत्यंत सुन्दर ३ तलाश, खोज में ।

दो० दनुज मरन, पुनि खेद अति, शोध न सिय-लंकेस।
बोले अंगद कपिन सन, बैठि विटप-तर-देस ॥ ६१ ॥

सिय - कारन, आये यहि देसू * मास अवधि सों विगत विसेसू
बिन सिय-खबरि नृपति पहँ जाहीं * तौ अकाल परि प्रान नसाहीं
अंगद - वचन सबन मत एका * छानत बन बन जतन अनेका
अंगद कहेउ, कुशल सिय केरी * दुर्लभ, यदपि चतुर्दिसि हेरी
पितु - अनुजहिं मैं बाचा हारी * लौटहुँ मातु सिया उद्धारी
चहुँ दिसि दूर कटक पग धारे * लखैं कौन किमि काज सवाँरै
शोच न होनी[1], हित यहि माहीं * भल लखि दखिन, चलैं प्रभु पाहीं
सिय न शोध, तौ सब जन मरहीं * राम-मरन[2] पुनि सब अनुमरहीं
लखन - मरन परि रघुपति - सोकू * पुनि सुग्रीव गमन यमलोकू
तबहिं सुरंग गहन लखि पाई * नीर न, कलरव[3], खग - समुदाई
निकट न नीर न फल लवलेसू * पञ्छिन सोर[3] अनन्त असेसू
कौतुक लखि मन चिन्तन करहीं * बिन जल खग-धुनि किमि सुनि परहीं
करत परस्पर तर्क विशेषा * देत ध्यान कपिगन तहँ देखा
कोटर - तट बड़ विटप लखाई * लीन छलांग चढ़े तरु जाई
चहुँ दिसि शाखन दृष्टि पसारी * लखत न कहुँ कछु शाखाचारी[4]

राक्षसेरे मारिया रहिल सेइ वने * किन्तु सीता ना पाइया दुखी सबे मने
विषादेते कपि सब बैसे गाछतले * अंगद उठिया सब बानरेरे ब'ले
आइलाम जानकीर जानिते विशेष * हइल मासेर ऊर्द्ध ना जाइब देश
सीता ना देखिया जाब सुग्रीवेर पाश * जीवनेर आशा नाइ अवश्य विनाश
अगदेर वाक्ये सबे हँये एक मनि * बन डाल उटकिल करि पाति-पाति
ना पाइरा अगद से कहिल खेमकथा * देखिलाम सर्व्व वन आर जाब कोथा
सत्य करि आछेन से खुड़ा महाशय * सीता उद्धारिब आमि कहिनु निश्चय
चारि दिके वीरगण गेले दूर देशे * देखि-देखि कोन वीर कि करिया आसे
जे होक से होक भावि आपन कल्याण * समस्त दक्षिण देखि जाब राम स्थान
सीता न पाइले हबे सबार मरण * आगे मरिबेन राम शेषे अन्यजन
तारपर लक्ष्मण मरिबे तार शोके * अनन्तर सुग्रीव जाइबे यमलोके
चाहिते चाहिते देखे एक गाटा बिल * जल नाइ पक्षी तथा करे किल-किल
खाल फल ना देखि निकटे नाइ जल * नाना पक्षि कलरव शुनि जे केवल
आश्चर्य्य देखिया तारा भावे मने-मने * जल नाहि शब्द शुनि किसेर कारने
केह ब'ले देखि इहा हय कि कारण * दाण्डाइया भावे तथा सब कपिगण
बड़ गाछ आछे एक से बिलेर जाड़े * लाफ दिया कपि सब सेइ गाछ चड़े
चारिदिके चाहे नाहि हय दरशन * शाखाय शाखाय फिरे शाखामृग गण

१ होनहार २ सीता के वियोग मे पहले राम का मरण ३ चहचहाना ४ बानर।

तरु महँ द्वार सुरंग विलोका * तम चहुँ शशि न भानु - आलोका

दो० कोटर गहन प्रवेस किमि, सोचत होनी होय।
पौरुष धारि सुरंग बिच, धसे बहुरि सब कोय ॥ ६२ ॥

कर महँ कर लीन्हे कपि-यूथा * चलत, करत मत[1] कीस - वरूथा
मर्म - सुरंग जानिबे जोगू * होनी भले मरहिं सब लोगू
कपिगन दृढ़ विचार इमि कीन्हा * निपट अँधेर द्वार पग दीन्हा
चलत अंध जिमि लकुटि[2] सहारे * गिरत, घोर तम, अभिरि बिचारे
हाँथन-हाँथ, न ओर न छोरा * कपिगन - मन विषाद घनघोरा
जोति न, दुर्गम पथ किमि धारन * सोचत फिरहिं, मरन केहि कारन !
विधि प्रणम्य[3], कोउ मनै विचारी * दै पग पुनि किमि पाँव पछारी
चलत अंध, पथ विन पहिचाने * तृषा - त्रसित कपि - कण्ठ सुखाने
कपिगन पवन - तनय अनुसारे * लकुटि लिये मनु अंध विचारे
वीर साहसी हनुमत आगे * नयनहीन मनु पाछे लागे
कहत सुभट बरनहु हनुमाना * कत[4] योजन प्रकाश अनुमाना ?
कतक दूरि चलि सुलभ प्रकासू * कहेउ पवनसुत उचित न त्रासू
उर, मम रहत, शंक परिहरहू * कपिगन सकल मोहिं अनुसरहू
शत योजन चलि कोटर पारा * तहँ इक गृह अद्भुत आकारा

गाछे थाकि देखे तारा सुड़ंगेर द्वार * चन्द्र सूर्य्य दीप्ति नाहि महा अन्धकार
सुड़ंग देखिया तारा भावे मने-मने * जाइब इहार मध्ये आमरा केमने
जे होक से होक साहसने करि भर * सकल वानर जाय सुड़ंग भितर
हाताहाति करि जाय सकल वानर * जाइने-जाइने युक्ति करिल विस्तर
दैवे हय होक आमा सबार मरन * बुझिब इहार मर्म्म जानिब कारन
सुड़ंगे प्रवेशे एइ करिया विचार * सुड़ंगे चलिल सबे महा अन्धकार
अन्धकारे जाय येन हाथे करि लड़ि * हुड़ाहुड़ि करे कहे जाय गाय पडि
हाता-हाति जाय सबे ना पाय सञ्चार * सकल वानर तबे भाविल असार
देखिते ना पाइ किछु जाइब केमने * फिरे चल उठि गिया मरि कि कारने
केह ब'ले नामियाछि या हवार हबे * एसेछि सुड़ग पथे केन फिरे जाबे
अन्धकारे चलि जाय नाहि देखे बाट * पिपासाय सकलेर गला हैल काट
अन्धकारे उभय सबे आगे हनुमान * हात लड़ि करि जेन लये जान कान
आगे हनुमान वीर चलिल साहसे * अध लोके चले येन पड़े आशेपाशे
वीर गण बले शुन पवननन्दन * प्रकाश हइब गेले कतेक योजन
आर कत पथ गेले पाइव प्रकाश * हनुमान कहे केह ना करिउ त्रास
आमि संगे जाब तबे विषम कि आछे * सकल वानरगण एस मोर पाछे
योजन शतेक गेने तबे हइ पार * एक गृह आछे तथा अद्भुत आकार

---

१ सलाह करते २ लाठी ३ प्रणाम करके ४ कितने।

मारुति-वचन सबन बल आवा * कपिन मन्द गति पैग[1] बढ़ावा
बुद्धि - बृहस्पति, हनुमति बीरा * कर धरि सबन लगायेउ तीरा

दो० क्रमशः पार सुरंग करि, उतरे संकट पार।
अखिल वानरन लखेउ पुनि, गृह अद्भुत आकार ॥ ६३ ॥

सुबरन तरु सुबरन प्राचीरा * सुबरन मीन - पद्म तेहि नीरा
लखत स्वर्णमय नगरी सारी * विस्मित कपिगन ताहि निहारी
सुरभि समीर फूल फल नाना * रसना प्रबल क्षुधातुर प्राना
उदर न अन्न न जल, दुख पाये * प्रचुर फूल-फल सबन लुभाये
कन्या एक मात्र[2] तेहि नगरी * तेहि समीप कपि सेना डगरी[3]
त्रिशत प्रकोष्ठ[4] मध्य अतिरूपा * निवसि दंति जग जोति अनूपा
कैधौं सुता उमा छवि - खानी * तिलोत्तमा रम्भा इन्द्रानी
कामधेनु - वत भृकुटि विशाला * सेंदुर अरुण सरिस छवि - भाला
चन्दन भाल बिन्दु कजरारी * चन्द्र हृदय छवि - श्याम पधारी
भ्रुव[5] बिच चन्दन विमल प्रकासा * मनहुँ उदित अर्द्धेन्दु[6] अकासा
बिन्दु - बिन्दु गोरोचन शोभा * अलका - तिलकावलि[7] मन लोभा
रतन जोति पद अंगुलि लाली * छबि अनूप गति हंस निराली
कटि किंकिणी शंख कर चूरी * नूपुर धुनि रुनझुन अति रूरी[8]

हनुमान व.क्येते साहसे करि भर * धीरे-धीरे चले तथा सकल वानर
हनुमान महावीर बुद्धे बृहस्पति * सबार करिल पार करि हाताहाति
धीरे-धीरे संकटे सकल हय पार * देखंत पाइल गृह अद्भुत आकार
सोनार प्राचीर ताय स्वर्णमय गाछ * स्वर्णपद्म जले देखे स्वर्णमय माछ
पुरीखान देखिल सकल स्वर्णमय * देखिया वानरगण हइल विस्मय
अपूर्व पुरीर शोभा स्वर्ग सविशेष * सबे ब'ले अनुमान एइ कोन देश
नाना फूल फल देखि सुगन्ध वातास * क्षुधातुर सकले खाइते करे आश
अन्न जल पेटे नाइ क्षुधाय दुःखित * फल फूल देखि मने बड़ हरषित
पुरीर भितरे मात्र एक कन्या आछे * सकल वानर गेल से कन्यार काछे
त्रिशत प्रकोष्ठ मध्ये हय से आवास * कन्यार रूपेते करे जगत् प्रकाश
सुन्दरी से कन्या बुझि हरेर घरणी * रम्भा तिलोत्तमा किंवा इन्द्रेर इन्द्राणी
शोभित युगल भ्रुरु येन कामधेनु * कपाले सिन्दूर फोटा प्रभातेर भानु
चन्दन चन्द्रमा कोले कज्जलेर बिन्दु * भ्रुरु युग उपरेते उदय अर्द्ध इन्दु
बिन्दु-बिन्दु गोरचना शोभा करे अति * अलका तिलका रेखा अर्द्ध-अर्द्ध पाँति
रतन रञ्जित तार पदांगुलि सब * राजहंस जिनि गति रूपे अभिनव
करे शंख कंकण किंकिणी कटि माझे * रतन नूपुर पाय रुनुझुनु बाजे

१ पैर, कदम २ अकेली ३ धीरे धीरे पहुँची ४ कमरे ५ भौंहें ६ अर्द्धचन्द्र ७ मुख पर चन्दन रेखाचित्र ८ अति सुन्दर।

पीठ लालरी झलकति ऐसे * मणि - विद्रुम चूनरि तन जैसे
गौर बरन[1] तन सुरभि सुगंधा * महकत मनु चहुँ चम्पक - गन्धा
शंख - वलय[2], भुजबन्द सुहाये * अभरन विविध गात छवि छाये

दो० पायजेब, पायल, अमित आभूषन पद सोह।
निरखि बिरागिन तासु छवि बरबस उपजत मोह ॥ ६४ ॥

नगरी बिच एकाकी बाला * छटा अलोकत पुरी पताला
कपिगन सकल बन्दि पद रहहीं * पुनि कर जोरि पवनसुत कहहीं
हम पशु - वन्य सदा वनचारी * अति क्षुधार्त्त पथ - दिशा बिसारी
शासन - भय परि सकल अमारा * नतु जल, फल, वन मात्र गुजारा
दुर्जय भटकि रसातल आये * लहि तव दरस प्रान मनु पाये
अमित तोष तव दरसन पाई * पितु, पति-परिचय दीजिय माई!
यहि छन उत्कण्ठा मम येही * निज परिचय रूपसि[3] ! मोहिं देही
नगर, निवास, तडाग - अवीपा * बरनउ सकल प्रसंग समीपा
दिव्य सरोवर पुरी अनूपा * आय फँसे कहँ अति भयरूपा
पवनतनय सों सुता बखाना * पितु सुमेरु मम गिरिन प्रधाना
मैं 'सम्भवा' सखी मम 'हेमा' * पुरी - चौकसी[4] मम नितनेमा
सखी-वचन, रच्छहुँ यहु देसू * सम्भव जनि मम ओट[5] प्रवेसू

पृष्ठे लोटे स्पष्ट रूपे प्रवालेर झाँपा * गौर गाय गन्ध करे गन्धराज चाँपा
कड़ा छड़ा बाजूबन्द शंखेर उपर * जेखाने जे शोभा करे परेछे विस्तर
दुइ पाये शोभित परेछे गोटा मल * ब्रह्मचारी आदि लोक देखिया पागल
पुरीर भितर कन्या आछे एकेश्वरी * कन्या रूपे आला करे रसातल पुरी
ताहारा सकले बन्दे कन्यार चरन * जोड़ हाते ब'ले वीर पवननन्दन
आमरा वनर पशु बने करि वासा * क्षुधाय न देखि पथे लागियाछे दिशा
राजभये हइयाछे जीवन असार * खोलि जुली वन आदि चाहिनु संसार
दुर्ज्जय पाताले ते आमरा सबे आसि * तोमा देखि बाँचिलाम मने हेन बासि
हइलाम बड़ तुष्ट तोमारे देखिया * परिचय देह कन्या तुमि कार प्रिया
बड़इ कातर मोरा ह'यछि एखन * परिचय देह कन्या तुमि कोन जन
काहार बसति घर कार सरोवर * कृपा करि कह कन्ये कार अवान्तर
अपूर्व्व पुरीर शोभा दिव्य सरोवर * कार पुरी आइलाम बड़ पाइ डर
कन्या ब'ले शुन वीर मम परिचय * सुमेरु पर्व्वत श्रेष्ठ मम पिता हय
सम्भवा आमार नाम हेमा मोर सखी * हेमार वचने आमि एइ पुरी राखि
एइ आवासेर रक्षा आछे मम करे * आमा आगे केह आसिते ना पारे

१ गोरा रंग २ शंख की चूड़ी ३ हे सुन्दरी! ४ पुरी की रक्षा ५ मेरी निगाह बचाकर।

मयदानव विरचित आवासू * हेमा - सह दनु इतै विलासू
गान नर्त्त गुन वेष अनूपा * हेमा त्रिभुवन - जयी सुरूपा
तेहि छवि मुग्ध दनुज नहिं चैना * रति अनवरत[1] रमत दिन रैना
चिर विलास हेमहिं अति कलेसू * उठत न गात छीन तन शेषू
दो० दनुज अत्ति[2] सों त्रसित अति, हेमा गई पलाय[3]।
जहाँ मिलै, धरि लावई, तेहि हेरत दनु जाय ॥ ६५ ॥
निसिचर दुष्ट दुरंत कराला * कपिगन तजहु दंभ तत्काला
सम्मति कासु[4], कासु उपदेसू * दुर्जय कीन पताल प्रवेसू ?
तेहि आगमन न केहु निस्तारा * वेगि रसातल निकरहु पारा
बोले पवनतनय, सुनु गाथा * हम कपि सकल दूत - रघुनाथा
दशरथ - सुत सर्वोपरि रामा * महामहिम अतुलित गुणधामा
पिता - वचन धरि कानन आये * संग - अनुज तिन लखन सुहाये
संग भामिनी सीय ललामा * सहज स्वभाव सहचरी - रामा
तीनिउ जन निवसत वन देसू * सीता हरन कीन लंकेसू
आकुल अतिशय विरहित - भामा * वन - वन भ्रमत निरन्तर रामा
तहँ रघुपति - सुग्रीव मिताई * भये उभय[5] मिलि उभय सहाई
कीन, बालि बधि, नृपति कपीसा[6] * सिय - उद्धार भार कपि - सीसा

मय नाम दानवेर रचित आवास * हेमा सह मय करे एखाने विलास
नृत्येते नर्त्तकी हेमा गानेते गायनी * रूपे वंशे गुणे हेमा त्रिभुवन जिनि
रूपे मयदानवेरे मुग्ध करे हेमा * अविरत रति करे तार नाइ क्षमा
रात्रि दिन रमणे हेमार हय क्लेश * उठित ना पारे हेमा प्राय तनु शेष
दानवेर श्रृगारे पलाय हेमा त्रासे * दानव चलिल सेइ हेमार उद्देशे
जेखाने पाइबे तारे आनिब धरिया * एइ बला जाउ हे सेइ पथ दिया
बडइ दुरन सेइ दानव दुष्ट जन * एखान हइते जाउ सब कपिगन
कोन जन हइते पाइले उपदेश * दुर्ज्जय पाताले केन करिले प्रवेश
शीघ्र जाह बिलम्ब कि हेतु कर आर * दानव करिले कारो नाहिक निस्तार
हनूमान बले कथा शुन विवरन * आमरा रामेर दूत सर्व्व कपिगन
रामचन्द्र दशरथ राजार कुमार * सर्व्व ज्येष्ठ गुण श्रेष्ठ महिमा अपार
आइलेन पितृ सत्य पालिते कानन * तार सगे आइलेन अनुज लक्ष्मण
श्रीराम रमणी सीता परमा सुन्दरी * स्वभावत सतत रामेर सहचरी
बनेबास करिते छिलेन तिन जन * रामेर रमणी सीता हरिल रावण
सीतार बिरहे राम हइया कातर * वने वने भ्रमण करेन निरन्तर
दैवयोगे सुग्रीवेर सहित मिलन * हइलेन उभयेर सख्य सघटन
बालि बधि राम राज्य दिलेन सुग्रीवे * सुग्रीव करिल सत्य सीता उद्धारिबे

---

१ निरन्तर २ हद से ज्यादा ३ भाग गई ४ किसकी ५ दोनो ६ सुग्रीव को राजपद ।

भरमत बन आयसु - कपिकेतू * अब लौं मिलेउ न सिय - संकेतू
मास अवधि कपिपति निर्धारी * सो व्यतीत उर अति भयकारी
सलिल हेतु हेरत तरु तीरा * खोजत इत आये हम नीरा
साँच सबन अति फल-अभिलाषा * उर मसपंज[1] चितै तुम पासा
फल - तृष्ना कपि सहज लुभाई * पके अधपके तरु चढ़ि खाई

दो० कपि क्षुधार्त्त, लखि सुन्दरी, बोली ममता पाय।
खायँ सर्वथा मोद भरि, कपिगन तरु फल जाय॥ ६६॥

खाहु जितै रुचि फल मनमाने * कपिगन सकल सुनत हरषाने
मन भावैं सो बैद बताई * उछरि छलाँग भरेउ तरु जाई
खायँ दुहुन कर डारि नमावैं * भरि कपोल कपि बोलि न पावैं
मृदु मद - गंध ताल - तरु जाई * भरि - भरि उदरन छुधा नसाई
अति परिपक्व दाबि रस लेहीं * अधखाये चलाय कछु देहीं
चूसि चिचोरि उदर रस भरहीं * मन-मन मगन, मोद उर धरहीं
खाये जहँ लौं उदर समाये * दूभर[2] चलब, पेट तनि आये
कपिगन तृप्ति पाय सब भाँती * किय सुन्दरिहिं ! विनय प्रनिपाती
तव प्रसाद निवरैं सब क्लेसू * केहि पथ जाहिं, करौ उपदेसू
जब लौं दनुज न इतै प्रवेसा * तेहि बिच चलैं त्यागि यहु देसा

सुग्रीवेर आदेशे बेड़ाइ नाना देश * अद्यापि ना पाइलाम सीतार उद्देश
मासकेर तरे राजा करिल निश्चय * मासर्वेर अधिक हैल बड़ बासि भय
गाछ हैते देखिया आमरा ए सकल * जलेर उद्देशे आइलाम एइ स्थल
मुखे कथा कहे तारा फल पाने चाय * मने तोलापाड़ा करे कन्यारे डराय
वानर देखिया फल हइब विकल * साध हय पेटे खाय काँचा पाका फल
वानरेर इच्छा बुझि कन्या मने गणि * फल खाइबारे कन्या बलिल आपनि
बड़ह क्षुधार्त्त देखि हइल ममता * कन्या बले फल खाउ दिलाम सर्व्वथा
इच्छामत फल खाउ यत आसे मने * शुनिया हरिष चित्त यत कपिगणे
एक चाय आर आज्ञा पाइल वानर * लाफ दिया उठे गिया गाछेर उपर
दुइ हाते फल खाय भागे आर डाल * मदगन्धे पाता खाय पूर्ण करि गाल
पक्व ताल लइया बसिल शाखापरे * क्षुधाय कातर खाय यत पेटे धरे
कतगुला पाका फल निगाड़िया खाय * आध खाउया करि कत टानिया फेलाय
कनक कामड़े खाय चुषि कत फल * मने मने खुसि रसे उदर पूरिल
फल फुल खाइया करिल माथा हेंट * नड़िते चड़िते नारे भारि हइल पेट
करिया वानरगण उदर पूरण * निवेदन करि वन्दे कन्यार चरण
तोमार प्रसादेते खण्डिब सब क्लेश * कोन पथे बाहिराब कह उपदेश
यावत् एखाने कन्या दानव ना आसे * तावत् बाहिर हैया जाइ अन्यदेशे

१ सोच विचार २ अति कठिन।

दनु-भय विपुल, सुमुखि! मन दीजै * बेगि पन्थ दै बाहेर कीजै
निर्देसत पथ गमनत बाला * कपिन अनुसरन किय तत्काला
चलत, घूमि पुनि लखत पछारी * आवै कहुँ न दनुज भयकारी
मयदानव सों बचैं न प्राना * आन सुन्दरी मात्र लखाना
द्वार सुरंग पार किय बाला * लखहु कीसगन सिन्धु विशाला
सलिल अगम यहु दच्छिण सागर * बिन्ध्य-मलय इत, बुद्धि-उजागर!

छं० रामजन्म सों साठि सहस्र वत्सर पूरुब रामायन।
भवतारन जे, बालमीकि मुनि कीन ब्रह्म-गुन-गायन॥
गुह पर दया, तरति पाषाणी, वेद-अगम नारायन।
मरा-मरा कहि राम कृपा सों बाल्मीकि तारायन॥

दो० बाल्मीकि बन्दन प्रथम, पुनि बन्दन कृतिवास।
मंजुल भाषा भारती महँ मृदु काव्य प्रकास॥ ६७॥

(सीता अन्वेषणार्थ अंगद-हनुमानादि में मंत्रणा)

निकरि रसातल सों कपि आये * सकल अंगदहिं सीस नवाये
खोजेउ सबन प्रवेसि पताला * कतहुँ न सिय जनि लंक-भुवाला
कहेउ बहोरि बालि-सुत वीरा * सुनहु कथन मम सब धरि धीरा
खोजहिं सीय—अवधि इक मासा * अवधि-पार कपि सबन बिनासा

बड़ भय हय कन्या दानवेर तरे * त्वराय बाहिर कर सकल वानरे
पथ देखाइते कन्या आपनि चलिल * सकल वानर तार पाछे गोड़ाइल
पलाय वानरगण पाछु पाने चाय * दानव आसिया पाछे पश्चाते खेदाय
पराणे मारिबे तबे कार नाहि रक्षा * उपाय केवल देखि ए कन्या सपक्षा
सुडंगेर द्वारे कन्या हइया बाहिर * देखाय वानर प्रति सागर गभीर
एइ जल देख सबे सागर दक्षिण * विन्ध्यादि मलयगिरि देखह प्रवीण
श्रीरामेर आगे षाटी सहस्र वत्सर * अनागत पुराण रचिल मुनिवर
वाल्मीकि बन्दिया कृत्तिवास विचक्षण * शुभक्षणे प्रवेशिल वेद रामायण
चण्डाले करिल दया बड़ सकरुण * पाषाणेते निशान रहिल तार गुण
तारक ब्रह्म राम नाम अनन्त महिमा * चारि वेदे विचारिया दिते नार सीमा
असीम रामेरे गुण कि बलिते जानि * मरा मंत्र जपिया बालमीकि हैल मुनि

सीता अन्वेषणार्थ हनूमानादिर मन्त्रणा

पाताल हइते उठि सकल वानर * जोड़ हाते दाण्डाइल अंगद गोचर
पाताले प्रवेश मोरा सकल वानर * कोथाउ ना देखिलाम सीता लंकेश्वर
बलेन अगद वीर हे वानरगण * सावधान हैया शुन आमार वचन
सीता वार्त्ता जानिते हइल एक मास * मासेर अधिक हैले सवार विनाश

बकसैं[1] अन्य भले, सुग्रीवा * निसिचय हरन करैं मम जीवा
जेठ बन्धु जिन सहज निपाता * तिन समीप मैं कौन बिसाता[2]
दच्छिन - कर करि पावक साखी * सो कपीस जनि छन भर राखी
पितु बिहीन, किय प्रभु युवराजू * भूलि नृपति मम करैं अकाजू
जनि पितृव्य[3] मोह मम हेतू * अवसर पाय हनै कपिकेतू
जनक - अनुज सों मम निस्तारा * कतहुँ न कपिगन मम उद्धारा
कातर अंगद विनय प्रमाना * आम न जीव, तजब अब प्राना
'तारक' कीस बुद्धि बहु पावा * बालिसुतहिं बहु युक्ति बुझावा
भय - सुग्रीव जाहिं नहिं देसू * सब चलि करहिं पताल प्रवेसू
राज्य - भोग, सुबरन आवासू * परम मोद तहँ सुखद निवासू
सलिल दिव्य सेवन फल फूला * तहँ सुग्रीव केर जनि शूला
का करि सकैं तहाँ कपिनाथा * तहाँ न भय लछिमन - रघुनाथा

दो० कपिगन ! सुनहु निचिन्त[4] ह्वै बसैं रसातल जाय ।
राम लखन सुग्रीव कर तहँ जनि चलै उपाय ॥ ६८ ॥

तारक - कथन सबन मन माना * सो गुनि मनन करत हनुमाना
वचन प्रमाद, न समुचित बानी * धरि सुबुद्धि निज युक्ति बखानी
किमि मम रहत राम - हित हानी * सभा निहारि कहत मृदुबानी

अन्येर जे होक मम सशय जीवन * सुग्रीव मारिते मोरे करियाछे पन
भ्रातारे मारिते यार ना हैल क्षमता * आमारे मारिबे से एवा कोन कथा
दक्षिण हस्तेते राम अग्नि साक्षी करे * यत हित करिबेन सकल परसरे
आमि युवराज नहि पिता विद्यमाने * से पद दिलेन राम आमारे विधाने
खुड़ार गुणेते नहे आमार सम्बन्ध * आमाके मारिते खुड़ा करेन प्रबन्ध
आमारे मारिबे खुड़ा ना हय खण्डन * आमार निस्तार नाइ शुन कपिगण
जोड़ हाते कपिगणे कहिछे काहिनी * जीवनेर आशा नाइ त्यजिब पराणी
तारक वानर छिल बुद्धे बृहस्पति * अंगदेरे बुझाय से उत्तम प्रकृति
सुग्रीवेर भय हेतु ना जाइब देश * सकले पाताले गिया करिब प्रवेश
राज्यभोग आछे तथा सोनार आवास * परम आनन्दे तथा करिब निवास
फुल फल खाब तथा जल सुवासित * सुग्रीवेर भय यथा ना कर किञ्चित्
किंवा करिबे सुग्रीव श्रीराम लक्ष्मण * कोन भय ना करिह शुन मित्रगण
निश्चिन्ते थाकिबे गिया पाताल भुवने * कि करिबे सुग्रीव श्रीराम लक्ष्मणे
तारकेर वाक्ये सबे करे अनुमति * मने मने हनुमान करेन युकति
प्रमाद वचन नाहि भावे हनु वीर * आपनार मने बुद्धि करिलेन स्थिर
मोर विद्यमाने राम कार्य्ये हय हानि * सभार मध्येते हनुमान कहे वानी

---

१ बख्श दें २ क्या मूल्य है ३ चाचा ४ निश्चिन्त, बेखटके ।

सीस भार, सो सकल बिसारा * अन्य काज युवराज ! सम्हारा
लिये कपिन सोचत विपरीता * उचित न तव यहु कथन प्रतीता
भजहु[1] पताल कुमति अतिरेकू[2] * धर्माधर्म न हीय विवेकू
सकल सुकण्ठ विदित, कहँ त्राना * कतहुँ पलायन जनि कल्याना
साँच न आँच, कहौं तुम पाहीं * कपिगन तव न अनुसरन जाहीं
किष्किंधा तिय - सुत - परिवारा * तिन तजि किमि तव संग गुजारा
तव हित पुत्र-कलत्र न त्यागी * भरमहु बन अकेल हतभागी !
जो पताल चलि उबरैं प्राना * जियत सर्वदा अपजस नाना
तव पितु हनेउ एक प्रभु सायक * कहँ निस्तार विना रघुनायक
रामहिं कपिपति[3] खबरि जनाये * बसि पताल केहि बिधि बचि पाये
किमि निर्भय, कहु किमि सुखदायक * द्वार सुरंग हनै प्रभु-सायक
पूजित जगत विष्णु अवतारा * तिन रघुपति प्रति किमि कुविचारा
किमि दुर्बुद्धि - वचन युवराजा * वीर पलायन ! कहत न लाजा

दो० यतक दूरि पथ जाइ पुनि, चौथाई विन पार ।
पौरुष तजि, अनुचित हतै, धरिबो अशुभ विचार ॥ ६६ ॥

मिलै न सिय, यदि लखि सब देसू * लहैं सरन चलि कीस - नरेसू
सदा सुकण्ठ धर्म उर धरहीं * बूझि दोष - गुन समुचित करहीं

हनुमान ब'लेन अंगद युवराज * एक कार्य्ये आसि तुमि कर अन्य काज
कोन युक्ति कर तुमि ल'ये कपिगन * तोमार उचित नहे ए सब कथन
पलाइया जाबे तुमि पाताल भुवने * धर्म्माधर्म्म किछु ना भाविले केन मने
पलाइबे कोथाय सुग्रीव सब जाने * पलाइया बाँचिते नारिबे कोन खाने
उचित ब'लिते तोमा आमार कि डर * तोमार सहित केवा पलाबे वानर
स्त्री पुत्र लइया करे किष्किन्धाय वास * तोमा लागि के छाड़िबे स्त्री पुत्रेर आश
तोमा हेतु स्त्री पुत्र छाड़िबे कोन जन * एकाकी केवल तुमि फेर वने वन
मने कर पलाइया पावे अव्याहति * यतकाले जीबे तव थाकिबे अख्याति
तोमार बापेरे राम मारे एक वाणे * ताँर हाते छाड़ाइबे गिया कोन खाने
सुग्रीव बलिछे रामे बारता सम्प्रति * पाताले बसिया तुमि न पाबे निष्कृति
निर्भये केमने तुमि पाइबे निस्तार * रामवाणे मुक्त हबे सुड़ंगेर द्वार
विष्णु अवतार राम जगते पूजित * तोमार एमन युक्ति ना हय उचित
निर्बुद्धि तोमारे ब'लि शुन युवराज * वीर हये पलाइबे मुखे नाहि लाज
यतदूर जाबे तार चोटि नाहि आसि * अनर्थक युक्ति कर भाल नाहि बासि
सर्व्व देश देख यदि नहे दरशन * सुग्रीवेर ठाइ गिया लइब शरण
धार्म्मिक सुग्रीव राजा धर्म्मेर चरित * दोष गुण बुझिया से करिबे उचित

१ भागो २ सीमा पार (अतिरेक) ३ सुग्रीव द्वारा राम को ।

भय बस निपट पलायन दोषू * चलि प्रभु-सरन लहैं तिन तोषू
नृप - आयसु निरखहिं सब देसा * अमिट दैवगति अर्पहिं शेसा
नृप तटस्थ करि तुमहिं प्रधाना * तव प्रसाद भय हमहिं न ज्ञाना
सभा मध्य हनुमान लजावा * अंगद तिनहिं प्रकोपि सुनावा
जेठ सरिस - पितु शास्त्रन गावा * तासु तीय नृप नारि बनावा
नारिहिं पर - जन तनय सरूपा * पर-नारी पुनि जननी रूपा
पितु सम अग्रज[1] शास्त्र विधाना * तेहि वनिता पुनि जननि समाना
सो सुग्रीव हरति सुख पावा * सिय हित मोहिं कुदेस पठावा
राम काज बिन होय विषादा * मारुति ! मरन मोर अविवादा[2]
तुम सुग्रीव सधर्म बखाना * धर्माधर्म जिनहिं जनि ज्ञाना
राम - लखन पुरुषार्थ सराहा * छल करि हनेउ बालि नरनाहा।
सम्मुख समर लेत जो रामा * लखत जनक मम कस बलधामा
करत गुजारिस[3] जो पितु पाहीं * धरि लावत रावन छिन माहीं
जानत, कहँ सिय ? कहँ लंकेसू ? * वृथा न कपि भरमत दिग्देसू

दो० सन्ध्या तर्पन नित करत, चारिउ सिंधु समीप।
तुमहिं अजान न पवनसुत, भुजबल बालि महीप ॥ ७० ॥

करि दिग्विजय लंकपति धावा * किष्किन्धा पितु जीतन आवा

भय करि पलाइले बड़ हबे दोष * हइले शरणापन्न रामेर सन्तोष
जे देश ब'लिल राजा जाइव से देश * तारपर या हवार हइबेक शेष
तोमार प्रधान करि स सुग्रीव बैसे * तोमार प्रसादे आमादेर भय किसे
कुपिल अगद हनुमानेर वचने * लज्जा दिल हनुमान सबा विद्यमाने
ज्येष्ठ भ्रातृ रमणी राजार विवाहिता * शास्त्रमत ज्येष्ठे हय कनिष्ठेर पिता
अपर पुरुषे माता पुत्र हेन गणि * अपरन्त परजाया जेमन जननी
ज्येष्ठ भाइ पिता सम सर्व्व शास्त्रे कय * तार पत्नी केवल मायेर तुल्य हय
ज्येष्ठ भ्रातृ जाया हरे किसेर बाखान * जानिते सीतार वार्त्ता पाठाय कुस्थान
कार्य्य ना करिले राम हइबेन दुःखी * सर्व्वथा आमार मृत्यु हनुमान देखि
धर्म्माधर्म्म तार देखि वीर हनुमान * कोन कार्य्ये भाल नहे सुग्रीवेर ज्ञान
श्रीराम लक्ष्मण कार्य्य करिलेन यत * चोर युद्धे आमार पितारे करे हत
सम्मुख समर यदि करितेन पिता * के केमन वीर तुमि तबेते जानिता
राम केन ना ब'लिलेन आमार बापेरे * गले धरे आनितेन राजा लंकेश्वरे
जेखाने थाकित सीता जानित रावणे * तबे केन सीता लागि दुःख कपिगणे
तुमि किवा नाहि जान वीर हनुमान * पिता चारि सागरे करे सन्ध्या स्नान
दिग्विजय करिया से बेड़ाय रावण * पितारे जिनिते एल किष्किधा भुवन

१ बड़ा भाई २ निर्विवाद, निश्चय ३ प्रार्थना।

आह्निक-रत[1] पितु सागर तीरा * लखेउ न गृह तिन रावन वीरा
पृष्ठ भाग रावन धरि बाली * स-बल कीन दशमाथ कुचाली
ध्यान भंग जनि, पूँछ घुमाई * बाँधि लंकपति सिन्धु डुबाई
योजन पूँछ-कपीस पचासा * बाँधि दनुज पुनि लीन अकासा
छन बोरत अकास छन ताना[2] * ऊब्रू[3] जात कण्ठ-गत प्राना
चारि सिन्धु जप-तप अवशेषू * साँझ आगमन पितु निज देसू
तहँ रावन दशशीस नवाई * किष्किंधा तृण दाँत दबाई
पिता दया-बस छाँड़ेउ तेही * तत्छण लंक शरण दनु लेही
सो रावन अब सिया चुरावा * तेहि कारन हम सब दुख पावा
मम पितु-शरण लेत जो रामा * खल दसमुख पठवत यमधामा
राम भूप ह्वै कीन कुकर्मा * पितु निपात किय पूर्ण अधर्मा
निज अधरम दुख रामहिं नाना * धर्म-मर्म सोचहु हनुमाना
राम काज बिन भये विषादू * सबविधि मोर मरन अवसादू[4]
सुग्रीवहिं जस, मरन हमारा * बिन सिय-शोध तजौं संसारा
कहेउ पवनसुत, फुर[5] तव बानी * अग्रज-तीय मातु सम जानी

दो० किन्तु मनुज हित शास्त्र-मत, वन-पसु तासु न भार।
नृप आयसु मत खोजि चहुँ, पुनि सब करहिं विचार॥

रावण देखिल मोर बाप नाहि घरे * आह्निक करेन पिता सागरेर तीरे
पाछू बाटे रावण धरिल मोर बापे * सापटिया धरिल से अतुल प्रतापे
ध्यान भग ना हइल लेजेते बाँधिया * सागरेते रावणेरे फेले डुबाइया
दीर्घल पितार लेज योजन पञ्चाश * रावणे तोलेन पिता उपर आकाश
क्षणे तुलि नभःपरे डुबान से नीरे * नाकानि डुबानि खेये बेटा शेषे मरे
चारि सागरेर तथा हय अवशेष * सन्ध्या काले मम पिता आइलेन देश
रावणेर दशमाथा करे नड़बड़ * किष्किन्धाय आसे बेटा दाँते करि खड़
दया करि मोर बाप छाडाने ताहार * लकाय पलाये गेल रावण तत्पर
से रावण आसिया सीतारे करे चुरि * इहार कारणेते आमरा सबे मरि
यदि राम लइतेन पितार शरण * कोन तुच्छ पितार से पापिष्ठ रावण
पितारे मारिया राम करिल कुकर्म्म * राजा हैया करिलेन सम्पूर्ण अधर्म्म
आपन अधर्म्मे राम एत दुखे पान * धर्म्ममत भाव तुमि वीर हनुमान
कार्य्य ना करिले राम हइबेन दुःखी * सब कार्य्ये हनुमान मोर मृत्यु देखि
सुग्रीवेर हबे यश आमार मरन * सीता ना पाइले आमि त्यजिब जीवन
हनुमान ब'ले यत मिथ्या किछु नय * ज्येष्ठेर रमणी हैले मातृ तुल्य हय
आमरा वानर पशु जाति इहा पारि * कहिले जे शास्त्र ताहा हय मानुषेरि
यत देश ब'ले राजा खुंजि एक बार * पश्चाते करिब आमि इहार विचार

१ नित्य संध्या पूजन मे लगे २ उठाकर अन्तरिक्ष मे तान लेते थे ३ नाक-मुंह मे पानी भर जाना ४ दुःख ५ सत्य।

दो० राम-नाम नित स्मरन, पातक करत विनास।
किष्किंधा पावन चरित, गावत कवि कृत्तिवास ॥ ७१ ॥

सकल वानरों द्वारा प्राणोत्सर्ग-व्रत

सुनि हनुमत् जिमि बैन उचारा * सभा, कहति पुनि बालिकुमारा
पुनि पुनि एक कथा तुम बरना * किन्तु लखत सब विधि मम मरना
भल सुग्रीव न रघुपति नीके * निश्चय चहुँ संकठ मम जी[1] के
पितु सम जेठ बन्धु - वध - हेतू * तेहि सुत किमि बकसै[2] कपिकेतू
मातु चरन मम कहेउ प्रनामा * सुनि मम मरन मातु-यमधामा[3]
कपि समकक्ष परस्पर बन्दहिं * रोवत सबजन घेरि अंगदहिं
बिन अंगदकुमार गति नाहीं * तिन सहमरण रुचिर सब काहीं
सकल वानरन युक्ति मिलाई * तजि अहार जिय-आस गवाँई
करि स्नान पूर्व मुख कीन्हे * दुख - बस अनाहार व्रत लीन्हे
कपि प्रायोपवेश[4] उपवासा * कृतिवास इमि कीन प्रकासा

रामायण श्रवण से सम्पाति-पक्षोदय

अतिबल गरुड़सुवन खग जाती * विन्ध्य - शिखर निवसति सम्पाती
मुख उठाय कपि - कटक निहारा * चहत सबन खग करैं अहारा
अंगद कहेउ, सुनहु हनुमाना * जो मम कथन सकल करि ध्याना

रामनाम स्मरणेते पापेर विनाश * रचिल किष्किन्धा काण्ड कवि कृत्तिवास

वानर सकलेर प्रायोपवेशन

एतेक ब'लिल यदि वीर हनुमान * पुनश्च अंगद ब'ले सबा विद्यमान
पुन: पुन: ब'ल तुमि पवननन्दन * जे ब'ल से ब'ल मोर अवश्य मरन
श्रीराम सुग्रीव एरा कभु नहे भाल * निश्चय जानिह अंगदेर प्राण गेल
ज्येष्ठ भाइ पितृ सम मारिल हेलाय * तार पुत्रे मारिबे सुग्रीव कोन दाय
दण्डवत जानाइउ मायेर चरणे * प्राण छाड़िबेन माता आमार मरणे
सोसर वानरगण परस्पर बन्दे * अंगदे बेड़िया सब वानरेरा कान्दे
अंगद कुमार बइ आर नइ गति * मरिब अंगद संगे करिल युकति
सकल वानर युक्ति एइ कार सार * जीवनेर आशा छाड़ि त्यजिल आहार
स्नान करि कपिगण बैसे पूर्व्व मुखे * उपवास करिया रहिल मनोदुःखे
मरिवारे वानर करिल उपवास * रचिल किष्किन्धाकाण्ड कवि कृत्तिवास

रामायण श्रवणे सम्पातिर पक्षोदय

गरुड़ेर पुत्र महाबल पक्षीजाति * वसे विन्ध्य पर्व्वतेर शिखरे सम्पाति
वानर कटक माथा तुलि ऊर्द्ध्व देखे * अनुमान करे एइ खाइबे सबाके
अंगद उठिया ब'ले शुन हनुमान * आमार बचने तुमि कर अवधान

---

१ प्राण २ प्राणदान दे ३ माता प्राण त्याग करेगी ४ मृत्यु-आवाहन हेतु अनशन।

सिय की खोज इतै सब आये * सिय हित जीव विदेस गवाँये
राम - काज केहिं दीन न आयू * सिय हित खगपति मरेउ जटायू
अतिशय समर कीन खगनाथा * गरुड़तनय लहि स्वर्ग सनाथा

दो० सीय - हरन दशमाथ किय, भ्रमन राम वन हेत।
सिय हित, मरैं विदेस परि, कपिगन कटक समेत ॥ ७२ ॥

मरन - जटायु सुनत सम्पाती * शोकाकुल सुनि बन्धु - निपाती
विधिबस जरि मम पंख विनासा * सकहुँ न उड़ि आवहुँ तव पासा
तव मुख सुनहुँ जटायु - विनासा * अन्त न शोक नितांत निरासा
कपिन कहेउ अति विहग[1] मयाना * गये समीप बचैं जनि प्राना
पंगु, जरठ, दुर्बल! तेहि पासा * जातै विहग छलै करि ग्रासा
यदपि मरन, बोले हनुमाना * वृद्धहिं चलि कीजिय सन्धाना[2]
हनुमत् - मत कपिगन सिर धारा * कर गहि भल खगनाथ सम्हारा
खग राजत जहँ कीस - समाजू * पुनि कर जोरि कहत युवराजू
बालि - सुकण्ठ विदित दुइ भाई * रही कलह चिरकाल समाई
पिता - वचन वन आये रामा * तिन अनुसरेउ लखन, सिय बामा
बन्धु भ्रमत वन दोउ, सिय साथा * सूने[3] सीय हरी दसमाथा
राम - लखन भरमत सिय हेतू * मग सुग्रीव मिलेउ कपिकेतू

सीतार उद्देश आइलाम सर्व्वजन * सीता लागि हाराइब विदेशे जीवन
कोन जन ना करिल श्रीरामेर काज * सीता लागि मरिल जटायु पक्षिराज
प्राण दिल पक्षिराज करिया समर * अनायासे स्वर्गे गेल गरुड़ तनय
राम वनवास हेतु सीतार हरण * सीता लागि विदेशेते मरे कपिगण
सम्पाति ब'लेन के जटायु मृत्यु कहे * सोदरेर मृत्यु शुने मोर प्राण दहे
विधिर विपाके पाखा पुड़िया विनाश * उड़िया जाइते नारि तोमादेर पाश
तोमादेर मुखे शुनि जटायु विनाश * आजि शोके हइलाम नितान्त निराश
कपिगण ब'ले पक्षी बड़इ सेयान * निकटे आसिते चाहे लइते पराण
नड़िते चड़िते नारे जराते दुर्व्बल * सम्मुखे पाइले गिलिवेक करि छल
हनुमान ब'ले भाइ अवश्य मरण * ए वृद्ध पक्षीके आज जिज्ञासि कारण
हनुमान वचने सबे दिल अनुमति * आनिलेन धरा धरि करिया सम्पाति
पक्षीराज बसाइल वानर समाज * जोड़ हाते कहिल अंगद युवराज
बालि सुग्रीवेर जान दुइ सहोदर * कतकाल कोन्दल करिल परस्पर
पितृ सत्य पालिते श्रीराम आसे वन * संगे गोड़ाइल तार जानकी लक्ष्मण
सीता सह दुइ भाइ भ्रमे वने वन * घर शून्य पेये सीता हरिल रावन
सीता लागि भ्रमेन जे श्रीराम लक्ष्मन * पथे सुग्रीवेर संगे हइला मिलन

१ पक्षी २ पूछताछ ३ अकेले में।

परिचय दीन, मिलन दोउ करहीं * दोउ निज व्यथा परस्पर कहहीं
अगिनि साखी युगुल-मिताई * करैं परस्पर उभय सहाई
सत्य बँधे, दोउ भये सनेही * यहि विधि हम खोजत बैदेही
मम पितु मारि, राम प्रन साधा * सुग्रीवहिं दिय राजु अगाधा

दो० पिता-मरन उर क्लेस मम, अति दारुन दुख दीन।
वन-वन भरमत, आय इत, आजु दरस तव कीन ॥ ७३ ॥

ममिटे आय कीस दिग्देसा * राम काज हित नृप-आदेसा
मास अवधि[1] कपिपति रखि दीनी * अवधि वितीत, कहा जनु होनी
परिचय इमि, खगनाथ! हमारा * सुनहु जटायु-मरन-बिस्तारा
मरन-जटायु कथा विधि एही * दसमुख हरन कीन बैदेही
गरुड़-तनय खग नाम जटाई * गिरि सों सुनत रुदन-सियमाई
रथहिं पटकि कर[2] खाति पछारा * 'राम-लखन' कहि रुदन अपारा
सोचत खग मनु कहुँ लंकेसू * हरि मैथिली जात निज देसू
वृद्ध विहंग जरठ चिरकाला * पंख सम्हारि उठेउ तत्काला
सीता-रुदन परत तेहि काना * होय न भ्रम, खगपति अनुमाना
धाय गगन चहुँ लखत अकासा * रावन-रथ छबि-सीय प्रकासा
भनत जटायु बनै[3] इत सीता * हरेउ दनुज, उर होय प्रतीता

सुग्रीवेर दिलेन आपनि परिचय * आपन दुःखेर कथा दुइ जने कय
अग्नि साक्षी करि दुइजने सत्य करे * परस्पर उपकार करे परस्परे
दुइजने सत्येबद्ध हइल मिलन * सेइ हेतु करि मोरा सीता अन्वेषण
राम सत्य पालन मारिया मोर बापे * सुग्रीवेरे राज्य देन दुर्ज्जय प्रतापे
पिता मरिलेन मने हइलाम दुःखी * वने वने फिरि आमि देख तार साक्षी
वानर आइल यत छिल देशे देशे * रामकार्य्य साधिवारे सुग्रीव आदेशे
एक मास नियम करिल महाशय * मासेकेर बाड़ा हैले ना जानि कि हय
परिचय दिलाम आमरा कपिगण * एखन शुनह जटायूर विवरण
जटायूर पक्षी शुन मरणेर कथा * रावण हारिया निल श्रीरामेर सीता
जटायु नामेते पक्षी गरुड़नन्दन * पर्व्वत हइते शुने सीतार क्रन्दन
हाते पा आछाड़े सीता रथेर उपरे * श्रीराम लक्ष्मण ब'लि डाके उच्चैःस्वरे
पक्षी बले एइ बेटा लंकार रावण * सीतारे हरण करि करिछे गमन
अनेक कालेर पक्षी हइयाछे जरा * दुइ पाखा मेलिया पोहाय तथा खरा
सीतार क्रन्दन पक्षी तथा हते शुनि * भाविते लागिल से प्रमाद मने गनि
आकाशे उड़िया पक्षी चारिदिके चाय * रावणेर रथे सीता देखिवारे पाय
जटायु बलेन सीता एसछेन वने * सेइ सीता लैया जाय पापिष्ठ रावने

१ मियाद २ हाथ ३ वन मे।

पंख पसारि पन्थ अवरोधा * हनत पंख दुर्वचन विरोधा
नभ सों लखेउ, न कहुँ रघुबीरा * दसन - नखाहत[1] किय दनुबीरा
मर पर सर मारत दशग्रीवा * जर्जर गात पच्छि बलसीवा
राम - बाट[2] बहु जोहत बीरा * तबहुँ न दरस तहाँ रघुबीरा
वृद्ध विशेष, टूटि दम आवा * गिरेउ धरनि युग पंख नसावा

दो० राम आय, दै अगिन पुनि, खगपति कीन सनाथ।
इमि जटायु सद्‌गति लही, को तुम्हार खगनाथ ? ॥ ७४ ॥

विवरन सुनि जटायु, सम्पाती * बन्धु ! बन्धु ! रोवत बहु भाँती
बधि मम बन्धु, चैन लंकेसू * रहौं मारि मन, पंख न शेसू
मद्‌र युवा—पंख मम अंगा * तब कर कपिगन ! सुनहु प्रसंगा
अनुज जटायु, जेठ सम्पाती * गरुड़-तनय, अति बल जिन ख्याती
जुगुल बन्धु मिलि स्थिर कीना * रवि परसै[3] सो वीर प्रवीना
अरुन - प्रभात गगन विस्तारा * धरहिं भानु, दृढ़ कीन विचारा
जाति बन्धुगन विस्मय माहीं * लख योजन जहँ भानु लखाहीं
लख योजन उड़ि चलि आकासू * पहुँचे उभय प्रभाकर पासू
चहुँ दिसि प्रखर दिवाकर - तापा * तपत दिशा दस अगिनि - प्रतापा
उड़त प्रहर दुइ दिन चढ़ि आवा * दुहुन तेज - रवि चहत जरावा

दुई पाखा प्रसारिया आगुलिल बाट * रावणेरे गालि पाड़े मारे पाख साट
आकाशे थाकिबा देखे राम बहुदूर * आँचड़ कामड़ तार रथ कैल चुर
रावण मारिल तारे घन-घन शर * जटायुर शरीर से करिल जर्ज्जर
रामेर अपेक्षा करि बुझिल विस्तर * तथापि ना आइलेन तथा रघुवर
वृद्धकाले जटायुर टुटियाछे बल * दुइ पाखा काटिया पाड़िल भूमितल
आसिया करेन राम तार अग्निकाज * राम दरशने मुक्त हैल पक्षीराज
कहिलाम जटायुर मृत्युर काहिनी * जटायुर के हउ आपनि त शुनि
सम्पाति शुनिया जटायुर विवरण * भाइ-भाइ ब'लिया कान्दिल बहुक्षण
आमार भाइके मारि बेटा थाके मुखे * पाखा नाइ कि करिब आछि मनो दुःखे
यौवने जखन छिल पाखा मे आमार * शुनह वानरगण ब'लि सारोद्धार
जटायु सम्पाति एइ दुइ सहोदर * ब'ले महाबली मोरा गरुड़ कोङर
दुइ भाइ प्रतिज्ञा जे करिलाम एइ * सूर्य्य जे छुंइते पारे वीर बटे सेइ
प्रभात हइल जबे अरुण उदय * सूर्य्येर धरिते जाइ करिया निश्चय
ज्ञाति बन्धु सकले देखिया सविस्मय * एक लक्ष योजन उपरे सूर्य्योदय
से लक्ष योजन उड़ि उठिया आकाशे * दिवाकर धरिते गेलेन तार पाशे
चौदिके चापिया उठे सूर्य्य महाशय * दिक कि विदिक सब हैल अग्निमय
प्रभात हइते दुइ प्रहर उड़िया * दुइ भाइ मरि सूर्य्य तेजेते पुड़िया

१ दाँत-नाखूनों से घायल किया २ राम की रास्ता ३ स्पर्श करे।

विकल सहोदर तात जटाई * मरनप्राय लखि करुना आई
ढाकि पंख तेहि ऊपर राखा * आतप जरे युगुल मम पाँखा[1]
होनी प्रबल गिरेउँ गिरि आई * पंखहीन विधि पंगु बनाई
सात दिवस तृन-सलिल न पाना * तबहिं एक सर्वज्ञ[2] लखाना
सर[3] 'सर्वज्ञ' करत असनाना * सिंह व्याघ्र तट विचरत नाना
गिरि प्रमान तहँ जन्तु विशेषू * धरि न खाहिं ! बल गात न शेषू

दो० बिबस दूरि भय-बस लहेउँ, सरन बिटप-बट जाय।
जन्तु सिंह महिषादि जे तब लौं गये बराय ॥ ७५ ॥

सरवर जल 'सर्वज्ञ' नहाई * दरस दीन मम सम्मुख आई
ज्ञानी परम 'निशाकर' नामा * मग आवत लखि, कीन प्रनामा
व्यथा-विकल मुख शब्द न आना * लखि मोहिं दीन, विप्र किय ध्याना
कहेउ रच्छु निज प्रान खगेसा * उबरैं पुनि तव पंख असेसा[4]
दशरथ नृपति अवध चिरकाला * जेठ सुवन तिन राम कृपाला
पिता - वचन गवनहिं वनदेसू * सूने हरहि सीय लंकेसू
सिय खोजत कपिगन इत आवैं * देहिं दरस, तव क्लेस नसावैं
होय दरस-कपि यहि गिरि धामा * जमहिं पंख मुख निकसत रामा
चिर निवसहु गिरि खगपति जबहीं * कपिगन - दरस मिलै रहि तबहीं

ताहाते जटायु भाइ हइल कातर * मृत प्राय हेन देखि भाइ सहोदर
ढाकि जटायुर पाखा निज पाखा दिया * आमार उभय पाखा गेलत पुड़िया
ए पर्व्वते पड़िलाम दैवेर निर्व्वन्ध * एइ से कारण आमि हइयाछे बन्ध
सात दिन नाहि पाइ सलिल उदन * हेनकाले सर्व्वज्ञ आइल एक जन
स्नान करे सर्व्वज्ञ से सरोवर जले * सिंह व्याघ्र चरितेछे तार दुइ कूले
पर्व्वत प्रमान देखि जन्तु से सकल * धरिया खाइबे मोरे गाये नाहि बल
दूर गिया रहिलाम बटवृक्ष तले * सिंहे महिषादि जन्तु गेल हेनकाले
स्नान करि सर्व्वज्ञ से सरोवर जले * आमार सम्मुखे से आइल हेनकाले
प्रसिद्ध सर्व्वज्ञ तिनि निशाकर नाम * पथेते पाइया देखा कहिनु प्रणाम
व्यथाय कातर आमि शब्द नाइ मुखे * आमारे कातर देखि द्विज ध्याने देखे
सर्व्वज्ञ ब'लेन पक्षिराज प्राण रक्ष * हाराइया पाबे तुमि आपनार पक्ष
दशरथ राज्य करिबेन बहु दिन * ताँर ज्येष्ठ पुत्र राम हबेन प्रवीन
पितृ सत्य पालिते जाबेन तिनि बन * शून्य घरे ताँहार सीता हरिबे रावन
कपिगण करिबेक सीतार उद्देश * ताँर दरशने तव खण्डिबेक क्लेश
थाक एइ पर्व्वते पाइबे तार देखा * राम राम ब'लिते उठिबे तव पाखा
बहुकाल ए पर्व्वते थाक पक्षीवार * तबे से देखिबे तुमि सकल बानर

---

१ पंख　२ सिद्धजन　३ तालाब　४ जो लुप्त हो चुके हैं।

ध्यावत राम जियेउँ करि आसा * आजु दरस तव, मिटी पिपासा
अंगद कहत पच्छि! भयरूपा! * बरनहु सकल सत्य अनुरूपा
कहँ निवास, कहँ लंक-जुझारा * कत योजन बिच सिन्धु अपारा
मैं खगपति, कुल गृद्ध हमारा * पूर्व-दखिन[1] मम गति-बिस्तारा
कहब सुनब बिवरन, जस ज्ञाना * प्रथमहिं राम कथा सुनि काना
राम-कथा सुनि पंख-उभारा * होय पंख लहि सुलभ अहारा
सुनु सुत-गरुड़! कहेउ हनुमाना * करहुँ बखान राम भगवाना

दो० सुनहु पुरातन, नारदहिं नारायण मत कीन।
दुखमय सृष्टि-बिरंचि किमि, होय कलेस-बिहीन ॥ ७६ ॥

नारायण बिचार मन भावा * नारद सहित बिरंचि पठावा
भ्रमत धरा दोउ देसन-देसू * सहसा किय बन घोर प्रवेसू
तहाँ व्याध रत्नाकर नामा * दस्यु वृत्ति नित रत दुष्कामा
वैश्य शूद्र क्षत्रिय द्विज सोऊ * फाँसी देत, बचत जनि कोऊ
दस्युकर्म-रत भ्रमि चहुँ फिरई * पन्थ दरस नारद मिलि करई
नारद अरु बिरंचि मग हेरी * लखि दुइ बिप्र, दस्यु तिन टेरी
हे युग[2] बिप्र! कितै अब गमनू * परि मम हाथ सुनिश्चित मरनू

एत काल राम लागि आछे हे जीवन * एत दिन तव सने हैल दरशन
अंगद ब'लेन तोमा देखि पाइ भय * सत्य कह पक्षिराज वृत्तान्त निश्चय
रावणेर कोन देश कोथा तार घर * तार देशे येते कत योजन सागर
पक्षीराज ब'ले आमि एइ गृध्र-जाति * पूर्व्वेते दक्षिण दिके छिल मम गति
कहिब शुनिबे यत जानि विवरण * सम्प्रति जुड़ाउ कर्ण कहि रामायण
रामेर प्रसंग पुनः हबे पक्षोदय * पक्षोदये भक्ष्यलाभ प्राण रक्षा हय
हनुमान ब'ले शुन गरुड़नन्दन * मन दिया शुन ब'लि रामेर कथन
पूर्व्वकथा कहि शुन ताहे देह मन * नारदेर संगे युक्ति कैल नारायन
सृष्टि करिलेन पितामह बहु क्लेशे * भावेन सतत लोक त्राण पावे किसे
नारदेरे युक्ति करि पाठान पृथिवीते * दिलेन विधिके हरि नारदेर साथे
दुइजन पृथिवीते बेड़ान भ्रमिया * देशात् निबिड़ वने उत्तरिल गिया
बाल्मीकि छिलेन पूर्व्वे व्याध अवतार * दस्युवृत्ति करितेन अति दुराचार
ब्राह्मण क्षत्रिय शूद्र जारे देखा पाय * फाँसि दिया मारे से के कोथाय पलाय
एइ रूपे दस्युकर्म्म करे वने वन * नारदेर सने हैल पथे दरशन
नारद ओ विधि तोँरा जान दुइजने * हेनकाले देखे दस्यु से दुई ब्राह्मणे
दस्यु ब'ले विप्र तारा आर जावि कोथा * पड़िले आमार हाते काटा जाबे माथा

१ पूर्व से दक्षिण दिशा तक २ दोनो।

नारद कहेउ, भद्र! कहु कारन * तपसी विप्र वृथा तिन मारन
कहत दस्यु, मुनि! मम नित धर्मा * मम जीविका दस्यु कर कर्मा
पितु जननी तिय सुत जन जेते * मम जीविका पलत सब तेते
एक मात्र मम यहै कमाई * कर फँसरी[1], मरमत बन जाई
जती जितेन्द्रिय बटु संन्यासी * परत नयन, तिन हित यह फाँसी
द्विज दुर्बुद्धि हेरि मुनि टेरे * भागीदार कौन अघ[2] तेरे
पितु-जननी जदि बाटहिं पापा * बध करु, हमहिं न पुनि संतापा
जानु जानु, गृह जाय नृशंसा! * को तव पाप बटावत अंसा
रत्नाकर बोलत, द्विजराई! * ओट हांत मम, जाहु बराई

दो० जनि प्रतीत, तरु बाँधि दोउ, जाहु, कही मुनिराय।
दस्यु कीन सो, विटप तर, मुनिन राखि गृह जाय ॥ ७७ ॥

बिलसहु पितु! मम पाप कमाई * पाप-अंस मम तव सिर जाई
हे सुत! पितु-पालन तव धर्मा * पितु किमि भागी सुत-अपकर्मा
जिमि पोषत मम तन, मोहिं तोषू * मम सिर किमि तव पातक-दोषू
सुनत जनक कै[3] निष्ठुर बानी * दरस लहेउ जहँ जननी रानी
उदर निमित्त नित्य हे माता! * अर्जन हित[4] नित मनुज निपाता

नारद ब'लेन आमि तपसी ब्राह्मण * आमारे मारिया तुमि किसेर कारण
दस्यु ब'ले नित्य आमि एइ कर्म्म करि * दस्युकर्म्म करिया उदर सदा भरि
माता पिता पत्नी पुत्र आछे यतजन * इहाते सबार करि उदर पूरन
अविरत दस्यु कर्म्म करि आमि खाइ * ते कारणे फाँसि हाते बनेते बेड़ाइ
कत गण्डा जितेन्द्रिय ज्योगि ब्रह्मचारी * जार देखा पाइ तारे सेइ क्षणे मारि
नारद ब'लेन शुन दुर्बुद्धि ब्राह्मण * तोमार पापेर भाग लय कोन जन
तव पापभागी यदि हय पितामाता * तबेते आमारे बध करह सर्व्वथा
जिज्ञासा करह गिया आपनार घरे * तोमार पापेर भाग काहार उपरे
दस्यु ब'ले शुन ब'लि तपस्वी ब्राह्मन * आमि घरे गेले कि पालाबे दुइजन
नारद ब'लेन राख गाछेते बाँधिया * पापभागी केवा हय आइस जानिया
तबे दस्यु दुइजने करिल बन्धन * गाछेते बाँधिया घरे करिल गमन
बापेरे कहिल तुमि घरे बसे खाउ * आमार पापेर भाग तुमि निते चाव
पिता ब'ले जाहा दाउ घरे बसे खाब * तुमि पाप कर तार भाग केन लब
ये से प्रकारेते तुमि करिबे पालन * पापभाग लइते ना पारि कदाचन
बापेर शुनिल यदि निष्ठुर वचन * तबे गिया मायेरे से दिल दरशन
दस्यु ब'ले शुन माता करि निवेदन * मनुष्य मारिया करि उदर भरन

१ हाथ में फाँसी का फन्दा लिए २ पाप ३ पिता की ४ जीविका कमाने के लिए।

बिलसहु मम घर बैठि कमाई * पाप अंस कछु बाटहु माई
सुनु कुबुद्ध सुत ! बोलति जननी * मम सिर किमि तव पातक करनी
सुवन, मातु-पितु पालन हेता * तर्पन श्राद्ध गयादिक जेता
जो सुपुत्र कुल - दीप - प्रकासू * जननि न सेवत, रौरव-वासू[1]
जो जिमि देत, बैठि घर खाहीं * तव पातक, सुत ! मम सिर नाहीं
भारत-भुवन अखिल सुत अहहीं * सुत-अघ[2] जननिहिं शास्त्र न कहहीं
मातु-बैन खर[3] सुनि, उर पीरा * कहेउ खिन्न मन चलि तिय तीरा
दस्यु - वृत्ति पालन प्रिय तोरा * पातक - अंस बटावहु मोरा
वनिता विनय कीन, हे नाथा ! * पति-पातक किमि पत्नी साथा
सेवहुँ स्वामि करहुँ गृह - काजू * घर बसि तव बिलसहुँ सुख - साजू
नारि-वचन सुनि अतिव हतासा[4] * जाय-समीप कहेउ सुत पासा

दो० चरन बन्दि पुनि, कहेउ सुत, मम सिर पाप न भार ।
करहुँ मजूरी, आयु लहि, पितु प्रतिपाल तुम्हार ॥ ७८ ॥

मम पालन तव सिर यहि काला * बहुरि करौं मैं तव प्रतिपाला
खल पूँछेसि चहुँ बारम्बारा * केहु न अंस-अघ[5] लेन सकारा[6]
रत्नाकर - उर अति अनुतापा * अगनित बध नित सिर्जेति पापा
मन गलानि उर घोर निरासा * भरति साँस चलि तपसिन पासा

आमि आनि देइ तुमि घरे बसे खाउ * आमार पापेर भाग तुमि निते चाउ
जननी बलिल शुन दुर्ब्बुद्धि नन्दन * तोमार पापेर भाग लब कि कारन
पुत्र हैल कर माता पितार पालन * गयाय पिण्डदान करे श्राद्ध ओ तर्पन
सुपुत्र हइले हय कुलेर दीपक * मातृ सेवा ना करिले विषम नरक
जाहा तुमि आनि दिबे घरे बसे खाब * तोमार पापेर भाग आमि केन लब
यत-यत पुत्र जन्मे भारत मण्डले * पुत्र पाप माये लय कोन शास्त्रे ब'ले
मायेर शुनिल यदि निष्ठुर वचन * पत्नीर निकटे गिया कहे विवरन
दस्यु कर्म्म करे आनि घरे बसे खाउ * आमार पापेर भाग तुमि निते चाउ
स्वामी ब'लिछे रामा विनय वचन * तोमार पापेर भाग लब कि कारन
गृहस्थेर कर्म्म कार्य्य सकल करिब * यथा हैते आन तुमि घरे बसि खाब
नारीर शुनिल यदि एतेक वचन * पुत्रेर निकट गिया कहिल तखन
शुनिया ब'लिल पुत्र पितार चरणे * पातकेर भार लब किसेर कारणे
आमि उपयुक्त जबे हइब संसारे * शिरे मोट बहि आमि पालिब तोमारे
एखन आमार कर भरण पोषण * आमि पुत्र तोमादेर करिब पालन
एइमत जिज्ञासा करिल बारे बार * पापभाग लैते केह ना करे स्वीकार
दस्यु ब'ले तबे आमि कोन कर्म्म करि * अधर्म्म करिया केन लोकजन मारि
मने मने दस्यु बड़ हइल निराश * उर्द्ध श्वासे धेये गेल तपस्वीर पाश

---

१ नरकवास २ पुत्र के पाप ३ खरी बात ४ हताश ५ पाप मे हिस्सा ६ स्वीकार किया ।

बन्धन खोलि, न गात-सम्हारा * सविनय वचन प्रनम्य उचारा
भल विधि जानि लीन मुनिनाथा ! * परिजन कोउ न पाप मम साथा
किमि कीजै, गति कहा उपाई ? * 'तौ बध हेतु न' कह मुनिराई
तव पातक न बटावनहारा * तव अपकर्मन तव शिर भारा
यमपुर नरक कहत चौरासी * रौरवादि[1] क्रम सों दुखरासी
धरि गर बसन युगुल कर जोरा * कातर दस्यु कहत मुनि ओरा
मैं तव चरन कृपामय नाथा * लहहुँ सुगति जिमि, करहु सनाथा
दस्यु - वृत्ति अरु तजि दुष्कर्मा * नित तव पद रहि सेवहुँ धर्मा
दयाशील मुनि जतन बतावा * सरवर करि असनान बुलावा
तव हित, तात ! उपाय प्रकासा * लहौ मुकुति सब पातक नासा
व्याध मन्द गति चलि सर तीरा * परत छाँह सूखेउ सर-नीरा
सलिल न सरवर, बिन असनाना * पुनि जहँ मुनि तहँ कीन पयाना

दो० कहत जोरि कर, सलिल सर, लखि मम पाप सुखान ।
अहह, नाथ ! तव चरन पुनि आयेउँ बिन असनान ॥ ७६ ॥

नारद बहु भरोस तेहिं दीन्हा * नीर - कमण्डल निज पुनि लीन्हा
लीन दया-जल, सीस लगावा * गात पुनीत, दस्यु सुख पावा
विधि-सुत[2] नारद दया - प्रतापू * महामंत्र अष्टाक्षर जापू

आस्ते व्यास्ते खसाइल मुनिर बन्धन * प्रणाम करिया ब'ले विनय वचन
जिज्ञासिया घरे जानलाम समाचार * आमार पापेर भागी केह नहे आर
कि करिब कोथा जाब कि हबे उपाय * मुनि ब'ल तबे केन बधिबे आमाय
तोमार पापेर भागी केह ना हइल * यत पाप करिले से तोमार थाकिल
चौरासी नरककुण्ड आछे यमपुरे * रौरव नरक आदि सब स्तरे स्तरे
गलाय कापड़ दिया जोड़ हात बुके * कातरे कहिल दस्यु मुनिर सम्मुखे
कृपा कर कृपामय धरिहे चरण * कि हबे आमार गति कह विवरण
आर आमि दस्यु कर्म्म कभु ना करिब * हइया तोमार दास संगते फिरिब
ताहारे कहेन दयाशील महामुनि * सरोवरे स्नान करि आइस एखनि
तोमार निमित्त एक करिब उपाय * जाहाते हइबे मुक्त पाप दूर जाय
आस्ते व्यस्ते गेल व्याध सरोवर तीरे * पापी देखे उड़े गेल सलिल सरोवरे
स्नान करिवारे जल यदि ना पाइल * आर वार दस्यु सेइ मुनि काछे गेल
जोड हात करिया बलिल से गोसाइँ * गेलाम करिते स्नान जल नाहि पाइ
आमाके आसिते देखे यत छिल जल * शुकाइया सरोवर ह'ल शुष्क स्थल
शुनिया नारद मुनि करिया आश्वास * कमण्डले छिल जल आपनार पाश
दया करि सेइ जल दिलेन ताहाय * सेइ जल दस्यु निल आपन माथाय
ब्रह्मापुत्र नारदेर - दया उपजिल * अष्टाक्षर महामन्त्र तार काने दिल

---

१ रौरव आदि नरक। २ ब्रह्मा के पुत्र।

रत्नाकरहिं सतत आदेसू * जपै राम अहिनिसि जनि शेसू
रसना जड़, न राम, विधि बामा * रसना चलन चहत रस-आमा
मुखरत[1] आम, राम कठिनाई * मुनि सोचत किमि करिय उपाई
मुनि-उर उपजी दया विशेषी * तेहि वन सूख ताल-तरु देखी
विटप सूख मुनि एक दिखाई * पूछत, कहु तरु कौन लखाई ?
दस्यु जोरि कर विनय सुनाई * 'मरा' ताल-तरु मोहिं लखाई
मुनि प्रवीन बोले, सुत सुनहू * 'मरा' मंत्र अहिनिसि बस जपहू
बन्दि मुनीस, समाधि लगाई * जपत निरन्तर निसिदिन ध्याई
पातक छीन, पुण्य बस जागा * एक मात्र मुख जप - अनुरागा
मुनि - आयसु—करु जाप निरंतर * आवइँ हम पुनि वर्ष - अनन्तर
विधि - नारद आगे पग दीना * 'मरा' मंत्र-जप दस्यु विलीना।
वन वसि जाप अखण्ड सुहावा * ढूह[2] दीमकन अंग छिपावा

दो० वर्ष उपरि मुनि आय तहँ निरखेउ कतहुँ न दस्यु ।
ध्यान धरत जानेउ यथा द्विज-तन मृतिका-मध्य[3] ॥
मुनि - आयसु अनवरत[4] जल बरसायेउ सुरनाथ ।
माटी बही, अखण्ड जप, मुनिहिं नवाएउ माथ ॥
निर्विकार एकाग्र मन, मंत्र जाप लवलीन ।
लखि प्रसन्न मुनिनाथ पुनि पूरन आशिष दीन ॥ ८० ॥

ब्रह्मापुत्र आपनि करिल आदेशन * दिवानिशि रामनाम करह स्मरण
राम नाम बलिते बदने आसे आम * परम पातकी से विधाता तारे बाम
भाविलेन महामुनि कि ह'ब उपाय * रामनाम बदने नाहि जे बाहिराय
सेइ वने मरा एक ताल गाछ छिल * हेरिया मुनिर मने दया उपजिल
बुद्धिजीवी महामुनि जिज्ञासेन ताय * ब'ल देखि कोन वृक्ष ऐ देखा जाय
शुनिया कहिल दस्यु जोड़ करि कर * मरा ताल गाछ एक देखि मुनिवर
शुनिया कहेन तार नारद प्रवीण * मरा मंत्र जप कर तुमि रात्रिदिन
प्रणाम करिया दस्यु मुनिर चरणे * मरामंत्र जपिते बसिल रात्रिदिने
मरामंत्र विना तार मुखे नाहि आर * दूरे गेल दस्युवृत्ति सदा सदाचार
नारद ब'लेन मंत्र करह स्मरण * एक वत्सरेर परे आसिब दुजन
इहा ब'लि विदाय हइल दुइजने * मरा मंत्र जप करे दस्यु एक मने
अरण्ये निवास करि 'मरा' मंत्र जपि * सर्व्वांग घिरिल तार बल्मीकेर ढिपि
आसिय देखेन मुनि वत्सरेक परे * एइखाने छिल दस्यु गेल कोथाकारे
ध्यान करि देखेन नारद तपोधन * ढिपिर मध्येते आछे से दस्यु ब्राह्मण
देवराज आदेश करेन तपोधन * बासव करिल परे वृष्टि वरिषण
माटि हइते बाहिर हइल एइ क्षणे * एक चित्ते मरामंत्र जपे एकमने
आशिर्व्वाद करि तेन तुष्ट तपोधन * मुनिर प्रणाम करे से दस्यु ब्राह्मण

१ उच्चारण होता था २ टीला ३ मिट्टी के बीच ४ लगातार।

दिव्य कान्ति प्रकर्षति मुनिनाथा * तव प्रसाद गति पाय सनाथा
कहत सनेह मुनी गुनधामा * पलटि तात मुख. बोलहु रामा
कातर रत्नाकर मुनि बन्दे * महामंत्र मुख 'राम' अनन्दे
अखिल तासु जे भौतिक पापा * मेटे राम नाम संतापा
दस हजार वत्सर तप करई * प्रति छन राम नाम स्मरई
'मरा' मंत्र जपि, कौतुक कहेऊ * बालमीकि रत्नाकर भयेऊ
बालमीकि प्रति नारद बरना * सात काण्ड रामायन रचना
खगहिं गाय हनुमान सुनाये * उदित पंख - सम्पाति सुहाये
आदिकाण्ड सुभ घरी अनूपा * अवधहिं राम - जनम सुख-रूपा
राम भरत लछिमन रिपुसूदन * प्रमुदित भूप चारि लहि नन्दन
विश्वामित्र अवध चलि आये * मिथिला राम विवाह रचाये
कौतुक चारि सुवन गठबन्धन * दसरथ अवध करत सुख-सासन
रामहिं तिलक नृपति मन भावा * कुटिल कैकयी कुमति जगावा
धरि पितु-वचन, गये वन रामा * संग लखन अरु सीय ललामा
'आदौ' रघुपति जनम - विवाहू * प्रभु बन, 'अवध'[1] भरत नरनाहू
पुनि सिय हरि 'अरण्य', 'किष्किंधा' * बालि-मरन कपि सैन निबन्धा

दिव्य कान्ति हइया मुनिरे करे स्तुति * तोमार प्रसादे पाइलाम अव्याहति
कहिलेन स्नेह वाक्ये मुनि गुणधाम * उलटिया आर कर बल राम नाम
कातर हइया कहे जोड़ हात बुके * रामनाम महामंत्र निःसरिल मुखे
यत पाप छिल तार भौतिक शरीरे * राम-नाम स्मरणे सकल गेल दूरे
रामनाम स्मरण करिल निरन्तर * तपस्या करिल दश हाजार वत्सर
मन दिया शुन तार अपूर्व्व काहिनी * मरामंत्र जपिया बाल्मीकि हैल मुनि
नारदेर उपदेश पाइया से जन * प्रकाश करिल सात काण्ड रामायण
सातकाण्ड रामायण हनुमान कय * सम्पाति पक्षीर पाखा हइल उदय
आदि काण्डे राम जन्म हैल शुभ क्षणे * परम उल्लास हैल अयोध्या भुवने
श्रीराम लक्ष्मण आर भरत शत्रुघ्न * चारि पुत्र पाइया भूपति हृष्टमन
विश्वामित्र आइलेन अयोध्या नगरे * मिथिलाय विवाह दिलेन श्रीरामेरे
चारि नन्दनेर दिया विवाह कौतुके * राजत्व करेन राजा अयोध्याय सुखे
रामेरे करिते राजा राजार वासना * कुटिल कैकेयी ताहे करे कुमंत्रणा
पितृ सत्य पालिते गेलेन राम बन * संगे चलिलेन तार जानकी लक्ष्मण
आदिकाण्डे रामजन्म विवाह निर्द्धार्य * अयोध्याय वनवास भरतेर राज्य
अरण्यकाण्डेते सीता हरे दुराशय * किष्किन्धाय बालि-बध कटक-सञ्चय

१ अयोध्याकाण्ड में।

दो० सेतुबन्ध अद्भुत कथा बरनेउ सुन्दरकाण्ड।
लंकाकाण्ड निपात सुनु रावन सकुल प्रकाण्ड॥ ८१॥

उत्तरकाण्ड समापन गाना * सात काण्ड हनुमान बखाना
सो सुनि पंख उदय सम्पाती * कपिन कहत पुनि खग यहि भाँती
हरेउ मैथिली खल लंकेसू * राखेसि दच्छिन—लंक प्रदेसू
सीस किये तर[1] तहँ ससिबदनी * बन अशोक, गति जात न बरनी
करहिं चौकसी बहु निसिचरिगन * मारग सिन्धु लखत शत योजन
एक छलाँग लंघि कपि! सागर * लखि सीता लौटहु बलआगर
शोच न कछु सब अति बलवन्ता * लहौ तृप्ति तरि सिन्धु अनन्ता
सुनि दच्छिन दिसि दृष्टि पसारा * सके न लखि दस योजन पारा
दृष्टि मात्र भट कीस हतासा * खग बिहँसेउ लखि कपिन निरासा
जाम्बवान अति बुद्धि - उजागर * कहेउ, बिहगपति[2] सुनहु गुनागर
योजन शत सागर बिस्तारा * सो कपिगन किमि करहिं उतारा
तुम अनुभवी बृद्ध खगराई * सिंधु - पार कर कहहु उपाई
सुनहु ध्यान धरि कहेउ खगेसा * उपजी मन मम सूझ बिसेसा
हिमगिरि, तनय सुपार्श्व निवासा * देखन मोहिं नित आवत पासा
बसति हिमञ्चल मम परिवारू * करत जतन तहँ मम आहारू

सुन्दराकाण्डेते सेतुबन्ध चमत्कार * लंकाकाण्डे रावणेर सवंशे संहार
कथा सात काण्डेर उत्तरकाण्डे पड़े * गाय उत्तराकाण्ड रामायण निगूढ़े
कथा सप्तकाण्डेर कहिल हनूमान * सम्पाति पक्षीर पाखा हइल प्रमाण
सम्पाति ब'लेन शुन यत वीर गण * सीताके लइया गेल पापिष्ठ रावण
यखन दक्षिण दिके माथा तुले थाकि * अशोकेर वने थाके सीता चन्द्रमुखी
नाना वर्णे राक्षसी सीतारे करे रक्षा * शत योजनेर पथ सागर परिखा
एक लाफे पार हउ सकल वानर * सीतादेवी देखिया सकले जाह घर
महाबल धर सबे किसेर भावना * हइया सागर पार पुराउ कामना
तार वाक्ये वानर दक्षिणदिके चाय * दश योजन विना आर देखिते ना पाय
एक दृष्टे कपिगन चाहे ऊर्द्ध श्वासे * देखिते ना पाइ किछु पक्षिराज हासे
जाम्बुवान उठि ब'ले बुद्धि वृहस्पति * आमार वचन शुन विहंग सम्पाति
शतक योजन पथ सागर पाथार * वानर हइया हब कि प्रकारे पार
अनेक कालेर साक्षी अनेक वयस * सागर त्वरिते तुमि कर उपदेश
सम्पाति ब'लेन तबे शुन सावधाने * अपूर्व्व प्रस्ताव एक पड़िल जे मने
सुपार्श्व आमार पुत्र हिमालये थाके * नित्य-नित्य से आइसे देखिते आमाके
हिमालय पर्व्वते आमार परिवार * तथा हैते पुत्र मम योगाय आहार

[1] सिर झुकाये [2] सम्पाति।

आवत नित लै असन[1] प्रभाता * इक दिन अति अबेर[2] किय ताता

दो० क्षुधा ग्रसित तन विकल मैं, तात-भर्त्सना कीन।
परम धार्मिक सुवन मम, वरनी कथा नवीन॥ ८२॥

छं० मोर अहार लिये, पितु! आवत, लखी पंथ वरनारी।
कृष्ण मेघ रावण-रथ माहीं सौदामिनि[3] उजियारी॥
राम-लखन कहि विलपत, रथ दुइ पहर पंथ अवरोधा।
रथ समग्र लीलत नारी-बध लखि, मैं तजेउँ बिरोधा॥

वचन-सुपार्श्व न संशय लेशू * विदित राम-तिय सीय कलेशू
अतिबल सुवन अबहिं सो आवै * सबन उठाय पार पहुँचावै
पौन[4] जलधि दुइ पंखपसारा[5] * एक भाग पुनि सहज उतारा
लंघन एक न भाग विसेषू * धरहु धीर कपि तजहु कलेषू
इमि बतरात[6], सरीर कराला * दरस सुपार्श्व दीन तत्काला
कटक-कीस लखि, लीलन चाहा * ओट निवारि[7] लीन खगनाहा
अहह! तात! अनुचित संहारू * मोर अमित इन किय उपकारू
प्रत्युपकार[8] पीठ तिन लेही * सिंधु पार कपिगन करि देही
कह सुपार्श्व, पितु-वचन प्रमाना * मम तन चढ़ि, कपि करैं पयाना

नित्य आने आहार से प्रभात समय * एक दिन आनिते बिलम्ब अतिशय
क्षुधाय आकुल आमि दहे कलेवर * कोपे सुपार्श्वेर भर्त्सिलाम बहुतर
धार्म्मिक आमार पुत्र धर्म्मे बड़ रत * कहिलेन वृत्तान्त आमारे अवगत
आहार लइया पिता प्राते आसिते * देखिलाम एक नारी रावणेर रथे
कालवर्ण रावण से गौर वर्ण नारी * मेघेर उपरे जेन विद्युत् सञ्चारि
श्रीराम लक्ष्मण बलि कान्दिछे विस्तर * दुइ पाखे आगुलिनु दुइटि प्रहर
राखिताम रथ सह ताहारे उदरे * केवल पाइल रक्षा स्त्री-वधेर डरे
सुपार्श्वेर कथा शुनिलाम मनोनीता * जानिलाम तखनि से श्रीरामेर सीता
एखानि आसिबे पुत्र महाबल तार * पृष्ठे करि सब कारे से करिबे पार
तिन भाग सागर से दुइ पाखे ढाके * एक भाग मात्र तार लंघिबारे थाके
एक भाग लंघिते ना हबे कोन श्रम * स्थिर हउ कपिगण नहे व्यतिक्रम
एइ रूप करितेछे कथोपकथन * महाकाय सुपार्श्व आइल ततक्षण
दुइ ठोट मिलिया से गिलिबारे जाय * सम्पातिर आड़े गिया कटक लुकाय
सम्पाति बलेन बाछा ना कर संहार * पृष्ठे करि सबार सागर कर पार
करि याछे इहारा आमार उपकार * करह प्रत्युपकार तबे हइ पार
सुपार्श्व बलेन मान्य पितार वचन * आमार पृष्ठेते सब चड़ कपिगन

---

१ भोजन २ विलम्ब ३ बिजली ४ तीन चौथाई ५ दो पंख-फैलाव की जगह
६ बात करते हुये ७ अपनी आड़ में करके ८ उपकार के बदले में।

सुनत कहेउ पुनि बालिकुमारा ※ सिय हित सिंधु तरन मम भारा
स्वयं देव - देवन - अवतारा[1] ※ उचित न देहिं विहग-सिर[2] भारा
कह सम्पाति, कीन प्रभु - काजू ※ रामायन - प्रसाद मोहिं आजू
नूतन पंख पुनः मैं धारा ※ कपिन राम ! जय राम ! पुकारा
चमत्कार लखि बल सञ्चारा ※ सिन्धु, सुमिरि प्रभु, उतरहिं पारा
इमि चर्चत नभ उठेउ खगेसू ※ पंख पसारि चलेउ निज देसू
सहित सुवन उत्तरहिं पयाना ※ दच्छिन अंगदादि हनुमाना

दो० कृत्तिवास रचना विमल, श्रोतन[3] अमृतभाण्ड ।
कथा समापन पावनी इमि किष्किन्धाकाण्ड ॥ ८३ ॥

अंगद ब'लेन वीर शुन उपदेश ※ सागर तरिया करि सीतार उद्देश
देवतार पुत्र मोरा देव अवतार ※ कि कारणे पक्षी हे तोमाय दिब भार
सम्पाति ब'लेन आमि रामकार्य्य करि ※ रामायण प्रसादे नूतन पक्ष धरि
उभय हइल पक्ष देखिते सुन्दर ※ राम जय ब'लि डाके सकल वानर
देखिया वानरगण लागे चमत्कार ※ रायजय स्मरणे सागर हब पार
कपि सम्भाषिया पक्षी उठिया आकाशे ※ दुइ पक्ष पसारिया जाय निज देशे
पुत्र सह पक्षीराज गेलेन उत्तर ※ अंगद कटक सह दक्षिण सागर
कृत्तिवास रचे गीत अमृतेर भाण्ड ※ समाप्त हइल एइ किष्किन्धा काण्ड

॥ इति किष्किन्धा काण्ड ॥

१ हम लोग देवी-देवताओं के अवतार स्वयं दिव्य हैं २ पक्षी के ऊपर सवार हों
३ श्रोताओं (सुननेवालों) के लिए ।

श्री गणेशाय नमः

कृत्तिवास रामायण

सुन्दर काण्ड

(हिन्दी पद्यानुवाद बँगला मूल सहित)

मंगलाचरण

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्व्वाणशान्तिप्रदं-
शम्भुब्रह्मफणीन्द्रसेव्यमनिश वेदान्तवेद्यं विभुम् ।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरि-
वन्देहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥

नान्या स्पृहा रघुपते हृदये मदीये
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरा मे
कामादिदोषरहितं कुरु मानसञ्च ॥

अतुलित - बलगेहं हेमशैलाभदेहं-
दनुजवन - कृशानुं ज्ञानिनाम् - अग्रगण्यम् ।
सकलगुण - निधानं वानराणाम् - अधीशं-
रघुपति - वरदूतं वातजातं नमामि ॥

सागर पार करने हेतु वानर-मंत्रणा।

दो० किष्किधा वन-वन फिरत कपिगन चोभ प्रकाण्ड ।
सीय-सुखद-सम्वाद-युत् सुन्दर सुन्दरकाण्ड ॥
उत्तर कीन पयान उत, दोउ सुपार्श्व-सम्पाति ।
अंगद दच्छिन सिन्धु-तन, कपिन पाँति की पाँति ॥ १ ॥

वानरगणेर सागर-पार-गमनार्थ मन्त्रणा।

पिता पुत्रे पक्षिराज गेलेन उत्तर ॥ अंगद कटक सह दक्षिण सागर

गर्जे - तर्जे बहु केहरि नादा * अगम तरंगन लखत प्रमादा[1]
तिमिर[2] गगन, पुनि विकट समीरा * उफनि उछालति बारिधि-नीरा
तहँ जलजन्तु विविध रव करहीं * ग्राह-त्रास[3] जल पग जनि धरहीं
ते मल - मीन पर्वताकारा * ग्रसहिं अकेल मनहुँ संसारा
अक्षम सिन्धु लखि त्रसित अपारा * सबन प्रबोधत बालिकुमारा
संशय मन तोरत, पुनि मरत * संशय तजि सब संकट तरना
सुख सोवहिं निशि सागर तीरा * उतरहिं भोर उदधि गम्भीरा
शैय्या पुनि तृणपात सजाई * कपिन सिंधु-तट निसा बिताई
तीर जलधि सुखरैन बिताये * सैनिप[4] सब प्रातः जुरि आये
सम्मुख लखि प्रणवत[5] सब वीरा * अंगद कहेउ सुनहु रणधीरा
नृप-आयसु विधि इतै पठाई * कवन समर्थ विपत्ति नसाई
ब्रह्मकलश-अमरित छलि लावै * सुरपति कर सों बज्र छिनावै
को समर्थ रवि-ताप निवारी * सीत छटा सक चन्द्र उतारी
छीनि सकै यमदण्ड बिसाला * बाँधै कुञ्जर तन्तु - मृनाला
जेहिं मशक्र पौरुष यहि भाँती * करै पराक्रम लहै सुख्याती
सिय - सम्बाद सबन सुखदाई * तिय-सुत-दरस लहैं गृह जाई

तर्ज्जन गर्ज्जन करे, छाड़े सिंहनाद * सागर तरंग देखि गणिल प्रमाद
तमोमय देखा जाय गगन - मण्डल * हिल्लोले कल्लोल तुले समुद्रेर जल
सिन्धु जले जलजन्तु कलरव करे * जलेत ना नामे केह मकरेर डरे
एक एक जलजन्तु पर्व्वत प्रमान * जगत् करिबे ग्रास, हय अनुमान
सागर देखिया सबे पाइल तरास * सबाकारे करितेछे अंगद आश्वास
विषादे विक्रम टुटे, विषादेते मरि * विषाद घुचिले भाइ सर्व्व एइ तरि
मुखे निद्राजाय आजि समुद्रेर कूले * सागर तरिब कालि अति प्रातःकाले
सागरेर कूल चापि रहिल बानर * रहिबारे लतापत्रे साजाइले घर
सागरेर कूले तारा सुखे वाञ्चे राति * प्रभाते एकत्र हैल सर्व्व - सेनापति
जोड़ हाते दाण्डाइल अंगदेर आगे * अंगद कहिछे वार्त्ता शुने वीरभागे
दैवदोषे लंघिलाम राजार शासन * कोन वीर घुचाइब ए घोर बन्धन
ब्रह्मार हस्तेर सुधा छले कोन जने * इन्द्रेर हस्तेर बज्र कोन जन आने
प्रखर सूर्य्येर रश्मि कोन जन हरे * चन्द्रेर शीतल रश्मि के आनिते पारे
यम हैते यमदण्ड काड़े कोन जन * के कर मृणाल-सूत्र करीर बन्धन
एइ कर्म्म करिबारे जाहार शकति * देखाइया विक्रम से राखुक ख्याति
आनिले सीतार वार्त्ता सबे हइ सुखी * ताहार प्रसादे पिता माता पुत्र देखि

---

१ उन्माद (उफनाना) २ अन्धकार ३ मगर के भय से ४ सेनापति ५ प्रणाम करते हैं।

दो० विषम काज अंगद बरनि, पूँछत समरथ कौन।
काहु न साहस, तकत मुँह, अखिल सैन-कपि मौन॥ २॥

संग प्रचुर जे कपि सामन्ता * पूँछत अंगद बार अनन्ता
पुनि पुनि मैं पूँछत तुम पाहीं * उतर न देत, बैन मुख नाहीं
सबन नयन-तर उदधि[1] विशाला * विकट तरंग अकास - पताला
पूँछत, उर केहि भाँति विषादू * को भट लहै कपीस - प्रसादू
प्रन - सुग्रीव करै को पारा * करै वीर! रघुपति उपकारा?
केहि कर[2] होय जाति निस्तारा * लहै सुयश करि सिय - उद्धारा
अंगद - वचन अवज्ञा नाहीं * निज बल कहि कछु कछु सकुचाहीं
यम-नन्दन 'गय' निज बल बरना * अधिक न योजन दस मोहिं तरना
पुनि 'गवाक्ष' गय कीस-सहोदर * योजन बीस तरै सो सागर
'शरभ' सैनपति कपिन उजागर * योजन चालिस लौं बल - आगर
बन्धु 'गन्धमादन' विस्तारा * मम योजन पचास लौं भारा
कहेउ 'महेन्द्र' सुषेनकुमारा * योजन साठि करौं मैं पारा
मर्म बन्धु 'देवेन्द्र' बखाना * सत्तर अधिक न मम अनुमाना
विश्कर्मा-सुत 'नल' बहु ख्याती * अस्सी उपर न बल केहु भाँती
अग्निसुवन बोलत कपि 'नीला' * नब्बे योजन लौं बलशीला

एत यदि बलिलेन कुमार अंगद * नीरव हइया सबे गनिल विपद
छिल यत सैन्य संगे सामन्त प्रचुर * बार - बार जिज्ञासेन अंगद ठाकुर
राजपुत्र अंगद जिज्ञासे बार - बार * उत्तर ना दाउ केत ए कि व्यवहार
अंगदेरे बोले सबे सागर नेहाले * महा ढेउ उठे पड़े आकाश पाताले
अंगद ब'लेन केन करिछ विषाद * कोन वीर लवे एस राजार प्रसाद
कोन वीर सुग्रीवे करिबे सत्ये पार * कोन वीर करिबे रामेर उपकार
कोन वीर करिबे ज्ञातिर अव्याहृति * सीता अन्वेषिया आजि राखह सुख्याति
अंगदेर वचन लंघिते केह नारे * आपन विक्रम सबे कहे धीरे-धीरे
गय नामे सेनापति यमेर नन्दन * सेइ ब'ले डिंगाइब ए दश योजन
गवाक्ष वानर ब'ले तार सहोदर * पारि लंघिवारे कुड़ि योजन सागर
शरभ नामेते ब'ले मुख्य सेनापति * चल्लिश-योजन आमि लंघि सरित्पति
तार सहोदर ब'ले से गन्धमादन * आमि लंघिवारे पारि पंचाश योजन
महेन्द्र वानर ब'ले सुषेण कोङर * लंघिवारे पारि षाटि योजन सागर
देवेन्द्र ताहार भाइ ब'ले एइ सार * सत्तर योजन लंघि आमि पारावार
पुत्र विश्वकर्म्मार ब'लिछे नल वीर * अशीति योजन लंघि सागर गभीर
अग्नि-पुत्र नील ब'ले वीर अवतार * नवति योजन लंघि सागर पाथार

---

१ समुद्र २ हाथों से।

तारक जो कपीस - भण्डारी * नब्बे पर दुइ अधिक पुकारी

दो० ब्रह्मपुत्र भल्लुक सचिव जाम्बवान अनुमान।
बिहँसि बहुरि युवराज सन निज बल कीन बखान ॥ ३ ॥

यौवन-बल न, वृद्ध अब अंगा * यौवन - कौतुक सुनहु प्रसंगा
बलिहिं छलन, वामन पग तीनी * त्रिभुवन धरनि नापि सब लीनी
अवनि अखिल जे वीर प्रवीना * हरि पद सकल प्रदच्छिन कीना
प्रभु - पद पैकरमा बिस्तारा * सहित जटायु कीन त्रय बारा
भयेउँ जरठ, यद्यपि अब छीना * पचनब्बे योजनहिं प्रवीना
शत योजन बिन सिद्ध न काजा * योजन पाँच कमी, अति लाजा
जामवन्त लचराई[1] बखाना * आत्मविभोर वीर हनुमाना
कोप - दग्ध कह बालिकुमारा * करौं शक्ति निज सिन्धु उतारा
इक छलाँग महँ सुवरन लंका * लौटत किन्तु हिये कछु संका
पिता - दुलारन[2] श्रम नहिं जाना * इमि संसय निज बल अनुमाना
जाब सुलभ प्रत्यागम[3] संसय * राम काज किमि होय असंसय[4]
को समर्थ सैनिप नरनाहू * जीतहि सिन्धु लहै जस - लाहू
कहेउ भल्लु सुनि अंगद - बानी * अहो वीर, किमि कथा बखानी
बिक्रम - बालि बिदित त्रयलोका * तेहि सम तेहि सुत जगत बिलोका

तारक वानर ब'ले राजार भाण्डारी * द्विनवति जोजन जे लंघि वारे पारि
ब्रह्मापुत्र भल्लुक करिया अनुमान * हासिया उत्तर करे मन्त्री जाम्बुवान
यौवन कालेर बल टूटये बार्द्धके * योवन कालेर कथा शुनह कौतुके
बलिरे छलिते हरि हइला वामन * तिनपाये जुड़िलेन ए तिन भुवन
प्रथिवीते यत वीर आछिल प्रवीण * तारा सब तौर पद करे प्रदक्षिण
जटायु पक्षीर सगे उड़िया अपार * विष्णुपद प्रदक्षिण करि तिन बार
पूर्व्वे सेइ शक्ति छिल टूटिल एखन * तथापि लंघिले पंचनवति योजन
लांघिले योजन शत सिद्ध हय काज * लागिया योजन पांच भावि बड़ लाज
एत यदि ब'लिलेन मंत्री जाम्बवान * अभिमाने ज्वले महावीर हनुमान
कहेन अंगद वीर कोपे अंग ज्वले * सागर तरिते पारि आपनार बले
एक लाफे पड़ि गिया स्वर्णपुरी लंका * यदि ना आसिते पारि ताहे करि शंका
भोगे राखिलेन पिता ना दिलेन श्रम * से कारणे नाहि जानि आपन विक्रम
सागर तरिते पारि आसिते संशय * कि जानि रामेर कर्म्मे पाछे विघ्न हय
सागर तरिते केवा आछ सेनापति * देखाइया विक्रम राखह निज ख्याति
अंगदेर कथा शुनि जाम्बवान हासे * वीर तुमि हेन कथा कह कि आभासे
बालिर विक्रम बापू त्रिभुवने जाने * ताहार हइते तव विक्रम बाखाने

---

१ लाचारी २ पिता के लाड प्यार में ३ वापस लौटने में ४ निस्सन्देह।

गिनती एक न तुम शतवारा * सिन्धु समर्थ आर पुनि पारा
कटक रहति, तव श्रम अनरीती * जाहु सैन तजि स्वयं, न रीती

दो० हम शाखा, तुम मूल, जिन रहत फलन अधिकाय।
मूल बिना पल्लव झरैं, मूल रहत हरियाय ॥ ४ ॥

तव पितु केहि न सीस उपकारा * तव प्रताप, नहिं कठिन उतारा
तव, युवराज! सकल कपि पायक[1] * तव आयसु समर्थ सब लायक
आयसु मात्र देहु कपिराजू! * सेवक सिद्ध करैं सब काजू
अंगद कहत, न सागर पारा * कोउ भट करत न अंगीकारा
प्रत्यागम[2] दुष्कर मोहिं जाई * लखि बिलंब नृप - भय अधिकाई
संसय जीवन निश्चित मरना * अबहिं करौं मैं सागर तरना
कपिगन कहत जोरि जुग पानी * तरहु सिंधु तुम, हमहिं गलानी[3]
नृप, नृप-सुवन, इन्द्र कर नाती * सबन सुबुद्ध बृहस्पति भाँती
तव मुख निरखि बालि दुख भूला * तुम बिन एक दिवस दुखशूला
कहेउ ऋच्छपति संसय तजहू * तरै सिन्धु जो, रुचि धरि सुनहू
आत्मविभोर मौन हनुमाना * बसत सैन बिच नकुल[4] प्रमाना
सहज नयनतर काहु न आवैं * जाम्बवन्त तिन बचन सुनावैं

एकवार कोन कथा तुमि शतवार * जाइते आसिते पार सागरेर पार
राजा ह'य केन हे करिबे एत श्रम * तुमि गेले कटकेर ना रवे नियम
तुमि कटकेर मूल मोरा सबे डाल * से मूल थाकिले फल पाब सर्व्वकाल
झड़े वृक्ष भागिलेइ पत्र नाहि रय * यदि मूल थाके पत्र पुनराय हय
कार उपकार ना करिल तव बाप * कोन वीर लघिवेक तोमार प्रताप
सकल वानर तव घरेर सेवक * सकले हइब तव कार्य्येर साधक
बसि आज्ञा कर तुमि वानरेर राज * सेवक हइते तव सिद्ध हबे काज
अंगद ब'लेन धीरे कि करि इहार * सागर लंघिबे केह ना करे स्वीकार
सागर तरिते पारि आसिते संशय * विलम्ब हइले करि सुग्रीवेर भय
जीवन सशय मम निश्चित मरन * सागर लंघिब आमि देख वीरगण
सकल वानर कहे करि जोड़ हात * तुमि केन लंघिबे हे वानरेर नाथ
राजपुत्र राजा तुमि वासवेर नाति * निजे महामति तुमि बुद्धे बृहस्पति
भुलि पाछि बालि के हे तोमा दरशने * एक तिल नाहि बाँचि तोमार बिहने
जाम्बवान ब'ले छाड़ जंजाल वचन * जे सागर लघिबे ता करह श्रवन
अभिमाने मौनभावे वीर हनुमान * कटकेर मध्ये आछे नकुल प्रमान
कटकेते हनुमाने केह नाहि देखे * जाम्बवान कहितेछे देखिया ताहाके

१ प्यादा, सेवक २ वापसी ३ लज्जा ४ नेवला।

का मुख लखत मौन हनुमाना ! * तात ! कथन मम सुनु धरि ध्याना
जाम्बवान हनुमत् जिमि कहहीं * कृत्तिवास कवि प्रस्तुत करहीं
बल अगाध पुनि किमि छलरूपा * राम-काज करु धाय अनूपा
सचिव - वचन अंगद मन दीना * गुन न कवन हनुमान प्रवीना
जाम्बवन्त, अंगद कपिनाथा * उर लपिटाइ लेत कर हाथा
भल्लुक कहत सुनहु धरि ध्याना * जन्म - वृतांत वीर हनुमाना

हनुमान-जन्मवृत्तांत वर्णन

दो० कुन्जर - तनया रूपसी विद्याधरी अनूप।
शापित विश्वामित्र सों, भइ वानरी सरूप ॥ ५ ॥

सो वानरी सुता इक जाई * कपि केसरी ब्याहि घर आई
नाम अन्जना केसरि संगा * सदा मलय गिरि रत रस-रंगा
चैत मास ऋतु जबहिं बसन्ता * 'पवन' कतहुँ गिरि मलय रमंता
ऋतु बसंत पुनि मलय समीरा * मन चन्चल, अन्जना अधीरा
रूप - अन्जना पवन लुभावा * कपि-गृह दुर्जय, लंघि न पावा
ऋतु स्नान नर्मदा - कूला * गई अन्जना, विधि - अनुकूला
पवनहिं गंध मिलत तेहि ओरी * रमत अन्जना, धरि बरजोरी
अहह ! देव वानरी - विलासू * कवन हेतु किय जाति विनासू
कहँ सुर श्रेष्ठ कहाँ दुष्कर्मा * किय मम नष्ट पतिव्रत धर्मा

कार मुख चाह तुमि वीर हनुमान * आमार वचन बाछा कर अवधान
हनूमान जाम्बवान उभये सम्भाष * सुन्दरकाण्डेते गीत गाय कृत्तिवास
जाम्बवान ब'ले बाछा तुमि महाबल * रामकार्य्यं कर बापू केन कर छल
अंगद ब'लेन भाल मंत्री जाम्बवान * कोन गुण नाहि धरे वीर हनूमान
जाम्बवान् वाक्य आर अंगदेर बोले * केह हाते धरे तार केह करे कोले
जाम्बवान् ब'ले, वीर, कर अवधान * शुन हनूमानेर ये जन्मेर विधान

जाम्बवान-कर्त्तृक हनुमानेर जन्म वृत्तान्त कथन

कुन्जर तनया नामे छिल विद्याधरी * शापे विश्वामित्रेर से हइल वानरी
सेइ वानरीर एक हइल कुमारी * विवाह करिल तारे वानर केशरी
मलय पर्व्वतोपरि केशरीर घर * अंजना लइया केलि करे निरन्तर
चैत्रमास प्रवेशिल बसन्त समय * हेन काले वायु गेल पर्व्वत मलय
एकेत वसन्त, ताहे मलय पवन * कामेते चंचल अति अजनार मन
अंजनार रूपे वायु मोहित हृदय * लंघिते ना पारे, घरे केशरी दुर्ज्जय
अंजना गेलेन भावि निज अनुकूल * ऋतु स्नान करिवारे नर्म्मदार कूल
सन्धान पाइया गिया देवता पवन * बले धरि अंजनारे करेन रमन
अजना ब'लेन हे करिला जातिनाश * देवता हइया तव वानरी विलास
देवता हइया तुमि करिला कि कर्म्म * कि हेतु करिला नष्ट पतिव्रता धर्म्म

सुनु अञ्जना छमहि मम दोषू * लखि तव छबि दुर्लभ सन्तोषू
करहु गमन गृह कोप सम्हारी * तव सुत होय अमित बलधारी
मम औरस जेहि जन्म कुमारा * मम गति सों गतितर[1] बिस्तारा
इमि कहि पवन गयेउ निज वासा * मारुति जन्म अठरहें[2] मासा
जन्म अमा तिथि लिय हनुमाना * सुनहु कथा शुभधरी बखाना
जन्मति मातु-छीर[3] मुख लावा * भोर अरुण रवि कौतुक छावा
रुचिर लाल फल मनहिं लुभाना * भरि छलाँग तहँ कौतुक ठाना

दो० गिरि सों भानु छलाँग बिच, इक जोजन बिस्तार।
एक उपक्रम तड़कि सो कीन पवनसुत पार ॥ ६ ॥

लोभ-दिवाकर, हनुमत धाई * दैवयोग तहँ 'राहु' लखाई
प्रस्तुत राहु, हेतु रवि ग्रासा * निरखि पवनसुत, उपजी त्रासा
सोचि समुझि पुनि चलेउ बराई * विनती सुरपति तीर सुनाई
लीलहि भानु अवर[4] इक राहू * प्रस्तुत गगन सुनहु सुरनाहू
सुरपति - छोह, अन्य किमि राहू * ग्रसै भानु, किमि ताहि उछाहू[5]
ऐरावत चढ़ि इन्द्र सुहाये * रवि ढिग नजर पवनसुत आये
मारुति लखि सुरपति भय माना * रवि तजि कहुँ न करै मम पाना
बदन - गजेन्द्र सुभग सिन्दूरी * रहे सकौतुक हनुमति घूरी

पवन ब'लेन किछु ना कह अंजना * देखिया तोमार रूप पासरि आपना
कोप संवरिया हे अंजना जाह घरे * महावीर हबे एक तोमार उदरे
आमार वीर्य्येते जेइ हइबे कुमार * आमार अधिक गति हइबे ताहार
एत ब'लि पवन गेलेन निजस्थान * अष्टादश मासे जन्मिलेन हनूमान
अमावस्या तिथिते जन्मेन हनूमान * से दिनेर कथा कहि कर अवधान
जन्मिया मायेर कोले करे स्तन्यपान * प्रत्युषे उदित रक्त वर्ण भानुमान
रांगा फल ज्ञान करि धरिते ताँहाके * सेखान हइते लाफ दिलेन कौतुके
पर्व्वत हइते लक्ष्य योजन भास्कर * एक लाफे उठिलेन से अति दुष्कर
दिवाकरे धरिवारे जान हनूमान * दैवायत्त तथा राहु हय अधिष्ठान
सूर्य्य के करिते ग्रास राहु उपस्थित * देखि हनूमानेरे आपनि सशंकित
भाविया चिन्तिया राहु पलाय तरासे * निवेदन करे गिया बासवेर पाशे
शुन सुरपति कहि एक समाचार * सूर्य्य के गिलिते ये आइल राहु आर
शुनिया राहुर कथा बासव विरस * सूर्य्य के गिलिते अन्य काहार साहस
ऐरावत चड़िया आइल पुरन्दर * हनूमान देखे गिया सूर्य्येर गोचर
भाविते लागिल इन्द्र पाइया तरास * सूर्य्य के छाड़िया पाछे मोरे करे ग्रास
सिन्दूर शोभित ऐरावतेर बदन * देखिया कौतुकी अति पवननन्दन

१ अधिक वेगवाला २ अठारवें ३ मा का दूध ४ एक दूसरा राहु ५ उत्साह।

धरै मतंग तजै दिननाथा[1] ! * बज्र त्रास - बस लिय सुरनाथा
ज्ञान - विवेक बिनासत रोषू * हनेउ बज्र सुरपति बिन दोषू
लागत कुलिस[2] मूर्च्छा आई * गिरे मलयगिरि हनुमत जाई
हनु[3] आहत मारुति गिरि-धामा * दिय हनुमान मातु-पितु नामा
यौवन बल अतीव विधि दीना * त्रिभुवन तीनि प्रदच्छिन कीना
मरन समीप बृद्ध बल व्यर्था * सिन्धु तरन जनि मैं असमर्था
जेहि विक्रम जग लेय सहारा * धन्य सुयश चहुँ तासु प्रसारा
लावहु खबरि सीय, हनुमाना ! * कपिगन चिन्तित कीजिय त्राना

दो० निज-देसन चलि बिपुल कपि, सुयस करैं उद्घोष।
सिन्धु उतरि उद्धारि सिय, दीजिय रामहिं तोष ॥ ७ ॥

हनुमान का सागर तरण के लिए उत्साह

जेहि विधि जन्म भयेउ मम धरनी * गाथा निज मुख हनुमत बरनी
भूतल तीर्थ 'प्रभास' बखाना * सलिल तासु मुनिगन स्नाना
दन्त प्रलम्ब 'धवल' गज एका * दसन बिदारै मुनिन अनेका
भरद्वाज ऋषि मुनिन प्रधाना * दन्त पसारि चहत तिन प्राना
प्रानन परी बिकल मुनि देखी * मम पितु उपजेउ रोष बिसेषी
द्रवित[4] पितहिं अति कोप कराला * तड़कि मतंग धरेउ तत्काला

सूर्य्य के छाड़िया पाछे धरे ऐरावते * त्रासयुक्त देवराज बज्र निल हाते
कुपित हइले लोक आपना पासरे * बिन अपराधे इन्द्र बज्र मारे शिरे
अचेतन हनूमान हइलेन ताते * पड़िलेन तखनि से मलय पर्व्वते
हनू भग्न ह'ये पड़े मलय शिखरे * हनूमान नाम ताइ बाप माये करे
यौवन कालेते आमि छिलाम प्रबल * तिनवार प्रदक्षिण करि भूमण्डल
बृद्ध काले बलहीन निकट मरन * आपनारे नाहि पारि करिते पालन
याहार विक्रमे लोक करेन भर'सा * ताहार जीवन धन्य विक्रम प्रशंसा
जानिया सीतार वार्त्ता आइस हनूमान * चिन्तित वानर सबे कर परित्रान
नाना विध वानर बसति नाना देशे * तोमार विक्रम येन देशे गिया घोषे
पौरुष प्रकाश कर सागर लंघिया * श्रीरामेरे तुष्ट कर सीता उद्धारिया

आत्म-जन्म वृत्तान्त श्रवणे हनुमानेर सागर लघनेर उत्साह

हनुमान कहिलेन करह विचार * आमार जन्मेर कथा कहि आर बार
प्रभास नामेते तीर्थ ख्यात महीतले * मुनिगण स्नान करे से नदीर जले
धवल नामेते हस्ती दीघल दशन * दन्ताघाते चिरिया मारित मुनिगन
भरद्वाज महाऋषि ऋषिर प्रधान * दन्त सारि जाय हस्ती निते तार प्रान
व्याकुल हइया मुनि पलाय दौड़िया * रुषिया गेलेन पिता विपद् देखिया
दयालु आमार पिता अति भयकर * एक लाफे पड़िलेन हस्तीर उपर

---

१ सूर्य २ बज्र ३ ठोढ़ी ४ दया से कातर।

नखाघात दुइ नयन निकारे * हाथन हनि तिन दशन[1] उपारे
दन्त उपारि उदर पुनि फाँसा * दन्ताहत इमि कुञ्जर[2] नासा
प्रस्तुत पितु[3] पुनि मुनिन-समाजू * माँगु माँगु बर हे कपिराजू
जो मुनि वर मोहिं देन विचारा * लहौं तनय अति श्रेष्ठ कुमारा
कहेउ मुनिन, कपिपति ! जस भावै * जयी-त्रिलोक सुवन तैं पावै
मुनिन प्रनम्य, कपीस[3] सिधारा * गयेउ मलयगिरि निज परिवारा
जननि अञ्जना रूप बखाना * गई नर्मदा ऋतु स्नाना
पवनदेव प्रवहति तेहि ओरी * परसि गात लिय वसन झकोरी
पवन तनय इमि ख्याति समाजा * भरे समाज दिवावत लाजा
पुनि तुम जाम्बवान केहि जाये * हनुमानहिं जनि छिपत छिपाये

दो० मातु सती केहि, विदित केहिं, को भट कपिन समाज ।
वृथा वचन मतभेद कहि, रामहिं काज अकाज ॥ ८ ॥

छं० कपि-सैन अभय करि, बालि-तनय कर, मान को मान बढ़ाइबे का ! ।
शत योजन सिन्धु मनौ जलबिन्दु, तहाँ शतबार को जाइबे का ! ॥
रिपु मारि, सिया उद्धारि, महाबल ! सोने की लंक ढहाइबे का ! ।
रन काहु न टेरि, अकेल सिया लहि, राम को काज सवाँरिबे का ! ॥

दुइ चक्षु उपाड़ेन नखेर आँचड़े * दुइ हाथे टानि दुइ दशन उपाड़े
दन्त उपाड़िया तार पेटे देय दन्त * दन्ताघाते मातंगेर करिलेन् अन्त
परेते गेलेन पिता मुनिर समाज * मुनि ब'ले, वर माँग उहे कपिराज
केशरी ब'लेन, यदि वर निते हय * तबे येन पाइ एक उत्तम तनय
मुनिय ब'लेन तुमि चाहिला जे वर * त्रैलोक्य विजयी हबे तोमार कोडर
वर पेये मुनिगणे करि नमस्कार * मलय पर्व्वते गेल यथा परिवार
अंजना आमार माता अति रूपवती * ऋतु स्नान हेतु गेल नर्म्मदार प्रति
सन्धान पाइया तथा देवता पवन * झड़े वस्त्र उड़ाइया दिल आलिंगन
एइ से कारणे आमि पवननन्दन * संभार भितरे लज्जा दाउ कि कारन
तुमि वा काहार पुत्र मंत्री जाम्बवान * सकलेर सब वार्त्ता जाने हनूमान
यत-यत आसियाछ वीर सेनापति * केवा न जानह कह कार माता सती
रामकार्य्य करिते ना करि विसंवाद * विसंवाद करिले हइबे कार्य्ये बाध
वानर कटके करि अभय प्रदान * अंगद वीरेर आजि बाड़ाइब मान
सागर जोजन शत देखि खालि जुलि * शतवार पार हइ आमि महाबली
उड़िया पड़िब गिया स्वर्ण लंकापुरी * शत्रु मारि उद्धारिब रामेर सुन्दरी
तोमा सबाकारे ना डाकिबे युद्ध आशे * एकाकी आनिब सीता श्रीरामेर पाशे

१ दाँत २ हाथी ३ अर्थात् केशरी ।

धरि उर मोद तजहु मन चिन्ता * करहुँ अकेल काज - भगवन्ता
कहत कीस तब वचन प्रमाना * जग न वीर हनुमान समाना
सुमन सुगन्ध मनोहर हारा * सकल कपिन हनुमत-गर डारा
सिन्धु तरन मारुति मन भावा * बहुभट - सुभटन सहज लजावा
कवि कृत्तिवास विचक्षण वानी * पावन गाथा - राम बखानी

हनुमान द्वारा सागर लंघनोद्योग

हर्षित अति हिय पवनकुमारा * धाय, राम जय राम पुकारा
भरि सुअंक बन्देउ युवराजू * बन्दनीय पुनि अखिल समाजू
कपिन कहत भरि गोद बलागर[1] * भरौं छलाँग तरन हित सागर
तबहिं धरनि महि सकै न भारा * चलि महेन्द्र गिरि लेयँ अधारा
गिरि समरथ मम भार सम्हारी * कपि अनुसरत मरुति[2] बलधारी
गिरि महेन्द्र हनुमत छबि पावा * गिरि पर गिरि मानहुँ चढ़ि आवा
किन्नर, अमर, यक्ष, गन्धर्वा * नाग, भूत, सिद्धादिक सर्वा
अप्सरादि विद्याधरि सारी * नभ सों मुनिगन रहे निहारी
गिरि, प्रस्तुत बानर-कुल मारा * विविध सुमन मिलि गूँथत हारा
सो युवराज लीन ततकाला * अर्पित पवनतनय गर माला
ऐरावत - मणिमाल सरूपा * मरुति-कण्ठ छवि दंत अनूपा

परम हरिषे जाक कोन चिन्ता नाइ * सकलेते किवा काज एका आमि जाइ
सबे ब'ले यत ब'ल किछु नहे आन * त्रिभुवने वीर नाहि तोमार समान
सुगन्धि पुष्पेर माल्य गन्ध मनोहर * हनूमान गले दिल सकल वानर
बड़-बड़ वानरेर देखिया काकुति * सागर तरिते हनूमान करे मति
कृत्तिवास कविर कवित्व विचक्षण * गाइल सुन्दरकाण्ड गीत रामायण

हनूमानेर सागर लघनोद्योग

तदन्तर वायु-पुत्र प्रसन्न हृदय * उठि दौड़ाइया ब'ले 'राम जय-जय'
युवराज अंगदेरे करि आलिगन * बन्दनीय सर्व्व जने करिला बन्दन
अन्य यत कपिगणे आलिंगन दिया * कहिछेन सकलेरे उल्लासित हैया
आमि जबे लम्फ दिब सागर लंघिते * ना पारिबे मोर भार धरणी सहिते
अतएव चल सबे महेन्द्र भूधरे * लम्फ दिब थाकि उइ गिरिर उपरे
एत मुनि अग्रे करि पवन कोडरे * उठिलेन कपिगण सेइ धराधरे
महेन्द्र उपरे शोभे मरुतनन्दन * येन अन्य गिरि आसि कैल आरोहन
हेनकाले यावनीय अमर किन्नर * देखिवारे एल सबे अम्बर उपर
विद्याधर अप्सरा गन्धर्व्व नागगन * यक्ष भूत सिद्ध साध्य मुनि तपोधन
सबे मिलि यावतीय शाखामृग कुल * गाँथिलेन माला एक तुलि नाना फुल
सेइ माला युवराज ल'ये निज करे * समर्पिला पवनतनय - कण्ठोपरे

१ बलशाली हनुमान २ हनुमान।

दो० कपिन-अनुज्ञा लै प्रथम, पूरब-मुख आसीन।
पवनतनय सविनय सबन ध्याय दण्डवत कीन ॥ ६ ॥

गौरि गनेश ब्रह्म दिक्पाला * अष्ट लोकपति शंभु दयाला
पञ्चदेव वरुणादि कुबेरा * विष्णु-रमा पुनि सुरपति टेरा
पुनि अञ्जना केशरी वन्दे * बन्दति निज पितु पवन अनन्दे
जेते कीस सुभट बलसीवा * बन्दि लखन-सिय उर सुग्रीवा
आदि राम छवि चिन्तन कीन्हा * उर-हनुमान, दरस प्रभु दीन्हा
भक्ति सहित कपि कीन प्रणामा * जयति राम जय करुणाधामा
अगनित रघुपति राम सहारा * तव लहि कृपा तरति भव पारा
जो अवलम्ब दयामय केरू * पिपीलकहिं[1] गिरि सहज सुमेरू
अणु-परमाणु नयन विन देखी * पंगु सकत तरि सिन्धु विशेषी
तव महिमा इमि लखि रघुराजू * करि साहस लिय गुरुतर काजू
यदि तव कृपा सिद्ध जनि कामा * तौ तव वृथा कल्पतरु नामा
लीन सरन मैं, प्रभु ! यहि हेतू * कृपा-कोरि[2] कीजिय रघुकेतू
यहि विधि विनय पवनसुत कीन्हा * उर-छवि-राम अनुमती[3] दीन्हा
पुनि हिय सों हरि अन्तर्द्धाना * लखि प्रभु-गमन, तजेउ कपि ध्याना

शोभिल श्रीहनूमान सेइ माला परि * जेन मणिमाला गले ऐरावत करी
तबे सब कपिस्थाने अनुमति ल'ये * बसिलेन हनूमान पूर्व्व मुख ह'ये
भक्तियुक्त मने कैला दण्डवत नति * गणेशादि पंचदेव दिक्पाल प्रति
अष्ट लोकपाल बन्दे उमा महेश्वरे * कुवेर वरुण बन्दे बन्दे पुरन्दरे
ब्रह्मा विष्णु बन्दे वीर विष्णुर वनिता * अंजना केशरी बन्दे बन्दे वायु पिता
बड़-बड़ कपिगणे बन्दे एक भावे * उद्देशे प्रणाम करे नृपति सुग्रीवे
लक्ष्मण जानकी पद करिया बन्दन * आरम्भिला रामचन्द्र करिते चिन्तन
चिन्तामात्र हृदये प्रकाश रघुवर * देखिया मारुति मने करेन आदर
जय - जय रामचन्द्र रघुकुल पति * कृपामृत आरावार अगतिर गति
तुमि यदि चाह प्रभु हइया सदय * तबे पिपीलिका मेरु तुलिते पारय
परमाणु देखिते पारये अन्धजन * पंगु पारे पारावार करिते लंघन
एइ साहसेइ आमि हेन गुरुकाज * करिवारे साहस क'रेछि रघुराज
यदि सिद्ध नाहि कर तुमि सेइ कामे * दोष हबे प्रभु, तव कल्पतरु नामे
अतएव तव पदे करि निवेदन * कर मोर प्रति कृपा कटाक्ष अर्पन
एत निवेदन कैला जबे हनुमान * कटाक्षेते अनुमति दिला भगवान
तबे प्रभु अन्तरेह कैला अन्तर्द्धान * प्रभु नाहि देखि वीर त्यजिलेन ध्यान

१ चीटियों को भी २ दयादृष्टि ३ स्वीकृति।

राम-कृपा लहि, मोद महाना * कपिन हेरि बरनत हनुमाना
सखा ! सुनहु अब मोहिं न चिन्ता * कर मम गहेउ स्वयं भगवन्ता

दो० गोपद सम सागर लखत, रुचि, शतवार मँझाय ।
हनि सवंश लंकेस पुनि, धरौं लंक इत लाय ॥ १० ॥

हाथन सिन्धु उलीचहुँ वारी[1] * बोरहुँ विश्व मनै अस धारी
सुनत बैन प्रमुदित कपिवृन्दा * जिमि घन-गर्ज मयूर अनन्दा
पुनि मारुति अंगद उरलाई * वृद्ध ऋच्छपति-पद शिर नाई
राम-चरन, उर ध्यान लगावा * लंघन सिन्धु दछिन दिसि धावा
सबविधि हनुमत-कुशल मनाई * वानर - कटक राम - धुनि छाई
धुनि विलोकि न समरथ भारा * गिरि चढ़ि लंघ पयोधि विचारा
कपिपद - चाप धराधर काँपा * भय बस सिंह व्याघ्र गिरि साँपा
चालिस योजन अंग प्रसारा * तड़कि चलेउ नभ त्यागि पहारा

(सागर लंघन हेतु हनुमान द्वारा भीषण रूप धारण)

गुणनिधि जाहिं सिन्धु के पारा * माया - तन हनुमत विस्तारा
दश योजन तन अभय कराला * बल तेहि दुगुन अतिव विकराला
पवनतनय गिरि इमि छबि पावा * अवर[2] धराधर[3] भूधर[4] छावा
अग्निपुञ्ज सम नयन विशाला * नासा-स्वर जिमि वज्र कराला

प्रभु अनुग्रह पेये आनन्दित मन * कहिछेन कपिगणे पवननन्दन
आर नाह करि आमि कोनइ चिन्तन * हइयाछि राम-कृपा-कटाक्ष-भाजन
एवे देखि समुद्रेर गोष्पद जेमन * शत कोटि वार लघिवारे करि मन
सवंशे रावण बधे साहस जे करि * लंका तुलि एइ स्थाने आनिवारे पारि
भुजे करि हेलाइया सागरेर वारि * इच्छा हैले ब्रह्माण्डेरे डुबाइते पारि
मारुतिर वाणी शुनि सुखी कपिगन * शिखी यथा शुनि धाराधरेर गर्जन
तबे पुन मारुति अंगदे आलिंगिया * वृद्ध ऋक्ष जाम्बुवान-चरण बन्दिया
दाँड़ाय दक्षिण मुखे लघिते सागर * श्रीरामचन्द्रेर पदे राखिया अन्तर
वानर कटके करे राम जयकार * हनूमान निर्व्विघ्न सागर हउ पार
पृथिवी सहिते नारे हनुमान भर * समुद्र लघिते उठे पर्व्वत उपर
पर्व्वते उठिल सबे ह'ये एक चाप * सिंह व्याघ्र पलाइल पार्व्वतीय साप
चल्लिश योजन तनु हनूमान धरे * शरीर ठेकिल गिया आकाश उपरे

(सागर लघने हनुमानेर भीषण मूर्ति धारण)

सर्व्वगुण पात्र वायु-पुत्र सिन्धु लघिवारे * तबे करि लीला बाड़ाइला आपन कायारे
तबे असाध्वस ह'ल दश योजन विस्तार * आर महाबल सुदीघल द्विगुण ताहार
करि दरशन तारे मन करे हेन ज्ञान * येन सेइ गिरि शिरोपर आन गिरिमान
ताहें दुनयन विरोचन सम प्रकाशय * किवा नासा-रव शुनि सब निर्घातमानय

---

१ जल २ दूसरा ३ पहाड़ ४ पहाड़ पर ।

पुच्छ रोम शिर करत कलोलैं * मेरु शिखर जिमि अहिपति[1] डोलैं
दुसह कलेवर - कपिवर - भारा * पुनि पुनि डगमग होत पहारा
गिरि लर्जत तरु कम्प गभीरा * झरत सुमन बरसत मनु वीरा
उपरि विटप[2] बहु धरनि लखाहीं * तरु - पंछी उड़ि नभ मड़राहीं

दो० कतक शृंग[3] आपात भुइँ, दुष्ट जीव दबि नष्ट ।
हस्ति चिंघरत पाय भय, तजि वन भजे[4] सकष्ट ॥ ११ ॥

बहु कुञ्जर उतान[5] बिन प्राना * तिन दबि मरे निकट-पशुनाना
अचरज अति जिमि लहि मृगराजू * बिड़रत[6] चहुँ मृग वन्य समाजू
पवन प्रान-जग, तेहि सुत-अंगा * पावत भार ढहत गिरि - शृंगा
मारुति-चाप विवर[7] तजि साँपा * आकुल तजत श्वास - सन्तापा
कर्ण सचेष्ट, धीर, बलवीरा * हुमकि सदर्प, घोष 'रघुवीरा'
सो हनु-नाद छनहिं जग छावा * मनु कल्पान्त जलद घहरावा
सुनत महारव जीव अधीरा * भय बस विकल, न चेत सरीरा
घन-रव, पुनि कपिगन-जयकारा * दिग्दिगंत दोउ रव[8] विस्तारा
हनुमत - वेग अनन्त अपारा * स्वयं पवन-गति तन जिमि धारा
लख-लख विटप न वेग सम्हारी * तेहिं[9] अनुगमत, भये नभचारी

दिव्यरोमगुच्छ दीर्घपुच्छ शिरोपरिलोले * येन मेरुगिरि शृंगोपरि नागराज दोले
सेइ कपिवर-कलेवर भर से भूधर * नारि सहिवारे वारे वारे करे थर-थर
ताहे तरुगण आन्दोलन कर घनेघने * ताहे पुष्प झरे बुझि वीरे करिये वर्षने
आर कत वृक्ष लक्ष-लक्ष उपड़ि पड़य * ताहेनानापाखीछाड़िशाखी आकाशेउड़य
ताहे कत शृंग पेये भंग भूतले पड़िला * ताय कत दुष्ट पशु नष्ट कष्टेते हइला
ताहे पाय भीति कत हाती कातर हइया * करे पलायन छाड़ि वन चीत्कार करिया
आर कत करी प्राणे मरि उच्च हैते पड़े * ताहे हैल हत पशु कत ये छिल नियड़े
इथे ह'ल एक परतेक महत् आश्चर्य्य * किवा करि-स्थाने ह'ल प्राणेशून्य सिंहवर्य्य
किवा जगत्-प्राण सुसन्तान-कलेवर-भरे * नारि सहिवारे से शिखरे चड़-चड़ करे
ताहे पेये चाप यत साप विवरे आछिल * तारापेये त्रास महाश्वास छाड़िते लागिल
तबे महावीर ह'ये स्थिर उच्चे कर्ण सारि * करिमहादम्भ दिला लम्फ श्रीरामफुकारि
सेइ महारव लोकसब क्षणे आच्छादिल * येन कल्पकाले कुतूहले जलद गर्ज्जिल
सेइ शब्द शुनि यत प्राणी करे टलमल * ह'ल अचेतन यत जन भयेते विकल
ताहे कपिगन घने घन जयध्वनि करे * दुइ शब्दे मिलि गेला चलि दश दिगन्तरे
सेइ महावीर मारुतिर गतिवेग देखि * तार उपमान मरुत्वान पवनेर लेखि
सेइ वेग वृक्ष लक्ष-लक्ष ना पारि सहिते * तारा वीरवाय पाछे जाय व्योम उपरिते

१ शेषनाग २ वृक्ष उखड़-उखड़ कर ३ पहाड़ों की चोटियाँ ४ भाग गये ५ चित पड़े थे ६ तितर बितर हो जाता है ७ बिल ८ शब्द ९ हनुमान के पीछे ।

लखि प्रवास, हनुमान - बिछोहा * मनहुँ अनुसरत बिबस - बिमोहा
कतक शिखर कुंजर[1] उड़ि धाये * चलि मग वारिधि - नीर समाये
मारुति अन्तरिख तन उठहीं * कौतुक लखत चकित सब रहहीं
अहह ! पवनसुत गगन सुहावा * मेरु पंख धरि नभ छबि पावा
युगुल बाहु घन बीच प्रकासू * बासुकि जिमि गिरि-सीस निवासू
पुच्छ उच्चतर उद्धर्व अनूपा * भाद्र मास ध्वज-इन्द्र[2] सुरूपा

दो० चलत पवनगति अंग जिन अति रव बज्र समान ।
मरुत-बयार-प्रवाह फँसि, थिर न काहु कल्यान ॥ १२ ॥

बेग-समीर अकर्षन भारी * बिबस सकल फँसि चले मँझारी
बहुल धराधर सिन्धु समाये * नभचारी बहु उबरि न पाये
बारिधि जल अति कलकल व्यापा * जल-थल अखिल महारव काँपा
मकरादिक जलचर जल माहीं * भय बस चलि अति दूर लुकाहीं
उठत शनैः[3] व्योम[4] हनुमाना * लहेउ दिवाकर मुकुट समाना
रक्तपद्म अभरन युग चरना * गर जगमग रवि-दुति[5] आभरना
बल बिक्रम निहारि सुख पावैं * सुरगन सुमन वृष्टि झरिलावैं
चिन्तति उर म-नेह रघुनाथा * गगन संतरति इमि कपिनाथा

मने एइ लिखि तारा देखि प्रवासी ताहाय * येन बन्धुजन दुःखिमन अनुब्रजि जाय
आर कत हाती शृंग तथि उड़िया चलिल * तारा कत दूरे गिया परे जलेत पड़िल
तबे विना लक्ष्ये अन्तरीक्षे मारुति उठिल * करि निरीक्षण सबजन स्तम्भित हइल
आहा कपि किवा पाय शोभा आकाशउपरे * येन मेरु गिरि पक्ष धरि उड़य अम्बरे
तार बाहुद्वय प्रकाशय सघने दोलय * येन नागराज गिरिराज उपरि शोभय
तार ऊर्द्ध्वदेशे किवा भासे पुच्छ उच्चतर * येन भाद्रमासे सुप्रकाशे इन्द्रध्वजवर
तार अगगण समीरण सम तेजे वय * जार शुनि रव लोक सब निर्घात मानय
सेइ वेगवान मरुत्वान लागये याहारे * सेइ कोनमते स्वस्थानेते स्थिर हैते नारे
जेइ समीरण वेगे घन सब आकर्षित * तार पाछे-पाछे काछे-काछे चलिल त्वरित
आर बहुतर धराधर सागरे पड़िल * कत व्योमचारी सिन्धुवारि माझारे डुबिल
आर सिन्धुजल कलकल करे अतिशय * सेइ उतरोल जल-स्थल अवधि काँपय
ताहे स मकर जलचर यावत् आछिल * तारा पेये भय अतिशय दूरे पलाइल
तबे क्रमे क्रमे उठे व्योमे पवननन्दन * ह'ल प्रथमेते तार माथे मुकुट तपन
परे से तरणि कण्ठमणि-समान शोभिला * परे दुइपद कोकनद भूषण हइला
हेन महावीर मारुतिर शौर्य्य निरीक्षणे * पेये महातुष्टि पुष्पवृष्टि करे देवगणे
तबे एइमते आकाशेते चलिला वानर * किवा प्रेम भरे चिन्ता करे रामे वीरवर

---

१ हाथी २ प्राचीन काल में भाद्र शुक्ल द्वादशी को इन्द्रध्वज गाड़कर पूजन होता था
३ धीरे धीरे ४ आकाश ५ सूर्य के प्रकाश जैसा ।

सुरसा द्वारा मार्ग अवरोध

बिक्रम अतुल निरखि हनुमाना * सुरगन सुरसा तीर बखाना
अहि-जननी[1] तव शक्ति विलच्छन * संसय-हीय-सबन करु भञ्जन
राम-प्रिया सिय-शोध लगावन * लखहु लंक प्रति हनुमति-धावन
मारग विघिन रूप अस धरहू * तेहि बल-बुद्धि परिच्छन[2] करहू
सिन्धु पार करि पुनरपि आवै * कारज - राम सिद्धि करि लावै
धरि यहि हेतु बदन विकराला * मारुति तीर जाहु तत्काला
सर्पमातु सुरसा यहि रूपा * रूप - राच्छसी धरेसि अनूपा
मारुति चलत पवन रव करहीं * पुच्छ - अघात शिला - तरु उड़हीं

दो० कीस निहारत सिन्धु तन जहँ लौं दीठि-पसार।
दरस न कहुँ हनुमान के, गये कहाँ लौं पार॥ १३॥

लंघि भाग त्रय, इक अवसेसू * सर्पिनि किय मग विघिन विसेसू
सुरसा कर निवास सुरलोकू * ठकुराइन सब विधि अहिलोकू
जन-पताल[3] पुनि सुर-गन्धर्वा * सुरसा - भय व्यापत जग सर्वा
मरजी-सुरन[4] विकट तन लाई * जहँ मारुति नभ-तर तहँ छाई
कपि ढिग रूप भयंकर धारी * अहि-जननी छल-वैन उचारी
रे रे कीस! जाहु जनि अन्ता * करु प्रवेश मम बदन[5] अनन्ता

सुरसा सापिनी कर्त्तृक हनूमानेर गतिरोध

एइमत मारुतिर विक्रम देखिया * सुरसा के सुर सब कहेन डाकिया
नागमाता तुमि धर शक्ति विलक्षन * कर मो सवार एक संदेह भंजन
जाइछेन एइ वायुतनय लंकाते * रामचन्द्र प्रेयसीर तत्त्वे से जानिते
तुमहि ताहाते करि विघ्न आचरन * जानह इहार बल बुद्धि वा केमन
पारिबे नारिबे किवा एइ कपिराज * सेथा हैते फिरिवारे साधि एइ काज
इहाइ जानिते धरि घोर कलेवर * जाह तुमि क्षणेक मारुति बराबर
एत शुनि सर्पमाता सुरसा सापिनी * प्रस्थान करिला ह'ये राक्षसी रूपिनी
दुड़ दुड़ शब्दे हनु जाय वायु-भर * लेजेर आघाते उड़े पादप-पाथर
एक दृष्टे कपिगन सागर नेहाले * देखिते ना पाय केह कत दूर गेले
तिन भाग गेछे आर आछे एक भाग * सुरसा सापिनी तार पथे पाइल लाग
देवतार पुरे थाके सुरसा सापिनी * भुजग लोकेर तिनि हन गोस्वामिनी
देवता गन्धर्व्व आर पाताल निवासी * सुरसा सापिनी उरे सबे हय त्रासी
धरे से विकट मूर्त्ति देवतार बोले * हनुमाने परीक्षा करिते नभस्तले
मारुतिर अंगे भीम मुरति धरिया * काहिछेन नागमाता कपट करिया
उरे कपि जाह तुमि आर कोन स्थाने * प्रवेश करह आसि आमार बदने

१ हे नागमाता! २ परीक्षा ३ पातालनिवासी ४ देवताओं की इच्छा से ५ मुख में।

अतिशय छुधा विकल मम प्राना * तुम लहि यहि छन जीव जुड़ाना
देव दयामय लखि मम पीरा * किय अहार प्रस्तुत मम तीरा
अतः विलम्ब न करि तत्काला * बेगि पैठु मम बदन कराला
सुनि सुतपवन युगुल कर जोरी * नागमातु प्रति विनय बहोरी
दशरथ - तनय राम वनवासू * पितु आयसु लहि दण्डक वासू
तहाँ लंकपति पापाचारी * बिन अपराध हरेउ तिन नारी
जाहुँ लंक आनहुँ सिय - शोधू * केहु विधि उचित न तव अवरोधू
अखिल जगत-हित रघुपति प्रीती * तिन अनहित सब विधि अनरीती
तदपि न जो केहु भाँति निवारन * तौ कछु काल धीर करु धारन
सिय की रामहिं खबरि जनाई * तब मुख लौटि प्रवेशहुँ माई !

दो० संशय जनि, मम कथन ध्रुव, सुनि सुरसा कपि-बानि ।
अडिग, कहत, ढिग आय मम, जियत न उबरत प्रानि ।। १४ ।।

सुरसा - वचन समीरकुमारा * सुनि प्रकोपि कटु बैन उचारा
भच्छै मोहिं, कवन मुख माहीं * करौं प्रवेश, लखौं मैं ताहीं
सुनि सुरसा निज बदन पसारा * योजन बीस विषम बिस्तारा
योजन तीस भयेउ हनुमाना * सुरसा पुनि चालीस प्रमाना
मारुति गात प्रलम्ब पचासा * साँपिनि योजन साठि प्रकासा

हइयाछि सातिशय क्षुधाय पीड़ित * ए समये तोरे पेये हनु बड़ प्रीत
बुझिलाम कृपा करि यत देवगन * करि दिला मोर आगे तोर आनयन
अतएव विलम्ब ना कर एतक्षन * शीघ्र आसि कर मोर मुखे प्रवेशन
एत शुनि वायुपुत्र जुड़ि कर द्वय * कहिछेन ताँर प्रति करिया विनय
दशरथ-पुत्र राम दण्डक कानने * आसि वास करे छिला पितार बचने
विना दोषे हरि आनियाछे ताँर नारी * दशानन एइ लंकापुरी अधिकारी
जाइतेछि आमि ताँर तत्त्व जानिवारे * ताहे विघ्न नाहि कर कोनह प्रकारे
सेइ रामचन्द्र ह'न सकलेर हित * ताँहार अहित करा तव अनुचित
यदि ब'ल अवश्यइ खाइब तोमारे * तव योग्य हय किछु गौण करिवारे
सीता देखि वार्त्ता दिया श्रीरघुनन्दने * आसि प्रवेशिब आमि तोमार बदने
किछु नाहि कर तुमि इहाते संशय * कहितेछ सत्य आमि करि निश्चय
सुरसा कहेन ताहा आमि नाहि मानि * मोर आगे आसि फिरे नाहि जाय प्राणी
सुरसार वाणी शुनि समीरनन्दन * कोप करि कहिछेन कठोर वचन
कोन मुखे दुष्टा मोरे करि विभक्षन * प्रकाश करह ताहा करि प्रवेशन
शुनिया सुरसा विंश-योजन विस्तार * प्रकाश करिला निज-मुखेर आकार
ता देखि मारुति त्रिश योजन हइला * चल्लिश योजन मुख सुरसा करिला
पंचाश योजन हैल पवन-सन्तान * करिला सुरसा षष्टि योजन व्यादान

इत सत्तर उत अस्सी करनी * हनुमति नब्बे, शत अहि-जननी
चिन्तति कौतुक पवनकुमारा * सहज न निसिचरि केन-प्रकारा
साचत, प्रकट भयेउ सब मर्मा * निश्चय यहु सुरसा-दुष्कर्मा
इक योजन करि गात प्रमाना * सुरसा-मुख समान[1] हनुमाना
ज्यों कपि-गात तासु मुख व्यापा * युगुल ओंठ अहिजननी चापा[2]
त्यों कपि ह्वै अंगुष्ठ प्रमाना * कर्णरन्ध्र[3] सों बहिर पयाना
सम्मुख आय कहेउ कर जोरी * नागमातु ! विनती सुनु मोरी
तव आयसु तव बदन प्रवेसू * आयसु पाय लखौं उद्देसू[4]
पुरवहुँ राम-काज सिय-शोधू * गति न मातु ! तव निरखि विरोधू
संकट सों करि कृपा उबारौ * लौटति भले उदर पुनि धारौ
सीय-खबरि लावहुँ चलि लंका * बहुरि करौ कछु, मोहि न शंका

दो० पवनतनय के मधु भरे सुनत बैन अनुरूप।
ह्वै प्रसन्न बोली बचन सुरसा धरि निज रूप ॥ १५ ॥

निपुन परम करु समुद[5] पयाना * सुरगन सदा करैं कल्याना
तव जाँचन, मोहिं सुरन पठावा * निधि-बल-बुद्धि तुमहिं मैं पावा
सुख सों जतन करौ चलि तेही * जेहि विधि मिलैं राम-वैदेही

सप्तति योजन हैल परे हनूमान * सुरसा करिल आशी योजन प्रमान
हनूमान हैल तबे नवति योजन * सुरसा करिल शत योजन आनन
ताहा देखि हनूमान चिन्तिल विस्मय * एके एत सामान्य राक्षसी नाहि हय
एत भावि क्षणकाल मानस माझारे * जानिलेन मारुति सुरसा ब'लि तारे
तबे निजे ह'ये इक योजन प्रमान * तार मुख मध्ये प्रवेशिल हनूमान
प्रवेशिवा मात्र से सुरसा ठाकुराणी * उष्ठ चापि मुद्रित करिला मुख खानि
ताहा देखि ह'ये वीर अंगुष्ठ प्रमान * कर्णरन्ध्र दिया कैले बाहिरे प्रयान
बलिछेन कपिवर जानिनू तोमाय * नागमाता प्रणति गो करि तव पाय
तव वाक्ये प्रवेशिनु तोमार वदन * अनुमति देह एबे करि गो गमन
रामेर कार्य्यते जाइ सीतार उद्देशे * तुमि यदि वाधा दउ पार हब किसे
कृपा यदि ना करिबे पड़िबे संकटे * आसिवार काले खेउ जाइब निकटे
सीतार उद्देशे जाइ लंकार भितर * पाछे जाहा कर ताहे नाहि पाइ डर
तबे से सुरसा धरि आपन मुरति * कहिवारे आरम्भिला वायुपुत्र प्रति
सुखे जाइ हनूमान परम कुशली * करुन तोमार शुभ अमर मण्डली
तव वीर्य्य पराक्रम बुद्धि जानिवारे * पाठाइया छिला सब अमर आमारे
ताहा जानिलाम सुखे करह गमन * राम सीता उभयेर कराउ मिलन

१ प्रवेश कर गये २ बन्द किये ३ कान के छेद से ४ अपना प्रयोजन ५ सहर्ष।

इमि कहि सुरसा धाम सिधारी * पूर्व रूप हनुमत पुनि धारी
तिल न विलम्ब सुमिरि रघुवीरा * चलेउ वेगि जिमि वेग-समीरा[1]

हनुमान-मैनाक संवाद

लखि बल - बुद्धि - वीर्य - हनुमाना * सुरगन सकल प्रशंसति नाना
तबहिं सिन्धु मन चिन्तन करई * कथा पुरातन उर अनुसरई
नृपति 'सगर' सों उत्पति नामा * 'सागर' नाम जगत सरनामा
तेहि नृप सगर - वंसधर रामा * गमनत जासु पवनसुत कामा
मम कर्तव्य राम कर काजू * नतरु अजस[2] चहुँ देय समाजू
अखिल सिंधु इक संग उतारा * हनुमत सीस अतुल श्रम-भारा
मग जेहि विधि कहुँ मिलै सहारा * सो सुख जतन पयोधि[3] विचारा
इमि सोचत, 'मैनाक' बुलाई * सादर गिरिहिं कहेउ समुझाई
तनय-हिमालय ! हे गिरिराजू ! * करहु आजु मम एक सुकाजू
सुरपति-संक[4] लहेउ मम सरना * पालेहुँ धरि निज गर्भ सयतना
पवनतनय तव श्रंग विरामा * यहि छन करु सहाय कछु रामा

दो० उत्पति मम नृप 'सगर' सों, जग 'सागर' सरनाम ।
सगर नृपति के वंश तिन जन्म लीन प्रभु राम ॥ १६ ॥

एत कहि नागमाता गेला निजस्थान * पुनः पूर्व्वरूप हये जान हनुमान
नागिनी सम्भाषि वीर तिलेक ना रहे * श्रीराम स्मरिया जाय, येन झड़ बहे

मैनाक पर्व्वतेर सहित हनूमानेर सम्भाषण

देखि मारुतिर हेन वीर्य्य-बुद्धि-बल * प्रशंसा करेन तारे अमर सकल
हेनकाले नदीपति सुचिन्तित मन * करिछेन हृदयेते एइ विवेचन
सगर नृपति ह'ते मोर उपादान * एलागि सागर ब'लि डुबने आख्यान
सेइत सगरवंश याँहार जनम * सेइ राम कार्य्ये जान पवननन्दन
ए लागि एहार हित कर्त्तव्य आमार * अन्यथा हइले निन्दा लोकेते अपार
लंघिछेन हनूमान एइ पारावार * हइतेछे बड़ श्रम इहाते ईहार
अतएव मध्यपथे आलम्बन पाइ * जे रूपेते सुखे जान करिब ताहाइ
एत भावि नदीपति मैनाक भूधरे * डाकिया कहेन किछु बचन सादरे
हिमालय - तनय मैनाक गिरिराज * करह तुमिह मोर आजि एक काज
शुन-शुन-शुन हिमालयेर नन्दन * एतकाल करिलाम तोमार पालन
इन्द्रेर भयेते मम लइले शरन * लुकाइया राखियाछि करिया यतन
तवोपरि जिराइबे पवननन्दन * श्रीरामेर सहायता कर एइक्षन
सगर हइते हय उत्पत्ति आमार * जन्म लयेछेन राम वंशेते ताँहार

१ पवनगति से २ अपयश ३ समुद्र ४ देवताओं के भय से ।

तिन कारज गमनत हनुमाना * करहुँ तासु हित मनहिं सुहाना
अतः जुगुति मम सुनु गिरिराई * सलिल उपरि रखु शृंग[1] उठाई
विदित मोंहि, चौदिसि तव शृंगा * सकहि प्रसारि सकल तै अंगा
विनय हेतु यहि बारम्बारा * उठि, मैनाक ! करहु उपकारा
मारुति करि तव शिखर विरामा * गमन करहिं पुनि लंकाधामा
कहि तथास्तु गिरि शीश उठावा * निकरि सलिल सों ऊपर आवा
सुबरन-शिखर सिन्धु बिच सोहा * मनहु अरुण छबि सागर मोहा
झलक पाय चिन्तित हनुमाना * पुनि केहि विधि यहु विघिन लखाना
मनुज रूप धरि शृंग पसारी * मारुति प्रति गिरि गिरा[2] उचारी
सुनु मम विनय समीरकिशोरा * आयसु - सिन्धु, आगमन मोरा
'सगर' भूप पूर्वज - रघुकेतू * 'सागर' मइ उत्पति जिन हेतू
सोइ सागर उर प्रीति समाई * राम - दूत ढिग मोहिं पठाई
उतरि शिखर मम करहु विरामा * लेहु सलिल फल मूल ललामा
थकन मिटाय स्वस्थ मन लाई * जाहु लंक जहँ रावनराई
मोहिं कपिनाथ ! बन्धु निज जानी * संसय तजहु, न भय उर आनी
बन्दौं तव पद धरि निज सीमा * सफल करहु अभिलाष कपीसा

सेइ राम कार्य्ये जान समीरतनय * तार किछु हित मोरे करिवारे हय
इहा लागि कहि आमि तोंहे युक्ति करि * एक बार उठ तुमि सलिल उपरि
अधः उद्ध्वं आर चारि पार्श्वे बाड़िबार * आछये तोमार शक्ति अनेक प्रकार
एइ लागि कहितेछि तोंहे बार-वार * उठिया करह तुमि मोर उपकार
तोमार उपरि शृंगे करि आरोहन * मारुति विश्राम करि करुन गमन
एत शुनि 'भाल-भाल' ब'लि गिरिवर * उठिलेन सागरेर जलेर उपर
किवा साजे सिन्धु माझे सुवर्ण शिखरी * प्रभात तपन येन समुद्र उपरि
पथ माझे देखि तारे मारुति चिन्तित * एकि आसि कोन विघ्न हैल उपस्थित
तबे सेइ गिरि धरि मनुष्य मूरति * निज शृंगे थाकि केन मारुतिर प्रति
वायुपुत्र शुन किछु आमार वचन * समुद्र आदेशे आमि कैनु आगमन
श्रीरामेर पूर्व्व वंशे नृपति सगर * तिनि खान करेछेन एइत सागर
एइ हेतु रामदूत तोंहे सम्मानिते * पाठालेन मोरे सिन्धु प्रीतियुक्त चिते
तुमि हे आमार शृंगे करिया विश्राम * खाउ दिव्य फल मूल जल अनुपम
अवशेषे ह'ये तुमि सुखयुक्त मन * करिबे रावण पुर मध्येते गमन
परिहार कर तुमि यत शंका सब * इह आमि तोमादेर सम्बन्धे बान्धव
ए लागिया आसियाछि पूजिते तोमाय * सफल करह तुमि मोर वासनाय

१ पर्वत की चोटी २ वाणी।

दो० विनय-वचन मैनाक के, सुनि मारुतिहिं हुलास।
रहि अकास सम्भाष पुनि, करत मधुर जिज्ञास ॥ १७ ॥

हे गिरिवर! करु मर्म प्रकासू * किमि पयोधि-अन्तस्तल[1] वासू
तुम मम बन्धु कहौ केहि रूपा * विस्तर वरनहु कथा अनूपा
सुनत प्रमोद महीधर वानी * कपि सों सकल सप्रीति बखानी
पूरुब[2] पंख अखिल गिरि धरहीं * जहँ रुचि, उड़ि पयान ते करहीं
यहि मद-अंध कुबुद्धि प्रकासी * गिरत ग्राम-पुर, करत विनासी
हनेउ वज्र सुरनाथ प्रकोपा * छेदि कीन गिरि-पंख विलोपा
अखिल पर्वतन पंख विनासा * सुरपति पुनि आये मम पासा
भागेउँ यथा होय भय-मोचन * मोहिं अनुसरत सहस्रविलोचन[3]
मम दयनीय दसा अति देखी * पवनदेव उर करुण विशेषी
अतिशय वेग पवन मोहि डारा * गिरेउँ कृपा तेहि सिन्धु मँझारा
सागर-सरन लही, तिन दाया * सके न पंख काटि सुरराया
इमि तल-सिन्धु वास, कपि! मोरा * हिमगिरि-सुत मैनाककिशोरा
बन्धु-पवनसुत मैं यहि भाँती * रुचिर[4] गहौ तव पद प्रणिपाती
मम पुनि सिन्धु-प्रीति उर धारौ * विलमि[5] अंग कछु थकन निवारौ
कहेउ वैन सुनि पवनकुमारा * सफल दिवस लहि दरस तुम्हारा
उर सीतल सुनि तव मधुवानी * छुधा, तृषा, श्रम, पीर नसानी

एत शुनि हनुमान थाकिया आकाशे * जिज्ञासा करेन तारे सुमधुर भाषे
कह-कह कि कारणे तुमि गिरिवर * वास करितेछ सिन्धु जलेर भितर
कि रूपे वा हउ तुमि आमार बान्धव * विशेष करिया कथा कह एइ सब
शुनि वाणी महीधर मुदित हइया * कहेन पवन-पुत्रे प्रणय करिया
पूर्व्वे यावतीय गिरि छिला पक्षवान * उड़िया करित तारा सर्व्वत्र प्रयान
तबे ताहादेर दुष्ट बुद्धि उपजिल * पड़िया नगर ग्राम भांगिते लागिल
ताहा देखि क्रुद्ध ह'ये सहस्रलोचन * वज्र करि कैल पक्षच्छेद आरंभन
सकलेर पक्षच्छेदे करि अवशेषे * वज्र धारि आसिलेन इन्द्र मोर पाशे
ताहा देखि भये आमि करि पलायन * पाछे-पाछे चलिलेन सहस्रलोचन
तबे मोरे देखिया कातर अतिशय * करुणाते आर्द्र हैया वायु महाशय
परम प्रवल वेग प्रकाश करिया * फेलाइल मोरे एइ समुद्रे आनिया
ताँहार कृपाय आर समुद्र आश्रये * ना काटिल इन्द्र मोर ए पक्ष उभये
से अवधि आछि आमि सागर भितर * हिमालये पुत्र नाम मैनाक भूधर
तुमि हउ मोर बन्धु पवन-तनय * तोमार सम्मान मोरे करिवारे हय
अतएव मोर आर सिन्धुर पीरिते * करह विश्राम तुमि मोर उपरेते
गिरि वाक्य शुनि कन पवनकुमार * तोमार दर्शन दिन सफल आमार
तोमार मधुर वाक्ये प्राण जुड़ाइल * क्षुधा तृष्णा क्लेश श्रम सकलि जाइल

१ समुद्र के भीतर २ पुरातन काल में ३ इन्द्र ४ इच्छा होती है ५ विश्राम लेकर।

दो० मम पहुनाई प्रीति तव, निरखि उचित विश्राम।
किन्तु अबेर[1] अकाज लखि उचित न पन्थ विराम ॥
जाय लंक प्रभुकाज करि, बोलत तनय-समीर[2]।
देहुँ वचन, रहि सिंधुतट, बसौं बन्धु तव तीर ॥ १८ ॥

निरालम्ब[3] शत योजन पारा * उचित सिन्धु अविराम[4] उतारा
अंगुलि परसि बन्धु तव नेहा * छमहु अनुज्ञा देहु स-नेहा
साधु साधु मैनाक पुकारा * अनुमति दै प्रशंसि विस्तारा
अंगुलि परसि बंधु गिरि-सीसा * धाय गगन किय गमन कपीसा
मारुति प्रति लखि गिरि - सत्कारा * इन्द्र सतोष सुबैन उचारा
तव मैनाक ! निरखि सत्काजू * अतिशय मोद लहेउँ मैं आजू
रामदूत प्रति तव पहुनाई * लखि त्रयलोक प्रीति चहुँ छाई
आजु छमा तव सब अपराधा * निर्भय रहहु, तजहु भय-व्याधा

हनुमान द्वारा सिंहिका राक्षसी-बध और सागर-लंघन

सुनि मैनाक अनन्द अपारा * गमनेउ दच्छिन पवनकुमारा
हनुमत योजन चलत अनेका * मग सिंहिका राक्षसी एका
कपि लखि, दुष्ट निसिचरिहिं भावा * विधि[5] अहार भरपेट पठावा
बृहद् जीव संतरति अकासा * धरि छाया खैंचहुँ निज पासा

करिले आतिथ्य तुमि देखाइया प्रीत * तोमाते विश्राम करा मोर समुचित
किन्तु बड़ त्वरा आछे लंकाय जाइते * ए लागि ना पारिलाम एक्षणे थाकिते
आर शुन आसिवार काले सिन्धु तटे * एसछि प्रतिज्ञा करि बान्धव निकटे
निरालम्ब पार हब शतेक योजन * अतएव योग्य नहे विश्राम करन
अंगुलि माथेते करि परशि तोमारे * दोष क्षमा करि देह अनुज्ञा आमारे
एत शुनि साधु साधु ब'लि गिरिवर * अनुमति दिल तारे प्रशंसि विस्तर
तब कर अंगुलिते मैनाक भूधरे * परशि पयान कैला मारुति अम्बरे
मारुतिर आतिथ्येते सन्तुष्ट अन्तर * मैनाक भूधर प्रति कन पुरन्दर
मैनाक तोमार आजि देखि एइ कर्म * पाइलाम मोरा सबे सातिशय शर्म्म
रामदूत मारुतिर आतिथ्य करिया * करिले हे तुष्ट तुमि त्रिजगत् हिया
अतएव आमि तोमा दिलाम अभय * सुखे थाक तुमि ह'ये निर्भय हृदय

हनुमान कर्तृक सिंहिका राक्षसी-बध ओ सागर लंघन

एत शुनि आनन्दित हन गिरिवर * दक्षिणेते चलिलेन पवन कोङर
कतदूरे जबे तिनि करिला गमन * सिंहिका राक्षसी तारे करिला दर्शन
देखि चिन्ता करे सेइ दुष्टा निशाचरी * बुझि आजि भुञ्जिते पाइब पेट भरि
जाइतेछे आकाशेते बड़ एक प्राणी * इहार छायाके धरि आकर्षिया आनि

१ विलम्ब २ हनुमान ३ बिना सहारा लिए ४ बिना रुके ५ ब्रह्मा ने।

सोचि, धरेउ मारुति - परछाहीं * मुख पसारि खैंचत निज पाहीं
लखि गति-वेग पवनसुत छीना[1] * तासु हेतु उर चिन्तन कीना
किमि मम वेग न्यूनपन[2] आवा * बाँधि रज्जु[3] दृढ़ बिबस बनावा
सोचि लखत चहुँ, बार अनेका * निज तर लखेउ राच्छसी एका

दो० मुख पताल सम निसिचरी, नभ तन रही पसार।
पुनि पुनि सोचत पवनसुत, को यह बिकटाकार ॥ १६ ॥

करति अकर्षन, अस मन आवै * खैंचि मोंहि निज ग्रास बनावै
मन सम्पाति-वचन भल जागै * दुष्ट सिंहिका मारग लागै
मम कर आजु तासु प्रतिकारू * अहिनिसि - कण्टक होय निवारू
पुनि लघु रूप धरेउ कपिराई * बदन - सिंहिका[4] गये समाई
मुख भरि लीन तृप्ति अति गाता * स्वयं लीन विष निज अपघाता
प्रविसि दनुजि तन पवनकुमारा * खण्ड-खण्ड पुनि नखन बिदारा
उदर फारि पुनि बाहेर आये * यहि विधि निसिचरि प्रान गवाँये
फटकि - फटकि सिंहिका नमानी * प्रान गवाँय सिन्धु उतरानी
कोटि कोटि जलचर सुख लहहीं * लहि तेहि मांस भोज मिलि करहीं
अगनित जीव मांस बहु खाये * तेहि सों आजु सकल भरि पाये

एत भावि मारुतिर छायास्पर्श पाय * आकर्षिते आरम्भिल मुखखान वाय
तार आकर्षणे न्यून देखि निजवेग * मने चिन्ता करिछेन मारुति सोद्वेग
एकि मोर गतिवेग न्यून हय केन * दृढ रज्जु दिया केह बान्धिलेक जेन
एत भावि सब दिके देखिते-देखिते * देखिलेन राक्षसीर निजे अधोभिते
पाताल समान मुख विस्तारण करि * रहियाछे अम्बरेते दुष्टा निशाचरी
ताहा देखि भावना करेन पुनर्व्वार * एकि अधोभागे देखि विकट आकार
बुझि एइजन मोरे करे आकर्षन * आपनार मुखे कराइते प्रवेशन
सम्पातिर बाणी मने हइल स्मरन * एइ बटे सिंहिका राक्षसी दुष्टजन
आजि आमि प्रतिकार इहार करिब * ए पथेर कण्टक निःशेषे घुचाइब
एते भावि क्षुद्रमूर्ति धरि कपिवर * प्रवेशिला सिंहिकार वदन भितर
सिंहिका हइया सुखी मुदित वदन * येन केह विष खाय मरण कारण
तबे तार हृदये प्रवेशि हनूमान * नखे करि बिदारि करिल खान-खान
सेइ छिद्र दिया निजे हइल बाहिर * ताह राक्षसीर प्राण छाड़िल शरीर
तबे घुरि-घुरि सेइ दुष्टा निशाचरी * पड़िल परेते सेइ पयोधि उपरि
ताहे सुखी हैल बहु कोटि जलचर * भोजन करिया तार मास बहुतर
बुझिलाम बहुमास पूर्व्वे खेयेछिल * आजि सेइ सकले परिशोध दिल

---

१ क्षीण, मन्द २ शिथिलता ३ रस्सी ४ सिंहिका के मुख में।

सुर - समूह उर अति हर्षाना * गुन गावत पुनि पुनि हनुमाना
चिर - विजयी रहु पवनकुमारा * राम - कृपा कल्यान तिहारा
निधन - सिंहिका दुष्कर कामा * कोउ समर्थ जनि त्रिभुवनधामा
निरालम्ब शत योजन पारा * धन्य सिंहिका मारग मारा
देवन सकल दनुजि - भय पाई * गगन-पन्थ यहु दीन बराई[1]
कीन अकण्टक पथ यहु आजू * सुलभ कीन सब हित सुख-साजू

दो० राम काज सम्पन्न करि, हरहु त्रिलोकन पीर।
तुम सम विक्रम वीर्य्य-बल, जनि समर्थ जग वीर ॥ २० ॥

धरति धराधर[2] यावत् धरनी * तावत् अमर सुयश तव करनी
सफल, न संसय, जाहु कपीसा * सकुशल फिरहु, सुरन आसीसा
कहि सुर-सकल सुमन बरसाये * सुनि कपि मगन[3] लंक तन धाये
कछुक दूर चलि लंक निहारी * सोचत उर हनुमत बलधारी
लंका विकटाकार प्रवेसू * निरखि शंक सब करहिं बिसेसू
धरि लघु रूप सुअवसर पावौं * जाय लंक निज काज बनावौं
लंघि सिन्धु धरि सहज सरूपा * दिय पग शिखर त्रिकूट अनूपा
सहत न भार - कीम रनबंका * डगमग गिरि त्रिकूट पुनि लंका

सिंहिकार मृत्यु देखि यत देवगन * करिछेन हनूमान बहु प्रशंसन
सर्व्वदा विजयी हउ पवनकुमार * करुण श्री भगवान कल्याण तोमार
जे कर्म्म करिले तुमि सिंहिका निधने * इहार सम्भव नहे ए तिन भवने
एके निरालम्बे शत योजन लघन * ताहे सुकठिन कर्म्म सिंहिका निधन
ए दुष्ट राक्षसी भये यत देवभाग * करे छिला एइ व्योममार्ग परित्याग
आजि तुमि करिले ए पथ अकण्टक * विहार करुण सुखे सब वृन्दारक
तोमा हैते रामकार्य्य निष्पन्न हइबे * तोमा हैते त्रिभुवन आनन्द पाइबे
एकि बल एकि वीर्य्य एकि पराक्रम * त्रिभुवने कोथाउ ना देखि जार सम
धरा धराधर सब यावत् थाकिबे * तावत् पर्य्यन्त तव ए यश घुषिबे
जाह जाह करितेछि मोरा आशीर्वाद * कृतकार्य्य हये फिरि एस निर्व्विवाद
एत कहि पुष्पवृष्टि करे देवगन * शुनिया आनन्दे वीर करिला गमन
किछु दूर हैते लंका करि निरीक्षन * मने-मने भावि छेन पवननन्दन
हेन महादेहे यदि प्रवेशि ए लंका * तबेते सकलेते मोर करिवेक शंका
अतएव क्षुद्र मूर्ति ह'ये प्रवेशिब * उचित समये निज कार्य्य समाधिब
एत भावि आपन सहज मूर्त्ति धरि * सिन्धु लंघ पड़िलेन सुबेल उपरि
सेइ त सुबेल गिरि भरेते ताँहार * काँपते लागिल लंका द्वीप सहकार

१ त्याग दिया था २ पर्वत ३ प्रफुल्ल।

बाम अंग सिय सुभ - सन्देसू * फरकत असुभ बाम लंकेसू
यदपि कीन शत योजन पारा * मारुति-गात न श्रम संचारा
अमिय - कथा यह सागर - लंघन * पातक-पुञ्ज सुनत सब भञ्जन

हनुमान-लंका-प्रवेश और चामुण्डा का लंका-त्याग

इमि लंका चहुँ वीर मँझाई * बहुविधि निरखत वरनि न जाई
कनक रजत मनि फटिक[1] सुहावन * निर्मित छबि अति पुरी लुभावन
लखत पैठि गढ़ विस्मित नयना * विश्कर्मा[2] कृत अद्भुत रचना
भयंकरी तहँ प्रकट प्रचण्डा * खर्पर - खड्ग सहित चामुण्डा
युग लोचन मनु उभय दिवाकर * ब्रह्म - अग्नि सम तेज भयंकर

दो० लोल[3] जीभ पुनि चन्द्रछबि मानिक कुण्डल कर्ण।
विकट दसन पीठी जटा घोर कृष्णतम वर्ण ॥
मुण्डमाल भयकारिनी व्याघ्र चर्म परिधान।
निरखि देवि, संशय अतिव, विनय कीन हनुमान ॥ २१ ॥

चामुण्डा तुम शिवा सरूपा * शास्त्र कहत तव कथा अनूपा
मातु दरस तव अति भयकारी * कवन हेतु इत लंक पधारी
'शंभु-सती मैं', देवि प्रकासा * शिव-आयसु लहि लंक निवासा
स्वर्ण लंक सिर्जेउ विधि जबहीं * रच्छन - भार लहेउँ मैं तबहीं

आर एक हैल बड़ से समये रग * सीता आर रावणेर नाचे वाम अंग
यद्यपि लंघिल सेइ शतेक योजन * तथापि नाहिक किछु श्रम एकक्षन
सागर लंघन कथा अमृतेर भाण्ड * शुनिले पातक राशि हय खण्ड खण्ड

हनूमानेर लंका प्रवेश ओ चामुण्डार लंका त्याग

एइ रूपे गेल वीर लंकार भितर * कत स्थाने कत देखे वर्णिते विस्तर
काञ्चन रजत मणि स्फटिके निर्म्मान * पुरी शोभा देखिया विस्मित हनूमान
गड़ प्रवेशिया देखे पवननन्दन * विश्वकर्म्मा निर्म्मित से अद्भूतरचन
महा भयंकरा मूर्त्ति सम्मुखे प्रचण्डा * बाम हस्ते खर्पर दक्षिण हस्ते खाण्डा
दुइ चक्षु घोरे यन दुइ दिवाकर * ब्रह्म अग्नि सम तेज अति भयकर
लोल जिह्वा पृष्ठे जटा विकट दशन * हाँड़िया मेघेर वर्ण देखिते भीषन
व्याघ्र चर्म्म परिधान गले मुण्डमाला * माणिक कुण्डल कर्ण येन चन्द्रकला
देखिया चिन्तित अति वीर हनूमान * जोड़ हाते ब'लेन देवीर विद्यमान
शास्त्रे शुनियाछि आमि चामुण्डार कथा * शिवेर प्रेयसी तुमि केन मागो हेथा
तोमारे देखिया आमि पाइ बड़ डर * कि कारणे आछ माता लंकार भितर
चामुण्डा ब'लेन आमि शंकरेर सती * ताँहार आज्ञाय आमि लंकाय बसति
सृजेन जेखन ब्रह्मा स्वर्ण-लंकापुरी * सेइ काल हैते आमि लंका रक्षा करि

---

१ स्फटिक पत्थर के समान २ बिश्वकर्मा ३ लपलपाती।

बन्दि त्रिलोचन, विनय प्रकासा * कब लौं रावन - धाम निवासा
सुनि महेश मोहिं अवधि बताई * राम - जन्म सुभघरी सुनाई
दसरथ - भूप - तनय श्रीरामा * दसमुख हरै सीय तेहि बामा
पठवहिं राम दूत सिय हेतू * लहहु दरस हनुमत कपिकेतू
भेंटहु लंक जबै हनुमाना * तजि, स्वदेश - हित करहु पयाना
सुबरन लंक निवास अनन्ता * अब लौं दरस न कहुँ हनुमन्ता
केहि सेवक ? तव कवन प्रदेसू * उदधि-अलंघ्य तरन केहि वेसू
सचिव - सुकण्ठ, राम कर दासा * पवनतनय कपि कीन प्रकासा
आगम लंकपुरी सिय हेतू * सागर तरन कृपा रघुकेतू
सुनि हनु-कथा देवि उल्लासा * त्यागि लंक गमनी कैलासा

हनुमान द्वारा सीता की खोज

वन-वन इत भरमत हनुमाना * नरियल - पुँगी उपवन नाना
कोकिल कूजत गुञ्जति भृंगा * कौतुक कलरव विविधि विहंगा

दो० अति विशाल सरवर[1] लखे, विमल सलिल छविधाम ।
धवल रक्त पुनि नील जहँ विकसे पद्म ललाम ॥ २२ ॥

अगम सिन्धु चौगिर्द[2] असेसू * सुरन समर्थ न लंक - प्रवेसू
लौह - प्रकोट कनक - प्राचीरा * शिखर लंक परसति[3] नभ तीरा

करिलाम जिज्ञासा शिवेर श्रीचरणे * थाकिब कतेक काल रावण भवने
शंकर ब'लेन थाक एइ संख्या तार * जत दिन नाहि हय राम अवतार
जन्मिवेन राम दशरथेर भवने * तार पत्नी सीता सती हरिबे रावणे
सीता अन्वेषणे राम पाठावेन चर * तार नाम हनूमान आकारे वानर
जखन देखिबे लंकागत हनूमान * तखन छाड़िया लंका आसिबे स्वस्थान
सेइ हैते राखि आमि स्वर्ण लंकापुरी * हनूमाने ना देखिया जाइते ना पारि
काहार सेवक तुमि कोथा तव घर * किमते तरिले तुमि अलंघ्य सागर
हनूमान ब'ले आमि रामेर किंकर * सुग्रीवर पात्र आमि पवनकोडर
सीता अन्वेषणे आइलाम लंकापुरी * श्रीरामेर दूत आमि, ताइ सिन्धु तरि
शुनिया हनूर कथा चामुण्डार हास * लंकाय देखिया तारे गेलेन कैलास

हनूमानेर सीता-अन्वेषण

तदन्तरे हनूमान भ्रमे वने वन * गुया नारिकेल देखे अति सुशोभन
कोकिलेर कुहूरव भ्रमर झंकार * नाना पक्षि कलरव लागे चमत्कार
दीघि सरोवर देखे सलिल निर्म्मल * प्रस्फुटित कोकनद पंकज उत्पल
लंकापुरी चारिदिके वेष्टित सागर * देवतार गति नाहि लंकार भितर
सोनार प्राचीर मध्ये, बाहिरे लोहार * गगनमण्डले चूड़ा लागये ताहार

---

१ तालाब २ चारो ओर ३ छूती थी ।

चहुँ दिसि इमि भरमत हनुमन्ता * बहु बिधि करत मनहिं मन चिन्ता
दुर्जय दसमुख लंक प्रतापू * कहँ कपि कटक ! निरखि संतापू !
को समर्थ इत करहि प्रवेसू * तजि जन चारि, शक्ति-जनि लेसू
प्रथम सुभट सुग्रीव अपारा * पुनि समर्थ इत बालिकुमारा
सैनिप नील तृतीय बहोरी * गति अपार, गिनती पुनि मोरी
प्रथम प्रयोजन सिय - संधानू * पुनि समुखौं[1] विधि यथा विधानू
किमि दुर्जय रिपुगन भरमाई * चीन्हहुँ किमि कहँ रावनराई
राव - चाव[2] लहि सुबरन लंका * किमि चीन्हउँ सिय जोति-मयंका[3]
राम-प्रिया मैं दरस न कीना * चन्द्रबदनि सिय मोहिं नवीना
चर्चति चपल हास - परिहासू * तहँ दुर्लभ जानकी निवासू
अश्रु सदा दृग, बसन - मलीना * उर आवत सिय छवि अति दीना
हेरत, मीच विधिन[4] अनुसरहीं * भावी मानि सीस सब धरहीं
अथये भानु[5] उजेर नसाना * पुरी मध्य प्रविसे हनुमाना
नभ शशि उदित खिली उजियारी * भलीभाँति कपि लंक निहारी

दो० कनकझरोखन - युत सदन, मुक्तन बन्दनवार ।
ध्वजा - पताका सोह चहुँ, राज - साज शृंगार ॥ २३ ॥

एइ रूपे हनूमान भ्रमे चतुर्भिते * मने मने कत चिन्ता लागिल करिते
रावणेर प्रताप दुर्ज्जय लङ्कापुरे * वानर-कटक ताहे कि करिते पारे
ए खाने आसिते पारे शक्ति आछे कार * चारि व्यक्ति विना आर सकल असार
सुग्रीव आसिते पारे वीर अवतार * युवराज अंगद आसिते पारे आर
आसिवारे शक्ति धरे नील सेनापति * आमिउ आसिते पारि अव्याहत-गति
एइ कार्य्ये आसियाछि सीता देखि आगे * शेषे ते करिब, कार्य्य जेखाने जे लागे
भाण्डाइब केमने दुर्ज्जय शत्रुगण * केमने चिनिब आमि राजा दशानने
बेंड़ाइब केमने कनक - लंकापुरी * केमने चिनिब आमि रामेर सुन्दरी
रामेर प्रेयसी सीता कभु नाहि देखि * केमने चिनिब आमि सीता चन्द्रमुखि
हास्य-परिहास-कथा वचन - चातुरी * सेखाने ना थाकिबेन जानकी सुन्दरी
सर्व्वक्षण चक्षे अश्रु मलिन वसना * सेइ जे रामेर सीता हय विवेचना
सीतारे देखिते यदि हय हानाहानि * हयलेक, क्षति ताहे किछुइ ना मानि
अस्त गेल भानुमान, बेला अवसान * मध्यगड़ प्रवेश करिल हनूमान
निशाकर सुप्रकाश गगनमण्डले * भालमते हनूमान लंका के नेहाले
चालेर उपरे शोभे सुवर्णेर वारा * चारिभिते शोभा करे मुकुतार झारा
प्रति घरे घरे ध्वजा-पताका विराजे * राजार मन्दिर से सुन्दर साजे साजे

१ सामना करूँ २ हाल-चाल ३ चन्द्रछवि वाली ४ बाधाएँ ५ सूर्य अस्त हुये ।

इच्छामत माया विस्तारी * घर घर फिरत नकुल-तन धारी
लखेउ विभीषण - धाम ललामा * सदन - महोदर भट छविधामा
उल्काजिह्व सु विद्युतमाली * जहँ विद्युतजिह्वा बलशाली
शुक-सारन, पुनि दनुजकुमारा * अखिल लंक चहुँ गेह निहारा
कतहुँ लहेउ जनि सिय - उद्देसू * नृप मन्दिर पुनि कीन प्रवेसू
दुर्जेय दनु सशस्त्र रखवारे * डोलत पाँति पाँति नृप - द्वारे
लखि पुष्पक कौतुकी विमाना * कूदि छलाँग चढ़े हनुमाना
पुष्पक - सारथि स्वयं समीरा[१] * पवनतनय भेटत पितु तीरा
चर्चत बहु, पुनि पवन पयाना * दसमुख - गेह धँसे हनुमाना
शयन दशानन रतन - पर्यंका[२] * दस किरीट[३] जगमगत मयंका[४]
अभरन[५] अंग प्रचुर दशभाला * दामिनि दमकत जिमि घनमाला
रमण - श्रान्त सोवत दसकंधा * केसर कुंकुम मृगमद - गंधा
तारन मध्य चन्द्र जेहि रूपा * चहुँ सोहैं अप्सरा अनूपा
एक संग रूपसि छबिबाला * पारिजात गुंथित मनु माला
वीणा बँसुरि खोल करताला * बजत, करत सुख-सैन भुवाला
मनुजि सुरासुरि पुनि गन्धर्विन * दनु-मन्दिर छबिखानि रूपसिन

हनूमान स्वेच्छाय विविध माया धरे * नेउल प्रमान ह'ये फिरे घरे घरे
अति सुशोभन विभीषणेर आवास * देखे महोदरेर से अपूर्व्व निवास
उल्काजिह्व विद्युतजिह्व आर विद्युन्माली * शुक सारणेर घर देखे महाबली
कुमार सवार घर देखे सारा राति * एक एक देखे यत लंकार बसति
कोनस्थाने सीतार न पाइया उद्देश * राज अन्तःपुरे वार करिले प्रवेश
राजार द्वारेते द्वारा देखे सारि-सारि * दुर्ज्जय राक्षस सब नाना अस्त्रधारी
देखिल पुष्पक रथ विचित्र निर्म्मान * तदुपरि लाफ दिया उठे हनूमान
सेइ रथे सारथि जे देवता पवन * पिता पुत्र उभयेते हइल मिलन
पुत्रे सम्भाषिया पिता गेल निज स्थान * रावणेर घरे प्रवेशिल हनूमान
रावण शुइया आछे रत्नमय खाटे * घर आलो करितेछे दशटा मुकुटे
राज देहे आभरण देखिल प्रचुर * दीप्त करि मेघ जेन पड़िछे चिकुर
निद्रा जाय रावण श्रृंगार अवसादे * कस्तूरी कुंकुमे राजा शोभे मृगमदे
चारिभिते देवकन्या मध्येते रावण * आकाशेर चन्द्र बेड़ि येन तारागण
शोभे एक ठाँइ सब रमणीर गला * एक सूत्रे गाँथा येन पारिजात माला
खोल करताल कारो वीणा बाँशी बोले * अचेतन निद्राय लोटाय भूमितले
मानुषी गन्धर्व्वी देवी दानवी राक्षसी * रावणेर घरे आछे परम रूपसी

१ पवनदेव २ रत्न-पलँग पर ३ मुकुट ४ चन्द्रमा ५ आभूषण।

दो० तन विशाल नीलम बरन पीत बसन दसमाथ।
नव जलधर[1] सोहत यथा सौदामिनि[2] के साथ ॥ २४ ॥

मयदानव - दुहिता मन्दोदरि * रावन - अंक सोह अति सुन्दरि
भरी सुहाग रत्नमय रानी * लखि तेहि सिय हनुमत अनुमानी
राम सरिस जग पुरुष न दूजा * सिय करि सकै न रावन पूजा
जनकलली दसरथसुत - जाया * सेयि सकै सो किमि दनुराया
एक-एक करि सबन निहारी * तहँ न लखत सीता अनुहारी[3]
नयन बीस मूँदे पर्यंका * लखि लंकेस कपिहिं उर शंका
अन्तःपुर न खोज सिय पाई * अन्य गेह हेरत कपि जाई
जहँ दशग्रीव करत मधुपाना * तहाँ प्रवेश कीन हनुमाना
भक्ष्याभक्ष्य[4] कच्च - आहारा[5] * विविध मनुज-मृग[6] मांस निहारा
सिय - छवि तबहुँ न दरसन पावा * चढ़ि प्राचीर मनहिं मन भावा
जहँ लौं बुद्धि, सकल अवलोकी * घर - घर कुत्सित रूप विलोकी
राम - दास मोहिं रिपु सम नारी * मत्त नगिनि[7] दानविन निहारी
अर्द्धनिसा मैं जागि बिताई * भरमेउँ कतहुँ खोज जनि पाई
विक्रम, बुद्धि, भक्ति रघुनाथा * मम सब हरन कीन खगनाथा[8]
सिय हित मानि वचन - सम्पाती * खोज सिन्धु तरि किय बहु भाँती

नील वर्ण रावण से पीत वस्त्रधारी * नव जलधर येन विद्युत सञ्चारी
रावणेर कोले देखे परम सुन्दरी * मयदानवर कन्या रानी मन्दोदरी
सोहागे आगुलि सेइ रत्ने विभूषिता * तारे देखि भावे वीर एइ बुझि सीता
रामगुणे पुरुष नाहिक त्रिभुवने * रावणे भजिबे सीता नाहि लय मने
दशरथ - पुत्रबधू जनक - झियारी * भजिवेन रावणेरे मने नाहि करि
एके एके सकल करिला निरीक्षन * सीतार लक्षण युक्त नाहि एक जन
कुड़ि चक्षु मुद्रित निद्रित लंकेश्वर * निरखिया हनुमान पाइलेन डर
अन्तःपुरे सीतार ना पाइया उद्देश * आर घरे गिया हनु करिल प्रवेश
जे घर रावण राजा करे मधुपान * सेइ घरे प्रवेश करिल हनुमान
भक्ष्यघरे प्रवेशिया देखे नाना भक्ष्य * मनुष्य पशुर मांस देखे लक्ष लक्ष
से खाने सीतार नाहि पाइया दर्शन * प्राचीरे बसिया भावे पवननन्दन
सर्व्वस्थान देखिलाम करिया विचार * घरे घरे देखि सब कुत्सित आकार
उलंग उन्मत्त यत रावणेर नारी * रामदास आमि, मोर नारी हय अरि
सीता हेतु अर्द्ध रात्रि करि जागरण * अनेक भ्रमणे नाहि पाइ अन्वेषण
बल बुद्धि पराक्रम श्रीरामे भकति * करिल सकल नष्ट विहंग सम्पाति
तार वाक्ये लंघिलाम दुस्तर सागर * सीता हेन भ्रमिलाम लंकार भितर

१ मेघ २ बिजली ३ अनुरूप ४ खाद्य-अखाद्य ५ पाक शाला, रसोई ६ मनुष्य और पशुओं के मास ७ नगी ८ सम्पाति ।

अब न लंक तजि अन्त पयाना * इतै लंक बिच त्यागहुँ प्राना

दो० सोचत बहुबिधि पवनसुत, उर वेदना अपार ।
सुन्दरकाण्ड अनूप किय कृत्तिवास विस्तार ॥ २५ ॥

हनुमान का अशोक वाटिका में सीता-दर्शन

सत्तर योजन गढ़ - प्राचीरा * उपरि बैठि सोचत हनुवीरा
निरखत सुबरन लंक ललामा * कनक-रजत निर्मित चहुँ धामा
जड़ित रतन स्फटिक सुहाये * पंख मयूर छावनी छाये
चहुँ सुरम्य चहुँ दिसि मन मोहा * तनयसमीर[1] विमूढ़ विमोहा
बैठि प्रकोट[2] रुदन कपि करई * कहँ चलि अन्त दरस सिय लहई
राम - विदा लै बितयउँ मासा * प्रभु पहँ चलि किमि करइँ प्रकासा
कहौं प्रबोध - बचन किमि रामा * जीवन वृथा, वृथा मम नामा
स्वर्ग पताल मर्त्य त्रयलोका * विफल, सिया जनि कतौं विलोका
बधहुँ प्रथम सुग्रीवहिं जाई * देहुँ प्रान पुनि चिता सजाई
करत पवनसुत रुदन अपारा * दै सिय ! दरस करहु निस्तारा
बिलपत जबहिं, नयन तर आवा * उपवन तहँ अशोक लखि पावा
विविध प्रसून[3] वर्ण तहँ नाना * चकित मुग्ध निरखत हनुमाना
कोकिल कूजत गुंजत भृंगा[4] * पवनसुतहिं उल्लास उमंगा

ए लंका हइते नाहि करिब गमन * एइ लंकापुरे आमि तजिब जीवन
कान्दिते कान्दिते हनू छाड़िल निःश्वास * रचिल सुन्दरकाण्ड कवि कृत्तिवास

हनूमान कर्तृक अशोकवने सीता-सन्दर्शन

सत्तर योजन लंका प्राचीर प्रमान * ताहार उपरे वसि भावे हनूमान
स्वर्णपुरी लका देखे पवनकोडर * चतुर्दिके देखे स्वर्ण रजतेर घर
सोना ओ रूपार घर स्फटिकेर खनि * मयूरेर पाखे सब घरेर छाउनि
जेइदिके चाहे सेइदिके रहे मन * आपना पासरे वीर पवननन्दन
प्राचीरे बसिया हनू करिछे क्रन्दन * कोन देशे पाब सीता मायेर दर्शन
मासेक हइल, राम बिदाय दिला मोरे * कि वार्त्ता कहिब गिया ताँहार गोचरे
वृथा हनूमान आमि वृथाइ जीवन * कि ब'लिया प्रबोधिब श्रीरामेर मन
स्वर्ग मर्त्य पाताल खुंजिनु एके एके * सीता माके खुंजिया ना पेलाम त्रिलोके
आगे गिया सुग्रीवेर बधिब जीवन * परे कुण्ड साजाइया मरिब तखन
कोथा आछ सीता माता देह दरशन * एतेक ब'लिया वीर करिल क्रन्दन
कान्दिते कान्दिते वीर करे निरीक्षन * हेनकाले हेरे हनू अशोकेर वन
नाना वर्ण पुष्प युक्त अशोक कानन * फाँफर हइया हनू करे निरीक्षन
कोकिलेर कुहूरव भ्रमर झंकार * ताहा देखि आनन्दिते पवनकुमार

१ हनुमान २ चहारदीवारी ३ फूल ४ भौंरे ।

वन-अशोक लखि अमित हुलासू * निश्चित इत सिय जननि प्रकासू
अश्रु पोंछि पुनि गात सम्हारी * वन अशोक पग दिय बलधारी
तजि प्राचीर बलिस्त[1] प्रमाना * माया - तन प्रविसेउ हनुमाना

दो० विटप अशोक विशाल लखि, धाय चढ़े तहँ जाय।
चालिस योजन शिखर तरु, गठित सघन अधिकाय ।। २६ ।।

तेहि ऊपर चढ़ि हनु बलधारी * कहँ तरुतर सिय ? रहेउ निहारी
त्रिजटा सहित अनेकन चेरी * बिलपत सियहिं रहीं जहँ घेरी
नयन उठाय अवर[2] चहुँ देखा * तरु सुन्दर बहु भाँति विशेषा
छबि तरु केते रक्तिम रंगा * मेघवर्ण मञ्जुल इकसंगा
सुबरन रंगमञ्च अधिकाई * रमत अप्सरन रावनराई
विटप - लता बहुरञ्जित नाना * इत सीता, हनुमत अनुमाना
चेरिन विकट विरूप असोहा[3] * गिरि प्रलंब कर मुद्गर लोहा
धवल कृष्ण सित[4] दासि अशेषा * ताल - खजूर - जटा सम केशा
उदर गात लोमावलि[5] छाई * भृकुटिन चढ़ि नासिका समाई
गंज ललाटहिं, गिरगिट रूपा * लसत रक्त प्रत्यंग विरूपा
चमकति खड्ग अस्त्र बहु धारी * दसमुख - दासि महा भयकारी
घिरी राच्छसिन, दुर्बल - दीना * दुइज चन्द्र जिमि कलाविहीना

अशोकेर वन देखि आनन्दित मन * उखाने पाइब सीता मातार दर्शन
मुछिया नेत्रेर जले हइया सुस्थिर * प्रवेशिल अशोक कानने महावीर
प्राचीर छाड़िया वीर गेल सेइ खाने * माया करि हैल हनू विघत प्रमाने
शिशपार वृक्ष वीर देखे उच्चतर * लम्फ दिया उठिलेक ताहार उपर
अति उच्चतर वृक्ष अपूर्व्व गठन * ऊर्द्ध्व तार परिमाण चल्लिश योजन
ताहार उपरे उठि हनू महाबले * देखिल रहेन सीता सेइ वृक्षतले
त्रिजटा राक्षसी तथा सहचेड़ी गन * चेड़ी गन मध्ये सीता करेन रोदन
वृक्षेते उठिया वीर नेहाले कानन * नाना वर्ण वृक्ष देखे अति सुशोभन
रांगा वर्ण कत वृक्ष देखिते सुन्दर * मेघवर्ण कत वृक्ष देखे मनोहर
ठाँइ-ठाँइ देखे तथा स्वर्ण नाट्य शाला * देवकन्या लइया रावण करे खेला
नाना वर्ण वृक्ष देखे नाना वर्ण लता * मने चिन्ते हनूमान हेथा पाब सीता
चेड़ी सबे देखे तथा अंग भयंकर * पव्वत प्रमान हाते लोहार मुद्गर
केह काली केह गोरी कोन चेड़ी धली * खर्ज्जुर ताले मत शिरे केशावली
ओ उदर चूल कारो माथा जुड़ि नाक * कॉकलास मूर्ति कारो सब माथा ढाक
हाते मुखे सर्व्वांग रक्तेर छड़ाछड़ि * भयंकर मूर्त्ति सब रावणेर चेड़ी
नाना वस्त्र धरियाछे खाण्डा झिकिमिकि * चेड़ी सब घेरियाछे सुन्दरी जानकी
गाये मला पड़ियाछे मलिना दुर्व्वला * द्वितीयार चन्द्र येन देखि हीनकला

---

१ बालिश्त भर लंबा २ और ३ अशोभन ४ उज्ज्वल ५ रोमावली।

दिवस छीन जिमि इन्दु-प्रकासू[1] * सिय कहि 'राम' तजति निःस्वासू
राम-नाम मुख, रुदन अपारा * रहेउ न संशय पवनकुमारा
सिय लखि रोय उठे हनुमाना * सकल यथा सुग्रीव बखाना
भ्रमत मरनमुख कपि जेहि लागे[2] * नाक-कान सुपनेखहिं त्यागे

दो० सहस चतुर्दस दनु मरे, रावन हनेउ जटायु।
तरन कबन्ध, सुकण्ठ पुनि राम लीन उर लाय ॥
कपि-प्रवास, मैं सिंधु तरि, पुनि भरमहुँ निसि लंक।
सबन-हेतु 'सिय' रामप्रिय लखौं, न अब उर संक ॥ २७ ॥

सीता-दुख कातर हनुमाना * प्रस्तुत रूप यथा अनुमाना
दस दिसि जानकि-रूप अलोका * यहि हित रामहिं दारुन शोका
दनुजिन मारि कि निजहिं निपाती * सिय दुख सहन न अब केहु भाँती
मारुति विटप, राम-सिय ध्याना * कृत्तिवास कृत रघुपति गाना

अशोक वाटिका में सीता से रावण का साक्षात्

पहर द्वितीय रैन चढ़ि आई * नभ पूर्णेन्दु छटा चहुँ छाई
सीतल मनहर गन्ध बयारी[3] * खिली सुचित्र धवल उजियारी
विगत अर्द्ध निसि घोर, असंका * सुख सोवत लंकेस पयंका

दिवा भागे येन चन्द्रकलार प्रकाश * श्रीराम बलिया सीता छाड़ेन निःश्वास
श्रीराम ब'लिया सीता करेन क्रन्दन * सीतारे चिनिया निल पवननन्दन
सीतारूप देखि कान्दे वीर हनूमान * सुग्रीव ब'लिल यत हैल विद्यमान
इहा लागि मरण एड़ाय कपि यत * इहा लागि शूर्पनखार नाक-कान हत
इहा लागि चतुर्द्दश सहस्र रक्ष मरे * इहा लागि जटायु प्रहारे लंकेश्वरे
इहा लागि कबन्धेर स्वर्ग दरशन * इहा लागि श्रीरामेर सुग्रीव मिलन
इहा लागि कपिगण गेल देशान्तरे * इहा लागि एकेश्वर लघिनु सागरे
इहा लागि लंकाय बेड़ाय राताराति * एइ से रामेर प्रिया सीता रूपवती
देखिया सीतार दुःख कान्दे हनूमान * अनुमाने या' छिल ता देखि विद्यमान
दशदिक् आलो करे जानकीर रूपे * इहा लागि म्लान राम दारुण संतापे
राक्षसी गणेरे मारि कि आपनि मारि * जानकीर दुःख आर देखिते ना पारी
राम सीता बाखाने चड़िया हनु गाछे * कृत्तिवास मनोदुःखे राम गुण रचे

अशोक बने सीता देवीर निकटे रावणेर गमन

द्वितीय प्रहर रात्रे उठिल रावन * पूर्ण चन्द्र उठियाछे उपर गगन
सुशीतल वायु बहे अति मनोहर * धवल रजनी भाग विचित्र सुन्दर
निशि घोर रात्रि हैल द्वितीय प्रहर * पालंकेते निद्रा जाय राजा लंकेश्वर

१ चन्द्र प्रकाश २ जिसके कारन ३ वायु।

मलय बसन्त समीर जगावा * सिय कर सुधि दसमुखहिं सतावा
कामातुर मदान्ध[1] मन आवा * सिया समीप चलन मन भावा
वन अशोक सिय ढिग पग धारी * मन्दोदरि आदिकन गुहारी

छं० आयसु पाय सजीं सब रानी टोली सुमुखिन केरी।
सहस रूपसिन रूप छटा सों सुबरन लंक उजेरी॥
नारायन - असनिग्ध[2] सोबरन - दीपन पाँति घनेरी।
झारी, चन्दनपात्र चवँर कर, चलीं दसानन घेरी॥

संग रानिमन हाल - बिहाला * सिय ढिग प्रस्तुत लंक - भुवाला
सहस रानि बिच लंक - प्रधानू[3] * सुरपुर सम अशोक उद्यानू
सोचत कपि, सिय सम्मुख आई * किमि आचरत निसाचरराई
लखत लंकपति चहुँ दग बीसा * सिय ढिग उचित न छाँह-कपीसा
सघन पात तरु ओट लुकाई * अदरस[4] लखत चतुर कपिराई
सिय ढिग प्रस्तुत रानिन संगा * विटप - ओट कपि लखत प्रसंगा

दो० कथन कुतूहल लंकपति-सीय सुनहिं, मन धारि।
दुइ पग डार, बढ़ाय मुख, हनुमत रहे निहारि॥ २८॥

दनु लखि उर कंपित वैदेही * मलिन बसन अंगन ढकि लेही
अति भयभीत विकल सियमाई * चहति जाहिं निज गात समाई

मलय वसन्त वाये निद्रा भंग हैल * सीतादेवी रावणेर मने पड़े गेल
मधुपाने रावण हृदल कामातुर * ब'ले चल जाइ हे सीतार अन्तःपुर
सीता लागि जाब आमि अशोकेर बने * मन्दोदरी रानी आदि डाके रानीगने
रावणेर आज्ञा पेये साजे रानीगन * वेष्टित करिल सबे राजा दशानन
रावणेर संगे चले दश शत नारी * रूपे आलो करिछे कनक लंकापुरी
चामर ढुलाय केह कारो हाते झारि * नारायण तैले ज्वले देउटी सारि सारि
कोन वा रानीर हाते चन्दनेर बाटी * कोन वा रानीर हाते स्वर्णेर देउटी
रानीगन संगे राजा चले आस्ते व्यस्ते * उपस्थित हैल गिया सीतार साक्षाते
दश शत नारी सह आइल रावन * अशोक कानन हैल देवता भवन
ब'ले हनू रावण करिल आगुसार * देखिब सीतार संगे कि करे आचार
कुड़ी नेत्रे दशानन चारि दिके चाहे * सीतार निकटे आछि कभु भाल नहे
गाछेर आड़ाते बसि पातार भितर * आपनि लुकाये देखे चतुर बानर
नारीगण संगे गेले सीतार सम्मुखे * थाकिया गाछेर आड़े हनूमान देखे
कि ब'ले रावण राजा कि ब'ले जानकी * शुनिवारे आगुसारे मारुति कौतुकी
दुइपद राखि लेक डालेर उपर * देह बाड़ाइया देखे सीतारे गोचर
रावणे देखिया सीता काँपिल अन्तरे * मलिन बसने ढाके निज कलेवरे
मने मने महाभय पाइया जानकी * आपनार अंगे तिनि हैते चान लुकि

---

१ मदिरा से मत्त २ नारायण तैल ३ रावण ४ अदृश्य।

स्तन जुगुल करन ढकि लीन्हा * आनन - छबि बन धवलित कीन्हा
कनकपूतरी कञ्चन अंगा * युगुल चरन - सिय हिंगुल रंगा
चरन जोति - नख चन्द्र लजाहीं * दसन - पंक्ति सम मुक्ता नाहीं
युगुल नयन-सिय सरसिज[1] शोभा * शत-शत मधुप[2] जुरत मधु-लोभा
दस दिसि सीय अलोकित करनी * तरु अशोक तर शोभित तरुनी
जदपि मलीन दुसह दुख छीना * सिय अशोक वन जगमग कीना
उड़े प्रान - सिय लखि दसमीसा * अहह ! राम, रच्छहु जगदीसा
देवर लखन कहाँ पुनि रामा * राखहु धर्म दुहू बलधामा
विकल सिया पुनि सीस नवाई * देखन चहत न मुख दनुराई
मन - मन सोचत लंकजुभारा * सिय ! तव आगम मम उद्धारा
होनी होय, होय, जनि चिन्ता * लचहुँ न जग लहि कीर्ति अनन्ता
कह लंकेस, वचन सुनि लेही * मुख न उठावत किमि वैदेही
चितै, मान तजि, बनि पटरानी * स्वर्ण सिंहासन बिलसहु रानी
दस सहस्र अप्सरन प्रकासू * बनि पटरानि करहु सुखवासू

दो० अंग अंग रत्नाभरन मणि माणिक बहु धारि।
सदा लंकपति चरन तव अनुचर आज्ञाकारि ॥ २९ ॥

त्रिभुवन मम सम भूप न आना * धन अपार अधिपति जग जाना

दुइ हाते दुइ स्तन ढाकिल जानकी * आनन लावण्य बन उज्ज्वल निरखि
सोनार प्रतिमा जिनि सीता ठाकुरानी * हिंगुल जिनिया यार चरण दुखानि
चन्द्र जिनि चरणेर दशनख ज्योति * मुकुता जिनिया मार दशनेर पाँति
पद्म जिनि जननीर दुइ चक्षु शोभे * भ्रमर धाइछे कत शत मधु लोभे
दशदिक् आलो करे जनक-झियारि * शिशपार तले जेन पड़िछे विजरी[3]
सीतामार गात्रे मला, मलिन बदन * तबु रूपे आलो करे अशोकेर बन
रावणे देखिया सीतार उड़े गेल प्राण * ब'लेन दुहात तूलि रक्षा कर राम
एमन समये कोथा देवर लक्ष्मन * जातिमान रक्षा कर भाइ दुइजन
विकलि करिया सीता कैला हैट माथे * माथा तुलि ना चाहेन रावण साक्षाते
सीता रूप हेरि रावण भावे मनेमन * आमार उद्धारे सीता, तव आगमन
ये होक् से होक् मोर जानि मने मने * उन्नत हइया आमि नत हइ केने
डाक दिया ब'ले तबे लंका अधिकारी * हेंट माथा कैले केन जनकझियारी
अभिमान छाड़ि सीता चाह नेत्र कोणे * पाटराणी ह'ये बैस स्वर्ण सिंहासने
दश हाजार देवकन्या विभा करि' आमि * तार मध्ये पाटराणी ह'ये रह तुमि
सर्व्वांग भरिया पर राज आभरन * तव आज्ञाकारी रबे राजा दशानन
मोर मत राजा आर नाहि त्रिभुवने * धनेर ईश्वर आमि जाने जगज्जने

---

१ कमल २ भौंरे ३ बरारहित।

देव न लंक प्रवेस समर्था * हे प्रिय तैं डरपत केहि अर्था
भय मानत, लायेउँ बरजोरी * असुर - धर्म छल-बलहिं न खोरी[1]
कमलबदनि कै तुम शशिबदनी * त्रिभुवनजयी, मोर मनहरनी
कुण्डल रतन श्रवन दोउ धारी * तन नवनीत सरिस सुकुमारी
करगत सुकर[2] सुछबि कटि पावा * हिंगुल मनहुँ पदंगुलि छावा
सेवत राम जनम दुख बीता * बिलसहु सुख मम सहित अतीता
जीवन छीन, सम्पदा स्वल्पा * राजहीन बनवास विकल्पा[3]
विदित न, पर्णकुटी अब रामा * कै दनुजन पठये यमधामा
सहि न सुमेरु सकत मम सायक * किमि बापुरो[4] मनुज रघुनायक
किन्नर देव, दनुज, गन्धर्वा * यक्ष—सबन के मेटे गर्वा
निज बल-बाहु दिग्विजय कीन्हा * शत-शत शूर रसातल चीन्हा
राम - लखन जड़ तपसी दोऊ * तिन तजि सुमुखि! सुखी चलि होऊ
निपट अबोध, बुद्धि जनि लेसू * सियहिं कहति का विज्ञ[5] विसेसू
पारांगत रतिशास्त्र प्रवीना * रमहिं केलि नित रंग नवीना
रत्न बहुल धन - धाम हमारा * चलै सकल सिय तव अनुसारा

दो० मैं सेवक दसमाथ तव, तैं सिय मम ठकुरानि ।
अनुमति लहि, अन्तर्सदन[6], अबहिं करौं पटरानि ॥ ३० ॥

रावण ब'लिल सीता कारे तव डर * देवता आसिते नारे लंकार भितर
बले धरि आनियाछि एइ भय मने * राक्षसेर जाति धर्म्म छले बले आने
त्रिभुवन जिनिया तोमार सुबदन * कि पद्म कि सुधाकर, हेन लय मन
दुइ कर्णे शोभे तव रत्नेर कुण्डल * देखि नवनीत प्राय शरीर कोमल
मुष्टिते धरिते पारि तोमार कांकालि * हिंगूले मण्डित तव चरण अंगुलि
करिया रामेर सेवा जन्म गेल दुःखे * हइया आमार भोग्य थाक नाना सुखे
रामेर अत्यल्प धन अत्यल्प जीवन * राज्य शोके फिरे राम करिया भ्रमन
एखनो कि आछे राम सेइ वर्ण वासे * वनेर भितरे तारे खाइल राक्षसे
मोर वाणे सुमेरु नाहिक धरे टान * मानुष से राम, से कि आमार समान
देवता दानव यक्ष किन्नर गन्धर्व * युद्धे करिलाम पूर्ण सवाकार गर्व्व
दिग्विजय कैनु आमि रणे बाहुबले * कत शत योद्धपति दिनु रसातले
हेन जन छाड़ि तव तपस्वीते मन * जटिल तपस्वी तव श्रीराम लक्ष्मन
किछु बुद्धि नाहि तव अबोधिनी सीता * मिछामिछि ब'ले लोके तोमाके पण्डिता
रतिशास्त्र जानि आमि विविध विधाने * तुमि आमि केलि रस भुंजिब दुजने
नाना रत्न पूर्ण आछे आमार आगार * आज्ञा कर सुन्दरि से सकलि तोमार
तोमार सेवक आमि तुमित ईश्वरी * तोमार आज्ञाय लये जाइ अन्तःपुरी

१ दोष २ सरलता से ३ बदले मे ४ बेचारा ५ बुद्धिमती ६ राजमहल ।

मैं आतुर बन्दहुँ तव चरना * देवि ! कोप तजु, मैं तव सरना
केहु पद कबहुँ न सीस नवाये * दसौ सीस तव चरन लोटाये
उर प्रकोप सुनि रावन-बानी * बोलत मन्द मन्द सियरानी
कुल-ललना मैं जनकदुलारी * किमि अधर्म-रत रामपियारी
बैठि विमुख, उर कोप कराला * कुवचन कहत, सुनत दसभाला
विज्ञ न, तव हित कहत बुझाई * विज्ञ न दोष, मृत्यु तव आई
जम्बुक-उर सिंहिनि-अभिलासा * राम-विवाद, सवंश विनासा
भजे न प्रान बचैं प्रभुसायक * तैं किमि सरिस राम रघुनायक
पामर, अमर अमिय जो धारा * तबहुँ न प्रभु-सर[1] तव निस्तारा
कनक लंक लहि दर्प अपारा * रघुपति-सर जरि होय अँगारा
सिन्धु गर्व-बस किय दुष्कामा * जरहि जलधि लहि सायक[2] रामा
शठ ! सुनु, यदि चाहत कल्याना * दै मोहिं प्रीति लहै भगवाना
जो नहिं प्रीति लहै रघुनाथा * सुगति न देहिं अगति के नाथा
निज मुख निज मम दास बखानी * किमि दुलखत[3] बाचा-ठकुरानी[4]
गुरुजन-पद-बन्दन जग रीती * गहि मम पद किमि वचन अनीती
धरि पितु-वचन राम वनवासू * शाप-रोष तिन तोर विनासू

तोमार चरण धरि करि हे व्यग्रता * कोप त्यजि मोर कथा शुन देवी सीता
कारो पाय नाहि पड़े राजा दशानने * दशमाथा लोटाइनु तोमार चरने
रावणेर वाक्ये सीता कुपिया अन्तरे * कहेन ताहार प्रति अति धीरे-धीरे
अधार्म्मिका नहि आमि रामेर सुन्दरी * जनक राजेर कन्या आमि कुलनारी
रावनेरे पाछु करे बंसे क्षुद्र मने * गाला गालि पाडे सीता रावण ता शुने
नाहि हेन पण्डित बुझाय तोरे हित * पण्डिते कि करे तोर मृत्यु उपस्थित
शृगाल हइया तोर सिहे जाय साध * सवंश मरिबि रे रामेर सने बाद
तोर प्राणे ना सहिबे श्रीरामेर वाण * पलाइया कोथाउ ना पाबे परित्राण
अमृत खाइया यदि ह'स रे अमर * तथापि रामेर वाणे मरिबि पामर
सोनार लंकार तरे तोर अहंकार * श्रीरामेर वाणानले हइबे अंगार
सागरेर गर्व्व ये करेस दुराचार * रामेर वाणेर तेजे सागर त छार
अतःपर दुष्ट आमि तोरे ब'लि हित * मोरे दिया राम सने करह पीरित
यदि श्रीरामेर संगे ना कर पीरिति * श्रीरामे: करे तोर नाहि अव्याहति
आमार सेवक तुइ कहिलि आपनि * सेवक हइया कोथा लंघे ठाकुरानी
जार पाय पड़ि, सेइ हय गुरुजन * पाये पड़ि ब'लिस् केन कुत्सित कुवचन
पितृसत्य पालिते रामेर वनवास * क्रोधे शाप दिले तांर हय सत्य-नाश

---

१ राम के बाण से २ बाण ३ अवज्ञा करता है ४ स्वामिनी की बात।

दो० केहि साहस दसकन्ध तैं, मम हित कहेसि कुबानि।
भञ्जहुँ तव बल-दर्प मैं रघुकुल भूषण-रानि॥ ३१॥

प्राननाथ मम रघुपति देवा * राम अनन्य सीय जनि सेवा
इमि जानकी प्रज्वलित नयना * कहत प्रकोपि रावनहिं बयना
पापी दनु दुर्मति दुष्कर्मा * कहँ रघुपति अपार गुणधर्मा
सीतल अमिय वचन भगवाना * परि तिन कोप विपक्ष नसाना
भानु-प्रताप अवध आसीना * अस्सी सहस नरेस अधीना
तेहि रघुवंश राम जग-प्राना * चौदह भुवन सृष्टि-भगवाना
सो मम पति शार्दूल[1] प्रमाना * तैं शृगाल पुनि श्वान समाना
रहि तव देस तदपि भय नाहीं * उदित राम मन मन्दिर माहीं
चहत पंगु तैं सागर लंघन * बामन बटुक सुधाकर परसन
सिंहिनि प्रति शृगाल मन आना * कतहुँ न धर्म न शास्त्र-विधाना
चन्दन-गंध सरोवर-पंका[2]! * कस विपरीत! सोचु उर-अंका
कमलनयन मम चन्दन-गंधा * पंक सरोवर तैं दसकन्धा
नखत निसाकर लखु अनुपाता[3] * तैं नछत्र, शशि राम विधाता
एक चन्द्र नभ अखिल प्रकासू * प्रभु पद-कञ्ज दशेन्दु[4] निवासू
दीपक बिन-सनेह[5] अवसाना * सरिता-तट-तरु जनि कल्याना

कि हेतु रावण, मोरे ब'लिस कुवाणी * तोर शक्ति भुलाइबि रामेर रमणी
राम मोर प्राणनाथ राम से देवता * राम विना अन्यजने नाहि जाने सीता
एत ब'लि सीतादेवी अग्नि हेन ज्वले * कोपे दुइ चक्षु रांगा रावणेर ब'ले
दुराचार राक्षस पापिष्ठ दुष्टमति * धरेन कतइ गुण मोर रघुपति
रामेर अमृत जिनि वचन शीतल * विपक्ष विनाशे जिनि महा कालानल
जिनिया सूर्य्येर तज अयोध्यार पाटे * आशी हाजार राजा जार पदतले खाटे
हेन वंशे जन्म मोर लभिला श्रीराम * चौद्द भुवनेर कर्त्ता संसारेर प्राण
शोन, रे रावण, मोर पति रघुमणि * तारे सिंह, शृगाल कुक्कुर तोरे गणि
तोर देशे थाकिया कि तोरे भय करि * जागेन हृदये मोर राम जटाधारी
पंगु हये चास् तुइ लंघिते सागर * वामन हइया चास् धरिते शशधर
शृगाल हइया चास् सिंहेर रमनी * कोन शास्त्रे कोन धर्म्मे कोथाउ ना शुनि
सरोवर पंक आर मृगन्धि चन्दने * कतह अन्तर तुइ भेवे देख मने
सरोवर पंक तुइ राजा दशानन * मृगन्धि चन्दन मोर कमल लोचन
चन्द्र ओ नक्षत्र देख कतेक अन्तर * तारा ह'ये ह'ते चास् चन्द्रेर सोसर
एक चन्द्र आलो करे गगनमण्डले * दश चन्द्र रहे राम चरण कमले
तैल विना यथा दीप कभु नाहि रय * नदीकूले वृक्ष यथा चिरस्थायी नय

१ सिंह २ तालाब का कीचड़ ३ तुलना ४ दश चन्द्रमा ५ तेल।

वसन अनल लहि, तिमि तव नासू * लंक धर्म बिन होय विनासू
दो० माखी कबहुँ न करि सकै कुलिश[1] पंख निज धारि।
तिमि समर्थ लंकेस जनि, निरखै जनकदुलारि॥ ३२॥
जनक-लली मैं सहज न नारी * जरै शाप-मम लंका सारी
हरेमि सहस दस तैं सुरबाला * प्रभु तोहिं बोरहिं सिन्धु कराला
वृथा गर्व-सागर बिच धामा * सागर स्वतः बँधेउ गुन-रामा
सायक बज्र चलत रघुनाथा * मनहुं अखिल सागर प्रभु-हाथा
परकेहु[2] बहु सुरपतिहिं सताई * प्रभु पहँ मृत्यु तोर नँगिचाई
काल भुजंग चोट तव खाई * किमि निचिन्त[3], दंशहि गृह आई
मरन निकट, तजु जीवन-आसा * सब विधि तव अविलम्ब विनासा
सिय सरोप दुर्वचन सुनाई * दसमुख-उर उधेर-बुन[4] छाई
आवत छन मैं प्रथम प्रकासा * सादर वर्ष एक सिय वासा
वत्सर हेतु दीन अवकासा * वर्ष मध्य बीते दस मासा
मास मात्र दुइ सहन निमेसू * अवधि विगत निर्बन्ध[5] न लेसू
कह सिय, तैं दुर्वचन उचारा * मम हित विनसहि, लिखी ललारा
तैं दनु, राम विष्णु अवतारा * गरुड़-काग करु भेद विचारा
कहाँ शुक्र[6] कहँ अमरितपाना * लौह स्वर्ण किमि एक समाना

वस्त्रे अग्नि बन्धे यथा मृत्यु आपानार * धर्म्म विना लंका तथा हबे छारखार
मक्षिका ना पारे कभु बज्र धरिवारे * रावण ना पारे कभु लइते सीतारे
जे से नारी नाहि आमि जनकझियारी * मोर शापे भस्म हबे स्वर्ण लंकापुरी
दश हाजार देव कन्या ह'रेछिस ब'ले * डुबावेन तोरे राम सागरेर जले
करिस् वृथाय गर्व्व सागरेर गड़ * राम गुणे बद्ध हबे स्वयं सागर
क्षेपण करिले बज्र-वाण रघुमणि * करिते पारेन शुद्ध सागरेर पाणि
इन्द्रेर निकटे तोर यत भारि भूरि * ए बार रामेर हाते जाबि यमपुरी
रावण भाविस् एइ यत दिन जाबे * घाँटाइलि कालसर्प, घरे आसि खाबे
मरण निकट छाड़ जीवनेर आश * अविलम्बे हइवेक तोर सर्व्वनाश
एत यदि सीतादेवी ब'लिलेन रोषे * मने सात पाँच भावे दशानन शेषे
आसिवार काले आमि ब'लेछि बचन * एक वर्ष जानकीर करिब पालन
वत्सरेर तरे तोरे दियाछि आश्वास * वत्सरेर मध्ये तोर जाय दशमास
सहिवेक आर दुइ मास दशस्कन्ध * दुइमास गेले तोर या' थाके निर्ब्बंध
जानकी ब'लेन, तइ बलिस कुत्सित * आमा लागि मरिवि रे दैवेर लिखित
विष्णु अवतार राम तुइ निशाचर * गरुड़े वायसे देख अनेक अन्तर
अनेक अन्तर देख काँजि सुधा पाने * अनेक अन्तर देख लोहा ओ काञ्चने

---

१ वज्र २ चोट लग गई है ३ निश्चिन्त ४ सोच विचार ५ बन्धन, रोक ६ सिरका।

कहँ द्विज श्रेष्ठ कहाँ चण्डाला * सिन्धु समान छुद्र किमि ताला[1]
राम सिंह तैं श्वान - शृगाला * एक अकास द्वितीय पताला

दो० मुनि अधीर, सिय तन कहत, नयनन बीस अँगार।
दुसह गर्व तव, आजु नहिं मोसन होय उबार ॥ ३२ ॥

दगन बीस चमकत नभ-तारा * कर दसकन्धर खड्ग सम्हारा
कालान्तक[2] सम रोष अपारा * काटहुँ सीस, हेरु निस्तारा
प्रखर खड्ग - दसभाल निहारी * कर उठाय सिय राम गोहारी
रच्छहु राम! रुदन बहु करही * नतरु निपच्छ - मीच[3] सिय मरही
देवर लखन अनुज - रघुनाथा! * मिलन, मरत-छन जनि तव साथा
वन अशोक रहि विधि अब बामा * जगत जानकी बूड़त नामा
चहत लंकपति! खड्ग प्रहारन * तौ मम विनय करिह उर धारन
प्रान जाहिं मोहिं मोह न प्राना * जग सिय - नाम लखत अवमाना[4]
विलमु[5] तिलेक[6] जबहिं लौं ध्याई * अरुन चरन बन्दहुँ रघुराई
बिन तिलार्द्ध आजीवन नाहीं * मरन काल ध्यावहुँ उर माहीं
राम ध्यान यदि प्रान नसाना * पुनि केहु जन्म वरहुं भगवाना
बूड़ि सिन्धु करि जीवन दाना * मरन - लालसा, मोह न प्राना
निश्चित मरन काल्हि नतु आजू * भल निज हाथ हनहि दनुराजू

अनेक अन्तर देख ब्राह्मण चण्डाले * अनेक अन्तर देख वारिनिधि खाले
श्रीराम हइते तोरे देखि बहुदूर * राम सिंह तोरे देखि शृगाल कुक्कुर
रावण अस्थिर हैल सीतार वचने * कुड़ि चक्षु राँगा कार चाहे सीता पाने
रावण ब'ले सीता तोर एत अहंकार * मोर ठाँइ आजि तोर नाहिक निस्तार
रावण लइल हाते खाण्डा एक धारा * कुड़ि चक्षु फिरे जेन आकाशेर तारा
कालान्तक यम सम रुषिल रावन * खाण्डाय काटिले माथा राखे कोन जन
रावणेर हाते सीता देखि खाण्डा खान * दुइ हात तुलि ब'ले रक्षा कर राम
उच्चैःस्वरे डाके सीता तुलि दुइ हात * अनाथा हइ। मरि राख रघुनाथ
देवर लक्ष्मण कोथा रामेर छोट भाइ * मृत्युकाले तव संगे देखा हैल नाइ
आजि हैते डुबे गेल जानकीर नाम * एत दिने अशोक वने विधि हैल वाम
सीता ब'ले यदि तुमि काट लंकेश्वर * आमार मिनति एक तोमार गोचर
प्राण जाय जाक् हाते किछु नाहि दाय * आजि हैते सीता नाम देखि डुबे जाय
तिलेक विलम्ब कर करि निवेदन * ध्यान करि श्रीरामेर रातुल चरन
तिलार्द्ध रहिते नारि रामचन्द्र विना * मृत्यु काले करि मने ताँहारि भावना
रामे ध्यान करि यदि जाय मोर प्रान * कोन जन्मे पुनराय पनि पाब राम
बाँचिवार साध नाइ निजे मरिताम * झाँप दिया सागरेते प्राण त्यजिताम
आजि कालि मार किवा एखन तखन * भाल हैल निज हस्ते काट् रे रावन

---

१ तालाब २ यम ३ अनाथों की मौत ४ अस्त ५ ठहरो ६ क्षण (तिल) भर।

अन्तयरी रघुपति प्रणिपाती * विनय, चोट इक[1] करहु निपाती
भजु तजि राम, सुमुखि ! दसभाला * नतरु उपस्थित सिय ! तव काला
मोहिं तव खड्ग न भय दसकंधर * राम दयामय ध्यान निरन्तर

दो० मौन, लचाये सीस सिय, रही धरनि तन हेरि ।
दनु समीप वनिता महस सैनन[2] रहीं तरेरि ॥ ३४ ॥

रामप्रियहिं पुनि भीति न लेसू * मन्दोदरि निन्दति लंकेसू
मनुजी[3] सहज, न सुर - गन्धर्वा * सिय-छबि तुमहिं लखति किमि सर्वा !
मदन - दग्ध नहिं दनुज सम्हारा * तजि असि[4] सिय बल धरन विचारा
चहुं दिसि चितवत काम विभोरा * कर धरि मंदोदरि झकझोरा
नल-कूबर, प्रभु ! शाप न ध्याना * विवस रमण करि विनसै प्राना
मन्दोदरी कहत करजोरी * यदपि न ज्ञान, सुनहु कछु मोरी
तजहु दया करि खंग भुवाला * मोहिं सिय-दान करहु यहि काला
जानि अजान बनत दशमाथा * जन्मे अवध विष्णु जग - नाथा
दशरथसुत त्रिभुवनपति रामा * स्वयं रमा सिय जन्म ललामा
वचन मदोदरि, सीय कलेसू * लखि किय खंग कोष[5] लंकेसू
भयेउ शिथिल सुनि रानि-प्रबोधा * चेरिन प्रति धायेउ करि क्रोधा
डपटि पुकारत दासिन नामा * धाय वेगि सब करहिं प्रनामा

प्राण गेले रामेर चरण तबु पाय * एक चाटे काट तुमि तोमार दोहाइ
रावण ब'ले, सीता एबे छाड़ राम नाम * मोरे भज नाहिले त हारावे पराग
सीता ब'ले खाण्डा देखि न करिव भय * छाड़िते नारिव आमि राम दयामय
एत ब'लि सीतादेवी करे हेट माथा * रावणेर संगे आर ना कहेन कथा
सहस्र कामिनी आछे रावणेर आडे * आड़े थाकि ताहरा सीतारे चक्षु ठारे
तबु भय नाहि पाय रामेर सुन्दरी * रावणेरे भर्त्से सेइकाले मन्दोदरी
देवता गन्धर्व नहे, जानिते मानुषी * कन बड़ देख प्रभु जानकी रूपसी
रावण सीतारे देखि कामे अचेतन * खाण्डा फेलि जाय बले धरिते तखन
काम मत्त चतुर्दिक् रावण नेहाले * मन्दोदरी हाते धरि ब'ले हेनकाले
नल कूबरेर शाप पासरिले मने * शृगार करिले ब'ले मरिबे पराने
पुन: ब'ले मन्दोदरी करि जोड हात * मूर्ख आमि मोर वाक्य राख प्राणनाथ
मोरे दया करि राजा त्यज खाण्डाखान * एबार जानकी माके मोरे देह दान
जानिया ना जान राजा राम गदाधरे * आपनि जन्मिला विष्णु अयोध्या नगरे
दशरथ गृहे विष्णु जन्मिला आपने * लक्ष्मी रूपे जन्मिलेन सीता ठाकुरानि
मन्दोदरी वाक्ये आर सीतार क्रन्दने * खाण्डा खान सम्बरिल राजा दशानने
नेउटिल दशानन रानीर प्रबोधे * मारिवारे चेड़िगणे जाय महाक्रोधे
चेड़ीगणे डाके से याहार जेइ नाम * द्रुत गिया चेड़ीगण करिल प्रणाम

१ एक चोट में प्राण लो २ संकेत से ३ मानवी ४ तलवार ५ मियान मे ।

दासिन कहत प्रकोपि दसानन * सिय समीप तुम सब केहि कारन
चेरी पुनि दसगुनी बढ़ाई * बन अशोक चौकसी कराई
त्रिजटादिकन डपटि समुझावा * सकल चेरि सिय तीर लगावा
निर्दय निठुर प्रभाषा आई * दुर्मुख सूर्पनखा तहँ धाई
दो० अश्वमुखी चित्तच्छमा बज्रधारि जे दासि।
प्रस्तुत सरमा निसिचरी, धर्म तिरजटा रासि ॥ ३५ ॥
चेरिन कान कहत दनुराई * भल अहिनिसि सीतहिं समुझाई
नेह दिखाय न नीरस वचना * अनुमति - सिय लीजिय केहु जतना
रानिन सहित गयेउ निज धामा * सुख पर्यंक करत विश्रामा
सिय जहँ चेरिन - जमघट छावा * गर्जि तर्जि पुनि लकुटि[1] उठावा
कृत्तिवास कबि मञ्जुल वानी * सुन्दरकाण्ड पुनीत कहानी

राक्षसियों द्वारा सीता-उत्पीड़न

किय तैनात लंकपति चेरी * सकल रहीं ते सीतहिं घेरी
सुनु सीता ! लंकेस समाना * जग न स्वामि गुनधाम लखाना
जीवन अल्प, स्वल्प धन रामा * चौयुग सासन - सुख दनुधामा
धन - जीवन जिन स्वल्प बखाना * मम पति कमलनयन भगवाना
सुनि सिय-कथन, क्रुद्ध सब चेरी * लकुटि-खंग कर, कहहिं तरेरी[2]

चेड़ीगणे कोप करि ब'ले दशानन * सीता पाश तोमा सबे राखि कि कारन
यत चेड़ी दिया छिल सीतार रक्षने * तार दशगुण दिल अशोक कानने
चेड़ी गणे कोप करि कहे दशानन * सीता ल'ये थाक् जित्रटादि चेड़ीगन
निर्द्दया निष्ठुरा एल प्रभाषा दुर्म्मुखा * पाइया सीतार वार्त्ता राणी शूर्पनखा
अश्वमुखी बज्रधारी एल चित्तक्षमा * धार्म्मिका त्रिजटा एल राक्षसी सरमा
कहिल रावण चेड़ी सकलेर काने * बुझाउ सीताय भालमते रात्रिदिने
रूक्षवाक्य ना ब'लिह, ब'लिह पीरिते * बुझाइया अनुमति लह भालमते
रानीगण संगे राजा गिया निज घर * पालंके शयन करे सुखे लंकेश्वर
हेथा सीता आगुलिया रहे यत चेड़ी * तर्ज्जन गर्ज्जन करे उठाइया बाड़ि
कृत्तिवास सुकवि कवित्व मधुर * पड़िले सुन्दरकाण्ड पाप हय दूर

सीतार प्रति चेड़ीगणेर उत्पीड़न

घरे गेल दशमुख ठेकाइया चेड़ी * सीतारे मारिते सबे करे हुड़ाहुड़ि
चेड़ी सब ब'ले सीता शुन हित वाणी * रावणेर मत गुणी ना पाइबे स्वामी
अल्पधन धरे राम अल्पइ जीवन * चौद्द युग राज्य भोग करिबे रावन
सीता ब'ले अल्पधन अत्यल्प जीवन * सेइ से आमार स्वामी कमललोचन
शुनिया सीतार कथा क्रुद्धा सब चेड़ी * कारो हाते खाण्डा आर कारो हाते बाड़ि

---

१ लाठी २ क्रोध से आँखें दिखा कर !

तव हित सहन करहिं सन्तापू ※ मब मिलि भच्छि नसावहिं तापू
धाईं पुनि सिय मारन हेतू ※ इत मन-मन सुमिरन रघुकेतू
विटप - ओट हनुमत सब लखहीं ※ चेरिन - बध विचार मन करहीं
नारी - बध उर पाप विचारी ※ दलहिं दनुज-दल अस हिय धारी
सोचत, प्रथम सकल सुनि बाता ※ करहिं निसचरिन सकल निपाता
बोलति निठुरा कहति प्रभाषा ※ सियहिं काटि पुरवहिं अभिलाषा

दो० एतक दीन्हीं सीख सो, सियहिं न तनिक सुहाति।
भच्छहिं मांस बिखण्ड करि, सब मिलि सीय निपाति ॥ ३६ ॥

सुनि उठि अश्वमुखी सम्भाषा ※ सुखकारी अति कथन - प्रभाषा
सूर्पनखा किय वचन प्रहारा ※ गर धरि नखन करहिं संहारा
छेदे लखन नासिका काना ※ तासु कोप तव नासहुँ प्राना
बज्रधारि पुनि पैग बढ़ावा ※ चाक सरिस धरि केस घुमावा
मारि नखोचहिं, काहु न कलेसू ※ फँसे प्रान, सिय रुदन विसेसू
वस्त्र सम्हार न केशन वेणी ※ शोकाकुल सिय लोटत धरणी
तरु ऊपर उत हनु बलवन्ता, ※ तरु तर मैथिल रुदन अनन्ता
मातु कौशिला कहँ भगवाना ? ※ दासिन कृत इत मम अपमाना
यदि लंका - आगम रघुनन्दन ※ सकुल होय दनुराज - निकन्दन

तोर लागि आमरा सकले दुःख पाइ ※ मिलिया सकल चेड़ी आज तोरे खाइ
सकले धाइया जाय सीतार निधने ※ श्रीराम स्मरण सीता करे मने मने
देखे शुने हनूमान थाकि वृक्ष आड़ ※ चेड़िगणे मारि' ब'लि मने तोल पाड़े
मने भावे नारी मारि करिब पातक ※ चेड़ीर बदले मारि राक्षस कटक
शुनि आगे सवाकार वाक्य अवसान ※ पिछे चेड़ी सकलेर बधिब परान
तखन निष्ठुर ब'ले प्रभाषा राक्षसी ※ काट तबे सीतार किसेर तरे तुषि
ना शुनिल सीता आमा सबार बचन ※ सीतारे काटिया मासे करिल भक्षन
भाल भाल ब'लिया उठिल अश्वमुखी ※ प्रभाषार कथा शुनि हैल बड़ सुखी
शूर्पनखा राँड़ी तबे हाने वाक्यबान ※ गले नख दिया तोर बधिब परान
लक्ष्मण काटिल जेइ मोर नाक कान ※ सेइ कोपे आजि तोर लइबे परान
आर चेड़ी एल तार नाम बज्रधारी ※ चलि धरि सीतारे से दिल चाक भाउरी
मारिते काटिते चाहे कारो नाहि व्यथा ※ प्राणे आर कत सबे कान्दिछेन सीता
वस्त्र ना सवरे सीता केश नाहि बांधे ※ शोकाकुला हये भूमे लोटाइया कान्दे
महावीर हनूमान आछे वृक्षडाले ※ रोदन करेन सीता सेइ वृक्षतले
कोथा गेले प्रभु राम कौशल्या शाशुड़ी ※ अपमान करे मोरे रावणेर चेड़ी
यदि हय लंकाय रामेर आगमन ※ सवंशे निर्व्वंश हय राक्षसेर गन

सहेउँ दुसह दुख, जो सुनि पावैं * प्रभु - सायक यह लंक नसावैं
यहि छन अन्तरिच्छ जो बसई * मम दुख जाय राम सन कहई
दृग जल झरत, न लेस विरामा * आवहिं लंक विनासहिं रामा
जम्बुक[1]-श्वान-गृद्ध सब आई * दनुज - मांस जेवहिं[2] रुचि पाई
शाप - मैथिली लंक - विनासू * सुन्दरकाण्ड रचेउ कृतिवासू

सीता-त्रिजटा-संवाद

त्रिजटा कहति, लंकपति मानी * सिय ! पद लहहु लंक - पटरानी
त्रिजटा कस अनरीति तुम्हारी * प्राननाथ केहि भाँति बिसारी

दो० आभूषन पटरानि - पद, कहु त्रिजटा केहि काम।
जन्म-जन्म के पुण्यफल, पति पायेउँ मैं राम ॥
ताम्रपात्र जल-जाह्नवी[3] तिल तुलसी लै हाथ।
बाल्यकाल पितु दान करि मोहिं अर्पेउ रघुनाथ ॥ ३७ ॥

केवल राम अन्य नहिं सपना * अहिनिसि रुदन न पुनि विस्मरना
इमि तव सीख मोहिं जनि भावै * ताड़न तजि मुख राम सुनावै
दासी करुणवचन - सिय सुनहीं * निसि - प्रमाद आलस महँ परहीं
चर्चति बहु तन्द्रा तिन छाई * भूमि - भूमि सुख निद्रा आई

त्रिजटा का स्वप्न-वर्णन

रैन तिर्जटहिं सपन सतावा * दासिन निकट जगाय बुलावा

एत दुःख पाइ यदि शुनितेन चाने * लकापुरी खान खान कारतेन वाने
हेनकाले अन्तरीक्षे थाक यदि चर * मोर दुःख कह गिया श्रीराम गोचर
आमार चक्षुर जल नाहिक विराम * ए लकार सर्व्वनाश करुन श्रीराम
गृधिनी शकुनि तुष्ट हउक आकाश * शृगाले कुक्कुर तृप्त राक्षसेर मांस
जानकीर शापे हब लंकार विनाश * रचिला सुन्दरकाण्ड कवि कृत्तिवास

सीता त्रिजटा सम्बाद

त्रिजटा ब'लेन सीता शुन मोर वाणी * रावण भजिया हउ लंकार पाटराणी
सीता ब'ल त्रिजटा कि ब'लह आमारे * केमने छाड़िते ब'ल प्राण रघुवरे
पाटराणीर आभरणे मोर काज कि * कत पुण्य फले राम पति पेयेछि
ताम्रपात्रे गंगा जले तिल तुलसी हाते * बाल्यकाले पिता मोरे सँपे राम हाते
राम विना आर मोर आछे कोन जना * रात्रि दिन केंदे मरि ना घुचे भावना
एइ कथा छेंड़े चेड़िगो, दाण्डाउ विद्यमान * बेतरवाणिफेले एकबारिशुनाउरामेरनाम
सीतार करुणा शुनि यत चेड़ीगन * घुमे ढुलु ढुलु आँखि निद्राय मगन
त्रिजटा कतक रात्रे स्वप्न देखि उठे * चेड़ी गणे डाकि निल आपन निकटे

चेड़ीगण समीपे त्रिजटा राक्षसीर दुःस्वप्न वृत्तान्त कथन

त्रिजटा राक्षसी रात्री जागिते ना पारे * दुःस्वप्न देखिया बुड़ि उठिल सत्वरे

---

१ गीदड़ २ भक्षण करें ३ गंगाजल।

उचटी नींद तिरजटा जागी * निसि दुःस्वपन विचारन लागी
शैया बैठि शोच उर कीन्हा * चेरिन यत सिय पीड़न दीन्हा
त्रिजटा कहत, राम सिय रमनी * मारैं ताहि मरै निज करनी
सिय कलेस निश्चित अवसाना[1] * सपन सुनहु जेहि भाँति विधाना[2]
तजि सिय सकल तिरजटा पासा * जाय सपन सुनि उपजेउ त्रासा
चेरिन कहेउ इकान्त बुलाई * सुमिरि सपन मम जीवन जाई
कुसपन आजु निसा मैं देखा * मर्कट[3] लंक प्रवेस विशेषा
प्रथम कपिन्द बलिस्त प्रमाना * आय सीय-पद दिय सन्माना
सीतहिं चर्चि भीम तन धारा * बन-रसाल भञ्जेउ पुनि मारा
सागर लंघि लंक किय छारा * संहारेसि कपि अक्षयकुमारा
जरठा[4] रक्तबमन-युत कारी[5] * सो रावन-गर फँसरी[6] डारी

दो० लंकदाह, हनि दानवन, कुम्भकर्ण-मुख कार।
स-धनु बन्धु दोउ सीय लै, पुष्पक भये सवार ॥ ३८ ॥

देखेउँ सपन, न तेहि निस्तारा * लंका अवशि होय संहारा
कहि निसचरि पुनि नींद विभोरा * सीय-रुदन तरु-तर अति घोरा
कपि तरु-डार हर्ष अतिरेका * सपन प्रतच्छ करहुँ दिन एका
त्रिजटा-सपन सत्य, कृतिवासा * बरनेउ दसमुख सकुल विनासा

शय्याय बसिया बुड़ी दुःख पाय मने * सीतारे बेड़िया मारे यत चेड़ीगने
त्रिजटा ब'लेन सीता रामेर रमणी * सीतारे जे मारे सेइ मरिबे आपनी
हइल सीतार बुझि दुःख अवसान * स्वप्न शुनिवारे सबे एस मोर स्थान
सीता एड़ि गेल सबे त्रिजटार पास * त्रिजटा कहिछे स्वप्न शुनि लागे त्रास
निभृते त्रिजटा डाकि ब'ले चेड़ीगन * स्वप्न देखि आजि मोर उड़िल जीवन
दुष्ट स्वप्न देखि आजि निशिर भितरे * लंकाय आसिल येन मर्कट वानरे
प्रथमे आसिल कपि विघत प्रमान * प्रणाम करिल आसि सीता विद्यमान
सीता संभाषिया कपि भीम मूर्ति धरे * आम्रवन भांगि मारे अक्षयकुमारे
सागर लंघिया वीर एल शीघ्र करि * पोड़ाइया भस्मराशि कैल लंकापुरी
रक्त वस्त्र परिधाना काली हेन बुड़ि * रावणेर पाड़े तार गले दिया दड़ि
देय कुम्भकर्णेर मुखेते कालीचून * लंका दाह हय आर राक्षसेरा खून
श्रीराम लक्ष्मण देखि धनुर्व्वाण हाते * सीता उद्धारिया जाय चड़ि पुष्परथे
ये स्वप्न देखिनु, ताहे नाहिक निस्तार * पड़िबेक अवश्य लंकाय महामार
त्रिजटा एतेक ब'लि घूमे अचेतन * एक सीता वृक्ष तले करेन क्रन्दन
शुनिया वृक्षेर शाखे हनूमान हासे * प्रत्यक्ष कराब स्वप्न एकइ दिवसे
त्रिजटार स्वप्न सत्य कहे कृत्तिवास * रावणेर हबे शीघ्र सवंशे विनाश

१ समाप्त २ होनहार ३ बन्दर ४ बूढ़ी ५ काले रंग की ६ फाँसी।

सीता-सरमा संवाद

तहँ निसचरि सरमा गुनखानी * सिय सों सदा प्रीति रससानी
एक मात्र सरमा यह नारी * जो न लंक सीतहिं दुखकारी
भगिनी मम सरमा पुनि सीता * कहहिं परस्पर दुःख अतीता[1]
सरमा सुनत क्लेश - वैदेही * बहु एकान्त सान्त्वना[2] देही
हे प्रिय सखी ! कहति पुनि सीता * सहेउँ राम-पद-हित दुख केता
धौं विरंचि मोहिं करैं सुखारी * राम संग पुनि अवध निहारी
दीदी ! दरस लहौं पुनि रामा ! * राम - रानि ह्वै निवसउँ वामा
पर्णकुटी कहँ कुटी ललामा * देवर लखन कितै गुणधामा
हे प्रिय, कतहुँ न विधि[3] अनुकूला * लिखेउ ललार सकल प्रतिकूला
केहु न हानि सब कर कल्याना * किमि मम कुगति कीन भगवाना
दुख पर दुःख-गाज कहुँ डारो * सुख पर सुख कहुँ, प्रभु ! बिस्तारो
सुख सरसति जहँ तहँ सुख-सागर * दै छीनत किमि 'राम' गुनागर

दो० सीता - राम न भिन्न कहुँ, एक एक महँ लीन ।
तिन बिछोह किमि दुसह दुख आजु विधाता दीन ॥ ३९ ॥

मैं करि साध न धारेउँ हारा * अन्तस हार राम-छवि धारा
जिन प्रभु हेतु न धारेउँ हारा * विधि तिन कीन सिंधु के पारा

सीता ओ सरमार कथोपकथन

सरमा राक्षसी बटे महागुणवती * सीतार सहित तार परम पीरिति
लंकार सीतार नाहि दुःखेर भगिनी * एकमात्र छिल सइ सरमा रमनी
सीता ओ सरमा जेन दुइटि भगिनी * उभये कहित कत दुःखेर काहिनी
सीतार दुःखेर कथा सरमा शुनिले * सरमा सान्त्वना दित बसिया बिरले
सीता कन शुन मोर सरमा भगिनी * आर कि पाइब राम-चरण दुखानि
आर कि सरमा दिदि हेन भाग्य पाब * श्रीरामेर संगे आमि अयोध्याय जाब
आर कि हेरिब चक्षे राम रघुमणि * आर कि रामेर बामे हब पाटराणी
कुटीर रहिल कोथा पत्रेर छाउनी * देवर लक्ष्मण कोथा सेइ गुण मनि
विषम कठिन विधि देखि तव मन * आमार कपाले कैलि एमन लिखन
कारो मन्द नाहि करि सबे करि भाल * तबे केन अभागीर हेन दशा ह'ल
दुःखेर उपरे कारे दाउ विधि दुःख * सुखेर उपरे कारे दाउ तुमि सुख
यारे सुख दाउ, भासे से सुख सागरे * रामनिधि दिया पुनः केड़े निले तारे
राम सीता एक वस्तु भिन्न नहे कभु * भिन्न करि कलि आज निदारुण विभु
साध करि गले हार ना परिनु आमि * हार अन्तराले पाछे रन रघुमणि
ताइ आमि भये भये ना परिनु हार * सेइ रामे राखे विधि सागरेर पार

---

१ अतिशय २ धीरज ३ प्रारब्ध ।

किमि दारुन दुख सकहिं बिसारी * बृथा जन्म लिय जनकदुलारी
चेरी मोहिं ताड़हिं बहु रूपा * कब लौं सहौं कलेस अनूपा
उत्पीड़हिं दासीगन घोरा * भजे न प्रान, जलधि चहुँ ओरा
सरमा निरखि अतुल सिय-तापा * बहु समुझाय हरति संतापा
राम पदुम-दृग विष्णु बखानी * सिय जग विदित रमा ठकुरानी
भिन्न न राम-रमापति एका * उभय मिलन द्रुत[1], जनि अतिरेका[2]
सुलभ न फल बिन अवसर आये * अवसर लहत सिद्धि पछुआये[3]
प्रबल दैव, पुरुषार्थ कहाये * सोऊ व्यर्थ काल बिन पाये
पौरुष, दैव, काल मिलि तीनी * कारज सिद्धि सुनिश्चित कीनी
बिन्दु बिन्दु तव दृग जलधारा * बरसत मनहुँ ज्वलंत अँगारा
सुबरन लंक दहै यह आगी * अमिट वचन मम, सुनु बड़भागी
थोरी शेष, बीति बहु आई * दुख सम्हारु, नतु हिया सुखाई
सरमा सती - वचन सुनि काना * यहि विधि सीता कीन बखाना
जो मैं रमा, धन्य तैं सरमा * अनुपम नाम धन्य तव सुषमा

दो० रमा-संगिनी, सीय हित, सुषमा जासु अनन्य ।
धन्य मातु-पितु जिन धरेउ, सरमा नाम सुधन्य ॥

एमन दारुण दुःख केमने पासरि * वृथा मोर जन्म वृथा जनकझियारी
आमारे बेतेर बाड़ि मारे चेड़ीगण * ए दुःखे सीतार प्राण बाँचे कत क्षण
सदाइ मारिते आसे राक्षसीर दल * पलाइते मने करि चतुर्द्दिके जल
एतेक ब'लिया सीता करेन क्रन्दन * सरमा सीता के कहे प्रबोध वचन
कमललोचन राम देव नारायन * सीता लक्ष्मी ठाकुराणी आने त्रिभुवन
लक्ष्मी नारायण कभु भिन्न नाहि रबे * अविलम्बे उभयेर मिलन हइबे
काल पूर्ण हइलेइ कार्य्य सिद्धि हय * काल पूर्ण ना हइले नहे फलोदय
सत्य बटे दैव ओ पुरुषकार बल * किन्तु एइ दु'ये काज ना हय सफल
कालपूर्ण हइया चाइ तादेर सहित * ए तिन मिलिले कार्य्यसिद्धि सुनिश्चित
एक एक बिन्दु तव नयनेर जल * किरितेछे ठिक येन ज्वलन्त अनल
ए अनले दहिवेक स्वर्ण लंकापुरी * मने रेखे दिउ सीता विशेष विचारि
बहु काल गेल सीता अल्पकाल आछे * क्रन्दन संवर सीता हिया शुकाय पाछे
सरमा सतीर वाक्य करिया श्रवन * सीतादेवी एइ कथा ब'लेन तखन
आमि रमा यदि हइ तुमि हे सरमा * सार्थक तोमार नामे देखि ये सुषमा
धन्य तव पिता माता बुझिनु एखन * राखिल 'सरमा' नाम आमारि कारन

१ जल्दी हो २ अतिशयोक्ति ३ पीछे चलती है ।

दो० धरति शीस कर जानकी, तजति दीर्घ निश्वास।
सिय के दुख उपवन दुखी, खग - मृग सकल उदास॥
सरमा-सीख सुहावनी, सिय-उर सीतल कीन।
सुन्दरकाण्ड अनूप इमि कृत्तिवास रचि दीन॥४०॥

सीता सहित हनुमान-साक्षात्

सिय तजि धाम गईं सब चेरी * सीय - दरस - अवसर कपि हेरी
चढ़े विटप निरखत हनुमाना * पहुँचें सिय समीप, अनुमाना
तरु-तर सिय, हनुमत तरु-डारी * करहिं बात किमि मनहिं विचारी
डरपहि कतहुँ न लखि वैदेही * उतरन - विटप न कपि मन देही
तदपि सीय बिन मिले न त्राना * होयँ निराश राम भगवाना
ऊँच नीच बहु भाँति विचारी * राम कथा हनुमत विस्तारी
राम सुमिरि सिय रुदन अपारा * कथा पवनसुत राम प्रसारा
तरु सों पुनि पुनि 'राम' बखाना * राम-नाम सिय अचरज काना
राम-नाम मधु को सरसाई * देय सतत[1] उर सीतलताई
चहौं दरस जेहि मुख हरिनामा * निठुर लंक किमि अनुचर-रामा
कहँ तुम वत्स! लखत मोहिं बाहीं * मनहुँ दरस पाये प्रभु पाहीं
प्रस्तुत ह्वै मारुति बलधामा * तबहिं कीन अष्टांग प्रनामा

माथे हात दिया सीता छाडिला निश्वास * सीतार क्रन्दने पशुपक्षि मने ह्रास
क्रन्दन संवरे सीता सरमा वचने * सुन्दर सुन्दरकाण्ड कृत्तिवास भने

सीतार सहित हनुमानेर साक्षात्कार ओ आत्म परिचय प्रदान

हनुमान देखे, तबे चेडी घर गेल * सीता सम्भाषिते मोरे एइ बेला हैल
वृक्ष हैते एइ सब देखे हनुमान * एइबार जाब सीता मार विद्यमान
वृक्षशाखे हनुमान, सीता भूमितले * कि बलिया सम्भाषिब मने युक्ति तुले
ब'लिते रामेर दूत ना हय वासना * मोर तरे ह'ते पारे सीतार यन्त्रना
तबेत सकल कार्य्य हइबे विनाश * असम्भाषे गेले हबे श्रीराम निराश
सात पाँच हनुमान भावेन आपनि * आपना आपनि कहे श्रीराम काहिनी
श्रीराम ब'लिया सीता करेन क्रन्दन * श्रीरामेर कथा कहे पवननन्दन
वृक्ष हैते राम ब'लि डाके घने घने * अचम्बिते राम नाम बाजे सीतार काने
सीता ब'ले के शुनाले मधुर राम नाम * जुड़ाउ रामेर नामे कान अविराम
ये शुनाले राम नाम एक बार देखा दे * निष्ठुर लकाय रामेर हेन भक्त के
कोथा हैते आलि बाछा नाहि जानि आमि * बोध हय रामचन्द्रे देखियाछ तुमि
देखिते देखिते एल वीर हनुमान * अष्टांग लोटाये वीर करिल प्रणाम

१ निरंतर।

कपि लखि उर विस्मित वैदेही * चीन्हहुँ जनि, तुम कवन सनेही
दसमुख-प्रेरित[1] धौं ; छलरूपा * उर ससंक लखि रूप अनूपा
मोहिं भरमावत धरि कपि रूपा * मम अकाज हित कृम्य[2] सरूपा
कपि तजि, मातु! न मैं कछु आना[3] * तनय-समीर[4] नाम हनुमाना

दो० राम कृपानिधि कृपा करि कीन मोहिं निज दास।
भृत्य-राम, निसिचर न मैं, सुनउ मातु! अरदास[5] ॥
तुम जननी, मैं सुवन तव, धरौ माथ निज हाथ।
पवनतनय हनुमान मैं, दास राम रघुनाथ ॥ ४१ ॥

'राम-दास' सुनि कौतुक छावा * सियहि कथन विश्वास न आवा
जो तुम रामभक्त हनुमाना * देहु सुपरिचय सहित प्रमाना
हनुमत अतुल भक्ति रससाने * राम-सुयश तत्-छनहिं बखाने
यज्ञ-दान-रत दशरथ राजा * सुर-नर पूजत सकल समाजा
राम जेठ सुत, सिय तिन भामा * हरन कीन रावन दुष्कामा
कानन भ्रमत विरह सिय हेतू * भई मिताइ[6] राम-कपिकेतू[7]
वृत्त[8] राम मैं सकल सुनाई * सुत मैं तोर, निरखु मोहि माई
सीस उठाय नयन तर आना * सीय लखत कपि वित्त-प्रमाना[9]
दरस परस्पर दोउ जन कीन्हा * कपि कर जोरि नाय सिर दीन्हा

कपि देखि सीतार विस्मित हैल मन * चिनिते ना पारि बाछा तुमि कोन जन
देखिया तोमार मूर्ति हइनु कातर * छल करि पाठाइल बुझि लकेश्वर
एले कपि रूप धरि भुलावार तरे * मरिवार तरे कपि आइले ए धारे
हनू बले आमि कपि नाहि अन्यजन * नाम मोर हनूमान पवननन्दन
निजगुणे कृपा करि भृत्य कला राम * आमि तार भृत्य मोर नाम हनूमान
निशाचर नहि आमि माथाय दाउ मा * आमि तोमार प्रिय पुत्र तुमि आमार मा
सीता बलेकि ब'लिले रामर भृत्य तुमि * केमने कहिब कथा प्रत्यय ना जाइ आमि
तुमि यदि रामेर सवक हनूमान * तार परिचय दाउ मोर विद्यमान
सत्वर हइया हनू महाभक्ति भरे * श्रीरामेर परिचय दिलेन सीतारे
यज्ञशील दानशील दशरथ राजा * देवलोक नरलाक सबे करे पूजा
ज्येष्ठ पुत्र राम तार बधू सीता सती * हरण करिल तारे रावण दुर्म्मति
कानने भ्रमेन राम सीता अन्वेषणे * सुग्रीवेर सहमैत्री करिलेन बने
से रामेर वृत्तान्त तामार जाय ब'ला * माला तुलि देख मागो सेवक वत्सला
माथा तुलि सीता दवो सम्मुखे नेहारे * विघत प्रमान कपि देखेन गोचरे
सीता हनूमान दोंहे हैल दरशन * जोड़ हाते नमे तारे पवननन्दन

१ रावण के भेजे हुये २ भेष बदला हुआ, बहुरूपिया ३ अन्य ४ पवन-पुत्र ५ प्रार्थना ६ मित्रता ७ राम और सुग्रीव में ८ वृत्तांत ९ बालिश्त बराबर।

विधि मम वाम कहत वैदेही * रावन - चर भरमावत मोहीं
माया बहु जानत लंकेसू * लखत लंकपति तुम कपिवेसू
विगत मास दस शोक-उपासू * किमि मम करत नित्य उपहासू
जो तुम साँचु दूत - श्रीरामा * मम वर होहु अमर बलधामा
अस्त्रघात जनि पावक[1] जारी * रन - वन उमा करैं रखवारी
सुत तव कण्ठ सरस्वति राजै * जहाँ जाव तहँ सिद्धि विराजै
कपि कहु नाम कवन तव देसू * इत केहि हेतु कवन आदेसू

दो० कुशल मिली जनि, विगत दिन, जो तैं चर-प्रभु राम।
मम हित दुर्बल नाथ, तिन वरनहु कथा ललाम ॥ ४२ ॥

मारुति कहत राम गुनधामा * रूप - धर्म सर्वांग ललामा
गात प्रकाण्ड यथा तरु शाला * बाहु अजानु सुनाभि विशाला
नासा तिल, सुप्रशस्त ललाटा * फलाहार बल - वीर्य विराटा
गति मतंग दूर्वादल श्यामा * मदन जीति छबि भुवन ललामा
कौतुक धनु-समर्थ बल-वेशा * सुमनित[2] चञ्चल कुञ्चित केशा
'हा सीते' कहि रुदन, न धीरा * अनुज लखन तिन गौर शरीरा
उमड़ शोक सिय रुदन अतीता * सुत अब मोंहिं तव भई प्रतीता[3]

जानकी बलेन विधि विगुण आमाय * रावणेर दूत बूझि आमारे भुलाय
नानाविध माया जाने पापिष्ठ रावण * वानर रूपेते बुझि करे सम्भाषण
दश मास करि आमि शोके उपवास * मम संगे कि लागिया कर उपहास
स्वरूपेते हउ यदि श्रीरामेर चर * आमार वरेते तुमि हइबे अमर
अग्निते पुड़िबे नाहि अस्त्रे न मरिबे * रणे वने तव रक्षा शंकरी करिबे
तव कण्ठे सरस्वती होन अधिष्ठान * येखाने सेखाने जाउ सर्व्वत्र समान
वानर कि नाम धर थाक कोन देशे * कि हेतु आइले हेथा काहार आदेशे
बहुदिन श्री रामेर ना जानि कुशल * आमार लागिया प्रभु आछेन दुर्व्बल
हइबे रामेर दूत हेन अनुमानि * तव मुखे शुनिलाम प्रभुर काहिनि
हनूमान ब'ले, राम गुणेर सागर * आकृति प्रकृति किवा सर्व्वांग सुन्दर
शालवृक्ष जिनि तांर प्रकाण्ड शरीर * आजानु लम्बित बाहु नाभि सुगभीर
तिलफुल जिनि नासा सुदृश्य कपाल * फल मूल खान तबु विक्रमे विशाल
दूर्व्वादल श्याम राम गजेन्द्र गमन * कन्दर्प जिनिया रूप भुवनमोहन
विचित्र धनुक तांर ताहे देन चड़ा * चाँचर केशे चिकुर होन पुष्पलता बेड़ा
हा सीता हा सीता ब'लि करेन क्रन्दन * गौर वर्ण श्रीरामेर अनुज लक्ष्मन
एत शुनि जानकीर बाड़िल क्रन्दन * एत क्षणे बाछा मोर प्रत्यय हैल मन

१ अग्नि २ फूलों मे सजे हुये ३ विश्वास।

राम सकल-गति नाथ-अनाथा * बरनि सकति को गुन-रघुनाथा
राम भक्त हे, सुनु हनुमाना * कमलनयन कहु किमि भगवाना
केहि विधि समय कटत रघुनाथा * बिलमि[1] सुनहुँ तिन मंगल गाथा
देवर लखन सुमित्रा - प्राना * प्रथम कुशल तिन कहु हनुमाना
पञ्चबटी मैं कहे कुवचना * सुनहुँ कथा तिन, मोहिं उचित ना
मम दुर्वचन गये बनदेसू * सूने मोहिं हरेउ लंकेसू
सुनि सिय-वचन कहेउ हनुमाना * बरनहुँ कथा विशेष प्रमाना
उपवन लखेउ कनक मृग सुन्दर * दनु मरीच सो रावन-अनुचर
तेहि अखेट[2] रघुबीर पयाना * प्रभुमर दनुज हरे पुनि प्राना

दो० मानि दुर्वचन तव लखन, चले जहाँ रघुनाथ।
लहि सूने उपवन तुमहिं हरन कीन दशमाथ ॥ ४३ ॥

पञ्च कीस हम रहि गिरि-मूका * छिन्न वसन तहँ गिरत बिलोका
छिन्न वसन रघुपति ढिग धारा * लखन-राम किय रुदन अपारा
भूमि बिलोटत खात पछारा * दै प्रबोध सुग्रीव सम्हारा
किय सुकण्ठ प्रन सिय-उद्धारा * एवज[3] राम तेहिं शासन - भारा
जुरेउ कटक-कपि नृप-आदेसू * गमनेउ चहुँ दिस तव उद्देसू[4]

अनाथेर नाथ राम सकलेर गति * कहिते ताँहार गुण काहार शकति
रामेर सेवक बटे बाछा हनूमान * केमन आछेन मोर कमलनयन
केमने वञ्चेन काल राम गुणमणि * रामेर मंगल पिछे शुनिब से आमि
आगे एक वार्ता हनू सुधाइ तव काछे * सुमित्रार प्राण देवर लक्ष्मण केमन आछे
देवरेर कथा आमि ना शुनिनु काने * दुष्ट कथा कहिलाम पंचवटी वने
दुष्ट कथा शुनि देवर एका राखि गेल * शून्य घर देखि रावण हरिया आनिल
सीतावाक्य शुनि पुनः कहे हनूमान * विशेषिया कहि माता कर अवधान
आपनि ये स्वर्णमृग देखिला सुन्दर * राक्षस मारीच सेइ रावणेर चर
ताहाके मारिते राम करेन प्रयाण * श्रीरामेर बाणेते से हाराइल प्राण
तोमार दुर्व्वाक्ये घर छाड़िल लक्ष्मण * शून्य घर पेये तोमा हरिल रावण
पर्व्वत शिखरे छिनु मोरा पञ्चजन * छिन्न वस्त्र अकस्मात् पड़िल तखन
राम हस्ते छिन्न वस्त्र करिनु अर्पण * बहु कान्दिलेन राम कान्दिला लक्ष्मण
आछाड़ खाइया राम लोटान भूतले * सुहृद सुग्रीव ताँरे आश्वासिया तोले
करिल सुग्रीव सत्य तोमा उद्धारिते * राजत्व दिलेन ताँरे श्रीराम त्वरित
आइल वानर सर्व्व सुग्रीव आश्वासे * चतुर्द्दिके गेल सबे तोमार उद्देशे

१ कुछ ठहर कर २ शिकार हेतु ३ बदले में ४ खोज में।

मास - अवधि कपिनाथ बताई * बीते अवधि न कोहु कुसलाई
प्रविसि पताल घोर तम - देसू[1] * जहँ लखि मरन उपाय न होसू
गरुड़ - तनय खगपति सम्पाती * सो तव बरनन किय बहुभाँती
गिरि ऊपर निवसत खगनाथा * उगे पंख सुनि रघुपति-गाथा
दुस्तर सिन्धु तरेउँ तेहि वचना * देखी लंक सकल इत रचना
दसमुख दूत न मैं भय - हेतू * मातु ! समुझु मोहिं चर-रघुकेतू
जनि प्रतीत, सुनि संक निवारौ * राम - मुद्रिका चीन्ह निहारौ
सियजननी ! मम करु विश्वासू * असत न कहत राम कर दासू
राम - सीय प्रति भक्ति अगाधा * मैं हनुमत मेटौं तव बाधा
सदा राम-सिय पद मदहोसू[2] * कीजिय मम बल-बुद्धि भरोसू
कर - हनुमन्त[3] मातु उद्धारा * कृत्तिवास हनु-कथा प्रसारा

सीता द्वारा आत्मपरिचय

दो० निज परिचय कहि सीय सों, पुनि पूँछत हनुमान ।
नाम, ग्राम, पितु, श्वसुर निज कीजिय सकल बखान ॥
पद्मपत्र - जल चपल सम नयन युगल छबिधाम ।
राम नाम सुनि रुदन अति कहु तुम्हार को राम ॥ ४४ ॥

आसिते मासेर मध्ये राजार नियम * मासेर अधिक हैले हबे व्यतिक्रम
पाताले प्रवेश करि महा अन्धकार * मने हैल कपि सब मरिल एबार
सम्पाति नामेते पक्षी गरुड़नन्दन * तार मुखे शुनिलाम तव विवरण
पर्व्वतर उपरे ताहार पाइ देखा * राम नाम ब'लिते ताहार उठे पाखा
तार वाक्ये लंघिलाम दुस्तर सागर * लंकार सकल स्थान हइल गोचर
रावणेर चर ब'लि ना करिह भय * स्वरूपे रामेर दूत जानिह निश्चय
आमार वचने यदि ना हय प्रत्यय * रामेर अंगुरी देख घुचिबे सशय
ओ मा सीता हनू वाक्ये कर मा विश्वास * हनू ना कहिबे मिथ्या हनू रामदास
हनूर अचला भक्ति राम सीता प्रति * हनू हैते खण्डिबेक तोमार दुर्गति
हनू तव बल बुद्धि भरसार स्थल * राम सीता लागि हनू हइल पागल
हनूह करिबे मागो तोमार उद्धार * मारुतिर कथा कृत्तिवास ब'ले सार

हनूमानेर निकटे सीतार आत्म-परिचय प्रदान

हनूमान ब'ले शुन माता ठाकुरानि * परिचय दिनु आमि तोमारे ना चिनि
निज परिचय दाउ तोमार नाम कि * कोन राजार बधु तुमि कोन राजार झि
पद्मपत्रे जल यथा करे टल टल * सेरूप तोमार मागो नयन युगल
शीघ्र करि जननि गो परिचय दे * रामनाम शुनि कान्द राम तोमार के

---

१ अंधकारमय देश २ विह्वल ३ हनुमान के हाथों ।

छं० जनकनन्दिनी, कनकधाम जहँ मिथिला पुरी ललामा।
कुलकलंकिनी अधम अभागिन, मोर जानकी नामा॥
अतुल तेज बल दशरथ भूपति श्वसुर अवध मम धामा।
मिथिला जाय शंभुधनु भंजेउ बरन कीन मम रामा॥
अवध-अधीश्वर प्राननाथ वर कबहुँ न सुख संचारा।
राम विछोह निरन्तर कलपत विधि विपरीत ललारा॥
सुनु हनुमान, राम बिन तिलहुँ, रघुपति प्रान अधारा।
जहाँ राम लै चलहु कीस तव सीस एक यह भारा॥
दीन हीन मोहिं दिवस दिखावै अवध दरस लहि पाई।
राम अवधपति वाम अंक पटरानि सुरूप सुहाई॥
मारि लंकपति मोर निवारन जो समर्थ कपिराई।
अवधरानि ह्वै, तनय सरिस तैं, लेहुँ अंक उरलाई॥

अंगूठी संवाद

पवनतनय सुनि सिय परितोषा * मृदुल बचन तब मातु भरोसा
मम पहँ चिह्न एक बैदेही * कर महँ राम-मुद्रिका लेही
कौतुक सुनि मुद्रिका अपास * पवनतनय तन हाथ पसारा
लीन अँगूठी भई सनाथा * लहे अभागिनि जिमि रघुनाथा

एत शुनि जानकीर उथले आगुन्ति * आमिछार जन्मियाछि बड़ अभागिनि
मिथिला बसति, जनक नृपति, काञ्चन रचित धाम।
ताँहार नन्दिनी, कुलकलंकिनी, जानकी आमार नाम॥
दशरथ राजा, बले महातेजा, तार वधू बटे आमि।
मिथिला जाइया, धनुक भाँगिया, विभा कैला रघुमणि॥
मोर प्राणवर, अयोध्या-ईश्वर, सुखेर अवधि नाइ।
विधि हैला वाम, छाड़ि हेन राम, कांदितेछि सर्व्वदाइ॥
शुन हनूमान, कर एइ काम, ल'ये जाउ यथा राम।
रामेर विहने, म'रे आछि प्राणे, कांदितेछि अविराम॥
आमि दीन हीन, हबे हेन दिन, अयोध्या जाइब आमि।
गिया अयोध्याते, रघुनाथ साथे, वामे हब पाटराणी॥
रावणे वधिया, आमारे लइया, येते यदि पार तुमि।
राणी हबार काले, पुत्र ब'लि कोले, तोमारे लइब आमि॥

अंगुरी-संवाद

हनूमान ब'ले किवा ब'ल ठाकुरानि * भरसा तोमार मागी चरण दुखानि
एकटि निशाने आछे जनकझियारी * हात पाति लह माता रामेर अंगुरी
अंगुरीर नाम शुनि जानकी तत्पर * निदर्शन दिल हाते पवनकोडेर
अंगुरी देखिया सीता तुलि दुटि हात * अभागिनी ब'ले मने आछे रघुनाथ

मुँदरी लाय दीन हनुमाना * अंगुस्तरी[1] मनौ मम प्राना
प्रभु मुँदरी कहँ जतन लुकाई * चेरि कनक[2] लखि लेयँ छिनाई
अँगुरिन धरत निसिचरिन हाथा * बिन मुँदरी पुनि होहुँ अनाथा
जो मुद्रिका हिये महँ धारौं * तौ किमि ताहि सदैव निहारौं
कछु विश्राम लेहु कपि ताता * मुँदरिहिं अबै करौं कछु बाता
अंगुस्तरी ! सुनहु मम बानी * निसिदिन कलपति मैं सियरानी
तुम प्रभु चिह्न, दरस तव पाई * रोवत प्रान दुगुन अधिकाई
जबहिं कीन पितु कन्यादाना * लीन तुमहिं तब रत्न समाना
गंगोदक तिल तुलसी हाथा * मोहिं-तुम-संगहिं कीन सनाथा
लीन संग प्रभु प्रिय पुनि मुँदरी * यहि विधि सौति भइउ तुम मोरी
हतभागिनि विरञ्चि मम वामा * मैं इत लंक, साथ तुम रामा
मम सुधि जब रघुनाथ सतावै * मम सूने तैं मन बहिलावै

दो० अहो दुसरिहा[3] राम की, रही राम के साथ।
कवन हेतु आई इतैं, करि अकेल रघुनाथ ॥ ४५ ॥

कहु मुद्रिका कबहुँ रघुनाथा * सुमिरि अभागिनि करत सनाथा
मम बिन विगत भयेउ अति काला * कतक छीन कहु दीनदयाला
मोह छन कहेउ कीस कर जोरी * तुम बिन छीन न प्रभु गति थोरी

रामेर अंगुरी आनि दिले हनुमान * अंगुरी नहे त इहा दिले मोर प्रान
ब'ल देखि कोथा राखि रामेर अंगुरी * सोना देखि केड़े लय पाछे सब चेड़ी
अंगुले राखिले पाछे लय चेड़ीगण * देखिते ना पाइब अंगुरी सर्व्वक्षण
हृदि माझे राखि यदि कहि तव ठाँइ * अंगुरी देखिते हाय ना पाब सदाइ
वारक विश्राम कर पवननन्दन * अंगुरीर सने कहि दुचारि कथन
अंगुरीर पाने चाहि कन ठाकुरानी * दिवानिशि काँदि आमि जनकनन्दिनी
शुनह अंगुरी तुमि रामेर निशान * द्विगुण तोमाय देखि कान्दि उठे प्रान
जे काले जनक पिता दान कैला मोरे * मोर आगे वरण से करिला तोमारे
ताम्रपात्रे गंगा जल तिल तुलसी ताते * तोमारे आमारे पिता सपे राम हाते
तोमाय आमाय दोँहे लैला रघुमनि * सेइ हैते हैले तुमि आमार सतिनी
विधि वाम हइलेन आमि अभागिनी * रावण हरिल मोरे सगे रैला तुमि
पड़िलाम जबे आमि श्रीरामेर मने * आमार अभावे राम चाव तव पाने
अंगुरी दोसर तुमि छिल राम सने * रामके राखिया एका हेथा एले केने
आर एक कथा आमि ब'लि तव स्थान * अभागिनी ब'ले मने करेन श्रीराम
आमा छाड़ा ह'ये राम रन बहुदिन * आमार विहने कत हयेछेन क्षीन
हेन काले ब'ल हनू करि जोड़ हात * तोमा विना क्षीण देह हैला रघुनाथ

---

१ अँगूठी २ सोना, सुवर्ण ३ साथी।

बैठत उठत जागरत शयना * 'सीय' सदा मुख सरसिजनयनी
त्यागेहि सदन बिकल रघुराया * बिन जल-असन छीन अति काया
जटिल जटा, तन यहि बिधि कीना * कृश अंगुरी तजि मुँदरी दीना
जब रघुपति जिहि समय बियोगू * प्रभु-मुद्रिका न पुनि संयोगू
सो कर सोहत रामकृपाला * बढ़ि आकार भई सो बाला
पूर्णचन्द्र छबि नभ चहुँ छाई * कपि सो सीय मुद्रिका पाई
सो लखि हीय अतुल हर्षानी * सुमिरत राम-मूर्ति सियरानी
चन्द्रकान्त मणि मुँदरि सुहाई * चन्द्र किरन जगमगात समाई
रुदन-मुद्रिका सिय अनुमानी * तेहि बोलत प्रबोधमय बानी
जन्मदुखी मम समुचित पीरा * पै मुँदरी किमि बिकल सरीरा
जानि लीन किमि दुःख समेतू * बन अशोक बड़ रोदन हेतू
रघुपति प्रभु परसि जेहि पावा * आजीवन दुख न्योति बुलावा
तेहि कलपव बीतत दिन जामा * बहुबिधि करि बिचार जे बामा

दो० हम तुम दोउ रघुनाथ के, परी संग इक जाय।
दोउ बिलपत लंका-महँ, आजु दनुज घर आय ॥ ५६ ॥

'सीता' नाम कबहुँ जनि धारै * नतरु दुसह दुख बिधि बिस्तारै
इमि कहि सीय करति अनुतापा * दासी हेतु प्रभुहिं संतापा

उठिते बसिते तार मुखे तव नाम * जागिते घुमाते 'सीता' बलेन श्रीराम
कान्दिया तोमार तरे श्रीराम विकल * फेल जल तेयागिया बड़ह दुर्ब्बल
एत क्षीण हये छेन राम जटाधारी * ढिला हये गेछे तार करेर अंगुरी
जबे हते तव सङ्ग भग हैला राम * सेइ दिन घुचियाछे अंगरीर नाम
अंगुरी खुलिया पूर्व्वे राम पहिछला * एखन एमन क्षीण अंगुरी हैल बला
पूर्ण चन्द्र शोभतेछे गगन उपरे * अंगुरी दियाछे हनु जानकीर करे
अंगुरी हेरिया सीता महा हृष्ट मन * श्रीरामेर मूर्तिखानि करिला स्मरण
चन्द्रकान्त मणि सह अंगुरीते छिल * चन्द्रेर किरणे ताहा झरिते लागिल
अंगुरी कान्दिछे सीता भावे मनेमन * अंगुरी के सम्बोधिया बलेन वचन
जनम दुखिनी सीता कान्दिबे सीताइ * हे अंगुरी कि कारणे कान्द तुमि भाइ
बुझिनु बुझिनु आमि बुझिनु एखन * केन कान्दितेछ आसि अशोकेर वन
श्रीरामचन्द्रेर करे पड़े जेइ जन * कान्दिते हइबे तारे जेनो आजीवन
ताहार कान्दिते हबे चिरदिन धरि * देखिलाम इहा आमि विशेष विचारि
तुमि आमि दुजनाइ पड़ि तार करे * कान्दितेछि दोंहे मिलि राक्षसेर घरे
केह येन सीता नाम नाहि राखे आर * राखिले करिते हबे तारे हाहाकार
एत बलि जानकी कपाले मारि हात * दासी हेतु एत दुःख पाउ रघुनाथ

---

१ कमलनयन राम २ भोजन पानी ३ कान की बाली।

रामदूत हे पवनकुमारा ! * मम दारुण दुख आर न पारा
घरी जवन मम स्वामि वियोगू * जल न असन मम मुख संयोगू
रहैं कि प्रान जायँ उर संसय * प्रभु-मुँदरी कहँ, वत्स ! समर्पय
पुनि मुद्रिका जानकी लीन्हा * चहेउ करांगुलि[1] धारन कीन्हा
दृढ़ करि कर-अँगुरी सो धारी * कंकण सरिस मनौ विस्तारी
सो लखि रोय उठे हनुमाना * चीण राम-सिय एक समाना

सीता का हनुमान को आशीर्वाद

गति[2] प्रतच्छ मम कपि जिमि देखी * बरनेउ प्रभुपहँ सकल विशेषी
होय बिलम्ब समीरकुमारा * तजौं प्रान मैं सिन्धु मँझारा
रावन-दासिन दिवस गुजारहिं * कहत 'राम' मारहिं ललकारहिं
उदर अमिय-फल नाहिं समाहीं * 'राम' अधार अभागिनि पाहीं
जबहिं सतावत छुधा-पिपासा * सेवत रघुपति नाम मिठासा
तरु अशोक तर दारिद-धामा * एकाकी निवसहुँ बिन रामा
राम बिछोह बिगत दस मासू * प्रभु-चिन्तन अहि-निसि उपवासू
जो मम मरन, नारि-वध पापा * प्रभुहिं कहेउ, सुत ! मम सन्तापा

दो० नित मारहिं बहु ताड़ना मिलै राच्छसिन हाँथ, ।
भुइं लोटत, उद्घोष मुख, 'रच्छ ! रच्छ !' रघुनाथ ॥ ४७ ॥

जानकी ब'लेन शुन पवनकुमार * आमार दुःखेर आर नाहि देखि पार
जेदिन ह'ते संग छाड़ा ह'लेन गोसांइ * से दिन ह'ते फल जल किछु खाइ नाइ
बाँचे कि ना बाँचे आर जनकझियारी * कोथा राखि बाछा हनू रामेर अंगुरी
एत ब'लि अंगुरी के लैला ठाकुरानी * अंगुरी परिते चान जनकनन्दिनी
अंगुरी परिला सीता दृढ करि मन * अंगुरी हइल ठिक हातेर कंकन
इहा देखि कान्दिया विकल हनुमान * राम सीता दुइ क्षीण एकइ समान

हनूमान प्रति सीतार आशीर्वाद

सीता ब'ले देखे जाह पवनकोंडर * मोर दशा ब'लो गिया रामेर गोचर
किञ्चित विलम्ब यदि हइत तोमार * सिन्धु जले त्यजिताम ए प्राण आमार
मोरे घेरि राखियाछे रावणेर चेड़ी * 'राम' ब'ले डाकिलेइ मारे मारे छाड़ि
आहारे अमृत फल ना करि भक्षण * रामनामे अभागीर उदर पूरण
क्षुधाय तृषाय जबे व्याकुलित प्राण * केवल आहार करि मिष्ट राम नाम
शिंशपा वृक्षेर तले देख मोर कुंड़े * श्रीराम बिहने आमि एका थाकि पड़े
दशमास उपवासी आमि राम विना * दिवा निशि करि आमि रामेर भावना
जाउ राजा हनू ब'ल श्रीरामेर आगे * सीता मैले राम तव नारीहत्या लागे
दुष्ट रावणेर चेड़ी मारे बेतेर बाड़ि * राम नाम हृदे जपि जाइ गड़ागड़ि
रावणेर चेड़ीगण तुले माथे हाथ * उच्चैःस्वरे डाकि ब'लि रक्ष रघुनाथ

---

१ हाथ की उँगली मे २ हालत ।

'सरमा' सों कछु फल जो लेहीं * चेरि - दसानन खान न देहीं
बरनि लंकपति - अत्याचारा * कहेउ न सिय केहु विधि निस्तारा
विना राम सब कछु दुख-सेजा[1] * बिना भानु जिमि शशि निस्तेजा
वर्षा हेतु मेघ सन्माना * विना राम जल अनल समाना
सरमा चन्दन देत सरीरा * मम तन लहत अनल सम पीरा
सहित कपूर पान यदि देही * विन रघुनाथ न रुचि उर लेही
एते दुख किमि सिय-निस्तारू * मरन असंशय विन उद्धारू
तजहु शोच कह पवनकुमारा * प्रभु सन रावन नाहिं उबारा
कपि असंख्य मिलि रघुपति संगा * छन महँ बाँधहिं सिन्धु अलंघा
कपिपति मिलन रमापति साथा * रघुपति-सचिव भये कपिनाथा[2]
बटुरे[3] कपि असंख्य दिग्देसा * लहत आचमन सिन्धु न शेषा
हरन जबहिं तव किय लंकेसू * पूरुब कथा विदित जनि लेसू
ऋष्यमूक कपि पाँच बिराजे * तन अभरन जब सिय ! तुम त्याजे
प्रभु हित तजे चिह्न आभरना * तुमहिं भुलान, मोहिं स्मरना
पञ्च कीस अगणित कपि साथा * अनुचर सकल कृपा रघुनाथा
कपि ! आयेउ तरि सिन्धु अपारा * इत मम तीर न द्रव्य-अहारा

दुइ चारि फल पाइ सरमार ठाँइ * रावणेर चेड़ी ताहा खेते दिते नाइ
सन्देश लइया द्रुत जाह हनुमान * रावणेर अत्याचारे ना बाँचे परान
राम विना यत दुःख शुन दिया मन * चन्द्र कर बोध हय सूर्य्येर किरन
जल विन्दु बरषिते मेघे करि माना * राम बिना जलविन्दु अनलेर कना
सरमा चन्दन यदि देय मोर गाय * अग्नि सम बोध हय, अंग पुड़े जाय
कर्पूर यद्यपि देय ताम्बूल भितरे * राम विना सेइ द्रव्य ना रुचे आमारे
एत दुःखे सीता प्राण बाँचे कतक्षण * उद्धार ना हैल मोर निश्चित मरण
हनूमान ब'ले मागो चिन्ता नाहि आर * राम हस्ते रावणेर नाहिक निस्तार
राम सने मिलियाछे असंख्य वानर * इंगिते बाँधिया दिबे अलंघ्य सागर
सुग्रीव वानरे संगी कैला रघुनाथ * मितालि करिला राम सुग्रीवेर साथ
कत शत कपि एल देश देशान्तरी * गण्डूषे शुषिते पारे सागरेर बारि
पूर्व्वकथा तव मागो नाहि पड़े मने * जेदिन तोमाय हरि आने दशानने
ऋष्यमुके छिनु मोरा कपि पञ्चजन * आमा सबे फेलि दिले अगेर भुषन
रामके निशान दिते फेलिले भूषने * तुमि पासरिले माता आछे मोर मने
से पञ्च वानर मिले श्रीरामेर सने * असंख्य वानर संगी श्रीरामेर गुने
सीता कहे एले हनू लंघिया सागरे * कि दिबे अनाथा सीता खाइते तोमारे

---

१ दुःख शैय्या २ सुग्रीव ३ इकट्ठा हुये।

दो पाँच आम सरस लिये * मातु समर्पन होंहिं
आइ संग लै पक्व फल * देउँ बिलम्ब न होहिं ॥ ४८

एक राम पद कृपानिकेता * दुइ फल अखिल कनक-कपि केता
देवर लखनहिं एक कपीसा * दै पुनि अगनित कहेउ असीसा
जो फल एक पवनसुत! शेष * अर्द्ध तासु दै कीस - नरेस
तात! अर्द्ध फल पुनि तव हेता * दीन्ह पञ्च फल प्रीति समेता
रुकत न सके हँसी अपारा * कहत जोरि कर पवनकुमारा
क्षुधानुरूप[१] चहौं आहारा * अर्द्ध रसाल[३] न मोर सहारा
दग्ध क्षुधानल[४] में वैदेही * फल किमि, अर्द्ध उदर सब देही
आयसु लहौं जानकी- जननी * साकहुँ बिटप लखौ मम करनी
जो मोहिं मिलै मातु-आदेस * सकल जलधि - जल अचवन[५] प्रवेस
वन अशोक इव राम - विहीना * कहति सीय कपि! मैं अति दीना
वन अशोक नहिं कानन-शोका * दुख नाम मम प्रान, त्रिलोका[६]
अनाहार दिन - रैन गुजारी * कंगालिनि - गृह कितै अहारी!
राम नाम बस एक अधारा * करत शरीर प्रान सञ्चारा
क्षुधा तृषा मैं सकल बिसारी * केवल रघुपति नाम अहारी

सरमा पाँचटि आम्र दियाछे आमाय * तुमि बाछा लये जाव दिलाम तोमाय
एक आम्र दिबे रामेर चरण कमले * छोट आम्र दिबे बाछा वानर सकले
एक आम्र दिबे मोर लक्ष्मण देवरे * मात मन आशीर्वाद जानाबे ताहारे
एक आम्र आछे बाछा पवनकुमार * ताहार अर्द्धेक भाग सुग्रीव राजार
अवशिष्ट अर्द्ध भाग खेउ बाछा तुमि * एके एक फल बाछा बँटे दिनु आमि
शुनिया हनूर हासि नाहि धरे आर * जोड़ हाते ब'ले हनु निकटे सीतार
आमार जेमन क्षुधा खाद्य तथा चाइ * अर्द्धेक फलेते मोर किछु हबे नाइ
क्षुधानले पुड़ितेछि ओ'ला जनकराजि * अर्द्धेक फलेते मागो हबे मोर कि
आज्ञा यदि पाइ नव जनकझियारी * समुद्रेर जल अंजलिते खेते पारि
यदि तव आज्ञा पाइ हेन लय मने * सागरेर यत जल पूरे राखि काने
जानकी बलेन हनु श्रीराम विहने * शिरिष हयेछे बाछा अशोक कानने
अशोक कानन नहे शोकेर कानन * शोके दुःखे जानकीर जाइछे जीवन
हेथा किबा आहार पाइबो आमि अभागिनी * अनाहारे आछि बाछा दिवस यामिनी
एक मात्र आस राम नामेर आधार * ताइ आछे एइ देहे प्राणेर संचार
क्षुधा तृष्णा यत किछु भुलेछि सकल * एकमात्र रामनामे यत किछु बल

१ कुछ। २ मूल का अनुवाद। ३ आम ४ भूख की ज्वाला से ५ कानों मे
६ ऐसा मालूम पड़ता है।

मर्माहत दृनु - दुःख अनन्ता * सहौं सुमिरि अहिनिसि भगवन्ता
अवध गमन अवसर यदि पाई * करहुँ सुप्रीति तात! पहुनाई[२]

दो० भक्तिभाव सों अर्द्ध फल, लहि अत्यल्प प्रसाद।
क्षुधा निवारन होय कपि! करहु न संशयवाद॥ ४६॥

तव संवाद तुल्य, हनुमाना! * तुच्छ प्रान कर दान लखाना
सुलभ न मम-दरम बिन प्राना * सहज करत नतु जीवन दाना
करहुँ न प्रानदान यहि हेतू * जीवन राखि लखहुँ रघुकेतू
तदपि देहुँ यहि मम वर कोऊ * मम वर अमर चारि युग होऊ
जो मैं सती काय - मन - बचना * सेवत त्रिविधि स्वामि के चरना
तौ सिय-वचन न संशय करई * वत्स! कथन मम निज उर धरई
राम-चरहिं[३] पद-अमर प्रकासा * ध्रुव[४] पद सती कहत कृतिवासा

सीता खेद

छं० योगसिद्ध अति अतुल तेज नृप जनक-लली मैं सीता।
नव दूर्वादल श्याम राम सुत-दसरथ कीन गृहीता॥
शुभ विवाह पुनि श्वसुर-गेह चलि, सुख बैपरे पुनीता।
ससुर-नेह, सासुन-सनेह नित; कौतुक लखन सप्रीता॥

रावणेर अत्याचारे मर्म्मे मरे रइ * एकमात्र रामनामे सें सकल सइ
कभु यदि जेत पाइ अयोध्या नगरे * उदर पूरिया बाछा खाउयाब तोमारे
आर किछु ना बलिह पवननन्दन * अर्द्ध आम्रे हबे तव उदर पूरन
अत्यल्प प्रसाद यदि खाउ भक्ति भरे * क्षुधा नाहि प्रवेशिबे तोमार उदरे
जे वार्त्ता आनिया दिले बाछा हनूमान * तुलनाय तार काछे तुच्छ प्राणदान
प्राण दिते पारि आमि कहि तव ठाँइ * प्राण दिले श्रीरामे देखिते पाब नाइ
से कारणे प्राणदान ना दिनु तोमारे * प्राणरक्षा करिलाम रामे देखिवारे
इहार समान किछु दान दिब आमि * मोर वर चारि युग अमर हउ तुमि
दुइ हात तुलि हनु तोमाय दिनु वर * मोर वरे चारि युग हइबे अमर
काय मनोवाक्ये यदि सती हइ आमि * काय मनोवाक्ये यदि राम हन स्वामी
निश्चित सीतार वाक्य ना हबे लंघन * एइ कथा बाछ हनु रेखो मने मन
अमरत्व वर दिनु बाछा रामदास * सतीर अलंघ्य वाक्य कहे कृत्तिवास

सीतार खेद

योगसिद्ध महातेजा, जनक नामेते राजा, आमि सीता ताँहार नन्दिनी,
दशरथ सुत राम, नव दूर्व्वादल श्याम, विवाह करेन पण जिनि,
शुभ विवाहेर पर, गेलाम श्वशुरघर, कतमत करिलाम सुख
श्वशुरेर स्नेह यत, श्वाशुड़ीगणेर तत, नित्य बाड़े परम कौतुक

१ दिन-रात, २ आतिथ्य, ३ रामदूत को ४ अटल।

प्रजा प्रसन्न, मुदित महराजा, रामहिं राजु सवाँरी।
कुमति मंथरा धरति कैकई कीन नाथ वनचारी॥
धरनिकुमारि[1] राम कै प्यारी हरेउ मोहिं निसिचारी।
सुन्दरकाण्ड ललित मन्जुल कृतिवास कथा विस्तारी॥

सीता-हनुमान कथोपकथन

अनुज विभीषण धर्मधुरीना * मम हित सीख दनुहिं[2] बहु दीना
दानव पुनि 'अरविन्द' उदारा! * मम हित बहु दनुपतिहिं मम्हारा
'सानन्दा' जो सुता विभीषण * पठयेसि मातु मोहिं समुझावन
सुता - विभीषन मर्म बखाना * रन बिन होय न मम कल्याना
सुग्रीवहिं सो हाल जनायेउ * विनय मोर रघुपतिहिं सुनायेउ
हनु बोलत मम पीठ अरोहन * करि चलु जहाँ राम अरु लछिमन
कहु पशु नतु मैं बनौ विहंगा * मातु विराजि चलहु मम संगा
बोलत सीय, बलिस्त[3] समाना * भार-वहन किमि मनुज प्रमाना
सुनि हनुमत परिवर्तित वेषू * अस्सी योजन गात निमेषू[4]
दो० योजन दश आड़ भयेउ, सत्तर योजन लम्ब।
पूँछ पचासक दीर्घ नभ बृहदाकार प्रलम्ब॥ ५०॥

हरषित यत प्रजा, आनन्दित महाराजा, आदेशिला दिते छत्रदण्ड
कुंजा दिल कुमत्रणा, कैकेयी करिल माना विलम्ब ना कैल एक दण्ड
आमि कन्या प्रथिवीर, स्वामी मम रघुवीर, मोरे बन्दी कैल निशाचर
सुन्दरकाण्डेर गीत, कृत्तिवास सुललित, विरचिल अति मनोहर

सीता देवी ओ हनुमानेर कथोपकथन

विभीषण धार्म्मिक रावण सहोदर * मोर लागि रावणेरे बुझाय विस्तर
अरविन्द नामेते राक्षस महाशय * आमादिते रावणेरे क'रेछे विनय
विभीषण कन्या से सानन्दा नाम धरे * तार मा पाठाय तारे आमार गोचरे
तार ठाँइ शुनिलाम एक सारोद्धार * विना युद्धे बाछा मोर नाहिक उद्धार
सुग्रीवेर जानाइउ मम विवरन * श्रीरामेरे जानाइउ मोर निवेदन
हनू बले मोर पृष्ठे कर आरोहण * तोमा ल'ये जाब यथा श्रीराम लक्ष्मण
ब'ल मृग हइ माता बल हइ पाखी * किसे आरोहिया जाबे ब'ल मा जानकि
जानकी बलेन तुमि बिघत प्रमान * मनुष्येर भार किसे सबे हनूमान
शुनिया सीतार कथा हनूमान हासे * हइल योजन आशी चक्षुर निमिषे
हइल योजन दश आड़ परिसर * सत्तर योजन हैल उभे दीर्घतर
करिल दीघल लेज योजन पंचाश * तखनि सलेज गिया ठेकिल आकाश

---

१ धरणिपुत्री सीता २ रावण को ३ बालिश्त के बराबर ४ पलक मारते।

विकट रूप लखि, बोलत सीता ※ उर कौतुक अति, वत्स! सभीता
किमि तव पृष्ठ टिकहूँ, बलसींवा! ※ गिरहुँ सिन्धु, भच्छहिं जलजीवा
आन पुरुष[1] किमि परसन[2] अंगा ※ विवस दसानन करि लिय संगा
दसमुख सम जनि लुकि-छिपि करनी ※ दनु हनि, करहु वीरवत् करनी
दुर्जय गात अतिव भयकारन ※ करहु संयमित तन निज धारन
अस्सी योजन गगन प्रसारी ※ सम्हरहु नतु रिपु लेय निहारी
सीता - वचन सुनत हनुमाना ※ भयेउ तुरंत बलिस्त प्रमाना
पवनसुतहिं जानकी सुनावा ※ तव विक्रम लखि अतुल प्रभावा
कहेउ लखन प्रति जो हियँ देखी ※ तिन विक्रम अति विरद विशेषी
निमिकुल जनमि भानुकुल आई ※ विधि गति इमि मम कुगति बनाई
पति प्रतच्छ जेहि रघुपति रामा ※ अपमानित निवसत दनुधामा
कहेउ सुकण्ठहिं कातर वानी ※ वरनेउ अन्य यथा सेनानी[3]
रावन दीन अवधि[4] दुइ मासा ※ शेष एक बीतत मम नासा
बीते अवधि न मम कल्याना ※ खण्ड-खण्ड करि नासहि प्राना
आवहिं वेगि तबहिं उपकारू ※ होत विलंब व्यर्थ उपचारू[5]
सिय की सुनत करुन अति पीरा ※ पवनतनय दृग बरसति नीरा

जानकी ब'लेन बाछा तोमार आकार ※ देखिया आमार मने लागे चमत्कार
केमने तोमार पृष्ठे रब आमि स्थिर ※ सागरे पड़ले खाबे हाँगर कुम्भीर
पर पुरुषेर स्पर्श नाहि लय मन ※ कि करिब बले धरि आनिल रावन
रावणेर मत कि करिबे मारे चुरि ※ तारे मारि उद्धारह तबे बाहादुरि
तोमार दुर्ज्जय मूर्ति देखि लागे डर ※ आपना सवर बाछा पवनकोंडर
अशीति योजन अंग लागे अन्तरीक्षे ※ आपना सम्बर बाछा केह पाछे देखे
शुनिया सीतार कथा वीर हनूमान ※ देखिते देखिते हय विघत प्रमान
जानकी बलेन बाछा पवन कोंडर ※ तोमार विक्रमे मोर लागे मोर डर
लक्ष्मणेरे जानाइउ आमार कल्यान ※ ता सवार विक्रमेर किसेर बाखान
निमिकुले जन्मिया पड़िनु सूर्य्यकुले ※ एइ कि आछिल मोर लिखन कपाले
राम हेन स्वामी यार आछे विद्यमान ※ राक्षसे ताहार करे एत अपमान
सुग्रीवेरे जानाइउ आमार काकूति ※ जतेक आछये ताँर सैन्य सेनापति
दुमास जीवन तार एक मास रय ※ मास गेले बाछा मोर जीवन सशय
दुइमास रावण दियाछे प्राणदान ※ अतःपर काटिया करिबे खान खान
आमि मैले सबाकार वृथा आयोजन ※ यदि झाट एस तबे रहिबे जीवन
शुनिया सीतार एइ करुण वचन ※ नेत्र नीरे तिते वीर पवननन्दन

१ राम के अतिरिक्त अन्य पुरुष २ स्पर्श करे ३ सेनापतियों से ४ मियाद ५ इलाज।

हनुमान का सीता द्वारा मणि प्रदान

दो० मातु ! रुदन तजि, चीन्हि कछु देहु, धरौं उर धीर।
लंक, सैन पुनि मास बिच, लाय निवारहुँ पीर ॥ ५१॥

अर्पेउ लै मस्तक-मनि सीता * दै मनि, बोलत गद्गद सुसीला
करौ मास बिच जो कल्यान * सबर दाया सुत ! जीवनदान
कहँ लौं प्रभु-पद-महिम बखानौं * काक जयन्त इन्द्रसुत जानौ
स्तन परसत प्रभु सन्धाना * सर[1] अनुसरत जयन्त पराना
मरन[2] काक लिय सुरपति तीरा * सर प्रस्तुत धरि विप्र सरीरा
अपराधी बायस[3] रघुनायक * विप्ररूप मैं रघुपति सायक
सुरपति उठ दिव्य लखि बाना * करत जोरि कर स्तुति नाना
मारक कहत न मो मन आना * त्रिभुवन व्यर्थ न रघुपति-बाना
सर-गर्जन भयभीत पुरन्दर * आनेउ काक राम सर-गोचर
नयन बिन्धि इक, लीनि न प्राना * बकसेउ खग प्रभु करुनानिधाना
छमा, जदपि अपराध अपारा * राम सरिस गुन जनि संसारा
पति प्रतच्छ जेहि प्रभु गुणधामा * सहत गलानि बस दनुधामा
मौन धरि शीस, बन्दि सियमाई * चलेउ पवनसुत माँगि बिदाई
साजि अशोक वन कीन पयाना * उर सोचत बहुबिधि हनुमाना

हनुमानेर निकटे सीतार अभिज्ञान-मणि-प्रदान

हनुमान बलेन शुन जनकनन्दिनि * ना कर क्रन्दन माता सबर आपनि
निदर्शन देह किछु जाइब त्वरित * मासेकेर मध्य ठाट आनिब लंकाते
माथा हैते खसाइया सीता दन मणि * मणि दिया तार ठाँइ कहेन काहिनी
मासेकेर मध्य यदि करह उद्धार * तोमार कल्याण सीता जीये एइबार
आर कि कहिब कथा प्रभुर चरन * इन्द्रसुत काक मोर आँचाड़ल स्तने
श्रीराम ऐषिक बाण करेन सन्धान * खेदाड़िया जाय बाण बधिते पराण
काक गिया वासवेर लइल शरण * से ऐषिक बाण तबे हइल ब्राह्मण
द्विजवेश धरि गिया वासवेर ठाँइ * श्रीरामेर बाण आमि एइ काक चाइ
सेइ बाण देखि इन्द्र उठिल तखन * कर जोड़े तार आगे करिल स्तवन
बाण बले मोर ठाँइ नाहिक एड़ान * त्रिभुवने व्यर्थ नहे श्रीरामेर बाण
बाणेर गर्जन शुनि भीत पुरन्दर * जयन्त काकेरे दिल बाणेर गोचर
श्रीरामे आनिया दिल विन्धि एक आँखि * करुणासागर प्राणे ना मारेन पाखी
एत अपराध तार ना मारेन प्राणे * त्रिभुवने तुल्य नाहि श्रीरामेर गुणे
राम हेन पति यार आछ विद्यमान * राक्षसे ताहार करे एत अपमान
अनन्तर मस्तके बाँधिया शिरोमणि * देशेते चलिल वीर मागिया मेलानि
मेलानि लइया वीर देशेते आइसे * मने सात पाँच वीर हनुमान भाषे

[1] बाण [2] शरण [3] कौआ, कर्यत ।

सहसा आय गमन पुनि सहसा * लेस न चित्त विषाद न हर्षा
कौतुक कछु रावनहिं दिखाई * रामदास रघुपति ढिग जाई

दो० जनकनन्दिनिहिं मोद दै, पुनि दसकन्धहिं त्राम।
लंघौं सिन्धु बहोरि, करि सुबरन लंक विनास ॥ ५२ ॥

तरु - प्रकाण्ड मझि जतन लुकाई * हनुमत मन्द-मन्द चलि जाई
आई याद, कहेउ पुनि सीता * कछु अमरितफल खाहु सप्रीता
कर-फल[1] छुद्र सकौतुक लीन्हा * हनुमत सहज उदरगत कीन्हा
अमिय समान अमियफल चाखा * मारुति विकल, बढ़ी अभिलाषा
मिटी न मातु ! छुधा मम लेसू * सुलभ कितै फल-अमिय विशेषू
मधुफल विटप कहाँ ? तहँ जाई * खाहुँ उदर भरि यतक समाई
हे कपि ! वृथा आगमन तोरा * कुसल न मम पहुँचै प्रभु ओरा
दनुज असंख्य, एक तुम कीसा * लखत बधैं अनुचर - भुजबीसा
कहेउ कपिन्द[2] संक जनि धारौ * दानव दल मैं आजु सँहारौं
अमरित - वन बस दयि देखाई * उर चिन्ता जनि कीजिय माई

हनुमान द्वारा मधुवन-भञ्जन

कीन अमिय-वन सिय संकेतू * गमनेउ मौन वीर कपिकेतू
चौदिसि जाल मधुवनहिं ताना * सो लखि विहँसि उठे हनुमाना

आचम्बिते आइलाम जाइ आचम्बिते * हरिष विषाद किछु न थाकिबे चिते
रामेर किंकर जाब सागरेर पार * रावणेरे किञ्चित देखाइ चमत्कार
जन्माइ सीतार हर्ष रावणेर त्रास * स्वर्ण लंकापुरी आजि करिब विनास
बाँधियाछे मणिते अशोक वृक्ष गुंड़ि * सेइ वने हनूमान जाय गुड़ि गुड़ि
सीता ब'लिलेन बाछा हइल स्मरण * अमृतेर फल किछु करह भक्षण
हात पाति लय वीर परम कौतुके * अमनि फेलिया दिल आपनार मुखे
अमृत समान सेइ अमृतेर फल * फल खेये हनूमान हइल विकल
हनूमान कहे उगो जननि जानकि * अमृत समान फल आरो आछे ना कि
कोथाय ताहार गाछ कह मा विधान * खाइब एमन फल देख विद्यमान
सीता ब'लिलेन तव वृथा आगमन * मम वार्त्ता ना पावेन श्रीराम लक्ष्मन
तुमि एक वानर राक्षस बहुजन * तोमारे देखिबा मात्र बधिबे जीवन
हनूमान ब'ले माता भाव केन आर * राक्षस कटक आजि करिब संहार
मनें चिन्ता न करिह शुनह वचन * देखाइया देह माता अमृतेर वन

हनूमान कर्तृक मधुवन-भञ्जन ब रक्षक दैत्यगणेर संहार

देखान अंगुलि दिया सीता सेइ वन * निःशब्दे चलिल वीर पवननन्दन
जाल-दड़ा दिया बाँधा आछे चारि पाश * ताहा देखि मारुतिर उपजिल हास

---

१ हाथ का फल २ कपिश्रेष्ठ हनुमान।

खग न खाहिं, चौकस रखवारे[1] * बन कपि मन्द-मन्द पग धारे
विटप-डार चढ़ि नकुल-प्रमाना[2] * लखि विहंग कुल सहज पयाना
शाखन बिचरि करत रखवारी * निरखि दनुजगन अति मुदकारी
फल ताकैं, वध कीस न हेतू * सोवहिं तरुतर मोद समेतू

दो० लेत नींद - सुख विटपतर, जे निसिचर रखवार।
मधुफल सानँद खात उत, वीर समीरकुमार[3] ॥ ५३ ॥

धावत वीर खात फल फूला * फेंकत डार लता तरुमूला
तड़तड़ात भञ्जत तरु डारी * दनुज सशंकित उठे मम्हारी
चहुँदिसि निसिचरगन अवलोका * मधुवन निपट उजार बिलोका
शेल मुषल आयुध बहु मुद्गर * हनत अंग-कपि बृहत्-बृहत्तर[4]
नाना अस्त्र कोपि दनु मारैं * अन्तरिच्छ हनु रोकि निवारैं
बहुरि प्रकोपि समीरकुमारा * बरसावत तरु पर तरु-धारा
बिटप लक्ष्य करि चहुँ दिसि मारैं * तरु - डारन शत-शतन सँहारैं
मत्त मतंग रूप रन धारा * कहुं तमाच[5] कहुँ पाद प्रहारा
धरि चेरिन रगरत दस-सीसा * हाड़ चूर करि भञ्जेउ सीसा
भजीं प्रान लै दासिन त्रासा * पूछहिं सियहिं, बहति घन-श्वासा
हे सिय ! वरनु सत्य तैं बानी * को कपि ? जेहि सन बहु बतरानी[6]

खाइते ना पाइ पक्षी राक्षसेर राखे * धीरे धीरे हनूमान सेइ बने ढाके
नेउल प्रमान ह'ये वृक्ष डाले आछे * ताहारे दिखिया पक्षी नाहि रहे गाछे
फल राखे हनूमान डाले डाले पाड़ि * देखिया राक्षस सब हेसे गड़ागड़ि
राक्षसेरा ब'लए वानर नाहि मारि * राखुक वानर फल निद्रा आगे सारि
वृक्षतले निद्रा जाय राक्षस सकल * पवननन्दन वीर खाय सब फल
फल फूल खाय वीर आर छिड़े पाता * उपाड़िया फेले गाछ कोथा वृक्षलता
डाल भांगे हनूमान शब्द मड़मड़ि * आतंके राक्षस सब उठे दड़वड़ि
उठिया राक्षस गण चारिदिके चाय * अमृतेर वने देखे, किछु नाहि ताय
जाटा आ झकड़ा शेल मुषल मुद्गर * नाना अस्त्र मारे तारा हनूर उपर
नाना अस्त्र राक्षसेरा फेले अति कोपे * लाफे लाफे हनूमान सब अस्त्र लोफे
कुपिलेन हनूमान पवननन्दन * सवार उपरे करे गाछ वरिषन
गाछ ल'ये हनूमान जाय ताड़ाताड़ि * गाछेर बाड़िते मारे दशविश कुड़ि
हनूमान जुझे जेन मदमत्त हाती * कारे मारे चापड़ काहारे मारे लाथि
दश विश चेड़ी धरि मारिछे आछाड़ * भागिया माथार खुलि चूर्ण करे हाड़
प्राण ल'ये कत चेड़ी पलाइल त्रासे * सीतारे जिज्ञासे वार्त्ता अति घनश्वासे
चेड़ी सब कहे सीता कह सत्यबानी * वानरेर साथे किवा कहिले काहिनी

१ रक्षक २ नेवले के आकार का कपि-स्वरूप ३ हनुमान ४ बड़े से बड़े ५ तमाचा
६ बहुत बातें की थीं।

मैं अजान को माया-रूपा ! * जानहु चलि कपि तीर अनूपा
हर्म्य[1] विशाल अरण्य-अशोका * वरनेउ चलि दशमुखहिं सशोका
आयेउ कीस विकट आकारा * बड़ बड़ घर मधुवनहिं उजारा
तुम जेहि सीय समर्पेउ प्राना * तेहि सन कपि बहु बिधि बतराना
सिय-कर[2] उठत, नवत कपि माथा * कहि न सकत नर-वानर गाथा

दो० लाय बाँधि कपि, सभा बिच, कीजिय तासु विचार ।
जो बिलम्ब, कारज नसै, काहु न पुनि निस्तार ॥ ५४ ॥

चेरिन प्रति दसमाथ प्रकोपा * घृत लहि अनल प्रज्वलित कोपा
मारु - मारु पुनि गर्जन - तर्जन * दस दिसि निरखत दनुज दसानन
'मूढ़' नाम किंकर[3] लंकेसू * धरहु कीस दीन्हेउ आदेसू
चलेउ मूढ़ यमराज समाना * जहँ हनुमत तहँ वेगि पयाना
कपि - आखेट, जात दनु धाई * हनु प्रकोट[4] जिमि पर्वतराई
मुषल शेल बहु अस्त्र प्रकोपे * सो हनुमत मारग महँ रोपे
गिरि सम गृह - स्तंभ उपारी * करत वीर अति मारामारी
हनि सर्वांग दुहत्थ चलावा * मूढ़ किंकरहिं भूमि दिखावा
असुर मूढ़ यमलोक पठाई * वन अशोक तजि, जहँ सियमाई
नागेश्वर[5] तरु गन्ध उखारै * चुनि चुनि चम्पक वृच्छ उपारै
सम्मुख परत चूर्ण करि डारै * दस - बीमन धरि मारि पछारै

सीता ब'लिलेन कोन जन माया धरे * आमि कि जानिब सबे जिज्ञास वानरे
भागिल अशोक वन बड़ बड़ घर * त्रासे वार्त्ता कहे गिया रावण गोचर
आसियाछे कोथाकार एकटा वानर * अमृतेर वने भागे बड़ बड़ घर
जे सीतार प्रति तुमि सँपियाछ मन * सेइ सीता वानरे करिल सम्भाषन
सीता नाड़े हाततटि वानरे नाड़े माथा * बुझिते नारिनु नर बानरेर कथा
झटिते बाँधिया आनि करह विचार * विलम्ब हइले कारो नाहिक निस्तार
कुपिल रावण राजा चेड़ीदेर बले * घृत दिल अग्निते जेमने आरो ज्वले
मार मार शब्द करे तर्ज्जन गर्ज्जन * दशदिक् दशानन करे निरीक्षन
सम्मुखे देखिल मूढ़ नामेते किंकर * तारे आज्ञा दिल राजा धरिते वानर
चलिल किंकर मूढ़ यमेर दोसर * त्वरा करि गेल हनूमानेर गोचर
धेये जाय राक्षस बधिते हनूमान * प्राचीरे बसिल वीर पर्व्वत प्रमान
जाठा शेल झकड़ा मुषल फेले कोपे * लाफे लाफे हनूमान सब अस्त्र लोफे
उपाड़े घरेर थाम पर्व्वत आकार * थामेर बाड़िते वीर करे महामार
आथालि पाथालि मारे दोहातिया वाड़ि * पड़िया किंकर मूढ़ नाम गड़ागड़ि
पाठाइल मारिया मूढ़ेर यमघर * बाछिया उपाड़े गाछ चाँपा नागेश्वर
जेखाने थाकेन सीता ताहा मात्र राखे * आर सब चूर्ण करे जा' देखे सम्मुखे

१ महल २ सीता का हाथ ३ सेवक ४ चहारदीवारी पर ५ वृक्ष विशेष ।

चूरन हाड़ शीश केहु भंगा * धरत विदारत दानव - अंगा
तीच्छण बालुका सागर तीरा * केहु मुख घर्षत[1] तनय-समीरा
बहु जन भागि चले लहि त्रासा * रावन ढिग, प्रवहति घनश्वासा
कहत नाथ उर भीति अशेषा * यमपुर किंकर मूढ़ प्रवेशा
लंक उजारि एक कपि दीन्हा * भवन विवस करि जर्जर कीन्हा

जाम्बुमाली आदि अष्टवीर-संहार

दो० सुभट जाम्बुमाली, जनक[2] दुर्जय जासु प्रहस्त।
सादर आयसु, कटक लैं, बाँधहु कीस प्रशस्त[3] ॥ ५५ ॥

लहि आयसु, रथ दिव्य सुहाना * संग सैन हय गज रथ नाना
कपि आसीन कनक प्राचीरा * दीन समैन दरस दनु वीरा
प्रथम परस्पर कुवचन नाना * जाम्बुमालि पुनि सर सन्धाना
कपि-उर बान असंख्य प्रहारा * कपि मुख झलकति रक्त-प्रसारा
बाछि बाछि सर हनत अनूपा * कीस - अंग किय जर्जर रूपा
भयेउ क्रुद्ध अति पवनकुमारा * शाल-गाछ तेहि काल उपारा
कपि भुजबल तरु हनत प्रचण्डा * सो दानव किय खण्ड - विखण्डा
विफल विटप लखि उर कपि चिन्ता * लिय हठात् गिरि शिखर तुरंता
हनेउ शिखर-गिरि बल सम्पूरन * दानव-सर किय शृंग[4] विचूरन

दश विश जने धरि मारिछे आछाड़ * मस्तक भागिया कारो चूर्ण करे हाड़
सागरेर कूले यत बालि खरशान * ताहाते काहारो मुख घर्षे हनूमान
पलाइल बहुजन पाइया तरास * रावणेर वार्त्ता बहे घन बहे श्वास
देखिलाम जे किछु कहिते करि डर * पड़िल किंकर मूढ़ शुन लंकेश्वर
लंका मजाइल आजि एकटा वानर * सहिते ना पारि आर करिल जर्ज्जर

हनूमान कर्त्तृक जाम्बुमालि प्रभृति अष्टवीर-संहार

महायोद्धपति तार नाम जाम्बुमाली * प्रहस्त धाद्धार बेटा, बले महाबली
रावण ताहाके कहे करिया सम्मान * आपन कटके बांधि आन हनूमान
आदेश पाइया वीर दिव्य रथे चड़े * हरित घोड़ा ठाट कत तार संगे नड़े
बसि आछे हनूमान प्राचीर उपर * कटक लइया गेल ताहार गोचर
प्रथमे हइल दुइ जने गालागालि * बाण बरिषण करे वीर जाम्बुमाली
प्रहारे असंख्य बाण हनूमान बुके * मुखे रक्त उठे तार झलके झलके
बाछिया बाछिया मारे चोखा चोखा शर * हनूमाने विंधिया से करिल जर्जर
हइलेन महाक्रुद्ध पवननन्दन * शालगाछ उपाड़िया आने ततक्षन
बाहुबले गाछ एड़े वीर हनूमान * राक्षसेर बाणे गाछ हय खान खान
शाल गाछ व्यर्थ गेल देखिया चिन्तित * पर्व्वतेर चूड़ा वीर आने आचम्बित
बाहुबले एड़े वीर पर्व्वतेर चूड़ा * जाम्बुमाली बाणेते पर्व्वत करे गुंड़ा

---

१ रगड़ते थे २ पिता ३ विशाल ४ पर्वतशिखर।

पुनि पुनि विकल शोक उर छावा * गृह-मूषल सहमा कपि पावा
दोउ कर मुषल तौलि बलधारी * स्यन्दन[1] ताकि दुहत्था मारी
जाम्बुमालि हत यमपुर जाई * कपि प्रकोट बैठत जय पाई
भग्नदूत[2] रावनहिं प्रकासा * जाम्बुमालि किय यमपुर वासा
सैनिप[3] छत्तिस कोटि प्रधाना * सकल लंकपति किय आह्वाना
विडालाक्ष शार्दूल प्रधाना * वीर धूम्रलोचन रन ठाना
नाना आयुध[4] धावत वेगा * कपि मारन हित, सकल सवेगा

दो० सप्त सुभट कर प्रखर अति लीन्हे अस्त्र अनन्त।
धाय कहत सब, हनहिं हम, अबहिं कीस बलवन्त ॥ ५६ ॥

नकुल प्रमान कीस प्राचीरा * कौतुक लखत सप्त जे वीरा
चलि प्रकोट दानव सब धाये * अलख[5] न दरसन कहुँ कपि पाये
कपि भय खाय लुकायेसि[6] जीवा * कहि भरमावहिं किमि दशग्रीवा
यहि विधि घर लौटत घबराहीं * किमि कपि धरि जँजीर लै जाहीं
इमि निसिचरगन करत विचारा * तबहिं खेदि मारुति ललकारा
छीनि जँजीर ताकि रथ मारा * सप्त वीर रथ उपर सँहारा
पुनि प्राचीर चढ़े जय पाई * भग्नदूत[2] रावन पहँ जाई
जीतेउ युद्ध सहज इक कीसा * सप्त वीर जूझे दससीसा

जिनिते नारिया वीर हइल चिन्तित * घरेर मूषल तार पाइल आचम्बित
दुइ हाते तुलि वीर मुषल सत्वर * दोहातिया वाड़ि मारे रथेर उपर
वाड़ि खेये जाम्बुमाली गेल यमघर * युद्ध जिनि वैसे वीर प्राचीर उपर
भग्न पाइक कह गिया रावण गोचर * जाम्बुमाली पड़े शुन वीर लंकेश्वर
छत्रिश कोटिर जारा मुख्य सेनापति * सकलेर तरे त्वरा दिलेन आरति
शुनि ताहा विड़ालाक्ष शार्द्दूल प्रधान * वीर धूम्रलोचन से रणे आगुयान
नाना अस्त्र हाते करि धाय रड़ारड़ि * हनूमाने मारिते सबार ताड़ाताड़ि
नाना अस्त्र सान वीर एड़े खरशान * सबे ब'ले आमित मारिब हनूमान
सात वीर आसिनेछे हनूमान देखे * नेउल प्रमाण ह'ये प्राचीरेते थाके
सात वीर आसिया प्राचीर पाने चाय * लुकाइल हनूमान देखिते ना पाय
प्राण ल'ये पलाइल आमा सबा डरे * कि बलिब गिया मोरा राजा लंकेश्वरे
घरे जेते सात वीर करे हुड़ाहुड़ि * टान दिया आने हनू बड़ घरेर कड़ि
नेउटिया घरे जाइ सबाकार मन * पाछु खेदाड़िया जाय पवननन्दन
कड़ि तुलि मारे वीर रथेर उपर * कड़िर वाड़िते तारा जाय यमघर
युद्ध जिनि वैसे वीर प्राचीर उपर * भग्न पाइक कहे गिया राजार गोचर
युद्ध जिनिलेक राजा एकटा वानर * सात वीर पड़िल शुनह लंकेश्वर

१ रथ २ पराजय का संवाद देने वाले दूत ३ सेनापति ४ अस्त्र ५ अदृश्य
६ जान छिपाये है।

अक्षयकुमार-बध

अखयकुमार सदर्प सुनावा * बधहु कीस आयसु - पितु पावा
अच्छ-इन्द्रजित् युगल सहोदर * अच्छ इन्द्रजित सरिस धनुर्धर
बहु भण्डार अभूषन नाना * दै असीस नृप कीन प्रदाना
संग सैन हय-गज बहु लीना * पितु - प्रदच्छिणा रथ - आसीना
अछय - कटक धरातल काँपा * पाँच अछोहिनि सैन प्रतापा
लखि प्राचीरहिं पवनकुमारा * कहत कोपि इमि अखैकुमारा
अछय सुत, पितु रावनराजू * मम कर तव निश्चित वध आजू
कोटिन वान करहुँ सन्धाना * देखहुँ किमि निवरत[1] हनुमाना

दो० इत सर जोरत कुअँर धनु, उत कपि चिन्ति उपाय ।
लहि छलाँग हनु गयेउ नभ, व्यर्थ वान तर[2] जाय ।। ५७ ।।

पुनि प्रकोपि सर सीस चलाये * जर्जर मारुति - अंग बनाये
अछय मनहु अनल बरसाये * अग्नि शिखा सम चहुँ सर छाये
कूदि पवनसुत रथ पग धारा * एक चपेट चूर्ण करि डारा
रथ सारथि हय सकल विनासा * अछय लखि उठि चलेउ अकासा
गगन पलायन लखि हनु कोपा * झपटि चील्ह[3] सम, पद पुनि रोपा

अक्षयकुमार-बध

अक्ष नामे राजपुत्र करे वीरदाप * वानरे मारिते तारे आज्ञा दिल बाप
अक्ष आर इन्द्रजित दुइ सहोदर * से इन्द्रजितेर तुल्य युद्ध धनुर्द्धर
प्रसाद दिलेक तारे नाना अलंकार * विलाइते दिल तारे चारिटा भण्डार
पितृ प्रदक्षिण करि रथेते चड़िल * हस्ति घोड़ा ठाट कत संगेते चलिल
कटकेर पदभरे काँपिछे मेदिनी * कुमार अक्षेर ठाट पाँच अक्षौहिनी
हनूमान बसियाछे प्राचीर उपर * रुषिया कहिछे अक्ष शुन रे वानर
अक्ष नाम आमार जे रावणनन्दन * नाहिक निस्तार आजि बधिब जीवन
कोटि कोटि वाण आजि करिब सन्धान * केमन राखह प्राण देखि हनूमान
सन्धान पूरिया वाण धनुकेते जोड़े * वाण व्यर्थ करिवारे चिन्तिल अन्तरे
लाफ दिया उठे हनू गगनमण्डले * यत वाण एड़े सब जाय पदतले
कोपे वाण फेले तार माथार उपर * वाण फुटि हनूमान हइल जर्ज्जर
हनू ब'ले राजपुत्र देखिते छावाल * वाण गुला एड़े जेन अग्निर उथाल
लाफ दिया हनूमान तार रथे चड़े * रथखान गुड़ा करे एकइ चापड़े
रथेर सारथि घोड़ा हैल चूरमार * अन्तरीक्षे पलाइल से अक्षयकुमार
राक्षस पलाय ऊर्द्ध्व, हनूमान कोपे * लाफ दिया पाये धरे चिले जेन लोफे

१ बचता है २ नीचे ३ चील पक्षी ।

रोपि उभय पद, कुअँर पछारा * हाड़ सीस चूरन करि डारा
पुनि प्राचीर चढ़े जय पाई * इत सुत मरन सुनेउ दनुराई

इन्द्रजीत द्वारा नागपाश में हनुमान-बन्धन

सुनि लंकेस सोच उर छावा * घननादहिं[1] रन हेत बुलावा
भट सुभटन बहु गर्जन कीन्हा * लौटि सदन मोहिं दरस न दीन्हा
सुवन इन्द्रजित! चढ़ु रन आजू * तोहिं तजि उचित न मम रन साजू
कहत इन्द्रजित सुनि लंकेसू * बान्धौं वानर चखुनिमेषू[2]
कहँ कपि हीन, कहाँ घननादा * लहौं आजु जय जनक-प्रसादा[3]
अंगुस्तरी[4] अँगुरि भुज कंकण * सजि सर्वांग राज-आभूषण
कञ्चन बसन नवलड़ी धारा * पूर्ण चन्द्र सम तिलक ललारा
ढाल कवच धारन किय अँगा * लीन बुलाय सारथी संगा
रथ रन-अटल सारथी साजा * जगमग रथ रन हेत विराजा

दो० कनक रचित छबि अतुल रथ, अति विचित्र निर्मान।
जोरे अष्ट तुरंग पुनि, जिन गति पवन समान ॥ ५८ ॥

बीस कोटि गज दशक तुरंगा * चलीं अछोहिनि तेरह संगा
कटक भार-पद काँपति मेदिनि[5] * बजत साज-रन सुरपुर लौं धुनि
लै इमि कटक बेगि भट धावा * पाछें सन दशमुख गुहरावा

दुइ पा धरिया वीर मारिल आछाड़ * भांगिल माथार खुलि चूर्ण हैल हाड़
युद्ध जिनि वैसे वीर प्राचीर उपर * कुमार पड़िल वार्त्ता शुने लंकेश्वर

इन्द्रजित द्वारा हनुमानेर बन्दीकरण

शुनिया रावण राजा लागिल भाविते * जुझिवारे कहिल कुमार इन्द्रजिते
बड़-बड़ वीर जाय करिया गर्ज्जन * बाहुड़िया ना आइसे आमार सदन
अद्यकार युद्धे जाह बाछा इन्द्रजित् * तोमरा थाकिते आमि जाइ अनुचित
पितृवाक्य शुनि वीर इन्द्रजित् भाषे * वानरे करिब बन्दी चक्षुर निमिषे
कि छार वानर बेटा आमि मेघनाद * युद्ध जिनि लब अद्य राजार प्रसाद
अंगुले अंगुरी दिल बाहुते कंकण * सर्व्वांग परिल वीर राज आभरण
स्वर्ण नवगुण परे परे स्वर्ण पाटा * पूर्णिमार चन्द्र जेन कपालेर फोंटा
एक हाते धरियाछे सर्व्वांग-ढापनि * आर हाते सारथिर डाकिल आपनि
सारथि आनिल रथ संग्रामे अटल * साजाइल रथखान करे झलमल
कनक रचित रथ विचित्र निर्म्मान * वायुवेगे अष्टघोड़ा रथेर योगान
मातंग विंशति कोटि तार अर्द्ध घोड़ा * तेर अक्षौहिणी चले त्रिभुवन जोड़ा
कटकेर पदभरे काँपिछे मेदिनी * रणवाद्य बाजे कत स्वर्गे लागे ध्वनि
एत सैन्य ल'ये वीर चलिल सत्वर * पाछु हैते डाक दिया ब'ले लंकेश्वर

---

१ मेघनाद को २ पलक मारते ३ पिता के प्रसाद से ४ अंगूठी ५ पृथ्वी।

तुम कहँ विदित बालि - सुग्रीवा * सचिव तासु हनुमत बलसीवा
सो न हीन, अति वीर जुझारा * कीजिय रन तेहि समुझि अपारा
हँसा इन्द्रजित सुनि पितु-बयना * सहज बाँधि कपि लावहुँ अयना[१]
चढ़ि प्राचीर कपिन्द सुहावा * वेगि ससेन इन्द्रजित धावा
कपिहिं हेरि अति कोप ज्वलंता * अति प्रताप, दुर्वचन अनन्ता
लता - पता कोपीन[२] सरीरा * प्रान तजन आतुर मम तीरा
जहँ सुग्रीव विचरु[३] तरु डारन * मरन हेतु किमि लंक पधारन
दनु-दुर्वचन सुनत कपि हँसई * मन अभिमत कुवचन शठ कहई
खायँ मूल - फल मुनि - आचारा * तरु - तरु फिरत न अत्याचारा
अनाचार निज स्वयं न जाना * अनाचार - पितु जगत बखाना
नारि सहस दस हर्म्य[४] विराजा * पुनि पर-दार[५] हरन केहि काजा
सती यती तपसी द्विज नारी * हरेसि न कुवचन शाप विचारी
पुरुष अदोष नारि हित मारा * हरि विप्रनी रमत श्रृंगारा

दो० विप्र-घात कत शतक किय तव पितु पाप अनन्त।
अपकीरति तव जनक चहुँ, कव लौं होय न अन्त॥
तरु न देयँ फल सर्वदा, समय पाय फलवन्त।
ब्रह्मशाप दसकन्ध प्रति फलेउ आजु अनन्त॥ ५६॥

बालि सुग्रीवेर शुनियाछे जे काहनी * तार पात्र हनूमान सर्व्वलोके जानि
सेइ वा आसिया थाके वीर अवतार * तुच्छ ज्ञान ना करिह बुझिउ अपार
पितृ वाक्य शुनि वीर इन्द्रजित् हासे * वानर बधिब आजि देख अनायासे
बसि आछे हनूमान प्राचीर उपर * सैन्य सह इन्द्रजित् गेलेन सत्वर
देखि हनुमानेर से ज्वालिलेक कोपे * गालागालि पाड़े वीर अतुल प्रतापे
लता पता खास बेटा परिस काछुटि * मरिवारे हेथा आसि करिस छटफटि
सुग्रीवेर काल गेल भ्रमि डाले डाल * मरिवारे कि कारणे लंकाय आइले
राक्षसेर गालि शुनि हनूमान हासे * गालागालि पाड़े वीर मने यत आसे
फलमूल खाइ मोर मुनि व्यवहार * डाले डाले फिरि से त' नहे अनाचार
आपनार अनाचार ना देख आपनि * रावणेर अनाचार त्रिभुवने शुनि
नारी दश हाजार यद्यपि आछे घरे * तथापि रे तोर बाप पर दार करे
सती स्त्री हरिया आने यति तपस्विनी * शाप गालि पाड़े तबु ना छाड़े ब्राह्मनी
स्त्री लागि पुरुष मारे बिना अपराधे * ब्राह्मणी हरिया आने श्रृंगारेर साधे
करिलेक कत शत ब्रह्महत्या पाप * अन्त नाहि यत पाप करे तोर बाप
तोर त्रिभुवने ये बापेर विसम्बाद * कतकाल थाके आर पड़िल प्रमाद
सर्व्वदा ना फले वृक्ष समयेते फले * रावणेर ब्रह्मशाप फले एत काले

१ घर को २ लँगोटी ३ भ्रमण कर ४ राजमहल में ५ दूसरे की स्त्री।

कुवचन कहत परस्पर दोऊ * पुनि रन करत न्यून[1] जनि कोऊ
अस्त्र इन्द्रजित बहु बरसावै * सकल पवनसुत विफल बनावै
मारुति कहत भञ्जि मद तोरा * पठवहुँ आजु यमपुरी ओरा
केहुँ न लाभ जय, उभय समाना * युगल प्रहर दोउ भट रन ठाना
नाग - पाश आयुध मम तीरा * बाँधहुँ कपि सोचत दनुवीरा
मेघनाद रणकुशल महाना * बाँधेउ कीस, पाश सन्धाना
तजि प्राचीर धरातल आवा * भञ्जहुँ पाश हृदय कपि भावा
सोचत जदि भञ्जहुँ मैं पाशा * दरस लहौं किमि दसमुख पासा
भञ्जेउ पाश न कपि यहि हेतू * खैंचि दनुज बाँधत कपिकेतू
कोउ गर धरत, पावँ कोउ हाँथा * लौह जँजीर कसत कपिनाथा
देत निसचरन आयसु वीरा * लै कपि वेगि चलहु पितु तीरा
पुनि घननाद प्रथम डग धरही * घेरि कीस दनु-दल अनुसरही
सत्तर योजन कपि विस्तारा * तन भूमत चहुं कोप अपारा
सात लाख दनु झुरमुट करहीं * बंक[2] न रोम तासु करि सकहीं
अतुल कीस विक्रम बलधारी * दनुज - सैनपति अचरज भारी
लादहु कंध बजाय दमामा * चलहु, कहत कपि, दसमुख-धामा

एइ रूपे दुइजने हय गालागालि * तार परे युद्ध करे दोंह महाबलि
नाना अस्त्र इन्द्रजित करे वर्षन * सब अस्त्र लुफे धरे पवननन्दन
हनूमान बले बेटा तोर रण चुरि * देख तोरे आजि रे पाठाइ यमपुरी
जिनिते ना पारे केह उभये सोसर * दुइजने युद्ध करे दुइटि प्रहर
इन्द्रजित ब'ले आमि पाश अस्त्र जानि * पाश अस्त्र छाड़िया वानर बाँधि आनि
रणेते पण्डित वीर जाने नाना सन्धि * एड़िलेक पाश अस्त्र हनू हय बन्दी
प्राचीर हइते वीर पड़िया भूतले * भावे पारि पाश अस्त्र छिड़िवारे ब'ले
पाश अस्त्र छिड़िवारे नाहि लये मने * रावणेर संगे देखा करिब केमने
एतेक चिन्तिया वीर पाश नाहि छिण्डे * राक्षसे टानिया बाँधे हाते गले मुण्डे
केह हाते-पाये बाँधे केह बाँधे गले * गला टानि बाँधे केह लोहार शिकले
राक्षसेरे आज्ञा दिल वीर इन्द्रजित् * बापेर आगेते लह वानरे त्वरित्
एत ब'लि इन्द्रजित गेल आगुयान * बड़ बड़ वीर गिया बेड़े हनूमान
कोपे तोल पाड़े करे हनू यथोचित * सत्तर योजन वीर हय आचम्बित
सात लक्ष राक्षसेते टानाटानि करे * तथापि ताहार एक रोम नाहि सरे
देखि हनुमानेर से विक्रम विशाल * चमत्कृत हइलेक राक्षसेर पाल
हनूमान ब'ले तोरा बाजारे दामामा * राज सम्भाषणे जाब थान्दे कर आमा

१ कम २ टेढ़ा।

दो० कमे जँजीरन कंध धरि दनु दुइ लख इकसंग।
चले, मन्द मुसकात कपि, विविध दिखावत रंग ॥ ६० ॥

जेहि दिस लचत[1], देत कपि भारा * डगमगात दनु हाहाकारा
असुर सात लख खैंचत कीसा * अचल, न टरत द्वार दससीसा
नाँघत[2] कपि न, दानवन त्रासा * खबरि वेगि दिय दसमुख पासा
कपि दुरंत केहु विधि हम बाँधा * द्वार समात न तन, यह बाधा
द्वार भंगि, बोलत दससीसा * आनहु बेगि, लखहुँ कम कीसा
आयसु पाय निसाचर धाये * द्वार तोरि पथ बेगि बनाये
भञ्जत सात तदपि इक द्वारे * तहँ कपि अचल टरति नहिं टारे
पुनि किय मारुति स्वतः प्रवेसू * सचिव - सुहृद बिच जहँ लंकेसू
सुत दसकंध पाँति की पाँती * सुरपुर सुर सोहत जेहि भाँती
सुर-बालन बिच रावन बासू * नभ नखतन बिच चन्द्र प्रकासू
वर-विधि[3] लहि दुर्जेय दनुराई * बन्दी रवि-ससि[4] जहँ भय पाई
मञ्जुल जहँ दश मनि दशसीसा * ढाल - कवच धारे भुजबीसा
रावन - विभव नयनतर आवा * कपि समंक उर रघुपति ध्यावा
सचिव प्रहस्त कहत हे वानर! * केहि आयसु आगम केहि अनुचर?

बड़ बड़ सागि दिय हनूमाने बाँधे * दुइ लक्ष राक्षस ताहारे करे काँधे
राक्षसेर काँधे वीर मने मने हासे * कत रंग करे वीर मनेर उल्लासे
एइ भिन हनूमान देय किछु भ'र * राख राख बलिया राक्षस देय रड़
सात लक्ष राक्षसेते टानाटानि करे * अचल हइल हनू रावणेर द्वारे
बाड़िते ना पारे तारे पाप सबे त्रास * सत्वर कहिल वार्त्ता रावणेर पाश
कष्टेते हइल बन्दी से दुष्ट वानर * ना आसे शरीर तार द्वारेर भितर
हासिया रावण तारे कहे मंविधान * द्वार भागि झाट आन देखि हनूमान
राजार आज्ञाय दूत आइल सत्वरे * द्वार भागि पथ करे आनिवार तरे
सात द्वार भागे तारा एक द्वार रय * अचल हइल हनू नाहि प्रवेशय
आपन इच्छाय गेल पवननन्दन * पात्र मित्र सह यथा ब'सेछे रावन
राजार कुमारगण बसे सारि सारि * बसियाछे येन सबे अमर नगरी
चारि भिते देवकन्या मध्येते रावण * आकाशेर चन्द्र जेन बेडि तारागण
रावण ब्रह्मार वरे कारे नाहि गने * चन्द्र सूर्य्य भये थाके रावण सदने
दशशिरे शोभातार करे दशमनि * सम्मुखेते परियाछे सर्व्वांग दापनि
देखिल वानर गिया रावण सम्पद * त्रास पेये हनुमान भावे रामपद
प्रहस्त ब'ले वानरा तुइ काहार अनुचर * काहार बोले आइलि हेथा लंकार भितर

---

१ झुक पड़ते थे २ द्वार से निकल नहीं पाते थे ३ ब्रह्मा का वरदान ४ सूर्य-चन्द्रमा
५ तरस खा कर।

कहत पवनसुत, तब नरनाथा ❋ कहँ निवसति दनुपति दशमाथा
दुर्मुख कपि ! लखु इतै दसानन ❋ कहत प्रहस्त फेरि कपि - आनन

छं० रहेउ दसानन हेरि पवनसुत कहेउ टेरि इमि बानी ।
लखे विविध रावन, तिन महँ तुम कवन ? रहेउँ पहिचानी ॥
इन्द्रसुवन कपिराज बालि की कोख[1] दबा दनुराई ।
एक लंकपति सहसबाहु गहि अंक सदन लै जाई ॥
बसि घुड़सार कण्ठ - भुज बन्धन तरसि पुलस्त्य छुड़ावा ।
बलि के धाम एक दसमुख पुनि त्रसित दरस मैं पावा ॥
सबन किन्तु छबि एक, मुण्ड दस, बीस नयन, भुज बीसा ।
सकल एक अथवा अनेक कहु को तुम लंक-अधीसा ? ॥

दो० कपि-रचना सुनि बिहँसि पुनि पूछत इमि लंकेस ।
सुर, गन्धर्व, मनुष्य केहि तोहिं पठयेउ दनु-देस ॥
को तैं सत्य बखान करु जो चाहति कल्यान ।
वृथा असत बकवाद तो, लेहुँ छीन तव प्रान ॥ ६१ ॥

रावण द्वारा हनुमान की दण्ड-व्यवस्था

रे कपि ! कहु, किमि सत्य कहानी ❋ केहि चर कहु, न संक उर मानी
दै परिचय निज प्रान बचावै ❋ असत[2] बानि तव प्रान नसावै
राम - दूत मैं पवनकुमारा ❋ छबि - कानन मैं तोर उजारा[3]

हनूमान बले तोर आर कि दिब परिचय ❋ तोरदशमुख रावणराजा सेइबा कोथा रय
प्रहस्त धरिया दाड़ि विराय हनूमाने ❋ देखरे वानरा चेये राजा दशानने
रावणेर पाने चाहि हनूमान ब'ले ❋ तुइ से रावण राजा देखेछि कोन काले
इन्द्रेर नन्दन छिल कपिराज बालि ❋ बारेक देखेछि तोरे तार कक्षतलि
आर बार देखेछि तोर अर्जुनेर काले ❋ हाते गले बाँधि राखे तोरे अश्वशाले
आसिय पुलस्त्य मुनि घुचाय बन्धन ❋ आर बार देखेछि तोरे बलिर भवन
सेइमत देखि तोरे करि अनुमान ❋ दश मुण्ड कुड़ि आँखि हात कुड़िखान
हासिते लागिल रावण हनूर कथा शुने ❋ हनूमाने जिज्ञासा करे तबे दशानने
काहार बोले एलि रे तुइ राक्षसेर देशे ❋ देवता गन्धर्व्व किंवा पाठाय मानुषे
स्वरूपेते बलिस यदि घुचाव बन्धन ❋ मिथ्या यदि बलिस तोर बधिब जीवन

रावण कर्तृक हनूमानेर विचार ओ दण्ड-विधान

दशानन बलिछे तोमार नाहि डर ❋ सत्य करि कह रे काहार तुमि चर
स्वरूपेते कह यदि घुचाव बन्धन ❋ मिथ्या यदि कह तबे बधिब जीवन
हनूमान ब'ले आमि श्रीरामेर दूत ❋ भांगिलाम तोमार से कानन अद्भुत

१ बगल मे २ झूठी ३ उजाड़ा ।

बँधेउँ सहज तव दरसन हेतू * बरनहुँ सकल चरित - रघुकेतू
दशरथ भुवन ख्याति बिस्तारी * जेठ राम सुत, सिय तिन नारी
सूने-राम हरी तुम सीता * सिय हित पुनि सुकण्ठ सन प्रीता
तुम ढिग-बालि[1] पराभव पावा * बालिहिं यमपुर राम पठावा
ब्रह्म-अस्त्र मम पहँ असमर्था * आयेउँ तोहिं बुझावन अर्था
राम-सुकण्ठ युक्ति मन धरहीं * तव अरु कुम्भकर्ण बध करहीं
मेघनाद पुनि लछिमन मारैं * कपिगन सकल दनुज संहारैं
रघुपति प्रन तव जीवन हरई * मम कर[2] बध, रघुपति-प्रन टरई
नतरु करत तव खण्ड विखण्डा * पूँछ - अघात छत्र - नवदण्डा
गर धरि रसरि[3] बाँधि घसिलावत * एक दण्ड दस मुण्ड गिरावत
दसकन्धर सुनि पवनकुमारा * दनुजन प्रति मारन ललकारा
शिरच्छेद ! गर्जत दससीसा * कहत विभीषण धरि पद सीसा
सदा दूत - बध निपट अनीती * जग मों मिटै दूत कै रीती

दो० कहि मुनि निज बानी तथा दूत यथा मुख-बानि ।
चर[4] अबध्य, पुनि तासु बध, अनुचित सदा बखानि ।।
निज प्रभु करत बखान चर, उचित न तेहि प्रति रोष ।
गुन गावत निज स्वामि हित, तिन कहँ अनुचित दोष ।। ६२ ।।

पर - कीरति - बखान जनि दोषू * चर तजि उचित चर-पतिहिं रोषू

बन्धन मानिनु तोमा देखिवार मने * श्रीरामेर कथा कहि शुन सावधाने
सबे शुनियाछ दशरथ महीपति * ज्येष्ठ पुत्र राम ताँर बधू सीता सती
अगोचरे रावण हरिले तुमि सीते * सुग्रीवेर सह मैत्री सीता अन्वेषिते
ये बालि राजेर स्थाने तव पराजय * से बालिरे मारिलेन राम महाशय
तव ब्रह्म अस्त्र मोर कि करिते पारे * बन्धन मानिनु किछु बुझावार तरे
राम सुग्रीवेर युक्ति सविशेष जानि * कुम्भकर्ण आर तोरे बधिवेन तिनि
इन्द्रजिते मारिवेन ठाकुर लक्ष्मण * आर यत राक्षसे मारिबे कपिगण
एइ सत्य करिलेन सुग्रीवेर आगे * आमि तोरे मारिले ताँहार सत्ये भागे
मोर आगे धरियाछ नव छत्र दण्ड * लांगूलेर बाड़िते करिबे खण्ड खण्ड
लइया जाइब तोर गले दिया दड़ि * भागिब दशटा मुण्ड मारि एक नड़ि
एतेक ब'लिल यदि पवननन्दन * वानरे काटिते आज्ञा दिल दशानन
काट काट ब'लि घन डाकिछे रावण * माथा नोयाइया ब'ले भाइ विभीषण
दूतके काटिले राजा बड़ अनाचार * आजि हैते घुचिवे दूतेर व्यवहार
आत्मकथा परकथा दूतमुखे शुनि * काटिते एमन दूत अनुचित वानी
परेर बड़ाइ करे अपराधी किसे * जार बड़ाइ करे तारे मारिते आइसे

---

१ बालि के हाथों २ मेरे हाथों ३ रस्सी ४ दूत ।

चर-ताड़न केवल शिर - मुण्डा * उचित न अन्य दूत हित दण्डा
युक्ति - विभीषण कपिहिं जियावा * आयसु पुनि दसकन्ध सुनावा
पूँछ जारि पठवहु कपि देसू * बिहँसइँ जाति-बन्धु लखि बेसू
रावन - आयसु यहि विधि पाये * जारन पूँछ, सकल जुरि धाये
कुपित पवनसुत पूँछ पसारा * किय योजन पचास विस्तारा
लखि लांगूल[1] सभय दससीसा * डपटत पुनि-पुनि धरु ! यहि कीसा
बालि-पूँछ बँधि दुर्गति पाई * लखि कपि-पूँछ याद मो आई
तीनि लच्छ मिलि भट निसिचारी * धरनी कपि लांगूल प्रसारी
बसन तीस मन सबन बटोरा * एक लपेटनि[2] परति न पूरा
लंका बसन जहाँ लौं पाई * बाँधि तैल - घृत सिक्त[3] बनाई
स्निग्ध[4] विशाल पूँछ छिति छाई * धधकि उठी सो पावक[5] पाई
हँसेउ ठठाय, निरखि, हनुमाना * निज कुबुद्धि दनु स्वयं नसाना
सिय-वर अंग न व्यापत तापा * हेरत चहुँ कपि, त्रास न व्यापा
रावन कहत, दुष्ट कपि बीरा * करहु सबेग बहिर्प्राचीरा[6]
नगर घुमावौ गलिन मँझाई * लंक नारि-नर निरखहिं आई

दो० जरत पूँछ, रसरी कमर, कपि अति बदन कराल ।
उमड़ेउ कौतुक देखिबे, चहुँ जन-सिन्धु विशाल ॥ ६३ ॥

दूतेर शासन आछे मुड़ाइते मुण्ड * इहा भिन्न दूतेर नाहिक अन्य दण्ड
एइ युक्ति ब'ले हनू पाइल जीवन * लेज पुड़ाइते आज्ञा करिछे रावन
लेज पुड़ाइया एरे पाठाउ से देशे * लेज पोड़ा देखि जेन ज्ञाति बन्धु हसे
एक आज्ञा करिलेक राजा लंकेश्वर * लेज पोड़ाइते सबे आइल सत्वर
कुपित हइल वीर पवननन्दन * बाड़ाइया दिल लेज पंचाश योजन
लेज देखि रावणेर हैल बड़ डर * धर धर डाक छाड़े राजा लंकेश्वर
हयेछिल जे दुःख बालिर लेज टेने * लेज देखि रावणेर ताहा पड़े मने
तिन लक्ष राक्षस चापिया लेज धरे * सबे मिलि लेज फेले भुमिर उपरे
त्रिश मन वस्त्र सबे आनिल निकटे * एक वस्त्र आने एक बेड़े नाहि आँटे
लंकार मध्येते छिल यतेक कापड * घृत तैल दिया ताहा करिल जावड़
कापड़ तितिल लेज पड़िल भूतले * लेज अग्नि दिते सब्र दप् दप् ज्वले
लेजे अग्नि दिल देखि हनूमान हासे * आपन बुद्धिते बेटा पड़ सर्व्वनाशे
जानकीर वरे अग्नि नाहि लागे जाय * लेजे अग्नि दिते हनू चारिदिके चाय
रावण बलिछे दुष्ट कपि महावीर * झटिति इहार कर प्राचीर बाहिर
कूलि कूलि लैया बेड़ाउ चातरे चातरे * स्त्री पुरुष देखे जेन लंकार भितरे
लेजे अग्नि दिलेक कांकाले दिल दड़ि * देखिवारे सकले आइल ताड़ाताड़ि

१ पूँछ २ लपेट में ३ तर किया ४ तर ५ अग्नि ६ चहारदीवारी के बाहर ।

छं० कोउ कहत हने रन मोर नाथ, कोउ कहत बन्धु हनि किय अनाथ।
केहु रन-जुझार नन्दन निपात, कोउ कहत हने कुल गोत-जात[1] ॥
केहु बन्धु-बान्धव प्रति गुहार, कपि के प्रहार सब छार-खार।
पुनि परत नयन तर धरि पछार[2] कहुँ शैल शूल मुद्गर प्रहार ॥
हनुमतहिं हेरि कम्पन कराल, किमि कवन धरै कपि यहु विशाल।
विधि दहिन, मिलेउ यहि सों उबार[3], जेहि दीठ करि सकै सब सँहार ॥
सुनि सबन युक्ति कपि मृदुल हास, शठ! कहँ उबार? हेरहु विनास।
कपि गलिन गलिन जेहि छन मँझाय, सिय तीर चेरिगन कहेउ जाय ॥

जो कपि तव समीप बतराना[4] * जरत पूँछ सो बन्दि[5] लखाना
सुनि सम्वाद विलग मनु प्राना * पूजत पावक[6] सहित विधाना
जो मैं सती काय मन वाचा * तौ हनु-अंग न आवै आँचा
अनल[6] पूजि कलपत सिय रानी * सिय दुख देखि भई नभ-बानी
कहति विरञ्चि सीय तजु चिन्ता * तजहु सकल कपि प्रति दुश्चिन्ता
तव वर पाय कपिहिं जनि शंका * आजु अनल कपि जारहि लंका
सुरगन आय सुकौतुक लखहीं * हर्ष - विषाद हेतु जनि तुमहीं
विधि के वचन शमन[7] वैदेही * कृत्तिवास मञ्जुल पद एही

केह ब'ले स्वामी मैल सग्रामे भितर * केह ब'ले मरिल आमार सहोदर
केह ब'ले पड़िल बान्धव बन्धु ज्ञाति * केह ब'ले पुत्र मोर पड़ योद्धापति
इष्ट बन्धु कुटुम्ब मारिल सबाकारे * जर्ज्जर हइल सब इहार प्रहारे
इटाल-पाटाल मारे या' देखे डागर * शेल शूल मारे आर लोहार मुद्गर
हनूमाने देखिया सकले काँपे डरे * इहारे के धरे आजि सभार भितरे
भाग्येते इहार ठाँइ पाइनु निस्तार * देखिबा मात्रेते सब करिबे संहार
शुनिया सबार युक्ति वानरेर हास * एखन जाइबि कोथा करि सर्व्वनाश
कुलि कुलि लैया फिरे नगरे नगरे * चेड़ी सब वार्ता कहे सीतार गोचरे
जे वानर सने तुमि कहिले काहिनी * लेजे अग्नि गने दड़ि करे टानाटानि
कथा शुनि सीता देवी मृत्यु हेन गने * अग्नि ज्वालि पूजे सीता विविध विधाने
कायमनोवाक्ये यदि आमि हइ सती * तबे तव ठाँइ हनू पावे अव्याहति
अग्नि पूजि सीतादेवी करिछे क्रन्दन * जानकीरे डाक दिय ब'ले देवगन
ब्रह्मा बलिलेन शुन उगो देवि सीता * वानरेर जन्य तुमि ना हउ चिन्तिता
तोमार वरेते त'र कारे नाहि शंका * एखनि जे हनूमान पोड़ाइबे लंका
कौतुक देखिते आइलाम देवगण * हरिषे विषाद तुमि कर कि कारण
क्रन्दन संवरे सीता ब्रह्मार आश्वासे * रचिल सुन्दरकाण्ड कवि कृत्तिवासे

१ कुल-जाति २ पछाड़ना ३ छुटकारा ४ बात करता था ५ कैदी ६ अग्नि ७ शान्त।

हनुमान कर्त्तृक लंकादहन

छं० कपि अंगमान पर्वत प्रमान, सो समिटि भयेउ लघु नकुल मान ।
कर रहे बन्धनन दनुज हेरि, हनु बहिर[1] होत लागी न बेर ॥
कसि रज्जु लिये मारुति विशाल, भौंचकित देखि ते दनु कराल ।
हनुमन्त गाछ लै बेगवन्त शत-शतक हनत निमिचर अनन्त ॥
केहु पूँछ चपेटत लेत प्रान, जरि लोप मूछ-दाढ़िन निसान ।
चम्पत[2] सुरारि[3] नहिं सुधि पछारि, कर लिए विटप कपि राजद्वार ॥
सोचत निहारि चहुँ बार बार, किमि करहिं लंक जरि छार खार ।
रवि किरन सरिस चमकत ललाम, झट अनल समर्पत जवन धाम ॥

लपट पुच्छ चपला घन माहीं ❋ भवन-शिखर कपि निमिष[4] लखाहीं
पवन सहाय पवनसुत कीन्हा ❋ पितु बल अनल द्विगुण बल दीन्हा
सुनि सुत-विपति पिता जनि धावै ❋ तौ जग अति अनरीति कहावै
हनहिं सहाय पवन उनचासा ❋ फाँदि अँटारिन अगिनि प्रकासा
जारत एक जरत बहुधामा ❋ बोल न मुख कोउ काहु न कामा
छुवत भवन जेहि अनल तरंगा ❋ अर्द्ध नारि नर भस्मित अंगा
भागत, होस न, कतहुँ उघारे[5] ❋ पूँछ लपेटि अनल पुनि आरे
छोट बड़े सब जरत समाना ❋ लिये अंग तिय विनसैं नाना

लंका-दहन

पर्व्वत प्रमान छिल सेइ हनूमान ❋ घुचाइते बन्धन से नेउल प्रमान
राक्षसेर हाते रहे सकल बन्धन ❋ माथा गुजि बाहिरिल पवननन्दन
हनूमाने बेड़ि छिल यतेक राक्षसे ❋ ताहार विक्रमे देखि पलाय तरासे
हाते गाछ हनूमान धाय रड़ारड़ि ❋ गाछेर बाड़िते मारे दश बिश कुड़ि
कारो प्राण लय मारि लांगूलेर बाड़ि ❋ लेजेर अग्निते कारो दग्ध गोप दाड़ि
पलाय राक्षस सब उलटिना चाहे ❋ हाते गाछ हनूमान राजद्वारे रहे
महावीर हनूमान चारिदिके चाय ❋ लंकापुरी पोड़ाइते चिन्तिल उपाय
सब घर ज्वले येन रविर किरन ❋ हेन घरे अग्नि वीर करे समर्पण
मेघेते विद्युत येन, लेजे अग्नि ज्वले ❋ लाफ दिया पड़े वीर बड़घरेर चाले
पुत्रेर साहाय्य हेतु वायु आसि मिले ❋ पवनेर साहाय्ये द्विगुण अग्नि ज्वले
विपदे पड़िले पुत्र पिता आसि तार ❋ साहाय्य करिबे नहे विचित्र व्यापार
उनपञ्चाशत वायु हय अधिष्ठान ❋ घरे घरे लाफ दिया भ्रमे हनूमान
एक घरे अग्नि दिते आर घर ज्वले ❋ के करे निर्व्वाण तार केबा कारे ब'ले
अग्निते पुड़िया पड़े बड़ घरेर चाल ❋ अर्द्धेक स्त्री पुरुषेर दग्ध गायेर छाल
उलंग उन्मत्त केह पलाय उभरड़े ❋ लेजे जड़ाइया तुलि अग्निते आछाड़े
छोट बड़ पुड़िया मारिल एक काले ❋ राक्षस मारिल कत स्त्री लइया कोले

१ बाहर २ रफूचक्कर हो गये ३ देवताओं के शत्रु दानव ४ पलक मारते ५ नग्न ।

दो० कलपत त्यागे नारि-सुत जरे विविध बहुरूप।
दग्ध भये मुखलोम[1] बहु मकुन[2] रूप विद्रूप ॥ ६४ ॥

लंक सरोवर बहु छबि पाये * फाँदि निसचरिन प्रान बचाये
सलिल उपरि तिन सीस सुहाये * सरवर मनहुँ सरोरुह[3] छाये
रहि सुदूर कपि सुभट निहारी * पूँछ अगिनि केशावलि जारी
नीर गात, मुख बहिर अनूपा * दग्ध केस छबि सीस बिरूपा
जो भय अनल, दुबकि[4] जल रहहीं * जलमय उदर कुअवसर मरहीं
कपिहिं नारि-बध अरुचि न आई * तीनि लाख निसचरिन नसाई
रत्नधाम बहु छबि आगारा * अगनित राजसदन पुर जारा
चहुँ दिसि अगिनि भूधराकारा * कृमि-पतंग, हय-गज किय छारा
दसमुख-सदन मयूर[5] सुहावन * जरी पुछारि कुरूप अभावन
कनक लंक छन भसम बनाये * नृप पुनि सचिव न गृह बचि पाये[6]
कुम्भकर्ण पुनि गेह विभीषन * तजि किय छार सकल ताही छन
वर विभीषनहिं दिय चतुरानन * तासु निकेत बचेउ यहि कारन
दशमुख-अनुज[7] विवस सुख-शयना * सोवत अति प्रगाढ़ निज अयना
जरत धाम किमि विनसत प्राना? * विन रन तासु न मृत्यु-विधाना

केह वा पुड़िया मरे भार्य्या पुत्र छाड़ि * काहारो माकुन्द मुख दग्ध गोंपदाड़ि
लंकामध्ये सरोवर, छिल मारि सारि * ताहाते नामिल यत राक्षसेर नारी
सुन्दर नारीर मुख नीरे शाभा करे * फुटिल कमल येन सेइ सरोवरे
दूरे थाकि देखे हनूमान महाबल * लेजेर अग्निते तार पोड़ाय कुन्तल
सर्व्वांग जलेर मध्ये जागे मात्र मुख * अग्निते पोड़ाय मुख देखिते कौतुक
त्रासे डुब दिल यदि जलेर भितरे * जल दिया फाँफर हइया सबे मरे
स्त्री वध करिया भावे पवननन्दन * बधिलाम तिन लक्ष नारीर जीवन
रत्नेते निर्म्मित घर अति मनोहर * लेखा जोखा नाइ यत पोड़े राजघर
पर्व्वत प्रमाण अग्नि चतुर्द्दिके बेड़े * हस्ति अश्व पोषापाखी ताहे कत पोड़े
कौतुकेते रावण मयूर पक्षी पोषे * लेज पोड़ा गेल से पेखम धरे किसे
स्वर्णमयी लंकापुरी तिलेकेते पोड़े * राजघर पात्रघर किछु नाहि एड़े
अन्य अन्य घर हनू पोड़ाय सकल * बाँचे कुम्भकर्ण विभीषणेर केवल
ब्रह्मावरे विभीषण गृह नाहि पोड़े * कुम्भकर्ण गृह बाँचे गाछेर आउड़े
गृहमध्ये कुम्भकर्ण निद्राय कातर * घरे अग्नि लागिले मारित निशाचर
युद्ध करि मारिबारे निर्व्वन्ध जे आछे * ताइ अन्यघर पोड़े तार घर बाँचे

१ मूछ-दाढ़ी २ मकुना (पूँछ-दाढ़ी-विहीन) ३ कमल ४ डुबकी लगा कर छिप जायँ ५ मोर ६ राजन्य तथा मंत्री किसी के घर न बचे ७ कुम्भकर्ण।

परि तरु ओट बचेउ यहि कारन * शेष सकल गत उदर-हुताशन[1]
लंकपुरी जरि अखिल नसानी * हाहाकार करत सब प्रानी

दो० मरत सकल जरि अनल चहुँ, तहँ किमि सिय-कल्यान ।
राम-प्रिया-निर्वान उर, सोचि विकल हनुमान ।। ६५ ।।

बल-विक्रम धिक् मम चतुराई * धिक् जीवन, जनि लखत उपाई
तरेउँ हेतु सिय सिंधु अपारा * दुसह निरखि तेहि अगिनि मझारा
परि किमि कुमति लंक मैं जारी * प्रभु सेवक प्रभु-तीय उजारी[2]
सुत ह्वै दग्ध कीन निज जननी * रहै त्रिलोक अमर अपकरनी
मकर-मच्छ मम करहुँ अहारा * विनसउँ नतरु अनल परि छारा
भेटहुँ सिन्धु कि अगिनि-प्रवेसू * मरहुँ इतै पुनि लखहुं न देसू
तब लौं सुरन कीन नभबानी * सुनु कपीस ! सकुसल सियरानी
अनल अगम जहँ सिय, निस्संका * हे कपि ! समुद जरावहु लंका
देव-कथन हनुमत बल पावा * उछरि-उछरि[3] चहुँ पुरी जरावा
लंका-दहन, दनुज परिवारा * भसम अमित पावक सब जारा

सीता के समीप हनुमान का पुनरागमन

जोजन द्विशत अनल नभ छावा * सिय ससंक कपि प्रान नसावा
उर न धीर, विलपत वैदेही * 'सरमा' दनुजि सान्त्वना देही

सब लंका पोड़ाइया करे छार खार * लंकार सकल प्राणी करे हाहाकार
हनूमान बले सीता हइल विनाश * हिते विपरीत करि एक सर्व्वनाश
चतुर्दिके अग्नि ज्वले मरे सर्व्व प्राणी * रक्षा ना पाइल बुझि रामेर रमणी
कि करिनु धिक् धिक् आमार जीवन * बल बुद्धि विक्रम आमार अकारण
ये सीतार हेतु आमि पारावार तरि * सेइ सीता पोड़ाइया केन प्राण धरि
कोन कर्म्म करि पोड़ाइया लंकापुरी * पोड़ाइ सेवक ह'ये रामेर सुन्दरी
जननीरे दग्ध करे हइया तनय * एइ कथा व्यक्त रवे त्रिभुवनमय
हांगर कुम्भीर मोरे करुक आहार * अग्निते पुड़िया किम्बा एइ छारखार
सागरेते किंवा करि अग्निते प्रवेश * एखानि मरिब आमि ना जाइब देश
देवगण डाकि ब'ले हनूमान शुने * सीतादेवी रक्षा पाय ना पोड़े आगुने
तुमि लंका दग्ध कर मनेर हरषे * जन्म करि फेल लंका राखियाछ किसे
देववाक्ये वानर साहसे करि भर * लाफे लाफे पोड़ाइल यत सब घर
पुड़िया मरिल यत राक्षस-राक्षसी * कृत्तिवास रचे लंका हय भस्मराशी

सीतार निकटे हनूमानेर पुनरागमन

द्विशत योजन अग्नि व्यापिल गगन * सीता भावे पुड़ि मैल पवननन्दन
विलाप करेन सीता मने नाहि क्षमा * ताँहाके बुझाय तबे राक्षसी सरमा

१ अग्नि के पेट में २ उजाड़ दिया, नष्ट कर दिया। ३ उछल उछलकर।

कपि कुवचन रावनहिं सुनावा * कपिहिं लंकपति बन्दि[1] बनावा
मरकट-पुच्छ[2] बहोरि जराई * अगिनि लंक सो घर घर छाई
आँच न अंग, कुशल बलवन्ता * तब लौं प्रकट भयेउ हनुमन्ता
लंक जारि प्रस्तुत सिय तीरा * पूँछ बुझायेउ वारिधि-नीरा

दो० विकल जलधि-जल बुझत जनि अनल प्रबल अधिकाय ।
विकल अनिल-सुत[3] सीय पहँ पूछत सीस नवाय ॥ ६६ ॥

अचरज अतिव विदित नहिं कारन * शमन होय किमि जननि ! हुताशन[4]
देहु पूँछ मुख, सुत ! तत्काला * लहि मुख-सुधा नसै सब ज्वाला
बुझत न पावक ताप अनन्ता * मुख लांगूल[5] लीन हनुमन्ता
आनन[6] झरसि[7], शमन भइ आगी * सागर-तट सोचत दुखपागी
लखि प्रतिबिम्ब दग्ध मुख नीरा * कहेउ बहोरि आय सिय तीरा
जननि-काज किय मुख-छबि हानी * हसैं जाति जन, मोहिं गलानी
सकल जाति-मुख होयँ विरूपा * असित[8], कहति सिय, तव अनुरूपा
सुनि प्रसन्न, कपि आयसु चाहा * आवैं तबहिं अवध नरनाहा
वैदेही पुनि कहति स-नेहा * आहत ताप-अनल तव देहा
निवसु तात ! कछु दिन मम तीरा * लुकि[9] अशोकवन विनसइ पीरा
अनुचित बानि, लखन श्रीरामा * मम बिन किमि आवहिं यहि धामा

बन्दी हइयाछे शुनियाछि से काहिनी * राजारे से बलिलेक दुरक्षर वाणी
लेजे अग्नि देल तार पोड़ावार तरे * सेइ अग्नि हनूमान दिल घरे घरे
हनूमान नाहि पोड़े आछे से कुशले * लका पोड़ाइया हनू एन हेनकाले
सीतार निकटे गिया पवननन्दन * फेलिल लेजेर अग्नि सागरे से क्षण
निर्व्वाण ना हय अग्नि आरो ज्वले जले * सीतार निकटे हनू जोड़ हाते बले
ना जान कि जान किगो इहार कारण * केमते निर्व्वाण हबे एइ हुताशन
सीता बले मुखामृत देह हनूमान * एखनि अग्निर ज्वाला हइबे निर्व्वाण
तबे हनू ह'ये अति ज्वालाय कातर * ज्वलंत लांगूल पूरे मुखेर भितर
निर्व्वाण हइल ज्वाला पुड़े गेल मुख * सिन्धु तीरे गेल हनू पेये मने दुख
जले मुख देखि वीर मना गुणे ज्वले * पुनरपि जानकी निकटे आसि बले
तव कार्य्ये आसि मागो पुड़े गेल मुख * ज्ञाति वर्ग हासिबेक से जे बड़ दुःख
सीता बले ज्ञातिवर्ग केह नहे छाड़ा * मन वाक्ये सकलेइ हबे मुख पोड़ा
हनूमान बले, तबे आसि गो जननि * आमि गेले आसिबेन राम रघुमणि
तोमार अग्निते तनु ह'यछे कातर * किछु दिन थाक बाछा आमार गोचर
जानकी बलेन तबे सस्नेह बचने * लुकाइया थाक हेथा अशोक कानने
हनूमान बले माता ब'ल ना एमन * आमि गेले आसिबेन श्रीराम लक्ष्मण

१ कैदी २ बानर की पूछ ३ पवनसुत ४ अग्नि ५ पूँछ ६ मुख को ७ झुलसा कर ८ काले ९ छिपकर ।

इत विलम्ब तौ बिनसइ काजू * द्रुति[1] आनहुँ सुकण्ठ कपिराजू
चढ़ि मम कंध लखन रघुराई * मरहिं छलांग कीस - समुदाई
केते तव सम कपि बलवन्ता * राम - कटक, बरनहु हनुमन्ता ?
इत - उत की[2] अनेक कहि बाता * बिहँसि कहत कपि सुनु सिय माता
मों सन अधिक सुभट बहु वीरा * मैं लघुतम[3] सुकण्ठ के तीरा

दो० हीन कर्म, अति दीन कपि, सुभटन गिनती नाहिं ।
पायक समुझि सुकण्ठ मोहिं, इत पठयेउ तव पाहिं ॥
तबहुं हनेउँ लख-लख दनुज, को बरनै प्रभु-बान[4] ।
तीस कोटि सेनिप[5] सुभट आवहिं कीस प्रधान ॥ ६७ ॥

तव दुख मातु वेगि अवसाना[6] * तव पद - पायक मैं हनुमाना
सेवक - वचन धरहु उर माता * प्रभु - कर द्रुत लंकेस निपाता
सुघरी[7] सहित लखन - सुग्रीवा * जीतहिं लंक राम बलसीवा
भय परितजहु विषाद न कामा * पवनपूत पुनि करत प्रनामा
दीन्हेउ सिय असीस हरषाई * कृत्तिवास सुचि[8]-कथा सुनाई

लंका से हनुमान की वापसी

राम - प्रतीति[9] हेतु हनुमाना * सिय-मणिमस्तक सहित पयाना
लहि पद-चाप शिला-तरु भंगे * उठि तट-जलधि लंघ गिरि शृंगे

बिलम्ब हइले मम नष्ट हबे काज * आमि गेले आसिबे सुग्रीव महाराज
लाफ दिया पार हबे यत कपिगण * मोर पृष्ठे पार हबे श्री राम लक्ष्मण
जानकी ब'लेन शुन पवननन्दन * तोमा हेन कपि आर आछे कतजन
से कथा शुनिया वीर हनूमान हासे * सीता के बुझाय वीर अशेष विशेषे
आमार अधिक वीर आछे बहुतर * आमा छोट सुग्रीवेर नाहिक वानर
सकलेर क्षुद्र आमि क्षुद्र कर्म्म करि * आमा के पाठान ताइ एइ लंकापुरी
वीर मध्ये यद्यपि आमारे नाहि लेखे * तथापि राक्षसगणे मारि लाखे लाखे
त्रिशकोटि सेनापति आसिबे प्रधान * आपनि जानह माता श्रीरामेर वाण
शीघ्र ह'ब ठाकुराणि दुःख अवसान * चरणसेवक तव आछे हनूमान
श्रीरामेर हाते ध्वस्त हइबे रावण * मने करि राख मागो हनूर वचन
आसिवेन शुभ क्षणे सुग्रीव लक्ष्मण * हइबेन लंकाजयी राम नारायण
भय ना करिह माता जनकनन्दिनी * एत बलि प्रणमिल ह'ये जोड़पाणि
आनन्दिता सीता हनूमानेर आश्वासे * गाइल सुन्दरकाण्ड कवि कृत्तिवासे

लका हइते हनुमानेर प्रत्यावर्त्तन ओ वानर सैन सह स्वदेश यात्रा

सीतार मस्तक मणि रामेर सन्देश * मेलानि पाइया हनू चलिलेन देश
ताहार चरण भरे शिला वृक्ष भांगे * समुद्र तरिते उठे पर्व्वतेर शृंगे

---

१ शीघ्र ही २ इधर-उधर की ३ सब से छोटा ४ राम के बाण की महिमा
५ सेनापति ६ नष्ट होंगे ७ शुभ घड़ी में ८ पवित्र ९ विश्वास ।

गिरि सों उठि पुनि सिन्धु निहारा * इक छलांग जहँ गगन प्रसारा
सिंहनाद किय प्रमुदित वीरा * भयेउ प्रतिध्वनित उत्तर तीरा
जाम्बवान तब हाँक लगावा * मनहु सिद्धि लहि हनुमत आवा
विक्रम, जिमि रव[1] घोर प्रतीता * निश्चित मनहु लखी तिन सीता
गमन पवन-गति, आगम शेषू * अर्द्ध सिन्धु किय पार निमेषू
बन्दि सुदूर गिरिन बजरंगा * पार कीन गिरि पर गिरिशृंगा
मारुति दरस जुरे सब कीसा * कहत धन्य तुम धन्य कपीसा
बालितनय प्रति प्रथमहिं बन्दे * जाम्बवान पुनि, अमित अनन्दे
भेंटे सखा, कपिन उरलावा * लहि फल-फूल, कुतूहल छावा

दो० अंगद सभा विराजहीं वानर - कटक अपार।
जाम्बवान जिज्ञासहीं, बरनहु पवनकुमार ॥ ६८ ॥

कनकलंक किमि, किमि लंकेसू * केहि विधि लखी सिया तेहि देसू
सिय प्रति किमि रावन-व्यवहारू * किमि तहँ जनकलली आचारू
विस्तर[2] सकल बरनु हनुमाना * किमि निसिचरन, लहेउ कपि ! त्राना
तव प्रति चिन्ता रही विसेसू * कार्जसिद्धि विन दरस न देसू
बचन - ऋच्छपति सुनि हनुमाना * हेरि अंगदहिं सकल बखाना
शत योजन वारिधि[3] विस्तारा * झेलि संकठन उतरेउँ पारा

पर्व्वते उठिया वीर सागर नेहाले * एक लाफे उठे वीर गगनमण्डले
सिंहनाद छाड़े वीर हरषित मुखे * सिंहनाद ताहार उत्तर कूले ठेके
डाक दिया तखन बलिछे जाम्बवान * सर्व्व कार्य सिद्ध करि आसे हनूमान
जेमत विक्रमे आसे हेन शब्द शुणि * देखियाछे निश्चित से रामेर रमणी
पवनगमने वीर आइसे सत्वर * चक्षुर निमिषे एल, अर्द्धेक सागर
दूर हैते पर्व्वतेरे नमस्कार करे * पार हैया रहे वीर पर्व्वत शिखरे
हनूमाने देखिवार आइल वानर * ब'ले धन्य धन्य वीर पवनकोडर
आगे माथा नोवाइल कुमार अंगदे * जाम्बवान आदि बन्दे परम आह्लादे
सोसर वानर सबे करे कोलाकुलि * फल फुल योगाय सकले कुतूहली
अंगदेर सभाय जिज्ञासे जाम्बवान * केमने देखिले रावणेरे हनूमान
केमने देखिले तुमि स्वर्ण लंकापुरी * केमने देखिले तुमि रामेर सुन्दरी
सीता ल'ये रावणेर किवा व्यवहार * केमन देखिला तुमि सीतार आचार
हनूमान कह सविशेष समाचार * राक्षसेर हाते किसे पाइले निस्तार
तोमार लागिया छिल चिन्ता अतिशय * तबे देशे जाइ यदि इष्ट सिद्धि हय
एत यदि जिज्ञास करिल जाम्बवान * अंगद गोचरे वार्त्ता कहे हनूमान
शतेक योजन समुद्रेर परिसर * अनेक संकटे आमि तरिन सागर

१ गर्जन २ विस्तार सहित ३ समुद्र ।

भरमि लंक निसि अद्धे गवाँई ※ पुनि अशोक वन सीय लखाई
सिद्धि सदा अनुसरति कलेसू ※ राम तीर चलि कहहिं बिसेसू
सुनि सुभ खबरि[1] मुदित युवराजू ※ सिय-उद्धार बिलंब न काजू
लै सिय चलहिं जहाँ मनभावन ※ प्रथम गमन तहँ समय नसावन
एक पवनसुत काज बनावा ※ अब तुम सबन सुअवसर आवा
जामवन्त सुनि बिहँसि बखाना ※ कथन न केहु बिधि उचित लखाना
राम रमापति शिर सिय भारा ※ तव हाथन किमि तासु उबारा
निर्नय-सीय लेयँ रघुकेतू ※ नतु सब जतन अनादर हेतू
कपि न समर्थ तरहिं दस योजन ※ को भट करै पार शत योजन
सुनि व्यंगोक्ति[2] ऋच्छपति केरी ※ कहति बालिसुत नयन तरेरी[3]

सो० वृथा पकाये केस, सठियानी रे वृद्ध ! मति ।
देत विविध उपदेस, निज-मत[4] सबन अपंग[5] लखि ।।

दो० बाँधि पुच्छ, तव भार लहि, होहुँ सिन्धु के पार ।
कुपित अंगदहिं शान्त करि, बोले पवनकुमार ।। ६६ ।।

अंगद ! शमन, धरहु उर धीरा ※ तुम समान दुर्लभ जग बीरा
जामवन्त तव सचिव बखाना ※ समुचित सचिव - सीख - सन्माना
बालितनय सुनि आनँद साने ※ सहित सैन-कपि देस पयाने

दु-पहर रात्रि गेल तृतीय प्रहरे ※ देखिलाम अशोक कानने जानकीरे
आगे बहु कष्ट, इष्टसिद्धि हय शेषे ※ चलह रामेर ठाँइ कहिब विशेषे
शुनि शुभ समाचार हृष्ट युवराज ※ सीता उद्धारिते चाहे नाहि सहे व्याज
जानाइले श्रीरामेरे विलम्ब बिस्तर ※ सीता उद्धारिया चल रामेर गोचर
एकेश्वर हनूमान लंघिल सागर ※ तोमार साहस कर सकल वानर
अंगदेर कथा शुनि जाम्बवान हासे ※ यत किछु ब'ल मोर मने नाहि आसे
सीता उद्धारिते राजा करिलेन पन ※ तोमरा करिले ताहा घटिबे केमन
सीतार चरित्र राम करेन विचार ※ तव वाक्ये सीता निले हबे तिरस्कार
दश योजन लघिते नारिबे कपिगन ※ कोन जन तरिवेक शतेक योजन
एत यदि जाम्बवान अंगदेरे ब'ले ※ कुपिय अंगद वीर अग्नि हेन ज्वले
अकारणे बुड़ाटि पाकिल तोर केश ※ निजे बुड़ा परेरे शिखाउ उपदेश
आपनार मत देख सकल संसार ※ लेज चापि धर हे सागर करि पार
हनूमान ब'ले तुमि ना हउ अस्थिर ※ पृथिवी मण्डले नाइ तोमा हेन वीर
सर्व्व लोके ब'ले तव मन्त्री जाम्बवान ※ गंभीर मंत्रणा कभु ना करिह आन
शुनिया अगंद वीर हासे महोल्लासे ※ वानर कटक सह चले निज देशे

---

१ शुभ समाचार २ व्यंग्य वचन ३ कोप दृष्टि से ४ अपने समान ५ लाचार ।

वानरों द्वारा सुग्रीव-मधुवन-भञ्जन

छाये कपि छिति गगन असेसू * पहुँचे मधुवन चलि निज देसू
को मधुवन-छवि अतुल विलोकी * करहि प्रवेश न निज मन रोकी !
बालि भूप मधुवनहिं सवाँरे * सहस-सहस कपि जहँ रखवारे
कपिन करत चंचल मधु-गन्धा * विकल निहारि सदा प्रतिबन्धा[1]
जामवन्त मिलि सीख[2] बुझावा * अंगद ढिग हनुमतहिं पठावा
विनय अंगदहिं किय हनुमन्ता * लहि सिय-सुधि सुख दीन अनन्ता
तेहि प्रसाद, आयसु, युवराजू * देहु समुद निज कपिन समाजू
आनि शोध सिय दीन हुलासा * तुमहिं अदेय न कछु मम पासा
आयसु कहा ! लहौ मनमाना * पुनि अंगदहिं कहेउ हनुमाना
मधु-रस अमिय सरिस अति स्वादा * चहत सकल कपि नाथ-प्रसादा
कीम करैं मधुपान सप्रीती * जनि सुग्रीव होयँ विपरीती
लहि आयसु कपिगन हर्षाने * अभिमत[3] करि मधुपान जुड़ाने
कोउ निचोरि कोउ चुल्लुन लीन्हा * मधु बिन मधुग्रह कपिगन कीन्हा

दो० पुनि मधुचक्र[4] विखण्ड करि[5] रहे परस्पर मारि ।
मधुमाते मदमस्त कपि अभिरि[6] मचाये रारि ॥ ७० ॥

नृत्य गान रत हास-विलासू * हार न जीत, सबन उल्लासू

वानरगणेर मधुवन भञ्जन

कटक जुड़िया जाय पृथिवी-आकाश * देशे गिया उपस्थित मधुवन पाश
देखिते मधुर वन अति मनोहर * कोन प्राणी नाहि जाय ताहार भितर
सहस्र सहस्र कपि मधुवन राखे * बालिर समयावधि मधुवने थाके
मधुगन्धे कपिगण अत्यन्त विकल * खाइवारे नाहि पारे हइल चंचल
मधुपाने मंत्रणा करिल जाम्बवान * अंगदेर ठाँइ आज्ञा माग हनूमान
आनिया सीतार वार्त्ता दियाछ आह्लाद * अंगदेर ठाँइ लह राजार प्रसाद
अंगदेर काछे हनू कहे जोड़ हात * राजार प्रसाद चाहि वानरेर नाथ
अंगद बलेन वीर जे दिला आह्लाद * जाहा चाह ताहा लह कि राज-प्रसाद
हनूमाने ब'ले मधु अमृत समान * सकल वानर खाइ यदि देह दान
अंगद ब'लेन मधु खाउ इच्छामत * ना हबेन सुग्रीव इहाते असम्मत
हरषित सकले पाइया मधुदान * आनन्दे करिछे स्वेच्छामत मधुपान
निडाड़िया खाय केह पिये त चुमुके * सकल भाण्डार शून्य करिल कटके
मधुचक्र भांगि सबे मारामारि करे * ये जारे मारिते पारे सेइ तारे मारे
मधु पिये कपिगण हइल पागल * मारामारि हुड़ाहुड़ि करिछे कोन्दल
केह नाचे केह हासे केह गाय गीत * केह हारे केह जिने सबे आनन्दित

---

१ मधुफल खाने पर रोक २ सलाह ३ मनचाहा ४ मधुभण्डार ५ तोड़कर
६ गुथे हुये ।

हटकेउ कपिन, कुपित रखवारे ❋ खेदि तिनहिं बानरगन मारे
केहु धरि केस फेंकि नभ ओरा ❋ क्रुद्ध चलेउ कोउ अंगद ओरा
तव आयसु कपि रत मधुपाना ❋ मधुरक्षक चाहत तिन प्राना
युवराजहिं सुनि क्रोध अपारा ❋ साजि कटक मधुवन पग धारा
कुपित ससैन बालिसुत धावा ❋ रक्षकपति 'दधिमुख' तहँ आवा
अंगद समुख[1] न कोउ भट धीरा ❋ 'दधिमुख' तजि, अलोप कपि बीरा
दधिमुख ! दीन अतुल संतापा ❋ तव वध मात्र मिटै उर तापा
लहि सिय-शोध कीन प्रभुकाजू ❋ किमि तिन उरिन[2] होयँ कपिराजू
करि नृप-काज न नृप-धन भोगू ❋ तुमहिं निवसि गृह मधुरस जोगू
नित विलसत मधु पितुधन मोरा ❋ मन यहि छनहिं[3] करौं वध तोरा
पितु मातुल[4] पितुमहत् समाना ❋ यहि कारन तव बकसहुँ[6] प्राना
कम्पित ओंठ, सरोष अधीरा ❋ सिथिल दसन-नख-आहत बीरा
दधिमुख जहँ सुकण्ठ कर धामा ❋ धाय गोहारत[7] करत प्रनामा
हे नृप ! अंगद - पवनकुमारा ❋ दोउ मधुवन सब भाँति उजारा
अब लौं तुम पुनि बालि सवाँरे ❋ सो मधुवन छिन माहिं सँहारे

दो० यदपि क्रोध, पुनि मौन ह्वै रहे नृपति सुग्रीव ।
कौतूहल बस पूछहीं लखनलाल बलसीव ॥ ७१ ॥

रुषिया करिल माना मधुर रक्षक ❋ खेदाड़िया जाय तारे अंगद कटक
चलेते धरिया केह घुमाय आकाशे ❋ महाक्रोधे जाय केह अंगदेर पाशे
तोमार आज्ञाय मोरा करि मधुपान ❋ कोथाकार वानर लइते चाहे प्रान
कुपिल अंगद वीर शुनिया वचन ❋ साज साज ब'लि डाके बालिर नन्दन
कटक लइया युवराज जाय कोपे ❋ कुपिल से दधिमुख आसे एकचापे
अगदेर प्रताप सहिबे कोनजन ❋ दधिमुखे एड़िया पलाय कपिगन
अंगद कहिछे शुन ओरे दधिमुख ❋ तोरे आज मारि यदि तबे जाय दुख
जानिया सीतार वार्त्ता आइल जे जन ❋ तारे दान दिते आमि नहिनु भाजन
राज कार्य्य करि नाहि खाइ पितृ धन ❋ घरेते बसिया भोग कर मधुवन
पितृधन मधुवन करिस भक्षण ❋ मनेते वासना तारे काटि एइ क्षण
बापेर मातुल जे सम्बन्धे बड़ बाप ❋ से कारणे ना मारिनु तोमाहेन पाप
उष्ठाधर कम्पमान क्रोधेते आकुल ❋ गोहारि करिते जाय राजार मातुल
जर्ज्जर हइया वीर आँचड़ कामड़े ❋ अति शीघ्र गिया सुग्रीवेर पाये पड़े
पायेते पड़िया कहि निज अपमान ❋ मधुवन नष्ट कर अंगद-हनूमान
तोमार दुभाइ याहा करिले पालन ❋ एत काले नष्ट करे सेइ मधुवन
शुनि क्रुद्ध हये राजा रहिल नीरवे ❋ जिज्ञासेन लक्ष्मण से भूपति सुग्रीवे

१ सामने २ उद्धार ३ इसी क्षण ४ पिता का मामा ५ पितामह ६ क्षमादान ७ फर्याद की ।

मातुल-पद दधिमुख धरि चरना * निज अपमान रोय बहु बरना
किमि मातुलहिं अनादर रोषू * उतर न देत वचन सन्तोषू
लखन-वचन सुनि कह कपिनाथा * बूझेउँ मर्म, सुनहु सब गाथा
दच्छिन दिसि जे सुभट पधारे * लूटि मंजु मधुवन संहारे
रखवारेन[1] तिन खेदि पछारा * मातुल सो सब व्यथा प्रचारा
पूछत लखन कुतूहल भारी * को किमि आय कथा विस्तारी
दच्छिन जाय कवन पुनि आई * कहेउ राम, किमि खबरि जनाई
कहेउ सुकण्ठ, न होहु अधीरा * तेहि दिसि गये महाभट वीरा
सचिव ऋच्छपति[2], बालिकुमारा * हनुमत सिद्धि सवाँरनहारा
अति तव काज मारुतिहिं[3] प्रीती * लहेउ दरस-सिय, मोहिं प्रतीती
विज्ञ, महान, धर्म-मति माना * निश्चय सिय खोजेउ हनुमाना
बोले राम, तात तव बयना * सकत न कहि अतुलित सुखदयना
हनु - अंगद दोउ लेहु बुलाई * हिय जुड़ाय सुनि सिय-कुसलाई
दधिमुख प्रति सुकण्ठ संतोषा * अंगद-वचन करहु जनि रोषा
मो तव नाति[4], कपिन युवराजा * कौतुक-नाति हेतु जनि लाजा
मातुल बेगि दुहुन चलि लावौ * हनु अंगद प्रभु-दरस करावौ

मामा हये दधिमुख धरिल चरन * अपमान कथा कहे करिया क्रन्दन
ना देह सान्त्वना वाक्य ना देह उत्तर * कि हेतु मामार प्रति एत अनादर
सुग्रीव ब'लेन शुनि लक्ष्मणेर कथा * अभिप्राय बुझिले उत्तर दिव तथा
दक्षिण दिकेते जारा करिल गमन * लुटिया खाइल तारा रम्य मधुवन
मारि खेदाइल एरे एइ मधु राखे * एइ सब कथा कहे मामा दधिमुखे
शुनिया लक्ष्मण कहे अपरूप शुनि * के आसिल के कहिल दक्षिण काहिनी
श्रीराम ब'लेन यारा गियाछे दक्षिणे * तारा कि आइल जान वार्त्ता कि एक्षणे
सुग्रीव ब'लेन मित्र ना हउ अस्थिर * दक्षिणेते गिया छिल बड़ बड़ वीर
आपनि अंगद आर मंत्री जाम्ववान * कार्य्येर साधक स्वयं वीर हनूमान
तव कार्य्ये हनूमान बड़ह तत्पर * अवश्य हयेछे सीता ताहार गोचर
धार्म्मिक पण्डित हनूमान महाशय * देखियाछे जानकीरे कहिनु निश्चय
श्रीराम बलेन मित्र तोमार बचने * जे आनन्द पाइलाम कहिबे केमने
हनूमान अंगदेरे डाकिया आनउ * कहिया सीतार वार्त्ता परान जुड़ाउ
सुग्रीव ब'लेन एस मामा दधिमुख * अंगदेर वाक्ये मामा ना भाविह दुख
सम्बन्धे तोमार नाति सेइ युवराज * नाति नाट करिले तोमार नाहि लाज
झाट जाह मामा तुमि आमार वचने * अगद हनूर आन श्रीरामेर स्थाने

१ रखकों को २ जाम्बवान ३ हनुमान को ४ नाती, पौत्र।

हनूमान द्वारा श्रीराम के समीप निदर्शनमणि-प्रदान

दो० लहि सुकण्ठ-आयसु समुद दधिमुख कीन पयान।
लै छलाँग प्रस्तुत भयेउ, जहँ अंगद-हनुमान ॥ ७२ ॥

कहत जोरि कर पुनि शिर नाई * जिमि आदेस दीन कपिराई
तव अनुयोग[1] कीन नृप पाहीं * सो सुग्रीव लीन मन नाहीं
निज पितु-धन मधुवन बैपरहू[2] * सेवक जानि रोष जनि करहू
राम-सुकण्ठ तीर द्रुति[3] जाई * रामहिं तोष देहु बतराई
सदा दास अंगदहिं पियारा * दीन दधिमुखहिं पुनि मधु-भारा
वीर बालिसुत हरषि पयाना * चले घेरि चहुँ भट कपि नाना
सबन कपिन आगे हनु वीरा * प्रभु समीप, गिरि सरिस सरीरा
निरखि दूर आवत हनुमाना * तत् छन उठे लेन भगवाना
प्रभु ससंक अनुमान लगावैं * धौं किमि खबरि पवनसुत लावैं
बहु बिचारि पूछत पुनि एही * कै तुम लखी सत्य वैदेही
जो सिय-दरस लहेउ हनुमाना * कारज सधै, बचैं मम प्राना
बन्दि राम - पद पवनकुमारा * दोउ कर जोरि कथन विस्तारा
वन अशोक विच लंकानगरी * बरनहुँ, नाथ! कथा मैं सगरी[4]
सागर शत योजन विस्तारा * संकट झेलि भयउँ मैं पारा

हनूमान द्वारा श्रीराम-समीपे सीतार निदर्शनमणि-प्रदान

राज आज्ञा पाइया हरषि दधिमुख * एक लाफे पड़े गिया अंगद सम्मुख
माथा नोयाइया तारे कहे जोड़ हात * राजवार्त्ता कहि शुन वानरेर नाथ
तव दोष कहिलाम सुग्रीवेर स्थाने * तव अपराध राजा ना शुनिल काने
निज धन खाउ तुमि बापेर अर्जित * सेवक हइया कहिलाम अनुचित
श्रीराम सुग्रीव बसि आछे दुइजन * झाट गिया कर तुमि राम सम्भाषन
सेवकवत्सल बड़ सुशील अंगद * मधुवन-रक्षा तारे दिलेन सम्पद
चलिल अंगद वीर ह'ये हरषित * कौतुकेते जाय बहु वानर वेष्टित
सकल ठाटेर आगे वीर हनूमान * श्रीरामेर ठाँइ जाय पर्व्वत प्रमान
दूरे देखिलेन राम पवननन्दने * बसिया छिलेन उठिलेन तत क्षने
सशंकित श्रीराम करेन अनुमान * कि जानि केमन वार्त्ता कहे हनूमान
सात पाँच भावि राम जिज्ञासेन ताके * सत्य कह हनूमान देखेछ सीताके
यदि सीता देखे थाक वीर हनूमान * सर्व्व कार्य्य सिद्ध हबे रबे तबे प्रान
श्रीराम चरणे वीर करि प्रणिपात * निवेदन करे सब करि जोड़ हात
लंका मध्ये देखियाछे अशोक कानने * कहिब सकल कथा प्रभु तव स्थाने
एक शत योजन से सागर पाथार * अनेक कष्टेते आमि हइलाम पार

१ शिकायत २ सेवन करो ३ शीघ्र ४ सारी कथा।

घोर निसा-तम, लंक प्रवेसू * राज-सदन जनि सिय उदेसू
घर-घर मैं सब पुरी मँझाई * विकल, अधीर रुदन अधिकाई

दो० गत निसि अर्द्ध अशोक वन, लखि रवि-प्रभा-अलोक।
सहसा सिय-छबि-दरस लहि, भयेउँ, नाथ! गतशोक॥ ७३॥

तब लौं प्रकट तहाँ दशभाला * विद्याधरी लिये सुरबाला
सिय सों यथा कही लंकेसू * सुनेउँ सकल मैं लुकि[1] तरुदेसू
कीन अस्तुती[2] दशमुख नाना * दीन जानकी एक न काना[3]
लखि सिय-उर अनन्य रघुनाथा * सिय-बध हेतु कुपित दशमाथा
मम गति एक मृत्यु-अभिलासा * प्रभु पद अन्त मोहिं जनि आसा
कथन-सीय सुनि आस गवाँवा * दुष्ट, विकट राच्छसिन बुलावा
गमनेउ गेह राखि तहँ चेरी * मारहिं कुगति करहिं सिय केरी
साम-दाम सब बिधि समुझावैं * दुष्ट वचन सिय-मनहिं न भावैं
त्रिजटा दनुजि सिया-हित-करनी * निसि लखि सपन कथा सब बरनी
तेहि ढिग सपन सुनैं जब चेरी * तरु तजि गयेउँ सुअवसर हेरी
पूँछी मातु, कवन तैं कीसा * बरनेउँ तब सहचर्य्य-कपीसा[4]
पुनि तव चिह्न मुद्रिका दीन्हा * सो लहि रुदन अतिव सिय कीन्हा
जननि भेंटि लौटति, उर व्यापा * करहिं प्रकट निज कछुक प्रतापा

अन्धकारे करिलाम लंकाय प्रवेश * राज अन्तःपुरे नाहि पेलाम उद्देश
आवासे आवासे आमि सीता नाहि देखि * कान्दिलाम विस्तर हइया मनोदुःखी
अकस्मात देखिलाम अशोक कानन * अशोक वनेर ज्योति रविर किरन
द्वि प्रहर रात्रि गते तृतीय प्रहरे * अशोक वनेर मध्ये देखिनु सीतारे
हेन काले गेल तथा राजा दशानन * देवकन्या संगे आर विद्याधरीगन
कि ब'लिया सम्भाषे रावण जानकीरे * वृक्ष आड़े रहिलाम शुनिवार तरे
अनेक प्रकारे स्तुति करिल रावन * जानकी ना शुनिलेन ताहार वचन
तोमा विना जानकीर अन्ये नाहि मन * कोपेते काटिते चाहे राजा दशानन
जानकी ब'लेन मृत्यु करिलाम सार * रामेर चरण बिना गति नाहि आर
निराश हइल दुष्ट सीतार वचने * बिषम राक्षसी चेड़ी डाक दिया आने
घरे गेल दशानन ठेकाइया चेड़ी * सीतारे मारिते सबे करे हुड़ाहुड़ि
सीतारे बुझाय चेड़ी अशेष प्रकारे * कोन मते सीता दुष्ट वचन ना धरे
त्रिजटा राक्षसी रात्रे देखिल स्वपन * सीतार मंगल सेइ चिन्ते अनुक्षन
स्वप्न शुनिवारे चेड़ी गेल तार पाश * गाछे थाकि सीता सह करिनु सम्भाष
कोथा हैते एले मोरे सुधान वैदेही * सुग्रीवेर संगे सख्य आमि सब कहि
तोमार अंगुरी तारे कराह दर्शन * अंगुरी पाइया सीता करेन रोदन
मेलानि पाइया आमि जबे देशे आसि * मने करिलाम किछु विक्रम प्रकाशि

१ छिपकर २ खुशामद ३ नहीं सुना ४ सुग्रीव से आपकी मित्रता।

भञ्जि सुधाकानन[1] मन-हारी * कोटि-कोटि निसिचरन सँहारी
अक्षयकुमार आदि कर प्राना * लीन, बधे सेनापति नाना
चखु-निमेष सकल संहारा * मेघनाद रन हित पग धारा

दो० सुवन-लंकपति इन्द्रजित्, समर पहर दुइ साधि।
ब्रह्मपाश संधानि पुनि, असुर लीन मोहिं बाँधि ॥ ७४ ॥

लै प्रस्तुत किय जहँ लंकेसू * कहेउँ ताहि दुर्वचन असेसू
मम वध आयसु दीन दशानन * सो निषेध किय अनुज बिभीषन
तासु वचन मम जीवन राखा * जारहु पुच्छ दनुजपति भाषा
मम जारन हित पूछ जराई * लंक अगिनि सो घर-घर छाई
लंका अखिल कीन मैं छारा * दहकि भसम कहुँ सुलग अँगारा
सोचि विपति-मम, आकुल सीता * जहँ सिय, बेगि भयेउँ उपनीता[2]
निरखि मोहिं सिय हर्ष विशेषू * करि कारज प्रस्तुत प्रभु-देसू
शशि घन-ओट यथा छबि-हीना * लखेउँ सिया तव विरह-मलीना
अलस[3] नित्य जिमि विद्या छीना * तिमि सिय-तन विगलित श्री-हीना
जस देखेउँ वरनेउँ तस गाथा * लखहु तासु मस्तक-मणि, नाथा!
ललकि बाम कर मणि प्रभु लीन्हा * लखि सिय-चिह्न रुदन बहु कीन्हा
दै मणि, सीय कहेउ मम हेतू * सुनहुं यथा, वरनहु कपिकेतू

भांगिलामि मनोहर अमृत कानन * कोटि कोटि राक्षसेरे बधिनु जीवन
क्रमे बधिलाम तार बहु सेनापति * प्राण मारिलाम अक्षकुमार प्रभृति
चक्षुर निमिषे सब करिनु सहार * इन्द्रजित् करिल समरे आगुसार
दु प्रहर तार सगे करिलाम रन * ब्रह्मपाशे से आमारे करिल बन्धन
धरिया लइया गेल रावण गोचर * रावणेर प्रति गालि दिलाम विस्तर
आमारे काटिते आज्ञा दिल दशानन * निषेध करिल तारे भाइ विभीषन
तार वाक्ये आमि तबे एड़ाइ मरण * लेजे पोड़ाइते आज्ञा करिल रावण
लेजे अग्नि दिल लेज पोड़ावार तरे * सेइ अग्नि दिलाम लंकार घरे घरे
लंका पोड़ाइया करिलाम छारखार * कतक हइल भस्म कतक अंगार
आमार विपद भावि भाविछेन माता * हेनकाले उपनीत हइलाम तथा
आमारे देखिया सीता हर्षिता विशेष * सर्व्वकार्य्य सिद्ध करि आइलाम देश
देखिलाम जानकीरे विरहे मलिना * मेघे ढाका शशी यथा लावण्यविहीना
सीता मार देह खानि देखिलाम क्षीन * अलसेर विद्या यथा क्षीण दिन दिन
देखिनु शुनिनु यत कहिनू काहिनी * लह रघुमणि, तोर मस्तकेर मनि
राम हस्ते मनि दिल पवननन्दन * मनि देखि रघुमनि करेन क्रन्दन
मनि दिया कि कहिला जानकी आमार * ब'ल ब'ल ओरे हनू शुनि एकबार

१ अमृत वन २ उपस्थित ३ आलसी की।

कहेउ पवनसुत रघुपति - चरना * सिय जिमि रोय कहेउ सो वरना
विलमो[1] कपि ! जब लौं मणि तीरा * कछु बतराय हरौं उर-पीरा
तुम पुनि मैं मणि भगिनि सरूपा * प्रतिपालेउ भल मैथिल-भूपा[2]
पुनि सादर रामहिं दिय दाना * सुता सहित मणि-रतन प्रदाना[3]

दो० भगिनि युगुल निवसैं सदा संग—जनक[4]-अभिलाष ।
तुम जेठी ! मम माथ रहि अहि-निसि करहु प्रकाम ॥ ७५ ॥

दोउ अभिन्न निवसीं बहु काला * तोहिं सखी ! जुगयेउँ[5] निज भाला
तुमहिं पाय रघुपतिहिं हुलासू * यहि कारन पठवहुँ प्रभु-पासू
जासु जनक पितु, पति श्रीरामा * परी कुगति-बस निसिचर-धामा
जेहि विधि लंक महेउँ दुख भारी * प्रभु पहँ जाय कहेउ विस्तारी
तुम मणि, रघुकुल-मणि रघुनाथा * निसिदिन सुख विलसहु रहि साथा
मणि विन फणि, तिमि मोर निवासू * कब लौं हतभागिनि इत वासू
सुनि सीता कर रुदन-विलापू * सरसिजनयन अतिव संतापू
राम - रुदन रोवत कपि - वृन्दा * कृत्तिवास जिमि वरनत छंदा

श्रीराम प्रति हनुमान द्वारा भक्ति-प्रदर्शन

कहेउ नाथ पुनि, हे हनुमाना * सुलभ न जग तव वीर समाना

हनुमान ब'ले प्रभु जनकनन्दिनी * कान्दिते कान्दिते एइ कहिला काहिनी
क्षणेक विश्राम कर बाछा हनुमान * मनि मने कथा कहि जुड़ाइ परान
तुमि मनि आमि मनि दुइटि भगिनी * दोहे पालि लेन यत्ने जनक नृमनि
विवाहेर काले पिता परम आदरे * अंगुरी करिला दान श्रीरामेर करे
तुमि आमि दुइ भग्नी थाकि एक खाने * इहायू पितार इच्छा छिल मने मने
तुमि ज्येष्ठा बलि ताइ तोमारे लइया * माथार उपर मोर दिलेन सँपिया
बहु दिन एक सगे आछि दोहे भाइ * तोमार माथाय करे धरे राखि ताइ
रामेर आनन्द हबे तोमारे देखिले * पाठाइ तोमार ताइ आज कुतूहले
जनक जनक जार राम जार पति * राक्षसेर पुरे तार एहेन दुर्गति
यत कष्ट महितेछि एइ लंकापुरे * गिया सब कबे तुमि रामेर गोचरे
तुमि मनि आर सेइ रघुकुल मनि * उभये थाकिबे सुखे दिवस यामिनी
मनि हारा फणिनीर मत एकाकिनी * कत काल रबे हेथा एइ अभागिनी
सीतार विलाप वाक्य करिया श्रवन * कान्दिते लागिला राम कमललोचन
रामेर रोदन देखि कपिगण कान्दे * कृत्तिवास रचिलेन पाञ्चालीर छन्दे

श्री रामेर प्रति हनूमानेर भक्तिप्रदर्शन

राम कहिलेन शुन वीर हनूमान * वीर नाहि देखि आछि तोमार समान

---

१ ठहरो २ राजा जनक ने ३ कन्या और मणि दोनों ही दी ४ पिता की ५ यत्न से रखा।

सागर अगम तरेउ केहि रूपा ※ कौतुक! विवरन सुनहुँ अनूपा
कनक लंक किमि दहन-कहानी ※ उत्कण्ठा अति, कहहु बखानी
कपि किय विनय, सुनहु रघुकेतू ※ जेहि उर राम, न तेहि भय हेतू
नाथ-चरन पुनि पद-सियमाता ※ पद-पितुपवन सकल फल-दाता
इन त्रय पाद-पद्म मैं शरना ※ गोपद सरिस सिन्धु पुनि तरना
सुरसा साँपिनि दरस दिखाये ※ सुमिरि नाथ, तेहि उदर समाये
सुत सो बहिर[1] सुमिरि तव नामा ※ सब लीला - अधार गुणधामा

दो० बसति सदा जल सिंहिका, निरखि गगन महँ जीव।
छाया धरि तिन लेत ग्रसि, कौतुक-दनुजि अतीव ॥ ७६ ॥

ग्रसेउ मोहिं, मैं उदर समाई ※ सुमिरि नाम तव, ताहि नसाई
सम्पद - विपद सदा तव ध्याना ※ पुण्य नाम आधार महाना
प्रभु-कोपानल[2] अति विकराला ※ श्वास - वेदना - सीय कराला
शुष्क काष्ठ सम लंक जरावा ※ मैं निमित्त, विधि जोग जुटावा
परि तव कोप - अनल संसारा ※ कहुँ निस्तार न काहु उबारा
तव पद शरन गहैं जे लोका ※ ते तव दया लहैं परलोका
मैं वानर पशुजाति समाना ※ पशुहिं हिताहित[3] कबहुँ न ज्ञाना
दयाधाम मम निपट अधारा ※ तव पद गहि मम बुद्धि गुजारा

कि रूपे सागर पारे करिले गमन ※ विवरण शुनिवारे ह'येछे मनन
कि रूपे सोनार लंका कैले छारखार ※ कह कह शुनि हनू वासना आमार
हनूमान कहिलेन करिया विनय ※ तुमि जार हृदे थाक कोथा तार भय
तव पद प्रभु पुनः सीता मार पद ※ 'पवन' पितार पद परम सम्पद
एइ तिन श्रीपदेर लइया शरन ※ वत्स-पद-सम हेरि सागर लघन
सुरसा सापिनी आसि देखा दिल मोरे ※ तव नाम स्मरि जाइ ताहार उदरे
बाहिरे आसिनु पुन स्मरि तव नाम ※ सकलि तोमारि खेला ओहे गुणधाम
सिंहिका राक्षसी थाके समुद्रेर जले ※ मोरे ग्रास करिवारे एल कुतूहले
प्रवेश करिनु गिया उदरे ताहार ※ बाहिरिनु तव नाम स्मरि पुनर्व्वार
कि विपदे कि सम्पदे थाकि एइ खाने ※ तव पुण्य नाम प्रभु स्मरि मने मने
परम प्रचण्ड प्रभु तव कोपानल ※ सीता मार श्वास वाय परम प्रबल
लंकापुरी शुष्क काष्ठ ज्वलि जाइ छिल ※ ए हनु निमित्त मात्र तथाय जुटिल
तव कोपानले प्रभु पड़े जेइ जन ※ त्रिभुवने नाहि तार निस्तार कखन
ये जन तोमार पद करे समाश्रय ※ ताहारे परम पद दाउ दयामय
जातिते वानर आमि पशुर समान ※ नाहिक पशुर कभु हिताहित ज्ञान
तुमिइ आश्रय मोर ओहे दयाधाम ※ तोमारि चरणे मोर मति अविराम

१ बाहर २ क्रोध की अग्नि ३ भले-बुरे का ज्ञान।

निर्बल कपि के बल तुम रामा * जग न मोहिं कहुँ अन्त विरामा
तुमहिं मातु-पितु, तुमहिं सहारे * तुम हनु-ताप नसावनहारे
जागे मम सौभाग्य अनन्ता * निज-पद-शरन लियेउ हनुमन्ता
बुद्धि, भरोस, मोर बल रामा * जिन तजि जग न अन्य मम कामा[1]
मम हृदयासन प्रभुहिं न जोगू * प्रभु-पद कहँ कपि दीन अजोगू
तबहुँ साध करुनामय एही * अरजी[2] चरन - रामवैदेही
बसै सदा हिय छबि दोउ केरी * होहुँ सुपावन नयनन हेरी
मोच्छ शास्त्रमत सम्पद भारी * सो मोहिं लखत बिषम भयकारी

दो० हम-तुम भेद न मोच्छ लहि, उचित न प्रभु-सम्मान।
राम-दाम पुनि राम दोउ केहि विधि एक समान॥
मैं सेवक तुम स्वामि मम, यहै सदा अरदास।
अमर एक सम्बन्ध, प्रभु! रहै, दास-अभिलास॥ ७७॥

मारुति धन्य, कहेउ रघुवीरा * त्रिभुवन तुम समान नहिं वीरा
अद्भुत तव विक्रम - विस्तारा * देहुँ कहा? मैं स्वयं तिहारा
देन न जोग, लेहुँ उरलाई * कहि जगदीस लीन लपिटाई
वचन - पवनसुत सुनि हर्षाने * वेगि राम सुभ घरी पयाने

দুর্ব্বল হনূর তুমি একমাত্র বল * তোমা বিনা নাহি কিছু হনূর সম্বল
তুমি পিতা তুমি মাতা তুমিহে সকল * তুমিহি হনূর মাত্র জুড়াবার স্থল
হনূর পরম ভাগ্য ওহে দয়াময় * হনূরে দিয়াছ তুমি চরণে আশ্রয়
তুমি বল তুমি বুদ্ধি তুমিহ ভরসা * তোমা বিনা হনূ কিছু নাহি করে আশা
হনূর এ অপবিত্র তুচ্ছ হৃদাসন * তব উপযুক্ত নহে রাখিতে চরণ
কিন্তু ওহে কৃপাময় বড় সাধ মনে * রাম সীতা দোঁহে মিলি কবে দুই জনে
বসিয়া হনূর এই হৃদয় আসনে * পবিত্র করিয়া দিবে হেরিব নয়নে
শাস্ত্রে বলে মোক্ষ পদ পরম সম্পদ * কিন্তু দেখি মোক্ষপদে বিষম বিপদ
মোক্ষ হৈলে তুমি আমি একই সমান * এরূপ ঘটিলে হয় তব অসম্মান
শ্রীরাম হনূর প্রভু হনূ রামদাস * থাকুক সর্ব্বদা এই হনূর বিশ্বাস
তুমি প্রভু আমি ভৃত্য চরণে তোমার * এ সম্বন্ধ যেন প্রভু না ঘুচে আমার
শ্রীরাম ব'লেন ধন্য ধন্য হনূমান * ত্রিভুবনে বীর নাহি তোমার সমান
তোমার বিক্রমে মোর লাগে চমৎকার * কি দিব তোমারে আমি আমিই তোমার
অন্য কি প্রসাদ দিব লহ আলিঙ্গন * এত ব'লি কোল দেন কমললোচন
পবনপুত্রের কথা শুনি হরষিত * শুভ যাত্রা করিলেন শ্রীরাম ত্বরিত

१ कामना २ प्रार्थना।

छं० उतर फाल्गुनी पहर निसा दुइ, सुभ छन-लगन बखाने।
किय अभियान सवत्स धेनु पुनि मृग, द्विज, दछिन लखाने॥
शव, जम्बुकी, बाम कुक्कुटगन शकुन राम-अनुकूला।
सूर्यवंश नखत्र रोहिणी, प्रकट दनुज कुल मूला[1]॥
सो 'रोहिणी' अकास 'मूल' तन रही सरोष निहारी।
लच्छन, जीतैं राम, रावनहिं सहित बंस संहारी॥
करत कुलाहल, कपि असीम दल छायो धरनि-अकासा।
धाय सिन्धु-तट लतापतन मों उतरि बनाये बासा॥

दल बल सहित लखन पुनि रामा * सागर तीर लीन विश्रामा
सो लखि दनु-पायक[2] नित धावैं * सकल रावनहिं खबरि जनावैं

रावण को विभीषण का उपदेश

निकषा नाम लंकपति-माता * सुनि अति विपति विकम्पित गाता
विभीषनहिं वरनन सब कीना * सुत सुबुद्ध! सुनु धर्मप्रवीना
रावन अमित सुफल-तप भोगू * सिय हरि आज सकुल यमयोगू
हने विपुल दनु, तिन सन रारी * लखि प्रतच्छ मद-बस मतिमारी
हठ बस काहु-सीख जनि मानत * बनत अजान विपति सब जानत
अवसर रहत सीख तेहि दीजै * संकट - लंक निवारन कीजै
होय न जिमि रघुपति अभियाना[3] * करहु उपाय दनुज - कुल - त्राना

द्वितीय प्रहर रात्रि उत्तर फाल्गुनी * शुभक्षण शुभलग्न शुभफल गनि
दक्षिणे सवत्सा धेनु हरिण ब्राह्मण * देखे राम वामे शव-शिवा कुम्भगण
सूर्य्यवंशी नृपतिर नक्षत्र रोहिनी * राक्षसगणेर मूला सर्व्व लंके जानि
मूला ऋक्ष देखिले रोहिणी बड़ रोषे * सवंशे मरिबे तेइ रावण राक्षसे
चलिल वानर ठाट नाहि दिश् पाश * कटक जुड़िया जाय मेदिनी आकाश
किलिकिलि शब्द करि कपिगण चले * उत्तरिल गिया सबे सागरेर कूले
रहिवारे लता पता दिया करे घर * अवस्थिति करिलेक सकल वानर
सेइ स्थाने रहिलेन श्रीराम लक्ष्मण * चर मुखे वार्त्ता नित्य पाय से रावण

रावणेर प्रति विभीषणेर उपदेश

निकषा नामेते बुड़ी रावणेर मा * विपद् शुनिया तार त्रासे काँपे गा
आसिया कहिछे बुड़ी विभीषण प्रति * शुन पुत्र तुमि त धार्मिक शुद्ध मति
रावण तपेर फले यत सुख भुञ्जे * आनिया रामेर सीता सवंशे वा मजे
ये मारे राक्षसे करे तार सने वाद * देखिया ना देखे दुष्ट एतेक प्रमाद
अबोध बुझाह जेन राम ना बाहुड़े * यावत् रामेर बाणे लंका नाहि पुड़े

१ मूल नक्षत्र २ दैत्यों के दूत ३ चढ़ाई।

जननि-वचन सुनि वेगि विभीषन * सचिवन सह सोहत जहँ रावन
जाय जोरि कर अरज गुजारी * सुनहु ध्यान धरि विनय हमारी
तव तप-फल यह सम्पति भारी * राम-कोप मनु मङ्गल उजारी[१]

दो० तात! धरी जेहि सिय हरी, लंक सीय पद दीन।
सपन अशुभ, बहु अपशकुन, नित प्रति लखौं नवीन ॥ ७८ ॥

घर-घर गीध-यूथ मडराहीं * जम्बुक-रव[२], निसि निद्रा नाहीं
वृद्ध कालिका दसन विशाला * झलक माँझ नित द्वार कराला
नित उत्पात लखहुँ चहुँ ओरा * तात! राम-विक्रम अति घोरा
नर रघुपति वानर सुग्रीवा * तिन भय उचित न, कह दशग्रीवा
बन्धु-सीख रावनहिं न भाई * दुष्ट मंत्रिगन लीन बुलाई
कहो सचिवगन जुगुति प्रकारू * जेहि विधि होय राम-संहारू
सेनिप[३] कहत सदर्प 'प्रहस्ता' * वन्य-जाति कपि निपट असक्ता[४]
गिरि-नद-नदी-गुहा-निर्झरनी * कपि-निर्बीज[५] करौं यह धरनी
वज्रकण्ठ दनु दसन विशाला * लोह मुषल कर वचन कराला
लोह-मुषल रन भेटहुँ कीसा * एक-एक कपि भञ्जहुँ सीसा
'त्रिशिरा' निज बल-विक्रम गावै * को मम रहत लंक धसि पावै
बन उजारि कपि लंक जराई * मो लखि उर गलानि अति छाई

मातृ वाक्य विभीषण चलिल सत्वर * पात्र मित्र सह यथा आछे लंकेश्वर
कृताञ्जलि हइया कहेन विभीषण * सभास्थ सकले शुद्ध करिछे श्रवण
अनेक तपेर फले ए सब सम्पद * रामेर प्रतापे भाई घटिबे विपद
यतदिन सीतारे आनिले लकापुर * ततदिन देखि भाइ कुस्वप्न प्रचुर
झाँके झाँके शकुनि पड़िछे गृहचाले * रात्रे नाहि निद्रा हय शृगालेर रोले
काली हेन बुड़ि देखि दशन विकट * सन्ध्याकाले उँकि मारे द्वारेर निकट
विविध उत्पात भाइ देखि सदाकाल * रामचन्द्र अति वीर विक्रमे विशाल
रावण बलिछे कि रामेर एत डर * कि करिते पारे राम सुग्रीव वानर
रावण भ्रातार वाक्य न शुनिल काने * मन्त्रणा करिते दुष्ट मंत्रिगणे आने
रावण बलिछे मन्त्रि युक्ति कर सार * कि प्रकारे राघवेरे करिब संहार
वीर दर्पे कहिछे प्रहस्त सेनापति * कि करिते पारे से वनेर पशुजाति
पर्व्वतेर गुहा आर नद नदी कूले * वानरेर नाम ना राखिब भूमण्डले
वज्रकण्ठ निशाचर दशन विकट * लोहार मुषल हाते कहे अकपट
लोहार मुषल लये प्रविशिब रने * माथा भांगि बधिब वानर जने जने
त्रिशिरा विक्रम करे आमि आछि किसे * लंकाय थाकिते आमि कोन बेटा आसे
बन भांगे लंका दाह करे हनूमान * लंकाय थाकिते आमि एत अपमान

१ नष्ट कर देना २ गीदड़ों का चीत्कार ३ सेनापति ४ असमर्थ ५ निर्मूल।

आयसु, तात ! मिलै रन जाई * विक्रम लखहुँ लखन - रघुराई
कहति 'अकम्पन' आयसु पावौं * कपिन भच्छि चिर साध मिटावौं
कुम्भकर्ण - सुत दोउ रनचातुर * 'कुम्भ-निकुम्भ' सुभट रनआतुर
मुषल शेल आयुध बहु नाना * रन हित साज कुतूहल ठाना

दो० नेक धीर धरि वीरगण ! बोलहु सोचि सम्हारि ।
जने-जने[1] गहि विभीषण पुनि-पुनि कहत पुकारि ॥ ७९ ॥

बढ़ि - बढ़ि कथन न कहुँ निस्तारा * अग्रज[2] ! सुनु हित-बैन हमारा
सिय अर्पन करि, पुनि भय नाहीं * राखत सिय मनु प्रान नसाहीं
बिनसै लंक, नाथ ! केहि हेतू * पठवहु सीय जहाँ रघुकेतू

विभीषण की छाती पर रावण का पाद-प्रहार

सुमति-विभीषण सुनि दशभाला * अनल-कोप दहकति तन ज्वाला
मैं कनिष्ठ तैं ज्येष्ठ सरूपा * तैं मधर्म मैं अधरम-रूपा
काँपति निरखि तुच्छ मनु-देहा[3] * यहि विधि अनुज गुजर[4] जनि गेहा
दूर-दूर, धिक् ! बन्धु विभीषन * उचित पन्थ मोहिं, करौं विषम रन
कुपित बैन दसकन्ध सुनावा * सुमति विभीषण पुनि समुझावा
निसिचरपति मम तव बल-ज्ञाना * निज मत तुम तेहिं भाँति बखाना
जो प्रतच्छ प्रकटहिं भगवाना * चीन्हत तदपि न जन बिन ज्ञाना

पाइले तोमार आज्ञा करि आमि रन * देखिब केमन राम केमन लक्ष्मन
अकम्पन ब'ले राजा तव आज्ञा पाइ * अनेक दिनेर साध कपि धरे खाइ
कुम्भ जो निकुम्भ कुम्भकर्णेर नन्दन * उभयेर कत दर्प करिबारे रन
जाठि जाठा झकड़ा मुषल शेल आर * लइया साजिल युद्धे लागे चमत्कार
हाते धरि विभीषण कहे जने जने * स्थिर हउ स्थिर हउ शुन वीरगने
ए सबार वाक्ये भाइ ना करिह भर * हित वाक्य ब'लि भाइ शुन लंकेश्वर
सीता पाठाइया दिले थाकिबे निर्भय * सीतारे राखिले भाइ जीवन संशय
कि निमित्त मजाइते चाह लंकापुरी * पाठाइया देह सीता रामेर सुन्दरी

विभीषणेर वक्षस्थले रावणेर पदाघात

एत यदि विभीषण रावणेर ब'ले * कोपेते रावण राजा अग्नि हेन ज्वले
विभीषण जेन ज्येष्ठ आमि त कनिष्ठ * आमि अधर्म्मिष्ठ बड़ से बड़ धर्म्मिष्ठ
मानुष बेटार भये काँपे विभीषन * हेन भाइ ना राखिब आपन भवन
विभीषणे दूर कर युक्ति बलि सार * युद्ध विना गति नाहि किसेर विचार
एत यदि क्रोध करि ब'लिल रावण * आर बार बलितेछे साधु विभीषण
निशाचर राज तव यथा ज्ञान बल * कहिले ताहार योग्य वचन सकल
प्रकटेउ ईश्वरे ना चिने अज्ञजन * अन्ध जेन जानिते ना पारये रतन

१ एक एक को २ ज्येष्ट बन्धु रावण ! ३ तुच्छ मानव (राम) ४ गुजारा ।

अन्ध लखत जनि रतन-सरूपा * दिवस उलूकहिं जिमि निसि रूपा
यहि विधि तव न दोष दशमाथा * माया बस न लखत रघुनाथा
नयन प्रतच्छ, न दरसन लहही * अहह! धन्य माया-प्रभु अहही
यदपि सत्य, सुनु पुनि दसभाला * निजकर[1] जनि नेउतहु[2] निज काला[3]
कालकूट[4] सिय लंक-निवासू * लहौ कटक सह यमपुर-वासू
सम्पद विपुल, विपुल तव राजू * स्वयं विपति सौंपति केहि काजू

दो० तप अनन्त करि सुलभ किय, सम्पति सिद्धि अतीत[5]।
कछुक दिवस उपभोग करु, तजिय तात अनरीत ॥ ८० ॥

यदपि कछुक कटु सीख हमारी * कहहुँ बिबस तव हित मन धारी
सीख न उचित देय भय पाई * अनुचित मौन[6] पाप अधिकाई
यहि विधि सोचि कहौं हितबानी * मोहिं भरोस, करिहौ सुख मानी
राम धर्म-मय जगत बखानी * अधरम-संगति जीवन-हानी
मत्त मतंग[7] निरंकुस एका * रुकत न, किय विध्वंस अनेका
धान्य-धाम वन सकल उजारे * कछु पालित-गज[8] तेहिं अनुसारे
खल-संगति सज्जन-मति हरई * त्यागि सुमति पातक सो करई
व्याध कुशल जानत सब अंगा[9] * रसरिन बस करि लेत मतंगा

रहियाछे चक्षु किन्तु देखिते ना पाय * पेचक जेमन सूर्य्यमण्डले दिवाय
इहातेउ नाहि मानि तोमार दूषन * ये हेतु निजेरे प्रभु करये गोपन
प्रणाम करि जे तार शकति मायाय * नयन आगेउ जेइ ढाकि राखे ताय
थाकुक से सब कथा एखन तोमारे * कहि आमि ना मजाउ तुमि आपनेरे
आनियाछ सीता काल भुजंगीरे घरे * राखिले ससैन्ये जाबे शमन नगरे
एहेन सुन्दर राज्य एहेन सम्पद् * निज दोषे केन आनि घटाउ विपद
चिरकाल तप करि पेयेछ ए राज्य * किछु दिन भोग कर छाड़िया अन्याय
यदि बल तुमि केन कह कुवचन * तार अभिप्राय काह करह श्रवन
जिज्ञासिले मंत्रणा कहिते हय हित * अन्यथा करिले हय पाप समुचित
अतएव कहितेछि तोमा हितकथा * कदाचित इहा नाहि करह अन्यथा
धार्म्मिक श्रीराम देख सर्व्वलोके कय * अधार्म्मिक संगे थाका जीवन संशय
देख एक मत्त हस्ती प्रवेशिले वने * सकलेर क्षति करे क्षमा नाहि माने
क्षेत्रेर शस्यादि खाय घर द्वारे भांगे * खाद्य लोभे पोया हस्ती मिले तार संगे
दुष्टेर संगेते हय शिष्टे अपराध * हस्तीर बन्धन हेतु उपयुक्त व्याध
स्वभावेते व्याध जाति जाने नाना संधि * मत हस्त दड़ि दिया हस्ती करे बन्दी

---

१ अपने हाथों २ निमंत्रण न दो ३ मृत्यु ४ काला नाग का विष ५ अपार ६ खामोशी, चुप्पी ७ पागल हाथी ८ पालतू हाथी ९ सारे करतब।

चरत जहाँ नित गज - समुदाई ❋ खाद्य - द्रव्य बहु राखेउ जाई
लोभ-अहार[1] कष्ठ करि आगे ❋ रज्जु-फन्द परि फसत अभागे
खल-संगति जिमि सज्जन-नासू ❋ तव पातक तिमि लंक-विनासू
कथन - विभीषन सुनि लंकेसा ❋ अतिशय कोप प्रमत्त अशेसा
कटकटात पुनि शब्द कराला ❋ करि हुँकार कहत दशभाला
रे दुर्मति ! गर्जत दससीसा ❋ यम के फन्द लखत तव सीसा
चौदह चौयुग आयु हमारी ❋ कबहुँ न केहु कटु बैन उचारी
मम सन, सुर-सुरनाथ - विवादा ❋ सके न कहि ते वचन-प्रमादा

दो० छोटे मुख कहि दुर्वचन, लहै कोप - दसभाल ।
तड़कि आय भुइँ, तमकि पुनि, कर लिय खड्‌ग कराल ॥ ८१ ॥

पद-अघात तेहि डगमग लंका ❋ तासु कोप लखि दनुज ससंका
दसमुख बेगि चलेउ पुनि धाई ❋ अनुज - हीय हनि लात जमाई
धरनि अचेत विभीषन पाता ❋ जिमि समूल छिति विटप प्रपाता
निरखि निसिचरन अति दुख पावा ❋ हाहाकार दनुज - दल छावा
पुनि सुर - सुरपति देखि जुड़ाने ❋ कहत परस्पर आनँदसाने
बन्धु विभीषन पाद प्रहारी ❋ कुशल न, निश्चित मरन सुरारी[2]
निज अपमान न रामहिं चिन्ता ❋ भक्त - अनादर दुसह अनन्ता

येखानेते हस्ती सब चरे निरन्तर ❋ भक्ष्य द्रव्य उपहार राखेये विस्तर
खाइवार लोभे हस्ती गला बड़ाइल ❋ गलाय लगाय दड़ि सवाइ पड़िल
दुष्टेर मिशाले हय शिष्टेर बन्धन ❋ सेइ मत तव पापे मजे पुरीजन
जेइ मात्र ए कथा कहिल विभीषन ❋ महाकोपे उन्मत्त हइल दशानन
दन्त कड़मड़ि करि छाड़िया हुंकार ❋ विकट निनादे कहितेछे आरबार
एकि एकि एकि रे दुर्म्मति विभीषन ❋ धरियाछे बुद्धि तोर चिकुर शमन
चौद्द चतुर्युग हैल आमार जनम ❋ इति मध्ये शुनि नाइ हेन दुर्व्वचन
करियाछि कलह इन्द्रादि देवसने ❋ केह पारे नाइ कहि वारे कुवचने
ताहा शुनाइलि तुइ क्षुद्र हये मोरे ❋ किन्तु तार फल एइ देखाइ रे तोरे
एत कहि खर तर खड्ग करि करे ❋ लम्फ दिया पड़िलेक भूतल उपरे
तार पदाघाते लंका करे टलमल ❋ क्रोध देखि अति भीत राक्षस सकल
तबे सेइ दशानन महावेगे चले ❋ पदाघात कैला विभीषण वक्षःस्थले
विभीषण अचेतन हइया ताहार ❋ पड़िल धरणी तले छिन्न तरु प्राय
ताहा देखि यावतीय निशाचरगन ❋ हाहाकार करे सबे अति दुःखिमन
ताहा देखि देवगण आर सुरपति ❋ परस्पर कहितेछे एसब भारती
गेल गेल गेल एवे निश्चित रावण ❋ विभीषण अंगे करि चरण अर्पण
बरञ्च सहेन राम निज तिरस्कार ❋ भक्त अपमान सह्य ना हय ताहार

१ भोजन की लालच में २ देवताओं का शत्रु रावण ।

कहि-सुनि, इत प्रहस्त पुनि कीना * सिंहासन दसमुख आसीना
कर सों खड्ग सचिव लै जाई * कोष[1] सौंपि दिय अन्त, बराई[2]
सचिव - विभीषण निसिचर चारी * तेहि सम्हारि आसन बैठारी
सकल सभा यहि बिच जड़रूपा * निरखत सब पुत्तली[3] सरूपा

विभीषण का लंका-त्याग

पुनि कछु छन विवेक उर धारी * बन्धु विभीषण गिरा उचारी
महाराज ! अपकर्म तुम्हारा * किञ्चित खेद न मैं उर धारा
अतिशय विभव - मत्त - जन - रीती * जग तिन विदित सहज दुर्नीती
एक, तात ! मोहिं खेद अपारा * लेहुं विदा तव करि परिहारा[4]
उर मम एक अनन्त कलेसू * दनु - कुल मरै पाप - लंकेसू

दो० कहेउ दसानन कोपि सुनि बन्धु बखानत नीत।
जाति-नेह तव प्रकट भल, धन्य ! जाति के मीत ॥ ८२ ॥

जाति-विपति लखि तोहिं हुलासू * जाति-हृदय तव मोहिं प्रकासू
मानी - धनी जाति महँ कोई * निरखत ताहि दुसह दुख होई
यदपि मरन-निज, तबहुँ सुखारी * किन्तु न विभव-जाति रुचिकारी
कपटाचार, नेह दरसाई * ढूँढ़त छिद्र जहाँ लौं पाई
रञ्च दोष पावत प्रतिकूला * करत उपाय विनास - समूला

एखाने प्रहस्त उठि धरि दशानने * सान्त्वना करिया बसाइल सिंहासने
हस्त हैते काड़िया लइल खड्गखान * कोषे आच्छादिया राखिलेन अन्यस्थान
विभीषण मंत्री चारिजन निशाचर * तुलि बसाइल तारे आसन उपर
क्षण काल पर्य्यन्त तावत् सभाजन * रहिला निस्तब्ध ह'ये पुत्तली जेमन

विभीषणेर लंकात्याग

विभीषण क्षणकाल करि विवेचन * पुनर्व्वार रावणे कहेन ए वचन
महाराज, करिले जे कर्म्म आचरन * इहाते दुःखित किछु नहे मोर मन
ऐश्वर्य्य-मदेते मत्त जारा अतिशय * ताहादेर एइ रूपे दुःखभाव हय
इहातेउ नाहि मोर बड़ दुःख आर * चलिलाम आमि तोमा करि परिहार
एकमात्र खेद एइ रहि गेल मने * मजिल राक्षस कुल तोमार दूषने
हेन वाणी शुनि अति क्रुद्ध लंकापति * कहितेछे पुनर्व्वार विभीषण प्रति
जानि जानि विभीषण ज्ञातिर हृदय * ज्ञातिर विपद् देखि आनन्दित हय
ज्ञातिमध्ये केह यदि हय धनी सुखी * ताहा देखि अन्य ज्ञाति हय मनोदुःखी
वरञ्च आपन मृत्यु पारे सहिवारे * ज्ञातिर ऐश्वर्य्य किन्तु सहिते ना पारे
ताहे पुनः कापट्य करिया प्रकाशन * निरन्तर छिद्र तार करे अन्वेषन
पावा मात्र कोन छिद्र विविध प्रकारे * आयोजन करे समूलेते नाशिबारे

---

१ म्यान मे २ हटा दिया ३ जड़ मूर्ति ४ परित्याग।

विप्र - स्वभाव सहज तप - शीला * वनितन चपल सहज जिमि लीला
गो - धन दुग्ध विदित सब काऊ * जाति-द्रोह तव सहज स्वभाऊ
करु तजि लंक गमन छन अबहीं * तव बिन सकल निरापद रहहीं
नीति शास्त्र इमि ज्ञान बखाना * सुनु शठ ! प्रस्तुत सकल प्रमाना
उचित संग-रिपु अथच[1] भुजंगा[2] * रिपु-सेवक जनि समुचित संगा
यदपि अनुज, तैं रिपु-अनुकूला[3] * तव सत्संग सदा प्रतिकूला
अतः गमन करु तजि मम देसू * बिलमत[4] अतिशय होय कलेसू
सुनि मतिमान विभीषण एही * पुनि सविवेक उतर इमि देही
ठकुरसुहाती[5] सुलभ सदाहीं * कटु-हित कथन-श्रवन जग नाहीं[6]
निश्चय तव यमपुर पग धारन * ममहित बानि अरुचि यहि कारन
अरुन्धती[7] दृग तर जनि आवैं * सुहृद-वचन श्रवनन नहि भावैं

दो० गहति नासिका - रन्ध्र जनि गन्ध-दीप-निर्वान ।
एते लच्छन - युक्त जे, ते मानव म्रियमान[8] ॥ ८३ ॥

उर मम कथन धरेउ, लंकेसू ! * बिलपत अनुज तजेउ तव देसू
यदपि छोभ मोहिं बन्धु-वियोगू * दहकति सदन तजत बुध लोगू[9]
तात ! कौन जो मम अपमाना * अग्रज समुझि माव[10] जनि माना

स्वभावत: रह यथा तपस्या ब्राह्मने * चापल्य नारीते यथा दुग्ध गाभीस्तने
सेइ रूप निरन्तर राखिबे प्रत्यय * ज्ञाति हैते स्वभावत थाके महाभय
जाह जाह लंका छाडि तुमि एइ क्षने * तुमि गेले आमरा थाकिब सुखी मने
इहाते प्रमाण हय नीति शास्त्र ज्ञान * तार अर्थ कहि आमि तव विद्यमान
वरञ्च भुजंग किंवा शत्रु सगे रबे * शत्रु सवि-जन-सहवासी नाहि हबे
एके तुमि ज्ञाति ताहे शत्रुभक्ति मान * तुमिह थाकिते मोर ना हब कल्यान
अतएव जाह तुमि छाडि मोर देश * विलम्ब हइन पावे अतिशय क्लेश
एत कथा शुनि विभीषण महामति * कहिते लागिल पुनर्व्वार ए भारती
प्रियवादि-जन राजा सर्व्वत्र सुलभ * अप्रिय पथ्येर वक्ता श्रोताउ दुर्लभ
निश्चय धरेछे तव चिकुरे शमन * नाइ मोर हित वाक्य ना कैले ग्रहन
किंवा अरुन्धती किंवा सुहृद वचन * प्रदीप निर्व्वाण गंध किंवा दु:सहन
नाहि देखे नाहि शुने नाहि पाय घ्रान * हेन दशा यार तारे मृत्यु सन्निधान
एइ कथा मने रेखो भाइ लंकेश्वर * कान्दिया चलिल तब कनिष्ठ सोदर
बहु दु:खे करिलाम तोमारे वर्ज्जन * दह्यमान गृह यथा त्यजे विज्ञजन
करिले तुमि जे मोरे यत परिभव * ज्येष्ठ बलि सहिलाम ताहा आमि सब

१ अथवा २ सर्प ३ शत्रु से सहानुभूति रखनेवाला ४ ठहर कर समय बिताने से ५ चापलूसी ६ भली किन्तु कड़ुई बात कहने-सुनने वाले दोनो दुर्लभ है ७ अरुन्धती नक्षत्र ८ मरने के समीप ९ बुद्धिमान् १० बुरा ।

जो कोउ अन्य करत अपकाजू * समुचित उतर देत, दनुराजू¹ !
कहेउँ सोचि मैं राजु - भलाई * प्रतिफल प्रभु मोहिं लात जमाई
तव पद तजि रघुपति गहि चरना * यहि छन लीन अकिञ्चन² सरना
अरज एक सुनु मम, भट ! मानी * अन्त समय सुमिरेउ मम बानी
कहैं विभीषन दनुजन हेरी * चलै संग मम रुचि जेहि केरी
जेहि उर जीवन - साध समाई * चलि रघुनाथ लेय सेवकाई
कहि इमि बन्दि निशाचरराई * उठि पथ-गगन विभीषन जाई
सो लखि सचिव-विभीषन चारी * तेहि पद, सहित मोद, अनुसारी
अनिल, अनल, सम्पाति महोदर * भीमादिक सुत - मालि निसाचर
लै तिन संग चले जहँ जननी * कथा विनीत विभीषन बरनी
अनुमति-मातु लीन शिर नाई * जहँ प्रिय बसति सदन तहँ जाई
'सरमा' नाम तियहिं उर लाई * सहित प्रेम सब कथा सुनाई
प्रिय ! उर धारि शरन-रघुकेतू * चलेउँ चारि मैं सचिव समेतू

दो० सिय समीप रहि सर्वदा, जो सेवहु मन लाय ।
सीय-अनुग्रह-सुफल मोहिं, लेयँ राम उर लाय ॥
सरमा सिय-अनुरागिनी, अतुल शील गुन खानि ।
आयसु लहि, पुनि विदा किय, पतिहिं जोरि जुग पानि ॥ ८४ ॥

अन्य कोन जन यदि करित ए काज * देखाताम तारे फल निशाचरराज
ब'लिलाम राज्यरक्षा हेतु ये बचन * से कारणे हइलाम लाथिर भाजन
तोमार चरण छाड़ि रामेर चरन * शरण लइल आजि एइ अकिञ्चन
एक कथा ब'लि आमि भाइ हे रावन * मृत्युकाले स्मरिउ हे आमार वचन
शुन शुन मोर कथा ओहे बन्धुगन * चल मोर सगे यदि हय कारो मन
यद्यपि वासना हय जीवन राखिते * चल तबे श्रीरामेर चरण सेविते
एत कहि रावणेरे करिया बन्दन * उठिया आकाश पथे चले बिभीषन
ताहा देखि ताँहार अमात्य चारि जन * आनन्दे करिल ताँर पश्चाते गमन
अनिल अनल भीम सम्पाति अपर * एइ चारिजन मालि - सन्तान सोदर
ताहादेर सहित जाइया विभीषन * मातार निकटे सब कैला निवेदन
ताँर अनुमति ल'ये प्रणमिला ताँरे * तार पर गेल निज भवन माझारे
निज भार्य्या सरमाके निकट डाकिया * कहिते लागिल तारे प्रणय करिया
प्रिये आमि रामचन्द्र शरण लइते * चलिलाम एइ चारि अमात्य सहिते
तुमि जानकीर काछे थाक निरन्तर * करिबे ताँहार सेवा हइया तत्पर
तिनि यदि अनुग्रह करेन तोमारे * तबे राम अंगीकार करिबेन मोरे
सुशीला सरमा जानकीते भक्तिमती * 'जे आज्ञा' बलिया ताहे दिला अनुमति

१ हे निशिचरनाथ ! २ तुच्छ ।

निज शस्त्रास्त्र विभीषण लीन्हा * सचिवन सहित गमन पुनि कीन्हा।
पाद - प्रहार कुतूहल रचना * रावन त्यागि विभीषण - गमना
कृत्तिवास सो गाय बखाना * भक्त[1] समक्ति सुनत धरि ध्याना

विभीषण का कुबेरालय-गमन और कुबेर द्वारा उपदेश

गगन-पन्थ गमनत तजि लंका * सचिवन प्रकट करत निज शंका
प्रस्तुत विपति निरखि यहि काला * कीन अनादर मैं दशभाला
जो अब सरन लहौं रघुकेतू * अपजस अबुध देयँ यहि हेतू
अवसर टारि चलहिं जहँ रामा * दशमुख लहै जबहिं यमधामा
तब लौं बसहिं कतौं[2] बन जाई * राम - पदुम - पद ध्यान लगाई
करि सलाह संयम उर धारा * थिर न चपल मन क्लेश अपारा
मन आतुर सेवहिं पद-रामा * लहत न चंचल मन विश्रामा
किमि कर्तव्य, होत जनि निश्चय * कहौ सचिव ! मेटौ उर संशय
युक्ति बहोरि एक उर आई * करहु विचार कहउँ समुझाई
अग्रज[3] मम कुबेर जो भ्राता * परम सुशील शुद्धमति ज्ञाता
अकथ कुबेर अतुल गुनरासी * जासु सखा शंकर अविनासी
लेहिं सीख चलि, आयसु पाई * करहिं यथाविधि, अस मन आई
युक्ति - विभीषन सबन सुहाई * निश्चय कीन सचिव - समुदाई

तबे विभीषण निज अस्त्र-शस्त्र निया * यात्रा कैला चारि मंत्री संगेते करिया
विभीषण पदाघात अपूर्व्वकथन * रावणेरे त्यजिया चलेन विभीषन
कृत्तिवास रचिलेन गीत रामायन * भक्तिभावे शुन सब रामभक्तजन

विभीषण-कुबेर सम्वाद

लंका छाड़ि व्योमपथे जाइते जाइते * मंत्रिगणे विभीषण लागिला कहिते
उपस्थित विपद् करिया निरीक्षण * करिलाम आमिह अग्रजे उपेक्षण
ताहा यदि राम काछे करिहे गमन * अख्याति करिबे मोर यत अज्ञजन
अतएव मने करि एबे ना जाइबे * रावण विनाश ह'ले प्रस्थान करिबे
एक्षणे थाकिया कोन निर्ज्जन कानने * श्रीराम चरण पद्म ध्यान करि मने
एइ परामर्श करि किन्तु निज मन * सुस्थिर करिते नारि पाइया जातन
राम पाद पद्म मन करिते सेवन * चञ्चल हयेछे बड़ ना माने वारण
अतएव कि करिब ना हय निश्चय * तोमा सबे कह इथे कर्त्तव्य कि हय
करितेछि आमि इथे परामर्श आर * ताहाउ कहि ये शुनि करह विचार
मोदेर अग्रज भ्राता हन धनपति * सुशील परम विज्ञ अति शुद्धमति
कि कहिब आर तार गुणेर विस्तार * सखा हयेछेन शम्भु गुणेते जाँहार
तारे जिज्ञासिले या करेन आज्ञापन * ताहाइ करिब, एइ लय मोर मन
विभीषण वाणी शुनि चारि मंत्री कय * करेछेन एइ युक्ति सुन्दर निश्चय

१ नासमझ लोग २ कहीं अन्यत्र ३ बड़ा भाई ।

दो० धनपति[1] आयसु लेन हित, गमने पन्थ - अकास।
मुदित विभीषण-सचिवगन, पहुँचे गिरि कैलास॥ ८५॥

तहँ शिवलोक, शम्भु धरि ध्याना * जानि गौरि प्रति सकल बखाना
अनुज विभीषन दसमुख केरू * जात मिलन जहँ सुहृद कुबेरू
सिय समर्पि पुनि राम-मिताई * अनुज - सीख रावनहिं न भाई
कीन अनादर अति लंकेसू * यहि कारन आगम यहि देसू
यदपि विभीषन - उर श्रीरामा * संशय चित्त न उर विश्रामा
जेहि विधि संसय होय निवारन * प्रिय कुबेर ढिग, किय पगधारन
हरैं कुबेर न संसय - हेतू * तरैं विभीषन जनि भव-सेतू
यहि कारन चलि स्वयं बुझाई * जेहि विधि लेय सरन - रघुराई
यदि कोउ राम चरन अनुरागा * अतिव, उमा! मम उर सुखपागा
जीव असंख्य बसत यहि लोकू * पर हित विरल[2] व्यथा पर शोकू
विरल धर्मरत हितुन - अनेका[3] * धर्मिन बिच मुमुक्ष[4] जन एका
कोटि मुमुक्ष, मुक्त-जन कोऊ * मुक्तन राम-भक्त कोउ-कोऊ
यहि विधि रामभक्त यदि एका * लहत मुक्ति लहि दरस अनेका
मम अभिलाष सदा यहि हेतू * सुमिरैं त्रिश्व चरन-रघुकेतू
गहैं विभीषन पद - रघुराई * सकल तासु तौ विपति नसाई

एतेक वचन शुनि आनन्दित मन * व्योमपथे कैलासे चलिला विभीषण
एखानेते निज स्थाने थाकि पशुपति * सकल वृत्तात जानि कन शिवा प्रति
शुन प्रिये रावण अनुज विभीषण * करितेछे सखार निकटे आगमन
सीता फिरि दिया राम संगे मिलिवार * ब'लेछिल सेइ रावणेर बारे बारे
सेह तार ना शुनि करेछे अपमान * एइ लागि तारे छाड़ि आसिछे एखान
हइयाछे तार मन श्रीरामे भजिते * किन्तु करितेछे पुनः नाना शंका चिते
एखन संशयच्छेद करिवार आशे * आसितेछे मोर प्रिय सुहृदेर पाशे
यदि सखा ना पारेन बुझाइते तारे * तबे पड़िवेक सेइ संकट सागरे
अतएव चल जाव आमिउ सेथाय * राम काछे पाठाइते हइबे ताहाय
यदि केह रामचन्द्र करये आश्रय * तबे मोर कतइ परमानन्द हय
देख देख संसार असंख्य जीवमय * तार मध्ये हिते रत केह केह हय
तार कोटि मध्ये एक जन धर्म्मपर * तार कोटि मध्येते मुमुक्ष एक नर
तार कोटि मध्ये एक जन हय मुक्त * तार कोटि मध्ये एक रामभक्ति युक्त
हेन राम भक्त यदि हय कोन जन * तार गुणे कत लोक पाय विमोचन
अतएव सतत वासना मोर मने * भजुक सकल लोक श्रीराम चरने
ताहे विभीषण गेले राम सन्निकटे * हइबे ताँहार कत हित ए संकटे

१ कुबेर २ कोई कोई ३ अनेक परोपकारियों में ४ मोक्ष चाहने वाला।

तौ चलि अबहिं निवारइँ[1] संशय * जेहि विधि लहैं राम-पद निश्चय

दो० पंचानन मत धारि इमि, 'नन्दिहिं'[2] आयसु दीन ।
साजि 'वृषभ' तत्काल तहँ, नन्दी प्रस्तुत कीन ॥ ८६ ॥

पशुपति बेगि उमा-कर[3] लीना * वृष वाहन दोउ भये असीना
तेहि छन उमा-उमापति शोभा * निरखि न केहि मन उपजत लोभा
सहित सभासद शंभु सवारी * सखा कुबेर - निवास पधारी
निरखेउ आवत दूरि महेसा * गमने स्वागत हेत धनेसा[4]
वृष सों उतरि वृषाकपि[5] धाई * कौतुक लिय कुबेर लपिटाई
दोउ कर[6] दुहुन नेह मन लीना * आसन दिव्य भये आसीना
अखिल पार्षद, उमा भवानी * समुचित लिय आसन सुख मानी
युगुल मित्र धनपति पुनि शंकर * करत सप्रेम अलाप परस्पर
तबहिं विभीषन सचिवन लीन्हे * गिरि कैलास आय पग दीन्हे
कनक दिव्य मणि रचित ललामा * विश्वकर्मा निर्मित छविधामा
पुरी विभीषन कीन प्रवेसा * चले, सभा जहँ जुरी धनेसा
दूरि विभीषन शंकर देखी * कहत कुबेरहिं मोद विशेषी
रावन - अनुज सधर्म विभीषन * करत तात ! तव तीर आगमन

अतएव खण्ड तार सकल संशय * पाठाइब प्रभुकाछे अद्य निश्चय
एत कहि नन्दीरे कहेन त्रिलोचन * शीघ्र साजाइया वृषे कर आनयन
तव नन्दी गिया वृषे करिया साजन * करिलेक प्रभुर अग्रेते आनयन
तबे महादेव उठि शिवा-करे धरि * आरोहण करिलेन वृषेर उपरे
हइल जेरूप शोभा सेकाले ताँहार * ताहा भावि मन सुखी ना हय काहार
एइ रूपे पार्षद सहित पञ्चानन * गमन करिला निज सखार भवन
दूर हैते ताँरे निरखिया धनपति * अग्रसर हइया आसिला शीघ्र गति
वृषाकपि वृष हैते नामिया भूतले * आलिंगन करिला कुवेरे कुतूहले
तबे दुइ जने कर धराधरि करि * बसिला जाइया दिव्य आसन उपरि
शिवा आर यावतीय शिवभक्तगन * यथायोग्य स्थानेते बसिला सुखिमन
तबे पशुपति निज सखार सहित * करिलेन प्रेम आलापन समुचित
हेन काले चारि मन्त्रि सने विभीषन * करिलेन कैलाश भूधरे आगमन
दिव्य मणि सुवर्णे से रचित नगर * विश्वकर्म्मा विनिर्म्मित परम सुन्दर
से नगरी माझे प्रवेशिया विभीषन * करिलेन कुबेरेर सभाय गमन
दूर हैते विभीषणे देखि पशुपति * कहिलेन सुखिमने कुबेरेर प्रति
देख सखे रावण अनुज विभीषन * करितेछे तोमार निकटे आगमन

---

१ दूर करें २ शिव का पार्षद नन्दी ३ पार्वती का हाथ ४ कुबेर ५ शंकर ६ हाथ ।

सिय समर्पि पुनि राम मिताई * न्याय सीख रावनहि बुझाई
किय अपमान कुपित लंकेसू * इमि तजि लंक इतै[1] तव देसू
राम - शरन तेहि जदपि सुहावा * किन्तु हृदय कछु संशय छावा

दो० तव सम्मति हित आगमन, हरहु विभीषन-पीर।
धनपति! बेगि सुबुद्धि दै, पठवहु रघुपति तीर ॥ ८७ ॥

मिलै विभीषन चलि रघुराई * रामहेतु अति मंगलदायी
रघुपति-सरन लहत, दिन फिरहीं * सरनागतहिं दनुजपति[2] करहीं
जबहिं बुझावत शम्भु कुबेरा * तेहि छन दुहुन विभीषन हेरा
मोद अपार अनन्द - विभोरा * बरनत निरखि सचिवगन ओरा
अहह धन्य! मम धन्य कपाला[3] * सभा विराजत शम्भु कृपाला
देवन सतत दरस अभिलाषा * चरन, योगिजन जेहि चित राखा
पुनि, मुनि परम तत्व के ज्ञाता * निरवधि[4] पद सभक्ति प्रणिपाता
लहेउँ सहज शिव-दरस पुनीता * पूर्ण मनोरथ आजु अतीता[5]
यहि विधि दनुज-शिरोमनि आगे * चलि पद दुहुन गहेउ अनुरागे
मृत्युञ्जय[6] पुनि आशिष दीन्हा * अनुज कुबेर अलिंगन कीन्हा
दनुज[7] विराजत आयसु पाई * धनपति पुनि पूछत कुसलाई
पन्थ समोद पार किय, ताता * कहु तव लंक सुखी सब भ्राता!

एइ क'हेछिल रावणेर न्यायरीते * सीता फिरि दिया राम सहित मिलिते
ताहा ना शुनिया से करे छे अपमान * एइलागि लका छाड़ि आसिछे एस्थान
इच्छा हइयाछे रामे करिते आश्रय * किन्तु हृदयेते आछे किंचित संशय
इहा लागि आसितेछे तोमा जिज्ञासिते * पाठाउ इहारे राम निकटे त्वरिते
इह सेखानेते गेले विविध प्रकार * इहवेक श्रीरामचन्द्रेर उपकार
इह यावामात्र सखा करि रघुवर * इहारे करिबे राजा राक्षस उपर
एइ रूप कुवेर कहेन पञ्चानन * देखिला दूरेते थाकि तारे विभीषन
ताहे ह'ये अतिशय आनन्दित मति * कहिते लागिला निज मंत्रिगण प्रति
एकि एकि देखियाछ मोर भाग्योदय * सभा माझे बसिया कृपालु मृत्युञ्जय
याँहारे देखिन वाञ्छा करे देवगण * योगी सब ध्यान करे याँहार चरण
मुनिगण परमार्थ तत्व जानिबारे * भक्तिभरे निरवधि सेवा करे यारे
हेन प्रभु देखिते पाइनु अयतने * मनोरथ परिपूर्ण हैल एत दिने
एइ रूप कहिते कहिते आगे गिया * पाड़लेन ताँहादेर पदे लोटाइया
महादेव आशीर्व्वाद कैला तार प्रति * आलिंगन करिला सादरे धनपति
तबे आज्ञा ल'ये बसिलेन विभीषन * कुबेर ताहार प्रति कहेन बचन
आसियाछ पथे सुखे भ्राता विभीषण * कुशले आछय तव सब बन्धुगण

---

१ इधर तुम्हारे यहाँ २ लंका का राजा ३ भाग्य ४ सर्वदा ५ बहुत दिनों का ६ शिव ७ विभीषण।

बदन मलीन विरस तव गाता * कहु मन तव विषाद किमि जाता
धनपति के सुनि वचन विभीषन * अति विनीत पुनि करत निवेदन
प्रभु ! सुख सहित पन्थ मम बीता * यहि छन लौं सब बन्धु सप्रीता
किन्तु उपस्थित दुख यहि काला * तेहि कारन प्रस्तुत तत्काला

दो० हरि लायेउ दसकंध सिय, प्रभु-चर पवनकुमार।
आय भेंटि सिय, लंक पुनि जारि कीन सब छार॥ ८८॥

रघुपति लै कपि कटक अपारा * लंक-सिन्धु-तट कीन उतारा
बन्धुहिं मैं बहुविधि समुझाई * लहौ, सीय दै, राम-मिताई
एक न मानि अनादर कीन्हा * मैं तजि लंक सरन तव लीन्हा
यहि छन मम कर्तव्य, धनेसू ! * मैं तव सरन, करहु निर्देसू
सुनि कुबेर बोलत इमि बानी * विदित सकल मोहि प्रथम[1] कहानी
तदपि, सुनहुँ तव मुख, अभिलाषा * तात ! सकल तुम समुचित भाषा
संसय तजि गमनहु अविरामा[2] * जहँ सुग्रीव लखन प्रभु रामा
मिलत न बेर, राम रघुनाथा * तुमहिं सखा मम करहिं सनाथा
अरहिं सकल निसाचर-देसू * करि अभिषेक[3] करहिं लंकेसू
हनि दसकंध सबन्धुन, रामा * तुमहिं राजु दै, गमनहिं धामा

देखितेछि म्लान किछु तोमार बदन * कह कह कि कारणे चिन्तायुक्त मन
कुबरर एइ वाक्य करिया श्रवण * निवेदन करिते लागिला विभीषण
करियाछि प्रभु पथे सुखे आगमन * सम्प्रति आछये सुखे सब बन्धुजन
किन्तु एक दुख हइनेछे उपस्थित * इहा लागि आइलाम एखाने त्वरित
दादा दशानन रामचन्द्रेर भार्य्यारे * हरिया आनियाछेन लंकार भितरे
तार दूत ह'ये आसियाछिला हनूमान * सीता भेटि गियाछे दहिया लंका खान
सम्प्रति से रामचन्द्र ल'ये कपिगन * करेछेन सागर कूलेते आगमन
ताहा जानि कहिलाम आमिहि दादारे * सीता फिरि दिया राम सगे मिलिवारे
ताहा ना शुनिया मोर कैला अपमान * ए लागि त्यजिया लंका आइनु एस्थान
सम्प्रति उचित हय मोर कि करण * याहा आज्ञा कर आमि लइनु शरण
विभीषण वाणी एइ शुनि धनपति * कहिवारे आरम्भ करिला तार प्रति
इहा मोर जानि भ्राता बहु पूर्व्व ह'ते * तबु जिज्ञासिनु तव बदने शुनिते
कहियाछ जाहा तुमि ताहा समुचित * ना हइबे इथे कोन प्रकारे चिन्तित
जाह जाह एइक्षणे करह गमन * जेखाने आछेन राम सुग्रीव लक्ष्मन
तुमि जावामात्र रामचन्द्र बराबर * सखा करिबेन तोमा प्रभु रघुवर
आर सेइ निशाचर राज्य अधिकारे * करिबेन अभिषेक अवश्य तोमारे
सबान्धवे रावणे करिया विनाशन * तोमा राज्य दिया राम जाबेन भवन

१ पहले से ही प्रकट थी २ तुरंत ३ राज्यतिलक।

यहि कारन तजि सब सन्देहू * रघुपति चरन - गमन मन देहू
संसय तजि, ह्वै राम सहाई * करहु विनास दनुज - समुदाई
सुर - द्विज - धर्म विरुद्ध दसानन * मारि, त्रिलोक बनहु सुख-कारन
लहैं विश्व पुनि सुख - सन्तोषू * यहि विधि लहहु अमरगन-तोषू[1]
ऋषिगन आसिष करहिं प्रदाना * त्रिभुवन होय सुयश तव गाना।
सदा विभीषन रघुपति - दासा * शिव-कुबेर, कवि[2] कथा प्रकासा।

विभीषण को शिव-उपदेश

दो० सीस लचाये विभीषन, सुनत धनद[3] के बैन।
संसय लखि शिव दयामय बोले करुनाऐन ॥ ८६ ॥

अग्रज - बचन तुमहिं परमाना[4] * तजहु अकारन संसय नाना
निज पुनि साधि विश्व कर हेतू * अबहिं गमन करु जहँ रघुकेतू
आशुतोष[5], सुनि बैन, विभीषन * सीस नाय इमि करत निवेदन
प्रभु कुबेर पुनि कथन तुम्हारा * नाथ! न दुलखि[6] सकत संसारा
करहुँ निवेदन चलि जहँ रामा * प्रस्तुत, त्यागि बन्धु-धन धामा
संसय उर अति किन्तु महेसा * करहु दयामय दूरि कलेसा
यहि अवसर रघुपति पहँ जाई * जग निन्दा चहुँ लोक - हसाई

अतएव त्यजि तुमि सकल सन्देह * श्रीरामेर निकटे जाइते मन देह
राम संगे मिलिया सकल निशाचर * सहार करह गिया त्यजि सब डर
रावण अधर्म्मी देव-द्विज द्रोहकारी * त्रिभुवन सुखी कर ताहारे संहारि
हइबेक तबे एइ विश्वेर मंगल * तोमारे हबेन तुष्ट अमर सकल
आशीर्व्वाद करिबे तोमारे ऋषिगन * गाइबे तोमार यश ए तिन भुवन
रामभक्त विभीषण सदा राम दास * शिव कुबेरेर कथा रचे कृत्तिवास

विभीषणेर प्रति शिवेर उपदेश

कुवेरेर मुखे शुनि एतेक वचन * अधोमुख हइया भावेन विभीषन
ताहा देखि परम दयालु शूल पानि * कहिते लागिला तार अभिप्राय जानि
भावितेछ अकारणे किवा विभीषन * कर निज अग्रजेर वचन पालन
जाह जाह श्रीरामेर निकटे त्वरित * करह निजेर आर संसारेर हित
विरूपाक्ष वाणी एइ शुनि विभीषन * कृताजलि हइया करेन निवेदन
जे आज्ञा करेछ प्रभु तोमा दुइ जन * कार शक्ति करिबारे इहार लंघन
आमिह श्रीराम काछे जाइब बलिया * आसियाछि गृह धन बान्धव त्यजिया
किन्तु ताहे अनेक संसय लय मन * अनुग्रह करि ताहा करह खण्डन
आमि यदि राम काछे जाइ एइ क्षन * सब करिबेक लोक आमार निन्दन

---

१ देवताओं की तृप्ति २ कृत्तिवास ने ३ कुबेर ४ प्रमाण, पालनयोग्य ५ महादेव ६ नहीं काट सकता।

विपति परे तजि लंक - अधीपा * गयेउ विभीषन शत्रु समीपा
तदुपरि[1] राम देयँ अभिषेकू * सतत[2] विश्व अपजस - अतिरेकू[3]
मैं परि लोभ राज की आसा * अग्रज सकुल सबन्धु विनासा
यहि कारन यहि समय बराई[4] * आगे करहुँ यथायसु[5] पाई
इमि सुनि, विरस विभीषन देखी * कहत शंभु सविनोद विशेषी
अहो! विभीषन अचरज बानी * किमि संसय तव मति बौरानी
भ्रम तजि करु मम वचन प्रमाना * राम - भजन सब काल समाना
प्रभु कर रूप न तैं पहिचाना * 'मानव' समुझि विषम अज्ञाना
यहि भ्रम संसय नाना जाती * सुनु कछु रूप राम जेहिं भाँती

दो० राम सत्य-सुख ज्ञान-घन वेद-जनित परमेश[6]।
जीवाधार अचिन्त्य सो कर्त्ता जगत अशेष ॥
परम शक्ति, स्थिति - प्रलय - सृष्टि सकल आधार।
अविनाशी भगवान प्रभु, महिमा-राम अपार ॥ ६० ॥

कहि कोउ 'ब्रह्म' अराधन करहीं * 'नारायन' कहि कोउ स्मरहीं
तीनि लोक - रचना अधिकारी * दुख निवारि भक्तन सुखकारी
तासु भजन जनि काल-विधाना[7] * जब जेहि रुचि सुमिरै भगवाना
भक्ति - भाव रस जासु अनूपा * सुख - संसार तजत यहि रूपा

कहिवेक रावणेर विपद देखिया * तारे छाड़ि विभीषण गेल दुष्ट हैया
नाहे पुनः यदि मोरे राज्य देन राम * तबे दोष घुषिबे संसारे अविराम
बलिबे सकले विभीषण राज्य लोभे * बधिलेक सबान्धवे अग्रजे अक्षोभे
अतएव एक्षणे जाइने नाहि मन * परेते करिबे जे करिबे आज्ञापन
इहा कहि विभीषण विग्न हइल * हासि हासि शिव तारे कहिते लागिल
एकि एकि विभीषण बड़ चमत्कार * हइतेछे ए संशय केन वा तोमार
कहितेछि मोरा यारे करिते आश्रय * ताँहार भजने नाहि समय निर्णय
बुझि रामे आछे तव 'नर' बलि ज्ञान * इहा लागि करितेछ संशय विधान
हेन बोध अतिशय अनुचित हय * शुन शुन किछु ताँर स्वरूप निर्णय
सत्य - सुख - ज्ञान - घन - तनु रघुपति * परमात्मा भगवान कहे श्रुति यति
जीवेर नियन्ता अविचिन्त्य शक्तिधर * सृष्टि-स्थिति-लय कर्त्ता जगद् ईश्वर
केह ताँरे ब्रह्म ब'लि करे उपासन * केह नारायण ब'लि करये भजन
ह'ये छेन तिनि लोके सम्प्रति प्रकट * साधिते भक्तेर सुख नाशिते संकट
समय निर्व्वन्ध नाहि ताँहार भजने * करिबे तखनि इच्छा जबे हबे मने
सेइ त ताँहार भक्ति हेन गुण धरे * इच्छा हवा मात्र संसारे त्याज्य करे

---

१ उसके ऊपर २ सदा के लिए ३ असीम ४ बचाकर ५ आदेशानुसार ६ परमेश्वर ७ समय निर्धारित नहीं है।

तव सुत - तीय - बन्धुजन - त्यागा ※ किमि उपजत बिन हरि अनुरागा
यहि विधि कतहुँ न संशय - हेतू ※ चलि करु भजन जहाँ रघुकेतू
जासु दरस कामना हमारी ※ दैवयोग सो नयन अगारी
राम प्रतच्छ दरस सुख त्यागी ※ सहन कलेस अन्त केहि लागी[1]
पुनि पुनि सीख तुमहिं यहि हेतू ※ संसय तजि सेवहु रघुकेतू
तजेउ बन्धु लखि विपति - विवादू ※ चर्चहिं विविध लोक अपवादू
यहि विधि कथन, श्रवन जनि योगू ※ रुचिर न भगतहिं गृह-सुख-भोगू
प्रगटत प्रभु प्रतच्छ तेहि कारन ※ बिन तेहि दरस धीर किमि धारन
प्रभु-पद नेह हिये जहँ जामा ※ तजत बन्धु अतिशय गुनधामा
अग्रज दुष्ट अतिव तुम त्यागा ※ अजस कलंक तुमहिं किमि लागा
तव अपरञ्च[2] सुयश त्रयलोका ※ सदा बखानहिं जस बुधलोका[3]
पुनि आरोप राज कर लोभा ※ तव उर अपकीरति कर छोभा

दो० उचित, तात! अपवाद[4] जनि, अनुचित तासु विचार।
कतहुं न तव उर लालसा राज-लोभ संचार ॥ ६१ ॥

तुमहिं न साध[5], न याचत[6] राजू ※ पुनि किमि निन्दइ तुमहिं समाजू
बरबस[7] रघुपति करें नरेसू ※ तौ किमि तुमहिं अजस कर लेसू
पितु - प्रह्लाद नृसिंह निपाती ※ प्रह्लादहिं नृप किय; जग ख्याती

तुमि त त्यजिया आसियाछ बन्धुजन ※ इथे जानियेछि, इच्छा हइयाछे मने
अतएव संशय करह कि कारन ※ जाह जाह कर गिया श्रीरामे भजन
जाँर मोरा ध्यान करि देखि मनोरथे ※ भाग्यगुणे रयेछेन तिनि नेत्रपथे
इहाते साक्षात् देखा सुख परिहरि ※ केन क्लेश पाइबे अन्यत्र ध्यान करि
ए लागिया कहितेछि आमि बार बार ※ जाइ राम निकटेते त्यजिया विचार
तबे जे बलिले गालि दिबे लोकावली ※ विवाद समये बन्धु त्याग कैल बलि
ए कथा न कभु शुनिवार योग्य नय ※ भकति जन्मिले केवा कोथा गृहे रय
ताहे प्रभु रयेछेन प्रकट हइया ※ कि रूपे थाकिबे ताँरे नेत्रे ना देखिया
आर देख रति जन्मे जाहार भजने ※ सेइ त्याग करे गुणवान बन्धुजने
राम सेवा लागि त्यजि दुष्ट बन्धुजन ※ तुमि वा कि रूपे हबे निन्दार भाजन
वरञ्च तोमार एइ यश त्रिभुवने ※ ज्ञान करिबेक सर्व्वस्थाने विज्ञजने
आर जे कहिले, यदि राज्य देन राम ※ तव दोष घुषिबे संसारे अविराम
ए कथाउ उचित ना हय शुनिवार ※ जे हेतु राज्येर आशा नाहिक तोमार
यदि तुमि राजा पाव बलिया जाइते ※ वरञ्च तोमारे सबे पारिते निन्दिते
तिनि यदि बले राजा करेन तोमारे ※ इथे केन अपयश गाहिबे संसारे
देखि देखि वध करि प्रह्लाद पितारे ※ नृसिंह प्रह्लादे राजा कैला बलात्कारे

---

१ किस हेतु २ बल्कि ३ ज्ञानी जन ४ लोक-निन्दा ५ लालसा ६ माँगते हो
७ विवश करके।

सो प्रह्लाद न अपजस भागी ✻ बरनू प्रशंसति जग अनुरागी
इमि रावन बधि तुमहिं नरेसू ✻ करहिं राम, तब दोष न लेसू
बन्धु नास हित कीन मिताई[1] ✻ तबहुँ न कछु अपराध लखाई
मुनिगन शान्त, धर्म मन धरहीं ✻ खल-बध जतन विपुल विधि करहीं
अति अधार्मिक 'वेन' नरेसू ✻ मुनिगन दीन विविध उपदेसू
विफल सीख लखि, करि हुँकारा ✻ मुनिगन 'वेन' नृपति संहारा
यहि विधि तुमहिं न पातक-लेसू ✻ करहु जतन यदि बध-लंकेसू
पुनि लखु 'राम' विष्णु अवतारा ✻ राम प्रीति हित शेष अमारा[2]
यदपि अधर्म! हंतु-रघुराजा ✻ कहत शास्त्र सद्धर्म-सुकाजा
यहि कारन सब संशय त्यागी ✻ गहौ बेगि प्रभु-पद अनुरागी
काज, प्रानपन करि, रघुराई ✻ मिटैं कलेस, प्रेमधन पाई
सुनि महेश-आनन-श्रुतिकन्दा[3] ✻ उदित विभीषन अमित अनन्दा
द्रवित लोचनन सरसति वारी ✻ उर गदगद इमि गिरा उचारी

दो० संशय छीन, कृतार्थ किय, नाथ अनुग्रह-बैन।
पैकरमति[5] कहि, बन्दि पुनि, शंकर करुनाऐन॥
शम्भु दयामय, दीन हित, अतिशय दाया कीन।
वेगि, विभीषन, राम-पद-दरस सुआयसु लीन॥ ६२॥

इथे तार विगान करिबे कोन जन ✻ वरञ्च करये सबे यश: प्रशसन
नाह बध करि दशानने शार्ंगपानि ✻ राज्य दिबे तोमा ताहे कि दोष ना जानि
मिता जे कहिला बधिवारे दशानने ✻ ताहातेउ किछु दोष नाहि लय मने
शान्त धर्म्मनिष्ठ यावतीय मुनिगन ✻ ताँहाराउ दुष्ट बध करे आयोजन
देख वेण नामे राजा अधार्मिक छिल ✻ मुनिगण तारे नानामते शिखाइल
से यवन ना शुनिल ताँदेर बचन ✻ हुंकारे करिला तारे ताँहारा निधन
तुमिउ रावण-बधे कर आयोजन ✻ ना हइबे कोनमत अधर्म्मभाजन
ताहे पुन: हबे इथे राम अवतार ✻ जन्मिबे रामेर प्रीति मंसारेर सार
राम लागि यदि केह करे पाप कर्म ✻ ताहा हय सर्व्व शास्त्रे सिद्ध महाधर्म्म
अतएव सकल सशय परिहरि ✻ जाह राम निकटेते तुमि त्वरा करि
रामकार्य्य साध गिया करि प्राणपन ✻ तरिबे सकल दु:ख पावे प्रेमधन
महेशेर मुखे शुनि एतेक वचन ✻ अति आनन्दित चित हैला विभीषण
अश्रुजल परिपूर्ण हइल नयन ✻ गदगद भावेते करेन निवेदन
प्रभु अनुग्रह दृष्टि-बलेते तोमार ✻ सकल संशय नष्ट हइल आमार
जानितेछि कृतार्थ जे करिला आमारे ✻ आज्ञा देह जाइ एबे राम देखिवारे
एहा कहि महेशेर अनुज्ञा लइया ✻ प्रदक्षिण कैला तारे भकति करिया
पुन: पुन: प्रणाम करेन पञ्चानने ✻ सुन्दरकाण्डेते गीत कृत्तिवास भने

१ मित्रता २ तुच्छ ३ भगवान की राह मे ४ मधुर वाणी ५ परिक्रमा करता है।

श्रीराम-विभीषण मिलन व विभीषण-राज्याभिषेक

यहि विधि शिव पुनि गौरि मनाई * पुनि कुबेर अग्रज-पद ध्याई
लीन्हे चारि मंत्रिगन संगा * चलेउ विभीषन, हीय उमंगा
गमन गगन-पथ रघुपति तीरा * बसि तट-सिन्धु लखत कपिवीरा
शिला विटप कपि कटक सम्हारी * नभ तन, रहे ससंक निहारी
आवत मनहुँ दसानन जोधा * 'मारु मारु' कपि कहत सक्रोधा
व्योम[1] विभीषन प्रगटति वानी * अहह ! शरन में सारँगपानी
यह संवाद दीन चलि पायक * करत सलाह सचिव - रघुनायक
कहत सुकण्ठ न उचित प्रतीती * रिपु बनि मित्र छलै विपरीती
जामवन्त मंत्री मतिमाना * रिपु - सतसंग न उचित बखाना
विभीषनहिं हनुमत पहिचाना * दीन लंक मोहिं जीवनदाना
जो इन सन रघुनाथ - मिताई * तौ दससुख - बध लहिय सहाई
टेरि सुकण्ठ, कहति रघुकेतू * उचित न संक विभीषन हेतू
निज अवगुन निज[2] प्रकट न होहीं * तव मित्रता प्रकट भल मोहीं
कातर जदि सरनागत आवै * करै विमुख परलोक नसावै
बरनत जिमि पुरान, सुनु गाथा * धर्मरूप 'शिवि' नृप नरनाथा

श्रीराम कर्तृक विभीषणेर लंका राज्ये अभिषेक

एइ रूपे प्रणाम करिया पञ्चानने * परे प्रणमिला शिवा आर वैश्रवणे
तब चारिजन मत्री संगेते लइया * चलिला श्रीराम काछे आनन्दित हिया
आकाश रामेर पाशे जाय विभीषण * सागर कूलेते थाकि देखे कपिगण
सम्भ्रमे वानर सैन्य करे तोलापाडा * पादप पाथर लये सबे हय खाड़ा
महाबल पराक्रम देखिन भीषण * सबे बले मार मार एइत रावण
अन्तरीक्षे थाकि ब'ले आमि विभीषण * रामेर चरणे आमि लइनु शरण
कहे विभीषणेर संवाद दूतगण * वसिलेन मंत्रणा करिते मंत्रिगण
सुग्रीव बलेन शुन ए नहे उचित * छल करि यदि सिशि करे विपरीत
जाम्बवान पात्र ब'ले बुद्धि वृहस्पति * शत्रुके निकटे आना नहे मम मति
हेनकाले कहे आमि वीर हनुमान * एइ विभीषण मोरे दिला प्राणदान
मित्रता यद्यपि हय राम-विभीषणे * विभीषण साहाय्येइ बधिब रावणे
श्रीराम बलेन शुन सुग्रीव भूपति * अन्यरूप ना भाविह विभीषण प्रति
आपनार दोष मित्र, ना देख आपनि * तोमा हैते मित्रतार साक्षी आमि जानि
कातर हइया जेबा लइल शरण * परलोक नष्ट यदि ना करे पालन
पुराणेर कथा कहि कर अवधान * शिवि नाम राजा छिल धर्म्म-अधिष्ठान

१ आकाश से २ राम ३ शंका।

त्रसित[1] कपोत[2] श्येन[3]-भय पाई * नृप शिवि-अंक सरन लिय जाई

दो० निज अहार नृप-सरन लखि, 'बाज' प्रकोट[4] असीन।
कहत नृपति! अनरीति किमि? भक्ष्य मोर हरि लीन ॥ ६३ ॥

खग मम सरन, कहत नृपकेतू * इतर मांस अर्पन तव हेतू
जो कपोत - हित जीवन दाना * करौ मांस निज मोहिं प्रदाना
तन-राजसी मांस अति स्वादा * मिटै छोभ लहि भूप - प्रसादा
श्येन-वचन, 'शिवि' अति हर्षाना * काटि मांस निज गात प्रदाना
तिल तिल काटि दीन सब अंगा * लही उदर भरि तृप्ति विहंगा[5]
शोनित[6] फूटि बहीं चहुँ धारा * सिंहासन चहुँ रक्त[6] बहारा
यहि तप नृप बैकुण्ठ निवासू * सरन - विमुख करि सदा विनासू
सरनागत जो होत दसानन * तेहि कर तबहुँ करत प्रतिपालन
आयसु राम, गगन कपि छाये * प्रभु पहँ धाय विभीषन लाये
मिलत विभीषन नृप सुग्रीवा * चर्चत[7] दोउ उर मोद अतीवा
पुनि जहँ राम, दुहुन आगमना * गहेउ विभीषन रघुपति - चरना
रावन - अनुज विभीषन नामा * मैं तव सरन आजु श्रीरामा
कहति राम संमय मम हेरी * मिली-भगति[8] तव-दसमुख केरी

पलाय कपोतपक्षी सांचानेर डरे * त्रासेते पड़िल शिवि नृपतिरे क्रोड़े
यतन करि नरपति सेइ पक्षी राखे * प्राचीरे सांचान पक्षी नृपतिरे डाके
आमिह आमार भक्ष्य करिब आहार * हेन भक्ष्य राख राजा नहे व्यवहार
राजा बले पक्षी मम लभिल शरण * तोमारे अपर मांस कराब भोजन
सांचान बलिल यदि कर परित्राण * आपन गायेर मांस मोरे देह दान
राज भोगे मास तबे अतीव सुस्वाद * ए मांस खाइले मोर घुचे अवसाद
शुनि सांचानेर कथा राजार उल्लास * तीक्ष्ण छुरि दिया काटे निज गात्र मास
तिलार्द्ध नाहिक स्थान सर्व्व अंग काटे * भोजन कराय तारे यत धरे पेटे
बहिया शिविर गात्र रक्त बहे स्रोते * आपन गायेर रक्ते सिंहासन तिते
सेइ त पुण्येते राजा गेल स्वर्गवास * शरणागतेरे ना राखिले सर्व्वनाश
विभीषण थाक यदि आइसे रावण * हइले शरणागत करिब पालन
रामेर आज्ञाय कपि गेल अन्तरीक्षे * विभीषणे आनिवारे रामेर समक्षे
सुग्रीव राजेर आगे करे सम्भाषण * परम आनन्दे कोल दिल दुइजन
विभीषण सुग्रीव चलिल राम स्थाने * विभीषण पड़े गिया श्रीराम चरणे
रावणेर भाइ आमि नाम विभीषण * तोमार चरणे आमि लइनु शरण
श्रीराम ब'लेन ब'लि शुन विभीषण * मंत्रणा करिया बुझि पाठाय रावण

१ सताया हुआ २ कबूतर ३ बाज पक्षी ४ चहारदीवारी पर ५ बाज पक्षी
६ खून ७ बातचीत करते हैं ८ साँठगाँठ।

कहत विभीषन छल कछु नाहीं * निश्छल शरन नाथ तव पाहीं
मन कछु दुरभाव जो लावौं * तौ कलिकाल - विप्र - गति पावौं
सहसतनय[1], पुनि कलि-नरनाथा * त्रयविधि दिव्य[2] करहुँ रघुनाथा

दो० दिव्य अनोखी तीनि सुनि, कहेउ लखन हँसि बैन ।
सुनेउँ कुतूहल प्रथम मैं यहि विधि, करुनाऐन[3] ॥ ६४ ॥

इक सुत हित, जग चरनन लागै * वर 'सुत-सहस' विभीषन मांगै
नृप-पद हेतु सदा नर आतुर * यहि विधि करत 'दिव्य', अतिचातुर
कहेउ राम तुम लखन ! न जाना * दिव्य - विभीषन अतुल महाना
वचन - विभीषन मोहिं परितोषू * लखन ! विप्र-कलि के सुनु दोषू
काम क्रोध पुनि लोभ विमोहा * कलि द्विज ग्रस्त लहति अति छोहा
बिबस - लालसा, दान - कुदाना * कबहुं न उबरत पाप महाना
अपकर्मी सुत, जनक - समाना[4] * जग विनसत इमि पातक - साना[5]
प्रजा न पालति कलि-नरपाला[6] * पाप-पंक फँसि मरत अकाला
दोष-निरूपन तजि यहि काला * प्रथम विभीषन करहु भुवाला
सैनिप ! सिन्धु-सलिल इत लाई * लंक समर्पि करहु दनुराई[7]
पाथर - लीक कथन - रघुराई * आयसु लीन नवन सिर नाई

शुनिया रामेर कथा कहे विभीषण * तोमार चरण मात्र लइब शरण
इहा भिन्न यदि अन्य दिके धाय मन * तबे जेन हय आमि कलिर ब्राह्मण
हइब कलिर राजा सहस्रतनय * एइ तिन दिव्य आमि करिनु निश्चय
तिन-दिव्य करिल राक्षस विभीषण * एइ तिन-दिव्य शुनि हासेन लक्ष्मण
हेन काले श्रीरामेरे बलेन लक्ष्मण * बहुदिने शुनिलाम अपूर्व्व कथन
एक पुत्र हेतु लोक करे आराधन * सहस्र पुत्रेर वर मागे विभीषण
राजा हइवार तरे तप करि मरे * हेन दिव्य करे राम तोमार गोचरे
श्रीराम ब'लेन अल्पबुद्धि रे लक्ष्मण * बड़ दिव्य करिल राक्षस विभीषण
एइ दिव्ये लक्ष्मण आमार परितोष * कलिर ब्राह्मण भाइ शुन तार दोष
काम क्रोध लोभ मोह आदि महापाप * एइ सब पापे विप्र पाय बड़ ताप
प्रतिग्रह करिवेन उद्धार कारण * प्रतिग्रह महापाप नाहिक तारण
एइ सब पापे जेबा करे अनाचार * तादृश पुत्रेर पापे मजिब संसार
कलियुगे राजा प्रजा ना करे पालन * से पापे राजार हय अकाले मरण
आर सब दोष आछे ताहा जेनो पाछे * विभीषणे राजा करि राख मम काछे
सर्व्व सेनापति आन सागरेर वारि * लंकार राजत्व देह विभीषणोपरि
श्रीरामेर आज्ञा येन पाषाणेर रेख * सेइ स्थले विभीषणे करे अभिषेक

---

१ हजार पुत्रवाला २ सौगन्ध, कसम ३ करुणा के आगार राम ! ४ पिता के समान पापी ५ पाप में सना हुआ ६ कलियुग के राजा ७ दैत्यों का नृप ।

पुनि अभिषेक भयेउ ताही छन * चहुँ घोषित लंकेस विभीषन
छत्र - दण्ड, मन्दोदरि रानी * स्वर्ण लंक करि तिलक प्रदानी

श्रीराम द्वारा सागर उपासना और सागर-ताड़न

कहत सुकण्ठ सिन्धु जिमि तरना * पूछि विभीषन, करहिं प्रयत्ना
कहौ विभीषन मर्म अनूपा * सागर पार होयँ केहि रूपा
तव पुरिखा[1], प्रभु ! सगर-कुमारा * खोदि महीतल सिन्धु प्रसारा

दो० भूप 'सगर' कर विमल यश, 'सागर' जग सरनाम ।
करि उपवास पयोधि[2] हित, दरस लहौ श्रीराम ॥ ६५ ॥

कुश - आसन बिराज रघुवीरा * लिय उपवास अम्बुनिधि[2] तीरा
दिवस तीनि बीतं उपवासू * राम कुपित बिन सिन्धु प्रकासू
अबहिं, लखन ! आनहु धनु-सायक * देहूँ सीख सागर जेहि लायक
अस्तुति-अधम कीन बहु भाँती * विफल उपास[3] तीनि दिन-राती
खल विनास हनि पावक-बाना[4] * शोषहुँ बारि[5] न जग कल्याना
हरहुँ सिन्धु शठ आजु पराना * कहि प्रभु अनलबान सन्धाना
अग्निबाण मव जलधि[2] प्रदाहा * मकरादिक जलजीवन[6] दाहा
सप्त सिन्धु ढिग भेदि पताला * सर लखि वारिध[2] त्रास कराला
थर-थर अतुल प्रकंपित गाता * धवल छत्र शिर सों भुइँपाता

श्रीरामेर वचन लंघिब कोन जना * विभीषण राजा हैल जगते घोषणा
छत्रदण्ड दिल तारे स्वर्ण लंकापुरी * अभिषेक करि दिल रानी मन्दोदरी

श्रीराम कर्तृक सागरेर उपासना ओ सागर कर्तृक सेतुबन्धनेर उपदेश

सुग्रीव बलेन, सिन्धु तरिते उपाय * विभीषण प्रति जिज्ञासिते से जुयाय
श्रीराम ब'लेन, विभीषण, बल सार * कि प्रकारे सागर हइब आमि पार
विभीषण बले से सगर महीपति * सागर खनियाछिल ताँहार सन्तति
तव पूर्व्व पुरुषेरा सागर प्रकाशे * सागर दिबेन देखा थाक उपवासे
सागरेर कूले शय्या करिलेन कुश * तदुपरि रहिलेन राम उपवासे
तिन उपवास गेल ना देखि सागरे * कहिलेन लक्ष्मणेरे कुपित अन्तरे
आजि आमि सागरेर दिब भाल शिक्षा * धनुर्व्वाण आन भाइ किसेर अपेक्षा
अधमे करिले स्तव नाहि फल देखे * मारिबे सागरे आजि कार बाप राखे
तिन उपवास करि तार आराधने * सागर शुषिब आजि अग्निजाल बाने
आजि सागरेर आमि लइब परान * अग्नि जाल वाणे राम पूरेन सन्धान
अग्निवाण प्रभावेते शुकाय सागर * पुड़िया मरिल मत्स्य कुम्भीर मकर
चलिल पाताल सप्त सागरेर पाश * वाण देखि सागरेर लागिल तरास
भय पेये सागर काँपये थर थर * माथार धवल छत्र टलिज सत्वर

---

१ पूर्वज २ समुद्र ३ उपवास ४ अग्निबाण ५ जल ६ जलजन्तुओं को ।

इत निषंग[1] प्रविसेउ प्रभु - सायक ❋ सिन्धु गहे उत पद - रघुनायक
किमि रघुनाथ ! कोप विस्तारा ❋ अपराधी किमि नाथ तुम्हारा
रघुकुल - कृत मम जगत प्रकासा ❋ तव-कर, मम जनि उचित विनासा
कातर दिवस तीनि उपवासू ❋ सिन्धु ! तीर तव कीन निवासू
हरन कीन मम सिय दनुकेतू[2] ❋ यहि विधि गमन लंक सिय-हेतू
कपिदल तरै जलधि जेहि भाँती ❋ कीन उपास[3] तुमहिं प्रणिपाती

दो० तदपि सुलभ जनि दरस तव, विवस हनेउँ मैं बान ।
आड़े दस पुनि दसगुना लम्ब प्रमार प्रमान ॥
देहु पन्थ जल छाँड़ि कपि-कटक होय जिमि पार ।
सुनति जोरि कर राम सों, बरनत पारावार[4] ॥ ६६ ॥

स्रोत पताल, सुलभ पथ नाहीं ❋ युगुति एक बरनहूँ प्रभु पाहीं
विश्वकर्मा-सुत नल कपि वीरा ❋ तव हित वर पायेउ मुनि तीरा
बसेउँ जह्नु मुनि पहँ शिशुकाला ❋ 'नल' शिशु कीन जह्नु प्रतिपाला
दण्ड-कमण्डल नित जल-लीना[5] ❋ पुनि मिर्जति मुनि निन्य नवीना
ध्यान कीन मुनि मर्म विचारा ❋ जन्महिं विष्णु राम अवतारा
सिय हित जाहिं लंक के पारा ❋ बाँधि सिन्धु जड़, करैं उतारा
दै वर नलहिं जह्नु इमि कहहीं ❋ तव कर परसि शिला जल तरहीं

वाण गिया प्रवेशिल श्रीरामेर तूणे ❋ सागर पड़िल आसि रामेर चरणे
एत क्रोध मोरे केन शुन गदाधर ❋ तव पूर्व्व वंश एइ करिल सागर
तुमि मोरे नष्ट कर ए नहे विचार ❋ कोन अपराध आमि करिनु तोमार
श्रीराम बलेन शुन नृपति सागर ❋ तिन दिन उपवासी कूलेते कातर
मोर सीता चुरि कैल पापिष्ठ रावण ❋ लंकाय जाइब तार उद्देश कारण
वानर कटक सब हइबेक पार ❋ उपवास दिया देखा ना पाइ तोमार
एइ हेतु अग्निवाण जलेते छाड़िनु ❋ तुमि ना आ माने आमि वाण जे मारिनु
आड़े दश योजन दैर्घ्ये दशगुण तार ❋ जल छाड़ि देह तुमि वानर होक पार
एत शुनि जोड़ हस्ते ब'लेन सागर ❋ मोर जल मिशियाछे पाताल भितर
केमने हइबे पथ ना देखि उपाय ❋ एक युक्ति आछे राम कहिब तोमाय
विश्वकर्म्म पुत्र नल नामे जे वानर ❋ तोमा हेतु मुनिस्थाने पाइयाछे वर
जह्नु मुनि ताहारे पालिल शिशुकाले ❋ दण्ड कमण्डलु तार हाराइल जले
नित्य हाराइया आसे नित्य सृजे मुनि ❋ आर दिन ध्यान करि जानिल आपनि
स्वयं विष्णु हइबेन राम अवतार ❋ सागर बाधिया सैन्य करिबेन पार
एतेक भाविया मुनि दिला वरदान ❋ नल स्पर्शे सलिलेते भासिबे पाषान

---

१ तरकस में २ दानवराज रावण ३ अग्निवाण ४ समुद्र ५ जल समेट लेता था ।

कहत सिन्धु मम बन्धन हेतू * करहु सेनपति 'नल' रघुकेतू
सागर - बन्धन गुन तव पाहीं * नल ! तुम प्रकट कबहुँ किय नाहीं
जीतहुँ लंक सिन्धु करि पारा * नल ! तव बल, इमि सिन्धु उचारा[1]
जाति-शाप-भय, संशय प्राना * कहेउँ न मर्म[2] कबहुँ भगवाना
कपि सैनिप[3] सुनि, अनुमति दीन्हा * नलहिं सेतु हित[4] अधिपति कीन्हा
सबन अभीष्ट सिद्धि प्रभु-काजा * ढोवइँ शिला स्वयं कपिराजा[5]
प्रभु पहँ नल किय अंगीकारा * बन्धन - सेतु लेहुँ मैं भारा
नल सम सुभट, राम ! तव तीरा * पाहन[6] परसि तरति जेहिं नीरा
जेहि कर छुवत शिला-तरु जुरहीं * बाँधि सेतु रघुपति अवतरहीं
तव हित मोहिं बन्धन स्वीकारा * रावन हनहु सिन्धु करि पारा

सागर द्वारा श्रीराम की प्रार्थना

दो० किमि अजान ? स्थिति-प्रलय-सृष्टि सकल के नाथ ।
अखिल विश्व के पूज्य तुम, अगतिन करत सनाथ ॥
सृजति सृष्टि बनि प्रजापति, करन-धरन-संहार ।
महाकाल, कालाधिपति, सबके एक अधार ॥
चन्द्र, सूर्य, यम, वरुण, प्रभु ! पुनि कुबेर, सुरनाथ ! ।
जड़-जंगम, साकार तुम निराकार, रघुनाथ ! ॥

सागर बाँधिते सेनापति कर नले * नल स्पर्शे पाषाण भासिबे मोर जले
श्रीराम ब'लेन नल, आछ मम पाश * सागर बाँधिने जान ना कर प्रकाश
आमि लंका जिनिब, तोमार करि आश * एत बुद्धि धर, शुनि सागरेर पाश
नल ब'ले ज्ञाति भये ना करि प्रकाश * ज्ञात शापे हय पाछे जीवन विनाश
सागरेर कथा शुनि सब सेनापति * सागर बाँधिते नले दिल अनुमति
राम कार्य्य सिद्ध होक एइ मात्र चाइ * सुग्रीव पाथर दिबे अन्य कार्य्य नाइ
श्रीरामेर आगे नल करे अंगीकार * सागर बाँधिया दिब प्रतिज्ञा आमार
श्रीराम अधीन तव नल वीरवर * नलेर परशे जले भासये पाथर
गाछ पाथर जोड़ा लागे परशे ताहार * जागाल बाँधिया राम हय जाउ पार
तोमार कारणे आमि लइब बन्धन * पार हये बध कर पापिष्ठ रावन

सागर कर्तृक श्रीरामेर स्तुति

आपना ना जान तुमि देव गदाधर * सृष्टि स्थिति प्रलयेर तुमिह ईश्वर
विश्वेर आराध्य तुमि अगतिर गति * निदान सृजिते सृष्टि तुमि प्रजापति
तुमि सृष्टि तुमि स्थिति तुमिह प्रलय * काले महाकाल विश्व काल कर लय
तुमि चन्द्र तुमि सूर्य्य तुमि चराचर * कुबेर वरुण तुमि यम पुरन्दर
तुमहि साकार पुनः निराकार तुमि * तव महिमार सीमा कि जानिब आमि

१ कहा। २ रहस्य ३ वानर-सेनापति ४ पुल बाँधने के लिए ५ सुग्रीव ६ पत्थर ।

भगति विनय जनि ज्ञान मोहिं महिमा-नाथ अपार ।
निर्बल के बल ! चरन निज लीजिय जगदाधार ॥
आदि अनादि अपंग-बल ! पलकमात्र प्रतिकूल ।
खण्ड खण्ड ब्रह्माण्ड करि, करत छार आमूल ॥
सुरन सहित सुरपति विकल, चहत दया की कोरि ।
कौशल्या-सुत की कृपा चहत बहोरि बहोरि ॥
पुण्यमही भारत जनमि अगणित पातक - लीन ।
जाहुँ धाम निज, विदा तव लै प्रभु ! मैं अति दीन ॥
बन्दि चरन सागर चलेउ, पुनि पुनि करत प्रणाम ।
कृत्तिवास रसनामयी गाथा मञ्जु ललाम ॥ ९७ ॥

नल द्वारा सागर सेतु-बन्धन

इत निज सदन सिन्धु चलि जाई * लीन बोलाय नलहिं रघुराई
जहँ रघुनाथ वेगि नल आवा * रघुपति चरनन सीस नवावा
हे नल सुभट ! कहेउ रघुवीरा ! * तुम सम वीर अहह ! मम तीरा
सेतु बन्ध तुम यदपि समर्था * मैं तुम रहत सहेउँ दुख व्यर्था
हे प्रभु ! मैं कपि क्षुद्र अतीता * जाति-लोक-भय अति भयभीता
प्रस्तुत वीर अतुल जहँ नाना * तिन सम्मुख किमि करहुँ बखाना
कथा पुरातन पितु के सदना * करहुँ निवेदन मैं प्रभु - चरना
नित विधि[1] सर-मानस[2] अवतरहीं * कुस - पैती[3] जल संध्या करहीं

ना जानि भकति स्तुति शुन रघुवर * श्रीचरणे स्थानदान देह गदाधर
तुमि ह अनाद्य-आद्य असाध्य-साधन * कटाक्षे ब्रह्माण्ड कर खण्डविनाशन
आखण्डल[4] चञ्चल चिन्तिया श्रीचरण * कटाक्षे करुणा कर कौशल्यानंदन
जन्मिया भारत भूमे आमि दुराचार * करेछि पातक कत सख्या नाहि तार
विदाय करह आमि जाइ निज धाम * एत वन्दि पद तले करिल प्रणाम
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व-वचन * गाइल सुन्दरकाण्डे गीत रामायन

नल कर्त्तृक सागरे सेतु-बन्धन

सागर चलिया गेल आपन भवन * नल बलि डाक दिल देव नारायन
धाइया आइल नल यथाय श्रीराम * भूमि लुटि पदतले करिल प्रणाम
श्रीराम ब'लेन नल कहि जे तोमारे * तुमि हेन वीर आछ कटक भितरे
सागर बाँधिते तुमि हउ बलवान * एत दुःख पाइ आमि तोमा विद्यमान
नल ब'ले प्रभु राम निवेदन करि * क्षुद्र कपि आमि ताइ ज्ञाति लोके डरि
बड़-बड़ कपि आछे वीर अवतार * केमने तादेर आगे करि अंगीकार
यखन छिलाम आमि जनकेर घरे * ताहार वृत्तान्त किछु कहिब तोमारे
मानस सरसे ब्रह्मा छिप कुशी लये * सेइ स्थाने बसि सन्ध्या करेन आसिये

१ ब्रह्मा २ मानसरोवर ३ कुश-पवित्री ४ इन्द्र ।

तजत कुसादिक सरवर[1] तीरा ❋ मैं नित तिनहिं विसर्जहुँ नीरा
मम नितनेम सदा, यहि कारन ❋ वर लहि तोष दीन चतुरानन
बिधि-प्रसाद, परसत[2] मम हाथा ❋ जल उतराहिं उपल[3] रघुनाथा
तव कर परसि उपल-तरु[4] जुरहीं ❋ तरु-प्रस्तर[4] मिलि जल संतरहीं
बाँधहुँ सेतु विरञ्चि - प्रसादा ❋ निश्चय हरहुँ नाथ - अवसादा[5]
मास मध्य बाँधहुँ शत योजन ❋ उपल-विटप[4] कपि करहिं नियोजन
नल कर प्रन सुनि बन्धन-हेतू ❋ कपिगन मुदित, मुदित कपिकेतू[6]
चहुं कपि-कटक 'राम जय' छाई ❋ बाँधन सेतु चले हर्षाई

दो० करि प्रणाम रघुवंशमणि, चलेउ सुभट नल वीर ।
सेतुबन्ध अभियान किय, पैठेउ सागर-नीर ॥ ६८ ॥

नल - कानन[7] जो सागर तीरा ❋ सकल उजारि बिछायेउ नीरा
तिन पर पुनि तरु-काठ बिछाई ❋ उपल - शिला चहुँ दीन जमाई
कपि तरु - उपल देत यहि हेतू ❋ मम-तल किय दश योजन सेतू
उतर[8] अरंभि, दखिन पग धारा ❋ दिवस एक जोजन विस्तारा
नल अति कुशल सेतु - आसीना ❋ लाय - लाय पर्व्वत कपि दीना
मुद्गर - चोट बज्र ध्वनि करही ❋ घोष 'राम-जय' चहुँ सुनि परही

छिपकुशी राखि जान सरोवर तीरे ❋ ताहा आमि तुलि लये फेलिताम नीरे
नित्य छिपकुशी ब्रह्मा करेन सृजन ❋ आमारे देखिया ब्रह्मा ब'लेन वचन
नित्य छिपकुशी फेले दिसमारे जले ❋ सन्तुष्ट हइया ब्रह्मा मोर प्रति ब'ले
आमि वर दिव तोरे शुन रे वानर ❋ तुइ छुंले जले जेन आसये पाथर
गाछ पाथर जोड़ा लागे तोमार परशे ❋ तुइ छुले गाछ पाथर जले जेन भासे
ब्रह्मार वरेते आमि बाँधिब सागर ❋ प्रतिज्ञा करिया बले तोमार गोचर
एक मास बाँधि दिब शतेक योजन ❋ गाछ पाथर आमि दिक् यत कपिगन
सागर बाँधिते नल अंगीकार करे ❋ हर्षित हइल राजा सुग्रीव वानरे
रामजय बलिया डाकये कपिगन ❋ सागर बाँधिते चले हरषित मन
श्रीरामे प्रणाम करि नल वीर चले ❋ सागर बाँधिते वीर वैसे गिया जले
आछिल नलेर वन सागरेर तीरे ❋ ताहा भांगि फेलि दिल जलेर उपरे
ताहार उपरे गाछ दिल बिछाइया ❋ उपरे पाथर सब दिल चापाइया
प्रस्थे दश योजन से करये बन्धन ❋ गाछ पाथर जोगाइया देय कपिगन
दीर्घ एक योजन बाँधिल एक दिने ❋ उत्तरे आरम्भ करि चलिल दक्षिणे
बसिलेन नल वीर जांगाल उपरे ❋ पर्व्वत आनिया देय सकल वानरे
मुद्गरेर वाड़ि पड़े महाशब्द शुनि ❋ उच्चैःस्वरे डाके कपि 'राम जय' ध्वनि

१ सरोवर २ छूतेही ३ पत्थर ४ पत्थर और वृक्ष ५ दुःख ६ सुग्रीव ७ नरकुल का जंगल ८ उत्तर दिशा से ।

देत आनि गिरि तनय-समीरा[1] * बन्धन - सिंधु करत नल वीरा
दश योजन बंधन - विस्तारा * कथा सकल कृत्तिवास प्रचारा

नल के प्रति हनुमान-कोप

छं० गढ़त सेतु नल, देत उपल-तरु आनि मरुति[2] बलधारी।
शिला रम्य अति, जड़ित अलँग दुइ, मगन नचत तरुचारी[3] ॥
बीच सुहावन, धवलित पाहन, कारुकार्य[4] रुचिकारी।
मनहुँ राम कर, रचहिं धाम वर, निवसइँ अवधविहारी ॥
गिरि उपारि आनहिं हनुमन्ता * लेहिं वाम कर नल बलवन्ता
सो निज मरुति समुझि अपमाना * लावन गिरि पुनि उतर[5] पयाना
भूधर गंधमादनहिं लाई * नल कर देखहुँ बल - प्रभुताई
पद हनि शृंग - महीधर भंगा * रोम-रोम लटकत गिरि-अंगा[6]
दोउ कर दुइ गिरि धरि पुनि सीसा[7] * चलेउ पवन गति वेगि कपीसा
पूँछ एक गिरि धरि बलवन्ता * धायेउ अन्तरिच्छ हनुमन्ता
रवि गिरि ओट तिमिर[8] चहुँ छावा * नलहिं अतुल संसय मड़रावा
आवत निरखि कुपित हनुमाना * रघुपति पहँ नल त्रसित पयाना
दो० गिरि लावत धरि शीश हनु, जबहिं बढ़ावत राम ! ।
शिल्पी[9] सहज स्वभाव में, लेत तानि कर वाम ॥

पर्व्वत आनिया देय पवननन्दन * नलवीर बसि करे सागर बन्धन
दश योजन सागर जे हइल बन्धन * कृत्तिवास गाइलेन गीत रामायण

नलेर प्रति हनूमानेर क्रोध

छं० सागर बाँधये नल हनूमान महाबल आनि देय शिला वृक्षगण।
जाँगालेर दुइ भिते सुन्दर पाथर गाँथे आनन्दे नाचये कपिगण ॥
जाँगालेर माझे माझे रजत पाथर साजे नल करे विचित्र निर्म्माण।
गठिल आउयास घर थाकिबेन रघुवर हेन मने गठे स्थाने स्थान ॥
माथाय पर्व्वत लये हनूमान देय वये वाम हाते धरे वीर नल।
महाक्रोधे हनूमान पर्व्वत आनिते जान बुझि वटा कत धरे बल ॥
धाय वीर मनादुःखे चलिल उत्तर मुखे यथा गिरि से गन्धमादन।
देखि पर्व्वतेर चूड़ा लाथि मारि करे गूड़ा लोमे करये बन्धन ॥
दुइ हाते दुइ गिरि लइया मस्तकोपरि अमनि पवनवेगे धाय।
जाय वीर महातेजे एक गिरि बाँधि लेजे शून्येर उपरि चलि जाय ॥
रविर किरण नाइ अन्धकार सर्व्वठाँइ चमकिया चाहे वीर नल।
क्रोधे आसे हनूमान उड़िल नलेर प्राण उठिया पलाय महाबल ॥
श्रीरामेर काछे गिया भूमि लुटि प्रणमिया बन्दिया कहेन जोड़ हात।
हनूमान आने गिरि वाम हाते आमि धरि कर्म्मीर स्वभाव रघुनाथ ॥

---

१ हनुमान २ हनुमान ३ शाखाचारी, वानर ४ पच्चीकारी ५ उत्तर दिशा को ६ गिरिखण्ड ७ शिर पर ८ अन्धकार ९ कारीगर।

अवनि विलोटत बन्दि पद, कहेउ जोरि नल हाथ।
वृथा कोप, हनुमान मम लेयँ प्रान, रघुनाथ ! ॥ ६६ ॥
लखि नल-रुदन अतिव दुख पाई * पन्थ रोकि निवसे रघुराई
ततछन मग विलोकि भगवाना * सो किमि लंघि सकैं हनुमाना
अन्तरिच्छ तजि भुइँ हनु आये * तोष - वचन प्रभु तिनहिं सुनाये
उचित न नल प्रति क्रोध तुम्हारा * सुनि बरनत इमि पवनकुमारा
देत प्रानपन गिरि मैं आनी * लेत वाम कर नल अभिमानी
विवस छोभ, पर्वत बहु लाई * डारि सीस नल देहुँ नसाई
अनुचित गर्व तजहु हनुमाना * शिल्पी सहज स्वभाव बखाना
जो उपकरण[1] बाम कर माथा * तौ तव प्रति जनि नल - अपराधा
लाज न तात ! नलहिं उर लाई * करहु सप्रीति काज मम जाई
यहि विधि कहि, नल-कर लै हाथा * हनुहिं समर्पेउ पुनि रघुनाथा
नत, सुत-अनिल[2] मुदित लपिटाने * गढ़त सेतु नल आनँदसाने
अहि-निसि कृत्तिवास जप-नामा * चाहत अचल भक्ति पद-रामा

काष्ठविडालों की सेतु-बंधन में सहायता

विपुल महीधर हनुमत लाये * दश योजन पुनि सेतु बँधाये
योजन बीस अगम जहँ सागर * बन्धन निरखत आय निशाचर

क्रोध करि मोर तरे आइसे पवन भरे पर्व्वत लइया बहुतर।
कुपियाछे हनूमान लइबे आमार प्राण उद्धार करह रघुवर ॥
नलेर क्रन्दन शुनि दुःखी हैला रघुमणि पथ माझे दाण्डाइला गिया।
रामेर उपर दिया जाइबारे ना पारिया चले वीर भूमेते नामिया ॥
कहिलेन प्रभु राम शुन वीर हनूमान नले क्रोधे करि कि कारण।
हनूमान कहे वाणी जोड़ करि दुइ पाणि शुन राम कमललोचन ॥
करि आमि प्राणपण आनिते पर्व्वतगण वाम हाते नल ताहा धरे।
एइ हेतु क्रोध करि आनिनु अनेक गिरि चापा दिते ए नल वानरे ॥
एत शुनि कहे राम त्यज बापू अभिमान कर्म्मीर स्वभाव एइ काज।
वाम हात आगे चले क्रोध ना करिह नले नाहिक तोमार इथे लाज ॥
शुन वाछा हनूमान मोर कार्य्ये देह प्राण कर प्रीति नल वीर सने।
एत कहि रघुनाथ धरिया नलेर हात समर्पिया दिया हनूमाने ॥
कोलाकुलि दुइ जने करे हरषित मने जागाले उठिल गिया नल।
कृत्तिवास कहे राम जपिब तोमार नाम एइ भक्ति हउक अचल ॥

काष्ठबिडालों की सेतुबंधन में सहायता

जे पर्व्वत एनछिल पवननन्दन * दश योजन ताहाते जे हइल बन्धन
कुड़ि जोजन बाँधा गेल अलंघ्य सागर * आसिया देखिया जाय यत निशाचर

---

१ साधन २ हनुमान।

काठ-बिडाल[1] तबहिं बहु आये * भरि छलाँग थल सों जल छाये
तन रेणुका[2] झटकि झरिलावैं * सेतु-सन्धि[3] बहु छिद्र मिटावैं

दो० पवनतनय चहुँ दिसि लखत, काष्ठ-बिडाल अनेक।
इत-उत मारि बिडारि[4] तिन रहे सकल दिसि फेंक ॥ १०० ॥

रोय गिलहरिन राम गुहारा * बिन अपराध पवनसुत मारा
कहेउ बुलाय राम, हनुमाना! * कौन गिलहरिन किमि अपमाना
जिमि समर्थ निज बल अनुसारी * बंधन - सेतु सकल सहकारी
लाज पाय हनु सीस लचावा * सदय भाव रघुपति उर छावा
पीठ गिलहरिन प्रभु सुहराई[5] * चले सेतु पहँ सब हरषाई
कहेउ पवनसुत, चलहु सम्हारी * होय गिलहरिन जनि दुखकारी
दिवस बीस गिरि मरुति जुटावा * सत्तर योजन सिन्धु बँधावा
पैठि लंकपुर हनुमत बीरा * खण्ड विखण्डित किय प्राचीरा
उपल-प्रकोट[6] आनि कपि बाँधा * नब्बे योजन सिंधु अगाधा
भरत छलाँग कपिन कै जोरी * सिखर लंक-देवल[7] लिय तोरी
ओट दनुज झाँकत कहुं पावैं * ताल देहिं कपि मुहँ चिचकावैं
बाँधत सिंधु, मुदित - नल गयऊ * मास विगत शत योजन भयेऊ

काष्ठबिडालेर दल एल तथा कारे * लाफ दिया पड़े गिया सागरेर नीरे
अंगेते माखिया बालि झड़ये जागाले * फाँक यत छिल ताहा मारिल बिड़ाले
यातायात करे सदा वीर हनूमान * बिडालेरे चारि दिके फेले दिया टान
कान्दिया कहिल सबे रामेर गोचर * मारिया पाड़ये प्रभु पवनकोडर
हनूमान डाकिया कहेन प्रभु राम * काष्ठबिडालेर केन कर अपमान
जेमन सामर्थ्य जार बान्धुक सागर * शुनिया लज्जित हैल पवनकोडर
सदय हृदय बड़ प्रभु रघुनाथ * काष्ठबिडालेर पृष्ठे बुलाइला हात
चलिल सबाइ तबे जागाल उपर * हनूमान बले शुन सकल वानर
काष्ठबिडालेरे केह किछु ना बलिबे * सावधान हये सबे जागाले चलिबे
पर्व्वत आनिया देय पवननन्दन * कुड़िदिने बाँधा गेल सत्तर जोजन
लंकापुरे प्रवेशिया वीर हनूमान * प्राचीर भागिया सब कैल खान खान
बहिया आनिया ताहा सकल वानर * नवति योजन बाँधे प्रबल सागर
लाफ दिया जाय ताय कपि जोड़ा जोड़ा * लंकार भागिया आने देउलेर चूड़ा
आड़े-उड़े थाकिया राक्षस देय उँकि * मालसाट मारे कपि देखाय भावकि
आनन्दे करये नल सागर बन्धन * एक मासे बाँधा गेल शतेक योजन

१ गिलहरी २ बालू ३ छेद या दरार ४ भय दिखाकर भगाना ५ किम्बदन्ती है कि भगवान राम के उस समय के अगुलियों के स्पर्श के चिह्न गिलहरियों पर अब भी विद्यमान है। ६ चहारदीवारी के पत्थर ७ लंका के मंदिर का शिखर।

उत्तर सों दक्खिन लौं सेतू * निर्मि कहत कपि 'जय-रघुकेतू'
विश्वकर्मा - सुत सेतु रचावा * सुरगन सकल सुमन बरसावा
सेतु समापन करि नल वीरा * चलि बन्देउ पद जहँ रघुवीरा
सविनय कहत भूमि प्रणिपाती * बँधेउ अम्बुनिधि[1], प्रभु ! सब भाँती

दो० सेतु रचित, हनुमन्त पुनि रक्षक, सुनि भगवान ।
लही प्रीति, सन्तुष्ट अति, बोले कृपानिधान ॥ १०१ ॥

नल ! धन बिन किमि करहुँ प्रसादू * प्रस्तुत तव हित आशिष - वादू
सिय उद्धारि अवध जब चलहीं * अतुल रतन बहु अर्पन करहीं
नाथ रतन-धन मोहि न प्रीता * विधि-वाञ्छित[2] मोहिं रतन अतीता
जेहि पद सतत[3] रमा[4] अनुरागा * जासु ध्यान शिव लीन विरागा
प्रभु ! सो चरन सीस मम दीजै * यहि सों अधिक रतन किमि लीजै
सुनि उर - कमलविलोचन हरषा * दहिन पदुम-पद नल शिर परशा
लिय प्रसाद नल पद-रज धारी * नाचत कपि 'जय राम' पुकारी
तात सुकण्ठ ! कहेउ रघुकेतू * लखहिं सकल चलि जलनिधि-सेतू
घाप 'राम-जय' किय रविनन्दन[5] * आगे चले लखन - रघुनन्दन
चले सुकण्ठ[5], विभीषन राजा * अंगद, यत कपि वीर समाजा

उत्तरर जागाल ठेकिल दक्षिण कूले * राम जय बलिया बानर सब बुले
जागाल बाँधिल विश्वकर्म्मार नन्दन * सकल देवता करे पुष्प वरिषण
जागाल समाप्त करि नल वीर चले * प्रणाम करिल गिया राम पदतले
भूमे लुटि घन घन करि प्रणिपात * जोड़-हस्त करि बले शुन रघुनाथ
जागाल समाप्त करि बान्धिनु सकल * रक्षक रहिल हनूमान महाबल
एत शुनि सन्तुष्ट हइला रघुनाथ * नले आशीर्व्वाद करि पृष्ठे देन हात
धन नाइ नल किबा करिब प्रसाद * एखन लह रे बापू मोर आशीर्व्वाद
सीतार उद्धार करि जाय अयोध्याय * अमूल्य रतन नाना दिब हे तोमाय
नल कह ताहे कार्य्य नाहि नारायण * ब्रह्मार वाञ्छित देह अमूल्य रतन
कमला याँहार सदा करित सेवन * याँहा लाखि योगी हैला देव पञ्चानन
मार शिरे देह सेइ चरण तोमार * इहा हैते अमूल्य रतन किबा आर
शुनिया सन्तुष्ट राम कमललोचन * नलेर माथाय दिला दक्षिण चरण
प्रसाद लइल नल भूमि लोटाइया * राम जय बलि सबे बेड़ाय नाचिया
श्रीराम बलेन शुन मित्र कपिराज * जागाल देखिते चल सागरेर माझ
राम जय बलि उठे सूर्य्येर नन्दन * आगे आगे चलिलेन श्रीराम लक्ष्मण
सुग्रीव चलिल आर राजा विभीषण * अंगद चलिल संगे यत वीरगण

१ सागर २ ब्रह्मा जिन चरणों की चाहना रखते है ३ सदैव ४ लक्ष्मी ५ सुग्रीव ।

कला कुतूहल सेतु निहारा * धनि धनि नल विश्वकर्मकुमारा
नाग - सुरासुर चकित निहारा * मनहु सिन्धु पहिरे गर-हारा

श्रीराम द्वारा शिव-प्रतिष्ठा

रचहु शिवालय नल ! जहँ सेतू * पूजहुँ शम्भु कहेउ रघुकेतू
सुनि नल वीर बेगि तहँ धावा * शिव मन्दिर, जहँ सेतु, रचावा
आनि पवनसुत शिला जुटाया * देवल परम सुरम्य सुहावा
धवल मूर्ति-शिव तहाँ सुहाई * दीन खबरि नल जहँ रघुराई

दो० रचित शिवालय, राम सुनि, कहेउ टेरि हनुमान ! ।
श्वेत सरोरुह[1] देहु मोहिं, आनि सहस्र प्रमान ॥ १०२ ॥

धाये सुनि मारुति कैलासा * कानन - कमल कुबेर निवासा
कानन इक सरवर मन मोहा * विकसित सुमन उपर जल सोहा
सहस पदुम चुनि हनुमत लाई * प्रस्तुत कीन जहाँ रघुराई
शिव अर्पन रघुपति मन लाये * तजि कैलास स्वयं शिव धाये
दोउ कर रामहिं लीन महेसा * प्रेम - अलिंगत मोद असेसा
कहत शंभु रघुपति ! कस पूजा * मोहिं न इष्ट राम बिन दूजा
तुम मम इष्ट, लेहु वृषकेतू ![2] * सलिल-सुमन[3] रावण - वध हेतू
रावन यदपि भक्त प्रिय मोरा * कीन हरन-सिय पातक घोरा

देखिल विचित्र अति जागाल बन्धन * धन्य धन्य नल विश्वकर्म्मार नन्दन
देवता असुर नाग देखि चमत्कार * हेन बुझि सागर परिला गलेहार

सेतुबन्धे श्रीरामेर शिव-प्रतिष्ठा

श्रीराम बलेन नल शुनह विशेष * देउल गठिया देह पूजिते महेश
एत शुनि नल वीर हइया सत्वर * देउल गठिल सेइ जागाल उपर
पर्व्वत आनिया दिल पवननन्दन * परम सुन्दर करे देउल गठन
श्वेतवर्ण शिव गठि ताहार भितर * नल जानाइल गिया रामेर गोचर
श्रीराम बलेन तबे पवनकुमारे * श्वेत पद्म सहस्र आनिया देह मोरे
एत शुनि चले वीर पवननन्दन * कैलासेते यथा कुबेरेर पद्म बन
ताहार भितरे आछे एक सरोवर * फुटियाछे पुष्प सब जलेर उपर
तुलिया सहस्र पद्म पवननन्दन * आनिया दिलेन वीर यथा नारायण
शिवपूजा करिते बसिला भगवान * कैलास छाडिया शिव हैला अधिष्ठान
दुइ हात रामेर धरिला त्रिलोचन * दुइ जन हरषित प्रेम आलिगन
महेश बलेन प्रभु पूजा कर कार * इष्ट देव राम तुमि हउजे आमार
श्रीराम बलेन तुमि मोर इष्ट हउ * रावण बधिते तुमि पुष्प जल लउ
शकर बलेन मोर सेवक रावण * सीता चुरि कैल तार हउक मरण

---

१ सफेद कमल २ शंकर ३ संकल्प ।

बोले शंभु सुनहु रघुनायक * तासु मरन निश्चित तव सायक
शिव-आराध्य न रामहिं चीन्हा * स्वयं विनास निमंत्रित कीन्हा
आयु न शेष धरत सिय-केशा * आकुल सिय दिय शाप विशेषा
सकुल विनास तासु यहि हेतू * उतरहु सिन्धु बेगि रघुकेतू
बहुरि परस्पर कीन प्रनामा * शिव कहि 'राम' गये शिवधामा

राम द्वारा भस्मलोचन-वध व लंका-प्रवेश

आगे लखन सहित रघुराई * पुनि सुग्रीव विभीषनराई
दहिने जामवन्त बलवन्ता * आगे धाय चलेउ हनुमन्ता
अंगद पुनि सेनापति नाना * सैन-चाप घन गर्ज समाना

दो० 'राम-घोष' चहुं 'राम जय' कपिगन करत निनाद।
सिंहनाद सुनि दनुज-दल, छायेउ अतुल प्रमाद ॥ १०३ ॥

कहेउ निसिचरन रावन तीरा * आये सिन्धु उतरि रघुवीरा
सुनि दसकन्ध नयन चहुं कीन्हा * भस्मलोचनहिं आयसु दीन्हा
लै कपि, राम लंक अभियाना * हरहु भसम करि कपिगन प्राना
चलेउ दनुज, आयसु लहि धाई * चर्म-टोप निज नयन चढ़ाई
चर्म-वेष्टित[1] रथ आसीना * सेतु समीप हेलि रथ दीना
कमललोचनहिं कहत विभीषन * प्रस्तुत रन हित भस्मविलोचन

तव वाणे हबे तार सवंशे संहार * अछिल परम प्रिय रावण आमार
ना चिनिल इष्टदेव प्रभु रघुमणि * आपन मरण ताइ आनिल आपनि
आयु: शेष हैल धरि जानकीर चुले * शाप दिला सीता तारे मनेर आकुले
एइ हेतु हबे तार सवंशे संहार * शीघ्र चलि जाइ राम, सागरेर पार
एत बलि परस्परे करिया प्रणाम * कैलासे गेलेन शिव बलि राम राम

भस्मलोचन-वध ओ श्रीरामेर लंकाप्रवेश

श्रीराम चलिला तबे सहित लक्ष्मण * पश्चाते सुग्रीव राजा आर विभीषण
दक्षिण चापिया चले मंत्री जाम्बवान * आगे आगे धाइया चलिल हनूमान
चलिल अंगद वीर लये सेनागण * एक चापे चले ठाट मेघेर गर्ज्जन
राम जय बलिया छाड़ये सिंहनाद * शुनिया राक्षसगण गणिल प्रमाद
रावणेरे कहे गिया यत निशाचर * आइला श्रीराम पार हइया सागर
शुनिया रावण राजा चारि दिके चाय * भस्मलोचनेरे देखि आज्ञा दिल ताय
श्रीराम लंकाय आसे वानर लइया * वानरेर भस्म करि देह उड़ाइया
पाइया राजार आज्ञा चलिल सत्वर * चक्षे ठूलि दिया उठे रथेर उपर
चर्म्मे ढाका, रथखान आइसे धाइया * जांगाल उपरे रथ लागिल आसिया
विभीषण बले गोसाईं करि निवेदन * जुझिवार तरे आइल ए भस्मलोचन

---

१ चमड़े से ढका हुआ।

निरखत जेहि दिसि चर्म हटाई * दग तर परत भसम ह्वै जाई
आतुर राम सुहृद मन कहहीं * कवन जतन वानरगन बचहीं
कहत विभीषण, प्रभु ! अनुसरहू * धनु - प्रत्यञ्च दर्पनमय[1] करहू
दर्पन निज मुख लखि निज लोचन * जरै स्वयं खल भस्मविलोचन
मुनि अति तोष मुदित रघुनन्दन * ब्रह्मायुध साजे बहु दर्पन
दर्पन सम्मुख दनुज - रथ आवा * दनुज बेगि दग - चर्म हटावा
निज मुख दर्पन बीच निहारा * निसिचर भसम भयेउ जरि छारा
लखि निसिचरन अतुल भय छावा * प्रथम समर रघुपति जय पावा
यहि बिधि लंक राम पग दीन्हा * कपिगन सकल 'रामजय' कीन्हा
बीच जलधि[2], उत सिय इत रामा * अब समीप दोउ लंकाधामा

दो० डेढ़ पहर रजनी रहत कपिदल धाय निसंक ।
ध्याय राम रघुपति-चरन, घेरि लीन चहुँ लंक ॥
गाथा मंजु सुपावनी, अमिय - भूरि मधुभाण्ड ।
भयेउ समापन गान इत, सुन्दर सुन्दरकाण्ड ॥
नाना दानव सुभट पुनि, कपि अनन्त बलवन्त ।
युद्धकाण्ड गाथा - समर, सरुचि सुनैं गुनवन्त ॥
कृत्तिवास बंगीय कवि विरचित छंद पयार ।
सानुवाद लिप्यन्तरण—सो किय नन्दकुमार ॥
अमर भारती नागरी, भाषा बंग ललाम ।
उभय ज्ञान लहि विज्ञवर लहैं राम सुखधाम ॥ १०४ ॥

घुचाये चर्म्मेर ठुलि जार पाने चाबे * च'क्षेते देखिबा मात्र भस्म ह'ये जाबे
श्रीराम ब'लेन मिता बलह उपाय * केमने वानरगण इये रक्षा पाय
एत शुनि बलिछे राक्षस विभीषण * धनुकेर गुणे राम जोड़ह दर्पण
दर्पणे देखिबे पाबे आपनार मुख * आपनि हइबे भस्म देखह कौतुक
एत शुनि रघुनाथ आनन्दित मन * ब्रह्म अस्त्रे कोटि कोटि साजिल दर्पण
रथ आगुलिया तार रहिल दर्पणे * घुचाय चक्षेर ठुलि चाहि चारि पाने
आपनार मुख देखे दर्पण भितर * भस्म ह'ये उड़े गेल सेइ निशाचर
देखिया राक्षसगण पाइलेक भय * हइल प्रथम रणे श्रीरामेर जय
पार हये लंकाय उठिल नारायण * राम जय बलि डाके यत कपिगन
दूरे छिला सीता देवी दूरे छिला राम * दुइ जने मिलिया हइला एक स्थान
पोहाते तखन रात्रि आछे प्रहर देड * रामेर कटके लंकापुरी कैल बेड़
कृत्तिवास रचे गीत अमृतेर भाण्ड * एत दूरे पूर्ण हैल एइ सुन्दरकाण्ड

॥ इति सुन्दर काण्ड ॥

१ धनुष की डोरी पर शीशे जड़ दीजिये २ समुद्र ।